

دارالمسلم کراچی کا ترجمان

# البلاغ

ماہنامہ  
کراچی

المصنف فرید الدین

بیادِ عارف باللہ حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب بیسٹ

صدر دارالمسلم کراچی

وفیلذہ ہجراتیکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی مدظلہ

مترجم

محمد تقی عثمانی



**alcop المونڈیم کمپنی آف پاکستان (انڈسٹریز) لمیٹڈ**

سیکرٹریٹ: میرٹ روڈ - کراچی ۷۷ - فون: ۲۲۱۷۲۸ - ۲۲۱۷۸۵

انجینئر آفس: ۵ - رحیم پورہ ۱۱۶ - مری روڈ - راولپنڈی - فون: ۶۳۹۲۱

ریجنل آفس: ۲۱ - قائد محمد روڈ لاہور کیٹ - فون: ۳۷۲۹۸۱

Telex: 25713 ALCOP PK



دار العلوم کراچی کا ترجمان

ماہنامہ

# البلاغ

کراچی

اشاعتِ خصوصی

صفر تا ربيع الثانی ۱۴۰۷ھ

بیانِ عارفِ باللہ

حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبداللہ الحی صاحبِ قدس سرہ

المتوفی ۱۵ رجب ۱۴۰۶ھ

مرتبہ

محمد تقی عثمانی

نالی تکران پڑھنا بہت عالیہ

کتابچہ اسلامی

نگران — حضرت مولانا مفتی محمد رفیع عثمانی صاحب

صدر دارالعلوم کراچی - ۱۴

مدیر — حضرت مولانا محمد تقی عثمانی صاحب

ناظم — شہزاد محمود

مکتبہ خیریت لکھنؤ

مکتبہ خیریت لکھنؤ

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مکتبہ خیریت لکھنؤ

جلد: ۲۱

۲۰۱۵

شمارہ — صفر تا ربیع الثانی ۱۴۰۷ھ

قیمت مجلد —

مطبع — مشہور آفٹ پریس کراچی



# ترتیب

حصہ

سلام

جذبہ اختیار (نظم)

ذکر و فکر

## سوانح

حالات زندگی

معمولاتِ مرشدِ عارفی

سفرِ حج

سفرِ عمرہ

حضرت کے ساتھ رفاقتِ حج - چند یادیں

حضرتِ مرشدِ عارفی اور ان کا ذوقِ مزاح

تواریخِ وفات

تواریخِ ولادت و وفات

گلابائے عقیدت

تاثرات (نظم)

نذرانہ عقیدت

۵

۶

۸

۹

۱۱

جناب حسن عباس صاحب

۵۷

ڈاکٹر محمد الیاس صاحب

حضرت مولانا ڈاکٹر عبدالحی صاحب راقی قدس سرہ

۸۴۷

۹۶

محمد اکمل خان صاحب

۱۰۳

مولانا رشید اشرف صاحب یتیمی

۱۰۷

مولانا خلیل احمد تھانوی

۱۱۰

ستید علی حماد رضا صاحب

۱۱۲

شید اظہر حسین صاحب

۱۱۳

جناب مولانا شرف علی تھانوی صاحب

۱۱۵

نشر کاظمی صاحب

# مُشَاهِدَات و تَأَثُّرَات

۱۱۷	حضرت مولانا سبحان محمود صاحب	تعلیماتِ عارفی
۱۳۶	مولانا مفتی محمد رفیع عثمانی صاحب	مرشد و مشفق حضرت عارفیؒ
۲۱۵	محمد تقی عثمانی	سیدی و سندی
۲۶۳	مولانا ندیر احمد صاحب، مہتمم جامعہ اسلامیہ فیصل آباد	مشاہدات و تاثرات
۲۸۷	حضرت حکیم سید محمد ابراہیم صاحب رحمۃ اللہ علیہ	یہ حالت ہو گئی ہے ایک ساقی کے نہ ہونے سے
۲۹۴	مولانا مفتی عبدالرؤف صاحب	شفقت و رحمت کی جتنی جاگتی تصویر
۳۱۳	مولانا حکیم محمد اختر صاحب	بزمِ اشرف کا پرانا چراغ
۳۲۶	مولانا مفتی رشید احمد صاحب مدظلہم	حضرت ڈاکٹر صاحبؒ مکارمِ اخلاق کے آئینے میں
۳۳۶	نصرت علی صدیقی صاحب	حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارف باللہ
۳۴۳	جناب حافظ ابراہیم صاحب	جمالِ اولیاء مستور ہو گیا
۳۵۵	جناب ڈاکٹر محمد الیاس صاحب	مراحلِ سلوک و طریقت
۳۶۳	جناب حافظ عتیق الرحمن صاحب	آگاہ! مرشدی ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارفیؒ
۳۶۸	جناب مظفر احمد اشرف صاحب	حضرت والاؒ
۳۷۶	جناب عشرت علی خان قیصر صاحب	- تاثرات بر حیاتِ قدسی قطب الارشاد
۳۹۰	جناب حاجی محمد فاروق صاحب سکس	خاموش ہو گیا چمن بولتا ہوا
۳۹۶	جسٹس ڈاکٹر تنزیل الرحمن صاحب	حضرت عارفِ پائندہؒ
۴۰۰	حضرت موقعا محمد عاشق الہی صاحب مدینہ منورہ	تاثرات
۴۰۴	مولانا رات علی صاحب ہاشمی	مسیحائے ظاہر و باطن
۴۲۳	جناب جہاں زیب صاحب	چند یادیں، چند آنسو
۴۵۰	جناب نجم الثاقب صاحب	ہمارے حضرت والاؒ



باتیں ان کی یاد میں لگی

حضرت عارفیؒ کے کچھ سبق آموز واقعات

مولانا زبیر اشرف عثمانی

محمد عبد عالم صدیقی

۲۵۴

۲۵۹

## افادات

افادات حضرت عارفیؒ

افادات عارفیؒ

جواہر حضرت عارفیؒ

افتتاح بخاری کے موقع پر

اساتذہ و طلبہ سے خطاب

فہرست خلفاء و مجازین

محمد تقی عثمانی

۲۶۵

حضرت مولانا مفتی عبد الحکیم صاحب رحمۃ اللہ علیہ

۵۰۵

مولانا محمد عبداللہ حسین صاحب

۵۱۷

۵۲۱

حضرت عارفی رحمۃ اللہ علیہ

ضبط و ترتیب: رشید اشرف تیسفی

۵۲۳

## نقد و تبصرہ

ماثر حکیم الامتؒ

محمد تقی عثمانی

۵۳۵

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
الحمد لله الذي هدانا لهذا  
ما كنا لنهتدي لولا أن هدانا الله

نَحْمَدُكَ وَنُثْنِيكَ وَنُتَوَكَّلُ عَلَيْكَ

وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ أَنْفُسِنَا وَمِنْ شَرِّ أَعْمَالِنَا

لَمْ نَحْمِدْكَ اللَّهُ فَلَا مُصْرَ لَكَ وَمَنْ تُصِيبْهُ لَهْ

وَنَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ

وَنَشْهَدُ أَنَّ سَيِّدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْكَ وَعَلَى آلِكَ وَآصِحَابِكَ أَجْمَعِينَ





# مکملہ

محو ہوں لطفِ ناز میں تیرے      گم ہوں رازِ دنیا میں تیرے  
 کتنا عالمِ فریبِ عالم ہے      حسنِ عالمِ طہِ ازم میں تیرے  
 یہ فنونِ نظرِ معاذ اللہ      جلوۂ پردہ ساز میں تیرے  
 چشمِ منتِ راجہ حیرت ہے      حسنِ نیزنگ ساز میں تیرے  
 شانِ کسغیہ عالمِ جاں ہے      انصافِ حجاز میں تیرے  
 بے نیازی سی بے نیازی ہے      طہِ بستانِ نواز میں تیرے  
 اپنی ہستی مٹا چکا ہوں میں      عشقِ بستی نواز میں تیرے

عارفی بھی ہے ایک کشمکشِ ہمز

عرصہ ترکست میں تیرے

میکڈ ۱۹۲۲ء

(از: کلامِ عارفی)

# ہدایتِ سلام

اسلام اے راہِ حسنِ زندگی

اسلام اے یادِ توجانِ جان	اسلام اے ذکرِ توفیقِ روان
اسلام اے مظہرِ ذاتِ صمد	اسلام اے جلوۂ نورِ احد
اسلام اے وجہِ خلقِ کائنات	اسلام اے مایۂ راہِ حیات
اسلام اے ہادیِ دنیا و دین	اسلام اے رحمتِ تبعاً لمین
اسلام اے سیدِ والائے نسب	اسلام اے عالمِ اُمّی لقب
اسلام اے آیتِ ربِّ کریم	اسلام اے پیکرِ خلقِ عظیم
اسلام اے مجتبیٰ و مصطفیٰ	اسلام اے رہبرِ راہِ صفا
اسلام اے زینتِ عرشِ برین	اسلام اے رونقِ برسمِ زمین
اسلام اے نازِ عجز و بندگی	اسلام اے راہِ حسنِ زندگی
اسلام اے دستگیرِ بیکساں	اسلام اے مونسِ بیچارگان



استدلالے ماہن موادئے ما استدلالے والی دھوکئے ما

آنگاه در محفل نه گنج‌دشان تست  
 در مغانم آنچه ناید آن تست  
 این قدر دایم که ریت ذوالجلال  
 آفریدت فتنای حیران  
 یار رسول الله بر تو صبح و شام  
 بیشتر ز من درو است و دم

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَ  
عَلَىٰ اٰلِهِٗ وَخَلْبَتِهِٗ وَسَلِّمْ

خزیمور ۳ نومبر ۱۹۵۳ء

(از کلام عاشق)

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

• 2000-2001

## جذبہ بے اختیار

محفلِ سوز و گدازِ غم کو گر مائے گاکون  
 اہلِ دل کو اپنے دردِ دل سے تڑپائے گاکون  
 موجزن ہے کس کے دل میں آتشِ سیالِ غم  
 مستیِ خونِ جگر آنکھوں سے برسائے گاکون  
 کس پہ طاری ہے جنونِ شوق کی وارفتگی  
 یوں زباں پر دالہائے رازِ دل لائے گاکون  
 عارفی میرا ہی دل ہے محرمِ ناز و نیاز  
 بعدِ میرے رازِ حسن و عشق سمجھائے گاکون

انوارِ کلامِ عارفیہ





محکم دستاویز اس کے ساتھ ساتھ جس کے  
 کے اس کے ساتھ ساتھ اس کے ساتھ ساتھ  
 اس کے ساتھ ساتھ اس کے ساتھ ساتھ  
 اس کے ساتھ ساتھ اس کے ساتھ ساتھ  
 اس کے ساتھ ساتھ اس کے ساتھ ساتھ

الحمد للہ، تین چار ماہ کے انتظار کے بعد آج ہم ابلاغ کاہ حضرت عارفیہ نمبر  
 قارئین کی خدمت میں پیش کرنے کی سعادت حاصل کر رہے ہیں۔ ہمیں اندازہ ہے کہ قارئین  
 ”السلام“ کتنی بے باکی کے ساتھ اس خصوصی اشاعت کا انتظار کرتے رہے ہیں، اور ہماری  
 کوشش مسلسل یہ رہی کہ انتظار کی یہ مدت کم سے کم کی جائے، لیکن جن حضرات کو اس قسم کے نمبر  
 نکالنے یا اس میں کسی جہت سے حقہ لینے کا عملی تجربہ ہے، وہ جانتے ہیں کہ اس قسم کی خصوصی اشاعت  
 کیلئے مضامین کی فہرست اسی سے لیکر منظر عام پر رونے تک کتنے صبر آزما مراحل سے گزرنا پڑتا  
 ہے۔ لہذا اتنے ضخیم نمبر کے لئے یہ مدت یقیناً زیادہ نہیں تھی۔

اس کے علاوہ اس زمانے میں حقیر کو متواتر ملکی اور غیر ملکی سفر بھی پیش آتے رہے،  
 اور اس سب پر مستزاد یہ کہ اس دوران ”السلام“ کے انتظام میں بھی تبدیلی آئی۔ اور ابلاغ  
 کے انتظامی امور نئے ہاتھوں میں آئے، جس کے نتیجے میں کچھ عرصہ کیلئے دفتری امور میں تعطل  
 اور بے قاعدگی لازمی تھی۔

لیکن اللہ تعالیٰ کا ہزاراں ہزار شکر ہے کہ ان تمام رکاوٹوں کے باوجود آج ہمیں اس

خصوصی اشاعت کو قارئین کی خدمت میں پیش کرنے کی توفیق ہو رہی ہے جو تمام تر عارف باللہ حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارفی قدس سرہ کے مبارک تذکرے کے لئے وقف ہے۔

الحمد للہ، اس خصوصی نمبر میں حضرت والا کی سوانح حیات، حضرت کے خصوصی مزاج و مذاق، تالیف و تصنیف اور اصلاح و ارشاد کے میدان میں حضرت کے اہم کارناموں، اور حضرت کے عارفانہ افادات کا ایک گرانقدر ذخیرہ جمع ہو گیا ہے۔ اگرچہ حضرت والا کی جامعیت کے پیش نظر پانچ سو سے زائد صفحات کی یہ اشاعت پیش کرنے کے باوجود اب بھی یہ احساس دلنگیر ہے کہ یہ تذکرہ ابھی تشنہ ہے، اور حضرت کی حیات طیبہ کے نہ جانے کتنے گوشے ابھی معرض بیان میں نہیں آئے، لیکن اُمید ہے کہ انشاء اللہ یہ سادہ اور متواضع کوشش اس موضوع پر مزید کام کے لئے بنیاد بن سکیگی۔

حضرت والا کا ایک خاص ذوق یہ تھا کہ کسی بزرگ کی سوانح محض برائے سوانح ہو کر نہ رہ جائے، بلکہ ان کی زندگی کے وہ پہلو بطور خاص اُجاگر کئے جائیں جو پڑھنے والے کے لئے عملی زندگی میں سبق آموز ہوں۔ حضرت والا نے اپنے شیخ کا جو تذکرہ "مآثر حکیم الامت" کے نام سے تحریر فرمایا ہے، وہ حضرت کے اسی ذوق کی درخشاں مثال ہے، لہذا اس اشاعت میں بھی ہم نے کوشش یہی کی ہے کہ اس میں تاریخی معلومات سے زیادہ حضرت کے مزاج و مذاق اور آپ کی تعلیمات و افادات زیادہ سے زیادہ سامنے آئیں، تاکہ وہ ہم سب کیلئے عملی زندگی میں مشعل راہ بن سکیں۔ الحمد للہ، حضرت سے تعلق رکھنے والے بیشتر حضرات نے مضامین اسی نقطہ نظر سے تحریر فرمائے ہیں۔

بہر کیف! اب "حضرت عارفی نمبر"، آپ کے سامنے ہے، یہ حضرت والا کے انداز زندگی اور آپ کے مذاق زیست کے مختلف پہلوؤں کا ایک رنگارنگ گلدستہ ہے جس کی لطیف اور پاکیزہ خوشبو انشاء اللہ مشامِ جان کو معطر کرے گی۔ اللہ تعالیٰ ہم سب کو حضرت کے نقش قدم پر چلنے اور حضرت کی تعلیمات پر عمل کرنے کی توفیق عطا فرمائیں آمین۔

عسد تقی عثمانی

۱۳ ربیع الثانی ۱۴۲۵ھ

جناب حسن عباس صاحب

## خانہ زندگی

ہمارے آباؤ اجداد عرب سے ہمایوں بادشاہ کے زمانہ میں ہندوستان آئے تھے اور قاضی القضاۃ کے منصب پر فائز تھے۔ ضلع اٹارہ کے ایک دیہات اکبر پور میں آباد تھے۔ مورث اعلیٰ قاضی علاؤ الدین عری صلیقیؒ اسی زمانہ میں تھے۔ انکے کئی پشتوں بعد ہمارے والد صاحب کے دادا حضرت مولوی کاظم حسین تھے۔ ایک دوسرا خاندان جو ہمارے خاندان سے مدغم ہوا انکے جدا مجد مولوی فرخ حسین تھے، انکے صاحبزادہ مولوی نادر حسین صاحب والد صاحب کے دادا مولوی کاظم حسین صاحب کے پو پاتھے۔ یہ دونوں خاندان ضلع اٹارہ میں قیام پذیر تھے۔

ریاست کدورہ باؤنی بندیکھنڈیوپی میں ضلع جھانسی کے حلقہ میں ہے۔ کدورہ سے قبل نواب ریاست نے شاہ اودھ سے ایک قابل وزیر کی ضرورت ظاہر کی جس پر اٹارہ خاندان سے حضرت مولوی فرخ حسین منتخب کر کے بھیجے گئے۔ انہیں بزرگ کے ساتھ ہمارے جدا مجد مولوی کاظم حسین صاحب اٹارہ سے کدورہ چلے گئے اور وہیں دونوں خاندان آباد ہو گئے۔ مولوی کاظم حسین حضرت شاہ ابوالخیر قدس سرہ العزیز سے بیعت تھے اور شاید خلافت بھی مل گئی تھی۔ حضرت کاظم حسین صاحب تاریخ گوئی میں



ماہر تھے اور ایک اچھے شاعر بھی تھے، دونوں کا مجموعہ "نشدید کاظم" میں شائع ہوا، ۱۹۱۲ء میں دونوں خاندان کدورہ سے کالپی منتقل ہو گئے اور وہاں ۱۹۲۲ء تک آباد رہے لیکن یہ مرکزیت ۱۹۲۲ء کے بعد منتشر ہو گئی۔ زیادہ تر لوگ کانپور جا کر مقیم ہو گئے اور کچھ بسلسلہ ملازمت مختلف مقامات پر چلے گئے۔ ہمارے دادا صاحب کا نام مولوی علی عباس تھا شروع میں نواب کدورہ جناب ریاض الحق صاحب مرحوم کے سرکاری تھے۔ بعد میں کانپور میں کسی اسکول میں ماسٹر ہو گئے تھے اور ۱۹۳۹ء میں فجر کی اذان کے ساتھ انتقال فرمایا۔

والد صاحب کی پیدائش ریاست کدورہ میں بروز شنبہ بتایخ ۸ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ فجر ہشتم محرم مطابق جون ۱۸۹۸ء میں ہوئی۔ بچپن ہی سے والد صاحب اپنے دادا مولوی ناظم حسینؒ کی زیر تربیت رہے۔

۱۹۰۳ء میں کلام پاک کے علاوہ عربی صرف اور فارسی کی کتابیں پڑھنا شروع کی گئیں ۱۹۰۷ء میں انگریزی اسکول کے درجہ سوئم میں داخلہ لیا۔ کانپور اور پھر علیگڑھ میں تعلیم حاصل کی اور آخر میں ۱۹۲۶ء میں مکھنویہ ترقی دہی سے قانون کی ڈگری حاصل کی کچھ عرصہ سہارنپور میں وکالت کر کے ۱۹۲۷ء سے ہردوئی میں باقاعدہ وکالت شروع کی۔

۱۹۳۳ء میں ہمارے نانا صاحب جو پور میں ڈپٹی کلکٹر تھے انہوں نے والد صاحب کو ہردوئی سے جو پور بلایا اور وہیں وکالت کرنے کا مشورہ دیا، چنانچہ جولائی ۱۹۳۳ء میں ہردوئی سے جو پور آ گئے اور وکالت شروع کر دی۔

دسمبر ۱۹۳۵ء میں وکالت کا پیشہ ختم کر کے جنوری ۱۹۳۶ء سے ہومیوپیتھک ڈاکٹری کو ذریعہ معاش بنایا۔ یونائیٹڈ ناکامیاں پیش پیش ہی تمام ضلع اور قرب جوار کے اضلاع میں اللہ جل شانہ نے اپنے فضل و کرم سے شہرت عطا فرمائی۔ ہر طرح سے سکون و فراغت کی زندگی عطا فرمائی مکان بنانے کا خیال اور وطن بنانے کا سب سامان موجود تھا۔ دم و گمان بھی نہ تھا کہ اب جو پور سے کہیں اور بھی جانا ہو کیوں جانا ہو سکتا ہے۔ پر وہ غیب سے کچھ اور ہی مقصود تھا۔ جس کا ظہور ہوا اور ۱۹ مئی ۱۹۵۰ء کو رح اہل و عیال ترک جو پور پر مجبور ہوئے اور ۳ جون ۱۹۵۰ء کو کراچی آ گئے۔ دوسرے دن سے ماہ رمضان المبارک شروع ہو گیا کچھ عرصہ نیس روڈ پر خالو ظفر احمد صاحب کے مکان پر قیام رہا اور پھر پورچل میں کالونی

میں قیام کیا ۱۹ اگست ۱۹۵۷ء سے ۲۵ اگست ۱۹۵۷ء تک پیر الہی بخش کالونی میں قیام رہا، پھر ریڈیو پاکستان کے قریب تن ملاؤ میں ایک فلیٹ لے لیا جو کہ راسین روڈ کے مطب اور خانو ظفر احمد صاحب کے مکان واقع ریس روڈ سے قریب تھا، وہاں منتقل ہو گئے۔

۲۰ مارچ ۱۹۵۸ء میں ناظم آبادیہ میں مکان تعمیر ہوا اور وہیں منتقل ہو گئے یہاں تقریباً روزانہ عصر سے مغرب تک مجلس ہوتی تھی اور روز بروز لوگوں کا جمع ہوتا چلا گیا۔

دسمبر ۱۹۶۹ء کو نئے مکان ای ۶۵ بلاک ۴ شمال ناظم آباد میں منتقل ہو گئے، ناظم آباد میں رہنا بعد عصر مجلس ہوتی تھی۔ اس نئے مکان میں پہلی مجلس ۱۹ دسمبر ۱۹۶۹ء کو منعقد ہوئی اور حباب بن الدین کو دعوت عصرانہ دی گئی۔ ۲ جنوری ۱۹۷۰ء بروز جمعہ کو باقاعدہ مجلس شروع ہوئی اور آخری مجلس ۲۱ مارچ ۱۹۷۰ء کو ہوئی۔ شروع میں روزانہ مجلس ہوتی تھی، پھر ہفتہ میں دوبار جمعرات اور جمعہ۔ بعد میں عید الاضحیٰ کو مجلس منعقد ہونے لگی۔

۱۳ مارچ ۱۹۷۳ء کو حج کے لئے روانگی ہوئی اور ۲۲ مئی ۱۹۷۳ء کو واپس ہوئی۔

اس کے بعد ۲۲ مئی ۱۹۷۵ء کو بحری جہاز سے طرہ کے لئے گئے، ۲ جون ۱۹۷۵ء کو واپس ہوئے، دوسرا عمرہ مئی ۱۹۷۶ء میں ادا کیا۔

شمال ناظم آباد میں قیام کے کچھ عرصہ بعد صرف صبح کے وقت مطب کرتے تھے مطب بیت الشرف ناظم آبادیہ ہی میں رکھا، پیر اور جمعہ کو مطب بند رہتا تھا، جمعہ کے دن عصر سے مغرب تک عام مجلس ہوتی تھی جبکہ پیر کے روز عصر سے مغرب تک خاص مجلس ہوتی تھی۔ جمعہ کے روز تقریباً چار پانچ سو کا مجمع ہوتا تھا۔ پیر کے روز تقریباً سو ڈیڑھ سو حضرات تشریف لاتے تھے۔

۲۳ مارچ ۱۹۷۷ء بروز اتوار حسب معمول صبح کے ناشتہ کے بعد مطب تشریف لے گئے، راستہ میں کچھ بیٹ میں تکلیف کا ذکر کیا اور اسی روز دارالعلوم کونجی میں مسلسل تقریب ختم بخاری شریف جانا تھا۔ اقل تو پیش کی تکلیف کو وجہ سے ارادہ ملتوی کر دیا لیکن پھر اس خیال سے کہ اس سعادت سے کہیں محروم رہا جائے اُسی تکلیف کی حالت میں دارالعلوم تشریف لے گئے۔ لیکن جب تکلیف بڑھ گئی تو بغیر شرکت کئے واپس گھر آ گئے۔ جس وقت گھر میں داخل ہوئے میں اندر برآمدہ میں بیٹھا ہوا تھا۔ مجھ سے مخاطب

ہو کر کہنے لگے کہ پیٹ میں بہت تکلیف ہے۔ فوراً لیٹ گئے۔ بائسکوپک دوائیں دیکھائیں کچھ افادہ نہیں ہوا تو پڑوس میں ڈاکٹر اظہار حسین صدیقی رہتے ہیں انکو بلوایا، انہوں نے کچھ دوائیں تجویز کیں لیکن اس کے استعمال سے بھی کوئی افادہ نہیں ہوا تو رات کے گیارہ بجے ڈاکٹر عبدالحمید صاحب (ڈاکٹر عبدالصمد صاحب مرحوم کے صاحبزادہ) کو بلایا گیا انہوں نے ایک انجکشن دیا جس سے درد میں کمی ہوئی اور سو گئے۔ صبح قتل اور قے شروع ہو گئی اور چینی بڑھ گئی۔ غذا اور پانی بالکل نہیں لے رہے تھے اس لئے گلوکوز کی DRIP لگائی گئی۔ گزشتہ ہفتہ مسلسل پانچ روزہ رکھتے تھے اس لئے کمزوری اور پانی کی کمی ہو گئی تھی۔ مشورہ کیلئے ڈاکٹر سعید اختر زیدی ڈاکٹر جمیل۔ پروفیسر نذیر چوہدری کو بھی بلایا گیا اور ڈاکٹر نذیر چوہدری کے مشورے سر جن حمید کو بھی بلایا ڈاکٹر محمد الیاس صاحب جو کہ والد صاحب کے خلفاء میں سے ہیں شروع سے تیمارداری میں مصروف تھے اور انہیں کے مشورہ سے ڈاکٹروں سے رجوع کیا جا رہا تھا وہ خود ہی ڈاکٹروں سے مشورہ کر رہے تھے۔ خون کا TEST ہوا تو معلوم ہوا BLOOD UREA بہت بڑھ گیا ہے۔ اس کے لئے کافی دوائیں دی گئیں لیکن کوئی افادہ نہیں ہوا۔ تکلیف بڑھتی گئی۔ پیشاب پینا نہ بھی رائے نام پھوڑا تھا، ۲۶ مارچ کی صبح سب ڈاکٹروں کا مشورہ ہوا کہ اسپتال میں داخل کیا جائے لیکن والد صاحب نے نصیحت فرمائی تھی کہ خواہ کیسی ہی حالت ہو جائے ہرگز ہسپتال میں داخل نہ کرنا لیکن بدرجہ اشد ضرورت اور مجبوری ہسپتال لے گئے۔ ناظم آباد میں المریضی ہسپتال میں ڈاکٹر الیاس صاحب کے مشورہ سے داخل کیا گیا کیونکہ وہاں کے ڈاکٹر قمر سے خصوصی تعلقات ہیں اور ہر طرح کی سہولتیں مہیا ہو سکتی تھیں، ہم لوگ دیگر اعزہ و احباب بلبر ہسپتال آتے جلتے رہے، والدہ صاحبہ کی تقویت کی وجہ سے ہم لوگوں کو گھر پر نہ پاؤں۔ ہسپتال میں لوگوں کا ہجوم رہا لیکن کمرے میں جانے کی اجازت نہ تھی۔ والد صاحب کے خاص تعلق رکھنے والے سید ممتاز علی کمرے میں جم کر رہ گئے اور بضد تھے کہ وہ ہر وقت خدمت میں لگے رہیں گے۔ انکو بہت منع کیا لیکن وہ نہ مانے، ہم لوگوں کو ٹھہرنے ہی نہ دیتے تھے۔ بلا کسی مکان کے مسلسل خدمت میں لگے رہے، اللہ تعالیٰ انکو جزائے خیر دے اور درجات بلند کرے۔ انہوں نے حق محبت ادا کر دیا کیوں کہ سید ممتاز علی وہاں موجود رہے اور انہوں نے آخری لمحات کے حالات بڑی محبت سے قلم بند کئے ہیں اس لئے میں انہی کی تحریش کر رہا ہوں۔



## میرے وفات کے حالات بہرہ ناز عتبات علیہ السلام

ہسپتال جاتے ہی ڈاکٹر حضرات نے حضرت کو آکسیجن دینا شروع کر دی۔ دوپہر کے تقریباً دس بجے تھے اس وقت کمرے میں ڈاکٹر ایسا صاحب اور ڈاکٹر حبیب اتق صاحب موجود تھے۔ حضرت والاؒ مجھ سے بار بار فرماتے تھے کہ بھی تم آرام کرو، اللہ اکبر! اتنی بیماری میں بھی اپنے خدام کا اس قدر خیال تھا میں نے کہا حضرت! میں بالکل آرام سے ہوں آپ فکر نہ فرمائیں۔ تھوڑی دیر بعد حضرت نے فرمایا، بھیجیے! یہ ہسپتال کہاں واقع ہے۔ میں نے کہا حضرت! الم آباد میں ڈاکٹر بیل صاحب کے گھر کے پیچھے فرمانے لگے "اچھا جامع مسجد کے پیچھے؟ میں نے کہا بالکل درست۔ پھر فرمانے لگے کیا بارہ بجے ہیں؟ میرے پاس کھڑی نہ تھی، ڈاکٹر ایسا صاحب نے دیکھا تو واقعی پورے بارہ بجے تھے، الحمد للہ حضرت والاؒ چہرے سے بالکل مطمئن نظر آتے تھے اور ہوش و حواس کا یہ عالم تھا کہ تمام دوائیوں کی تفصیل خود ڈاکٹر حضرات سے فرما دیا کرتے تھے؛ کہ بھی ہمیں یہ دوائی دی گئی ہے، اسکا رنگ یہ تھا، نام یہ تھا، پھر یہ انجکشن دیا، اس کا نام یہ تھا وغیرہ وغیرہ، حضرت بڑے ہی پیارے اور معصومانہ انداز میں بار بار فرماتے تھے "میرے اللہ!": اسکے بعد پھر غنودگی کے عالم میں ہو جاتے، حضرت والاؒ کو سردی بھی محسوس ہوتی تھی، فرمانے لگے بھیجیے کبل اڑھا دو: میں نے زس سے کہا کہ بھیجیے کبل لا دو، حضرت فرمانے لگے "ہم ہسپتال کے کبل نہیں لیں گے گھر کے چاہیں": میں نے زس سے کہا "بھئی فی الوقت تو لا دو" بہت جلدی آواز سے کہا تھا، مگر حضرت نے سن لیا اور فرمایا "فی الوقت، برگز نہیں" خیر کچھ دیر بعد گھر سے کبل آگیا:-

حضرت نے چاروں نمازیں یعنی ظہر، عصر، مغرب، عشاء اول وقت میں ادا کیں میں نے کہا حضرت! ابھی کچھ دیر بعد پڑھ لیں، فرمانے لگے نہیں بھیجی، نماز اول وقت ہی پڑھنا افضل ہے۔ دوائی انجکشن اور جوس وغیرہ کا سلسلہ چلتا رہا، اس دوران حضرت نے کئی مرتبہ فرمایا کہ بھیجیے ہم حاجت کے لئے بیت الخلاء ہو آئیں۔ حضرت والاؒ اس حد بامہمت تھے کہ اتنی کمزوری کے باوجود بھی کھڑے ہونے کی کوشش فرماتے؛ تقریباً چار بجے شام کو میں نے حضرت سے کہا، حضرت والاؒ نے احکام میت میں تحریر فرمایا ہے کہ اگر کوئی مریض اپنے لئے دعا کرے تو فرشتے آمین کہتے ہیں" اس پر حضرت نے فرمایا

”ماشاء اللہ“: اور پھر اس قدر دعائیں فرمائیں کہ ڈاکٹر حضرات بھی کہنے لگے کہ حضرت خاموش رہیں۔  
لیکن تھوڑے وقفے کے بعد پھر دعائیں:

یا اللہ مجھے شفا عطار فرمائیے، یا اللہ میرے تمام دوست احباب عزیز و اقارب پر  
رہیں نازل فرمائیے، انہیں عافیت کا ما عطا فرمائیے رزقِ حلال عطا فرمائیے۔ طیب روزی  
عطا فرمائیے انکے رزق میں برکت عطا فرمائیے، یا اللہ اپنے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے صدقے طفیل  
سے انکو تمام برائیوں سے محفوظ فرمائیے۔

وینا ولا تحملنا ما لا طاقة لنا به واعف عنا واغفر لنا وارحمنا  
انت مولانا فانصونا على القوم الكافرين •  
یا اللہ دوائ میں تاثیر عطا فرمائیے،

اور یہ دعاؤں کا سلسلہ آخر دم تک جاری رہا:

عصر کی نماز کے بعد حضرت والا کے خدام بہت زیادہ تعداد میں آرہے تھے ہر ایک  
اپنے پیر و مرشد اور نہایت شفیق اور محبت کرنے والے شیخ کے لیے بے قرار تھا، ہسپتال کے  
کمرے کی کھڑکی جو باہر لان کی جانب تھی تمام خدام اس کھڑکی سے حضرت والا کی زیارت کر رہے  
تھے، میں نے کہا ”حضرت! تمام لوگ آپ کے لئے..... دعائیں کر رہے ہیں اور ڈاکٹر  
حضرات بھی کہہ رہے کہ انشاء اللہ تعالیٰ کل صبح تک تمہارے شیخ اپنے پیروں سے چل کر جائیں گے  
اس لئے تمام لوگ اور بھی مطمئن ہیں“: اس پر حضرت نے فرمایا ”انشاء اللہ تعالیٰ“: حضرت والا  
نے جب سنا کہ بہت سے حضرات کھڑے ہوئے ہیں تو فرمانے لگے کہ ”بھئی انہیں بٹھا دیا جائے“ پھر  
حضرت والا نے ایک ایک کے نام دریافت فرمایا، میں نے تمام حضرات جو وہاں موجود تھے انکا نام  
بتایا اور سب کے لئے نام لے کر بے انتہا دعائیں فرماتے رہے۔ حضرت نے معمول جنبش کے ساتھ  
اپنے چہرے کو ان تمام حضرات کی جانب کر دیا اور فرمانے لگے کہ ”بھئی یہ لوگ بیٹھ جائیں، آسنی  
زحمت نہ کریں، اپنے اپنے کام میں لگیں، وقت ضائع نہ کریں، وقت بہت قیمتی ہے، اور ان تمام  
حضرات کا ہماری طرف سے شکریہ ادا کر دینا اور تمام ڈاکٹر حضرات کا بھی، کچھ دیر بعد مغرب کا  
وقت ہو گیا: حضرت نے فرمایا: ”لاؤ بھئی پھر دے دو تاکہ ہم وضو کر لیں“: اس وقت پتھر یا کوئی

بھی چیز موجود نہ تھی میں بالکل حواس باختہ ہو گیا، کبھی اُدھر جاتا ہوں کبھی اُدھر، حضرت کی قربانت کا یہ عالم تھا فرمانے لگے ”بھئی پریشان نہ ہو، ہمارا بستر تھوڑا آگے کر دو دیوار سے تیمم کر لیں گے“؛ خیر اس وقت تک پتھر آچکا تھا، حضرت والا نے تیمم فرمایا وہ تیمم دیکھنے کے قابل تھا؛ بالکل صحیح تمام ارکان تیمم کے ادا کئے، ہاتھ کو گھومنا مسح کرنا جبکہ ہاتھ میں ڈرب لگی ہوئی تھی اوجھے ڈرنگ، ہاتھ کہ کہیں تکلیف نہ ہو، بہر حال نماز پوری ادا کی یہاں تک کہ نوافل بھی ”اے نبیؐ حضرتؐ فرمانے لگے بھئی ممتاز پڑھو، لا الہ الا انت سبحانک انی کنت من الظالمین، الشہد ان لا الہ الا اللہ و اشہد ان محمد رسول اللہ“ اس دوران جناب ڈاکٹر ایسا صاحب تشریف لے آئے، وہ سورۃ واقعہ، سورۃ یسین، سورۃ ملک حضرت والا کے کان میں سناتے رہے، حضرتؐ آنکھ بند کئے بڑے ہی اطمینان کے ساتھ سنتے رہے اور ماسائلت فرماتے رہے، پھر اسکے بعد عزیز اقارب باری باری ملنے آتے رہے۔

تھوڑی دیر بعد حضرتؐ فرمانے لگے آج کو نسا دن ہے؛ اس وقت آدم ٹیل صاحب بھی تشریف فرما تھے، انہوں نے فرمایا ”حضرت آج بدھ ہے“ اس پر حضرتؐ نے فرمایا ”ماشاء اللہ حضرت والا کے تینوں صاحبزادے، جناب حسن عباس صاحب، جناب احسن عباس صاحب، جناب مستمن عباس صاحب اور عارث میاں (حضرت کے پوتے) موجود تھے، مجھ سے بار بار فرماتے رہے کہ ”بھئی تم آرام کر لو ہم ابھی کے پاس بیٹھ جاتے ہیں لیکن میں نہ مانا اودان حضرت نے خدایتیار سے کام لیا اور اس کا رد کو آخر وقت تک بیٹھے رہے دیا، اور یہ حضرت باہر بیٹھے رہے میں ظہر کی نماز کے بعد سے یہ دیکھ رہا تھا کہ حضرت والا اپنی شہادت کی اٹھلی کو بار بار اپنے لبوں پر رکھتے تھے جیسے کوئی حیرت زدہ منظر دیکھ رہے ہوں“ اور حضرت والا کی طبیعت کچھ بہتر بھی ہو رہی تھی، خیر، عشاء کی نماز کے بعد کیا دیکھتا ہوں کہ حضرتؐ کے سینے میں گھر گھر کی آواز آرہی ہے، جس کی وجہ سے حضرت والا کی طبیعت بگڑنے لگی، اس پر میں گھبرا گیا کہ یا اللہ ابھی تو طبیعت بالکل ٹھیک تھی اب کیا ہو گیا۔

پھر حضرتؐ خود بھی بڑے اطمینان سے فرمانے لگے دیکھو بھئی یہی علت اور تک گئی، شاید بلغم جمع ہو گیا ہے ”فورا ڈاکٹر حضرات کو بلایا، حضرتؐ نے ڈاکٹر مل سے فرمایا ”اب یہ کیا ہو رہا ہے، اور دیکھو ہمارے جلن بھی ہو رہی ہے“ ڈاکٹر قمر نے کہا ”حضرتؐ آپ فکر نہ کریں“



حضرت مسکرائے اور فرمانے لگے "ماشاء اللہ بھی ہم فکر نہ کریں تو پھر کون کرے؟"

لیکن حضرت کی طبیعت بگڑنے لگی اور تے ہونے لگی میں نے کہا "حضرت! آپ تے میرے ہاتھوں میں کر دیں" حضرت نے فرمایا ہرگز نہیں، برتن لاؤ "خیر فوراً برتن منگوا یا پھر حضرت نے اس میں بلغم تھوکا، صفائی کا بہت ہی زیادہ خیال تھا، بار بار روٹی یا رومال صاف طلب فرماتے اور پھر حالت بگڑتی رہی، اور حضرت فرماتے "بھئی سانس لینے میں بڑی دشواری ہو رہی ہے" ڈاکٹروں نے آکسیجن لگا دیا لیکن اس سے بھی کوئی فرق نہیں ہوا، پھر اسکے بعد بلغم صاف کرنے کی شین سے سارا بلغم صاف کر دیا گیا، بہت سارا پانی نکلا، میں نے تمام کپڑے سے صاف کر دیا، حیرت کی بات یہ ہے کہ اس پانی میں معمولی بھی بدبو نہیں تھی، اسکے بعد پھر حضرت فرمانے لگے "پڑھو بھی لا الہ الا انت سبحانک انی کنت من الظالمین" اب سانس میں کچھ آرام تھا، حضرت نے فرمایا بڑی جلدی میں بھی حسن احسن مستحسن اور خورشید کو بلاؤ۔ جلدی بلاؤ، یہ تینوں بھائی فوراً آگئے، حضرت والا نے ان سے فرمایا "جاؤ بھی آرام کرو فی امان اللہ..... اور دیکھو اپنی آپا کا خیال رکھنا، اسکے بعد تمام حضرات تشریف لے گئے، اور ڈاکٹر صاحب دل کی شین لگا کر چلے گئے، اس وقت شاید رات کے دو، یا تین بجے ہونگے اس وقت ڈاکٹر طلحہ اور عارف رضا صاحب موجود تھے جو حضرت والا کے قریبی عزیز ہوتے ہیں، میں حضرت کے سر ہانے کھڑا حضرت کو غور سے دیکھ رہا تھا اور پڑھتا بھی جاتا تھا، خیر حضرت والا کی طبیعت پر کچھ سکون دیکھ کر میں تھوڑی دیر لیٹ گیا، اور میری آنکھ لگ گئی، پھر تھوڑی دیر بعد آنکھ کھلی تو دیکھا کہ ماشاء اللہ حضرت آرام فرما رہے ہیں اور سانس بھی حسب معمول صحیح آ رہا ہے کچھ دیر بعد فجر کی اذان ہو گئی دیکھا کہ حضرت والا کے لب اذان کی آواز پر جنبش کر رہے ہیں۔ میں رفع حاجت کے لئے بیت الخلا چلا گیا، جب باہر نکلا تو حضرت والا کے بھانجے شکیل گھبرائے ہوئے آئے اور کہنے لگے "ممتاز بھائی ماموں کی طبیعت بہت زیادہ بگڑ رہی ہے" میں فوراً بھاگا ہوا کمرے میں داخل ہوا دیکھا ڈاکٹر حضرات حضرت والا کو آکسیجن دے رہے ہیں اور دل سہلا رہے ہیں اس منظر کو دیکھ کر اپنے دل پر قابو نہ رکھ سکا، اور میں زور سے کہنے لگا بھئی یہ تمام چیزیں نہ کرو، ڈاکٹر طلحہ اور عارف رضا صاحب نے مجھے سمجھایا کہ "ممتاز بھائی آپ فکر نہ کریں ابھی ٹھیک ہو جائیں گے لہذا مجھے باہر کر دیا گیا۔"

پانچ منٹ بعد میں پھر اندر گیا تو حضرت والا کی آواز آرہی تھی اور آواز میں کوئی گھبراہٹ  
 نہیں تھی۔ غالباً ہلکے ہلکے کچھ پڑھ رہے تھے۔  
 اور اسکے فوراً بعد میرے پیارے حضرت اللہ کو پیارے ہو گئے۔  
 انا للہ وانا الیہ راجعون

## سفرِ اخیر

۲۶ مارچ چار شنبہ کا دن یہ خوبی گزرا تھا ڈاکٹروں نے ایمان دلایا تھا کہ انشاء اللہ تین روز  
 میں بالکل ٹھیک ہو جائیے گئے، ۲۷ مارچ تقریباً مزید صبح ہسپتال سے مستحسن کا فون آیا کہ حالت صبح  
 نہیں ہے، ہم لوگ حماد ماموں، زاہد ماموں، نسیم دار صاحبہ و دیگر اعزاء خود، پتہ پہنچ گئے،  
 کچھ دیر بعد طبیعت سبھل گئی، میرا ارادہ تھا کہ صبح جیسے لیکن ڈاکٹروں نے ایمان دلایا کہ اب آرام ہو یا  
 ہے، انشاء اللہ صبح تک بالکل ٹھیک ہو جائیں گے، ڈاکٹر ایمان صاحب بھی مطمئن تھے، والدہ صاحبہ کی  
 پریشانی کہ وجہ سے اور اس نیت سے کہ صبح سید متنازل کو آرام کے لئے تین کریم لوگ ہسپتال میں ٹھہرائیں  
 گئے، لیکن مشیت خداوندی کچھ اور تھی، میں صبح جلدی اٹھ گیا اور ارادہ کیا کہ بائے مسجد میں فجر کی نماز جلد از  
 جلد گھر پر ادا کر کے ہسپتال روانہ ہو جاؤں ابھی سنتیں ہی پڑھیں تھیں کہ ہسپتال سے شاید مستحسن کا فون آیا  
 کہ فوراً آجاؤ حالت خراب ہے۔ جلدی سے فرض پڑھ کر ہسپتال کے لئے روانہ ہو گیا، حماد ماموں، زاہد  
 ماموں، عمارت، نسیم دارا..... یہ سب لوگ بھی پہنچ گئے، ڈاکٹر مسلسل کوشش میں لگے تھے لیکن  
 فوجک افان کے ساتھ اس عالم فانی سے اپنے تمام فرائض اور ذمہ داریوں سے بطریق احسن سبکدوش  
 ہو کر رفیقِ اعلیٰ سے جملے اور اپنے پس ماندگان اور خدام تشنہ کام کو ہمیشہ کے لئے بھال جہاں آئے ہو  
 کر گئے، مگر انشاء اللہ تعالیٰ والد صاحب کے انوار و برکات و فیوضِ روحانی ہمیشہ جاری و ساری رہیں  
 گئے اور جن لوگوں کے قلوب پر والد صاحب کی نظر کی میاں ڈھکی ہے، انشاء اللہ تعالیٰ ہمیشہ انکے دلوں

لے یہاں متنازل ملی صاحب کا بیان ختم ہو گیا، آگے جناب حسن عباس صاحب کا مضمون دوبارہ شروع ہو رہا ہے۔

میں نسبت باطنی سے دریا موجزن رہیں گے، بقول حضرت خواجہ صاحبؒ  
ہرگز نہ میرا دھک دیش زندہ شدہ عشق  
ثبت است بر جریۃ عالم دوام ما

۵

حیف در چشم زدن محبت یا آفرشد  
روئے گل سیرندیدیم و بہار آفرشد

میت کو مکان پر لایا گیا۔ تجہیز و تکہین کے انتظامات جناب برادرِ محمد کلیم صاحب نے اپنے  
ذمہ لئے۔ اعزہ اجاب کو فون کے ذریعہ مطلع کرنے کا اہتمام کیا گیا۔ ریڈیو پاکستان نے ۸ بجے سے  
اپنی نشریات میں اعلان شروع کر دیا۔ جلد ہی لوگوں کی آمد کا مانا لگ گیا۔ تقریباً ۹ بجے جنرل  
ضیاء الحق صدر پاکستان کا فون آیا انہوں نے مجھ سے دریافت کیا کہ کس وقت نمازِ جنازہ پڑھ رہے ہیں۔  
میں نے کہا کہ ۴ بجے شام کا وقت مقرر ہوا ہے۔ انہوں نے فرمایا کہ وہ اپنے پروگرام منسوخ  
کر کے ۴ بجے تک پہنچیں گے۔

والد صاحبؒ کا وصیت نامہ تلاش کیا گیا جس میں انہوں نے تفصیل وصیت فرمائی تھی کہ غسل  
کیسے دیا جائے کفن میں کیا اہتمام کئے جائیں۔ مولوی مفتی محمد رفیع عثمانی، مولوی مفتی محمد تقی عثمانی کی  
میت میں محمد کلیم صاحب، محمد بار دن صاحب اور بعض دیگر خدام نے بڑے اہتمام کے ساتھ غسل  
دیا اور کفن پہنایا۔

نمازِ جنازہ پڑھانے اور دفن کرنے سے متعلق کوئی وصیت نہ تھی۔ ہم سب بھائیوں اور بزرگوں  
کے مشورہ سے یہ طے پایا کہ نمازِ جنازہ مولانا رفیع صاحب یا مولانا تقی صاحب پڑھائیں اور دارالعلوم  
کراچی کے قبرستان میں حضرت مفتی اعظم محمد شفیع صاحبؒ کے قریب ہی آخری آرام گاہ ہو۔ شام کے  
۴ بجے نمازِ جنازہ بھی پڑھائی جائے۔ گو ریڈیو سے براہِ اعلان ہو رہا تھا پھر بھی بہت سے حضرات  
کا اطلاع نہ مل سکی۔

ٹھیک تین بجے پہر کو جنازہ اٹھا۔ کندھوں پر حیدری مارکیٹ کے قریب تک لے گئے جہاں سوڈ  
پرائیڈ لیبوں کا انتظام تھا بسوں کے علاوہ سوڈیڑھ سوکڑیں بھی تھیں۔ کندھا دینا مشکل ہو گیا



لوگ والہانڈ ٹوٹ رہے تھے ہر شخص کندھا دینے کے لئے کوشش میں تھا اور جہاں تک پہنچ جاتا پھرتا نہیں چاہتا تھا۔ جنازہ کا قافلہ روانہ ہوا ٹریفک پولیس نے محقول انتظام کیا تھا کہ راستہ میں کہیں رکاوٹ نہ ہو۔ ایک ٹریفک انسپکٹر موٹر سائیکل پر میت بس کے آگے آگے راستہ کو صاف کرتا ہوا جا رہا تھا۔ ہر چوڑے پر ٹریفک کو پہلے سے ہی روک دیا جاتا۔ ہمارا قافلہ بغیر کہیں رُکے ہوئے نہایت آرام سے ۴۴ بجے کوڑنگی کے دارالعلوم پہنچ گیا۔ وہاں لوگوں کا ایک مجموعہ پہلے سے موجود تھا۔ وہاں کندھا دینے کے لئے بانس بانڈھ دیئے گئے تھے پھر بھی اکثر لوگوں کو موقع نہ مل سکا۔ سارے چار بجے صدر ضیاء الحق صاحب بھی تشریف لے آئے، مولانا مفتی جسٹس تقی عثمانی صاحب نے نماز جنازہ کی امامت کی۔ صدر صاحب کے ساتھ گوزر سندھ جنرل جہاندار صاحب بھی تشریف لائے۔

تدفین تقریباً ۵ بجے ہوئی اس کے بعد نماز عصر دارالعلوم ک مسجد میں ادا کی حضرت مفتی محمد رفیع صاحب اور مفتی محمد تقی صاحب نے کھانے کا انتظام کیا تھا اس لئے ہم لوگ رُک گئے۔ تقریباً بشارت کے وقت گھر واپس پہنچے۔

دوسرے دن صبح کافی تعداد میں لوگ تعزیت کے لئے آئے۔ جناب محمد خان جو بیوزیر اعظم پاکستان۔ جناب غوث علی شاہ وزیر اعلیٰ سندھ انکے ساتھ کشن کرچی جناب سردار صاحب و ڈپٹی کشن بھی تھے۔ جنگ و بارت اخبار نے پہلے صفحہ پر جمل حروف میں خبر شائع کی ڈان نے بھی پہلے صفحہ پر خبر شائع کی۔ ریڈیو اوڈی وی پر خبریں نشر ہوئیں۔

حدیث شریف میں ہے کہ ”اللبطون شہید“ یعنی جو پیٹ کی بیماری میں وفات پائے شہید ہوتا ہے۔ حضرت حاجی امداد اللہ صاحب مہاجر مکی حضرت حکیم الامت مولانا تھانویؒ اور حضرت مولانا رشید احمد گنگوہیؒ کا انتقال بھی اسی عارضہ سہال میں ہوا تھا۔

حضرت حکیم الامتؒ کے انتقال کے بعد حضرت مولانا مسیح اللہ صاحب مدرس مدرسہ جلال آباد نے جو حضرت کے مخصوص خلفاء میں سے ہیں دوسری شب میں خواب دیکھا تھا کہ حضرتؒ نے فرمایا کہ میں زندہ ہوں مجھے مردہ نہ سمجھنا جس طرح زندگی میں فیض حاصل کرتے تھے اسی طرح اب بھی کرنا اور اللہ تعالیٰ نے مجھ کو مقام شہداء عطا فرمایا ہے۔

حضرت والد صاحب کے انتقال کے چند روز بعد میری خالہ صاحبہ نے خواب دیکھا کہ آپ گھر میں تشریف فرما ہیں اور چل پھر رہے ہیں بچوں سے باتیں کر رہے ہیں مجھے خیال ہوا کہ کوئی جا کر حماد (ماموں صاحب) کو بلا لائے تاکہ وہ بھی مل لیں پھر میں نے آپ سے دریافت کیا کہ آپ تو انتقال فرما گئے ہیں کیسے تشریف لے آئے فرمایا کہ اجازت مل گئی، پھر آنکھ کھل گئی۔

والد صاحب کا نکاح ۲۴ دسمبر ۱۹۲۴ء کو پھوپھی زاد بہن سے ہوا تھا۔ سید علی سجاد صاحب والد صاحب کے خسر اور پھوپھا تھے۔ اولاد میں چھ لڑکے ہوئے تین کا انتقال کنسی میں ہو گیا تھا۔ تین لڑکے اور اہلیہ بقید حیات ہیں۔

والد صاحب نے بہت تفصیلی وصیت نامہ تحریر فرمایا ہے جس میں تمام حساب اور ترکہ کے متعلق ہدایات درج ہیں۔ اسکے علاوہ اولاد کو اور بہت سی وصیتیں کی ہیں جو کہ عام لوگوں کے لئے بھی بہت مفید ہیں۔ انکو میں آئندہ صفحات میں نقل کر رہا ہوں۔

## معمولہ زندگی

گھریلو زندگی نہایت سادہ تھی، سنت پر عمل کا خاص اہتمام تھا۔ شب و روز بہت مصروفیت میں گذرتے تھے۔ آرام کا وقت بہت کم ملتا تھا، صبح تہجد میں اٹھنے کے بعد بھوک لگتی تھی اس لئے کچھ بسکٹ اور ایک پیالی چائے پینے کا معمول تھا۔ چائے بنانے کی سعادت مجھے نصیب تھی۔ فجر کی نماز پڑھ کر کچھ دیر آرام فرماتے تھے۔ پھر اٹھ کر قرآن شریف کی تلاوت اور اشراق کی نماز کے بعد ناشتہ کرتے تھے اور تقریباً ۸ بجے مستمن لڑکے ساتھ مطب تشریف لے جاتے تھے۔ مطب میں کچھ احباب تشریف لاتے تھے اس لئے وہاں بھی روحانی علاج ہوتا تھا اسکے بعد مریضوں کو دیکھتے تھے۔ واپس میں شمالی ناظم آباد کی مسجد میں نماز ظہر خالو ظفر احمد صاحب کے ساتھ ادا کرتے تھے پھر کچھ دیر کے لئے انکے مکان پر ہوتے ہوئے تقریباً ۲ بجے گھر پہنچتے تھے۔ کھانا کھا کر تھوڑی دیر قیلولہ فرماتے تقریباً ۴ بجے اٹھ جاتے تھے اور کچھ لکھنے پڑھنے کا کام کرتے تھے عصر کے بعد اکثر لوگ ملاقات کے لئے آ جاتے تھے یا پھر لکھنے پڑھنے میں مصروف رہتے تھے یہ سلسلہ عشاء کے وقت تک جاری رہتا خطوط کے

جوابات بھی اتنی اوقات میں لکھتے تھے۔ پیر اور جمعہ کو عصر سے مغرب تک مجلس میں ....  
 فرماتے تھے۔ غدار کے بعد کھانا کھاتے اور پھر یا تو آرام کرتے یا خطوط کے  
 جوابات لکھتے، یا پھر کوئی خاص ملاقاتِ اجاب یا اعزہ میں سے آگیا تو ان سے گفتگو فرماتے۔  
 سونے سے پہلے اوراد و وظائف کا معمول تھا گھر والوں کو بہت کم وقت ملتا تھا پھر بھی سب کا  
 خیال رکھتے تھے اور پوچھتے رہتے تھے۔ سب سے بے تکلف تھے۔ چھوٹے بچوں سے دلچسپی تھی۔  
 گھریلو معاملات میں بھی دلچسپی لیتے تھے اور مشورہ دیتے رہتے، ہم لوگوں کو کبھی کبھی ساتھ کھانا  
 کھانے کا موقوعہ لایا کرتا تھا، انکی گفتگو زیادہ تر نصیحتوں پر ہوتی۔ شکر کی تلقین تو بہت  
 ہی زیادہ کرتے تھے۔ باوجود ضعیفی کے اپنے بزرگوں کی مزاج پرسی کے لئے اکثر جایا کرتے تھے۔  
 عید ہی میں تو اہتمام سے اپنے بزرگوں سے ملنے ضرور جاتے تھے۔ نانا صاحب (سید علی سجاد صاحب مرحوم)  
 کی بیماری کے زمانہ میں معمول بنایا تھا کہ عصر کے بعد ایک گھنٹہ انکے گھر پر جا کر بیٹھا کرتے تھے۔  
 وقت کی پابندی اور معمولات کا اہتمام ہمیشہ رہا، فرمایا کرتے تھے کہ وقت کو اپنا تاج کر لو تو وقت تمہارا  
 تاج ہو جائے گا اور کاموں میں ہرکت ہو جائے گی ارادہ اور محنت سے بڑے بڑے کام ہو جاتے ہیں۔  
 فرمایا کرتے تھے کہ جب آنکھ کھلتی ہے تو نیند سوچے اٹھ بیٹھتا ہوں۔ ایک مرتبہ بیمار تھا اور کافی  
 تعافیت تھی تب ہی میں حسب معمول آنکھ کھل گئی تو اٹھ کر بیٹھ گئے والد صاحب نے فرمایا کہ آج تہجد ناغہ  
 کر دیجئے جو نفل ہے اور اس حالت میں ناغہ ہو سکتا ہے۔ والد صاحب نے جواب میں فرمایا کہ  
 ٹھیک ہے تمہیں کر کے بستر پر بیٹھ کر دو رکعت پڑھ لیتا ہوں تاکہ نام لکھ دیا جائے اور ناغہ نہ ہو۔ پھر  
 خیال ہوا کہ غسل خانہ قریب ہے استنجہ کے لئے چلے گئے۔ واپس آ کر فرمایا کھڑا تو ہو ہی گیا ہوں کہیں نہ  
 نماز کھڑے ہو کر پڑھ لوں۔ چنانچہ نماز کھڑے ہو کر ادا کی بیماری کے علاوہ کبھی بیٹھ کر نماز پڑھتے  
 ہوئے نہیں دیکھا۔

رمضان المبارک میں مجلس کا سلسلہ منقطع رہتا۔ روزانہ عصر کی نماز مسجد میں ادا کرنے  
 کے بعد مسجد میں مغرب تک تشریف رکھتے۔ قرآن مجید کی تلاوت کرتے رہتے یا اور کوئی وظیفہ  
 پڑھتے۔ افطار سے چند منٹ قبل دعا مانگتے جس میں وہاں موجود حضرات بھی شریک ہوتے۔ اٹھا  
 مسجد میں اجاب کے ساتھ کرتے پھر نماز مغرب سے فارغ ہو کر مکان تشریف لاتے۔ کھانا تناول نہ کر



تراجم سے قبل کچھ دیر آرام کرتے، پڑھنے لکھنے کا بچپن سے شوق تھا۔ شاعری طالب علمی کے زمانہ سے ہی شروع کر دی تھی۔ وکالت کے ترک کرنے کے بعد جب ہومیوپیتھک کی پریکٹس کا ارادہ کیا تو بہت کتابوں کا مطالعہ کیا۔ اور دورانِ پریکٹس کئی کتابیں لکھیں۔ ساتھ ساتھ علومِ دینی کی طرف طبیعت راعب ہوئی تو حضرت مجدد ملت مولانا محمد اشرف علی قدس سرہ کی تصانیف اور غطوں کا مطالعہ کثرت سے کیا اور پھر آخر عمر میں متعدد کتابیں لکھیں۔

شاعری میں کافی عبور حاصل کیا۔ کلام کا مجموعہ ”مہربانے سخن“ کے نام سے چھپا۔ جس پر نیاز فتح پوری، حضرت بابا نجم احسن صاحب اور مفتی محمد شفیع صاحب قدس سرہ العزیز نے تقریظ لکھی۔ اور بعد میں مولانا علی ندوی صاحب نے ایک تعریفی خط لکھا ہے جو انشاء اللہ نئے ایڈیشن میں شائع ہوگا۔

پنل قلم اور گھڑیاں جمع کرنے کا شوق تھا۔ طرح طرح کے قلم اور گھڑیاں اکٹھا کرتے تھے جو کہ چند سالوں سے تقسیم کرنا شروع کر دی تھیں۔ ایک صاحب کو قلم دیتے ہوئے فرمایا کہ اب اس کا کام ختم ہو گیا ہے۔ اور گھڑی کا شوق تھا تو اب وقت بھی پورا ہو گیا ہے۔ کتابیں جمع کرنے کا بہت شوق تھا۔ ایک چھوٹی سی لائبریری بنائی تھی جس کے لئے وصیت فرماتے ہیں کہ اولاد در اولاد اسکو قائم رکھا جائے۔

ایسا معلوم ہوتا تھا کہ شفقت اور محبت اپنے اوپر لازم کر لی تھی ہر شخص ہی سمجھتا تھا کہ سب سے زیادہ اس سے محبت فرماتے تھے۔ بہر تعلق رکھنے والے کے لئے خصوصی دعائیں مانگتے تھے اور سونے سے قبل اپنے احباب اور متعلقین کے گھر وں کا حصار کرتے تھے۔

وصیت میں ایک جگہ ارشاد فرمایا ہے کہ: مجھ کو اللہ تعالیٰ نے ظاہر و باطن کی بہت سی نعمتیں عطا فرمائی ہیں۔ دین و دنیا کی فلاح و صلاح عطا فرمائی ہیں۔ زندگی کے تمام معاملات میں اللہ تعالیٰ سے رجوع اور شریعت کے مطابق عمل عادت بن گیا تھا، اس سلسلے کی دو عجیب و غریب سبق آموز واقعات خود میرے ساتھ پیش آئے جن سے حضرت والد صاحب کے مقام بلند کا کچھ اندازہ کیا جاسکتا ہے:-

۱۔ یہ ۱۹۵۷ء کا واقعہ ہے کہ ملازمت کی تلاش میں تھا اس زمانہ میں حکومت پاکستان کے ایک

سکریٹری صاحب والد صاحب کے پاس آیا کرتے تھے۔ والد صاحب نے ان سے میری ملازمت کے لئے کہا اور یہ بھی فرمایا کہ ”یہ کام میں نے اپنے سپرد کر دیا“ اس کے بعد میں ان صاحب سے ملا اور انہوں نے میرے سامنے ایک بڑے ادارے کے چیئرمین کو فون کیا۔ ظاہر ہے کہ سکریٹری کا فون کرنا ہی کافی تھا۔ انہوں نے ملازمت ملنے کا پورا یقین دلایا۔ والد صاحب کو خیال ہوا کہ انہوں سے بہت غلط بات کہ کہہ دیا کہ آپ کے سپرد کیا۔ سپرد تو اللہ تعالیٰ کے کرنا چاہیے۔ اس کا ذکر حضرت مفتی صاحب سے کیا تو انہوں نے تسلی ہی کہ آپ نے یہ بات محض محاورہ کہہ دی ہوگی، لیکن والد صاحب کو تسکین نہ ہوئی اور پھر استغفار کیا اور اللہ تعالیٰ سے دعا کی کہ یہ ملازمت نہ ٹھٹھا چاندی کا وجود اتنی بڑی سفارش کے وہ ملازمت مجھے ملے اور کچھ روز بعد اس سے بہتر ملازمت بغیر سفارش کے دوسری جگہ مل گئی۔

۲۔ بیت الاشرف نمبر ۵ ناظم آباد میں قیام تھا مطب رابین سوڈ پر کرتے تھے۔ روزانہ صبح میرے ساتھ مطب جاتے تھے۔ مطب میرے آفس کے راستے میں تھا۔ ایک روز برٹو روڈ کے قریب میری موٹر ایک دوسری موٹر سے ٹکرا گئی۔ غلطی میری تھی دونوں موٹروں کو کافی نقصان ہوا۔ پولیس والے رپورٹ لکھنے آئے تو والد صاحب نے بیان میرے خلاف دیا اور صاف صاف بتا دیا کہ غلطی انہی کی ہے۔ پولیس انسپکٹر کو تعجب بھی ہوا کہ وہ اپنے بیٹے کے خلاف بیان نکھا رہے تھے، بعد میں میرا اور دوسری موٹر کے مالک کا آپس میں سمجھوتا ہو گیا اور اس طرح سے پولیس سے نجات ملی۔

## منجملہ وصایا

ہر نماز پنجگانہ کے بعد۔ آیۃ الکرسی ایک بار تسبیح فاطمہ۔ درود شریف استغفار، نماز ادا بین ۶ رکعت۔ نماز اشراق ۴ رکعت۔ نماز چاشت ۴ رکعت۔ نماز تہجد ۱۲ رکعت۔ معمولاً ۸ رکعت رکھا جائے۔ جب انبساط ہو ۱۲ رکعت جب کوئی غرض طبعی وغیرہ ہو ۴ رکعت ورنہ نماز عشر کے بعد قبل وتر ۸ رکعت صلوٰۃ الیل کی نیت سے التزاماً پڑھا جائے۔ یہ نماز بمنزلہ نماز تہجد کے ایک درجہ من بھاق ہے۔

سورہ فتح بعد نماز ظہر۔ سورہ واقعہ بعد نماز عصر۔ سورہ تبارک الذی بوقت خواب روزانہ

حبیبنا اللہ نعم الوکیل ۳۴۱۔ بعد نماز عشاء یا جس وقت آسانی ہو۔

لاحول ولا قوۃ الا باللہ۔ دو سو بار۔ بوقت فجر یا جب فرصت ہو۔

کثرت ذکر۔ لا الہ الا اللہ گاہ گاہ محمد رسول اللہ ہر وقت ہر جگہ۔ عادت ڈال لی جائے۔ استغفار اور درود شریف بھی ہر وقت چلتے پھرتے۔ کثرت سے ورد میں رکھا جائے۔ اہتمام نماز باجماعت۔ مسجد میں بیچکانہ۔

مطالعہ۔ مواظبہ۔ ملفوظات۔ مسائل فقہ۔ سبط نبوی وغیرہ

## حضرت حکیم الامت سے تعلق

حضرت والد صاحب قدس سرہاں کے سوانح کا اہم ترین مرکزی نقطہ حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہاں کے ساتھ آپ کا تعلق ہے۔ کیونکہ خود فرمایا کرتے تھے کہ مجھے جو کچھ ملا ہے، حضرت حکیم الامت ہی کے توسل سے ملا۔ حضرت حکیم الامت سے آپ کا تعلق کیسے پیدا ہوا؟ اس کا تذکرہ آپ نے متعدد مجلسوں میں فرمایا، لیکن اب آپ کے کاغذات میں خود آپ ہی کی ایک مفصل تحریر مل گئی جس میں آپ نے اس تعلق کے قائم ہونے کا واقعہ خود بڑی تفصیل کے ساتھ بیان فرمایا ہے۔ ذیل میں آپ کی یہ تحریر باقلم پیش خدمت ہے۔

## اس تعلق کا واقعہ خود حضرت والد صاحب سے قلم ہے

۱۲۹۰ھ میں پھوپھا علی سجاد صاحب کانپور میں نائب تحصیلدار تھے۔ اور میں اس زمانہ میں انگریزی اسکول کرائسٹ چرچ ہائی اسکول کانپور میں ساتویں درجہ میں تعلیم پڑھتا تھا۔ اسی زمانہ میں حضرت خواجہ عزیز الحسن صاحب غوری مظللہ الحال کانپور میں ڈپٹی کلکٹر تھے۔ ہم لوگ ٹھنڈی شرک پر نہر کے قریب رہتے تھے اور خواجہ صاحب پریڈ پر جنگلہ میں رہتے تھے۔ روزانہ صبح خواجہ صاحب قبلہ سیر کے لئے ٹھنڈی شرک تک تشریف لاتے تھے اور پھوپھا صاحب قبلہ کو شرک پر سے آواز دیتے تھے۔ پھوپھا صاحب قبلہ مکان کے جھجے پر سے خواجہ صاحب قبلہ سے باتیں کیا کرتے تھے۔ میں بھی سن کر آتا تھا، اعلیٰ حضرت قبلہ و کعبہ حکیم الامت شاہ محمد اشرف علی صاحب تھانوی کا ذکر مبارک ہوا کرتا تھا، حضرت خواجہ صاحب قبلہ پھوپھا علی سجاد صاحب قبلہ دونوں علی گڑھ کالج میں ایک ساتھ پڑھتے تھے اور ہم وطن بھی تھے اس لئے آپس میں بے تکلفی بہت کافی تھی۔ جب آپس میں ملاقات ہوتی تھی حضرت مولانا تھانوی ہی کا ذکر ہوتا تھا۔ رفتہ رفتہ پھوپھا صاحب قبلہ پر حضرت مولانا تھانوی قدس سرہاں کا بہت اثر ہونے لگا۔



میرے دادا صاحب قبلہ تو مولانا ابو الخیر صاحب قبلہ سے بیعت تھے۔ حضرت ممدوح  
 حضرت مجدد صاحب کے اولاد میں تھے، دہلی میں محلہ چلی قبر میں مقیم تھے۔ دادا صاحب قبلہ اکثر  
 انکی خدمت میں حاضری کے لئے تشریف لے جایا کرتے تھے۔ پھوپھا علی سجاد صاحب قبلہ کے والد بزرگوار  
 خان بہادر منشی سید رضا حسین صاحب میرے والد صاحب قبلہ کے حقیقی ماموں تھے یہ حضرت مولانا  
 احسان الحق صاحب قبلہ رحمۃ اللہ علیہ سے بیعت تھے۔ حضرت شاہ احسان الحق صاحب حضرت شاہ  
 غلام رسول صاحب قدس سرہ العزیز رسول نما کے صاحبزادہ ہیں۔ کاجوہر یکن گنج میں انہیں  
 کی خانقاہ مشہور ہے، اس خانقاہ سے ہم لوگوں کو بہت عقیدت تھی۔ اس لئے جب حضرت مولانا  
 تھانوی کا چرچا گھر میں ہونے لگا تو تمام اعزاء بہت مخالف ہو گئے۔ اور طرح طرح کے اعتراضات  
 شروع ہو گئے، لیکن خواجہ صاحب قبلہ مدظلہ کے ذریعہ سے ردِ بردہ حضرت مولانا تھانوی کی  
 تصانیف کا ہمارے خاندان میں زیادہ اضافہ ہوا گیا، خصوصاً بہشتی زیور اور حضرت کے  
 مواظبت پڑھے جانے لگے۔ ۱۹۱۶ء میں پھوپھا صاحب قبلہ پھلی شہر میں تحصیلدار تھے اور  
 سلسلہ تک وہاں رہے آخر سلسلہ میں حضرت مولانا تھانوی محل شہر تشریف لے گئے وہاں  
 سے واپسی پر پھوپھا صاحب قبلہ حضرت والا کو کاپی بھی ساتھ لائے، اس زمانہ میں ہمارا سارا خاندان  
 کاپی میں مقیم تھا۔ گویا ایک طرح سے وطنی حالت تھی۔ حضرت مولانا تھانوی جس وقت کاپی  
 تشریف لائے تھے اس وقت تمام اعزاء حسن اتفاق سے جمع تھے۔ دسمبر کی آخری تاریخ تھی۔  
 ہم لوگوں نے گویا پہلی بار اُس دن حضرت مولانا کی زیارت کی۔ مجھ پر حضرت والا کی طرف  
 بڑی کشش اور بڑی عقیدت محسوس ہوتی تھی حالانکہ اس وقت میری عمر بیس سال کی تھی اور  
 میں کچھ زیادہ واقف بھی نہ تھا کہ بزرگ کیسے ہوتے ہیں اور ان سے کیا تعلق رکھا جاتا ہے۔ میں  
 نے سب سے پہلی نماز مغرب کی اس روز حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کے پیچھے پڑھی۔ میں کہہ نہیں سکتا  
 کہ اس وقت میرے قلب کی کیا حالت تھی، سراپا شوق اور ہمہ تن وارفتگی کی سی حالت تھی  
 دوسرے روز صبح یعنی یکم جنوری ۱۹۱۸ء کو ہمارے دادا صاحب کاظم حسین صاحب قبلہ  
 کے مکان پر صبح نماز فجر کے بعد حضرت قبلہ رحمۃ اللہ علیہ کا وعظ ہوا۔ اس وعظ کا نام الکاف ہے  
 دادی صاحبہ محترمہ و مظلہ حضرت قبلہ مولانا تھانوی رحمۃ اللہ علیہ سے بیعت ہوئیں۔

دادا صاحب قبلہ نے حضرت سے عرض کیا کہ اسکی بڑی تمنا تھی کہ حضرت سے بیعت ہوں مگر مقام دوری کی وجہ سے کوئی امید نظر نہیں آتی تھی کہ یہ آرزو مستقبل قریب میں پوری ہو سکے گی اللہ تعالیٰ نے اسکی دعا قبول فرمائی اور ایسا انتظام فرمایا کہ حضرت خود یہاں تشریف لے آئے آپکی آرزو پوری ہو گئی اور تو مرید ہوتے ہیں وہ مراد ہیں۔ گھر میں اور بھی بہت عورتیں اور لڑکیاں مرید ہوئیں۔ مردوں میں بھی دو ایک لوگ مرید ہوئے، اسی روز مغرب کے قریب حضرت والا قدس سرہ العزیز۔ دادا صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے ملنے کے لئے اپنے جاٹے قیام سے تشریف لائے حضرت قبلہ جہاں تشریف رکھتے تھے انکے سامنے ہی دادا صاحب قبلہ بیٹھے ہوئے تھے اور دادا صاحب قبلہ کے پیچھے حضرت خواجہ عزیز الحسن صاحب قبلہ مدظلہ بیٹھے ہوئے تھے، ایک دفعہ گہرا کہ دادا صاحب قبلہ نے فرمایا کہ خواجہ صاحب کہاں تشریف رکھتے ہیں دیکھا تو پیچھے بیٹھے ہیں دادا صاحب نے فرمایا کہ مہربانی فرما کر ذرا ہٹ کر بیٹھئے۔ معلوم ہوتا ہے کہ حضرت والا آپ کے قلب کی طرف متوجہ ہیں درمیان میں میرا قلب پڑتا ہے جو اس کا متحمل نہیں ہو سکتا میرے قلب کی حالت دگرگوں ہو رہی ہے۔ دادا صاحب قبلہ پر اس وقت عجیب حالت طاری تھی۔ بڑے ضابطہ اور متحمل مزاج کے آدمی تھے سنجیدگی اور متانت انتہا سے زیادہ فطرۃً حاصل تھی مگر حضرت والا کی موجودگی نے بالکل بخود بنا رکھا تھا۔ حضرت والا دیر تک گفتگو فرماتے رہے بعد میں حضرت والا نے فرمایا کہ بڑے صاحب دل ہیں۔ دادا صاحب قبلہ نے حضرت والا سے ملاقات کے لئے کپڑے تبدیل کئے تھے۔ عمامہ۔ اور عبا وغیرہ زیب تن فرما کر بڑے اہتمام سے ملاقات کے لئے تیار ہوئے تھے۔ اس روز رات بھر دادا صاحب کی عجیب حالت رہی۔ فرماتے تھے کہ رات بھر قلب جاری رہا اور بن، موت، جسم سے ذکر جاری تھا، نیند نہیں آئی۔ اور برابر رقت طاری رہی۔ حضرت والا قدس سرہ العزیز کی ملاقات کا دادا صاحب قبلہ پر بہت اثر رہا اور حضرت والا کی تصانیف برابر مطالعہ میں رکھتے تھے۔ آخر وقت تک اسی مطالعہ کا ذوق و شوق رہا۔ دادا صاحب کا اسی سال ۱۶ نومبر ۱۸۱۸ء کو بروز شنبہ انتقال ہوا۔ میں اسی سال انٹر میں پاس ہوا تھا اور دادا صاحب قبلہ نے تعلیم کے لئے علیگڑھ کالج بھیج دیا تھا۔ میں نے حضرت اقدس رحمۃ اللہ علیہ کے کئی وعظ کا پنور میں سنا۔ بڑے بڑے مجمع میں

وغظ ہوتے تھے۔ اسی سال یا آٹھ سال والد صاحب قبلہ بھی حضرت سے بیعت ہو گئے اور رفتہ رفتہ تمام افراد خاندان حضرت سے بیعت ہو گئے۔ اللہ کا شکر ہے کہ ہمارے خاندان کی حالت بہت سنبھل گئی۔ ہم لوگ بدعات میں تو کبھی الحمد للہ مبتلا نہ تھے البتہ چند رسوم ضرور شامل زندگی ہو گئی تھیں۔ مثلاً شب رات وغیرہ کے حلوے، محرم میں مجالس عاشورہ سادی طور پر محض ذکر الشہادتین پڑھ لی جاتی تھی۔ شربت وغیرہ بن جاتا تھا۔ فاتحہ وغیرہ کے لئے کبھی کبھی کھانا پک جاتا۔ بس اس کے علاوہ اور کچھ نہ تھا عقائد ہمیشہ سے ایسے تھے مگر حضرت والا سے تعلق ہو جانے پر تذکرہ باتیں ترک کر دیں گئیں اور دین کا زیادہ اہتمام شروع ہو گیا۔ الحمد للہ علی احسانہ میں جب تک علیگڑھ میں پڑھتا رہا ہر سال امتحان میں کامیابی کے لئے حضرت والا کو خط لکھا کرتا تھا۔ جس سال بی۔ اے کا امتحان دیا ہے اُس سال بھی دعا کے لئے خط لکھا تھا اس سال میں ناکامیاب رہا۔ پھر علیگڑھ کالج پڑھنے کے لئے گیا۔ اس سال حضرت قبلہ بھی اپنے خاص مرید شفاعت اللہ صاحب پیشکار کے پاس تشریف لائے تھے اور انہیں کے مکان پر قیام تھا۔ مجھ پر کسی ذریعہ سے اطلاع ہو گئی تھی میں بھی جائے قیام پر قدم بوسی کے واسطے حاضر ہوا۔ میں نے اپنا تعارف حضرت سے کرایا۔ پہلے فرمایا کہ میں نے آپ کو پہچانا نہیں جب میں نے پانی اور پھوپھا صاحب قبلہ کا نام لیا تو فرمایا جی ہاں اب پہچان لیا۔ میں نے عرض کیا حضرت میں نے امتحان میں کامیابی کے لئے دعا کرائی تھی مگر اس سال فیل ہو گیا۔ فرمایا ”پھر محنت کرو پھر دعا کریں گے“ پھر میں دیر تک حضرت کی خدمت میں بیٹھا۔ ہا۔ ایک صاحب جو کھدر پوش تھے۔ انہوں نے خلافت کے زمانہ کے علماء کے فتویٰ مطبوعہ اور اس پر عطر اور پھول دکھ کر حضرت کی خدمت میں پیش کیا حضرت نے عطر و پھول اٹھائے اور مطبوعہ فتویٰ انہیں صاحب کو واپس کیا انہوں نے واپس لینے میں تامل کیا۔ حضرت نے فرمایا کہ آپ اسکو لے لیں پھر جو میں عرض کر دوں اسکو سنیں، انہوں نے واپس لے لیا فرمایا۔ میرا یہ نام ہے اور یہ پتہ ہے آپ اس پر ٹکٹ لگا کر بھیج دیجئے گا پھر انہوں نے دریافت کیا کہ حضرت کھدر کا پہننا کیسا ہے۔ فرمایا میں آپ کے شہر میں مہمان ہوں اس لئے آپ ہی کا مہمان ہوا اور مہمان کو اذیت دینا کب مناسب ہے یہ ایسے سائل ہیں جو آپ عذرا مجھ سے پوچھ کر مجھکو تکلیف دینا چاہتے ہیں۔ اس کے بعد انہوں نے اور چند سوالات کئے تھے اس کے جواب فرماتے رہے، انہوں نے پوچھا تھا کہ آپ نے کچھ ایسے اصول بنا رکھے ہیں جو خلاف سنت



ہیں۔ مثلاً بعد عصر سے جب خانقاہ سے مکان جاتے ہیں تو راہ میں اپنے ساتھ کسی کو چلنے نہیں دیتے  
عشاء کے بعد خدام سے پاؤں دبواتے ہیں وغیرہ وغیرہ۔ حضرت نے ان سب کی تردید فرمائی  
اور پھر فرمایا کہ اگر کوئی شخص اپنی راحت کے لئے چند اصول بنالئے تو دوسروں کو اس میں دخل کا  
کیا حق اول تو میرے کوئی اصول ایسے نہیں جن سے دوسروں کو تکلیف ہو بلکہ جن لوگوں سے تعلقات  
نہیں انکو بھی ان سے راحت ہے۔ اس قسم کی باتیں دیر تک ہوتی رہیں۔ پھر میں چلا آیا۔ اسکے بعد  
دوبارہ پھر وہاں حاضری کا موقع نہیں ملا مجھے حضرت سے ہر دفعہ ملکر ایک خاص قسم کا تعلق  
محبت محسوس ہوتا تھا، جس کا قلب پر ہمیشہ اثر رہتا تھا۔

اس کے بعد پھر عرصہ تک کہیں حضرت سے شرف ملاقات حاصل نہیں ہوا۔ البتہ امتحانات  
میں کامیابی کے لئے خطوط بھیجا کرتا تھا البتہ جب ۱۹۲۵ء میں لکھنؤ میں قانون کی تعلیم حاصل کر رہا تھا۔  
اس وقت حضرت کو اپنی اصلاح باطن اور محبت کے لئے خطوط لکھے جن کا اقتباس آئندہ کے  
صفحات میں انشاء اللہ تعالیٰ درج کر دوں گا۔

۲۶ مئی اپریل میں میں نے قانون کا آخری امتحان دیا۔ امتحان سے فارغ ہو کر میں سہارنپور چلا  
گیا وہاں اس زمانہ میں پھوپھا صاحب ڈپٹی کلکٹر تھے۔ کچھ دنوں کے بعد ہم لوگوں کا تعانہ بھون جانے  
کا اتفاق ہوا۔ میرے لئے تعانہ بھون کا یہ پہلا سفر تھا، دادا خان بہادر صاحب قبلہ بھی ہمراہ تھے اور پھوپھا  
صاحب بھی تھے۔ میں نے وہاں پہنچ کر اور حضرت کی زیارت ہونے پر عجیب کیفیت دل میں محسوس کی جو  
بیان سے باہر ہے۔ ہم لوگ حضرت ہی کے یہاں مہمان ہوئے، حضرت ہم لوگوں سے بہت ہی خصوصیت  
سے ملے۔ کھانا بھی ساتھ ہی تناول فرمایا۔ آم کی فصل تھی قلمی آم کھلائے۔ کھانا اندر سے خود لے لے  
کراتے تھے، ہر وقت ہم لوگوں کا خیال فرماتے تھے، میں نے زمانہ تعلیم قانون لکھنؤ سے ایک مرتبہ  
حضرت کی خدمت بابرکت میں ایک عریضہ لکھا تھا کباب تک تو صرف امتحانات میں کامیابی  
کے لئے دعا کے لئے عریضہ لکھا کرتا تھا مگر اب جی چاہتا ہے کہ حضرت مجھے ایسی تعلیم فرمادیں جس سے  
اللہ اور رسول کی محبت دل میں پیدا ہو اور تزکیہ نفس کا ہو اس پر حضرت نے تحریر فرمایا کہ میں فتویٰ  
تو دیتا نہیں مگر یہ باقی ماندہ تعلیم قانون کی پوری کر لی جائے اور پھر مجھ سے زبانی گفتگو کر لی جائے  
فقط اس کے بعد یہ پہلا موقع تھا کہ میں حاضر خدمت ہوا تھا اور امتحان قانون کا نتیجہ نکل چکا تھا

جس میں کامیاب ہو گیا تھا۔ جیسا کہ اس ماضی کے وقت میں موقع دیکھ کر اس خط کے حوالہ سے حضرت کی حدیث میں عرض کیا کہ حضرت نے یوں تحریر فرمایا تھا۔ سن کر فوراً فرمایا کہ جی ہاں مجھے تو صرف یہ کہنا ہے کہ "تارک الوکالت ہونا بہتر ہے بہ نسبت متروک الوکالت ہونے کے"۔ میں نے اس وقت تک وکالت شروع بھی نہ کی تھی نتیجہ کچھ ہفتہ عشرہ گزرا تھا۔ مگر حضرت کا یہ ارشاد پورا ہو کر رہا۔ درمیان میں نو سال گزرتے گئے جس کی تفصیل آگے لکھوں گا۔ خیر ہم لوگ وہاں سے واپس آئے۔ دل میں مگر اک نگاہ کشش سی اس ذات گرامی کے ساتھ پیدا ہو گئی اور رفتہ رفتہ اس کا اثر انداز ہی اندر ہوتا رہا۔

جولائی ۱۹۲۲ء میں عدالتیں جب تعطیل کلان کے بعد کھلیں تو میں نے سہارنپور ہی میں وکالت شروع کی الہ آباد ہائیکورٹ میں نام لکھوایا۔ اور مولوی منفعت علی صاحب جو سہارنپور کے ممتاز وکیل ہیں ان کے ساتھ کام سیکھنا شروع کیا۔ گرامہ نومبر تک چند وجوہات کے ماتحت مجھے ہردوئی آنا پڑا اور اس مادہ میں لکھنؤ چیف کورٹ میں نام لکھوایا۔ اور جنوری ۱۹۲۳ء سے باقاعدہ وکالت ہردوئی میں شروع کر دی۔

ماہ اگست ۱۹۲۳ء میں پھر سہارنپور جانے کا اتفاق ہوا۔ اور خان بہادر صاحب قبلہ اور پھوپھا علی سجاد صاحب قبلہ کے ہمراہ پھر تھانہ بھون جانے کا شرف نصیب ہوا جس وقت ہم لوگ خانقاہ کے قریب پہونچے ایک بیک۔ قلب میں یہ خیال پیدا ہوا اور اسی وقت میں نے دادا خان بہادر صاحب قبلہ سے عرض کیا کہ آپ حضرت سے فرمادیں کہ حضرت مجھے بیعت کر لیں۔ انہوں نے فرمایا کہ تم خود عرض کرو۔ مگر میں نے انہیں سے درخواست کرنے کی استدعا کی۔ چنانچہ بعد نماز ظہر انہوں نے حضرت سے عرض کیا کہ عبدالحی بیعت کی استدعا کر رہے ہیں فرمایا جی ہاں کیا غدر ہے۔ دریافت کیا کہ کس وقت فرمایا بعد نماز مغرب موجود رہنا میں خود بلاؤں گا۔ پھوپھا صاحب قبلہ نے عرض کیا جی ہاں ساتھ ہی کچھ شیرینی بھی منگوا لیا جائے فرمایا کہ کوئی مٹری تو نہیں جیسے آپ کی خوشی ہو۔

**پہلی بیعت روز شنبہ ۲۰ اگست ۱۹۲۳ء**

لہذا علی احسان: بعد نماز مغرب جب حضرت نوافل سے فارغ ہوئے تو مجھ سے فرمایا

کر آجائے میں کچھ ناصلہ پر مسجد میں بیٹھا ہوا تھا اور حضرت اپنی سہ دری کے سامنے ٹہن کے سائبان کے نیچے جو مسجد کی حدود سے علیحدہ ہے۔ نماز پڑھتے ہیں، وہیں مجھ کو بلالیا۔ اور پھر بطریق معلوم بیعت فرمایا۔ اس وقت دہاں کوئی اور قریب موجود نہ تھا۔ بیعت کے بعد فرمایا کہ اگر کوئی حالت کبھی پیش آئے تو مجھ کو مطلع کرنا اور کسی سے کچھ ذکر نہ کرنا اور یہ بھی ارشاد فرمایا کہ ہر ہفتہ اپنے حالات کا خط لکھتے رہنا۔ میں نے عرض کیا اگر کوئی حال نہ ہو اس حالت میں کیا کیا جائے فرمایا یہی لکھ دینا کوئی حال نہیں ہے۔ اس وقت جو میرے دل کی حالت تھی اسکا اظہار لفظوں میں ناممکن ہے۔ اللہ اللہ میری خوش نصیبی کی کچھ انتہا ہے۔ اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم نے اس قدر رحمت واسو کے ساتھ مجھ پر نزل فرمایا کہ جس کا احساس صبح بھی میرے امکان اندازہ سے باہر ہے۔ اس عہد حاضرہ کے اس قدر زبردست شیخ۔ اس صدی کے اتنے عظیم المرتبت مجدد ملت۔ قطب الاقطاب۔ غوثِ زمان بختائے روزگار۔ یگانہ عصر پیر و مرشد کے قدموں کے ساتھ مجھے متوسل فرمادیا۔ مجھے تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ یہ سب میرے بزرگوں کی دعاؤں کی برکت کا ظہور تھا۔ خصوصاً میرے جد امجد حضرت مولوی کاظم حسین صاحب قدس سرہ الغفر جو مجھ سے خاص اور بہت ہی زیادہ محبت فرماتے تھے جنکے آغوشِ شفقت میں میں نے پرورش پائی تھی میرا بچپن ۱۹۱۵ء کے نومبر تک انہیں کی تعلیم و تربیت میں گذرا تھا۔ جہاں توجہات اور دعائیں سہراں ہر لمحہ میرے ساتھ تھیں جن کا یہ کرشمہ تھا کہ مجھے ایسے مرشد کامل کے حلقہ غلامی کا شرف نصیب ہوا میں اللہ جل شانہ کی اس نعمتِ عظیم کا تمام عمر بھی شکر ادا کر دوں تو ناممکن ہے کہ ایک ذرہ بھی شکر کا حق ادا ہو سکے۔ الحمد للہ ثم الحمد للہ۔ ثم الحمد للہ بیعت کے بعد پوچھا صاحب قبلہ نے شیرینی حضرت کے سامنے لا کر رکھ دی پھر حضرت کی اجازت سے اہل خانہ میں تقسیم کر دی گئی دوسرے روز ہم لوگ مکان واپس ہوئے، یعنی میں ہردوئی واپس آگیا۔ اور پوچھا صاحب قبلہ وغیرہ سہارا پور تشریف لے گئے۔

**حضرت والد صاحب کے کا وصیت نامہ اہل خانہ کیلئے**

حضرت والد صاحب نے اہل خانہ کے لئے اتباعِ سنت کے مطابق وصیت نامہ تحریر فرمایا تھا



اس کا ایک حصہ تو ترک وغیرہ سے متعلق ہے، اور ایک حصہ تمام اہل خاندان کے لئے گرانقدر نصائح پر مشتمل ہے، اب ذیل میں وہ وصیت نامہ حضرت والد صاحبؒ ہی کے الفاظ میں نقل کرتا ہوں۔

## میراث پند مرزا خواجہ عظیم پند بن لاہوریؒ

میں نے جو کچھ اپنے باپ اور دادا کی میراث پائی وہ علم دین اور علم دنیا ہے، الحمد للہ جس قدر بھی اپنی صلاحیت و استعداد تھی اس سے نفع بھی اٹھایا جس کی برکت یہ ہے کہ الحمد للہ دین کی تعلیم جو حضرت جد امجدؐ سے حاصل ہوئی تھی اور ان کی توجہات خاص اور دعائیں میرے ساتھ تھیں ان کا نتیجہ یہ ہوا کہ تعلیم انگریزی۔ بی۔ اے۔ (B-A) سن ۱۹۲۲ء اور ایل۔ ایل۔ بی۔ (L-L-B) سن ۱۹۲۶ء پاس کرنے کے بعد اور دس سال تک اعلیٰ علمی از سن ۱۹۰۸ء تا سن ۱۹۲۶ء وکالت سن ۱۹۲۶ء تا سن ۱۹۳۵ء ہر دفعہ، جونپور۔ ہجرت ۱۵ جون سن ۱۹۵۵ء ہر دوں اور جونپور میں وکالت کرنے کے بعد بلکہ دوران زمانہ وکالت میرا تعلق حضرت مرشدی و مولائی شاہ محمد اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ العزیز سے ہو گیا۔ اور یہ تعلق اگست سن ۱۹۵۵ء سے جولائی سن ۱۹۵۳ء تک حضرت کی حیات تک رہا۔ اور الحمد للہ اب بھی روحانی تعلق قوی سے قوی ہے۔

حضرت نے مجھے مجاز بیعت سن ۱۹۵۵ء (جوزی) میں بنایا۔ ذلک فضل اللہ یؤتہ من یشاء: یہ بات قابل ذکر ہے کہ باوجود اسکے کہ میں انگریزی تعلیم یافتہ ہوں اور میں نے عربی یا دین کی کتابیں نجی طور پر تو ضرور پڑھی ہیں لیکن باقاعدہ نصاب سے تعلیم حاصل نہیں کی ہے۔ بایں ہمہ دینی کتب کے مطالعہ کا شوق ابتدا ہی سے رہا اور میں نے کثرت سے حضرت کے مواعظ کا مطالعہ کیا ہے، ملفوظات اور ترمیم السالک کا مطالعہ کیا ہے اور مزید برآں خود حضرت کے مواعظ اور ملفوظات سنے ہیں۔ ان تمام باتوں میں الحمد للہ ایسی تاثیر تھی کہ دین کے متعلق تمام ضروری باتیں ذہن نشین ہو گئیں عقائد صحیح اور مضبوط ہو گئے۔ اعمال میں اہتمام پیدا ہو گیا۔ حسنت کے حاصل کرنے کا تقاضا پیدا ہوا اور معاصی سے نفرت اور مخالفت ہو گئی۔ اور یہی مقصود ہے شریعت اور طریقت کا۔

نہ کوئی مجاہد کے کئے نہ ریاضتیں کیں نہ زیادہ اوراد و وظائف کی مقدار ہوئی۔ نہ زیادہ ذکر وغیرہ کی تعداد پڑھی، البتہ نماز کی بہت زیادہ پابندی اور مسجد میں نماز ادا کرنے کا بہت زیادہ

نکروا ہتمام ابتدائی سن ہی سے رہا۔

کلام پاک کی تلاوت محض ناظرہ بھی زیادہ سے زیادہ ایک پارہ روزانہ معمول رہا تب ہی صبح و شام ایک ایک تسبیح اور استغفار اور درود شریف ایک ایک تسبیح پڑھنے کا معمول رہا۔ ویسے چلتے پھرتے کلمہ طیبہ کا ورد بھی ہوتا رہا۔ وما توفیقی الا باللہ۔

الحمد للہ ان مختصر سے معمولات کا نتیجہ یہ ہوا کہ دینی فہم اور ہتمام عمل اور معاشی سے اجتناب کی توفیق برابر حاصل رہی۔

ایک مشغول شخص کے لئے صرف اسی قدر علم دین اور یہی مختصر سے معمولات انشاء اللہ

بہت کافی ہے۔

دین کی فہم اور صحت ایمانی اور اعمال میں اتباع سنت کی توفیق۔ بزرگان دین ہی کی صحبت بابرکت سے میسر ہوتی ہے، ورنہ پھر دینی کتب کے مطالعہ سے ہوتی ہے، اس کے لئے حضرت مولانا شاہ محمد اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ العزیز کے مواعظ اور ملفوظات بہت ہی زیادہ مفید اور بالکل کافی ثانی ہیں، زیادہ سے زیادہ انکا مطالعہ کیا جائے۔ کتاب اسوۂ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم و تبصائر حکیم الامت۔ معمولات یومیہ کتاب مآثر حکیم الامت۔ ضرور مطالعہ میں رکھی جائے۔ انشاء اللہ پھر کسی دوسری تصانیف پڑھنے کی ضرورت نہیں ہے۔ دنیا کے شرف و فتن سے بچنے کے لئے اور انقلاب معاشرہ کے لہجوں کے لئے بہت ضرورت ہے کہ دین کا زیادہ سے زیادہ ہتمام کیا جائے۔ اور اللہ تعالیٰ سے برابر روزانہ پناہ مانگی جائے۔ اپنے لئے اور اپنی اولاد کے لئے اور اپنے اعزہ و احباب کے لئے دعا مانگنا بھی لازمی ہے

## وقت و روحاضی

اس وقت ایک مومن مسلمان کے لئے سخت آزمائش کا وقت ہے۔

۱۔ عقائد بھی عموماً خراب ہو رہے ہیں، خالصتہ توحید پر ایمان کمزور ہو چکا ہے، آخرت کا خوف دلوں سے ختم ہو چکا ہے۔

۲۔ عبادات میں بھی سنگین کوتاہیاں ہو رہی ہیں، نماز جو عبادات میں سب سے اہم ترین فرض ہے۔

اس کی طرف سے بہت بے رغبتی اور بے محسوس پیدا ہو رہی ہے۔ اور یہ ایک مسلمان کے لئے یقیناً ہلاکت کا باعث ہے اس کا خمیازہ دنیا میں بھی بھگتنا پڑتا ہے اور آخرت میں تو یقیناً بزرگ عذاب سے اللہ تعالیٰ نے اپنے کلام پاک میں مطلع کیا ہے جہاں تک زیادہ سے زیادہ کوشش اور اہتمام کیا جائے کہ گھر کے سب لوگ نماز پڑھیں، خصوصاً عورتوں اور لڑکیوں کو بہت تاکید کے ساتھ نماز پڑھائی جائے ورنہ ہر طبقہ کی تباہی اور بربادی یقینی ہے اللہ تعالیٰ محفوظ رکھیں۔ یہ بات بڑی تاکید کے ساتھ ہے۔ میرے لئے عالم برزخ میں۔ میری اولاد کی کوتاہیوں کی وجہ سے ممکن ہے سخت مواخذہ ہو۔ اللہ تعالیٰ سے اپنے لئے اور اپنی اولاد کے لئے بڑی خصوصیت کے ساتھ پناہ مانگتا رہتا ہوں۔

## فصائح خاصہ دہم

بغیر ہمارے کسی استحقاق کے اللہ جل شانہ نے ہم کو سب سے بڑی نعمت "ایمان کی عطا فرمائی ہے" ایمان کی حفاظت سوائے "اعمال صالحہ" کی پابندی کے ناممکن ہے۔ ایمان کی حقیقت اور اعمال صالحہ کا علم بغیر دینی کتب کے مطالعہ کے کسی اور طرح ممکن نہیں اس مقصد کے لئے حضرت مرشدی و مولائی مولانا محمد اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ العزیز کی تصانیف کا مطالعہ بہت ضروری ہے۔ خصوصاً:

بہشتی زیور، حیات السالین، قصہ السبیل، مواعظ، ملفوظات وغیرہ خصوصاً مواعظ بیخدا نفع ہونگے۔ ان میں تمام تر دینی معلومات بیک وقت حاصل ہو جاتی ہیں۔

اس کے علاوہ میں تاکید وصیت کرتا ہوں کہ دیندار اور اللہ والوں کی صحبت کا ضرور ضرور اہتمام رکھا جائے۔ زندگی کی حقیقت، زندگی کی صلاحیت، زندگی کی عافیت ان حضرات کے فیوض و برکات صحبت سے نصیب ہوتی ہے۔

دوسری ضروری کتابیں برائے مطالعہ: تعلیم الدین، جزائر الاعمال، تبلیغ دین، حقوق الاسلام،

فروع الایمان۔

۱۔ سب سے بڑا حق میرا جو میری اولاد پر ہے وہ یہ ہے کہ وہ میری نصیحت و وصیت کو دل



سے مائیں اداس پر عمل کریں۔

۲ — مجھ کو اللہ تعالیٰ نے ظاہر و باطن کی بہت سی نعمتیں عطا فرمائی ہیں۔ دین و دنیا کی بہت سے فلاح و صلاح عطا فرمائی ہیں جن کا منجملہ اولاً سبب و وجوہات کے یہ بھی ایک سبب ہے کہ مجھ کو اللہ تعالیٰ نے دین کی عظمت دل میں عطا فرمائی ہے میں ہمیشہ سے لوگوں سے بزرگوں کی خدمت میں بیٹھا کرتا تھا۔ میں نے اپنے بڑوں کی خواہ وہ اہل خاندان ہوں یا غیر ہمیشہ عزت کی۔ میں نے اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کی ہمیشہ قدر اور اس پر شکر ادا کرنے کی عادت ڈالی۔ میں ہمیشہ باعزت لوگوں سے ملاقات پیدا کرتا رہا۔ میں ہمیشہ ظاہر و باطن کی پاکی کا اہتمام کرتا رہا، ہمیشہ اپنے بزرگوں کی وضع قطع اختیار کی۔ تم بھی اگر چاہتے ہو کہ دین و دنیا کی عزت حاصل کرو تو یہی طریقہ اختیار کرو۔ انشاء اللہ تعالیٰ تم پر اللہ تعالیٰ کا بہت بڑا فضل و کرم ہوگا۔

۳ — میری اولاد پر میرا یہ بھی حق ہے کہ وہ روزانہ یاد کر کے ایک بار سورہ یسین شریف یا کم از کم تین بار سورہ اخلاص پڑھ کر ایصالِ ثواب کرو یا کریں۔

۴ — عالم برزخ میں ہر مہفتہ اولاد کے اعمال انکے والدین کے سامنے پیش ہوتے ہیں۔ اس لئے مجھ کو وہاں کی اذیت سے محفوظ رکھیں۔

۵ — اتباعِ شریعت اور اتباعِ سنت میں آخرت اور دین کی عزت تو قطعی ہے لیکن دنیا میں بھی ساری عزت اور عافیت بھی انہیں میں منحصر ہے۔ اس لئے ہرگز ہرگز غفلت نہ کریں ورنہ بُری محرومی ہوگی۔

۶ — قرآن شریف کی تلاوت بہت ضروری ہے۔ روزانہ کوئی مقدار کم از کم ایک پارہ مقرر کردہ ضرور پڑھنا چاہیئے اگر قرآن شریف کا ترجمہ پڑھا جائے تو اسکے مطالب میں ہرگز غور نہ کیا جائے۔ اس سے بہت گمراہی پیدا ہو جاتی ہے، قرآن شریف کے مضامین بہت نازک ہیں کسی سمجھدار دیندار عالم سے پڑھنا چاہیئے۔ جو اشکال ہوں وہ بھی کسی عالم سے حل کرنا چاہیئے۔ بخود عقل نہ لگانا چاہیئے۔

حدیث شریف کا ضرور مطالعہ کرنا چاہیئے، مثلاً بخاری شریف۔ مشکوٰۃ شریف۔ شمائلِ ترمذی۔ وغیرہ سیرت النبوی ضرور مطالعہ کرنا چاہیئے۔ اسی طرح سیرت صحابہ کا ضرور مطالعہ کرنا چاہیئے۔ دینی کتب کا مطالعہ روزانہ کرنا چاہیئے۔ مثلاً بہشتی زیور۔ حیات المسلمین۔ تبلیغ دین۔ قصد البیہل اس کے

جسمانی صحت و تندرستی بڑی قابل حفاظت نعمت ہے اس کے زائل ہونے سے طبیعت میں سکون باقی نہیں رہتا۔ اس کے تحفظ کے لئے خاص اہتمام رکھنا چاہیے اور اس کے اہتمام کے لئے منظم الاوقات کا قائم رکھنا نہایت ضروری ہے یعنی وقت کے تعین کے ساتھ کھانا پینا سونا، آرام کرنا، تفریح کرنا کچھ ملکی سی ورزش کرنا، ان سب کے لئے روزانہ کی زندگی میں وقت کا تعین ضروری ہے تاکہ ہر بات اپنے وقت پر ادا کرنے کی عادت ہو جائے اگر مددخواستہ کوئی بیماری لاحق ہو جائے تو اس سے بے تکی نہ کی جائے اور جلد اس کا تدارک کر لیا جائے۔  
درز بعض وقت مرض پیچیدہ، درد شوارالعلاج ہو جاتا ہے۔ ۱۱۱ (افاد امین عارفیہ)

علاوہ حضرت حکیم الامت مجدد ملت مولانا محمد اشرف علی صاحب قدس سرہ العزیز کے مواعظ و ملفوظات بہت ضروری ہیں حضرت مرشدی قدس سرہ العزیز سے جو میری خط و کتابت ہوئی ہے وہ مکتوبات اشرفیہ میں جمع ہے اس کا مطالعہ بھی بہت ہی نافع ہے۔

۱۔ حضور سرور عالم رحمت دو عالم، ہادی اعظم، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے تاکید فرمائی ہے کہ جس مسلمان کو اپنی کسی چیز کے متعلق وصیت کرنا ہو تو وہ دو رات بھی اس حالت میں نہ گزارے کہ وہ وصیت اس کے پاس لکھی ہوئی رکھی نہ ہو۔ فقط :

۲۔ حضرت حکیم الامت مجدد ملت مرشدی و مولائی محمد اشرف علی صاحب قدس سرہ العزیز نے وصیت نامہ تحریر کرنے کی عملی تعلیم دی ہے اور ہمیشہ اسکے لئے تاکید فرماتے رہے ہیں چنانچہ اشرف السواخ حمد سوم میں اس کا نمونہ درج فرمایا ہے۔

۳۔ انہیں ارشادات کی تعمیل میں چند سطور میں نے بھی تحریر کی ہیں، اسکی اہمیت اسکے مطالعہ کرنے اور بار بار مطالعہ کرنے سے معلوم ہوگی۔

۴۔ زندگی کے دوران میں مختلف لوگوں کے ساتھ مختلف معاملات کے سابقہ رہتا ہے، اعزہ کے ساتھ بھی اور احباب کے ساتھ بھی، اور دوسرے لوگوں کے ساتھ بھی، اس لئے فطری امر ہے کہ کسی نہ کسی عنوان سے ضرور کوئی بات ایسی ہو جاتی ہے جو خلاف طبع ہو، یا جس میں کسی قسم

کے حق کا آلف ہو۔ مثلاً عزت، آبرو، مال وغیرہ کا۔

اس لئے پیش نظر اس امر کے حقوق العباد و راستگین مسئلہ ہے۔ اور آخرت میں اس کا بہت سخت مواخذہ ہے۔ اللہ تعالیٰ محفوظ رکھیں اور معاف فرمادیں۔ آمین۔ میں اس بات کی کوشش کرتا ہوں کہ سب اہل معاملہ سے معافی مانگتا رہوں پھر بھی میرے مرنے کے بعد میرے وارث اگر میرے اعزہ اور اقربا اور احباب سے عند الملاقات میری طرف سے معافی مانگ لیں تو بہت بہتر ہے تاکہ مجھ پر کسی قسم کا مواخذہ آخرت میں نہ ہو، جو بہت ہی شدید بات ہے۔ میں دل و جان سے سب کو معاف کرتا ہوں جنکی وجہ سے میرا کسی قسم کا بھی کوئی حق تلف ہوا ہو۔ اللہ تعالیٰ انکو معاف فرمادیں۔ آمین۔

### مہم جو صبا یا دنصاح

اس کا اہتمام رکھنا چاہیے کہ شرافت نسی قائم رہے۔ اپنے عادات و عساکل۔ اپنی معاشرت لوگوں سے معاملت اور طرز عمل ہمیشہ شریفانہ اور متعلا نہ ہونا چاہیے۔ لباس و پوشاک میں بھی دیندار اور وضع دار لوگوں کی س حالت رکھنا چاہیے۔ اپنی وضع۔ اپنے اخلاق۔ ضرور عوام سے ممتاز رکھنا چاہیے۔ شرافت نسی بہت بڑی نعمت ہے اسکی حفاظت کرنا چاہیے۔

ہم لوگ صدیقی النسب ہیں۔ اس لئے کچھ تو خصوصیات صدیقیت پیدا کرنا چاہیے۔ حضرت صدیق کی سیرت کو مطالعہ کرنا لازمی ہے۔ محض نام کے آگے لفظ صدیقی بڑھانا اور صورت شکل ویسی نہ ہونا۔ سخت بے ادبی اور گستاخی ہے۔ یہ محض مغربی نصاریٰ کی اتباع ہے جو حد درجہ مذموم ہیں۔ اپنی معاشرت کو دینی اور اسلامی معاشرت بناؤ۔ اسی زندگی میں لذت ہے اور اسی زندگی میں عافیت ہے۔ مغربی تہذیب کی ہر بات بہت دلکش اور آسان اور صاف ستھری معلوم ہوتی ہے لیکن آخر میں وبال جان بن کر رہ جاتی ہے۔ میں اپنے ذاتی تجربہ سے کہتا ہوں کہ مغربی تہذیب پناہ مانگنے کی چیز ہے۔

پر وہ بہت ضروری ہے۔ خدا اور اسکے رسول کا حکم ہے۔ اسکے خلاف کرنے والوں کو بڑی شرمناک اور عبرت ناک سزائیں ملا کرتی ہیں۔ بیحیاں، بے غیرتی، دیوٹی پیدا ہوتی ہے۔ بھانگی



زندگی بے کیف ہو جاتی ہے آپس میں بدظنی اور بدگمانی پیدا ہونے لگتی ہے۔ طبیعت میں کینہ پن پیدا ہو جاتا ہے۔ غور کرو اور دیکھو دنیا میں کیا ہو رہا ہے۔ اپنے تعلقین کو اسکے انجام کار کی تباہی اور بربادی سے بچاؤ۔ ورنہ یہ ایسا نقصان ہوگا جس کی تلافی ناممکن ہے۔

اپنے تعلقین کے ساتھ بہترین سلوک کرو۔ حدیث شریف میں ہے کہ بہترین شخص وہ ہے جو اپنے اہل و عیال کے ساتھ اچھا سلوک کرتا ہے۔

اپنے اعزہ و اقربا کے ساتھ ہمیشہ حسن سلوک کرنا چاہیئے۔ ان سے اگر تکلیف پہونچے۔ صبر کرے بدلہ نہ لے، معاف کر دے۔ اور جب انکو کسی مدد اور اعانت کی ضرورت ہو۔ ہرگز دریغ نہ کرے یہ بڑی شرافت اور بڑے حوصلہ کی بات ہے۔ حدیث شریف میں اس کی بڑی تاکید ہے۔

والدین کی اطاعت بہت بڑا سرمایہ سعادت ہے، ایمان و اسلام کے بعد۔ اللہ اور اللہ کے رسول کی محبت کے اور ادائے حقوق کے بعد جو درجہ اہمیت حقوق کا ہے وہ والدین کا ہے زندگی میں انکی خدمت کر کے انکو راضی رکھنا۔ اور انکی خوشنودی حاصل کرنا اور انکے مرنے کے بعد انکے لئے دعائے مغفرت اور ایصالِ ثواب کرتے رہنا واجب ہے۔ ایصالِ ثواب مال بھی ضرور ہونا چاہیئے۔

آپس میں بھائیوں میں محبت رکھنا بڑی تقویت کا سبب ہے۔ ایک دوسرے کی رواداری لحاظ۔ عزت و محبت کرتے رہنا چاہیئے۔ ایک دوسرے کی کوتاہیوں پر چشم پوشی کرنا چاہیئے۔ بیویوں کی وجہ سے بھائی سے جگاڑ کر لینا بڑی جہالت اور حماقت ہے۔ بھائی کے تعلق محبت کے مقابلہ میں ہر دوسرے جذبات کا ایثار کرنا بہت ضروری ہے۔ ورنہ عافیت خراب ہو جاتی ہے۔ کوئی معاملہ ہونو اسکی غیر جانبداری تحقیق کر لینا چاہیئے، محض کسی ایک کی روایت پر بدگمانی اور بدظنی نہ کرنا چاہیئے۔

اپنی بیوی کے ساتھ بھی نہایت حسن سلوک اور مراعات کی ضرورت ہے۔ وہ ایک مجبورستی ہے۔ اسکی تمام معسرتوں اور راحتوں اور نفرت و حمایت کا انحصار تمہاری محبت اور توجہات پر۔ تمام عمر اور تمام زندگی کے ہر شعبہ کی عافیت اس کے ساتھ کچھتی پر منحصر ہے۔

## حضرت والد صاحب کے بارے میں اکابرین کے تاثرات

مث ہوشل ہے کہ جوہر کی قدر جوہر ہی جانتا ہے۔ چنانچہ حضرت والد صاحب کے بارے میں اکابرین عصر نے مدح و توصیف کے تاثرات ارشاد فرمائے۔ بعض نے بشارتیں بیان فرمائیں۔ یہ تاثرات ذیل میں پیش خدمت ہیں:-

## حضرت حکیم الامت مجدد ملت شاہ محمد اشرف علی تھانویؒ

۱۔ ۵ جنوری ۱۲۹۷ھ مقام بردول والد صاحب نے خواب دیکھا :

کسی خاص مقام پر ہوں ذہن میں نہیں کہ وہ کون سی جگہ ہے۔ میں لیٹا ہوا ہوں حضرت مرشدی مولائی حکیم الامت مدظلہ میرے قریب بیٹھے ہوئے ہیں۔ فرار ہے ہیں رموز سینہ ہوتے ہیں وہ تہارے سینہ میں بھرے دیتا ہوں۔ یہ کہہ کر حضرت قبلہ جلد جلد میرے سینہ پر ہاتھ پھیر رہے ہیں اور کچھ پڑھتے جاتے ہیں۔ میری عجیب حالت ہے عجیب طرت کی کیفیت محسوس ہو رہی ہے۔ کچھ دیر یہ حالت رہی پھر آنکھ کھل گئی۔

۲۔ ایک مرتبہ دوران قیام تھانہ بھون میں جبکہ میرے دو چھوٹے بھائیوں کا انتقال ہوا تھا والد صاحب ایک دفعہ حضرت کی مجلس میں نہ جاسکے۔ شام کو حضرت مفتی محمد شفیع صاحب تشریف لائے اور والد صاحب کے قریب بیٹھ گئے۔ جب والد صاحب ذرا کھسکے تو وہ اور قریب ہو گئے اور فرمایا کہ آپ کے پاس بیٹھنے آیا ہوں کیونکہ آج کی مجلس میں حضرت صرف آپ ہی کا ذکر کرتے رہے۔

۳۔ دوران قیام تھانہ بھون ایک روز والد صاحب حضرت کے ہمراہ خانقاہ سے گھر جاتے ہوئے ساتھ ہوئے۔ راستہ میں حضرت نواب جمشید علی خان صاحب کا ذکر کرتے رہے کہ وہ حضرت کے مکان پر ٹھہرے ہوئے ہیں۔ جب تک مکان پر پہنچے تو والد صاحب سے فرمایا کہ ذرا تھوڑی دیر ٹھہرنا۔ والد صاحب باہر کے کمرہ (ڈیوڑھی) میں کھڑے انتظار کرتے رہے کچھ دیر بعد حضرت پیرانی صاحبہ نے دستک دی اور ایک پیالہ میں کچھ سالن اور آدھی روٹی

غایت فرائی کہ کھالو حضرتؑ نے کھانے کے بعد اپنے سامنے کا بچا ہوا سالن اور روٹی ازراہ شفقت والد صاحب کو خصوصیت کے ساتھ بھجوائی تھی۔ والد صاحب فرماتے تھے کہ میری عجیب کیفیت تھی کچھ سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ کیا کروں سر پر رکھوں یا کھاؤں۔ بہر حال وہیں زمین پر بیٹھ کر کھالیا۔

۴۔ جس وقت والد صاحبؑ نے دسمبر ۱۹۲۵ء میں وکالت ترک کی عمر ۳۸ سال تھی جب حضرتؑ کو مطلع فرمایا تو وہ بہت خوش ہوئے مجاز بیعت بنایا اور فرمایا کہ اسی کا انتظار تھا۔

۵۔ دوران مرض وفات حضرت حکیم الامتؑ نے چند روز والد صاحبؑ سے ہومیوپیتھک علاج بھی کرایا۔ ایک روز والد صاحبؑ نے کچھ غذاؤں سے پریمیز کے لئے مرض کیا حضرتؑ نے فرمایا کہ مجھ سے پریمیزی غذائیں نہیں کھائے بنتیں ہیں۔ والد صاحبؑ نے عرض کیا کہ اس ہال معدی میں حضرت کے ضعف اور مرض کے لحاظ سے بلکی اور دود مضم غذا میں جوڑ کر جاسکتی ہیں، فرمایا جی ہاں ساری مشق اور احتیاط ہمارے ہی لئے ہے ہم نے تم سے کوئی پریمیز نہیں کرایا۔ صرف معمول نوک پک درست کر کے جانے کہاں سے کہاں پہونچا دیا۔

۶۔ حضرت حکیم الامتؑ کی نگاہ کرم والد صاحبؑ پر روزِ اول ہی ہو گئی تھی جو کہ حسبِ ذیل واقعہ سے ظاہر ہوتی ہے۔ والد صاحبؑ نے اپنی بیاض میں ایک جگہ تحریر فرمایا ہے، دسمبر ۱۹۱۸ء کی آخری تاریخ تھی ہم لوگوں نے گویا پہلی بار حضرت مولاناؒ کی زیارت کی۔ مجھے حضرت والا کی طرف بڑی کشش اور بڑی عقیدت محسوس ہوتی تھی۔ حالانکہ اس وقت میری عمر بیس برس تھی میں کچھ زیادہ واقف بھی نہ تھا کہ بزرگ کیسے ہوتے ہیں اور ان سے کیا تعلق رکھا جاتا ہے۔ میں نے حضرت کے پیچھے سب سے پہلی بار مغرب اسی روز پڑھی میں کہہ نہیں سکتا کہ اس وقت میرے قلب کی کیا حالت تھی۔ سراپا شوق اور مہرتن وارفتگی کی سی حالت تھی۔

۷۔ ۲۰ اگست ۱۹۲۲ء کو والد صاحبؑ کے اصرار پر ہمارے بزرگ حضرت خان بہادر منشی رضا حسین صاحبؑ نے حضرتؑ سے عرض کیا کہ عبدالحق بیعت کی استدعا کر رہے ہیں۔ فرمایا ”جی ہاں کیا عذر ہے“ پھر فرمایا کہ ”بعد مغرب قریب موجود رہنا میں خود بلاؤں گا۔“

۸۔ والد صاحبؑ حضرت حکیم الامتؑ کے مرض وفات کا تفصیل حال لکھتے ہوئے ایک



جگہ تحریر فرماتے ہیں "خدا کا شکر ہے کہ ایک بار اس کا بھی موقع ملا اور دیر تک میں نے حضرت اقدس کے پاؤں دبائے مجھے وہ منظر بھی یاد ہے کبھی کبھی حضرت اقدس آنکھیں کھول کر ایک خاص انداز سے نظر میری طرف ڈالتے تھے"

عارفی پیرمغاں نے ایسی کچھ ڈالی نظر  
میری ہستی مظہرِ اعجاز ہو کر رہ گئی  
بارِ یاسِ مجلسِ اشرف رہا ہوں عارفی  
یہ شرف میرے لئے سرمایہٴ صدناز ہے

دیکھتے ہیں مجھ کو عزت کی نگاہ سے اہل دل  
اللہ اللہ انکی نسبت میں بھی کیا اعجاز ہے

## حضرت مفتی اعظم مولانا محمد شفیع صاحبؒ

۱۔ حضرت مفتی صاحبؒ نے "ناثر حکیم الامت" کی تقریظ میں تحریر فرمایا ہے کہ:-  
خانقاہِ امدادیہ تھانہ بھون کہئے یا ایک دوکانِ معرفت۔ اس کے دو اقل کا ذکر ہے ہی بزرگوں  
سے سنا ہے۔ البتہ دوسرے دور میں سیدی حکیم الامت قدس سرہ کی مجلس کو بھجوا لیا آنکھوں سے  
دیکھنے کا شرف حاصل ہوا ہے۔ ۵۔ نازم پشیم خود کہ جمال تو دیدہ است  
اس مجلس کے جرعد نوش ملک بھر میں لاکھوں کی تعداد میں پھیلے ہوئے تھے اور بھجوا لیا  
تک بھی بہت سے موجود ہیں۔ کراچی میں ہمارے محترم بزرگ حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحب دامت برکات  
کو حق تعالیٰ نے حضرت سے بچند وجوہ خصوصیت عطا فرمایا تھا۔ خلیفہٴ مجاز تو بھجوا لیا اور بھی بہت  
مگر شیخ کارنگ جن میں جھلکتا ہو وہ کم ہی ہو کرتے ہیں۔ ہمارے محترم خواجہ عزیز الحسن صاحبؒ  
محبوب نے فرمایا تھا

مجھے دیکھ آئینہٴ یار ہوں جلا کردہٴ دستِ دلدار ہوں

اللہ تعالیٰ مبالغہ اور تزکیہ من غیر حق سے محفوظ رکھیں، ڈاکٹر صاحبؒ کو دیکھ کر مجھے مجتہد  
صاحبؒ کا یہ شعر یاد آیا کرتا ہے اور جب انکو دیکھتا ہوں تو عموماً اصغر گونڈوی کا یہ مصرع زبا

پر بھی آجاتا ہے ۛ

ابھی کچھ لوگ ہیں ساقی کی محفل دیکھنے والے

اب اس زمانہ میں تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ حق تعالیٰ نے حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے فیوض و برکات کو مسلمانوں میں عام کرنے کے لئے ہمارے محترم ڈاکٹر صاحب کو چن لیا ہے اللہ تعالیٰ ہم کو اور سب مسلمانوں کو آپ کے فیوض و برکات سے نفع عطا فرمائیں۔

۲۔ حضرت مفتی صاحب نے اپنے دو صاحبزادگان مولانا محمد رفیع عثمانی صاحب اور مولانا محمد تقی عثمانی صاحب کو والد صاحب سے بیعت کرایا اور تربیت دینی کے لئے انکے سپرد کیا۔ حالانکہ دونوں خود بھی عالم دین ہیں۔

۳۔ حضرت مفتی صاحب والد صاحب سے کتنی شفقت فرماتے تھے اسکا اندازہ لگانا ہم لوگوں کے لئے دشوار ہے۔ بزرگان دین کے آپس کے تعلقات وہی بہتہ سمجھتے ہیں۔ ہم لوگ چند ظاہری واقعات سے ہی کچھ اندازہ لگا سکتے ہیں۔

ایک روز حضرت مفتی صاحب مکان پر تشریف لائے تو والد صاحب سے فرمایا کہ آپ کا کردار دیکھنا چاہتا ہوں۔ میرے چھوٹے بھائی مستحسن عباس موجود تھے وہ مفتی صاحب کو اندر رکرو میں لے گئے۔ وہاں انہوں نے دریافت فرمایا کہ ڈاکٹر صاحب کا بستر کون سا ہے۔ انکو بتایا گیا تو آپ اس پر تشریف فرما ہوئے اور فرمایا کہ میں کوننگی سے محفل اس پر بیٹھنے آیا تھا۔ تفصیل یاد نہیں۔ بہر کیف اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ آپ کو حضرت والد صاحب سے کتنا قوی تعلق تھا۔

## حضرت سید سلیمان ندوی صاحب

۱۔ جب حضرت ندوی صاحب جو نور تشریف لائے تو ۲ نومبر ۱۹۴۳ء کو حسب ذیل اشعار لکھ کر والد صاحب کو دیئے۔

ترے روئے روشن پہ وہ نور ہے      کہ بے پردہ ہو کر بھی مستور ہے  
چلا چل تو منزل بہ منزل یونہی      ٹھہرنے کی منزل ابھی دور ہے

کشش پر ہے قائم نظام وجود  
یہ لکھ اک محبت سے معمور ہے  
جانے وہ ہیں جلوہ فرما کہاں  
جدھر دیکھئے نور ہی نور ہے !  
تراش سے خون جگر کی سند ڈر  
کہ مہم سراپا یہ ناسور ہے  
یہ عالم ہے دل کا غم عشق میں  
کہ مخموم ہو کر بھی سرور ہے  
ابھی قطع کرا اور راہ طلب  
مقام محبت بہت دور ہے !  
یہاں آج پہلی غزل یہ ہوئی  
یہ آغاز فیض جو نپور ہے !

۲ — سید صاحب نے وصیت فرمائی کراچی نماز خانہ ولہذا پڑھائیں۔ چنانچہ ان کے صاحبزادہ  
سلمان میاں نے والد صاحب سے نماز پڑھانے کی درخواست کی۔  
۳ — سید صاحب کے وصال کے بعد والد صاحب نے تین مرتبہ سید صاحب کو خواب  
میں دیکھا۔

## خواب

- ۱ — پانچ چھ روز کے بعد خواب میں دیکھا جو خوب اور اچھی طرح یاد نہیں ہے، لیٹے  
ہوئے ہیں اور اپنے پاؤں کو دوسرے پاؤں کے پنجہ پر رکھ کر دبا رہے ہیں جس سے معلوم ہوتا ہے  
کہ درد وغیرہ ہے میں نے پاؤں دبانا شروع کیا۔ فرمایا کہ تم اپنے وقت کے بڑے لوگوں میں  
ہو گے اس کے بعد کچھ یاد نہیں ہے۔ فقط۔ ۱۵ دسمبر ۱۳۲۷ء
- ۲ — تین چار روز کے بعد میں نے خواب میں دیکھا کہ ایک مضمون پڑھ رہے مجھے خیال ہوتا  
ہے کہ گویا یہ مضمون میرا لکھا ہوا ہے۔ طالب علمی کے زمانہ کا ہے، میں نے سر مبارک کے  
قریب جا کر مضمون میں دیکھا کہ اس مضمون کا عنوان کیا ہے۔ سرخی میں لکھا ہے کہ صحیح  
طریقہ مولود شریف۔ یا اسی مفہوم کی کوئی عبارت تھی، مضمون میں میں نے دیکھا کہ حضرت  
سید صاحب کا اسم گرامی بھی گویا حوالہ کے طور پر لکھا ہوا ہے۔ مجھے خوشی ہوئی کہ سید صاحب  
ملاحظہ فرما کر مسرور ہونگے۔ جو کچھ فرمایا ہے مجھے یاد نہیں رہا۔
- ۳ — آج رات میں نے خواب میں دیکھا کہ حضرت سید سلیمان صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے  
دیر تک تنہائی میں گفتگو رہی۔ خواب اچھی طرح یاد نہیں ہے، صرف آخری حصہ کچھ یاد ہے۔



حضرت مولانا سید سلیمان صاحب ندوی قدس سرہ کا علمی مقام محتاج تعارف نہیں،  
آخر میں حضرت نے اپنے تمام علم و فضل کے باوجود حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی صاحب  
تھانوی قدس سرہ سے اپنی اصلاح کے لئے رجوع فرمایا۔ اور حضرت کی طرف سے بیعت  
کی اجازت عطا ہونے کے بعد حضرت کے اجل نظارہ میں شامل ہوئے۔ حضرت والد صاحب  
کے ساتھ حضرت سید صاحب کا بڑا والہانہ تعلق تھا۔ اسی تعلق کا نتیجہ تھا کہ حضرت سید صاحب  
نے ایسی نماز جنازہ حضرت والد صاحب سے پڑھوانے کی وصیت فرمائی۔ الحمد للہ، حضرت  
والد صاحب کے کاغذات میں حضرت سید صاحب کے چند مکاتیب حضرت والد صاحب  
نے نام مل گئے، جو ایک نام درختہ ہیں اور ذیل میں پیش قدمت ہیں۔

اعظم گڑھ۔

مکرم و معظّم جناب ڈاکٹر صاحب زادہ ائمہ تعالیٰ حیاتی اللہ  
اسلام علیکم ورحمۃ اللہ۔ والا نامہ مشتمل بر تحریر پر تاثیر بدست عزیز سید  
حسین احمد ملا۔ جو آپ کے دلی جذبات کا آئینہ ہے۔ حقیقت یہ ہے کہ عزیز  
موصوف کے ذریعہ ڈاکٹر عبدالحی نہیں۔ بلکہ ایسا بھائی مجھے ملا۔ جس کے  
اخلاص اور محبت پر پورا بھروسہ تھا اور ہے اور عزیز موصوف کو ایک شفیق  
عزیز و مشفق میسر آیا جس کے مشورہ اور اثر پر اوں کو اور ہم کو یعنی  
ہمارے سارے گھر دبے انتہا بھروسہ تھا، ہم اپنی غیر مری میں بھی آپ کی موبودگی  
کے باعث پوری طمانیت رکھتے تھے۔ قرب مکانی اور سہولت تو خیر کہنے کی بات  
ہے۔ حقیقت میں آپ کا وجود ہم سب کی تسلی کا باعث تھا بس سے انکسور عانی  
واخلاقی و انتظامی تربیت کا موقع حاصل تھا۔

بہر حال مقصد یہی ہے اور اللہ تعالیٰ سے دعا بھی ہے کہ یہ اتفاقی عقد موافقات  
حقیقی و پائدار عقد موافقات حاصل ہو۔ میرے گھر کے تاثرات بھی یہی ہیں۔ اور

مجھ جیسا مریض تو ہر وقت آپکی تدابیر کا محتاج ہے۔  
دعا فرمائیے کہ ہمارے یہ تعلقات طرفیں کی رہی و دنیاوی بھلائی اور  
نیر و فلاح کا باعث ہوں۔ اور آپ کے فیض محبت سے آئندہ بھی برکات  
حاصل ہوں۔

عزیزی شمیمہ محمد اللہ اچھی ہیں۔ آج دو بجے دن کو بھی ۹۹ ہے۔ اب شوربا  
اور بارلی اور دورہ پانی ملا ہوا ان کو دیا جا رہا ہے۔ الحمد للہ آپ حضرات  
کی دعائیں کار آمد ہوئیں۔ والسلام  
سید سلیمان۔ ۱۴ ج ۱۳۶۲ھ

بہارِ نبینیت جینیتہ

بھوپال

مجھی رخصتی ادا م اللہ فیوضکم

اسلام علیکم درجہ اللہ۔ اخلاص نامہ ملا۔ آپکی محبت کا شکریہ کہ وہ میری اصلاح  
کا باعث ہو رہی ہے۔ کیونکہ خیال ہوتا ہے کہ مجھ جیسے بیچ کار سے جب آپ جیسے  
لوگ اپنا تعلق خاطر ظاہر کریں تو شرم آتی ہے اور یہ دعا مانگنے کو جی چاہتا ہے  
کہ اسے پروردگار مجھے حقیقتاً ویسا ہی بنا جیسا میرے دوست اپنی محبت اور  
حسن ظن سے وہ مجھے سمجھتے ہیں۔

الحمد للہ تعالیٰ خیریت ہے۔ روزے بفضلہ تعالیٰ ہو رہے ہیں۔ رویت ۲۹،  
شعبان کو یہاں نہیں ہوئی مگر دوسرے مقامات کی رویت کی اطلاع پر کل سے  
یہاں تاریخ سہ شنبہ کو یکم رمضان مانکر بدل دی گئی۔ چنانچہ آج جمعہ کو ۲۵،  
رمضان ہے۔

امسال پھر سفر حج کا قصد ہے۔ عزیزی سید حسین نہیں جا رہے ہیں۔  
اب سفر ہو یا نہ ہو قصد کے ثواب سے محرومی تو انشاء اللہ تعالیٰ نہوگی۔  
پھر یہ شہر جراحت دل کو پلا ہے عشق  
سامان سد ہزار نکسداں کے ہوئے۔





## حضرت شاہ عبدالغنی صاحب پھولپوری رحمۃ اللہ علیہ

حضرت مولانا شاہ عبدالغنی صاحب پھولپوری رحمۃ اللہ علیہ حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے اجل خلفاء میں سے تھے۔ جب آپ کراچی تشریف لائے تو ابتداءً آپ کی مجلسیں بھی حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے مطب کے باہر ہوا کرتی تھیں، اور حضرت کو والد صاحب سے خاص تعلق تھا، اس تعلق کی روشنیاں دو خطوں کی صورت میں ذیل میں پیش کر رہا ہوں :-

عزیزم سلمک اللہ تعالیٰ

اسلام علیکم درجۃ الشہادہ و برکاتہ۔ مسرت نامہ ملا نصف ملاقات سے کچھ زائد ہی لطف آیا آپ کی محبت نے آنکھوں سے آنسو کے قطرے آخر کار نکال کر چھوڑے دل سے دُعا نکلی اور آپ کے گریہ کے لئے شفا رکاملہ عاجلہ مستمر کی دل سے دُعا کرنا ہوں۔ والسلام والدعار

عبدالغنی

بینہ بنہ

عزیزم سلمک اللہ تعالیٰ

اسلام علیکم درجۃ الشہادہ و برکاتہ۔ عزیزم آپ کی تحریر پڑھ کر دل بہت مسرور ہوں محبت کا شکم کبھی پُر نہیں ہو سکتا آپ کی بڑی قدر میرے دل میں بڑھتی جا رہی ہے اسی کا نام توجہ ہے ماشاء اللہ تعالیٰ آپ کی حالت نہایت محمود ہے اللہ تعالیٰ کا شکر ادا کیجئے اللہ تعالیٰ آنعزیز کو مراتبِ عالیہ پر فائز فرمائیں۔ والسلام والدعار

عبدالغنی

## حضرت مولانا سید ابوالحسن علی ندوی مدظلہم

حضرت مولانا سید ابوالحسن علی ندوی مدظلہم العالی اس وقت عالم اسلام کی گرانقدر متاع ہیں، حضرت والد صاحب سے ان کو بھی خصوصی تعلق تھا، ذیل میں حضرت مولانا کی وہ تحریر پیش خدمت ہے جو انہوں نے حضرت والد صاحب کے مجموعہ کلام ”صہبائے سخن“ پر بطور تعارف تحریر فرمائی تھی، اور ابھی تک طبع نہیں ہوئی۔ اس سے حضرت والد صاحب کے کلام اور شعری مذاق کا بھی بہترین تعارف ہو سکیگا۔

### کلام عارفی کا تعارف از۔ حضرت مولانا سید ابوالحسن علی ندوی مدظلہم العالی

علماء و مشائخ نے ہر دور میں اسلام کی علمی و عملی خدمت انجام دی ہے اور اپنے ذوق و وجدان اور ذہنی رجحان کے مطابق علم و فن، شعر و ادب، تاریخ و تراجم، اور سیر و سوانح کی مختلف شاخوں میں گل بوٹے کھلائے ہیں۔ جن سے علم و فن کی محفلوں میں رونق اور بہار نظر آتی ہے اور مشہور روح و جاں معطر ہوتا ہے۔

نقطہ نظر کی صحت، ایمان و یقین کی کیفیت، اخلاص و دلسوزی، علم صحیح و عمل صالح، حسن مذاق و حسن طبیعت، ایسی نادر خصوصیات ہیں جو علماء و مشائخ کی علمی و ادبی یادگاروں میں آج بھی تروتازگی اور بقاء و دام کی کیفیت پیدا کر دیتی ہیں اور ان کا کام اور کلام ہمیشہ در اور روایتی و رسمی حالوں، ادیبوں اور شاعروں کے مقابلے میں کہیں زیادہ اہمیت، سامانِ بھیرت، اور مسرت و افادیت کا حامل ہے اور اپنے اندر روح و قلب، اور ذوق و وجدان کی بالیدگی، تعمیر سیرت و شخصیت، ذہن سازی اور دل افروزی، قوت تاثیر و تسخیر اور جلال و جمال رکھتا ہے۔

دیگر فنون سے قطع نظر صرف شاعری ہی کو سامنے رکھیے اور اہل دل شعراء کی ادبی خدمات اور ان کی دیر پا اور دُور رس اثرات پر ایک سرسری نظر ڈالیے تو ایسے بے شمار نام ملیں گے جو اسلامی اور عام ادبیات کی تاریخ میں نمایاں اور ممتاز مقام پانے کے مستحق ہیں مگر چونکہ شعر

ادب کی روش عام اور مذاق، عوام سے دور تھے اور اپنا مخصوص پیغام رکھتے تھے۔ اس لیے انھیں نظر انداز کیا گیا یا ان کی اہمیت کو کم کرنے کی کوشش کی گئی۔ ایسے شعراء میں عہدِ صی بہ میں حضرت حسان بن ثابتؓ، حضرت عبید بن رواءؓ، حضرت عبید بن عباسؓ، نابغہ جعدیؓ، حضرت کعب بن مالک انصاریؓ، عدی بن زاتمؓ، حضرت علیؓ وغیرہم، بعد کے شعراء میں دعبیل الخزاعیؓ، امام شافعیؒ، امام محمدؒ (صاحب موطا)، اور عہدِ اموی و عباسی کے دوسرے اسلامی الفکر شعراء،

خود ہندوستان کے فارسی وارد و شعراء میں شیخ حسن صفائی، حسن دہلوی نظامی صاحب تاج المآثر، عصامی (صاحب فتوح السلاطین) شیخ جمالی دہلوی (صاحب سیر العارفین) مسعود سعد سلمان لاہوری، قاضی عبدالمقدر کندی، شیخ احمد تھانسی، وغیرہ،

عہدِ مغلیہ اور اسکے بعد شیخ ناصر علی سرسندی، مولانا غلام علی آزاد بگرامی، مولانا عبدالحلیم بگرامی، مرزا مظہر جان جانا، میر ناصر عندلیب، شاہ محمد اہل آبادی، شاہ محمد فخر زائر، مفتی صدر الدین خاں، حاجی امد اللہ صاحب برکی، شاہ سعد اللہ گلشن، شاہ نیا زربطوی، شاہ عبدالعیم آسی غازی پوری، خواجہ عزیز الحسن مجذوب، وصل بگرامی،

جیسے متعدد نام ہیں جن کا کلام اہل دل کے لئے حرزِ جان ہے مگر تاریخ ادب میں ان کی ادبی خدمات کو بیانِ شانِ اہمیت نہیں دی گئی۔ اور ان سے دانستہ صرف نظر اور چشم پوشی اور ان کی حق تلفی کی گئی۔

اور آخر کے مشائخ میں حضرت حاجی امد اللہ تھانویؒ اور مولانا فضل الرحمن گنج مراد آبادی کے خلفاء و مریدین ہیں ان مشائخ کے اثر سے پاکیزہ ادبی ذوق کا نشوونما بھی ہوا۔ حضرت حاجی صاحب کا اردو فارسی کلام کلیت کی شکل میں محفوظ ہو گیا ہے جو ان کے بلند پایہ ادبی و عرفانی مذاق کا آئینہ دار ہے، مولانا گنج مراد آبادیؒ اپنی مثنویوں میں اردو فارسی کے منتخب اشعار بکثرت پڑھتے تھے جن سے لوگ مستفید ہوتے اور ان کے ذوق کی تربیت ہوتی تھی۔

حضرت حاجی صاحبؒ کے خلیفہ اجل حکیم الامت حضرت مولانا تھانویؒ کا ادبی ذوق بہت پختہ تھا جس کے نمونے ان کی کتابوں اور تقریروں میں دیکھے جاسکتے ہیں، ان کا یہ ذوق ان کے خلفاء و مریدین پر بھی اثر انداز ہوا اور ان میں متعدد حضرات صاحبِ دیوان ہا کثیر الکلام شاعر بھی تھے

مثلاً خواجہ عزیز الحسن مجذوب، وصل بگرامی، علامہ سید سلیمان ندوی، مفتی محمد شفیع صاحب دیوبندی، مولانا اسحاق صاحب (ناظم مظاہر علوم) وغیرہم۔

حضرت سناخوئیؒ کے ایسے ہی اہل ذوق خلفاء میں مخدوم و محترم و مشفق مکرم حضرت ڈاکٹر عبدالحی عارفی زید مجدہم کی ذات گرامی ہے جو انگریزی تعلیم یافتہ اور ایک صاحبِ مطلب ڈاکٹر ہونے کے ساتھ ساتھ ایک صاحبِ وجد و حال صوفی، ایک مخلص و درد مند انسان اور ایک خوش فکر و خوش گوشتااعر بھی ہیں اور ایسے دور میں (جس میں شعروشاعر کے معنی ہی بدل گئے ہیں اور شعر و سخن میں رفعت و طہارت کی جگہ ابتذال و پست مذاقی، حقیقت طلبی و حق پسندی کے بجائے مجاز پسندی اور شاید پرستی، اخلاقی گراؤ، ساقیت و لایعنیت اور ہر طرح کی بد مذاقی اور تسفل نے لے لی ہے) خوش مذاقی و بلند فطرتی، عالی ظرفی و بلند گاہی حق طلبی و حقیقت سنجی، اخلاص و نقیبت، سوز و گداز، اور درد و محبت کی پاکیزہ روایات قائم رکھے ہوئے ہیں اور بڑھاپے میں بھی اُن کی عرفانی شاعری جوان، پُر کیف، رُوح پرور اور دل افروز ہے۔ اور صالح خیالات و جذبات، سنجیدہ و چیدہ مضامین، عارفانہ حقائق، اور عشقِ حقیقی کی تجلیات کے لئے بہت ممتاز، قابلِ قدر و تحسین، اور لائقِ تقلید و استفادہ ہے۔

اور اس دور میں معرفتِ روحانی و وجدان، اور شعری فیضان کا ایک منفرد نمونہ اور اعلیٰ مثال ہے، بیشتر غزلوں میں پختہ کار اور مشہور اساتذہ کا رنگ جھلکتا ہے، مگر منظر غائر دیکھا جائے تو حضرت عارفی کا کلام اساتذہ کی غزلوں سے کہیں آگے اور معنویت میں بڑھا ہوا ہے جس کا سبب اُن کے دہ قلبی احساسات اور پاکیزہ جذبات ہیں جو اُن کی شخصیت کا حصہ ہیں۔

اس بلند کلام کو جو وارفت و دل کی ترجمانی اور سروشِ غیب کی ہم زبان تھے کسی مقدمہ اور تعارف کی ضرورت نہیں تھی پھر بھی ایک صاحبِ دل، صاحبِ ذوق عارف کا بسیط مقدمہ شامل کتاب ہے۔ ایسی نالت میں مجھ جیسے آدمی کا کچھ لکھنا "دخول در معقولات" سے بڑھ کر بھی ایک جرأت تھی۔

لیکن تعمیلِ حکم میں اور اپنی سعادت سمجھ کر یہ چند سطور سپردِ قلمِ ندوی ہیں سے

ابوالحسن علی  
بمئی ۱۸، ربیع الاول ۱۳۹۷ھ

اُن کی شفقت سے الٹی پائیں یہ رنگ قبول

پھول کچھ میں نے چنے ہیں اُن کے دامن کیلئے



میں شاید کچھ اپنے تعلقات کا انکے ساتھ ذکر کر رہا ہوں جس کے جواب میں فرمایا کہ ”بلا شک بزرگوں سے تعلق اور ان سے محبت بڑے کام کی چیز ہے“ مجھے یہ بھی محسوس ہو رہا ہے کہ میں ان سے خواب میں باتیں کر رہا ہوں۔ شاید میں نے ان سے یہ بھی کہا کہ میں کئی بار آپ کو خواب میں دیکھ چکا ہوں۔ پھر اسکے بعد میں ان سے زحمت ہو گیا اور ایسا معلوم ہوا کہ جیسے اس خواب سے بیدار ہو گیا اب خواب ہی میں اُس خواب کا ذکر کسی اور سے کر رہا ہوں کہ حضرت سید صاحبؒ کو میں نے خواب میں انکے ملاقات کے مکرو کے دروازہ کے قریب ہی فرش پر بیٹھا ہوا دیکھا اور یہ مذکورہ بالا خواب بیان کر رہا ہوں۔ ۱۰ فروری ۱۹۵۵ء چہار شنبہ

### حضرت بابا نجم احسن صاحب قلم فرماتے ہیں

حضرت حکیم الامتؒ کے مجاز صحبت حضرت بابا نجم احسن صاحب قدس سرہ اس زمانے کے بڑے قابلِ قدر بزرگ تھے جن سے سینکڑوں انسان فیض یاب ہوئے۔ انکو حضرت والد صاحب قدس سرہ کے ساتھ بڑا خصوصی تعلق تھا، جوانکی ان تقاریر سے ظاہر ہے جو انہوں نے حضرت والد صاحبؒ کی مختلف کتابوں پر تحریر فرمائی ہیں ایک مرتبہ انہوں نے لاہور سے (مورخہ ۲۵ دسمبر ۱۹۶۱ء) کو چند اشعار حضرت والد صاحبؒ کو لکھ کر بھیجے جن سے انکے خصوصی تعلق کا اظہار ہوتا ہے۔ اشعار یہ ہیں:-

|                            |                          |
|----------------------------|--------------------------|
| مجت کا یہ طرفہ انداز ہے    | فناں میری محروم آواز ہے  |
| نہ دم ہے زباں میں دلیں سکت | خوشی محبت کی آواز ہے     |
| سلامت رہو یا کرامت رہو     | بہ صحت رہو یا فراغت رہو  |
| خدا نعمتیں اپنی بھر پور دے | سدا صدر بزم محبت رہو     |
| خدا دے تمہیں عمر نوح و حضر | شفا بخشو نی ہو تم پر نظر |
| کرد کار اصلاح و تبلیغ خوب  | بنوا شرفی سبکہ معتبر     |

## حضرت زین العابدین علیہ السلام کا جدِ صاحب

ہمارے نانا امیر حضرت والد صاحبؑ کے پھوپھا حضرت ڈپٹی علی سجاد صاحبِ قدس سرہ کا تذکرہ مضمون کے شروع میں آچکا ہے، وہ حضرت حکیم الامت قدس سرہ سے خصوصی تعلق رکھتے تھے، اور حضرت کے مجازینِ صحبت میں سے تھے، حضرت والد صاحبؑ سے متعدد خاندانی رشتوں کے باوجود اور حضرت والد صاحبؑ کے بزرگ ہونے کے باوجود وہ والد صاحبؑ سے عقیدت کی حد تک محبت و تعلق رکھتے تھے، حضرت والد صاحبؑ کے باطنی معاملات سے جتنی قریبی واقفیت انکو تھی۔ شاید ہی کسی اور کو، ذیل میں انکے دو خط پیش کئے جاتے ہیں جو انہوں نے تھانہ بھون سے والد صاحب کو ارسال کئے تھے۔

شفقت نامہ پھوپھا علی سجاد صاحب قبل از تھانہ بھون

میرٹھ ۲۷ جنوری ۱۹۵۷ء

آج شب کو خواب میں تمہاری حالت بہت ہی بلند نظر آئی۔ جو اس مصرعہ کے مصداق سمجھ میں آئی۔

چونقرا ند قبلے شاہی آمد

زندہ بید اللہ ہی آمد

تمہاری وسیع محل کا زینہِ شب کے پتھر کا اور اس پر فنائت کا یہ غلبہ کہ میرے پاس فرش پر لیٹے ہوئے عجیب سوز و گداز کے ساتھ بوستان یا کسی معرفت کی کتاب کے اشارتِ رقت کی حالت میں پڑھ رہے تھے پھر مجھ سے مخاطب ہوئے اور میں نے تم کو اپنا خواب خواب ہی میں سنانا شروع کیا۔ فقط۔

اللہ تعالیٰ تمہاری ظاہری و باطنی حالت میں ترقی عطا فرمادیں۔

✽

۱۳ شعبان یومِ شنبہ

نور چشم عبدالحی سائے اللہ تعالیٰ مطابق ۲۷ جنوری ۱۹۵۷ء تھانہ بھون

دعا ہے! اس مرتبہ تمہاری سعادتمندی و نیز تمہاری صحبت سے قلب میں علاوہ مسرت

کے ایک گونہ تعلق مع اللہ میں تقویت کی زیادتی محسوس کی جزاکم اللہ۔

اللہ تعالیٰ اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کے طفیل میں حضرت شیخ قدس سرہ کے فیوض تمہارے ذریعہ سے جاری و ساری فرمادیں اور مخلوق کو نفع حقیقی عطا فرمائیں۔ تم سے رخصت ہوتے وقت یکایک میرا دل بھرا آیا اور پتہ اب گفتگو باقی نہ رہی، اس لئے مزید کلام نہ کر سکا اور خاموشی کے ساتھ تم کو رخصت کر دیا۔ یہ سب حضرت اقدس کا فیض ہے اور شکر کا موقع ہے۔ آج کل گرمی یہاں سخت ہو رہی ہے، البتہ آج صبح کچھ ترشح ہوا اس سے ہوا کا اثر نہیں معلوم ہوتا۔ باقی حالات بدستور ہیں جویر یا سلمہا کو دعا بچوں کو دعا احسن سلمہ کے لئے اب ملازمت ہی بہتر معلوم ہوتی ہے۔ یہاں تو کامیابی دشوار اور اس لئے تعلیم لاعمل۔ ابراہیم کو دعا۔ علی سجاد

### حضرت خواجہ عزیز الحسن صاحب مجذوب رحمۃ اللہ علیہ

حضرت خواجہ صاحب حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے اجل خلفاء میں سے تھے، حضرت تھانوی قدس سرہ کے عاشق صادق، اور انکے رنگ میں پوری طرح رنگے ہوئے۔ ہماری خاندان کو حضرت حکیم الامت قدس سرہ سے وابستہ کرنے میں ان کا بھی بڑا دخل ہے جسکی تفصیل پیچھے خود والد صاحب کے الفاظ میں آچکی ہے۔ ذیل میں حضرت مجذوب صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے دو مکتوب پیش خدمت ہیں جو انہوں نے حضرت والد صاحب کو لکھے تھے:

مکرمی و مشفق زاد لطفکم السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ۔

آپ کا سفر خانقاہ کے ذوق و شوق کے اشعار مجھے بیدار پسند آئے۔ بس ایسی شاعری ہی اب کیا کیجئے۔ اللہ تعالیٰ آپ کو اور اس ناکارہ کو بھی حضرت اقدس سے کامل طور پر فیضیاب فرمائے۔ حاجی بشیر صاحب کو اس قدر پسند آئے کہ فوراً مجھ سے لئے پھر مجھے بوجہ دورۂ مسلسل ان سے لینے کا موقع نہ ملا۔ اور فی جانا ہوا تو خان بہادر صاحب کو سنائے۔ اب یاد بھی نہیں رہے۔ لکھنؤ سے، دسمبر کو انشاء اللہ تعالیٰ واپس ہونگا اس وقت حاجی جی سے ملے لوں گا۔ میں نے تو اب

الحمد للہ شاعری بالکل چھوڑ دی ہے۔ میں اب ایک ہی آشنا چاہتا ہوں: ﴿مٹو دوستوں  
راستہ چاہتا ہوں﴾ بتوں کو اپنے خدا چاہتا ہوں: ﴿سرمخم دل مبتلا چاہتا ہوں﴾  
بھلاتا ہوں پھر بھی وہ یاد آ رہے ہیں: ﴿وہی چاہتے ہیں میں کیا چاہتا ہوں﴾  
جو مرضی ہو تیری وہی میں بھی چاہوں: ﴿یہی اب تو بس اے خدا چاہتا ہوں﴾  
یہ گویا آخری اشعار ہیں اور سب سے آخری آخر کا شعر ہے حاتمہ خیر ہے انشاء اللہ تعالیٰ  
آپ کی علالت کی خبر سننے میں آئی تھی جس سے تردد پیدا ہو گیا تھا۔ حال لکھنے کتابیں تقسیم کر کر  
علی سجاد صاحب اور وحشی صاحب کے حصے کے اپنے اسباب کے ساتھ اور ان خان بہادر صاحب  
کے یہاں رکھوانے کی غرض سے لے جانے کا قصد ہے۔ اگر اور کوئی تجویز ہو علی سجاد صاحب سے  
پوچھ کر لکھئے۔ میں انشاء اللہ تعالیٰ بڑے دن کی چھٹی سے غالباً ۲۵ دسمبر کو تھانہ بھون سوادو برس کی  
چھٹی پر چلا جاؤں گا۔ گھر کے لوگ غالباً بعد عید پہنچیں گے۔ علی سجاد صاحب کی خدمت سلام  
شوق اور استدعا کے دے گئے خیر۔ اپنی وکالت کا بھی حال لکھئے گا۔ والسلام

نیا زیند عزیز الحسن غفر عنہ ۲۴ دسمبر ۱۳۳۷ھ

از لکھنو مکرمی و شفیق فیضہم السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ !  
کیا عرض کروں سخت محبوب ہوں کہ جناب کس محبت و کرم کے ساتھ یاد فرماتے ہیں اور مجھ کو  
اظہار منونیت کی بھی توفیق نہیں ہوتی۔ اقل تو فطری بد نظمی پھر سخت هجوم مشاغل مانع  
ترسل جواب ہوتے رہے۔ اور جناب کی شان کرم سے یہ بھی توقع رہی کہ برا نہ مانیں گے ورنہ  
ڈر کے مارے ضرور لکھتا لیکن نہ لکھنا زیادہ قرین خلوص تھا بہ نسبت لکھنے کے۔ آپ میری  
عذیم الفرستی کا صحیح اندازہ بھی نہیں لگا سکتے دم مارنے کی بھی فرصت بعض اوقات شکل سے  
ملتی ہے۔ آپ کی خوشحال ظاہری و باطنی کے حالات سننا رہتا ہوں اور مسرور ہوتا رہتا ہوں  
اللہم زد فرد۔ اللہ تعالیٰ آپ کو دونوں جہاں کی نعمتوں سے مالا مال اور دونوں جہان میں  
خوشحال و خوشش اقبال رکھے آمین ثم آمین بہت ہی مسرت ہے کہ آپ بفضلہ تعالیٰ حضرت  
آندلس مدت فیوضہم کی دعاؤں کی برکت سے بہ نسبت وکالت کے دینی اور دنیوی دونوں لحاظ سے  
بہتر حالت میں ہیں۔ اللہ تعالیٰ روز افزوں برکات عطا فرمائے۔ مجھ بیکار کی اصلاح عقیدہ و



عمل کے لئے بھی اللہ دعا فرمائیں۔

اے صاحب کرامت شکرانہ سلامت ۛ روزے تفقہ کے کن درویش بے نوارا  
آپ ہی جیسے حضرت کے لئے میں نے کہا ہے۔

تصور عرش پر ہے وقف سجدہ ہے جیس میری ۛ میرا اب پوچھنا کیا آسمان میرا زمین میری  
خدا شاہد ہے سچ کہتا ہوں میں دن رات رقبہ ہوں ۛ نہ تم ہیں گو میری آنکھیں نہ تر ہے آتیں میری  
طلب تاحدا مکاں ہی ہے پایاں رہ الفت ۛ جہاں پر بیٹھ جاؤں تھک کے میں منزل دیں میری  
کسی کی یاد ہی سے اب تو میرا جی بہلتا ہے ۛ اسی سے اب تو پائی ہے سکوں جان حیر میری  
بائیں ریش و عمامہ شرکت بزم تباہ تف تف ۛ یہ نفیر کر رہی ہے مجھ پہ پیہم وضع دیں میری

ان سا کوئی ہمدم کوئی دمساز نہیں ہے ۛ ہر وقت ہیں باتیں مگر آواز نہیں ہے  
یہ نغمہ دلکش مرلے ساز نہیں ہے ۛ وہ بول رہے ہیں مری آواز نہیں ہے  
جان باز ہے مجنوب سخن ساز نہیں ہے ۛ پرواز ہے بلبل کا سا انداز نہیں ہے  
ہم خاک نشینوں کو نہ مسند پہ بٹھاؤ ۛ یہ عشق کی توہین ہے اعزاز نہیں ہے  
مجنوب ہوں پتیا ہی چلا جاتا ہوں پیہم ۛ کتنی مجھے پینا ہے یہ انداز نہیں ہے

نسخہ پاریا و دندان لرزان۔ ایک صاحب کو ایک حکیم صاحب نے لکھیم پور میں لکھ  
کر دیا تھا انہوں نے اسکی بہت تعریف کی تھی کہ خود انکو یہ نافع ہوا۔ آپ بھی آزمائیں  
اللہ تعالیٰ نافع فرمائے۔ نسخہ یہ ہے:-

ہوالشافی: ساق بز سوختہ دال ارہر نمک طعام مرچ سرخ کات سفید پہلاوان  
کچلہ تبا کو خوردنی (پتی دار) هموزن گرفتہ بلر یک نمودہ در ظرف گله انداختہ یک سولخ داشتہ  
دہان بستہ پنج سیر پاچک دشتی خاکستر نمایند بعدہ در یک پاؤ سیر او یہ بالا یک تولہ  
سنگ مقناطیس جب تک سیاہ دھواں نکلتا رہے جلایا جائے جب سفید دھواں شروع  
ہو نکال کر پیس لیا جائے۔

اب دفتر کو دیر ہو رہی ہے لہذا دفعۃً ختم کرتا ہوں۔ والسلام۔

دعا گو و دعا جو احقر عزیز الحسن عفی عنہ

۲۶ اپریل ۱۳۷۶ھ

• حَسَنَاتُكَ تَكُونُ لَكَ خِزْيَانًا

## معمولاتِ بزرگوار حضرت علیؓ

بزرگانِ دین و حاملینِ شریعت و طریقت بدرجہ وارثانِ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا یہ معمول رہا ہے کہ وہ اپنے تعلق مع اللہ کو مضبوط اور قوی کرنے اور اپنے تزکیہ نفس کیلئے اذکار اور دعاؤں اللہ تعالیٰ ہی کے کلام اور نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشادات سے اخذ کر کے اپنے لئے چند معمولات منتخب فرماتے ہیں بموجب ارشادِ باری تعالیٰ: **وَإِذْ كُودُ اللّٰهِ كَثِيْرًا تَفَلَّكُمُ تَفْلِيْحُوْنَ ۝** (ترجمہ) اور تم اللہ کا ذکر کثرت سے کرو تاکہ تم کامیاب ہو جاؤ۔

**وَإِذْ كُرِ اِسْمُ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيْلًا ۝** (پارہ ۲۹ - آیت ۲۵ - سورۃ الدھر)  
(ترجمہ) اپنے رب کے نام کا ذکر کیجئے صبح و شام: **قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّىٰ**۔

ان معمولات پر تواتر اور دائمی عمل سے نہ صرف تزکیہ نفس حاصل ہوتا ہے بلکہ اس کی وجہ سے زندگی کے اوقات ایک صحیح سمت میں مرتب ہو جاتے ہیں۔ اور بالآخر یہی نظامِ انسان کی روزمرہ کی زندگی اور اس کے مختلف النوع تقاضوں کی انجام دہی میں سہولت پیدا کر دیتا ہے اور اس عالمِ تعلقات کے تمام انسانی تقاضوں کو دینی خطوط پر پورا کرنے کی صلاحیت پیدا کر دیتا ہے روزمرہ کے انسانی مشاغل کو سامنے رکھتے ہوئے بزرگانِ دین نے اپنے ساتھ وابستہ طالبین کیلئے اُن کی دنیاوی ذمہ داریوں اور مصروفیتوں کے پیشِ نظر یہ معمولات ہر ایک کے لئے

الگ الگ مقرر کئے ہیں۔ ہمارے حضرت مولانا محمد اشرف علی تھانوی صاحب علیہ الرحمہ نے بھی مناجات مقبول کے آخر میں امور طریقت کے حصول اور تزکیہ نفس کیلئے کچھ معمولات تحریر فرمائے اور انہی کے تحت مرشدی حضرت ڈاکٹر محمد عبدالحی قبلہ نے تائیدِ غیبی کے ساتھ ایک کتابچہ ”معمولات یومیہ“ کے نام سے مرتب فرمایا اور کھڑید چند ہی سالوں میں اللہ تعالیٰ نے اس جامع اور مختصر کتابچہ کو وہ مقبولیت عطا فرمائی کہ یہ لاکھوں کی تعداد میں مختلف ابدیشنوں میں شائع ہو کر طالبینِ دین اور سالکینِ شرع متین کے لئے ایک چشمہ فیض بن گیا۔

ہر چند کہ ”معمولات یومیہ“ حضرت ہی کے ارشادات اور امار سے قلمبند ہوئی تھی اور حضرت کا یہی ارشاد تھا کہ اسے حریرِ جان بنایا جائے لیکن پھر بھی طالبین اور خدامِ حضرت والا میں ایک قسم کی تشکی پائی جاتی تھی کہ کس طرح حضرت والا کے ذاتی معمولات تک دسترس ہو جائے۔ حضرت والا کی نگاہ دور بین اور فراست بے پایاں نے اپنے خدام کی اس تشکی کو محسوس فرمایا اور بالآخر ہم جیسے کوتاہ علم و فہم طالبین کی راہ نمائی اور فہمِ دین و تزکیہ نفس کے لئے اپنے معمولات یومیہ ارشاد فرمایا کہ قلمبند کرنے کی اجازت فرمائی اور یہ فرمایا کہ ان معمولات کو اپنے پر لازم نہ کیا جائے بلکہ اس سلسلہ میں ان ہدایات پر عمل کیا جائے جو رسالہ ”معمولات یومیہ“ میں تفصیل سے بیان کی گئی ہیں سیدی حضرت عارفی رحمۃ اللہ علیہ نے اپنے ذاتی معمولات اس غرض سے قلمبند کرائے تھے کہ جس طالب کو موقع ہو وہ ان کی ادائیگی کا اہتمام کر سکے اور یہ بھی ارشاد فرمایا کہ طالب کو چاہیے کہ وہ اپنے لئے اتنے ہی معمولات اختیار کرے کہ جن پر دوام ہو سکے یعنی مسلسل روزانہ آرام و اطمینان کے ساتھ ان پر عمل کر سکے اور یہ بھی ارشاد فرمایا کہ اگر کبھی بہت ہی ضروری مشغولیت کی وجہ سے اپنے مقررہ اوقات میں مقررہ معمولات پورے نہ ہوں تو جب بھی وقت مل جائے ان کو پورا کر لیا جائے۔ یہ خیال نہ کیا جائے کہ چونکہ وقت پر یہ کام نہ ہو سکا تو بس چھوڑ دیا جائے، طالب اور مالک کے لئے یہ بہت ہی نقصان دہ ہوتا ہے۔ پورے معمولات پر اگر کسی روز قدرت نہ ہو تو انہیں مختصر کر دیا جائے۔ مثلاً اگر صبح کی ایک تسبیح... کی پوری کرنی ہے اور کسی وجہ سے اتنا وقت ہے تو ایک سو کے بجائے ۳۳ مرتبہ، ۱۱ مرتبہ، ۷ مرتبہ اگر اتنا بھی وقت نہیں تو

صرف ۳۰ ہی مرتبہ پڑھ لینا چاہیے۔ کلیتاً چھوڑا نہ جائے۔ حضرت قبلہ سے وابستہ طالبین اور سالکین کے لئے اسکی بڑی ہی اہمیت ہے۔

## معمولاتِ حضرت مرشدی عارفی رحمۃ اللہ علیہ

تہجد :- علی السَّحَر تہجد کے لئے بے وقت اٹھتے تھے کہ اذان فجر سے قبل تک یہ معمولات پورے ہو جائیں۔

(الف) آٹھ رکعت نفل برائے تہجد۔ قوت و وقت کی گنجی شس کے مطابق کوئی بھی سورتیں پڑھ لیتے۔

(ب) یا اَحیٰ یا قَیُّوْمُ : لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظَّالِمِیْنَ ۲۴ مرتبہ  
(ج) دوازدہ تسبیح (۲۰۰ مرتبہ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۴۰۰ مرتبہ اِلَّا اللّٰهُ۔

۶۰۰ مرتبہ اَللّٰهُ اَللّٰهُ (اس طرح کہ پہلے لفظ اَللّٰهُ پر بیش ہو اور دوسرے پر جزم) (اور ۱۰۰ مرتبہ صرف اَللّٰهُ)

اگر بیماری، کسل یا کسی اور عذر کی وجہ سے دوازدہ تسبیح پوری پڑھنے کا موقع نہ ہوتا تو ایک ایک تسبیح ۳۳ مرتبہ پڑھ لیتے۔ جہاں تک ممکن ہوتا ناغہ نہ فرماتے تھے۔

(د) ایک ایک تسبیح (۱) اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّ اَتُوْبُ اِلَیْهِ (۲) و رُوْد شریف۔

(۳) سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ۔

(۴) لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ

(لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ کی تسبیح ختم کر کے تین مرتبہ لَا مَلْجَا وَ لَا مُنْجَا مِنْ اللّٰهِ اِلَّا اِلَیْهِ پڑھتے)

(۵) سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ - ۳ مرتبہ و رُوْد شریف

پڑھ کر ۲۱ مرتبہ سورۃ فاتحہ مع بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۳ مرتبہ و رُوْد مُنْجِیْنَا جو

یہ ہے۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا



وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَلَوةً نُنَجِّينَاهَا مِنْ جَمِيعِ الْأَحْوَالِ وَالْأَقَاتِ وَتَقْضِي  
كُلَّهَا جَمِيعِ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيعِ النِّجَاسَاتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا  
عِنْدَكَ أَعْلَى الْمَرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا أَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيعِ الْخَيْرَاتِ فِي  
الْحَيَوةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، ۴۴ مرتبہ الحمد شریف  
(سورہ فاتحہ) مع الشَّہد اور ۳۴ مرتبہ درودِ تَنْجِيْنَا نماز فجر کی سنتوں اور فرمون کے درمیان  
بھی پڑھی جاسکتی ہے۔

تہجد کے ان تمام وظائف سے فارغ ہو کر اذانِ فجر سے پہلے تھوڑی دیر بیٹھ جاتے  
اور خشوع و خضوع کے ساتھ اللہ تعالیٰ کے حضور یہ معروضات پیش کرتے "اے اللہ آپ کا  
یہ میرا خطا کار بندہ حاضر ہے، میں کس قابل ہوں۔ آپ ہی نے بغیر کسی استحقاق کے مجھے  
لانعداد نعمتیں عطا فرمائی ہیں اور آپ جس کو چاہیں اپنے فضل سے بغیر کسی استحقاق کے  
جو چاہیں عنایت فرمادیں۔ اے اللہ میں خشوع و خضوع سے بھی محروم ہوں، اے اللہ  
تو توفیق مطلق ہے، مجھ میں خشوع و خضوع پیدا فرمادے، اے اللہ، مجھ پر میرے اہل  
و عیال پر اور میرے عزیز و اقارب پر اپنی نعمتیں نازل فرما۔ اے اللہ، ہم بہت محتاج  
ہیں، ہماری اعانت فرما، اے اللہ! میرے آبا و اجداد اور میرے والدین پر اور میرے  
گزرے ہوئے عزیز و اقارب پر اپنی رحمتیں نازل فرما اور اے اللہ! ہمارے اہل و عیال  
کو ہدایت فرما۔ آمین۔

نماز فجر کے بعد عموماً الحمد شریف، آیتہ الکرسی، سورۃ کافرون (قل یا ایہا الکفر دن)  
سورۃ نصر (اذا جاء نصر اللہ) سورۃ اخلاص (قل ہو اللہ) سورۃ فلق (قل اعوذ برب الفلق)  
اور سورۃ الناس (قل اعوذ برب الناس) پڑھتے۔

اور ۳۴ مرتبہ مَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ  
۳۴ مرتبہ درودِ تَنْجِيْنَا (جسے الفاظ پہلے گزر چکے ہیں) ۳۴ مرتبہ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيعِ الْعَلِیْمِ  
مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِیْمِ کے ساتھ ایک مرتبہ سورہ حشر کی آخری تین آیتیں ھُوَ اللّٰهُ

الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ..... وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ۔ پڑھتے۔ اور  
۳۳ مرتبہ سورہ توبہ کی آخری آیتیں لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ..... رَبُّ  
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ پڑھتے تھے۔

نماز فجر کے بعد اگر کسل نہ ہو اور روزانہ اس پر عمل ہو سکے تو اسی وقت ورنہ پھر نماز فجر  
کے بعد قدرے آرام فرماتے، اور پھر اٹھ کر تلاوت قرآن پاک فرماتے، ایک یا دو نصف  
پارہ یا چوتھی پارہ ایک یا دو صفحات نشر الطیب کے وہاں سے جہاں سے سو یا کرم صلی  
علیہ وسلم کی حیات مبارکہ کا بیان شروع ہوتا ہے پڑھتے۔ روزانہ پڑھنے کے بعد جب یہ  
بیان ختم ہو جاتا تو پھر اسے ہی دوبارہ شروع فرمادیتے۔

نشر الطیب کے بعد بقدر ہمت و فرصت زاد السعی کے ایک یا دو صفحات جہاں سے  
درود شریف کے صفحے شروع ہوتے ہیں پڑھتے۔ اس کے بعد مناجات مقبول کی ایک منزل پڑھنے  
(اگر ایک منزل پوری پڑھنے کی ہمت اور وقت نہ ہو تو نصف ہی پڑھ لی جائے، پھر آہستہ  
مختصر مختصر کر کے ان دعاؤں کی معافی مطالب بھی یاد کرتے جائیں تاکہ جب یہ دعائیں پڑھی  
جائیں ان کا مطلب بھی ہمارے اذہان میں مستحضر ہو اور ہمیں یہ احساس رہے کہ ہم اپنے  
مالک سے کیا مانگ رہے ہیں) مناجات مقبول کی منزل کے بعد اَللّٰهُمَّ اِنَّا الْعَقَّ حَقًّا  
قَا اَرْزُقْنَا اِتِّبَاعًا وَاِنَّا اَبَاطِلٌ بَاطِلٌ وَاِنْ رُّقْنَا اجْتِنَابًا۔۔۔۔۔ آمین پر رب العالمین  
پڑھ لی جائے۔ اس کے بعد مناجات مقبول جمعہ کے روز کی بائیں آخری دعا جو درج ذیل ہے۔

”وَتَقَدَّرُ هَذِهِ الدَّعَوَاتُ فِي حَقِّ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ أَشْرَفَ عَلَى  
وَعَبْدِ الْوَاسِعِ وَ مُحَمَّدٌ عَلَى وَ مُحَمَّدٌ مُصْطَفَى وَ فِي حَقِّ آبَائِهِمْ وَ  
أُمَّهَاتِهِمْ وَ جَمِيعِ الْمُؤْمِنِينَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ وَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى سَيِّدِ  
الْكَائِنَاتِ وَ أَكْرَمِ الْمَخْلُوقَاتِ صَلَوةً تَسْبِقُ الْغَايَاتِ“

پھر درود شریف نعتیہ منظوم کے چار اشعار پڑھ لے جائیں۔

اس کے بعد شجرہ مبارک پڑھ کر یہ دعا فرماتے۔

”یا اللہ! اپنے پیارے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے صدقہ و طفیل

میں میرے پیر و مرشد حضرت مولانا شاہ محمد اشرف علی تھانوی علیہ الرحمہ،  
 حضرت حاجی امداد اللہ صاحب اور تمام بزرگانِ چہار سلسلہ چشتیہ قادریہ  
 نقشبندیہ اور سہروردیہ کے ارواح پاک کو اس کا ثواب پہنچا کر ان کو درجات  
 رفیعہ عطاء فرما اور اُن کے آبا و اجداد و متعلقین پر اپنی رحمتوں کا نزول فرما  
 اور اپنے ان تمام مقبول بندوں کے طفیل میں اور اپنے نبی اکرم صلی اللہ  
 علیہ وسلم کے صدقہ میں اے اللہ تو ہمارے آبا و اجداد پر بھی رحم فرما۔  
 اُن کی بخشش فرما۔ اور اپنے ہاں اُن کے درجات بلند فرما۔ اے اللہ تو  
 اپنے مقبول بندوں کے صدقہ و طفیل ہماری اولاد کو بھی ہدایت فرما۔ اُن کو  
 فواحش و منکرات اور حادثات و سانحات سے محفوظ و مامون فرما۔ اے اللہ!  
 تو ہمیں اپنی رضا کے ساتھ دین و دنیا دونوں جہانوں میں ہر قسم کی عافیت  
 فرما۔ (اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رِضَاكَ وَالْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي  
 وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي) اے اللہ ہمارے سارے کام، ہمارا اٹھنا،  
 بیٹھنا، چلنا پھرنا، کھانا، پینا سب تیرے لئے ہیں۔ اے اللہ ہمارے ان  
 تمام کاموں کو اپنی مرضی کے مطابق پورا کرادے اے اللہ ہمارے تمام کاموں  
 کو آسان فرمادے۔

اللَّهُمَّ تيسِّرْ لَنَا امُورَنَا مَعَ الرَّاحَةِ يَقْلُوبُنَا وَابْدَأْ لَنَا  
 وَالسَّلَامَةَ فِي دِينِنَا وَدُنْيَانَا وَكُنْ صَاحِبًا فِي سَفَرِنَا وَخَلِيفَةً  
 فِي أَهْلِنَا وَأَطِيسْ عَلَيَّ وَجُوهَ أَعْدَائِنَا۔

اے اللہ تو ہماری نصرت و اعانت فرما۔ ہم تیرے عاجز بندے ہیں  
 ہماری اعانت فرما۔

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ۔

اے اللہ! تو ہی ہمارا پیدا کرنے والا ہے، تو ہی ہماری ہر قسم کی کفالت

کرتا ہے اور تو ہی ہمارا ولی ہے ہماری غیب سے نصرت و اعانت فرما۔

أَنْتَ رَبِّي . أَنْتَ حَسْبِي . أَنْتَ وَلِيٌّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ . أَفْوَضُ  
أَمْرِي إِلَى اللَّهِ وَأَجْعَلُ لَكَ مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا .

اس کے بعد نماز اشراق دو، دو نفل کی نیت سے چار نفل ادا فرماتے۔

(مناجات مقبول اور شجرہ مبارکہ کے بعد کی یہ دعا بعد نماز اشراق بھی اللہ کے  
حضور میں پیش کی جاسکتی ہے یعنی شجرہ مبارکہ کے بعد اشراق کے نفل پڑھ لئے جائیں پھر یہ  
دعا مانگی جائے)

قبلہ مرشدی صبح کے ان تمام اوراد وظائف اور ناشتہ سے فارغ ہو کر تقریباً  
۸ ۱/۴ بجے مطب تشریف لے جاتے تھے۔ مکان سے روانگی اور مطب پہنچنے پہنچنے حضرت  
کا یہ معمول رہتا تھا۔

۳۳ بار . يَا اللَّهُ . يَا مُغْنِي .

۳۳ بار . يَا اللَّهُ . يَا رَحْمَانَ يَا رَحِيم .

۳۳ بار . حَسْبَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيل .

۳ بار . سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ .

۳ بار . لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ .

۳ بار . لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ .

۳ بار . لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ .

۳ بار . اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ .

وَارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا .

۲۷ بار . اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ

۳۳ بار . فَإِنَّ اللَّهَ خَيْرُ حَافِظٍ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ .

۳۳ بار . سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ الرَّحِيمِ .

۳۳ بار . مَا شَاءَ اللَّهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ .



۳۳ بار۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ۔

۳۳ بار۔ رَبِّ اغْفِرْ وَاَرْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِیْنَ۔

۳۳ بار۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ۔

راستیں اگر کسی مسجد کے پاس سے گزرہوتا تو آپ اس طرح دُعا فرماتے تھے۔  
”اے اللہ یہ تیرا پاک گھر ہے۔ اس میں آئینکی اور سجدہ ریز ہونیکی تو ہر مومن کو توفیق

عطا فرما۔“

اسی طرح اگر کسی ہسپتال کے سامنے سے گزرہوتا تو آپ اس طرح دُعا فرماتے تھے۔

”اے اللہ اس ہسپتال میں جتنے مریض اسوقت ہیں اُن سب کو اپنی رحمت بے پایاں

سے صحت یاب فرما۔ اور جو بھی اس میں آئے انہیں بھی شفا عطا فرما۔

اے اللہ تکلیف و بیماری بھی تو ہی دیتا ہے اور اسکو دُور بھی تو ہی کرتا ہے۔

اے اللہ ہم کو اور ہمارے متعلقین کو ان حدود سے محفوظ رکھ۔

مطب میں تشریف لانے کے بعد پابندی کے ساتھ ساڑھے نو بجے تک پھر مطب

ہی میں طالبین و سالکین کے لئے درس و تدریس کا سلسلہ رہتا اُس کے بعد مریضوں

کے ساتھ مشغول ہو جاتے۔

ظہر کی نماز کے بعد تسبیحات مقررہ (یعنی تسبیحات فاطمی)

عصر کی نماز کے بعد مقررہ تسبیحات کے بعد نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے

صدقہ اور طفیل سے حضرت مولانا اشرف علی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے درجات کی

بلندی کے لئے نہایت ادب و احترام کے ساتھ دُعا فرماتے، پھر اپنی اولاد اور

اپنے سے وابستہ تمام منتبین کی عافیت، نفس و شیطان کے شر اور مکائد سے حفاظت

کے لئے دُعا فرماتے تھے۔

مغرب۔ نماز مغرب اور دو سنتوں کے بعد چھ رکعت نماز نفل ادا بین

ادا فرماتے، پھر مقررہ تسبیحات کے بعد ۳۴ مرتبہ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّعِیِّ الْعَلِیِّ مِنْ

الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ، پڑھ کر ایک مرتبہ سورۃ شمس کی آخری تین آیتیں تلاوت فرماتے۔

## حضرت والا کے معمولاتِ شب

بستر پر لیٹنے کے بعد حضرت والا سب سے پہلے سونے کے وقت کی یہ دعا فرماتے۔  
 بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ اَرْفَعُهُ اِنْ اَمَسْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ  
 لَهَا وَاِنْ اَرْسَلْتَهُمَا فَاَحْفِظْهُمَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ ۵  
 اَللّٰهُمَّ فِتْنِيْ عَذَابِكَ يَوْمَ تَتَّبَعُ عِبَادَكَ۔ اس کے بعد ایک بار سورۃ فاتحہ  
 اور ایک بار آیتہ الکرسی پڑھ کر اور کلمہ کی انگلی پر دم فرما کر اپنے پورے گھر کا حساں فرماتے  
 پھر اس طرح دعا فرماتے "اے اللہ میں نے جو کلمت پڑھے ہیں، آپ کا وعدہ سچا ہے اپنے  
 کلام پاک کی برکت سے سب کو فی امان اللہ فی امان اللہ چوروں، ڈاکوؤں سے اور ہر آنے  
 والی مصیبت سے محفوظ فرمائے۔ اے اللہ تو میرے تمام اہل معاملہ، اہل محلہ۔ میرے تمام  
 عزیز و اقارب میرے تمام بہن بھائیوں اور اعزہ و اہل باب جو جہاں جہاں بھی ہوں، وہ  
 تمام اصحاب جو کراچی میں ہوں۔ وہ جو میرا پاس مطب میں آتے ہوں ان تمام کو اپنی حفاظت  
 اور امان میں لے لے۔ اے اللہ سب کو تندرستی کی نعمت عطا فرما۔ اے اللہ اپنی اس  
 حفاظت میں اُن تمام اصحاب کو بھی شمل فرما لیجئے۔ جو محض تیرے لئے اور تیرے دین سے  
 تعلق رکھنے کیلئے، چاہے وہ کراچی میں ہوں یا پاکستان میں کسی علاقہ میں ہوں۔ ہندوستان  
 میں ہوں۔ حجاز میں ہوں۔ امریکہ میں ہوں یا لندن میں ہوں یا دنیا کے کسی بھی خطہ ہوں مجھ سے  
 بذریعہ خط و کتابت تعلق رکھتے ہیں اور محض تیرے دین کے لئے مجھ سے رجوع ہوتے ہیں۔  
 اے اللہ تو علیم ہے۔ تو خبیر ہے ان سب کی ترقی دین ترقی دنیا اور ان کی حفاظت  
 دین کے لئے میں دل سے دعا کرتا ہوں۔ اے اللہ میری دعاؤں کو بصدقہ بنی اکرم صلی اللہ  
 علیہ وسلم سب کے لئے شرف قبولیت عطا فرما دے۔

اس کے بعد ایک بار پھر الحمد شریف ایک بار سورۃ ملک (نبارک الذی) اور سورۃ  
 بقرہ کی آخری دو آیتیں (آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا اُنْزِلَ سے ..... فَاَنْصَرْنَا عَلَى الْقَوْمِ  
 الْكَافِرِينَ تک) سورۃ آل عمران کی آخری سے پہلی آیتیں (اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ سے ...

لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ) پھر سورۃ توبہ کی آخری دو آیتیں (لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنْفِكُمْ عَزِيزٌ..... وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ تَب) تلاوت فرماتے۔

پھر تین مرتبہ درود شریف۔

اس کے بعد ایک ایک مرتبہ۔

○ اَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا سَلَّمَ.

○ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ.

○ اَللّٰهُمَّ عَافِنَا وَاعْفُ عَنَّا.

○ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ.

○ رَبِّ اِنِّي مَسْئُوْرٌ فَاسْتَسِرْ.

○ رَبِّ اِنِّي مَسْنِي الْفُتُوْرُ وَأَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ.

○ سُبْحَانَكَ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ.

○ يَا بَدِيعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ.

○ أَنْتَ رَبِّيْ حَسْبِيَ أَنْتَ وَلِيٌّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. اُقَوِّضُ أَمْرِيْ إِلَى اللّٰهِ

○ إِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ.

○ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ كُدُّكَ وَلِيًّا وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ كُدِّكَ نَصِيْرًا.

○ اَللّٰهُمَّ اَعِنَا عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ.

○ اَللّٰهُمَّ اذْهَبْ عَنِّي الْهَمَّ وَالْحُزْنَ.

○ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ.

○ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَالِ.

○ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْبِ الْفَسَادِ مِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا.

○ اَللّٰهُمَّ اَكْفِنِيْ بِحِلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاعْزِنِيْ عَمَّا سَوَاكَ.

○ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ جَمِيْعِ الْفِتَنِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ.

○ اَللّٰهُمَّ فَاِنِّكَ اَلْهَمُّ كَاشِفُ الْغَمِّ مُجِيْبُ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ

مَرَحْمَنَ الدُّنْيَا وَرَحِيمَهَا أَنْتَ تَرْحَمُنِي فَأَرْحَمْنِي بِرَحْمَتِكَ تَغْنِيَنِي بِهَا عَنْ  
مَرَحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ .

○ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ قُلْتَ فِيْ كِتَابِكَ الْحَقِّ اُدْعُوْنِيْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ وَاِنَّكَ  
لَمْ تَخْلُفْ الْمِيْعَادَ . اَسْتَغْفِرُكَ اِنَّكَ كَانَتْ عَقَارًا يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا  
وَيُمِدُّكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِيْنَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ جَنَاتٍ وَيَجْعَلُ لَكُمْ أَنْهَارًا .

پہر تین مرتبہ ۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ قَاتِلِ الْبُيُوتِ الْبُيُوتِ  
اَللّٰهُمَّ مَا بَكَ الْمَلِكُ تُؤْتِي الْمَلِكُ مِنْ يَشَاءُ ..... وَتَرْزُقُ مَنْ  
يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (آل عمران)

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ .  
يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ . اَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلَى  
نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ .

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلْتَ مِنْهُ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ  
وَسَلَّمَ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ .

اس کے بعد یہ دعائیں پڑھتے اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَفِيْ لِسَانِيْ نُوْرًا  
وَفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا وَفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَعَنْ يَمِيْنِيْ نُوْرًا وَعَنْ شِمَالِيْ نُوْرًا وَخَلْفِيْ نُوْرًا  
وَاجْعَلْ لِيْ نُوْرًا وَفِيْ عَقْبِيْ نُوْرًا وَفِيْ لَحْمِيْ نُوْرًا وَفِيْ دَمِيْ نُوْرًا وَفِيْ شَعْرِيْ نُوْرًا  
وَفِيْ بَشْرِيْ نُوْرًا وَفِيْ بَيْتِيْ نُوْرًا وَاجْعَلْ فِيْ نَفْسِيْ نُوْرًا وَاعْظُمْ لِيْ نُوْرًا وَاجْعَلْنِيْ  
نُوْرًا وَاجْعَلْ مِنْ قُوَّتِيْ نُوْرًا وَمِنْ نَحْوِيْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اَعْظِنِيْ نُوْرًا .

اَللّٰهُمَّ زِدْنَا وَلَا تَقْصُصْنَا وَاكْرِمْنَا وَلَا تُهِنَّا وَاعْظِنَا وَلَا تَحْزِنْنَا وَاثِرْنَا  
وَلَا تُؤْثِرْ عَلَيْنَا وَارْضِنَا وَارْضَ عَنَّا .

یہ تودہ عام دعائیں ہیں جو حضرت والا شب کو سونے سے پہلے فرماتے تھے لیکن  
ان کے علاوہ حضرت والا کا ایک خاص عمل یہ رہا ہے کہ ایک مرتبہ آیۃ الکرسی پڑھ کر



شہادت کی انگلی سے خانہ کعبہ اور روضہ اقدس صلی اللہ علیہ وسلم کا حصار فرماتے اور  
سَلَامٌ قَوْلًا تَمِيزُ رَبِّ رَحِيمٍ. فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ. پڑھ کر اس  
طرح دعا فرماتے تھے۔

یا اللہ! حرم کعبہ اور حرم رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم یہ دونوں حرمین شریفین  
تبرے اور تیرے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے مقدس مقامات ہیں۔ یا اللہ انہیں ارضی و سماوی  
آفت سے محفوظ رکھیے۔ ان دونوں مقامات پر یا اللہ تیری تجلیت کا نزول ہو رہا ہے اور  
تیری نعمتوں کی بارش ہو رہی ہے۔ یا اللہ یہاں کے رہنے والوں کو حیاتِ طیبہ نصیب فرمائیے  
اور ہر طرح کی خیر و برکت انہیں عطا کیجئے۔ انہیں ہر قسم کی سازشوں سے محفوظ رکھیے۔ یا اللہ  
یہاں زائرین کو جو حج و زیارت کیلئے آتے ہیں، اُن کے تمام خرائق و واجبات اور عبادات  
کو، اُن کی منت و ہاتھوں کو اور اُن کی دُعاؤں کو قبول فرمائیے۔ اُن کے حج و عمرہ کو قبول فرمائیے  
یا اللہ یہ خانہ کعبہ اور روضہ اقدس نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم آپ کی تجلی گاہیں ہیں۔  
ان کی تجلیات انوار سے پاکستان و دیگر تمام ممالک اسلامیہ کی ظلمتوں کو دور فرمادیجئے  
ہر قسم کے فسق و فجور کو دور کر دیجئے۔ رشد و ہدایت عطا فرمائیے۔

اَللّٰهُمَّ اَعِزِّ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَمْلُؤْ مَنَاةَ  
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّتَقُوْمَ الظَّالِمِيْنَ وَ يَجْتَابِ بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ.  
اَللّٰهُمَّ اَعِزِّ اِلْمَ سَلَامَ وَاْمُسْلِمِيْنَ.

اے اللہ صدر مملکت پاکستان اور حکومت کے صاحب اقتدار حکام کو توفیق  
و ہدایت اور صلاحیت دیجئے کہ وہ نفاذِ شریعت کر سکیں۔ اے اللہ ان کی نصرت و اعانت  
فرمائیے۔

اس کے بعد تین مرتبہ درودِ ابراہیمی پڑھتے۔

پھر چار مرتبہ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهِ، عَلَدَ خَلْقِهِ وَ نَنَاءَ عَرْشِهِ وَ ضَى  
نَفْسِهِ وَ مَدَادَ كَلِمَاتِهِ۔ پڑھتے۔ اس کے بعد پھر ۵ مرتبہ درودِ ابراہیمی پڑھتے۔  
اس کے بعد حضرت مرشدی اس طرح دعا فرماتے تھے۔

”یا اللہ تمام انبیاء و مرسلین علیہم السلام کو نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی معیت میں مقاماتِ قرب میں پیہم ترقی عطا فرمائیے۔ یا اللہ تمام صحابہ کرام رضوان اللہ علیہم اجمعین۔ اہل بیت، واعزہ، ازواجِ مطہرات، تابعین، تبع تابعین اور انکی ازواج پر اپنی رحمتیں نازل فرمائیے۔ یا اللہ تمام خلفائے راشدین عشرہ مبشرہ، مہاجرین و انصار اور ان کی ازواج پاک پر اپنی رحمتیں نازل فرمائیے۔ یا اللہ، ان سے ہمارا تعلق قوی فرمائیے۔

یا اللہ، جو کچھ میں نے اس وقت پڑھا ہے وہ اپنے ان مقبول بندوں کے صدقہ اور طفیل میرے ماں باپ، آباؤ اجداد اعزہ و اقارب اور دوست احباب کے لئے بھی قبول فرمائیے اور ان سب کی مغفرت فرمادیجئے۔

یا اللہ! اپنے ان مقبول بندوں کے صدقہ و طفیل میرے اہل و عیال کو عافیت عطا فرمائیے۔ رشد و ہدایت عطا فرمائیے۔ شفاء کا ملہ عطا فرمائیے۔ ہر طرح کی گمراہیوں سے انہیں بچا لیجئے۔

یا اللہ میری دعائیں میرے اہل و عیال کے حق میں، عزیز و اقارب کے حق میں میرے دوست احباب کے حق میں اور مجھ سے وابستہ اصحاب کے حق میں اور ان سب کی دعائیں میرے حق میں قبول فرمائیجئے۔

یا اللہ! آپ نے میرے سپرد جو کام کیا ہے (جتنے بھی میرے زیرِ علاج مریض ہیں) ان سب کو شفاء عطا فرمائیے۔

یا اللہ! ان سب کو اپنے حفظ و امان میں رکھ کر عافیت کا ملہ عطا فرمائیے۔

یا اللہ! جو دین آپ نے مجھے عطا فرمایا ہے، آپ ہی کی عطا ہے، یہ آپ ہی کی عطا کردہ نعمت ہے کہ میں آپ سے دعا کر رہا ہوں، اے اللہ سب کو شرف قبولیت عطا فرمادیجئے۔ اور ہماری لغزشوں کو معاف فرماتے رہیئے۔ میرے دوست و احباب کو اس سے زیادہ سے زیادہ نفع عطا فرمائیے اور سب کو اپنا موردِ رحمت و مغفرت بنا دیجئے۔ اور اس کو میرے لئے اپنی رضا کا مورد بنائیے۔ آمین یا رب العالمین۔

بحق سید المرسلین۔ آمین۔

## تَشْكُرُ

اللہ تعالیٰ کی ان گنت نعمتوں پر حضرت مرشدی کچھ اس طرح کلماتِ شکر ادا فرماتے۔ ”یا اللہ کہاں لیٹا ہوا ہوں، آپ کے انعامات برحق ہیں آپ نے ایمان عطا فرمایا ہے، اسلام عطا فرمایا ہے، آپ نے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کا اُمتی بنایا ہے اور اپنے مقبول بندوں کے ساتھ وابستہ فرمایا۔ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ۔ یا اللہ اسکی اہلیت عطا فرمائیے، ان نعمتوں کو صحیح طور پر استعمال کرنیکی توفیق عطا فرمائیے۔ یا اللہ میں جو شکر ادا کر رہا ہوں اُسکو شرف قبولیت عطا فرمائیے۔

اس کے بعد حضرت مرشدی استغفار ان الفاظ میں فرماتے۔  
یا اللہ! حق تو ادا نہیں ہوا۔ نفس ہے۔ شیطان ہے۔ کوتاہیاں ہیں۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ۔

یا اللہ میری صلاحیتوں کو درست فرمادیجئے۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ تین بار۔

یا اللہ میری اہلیت درست فرمادیجئے۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ۔

یا اللہ میری قابلیتوں کو درست فرمادیجئے۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ۔

یا اللہ مجھے بندگی کی توفیق عطا فرمادیجئے۔

سب سے آخر میں حضرت مرشدی آنے والے انقلابات سے پناہ مانگتے =  
”اے اللہ۔ آنے والا انقلاب نہ معلوم مجھ میں۔ میرے اہل و عیال میں کیا تبدیلی پیدا کر دے۔ اے اللہ میں ایسے ہر آنیوالے انقلاب سے پناہ مانگتا ہوں۔

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفِیْنا وَ مِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنا

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ جَمِیْعِ الْغَلَبِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ مَا بَطَنَ۔

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ کُلِّہَا مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ۔

اُقَوِّضُ اَمْرِیْ اِلٰی اللّٰهِ۔ اِنَّ اللّٰهَ بِصِیْرِ الْعِبَادِ۔

یا اللہ ہر قسم کے فتنوں سے بچا لیجئے۔ ہماری توبہ و استغفار کو قبول فرمالیجئے۔ آمین۔

یا اللہ میں اپنے ایمان کی تجدید کرتا ہوں۔

اَشْہَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْہَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

پھر معوذتین (قل اعوذ برب الفلق اور قل اعوذ برب الاس) تین بار پڑھنا ایک مرتبہ پھر استغفار فرماتے، اور دُعا فرماتے کہ یا اللہ آپ توفیق عطا فرمائیے کہ جب تک جاگتا رہوں ذکر کرتا رہوں۔

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

## حضرت مرشدی کا جمعہ کا معمول

جمعہ کے روز حضرت مرشدی کا علاوہ روزمرہ کے معمولات کے نماز جمعہ سے قبل کا معمول رہتا تھا۔ تقریباً گیارہ بجے مسجد پہنچ جاتے، اور مندرجہ ذیل عبادات میں مشغول رہتے۔  
۴ رکعت تحیۃ المسجد ادا کرنے کے بعد ۴ رکعت صلوٰۃ التبیح ادا فرماتے ہیں۔  
اور اس کا ثواب بہ صدقہ نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم۔ عجم محترم حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نیت میں ان الفاظ سے ساتھ پیش فرما دیتے۔

یا اللہ! حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو معیت رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم عطا فرمائیے اور ان کے صدقہ طویل میری ۴ رکعت نماز قبول فرمائیے، میں اپنی تمام روحانی اور مادی سلاصیتوں کے ساتھ مناسب ادب و احترام کے ساتھ اس کا ہدیہ (ثواب) بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وسلم میں پیش کرتا ہوں۔ اسے قبول فرمائیے۔

یا اللہ حرمین شریفین کی انوار تجلیات سے میرے ایمان کو اور میرے اہل و عیال کے ایمان کو منور و مجلد فرما دیجئے۔ اور جتنی نفس و شیطان کی ظلمتیں ہیں اُن سب کو رفع فرما دیجئے۔

صلوٰۃ التبیح کی چار رکعت اور اس کی دُعا کے بعد حضرت مرشدی ۲ - ۲ رکعت نفل کی نیت دس نفل خصوصی طور پر حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں ثواب پیش کر نیچے لے آفرماتے، اور ان نفلوں کے بعد یہ دُعا فرماتے تھے کہ جمعہ تک جتنے کام کی آپ نے توفیق عطا فرمائی ہے، یا اللہ اسے شرف قبولیت عطا فرمائیے۔ اور اس کا ثواب میرے والدین، آباء اجداد، عزیز واقارب اور دوست احباب کو پہنچا دیجئے۔



بھائیوں میں آپس میں محبت قائم رکھنا بہت ہی ضروری ہے ورنہ تمام زندگی لطفِ زندگی حاصل نہیں ہوتا اور زندگی میں قوت نہیں محسوس ہوتی۔ بڑی تباہی کی علامت ہے کہ بھائی بھائی آپس میں اتفاق نہ رکھ سکیں۔ سارا فساد بچوں سے بیویوں سے شروع ہوتا ہے اور آپس میں غلط فہمی اور بد مزگی پیدا ہونے لگتی ہے۔ غریب سمجھ لیا جانے عقل کی واسطے ہے کہ پہلے سے اندازہ کر لے کہ یہ فتنہ شروع ہی نہ ہونے پانے ورنہ آخر میں جب دل بُرے ہونے لگتے ہیں اس وقت جذبات سے متاثر ہو کر عقل بھی موقوف ہو جاتی ہے اور یہی خانہ بربادی کا باعث ہوتی ہے۔ ہر شخص کو فرداً فرداً رواداری۔ ایثار۔ جہنم پوشی اور معمولی معمولی باتوں کو درگزر نہ کی عادت ڈالنا چاہیے۔ اسی طرح آپس میں محبت قائم رہتی ہے اور جو معاملہ غلط فہمی پر مبنی ہو اس کو فوراً صاف کر لیا چاہیے۔ اور قصور برتو اعتراف کر لے اور معافی مانگ لے۔ (از: اقادات عارفیہ)

منجانب: عارفی جیولرز (۳۲ کرڈ کی ضمانت)

۳۳ محمدی شاپنگ سینٹر  
بلاک "G" حیدری۔ نارنگی ناظم آباد کراچی

## واقعہ امشب کا دلچسپ

### شکر

حضرت والا قدس سرہ نے بمصلحتِ تعالیٰ متعدد بار ارضِ مقدّس کا سفر فرمایا، ان سفروں میں سے ایک حج اور ایک عمرے کا سفر نامہ خود حضرت ہی کے قلم سے تحریر فرمودہ حضرت کے کاغذات میں محفوظ تھا، حضرت کے بڑے صاحبزادے جناب حسن عباس صاحب کے شکرید کے ساتھ یہ دونوں سفر نامے پیش کئے جا رہے ہیں۔۔۔۔۔ ادارہ

اللہ تعالیٰ کا لاکھ لاکھ احسان و شکر ہے کہ اس شخص محض اپنے فضل و کرم سے غیب سے ایسے سامان دفعۃً دیتا فرمادے کہ ہم لوگوں کے لئے سفرِ حجاز اس قدر آسان ہو گیا کہ جس کا وہم و گمان کئے درجہ میں کبھی کوئی امکان نہ تھا ایک خنیف سی تمنا تو ضرور مدتوں سے تھی مگر بظاہر کوئی ذریعہ نہ تھا قرض کا سلسلہ کم و بیش تمام عمر میرے ساتھ وابستہ رہا۔ پھر دلیر وہاں کی ماضی کی کبھی کوئی صلاحیت و قابلیت ہی محسوس نہ ہوتی تھی۔

جو لوگ حرمین شریفین کی زیارت کے لئے جاتے تھے ان کے ذریعہ نیک دُعاؤں اور

اور تمناؤں کو اُن بارگاہوں میں پیش کئے جانے کا اہتمام ہمیشہ رہا۔  
دسمبر ۱۹۲۲ء میں کچھ خفیف سی تحریکِ دل میں پیدا ہوئی جو اپنے بزرگوں اور احباب سے  
بار بار کے تذکرہ سے برابر بڑھتی گئی۔

پھر بھائی صاحب قلعہ مدظلہ کی پنشن رکنی ہوئی تھی رہا الحمد للہ جاری ہوئی۔ ان کے دل  
میں بھی عرصہ سے اس سفر کا ارمان تھا، وہ اور چچی صاحبہ بھی تیار ہونے لگے بلکہ ان کا اشتیاق  
بہت بڑھنے لگا۔

چچا محمد ہادی صاحب قلعہ مدظلہ کے پاس کوئی زادِ سفر نہ تھا۔ لیکن اللہ تعالیٰ نے کچھ  
ایسا سامان فرمایا کہ انہوں نے اپنی کسی اور مصیحت سے ناظم آباد میں نو تعمیر کردہ مکان فروخت  
کر ڈالا۔ جس کے عوض میں دوسرا مکان تعمیر کرنے کا ارادہ تھا۔ لیکن جب سفرِ حجاز کے متعلق میں نے  
اپنی آمادگی نہ پر کی تو وہ بھی مع چچی صاحبہ بغیر کسی عذر کے تیار ہو گئے اور رقم جس قدر موجود تھی  
وہ سفرِ حجاز کے لئے بالکل کافی تھی۔

چنانچہ وہ بہت اشتیاق کے ساتھ آمادہ ہو گئے، چچا علی صاحبہ بھی تیار ہو گئے۔ انہوں نے  
دفعۃً بڑی استعداد کے ساتھ ارادہ قائم کیا۔ اور اخراجات سفر کا بہت جلد انتظام کیا۔ اپنے  
لئے بگی اور قانونِ سٹہا کے لئے بھی۔ میرے اور والدہ حسن کے پاس کوئی رقم محفوظ نہ تھی اور نہ  
اس کے فراہم ہونے کا کوئی بظاہر امکان تھا مگر الحمد للہ بہت آسانی سے وقت پر انتظام ہو گیا  
فی کس تقریباً ڈھائی ہزار روپیہ کی ضرورت تھی۔ جہیں ایک ہزار روپیہ سکندریہ کلاس کا کرایہ  
بحری تہانہ سے اور پندرہ سو روپیہ حجاز میں ذاتی اخراجات کے لئے شامل تھا۔  
اس طرح اپنے بزرگ اور ہم لوگ آٹھ افراد آمادہ سفر ہو گئے۔

احباب سے ذکر ہوا تو محترمی بنم احسن صاحب مدظلہ عم نصیر امین بلال ستمہ بھی سفر کے لئے  
مضطرب ہو گئے اور غیب سے ان کے لئے زادِ سفر کی رقم مہیا ہو گئی۔

ولایت حسین صاحب ناچسہرہ آباد بھی مع اپنی اہلیہ کے تیار ہو گئے اس طرح کل گیارہ  
افراد ہو گئے۔ طے یہ ہوا کہ سب بجائی لینے نام کے فارم داخل کریں چنانچہ بجائی درخواست فارم  
داخل کر دیا گیا۔ اور الحمد للہ قرعہ ہلوگوں کے نام نکل آیا۔

دوسرے احباب بھی آمادہ سفر ہو گئے۔ چنانچہ اوصاف احمد صدیقی جو پورٹ ٹرسٹ میں ملازم ہیں اور خاص احباب میں ہیں وہ بھی تیار ہو گئے۔

اکمل خان صاحب مع اپنی اہلیہ کے اور عبدالوسید خان بھی مع اپنی اہلیہ کے تیار ہو گئے۔ مگر ان کے نام قرعہ نہیں نکلا۔ البتہ یہ لوگ پاسپورٹ کے ذریعہ سے سفر کر سکے۔

الحمد للہ ہملوگوں کے تمام انتظامات قبل سفر بہت آسانی اور راحت کے ساتھ سرانجام دیے گئے۔ عید کے دو تین دن ہی بعد پان اسلامک کپنی کا بحری جہاز سفینہ الحج ۴، شوال ۱۳۸۳ھ ذی شنبہ مطابق ۳۱ مارچ ۱۹۶۴ء صفران حج کو لیکر روانہ ہوا۔ ہملوگ سب اسی جہاز سے روانہ ہوئے، الحمد للہ سب کو حسب دلخواہ اچھے اور آرام دہ کیبن مل گئے۔ حسن سکنہ تعارف لرا دینے سے تمام افسران جہاز نے ہملوگوں کا بہت خیال کیا اور بہتر سے بہتر کھانے وغیرہ کا انتظام ہمارے لئے جہت کیا۔

۹ مارچ - ۱۲ شوال کو ہملوگ جدہ پہنچے۔ جدہ سے کچھ مسافت قبل ہملوگوں کے لئے میقات یلم ہے وہاں ہملوگوں نے احرام باندھ لئے، جدہ میں اتر کر سامان تو بندرگاہ کے قلیوں کی معرفت کسٹم ہاؤس پہنچا دیا گیا۔ اور ہملوگ کبیسوں کے ذریعہ سے دھواں ہو چکے۔ نیا مقام ہونے کے سبب اور زبان عربی سے ناواقفیت کی وجہ سے کسٹم ہاؤس میں سامان کی جانچ کے وقت کچھ پریشانی ضرور ہوئی۔ مگر بہر حال معلم کے ایجنٹ کی معرفت ہملوگوں کو مدینۃ الحج جو سرکاری طور پر حاجیوں کے قیام کے لئے ہے وہاں عشاء کے وقت پہنچ گئے۔ وہاں تمام حاجیوں کا سامان مخلوط طریقہ پر لاریوں کے ذریعہ سے پہنچا دیا جاتا ہے۔ اس وقت مات میں البتہ یہ کام ذرا دشوار تھا بہت بڑے بڑے انبار میں سے پتا سامان شناخت کر کے نکال پڑا۔ تمام سامان پر ہم لوگوں کے نام اور معلم علی حسن صاحب کا نام لکھا ہوا تھا۔ اس لئے سامان سب مل ہی گیا۔ جدہ میں رات بھر اور پھر دوسری رات دن بھر رہنا پڑا۔ جدہ سے مکہ المکرمہ جانے کے لئے سرکاری بسیں مقرر ہیں جن کا انتظام معلم کا ایجنٹ کرتا ہے ہمارے معلم کے ایجنٹ کا نام محمد عمن تھا۔ مغرب کے بعد بس ملی اور ہم سب مکہ المکرمہ کی طرف روانہ ہوئے۔ عرب میں اوقات مختلف ہیں وہاں ٹھیک بارہ



بچے مغرب ہوتی ہے اس حساب سے تقریباً نصف شب کے قریب ہمنوگ حدود مکہ المکرمہ میں داخل ہوئے۔ بس کا سفر آرام دہ ہوتا ہے۔ کوئی خاص تکلیف نہیں ہوتی۔ جو کچھ تکلیف ہوتی ہے وہ سامان کی زیادتی کی وجہ سے ہوتی ہے۔ ہمنوگوں کے پاسپورٹ جلد میں معلم کا ایکنٹ لے لینا ہے اور پھر جس بس پر حاجی روانہ ہوتے ہیں وہ پاسپورٹ اس بس کے ڈرائیور کو دیدیجئے جاتے ہیں۔ جگہ جگہ پولس اور جاچنگ کرنے والے محکموں میں خود ڈرائیور ہی پاسپورٹ دکھاتا ہے۔ بس مکہ المکرمہ پہنچی اور ایک خاص مقام پر ہمنوگوں کو اُتار دیا۔ معلم کو اطلاع دی گئی اور معلم صاحب نے فوراً آکر ہم سب کا سامان بس سے اُتار کر سڑک کے کنارے انبار کر دیا۔ سامان کو وہیں شب کی تنہائی میں اللہ تعالیٰ کی حفاظت میں چھوڑ دیا گیا۔ اور معلم صاحب نے ہمنوگوں کو یقین دلایا کہ سب سامان محفوظ رہیگا۔ کوئی فکر کی بات نہیں ہے۔ اُسی وقت جب معلم صاحب تشریف لائے ہیں ہمارے ماموں صاحب سید محمد علی اسد اللہ بھی تشریف لائے وہ ہمنوگوں کے منتظر تھے۔ معلم صاحب ہم سب کو اپنے مکان پر لیگے تمام شہر میں اس وقت سناٹا تھا۔ ایک متنفس بھی کہیں نظر نہ آتا تھا۔ معلم صاحب کا مکان کافی بلندی پر واقع ہے جبکہ جبل ہندی کہتے ہیں۔

ہم لوگوں کو مکان کی اوپر کی کھلی چھت پر بٹھایا گیا۔ عورتیں نیچے کے درجہ میں معلم صاحب کی عورتوں کے ساتھ مقیم ہوئیں۔ معلم صاحب کا مکان اوپر نیچے تین درجوں میں ہے مگر بہت ہی مختصر۔ اور معلم صاحب میرٹھی کے رہنے والے ہیں اور اُردو خوب اچھی طرح سمجھتے اور بولتے ہیں۔ اُن کو وہاں کی ہجرت دوسری نسل میں ہے ہمنوگوں کیلئے بہت سادہ کھانا تیار تھا۔ صرف خمیری روٹی اور آلو کا گوشت۔ مگر بہت ہی لذیذ تھا۔ کھانے سے فراغت کے بعد ہی معلم صاحب نے ہم کو سب سے لیکر عمرہ ادا کرنے کے لئے حرم کعبہ شریف کی طرف روانہ ہوئے۔ ہمارا چورہ آدمیوں کا قافلہ تھا۔ آٹھ مرد اور چھ عورتیں۔ چاندنی رات تھی اور سڑک پر انتہائی خاموش فضا طاری تھی۔ معلم صاحب آگے آگے تلبیہ پڑھتے ہوئے لبیک اللہ بلیک ..... الخ

اور اس کے علاوہ دعا پائے ماثورہ پڑھتے ہوئے جا رہے تھے اور ہم سب

پچھے پچھے ان کلمات کو دہراتے جاتے تھے۔ حرم شریف تقریباً وہاں سے دو فرلانگ ہوگا۔ ہم سب حرام باندھے ہوئے سفر کی تکان خستہ اور مقدم عظمت کی وجہ سے حواس باختہ عجب رویے جاسکتے تھے حرم شریف میں اس زمانہ میں تعمیری توسیع ہو رہی تھی اسلئے جب مملوگ باب ابراہیم پر پہنچے تو داخل ہونے کے قبل تعمیری سامان ہر طرف پھیل چکا تھا اور چھت کی تعمیر کے سلسلہ میں مکہ یوں کے ستون سہارے کے لئے لگے ہوئے تھے ان سب سے گذرتے ہوئے دفعۃً حرم کعبہ آنکھوں کے سامنے آ گیا۔ حواس ہی بجائے تھے جو ماثورہ دعائیں پڑھتے یا اور کوئی نذرانہ بقیۃ و عظمت ادا کرتے۔ واللہ اعلم کس عالم میں ہم سب تھے کہ یاد ہی نہ رہا کہ کس مقام پر گئے۔ مسجد حرم میں داخل ہوتے ہی معلم صاحب نے عشاء کی نماز کی امامت فرمائی اور ہم سب لم گستگی کے عالم میں مقتدی بن گئے اور نماز ادا کی پھر معلم صاحب فوراً ہی ہم سب کو طواف کے لئے لے گئے اور یہ بھی خبر نہیں کہ ہم سب نے کس طرح سنٹ اسود کے مقام پر پہنچ کر نیت و اف کی۔ اور کس طرح طواف شروع کیا۔ بہر حال معلم صاحب آگے آگے کچھ بڑھتے جاتے تھے اور مملوگ دہراتے جاتے تھے اور طواف کرتے جاتے تھے۔ طواف ختم ہوا۔

ہم سب کو ملتزم پر جا کر دعا کرنے کی تلقین کی پھر مقام ابراہیم پر پہنچ کر دو رکعت از طواف ادا کی پھر چاہ زمزم پر جا کر خوب سیراب ہوئے پھر وہاں سے صفامہ والی طرف جب عمرہ سے باہر آئے اور صفامہ و امین سعی شروع کی۔ معلم صاحب کا آدمی دعائے ماثورہ ور زور سے پڑھتا ہوا ہم سب کی رہنمائی کرتا رہا۔ سب تو ان چکر واپر ختم ہوا۔ عورتوں کو ابیں بٹھا دیا اور مرد سب قریب ہی کے دروازے سے باہر گئے اور وہاں حجہ کی دکان پر سر سے بال صاف کرائے۔ ارکان عمرہ ختم ہو گئے۔ اور ہمارے احرام محولہ لئے جانے کا موقعہ آیا۔ مگر ہم لوگ ابھی احرام ہی ملبوس رہے۔ پھر مسجد حرم شریف میں پہنچ کر دو رکعت نماز ادا کی۔ اور پھر معلم صاحب ہم سب کو لیکر اپنے مکان کی طرف روانہ ہوئے عجیب نظر تھا۔ ہم سب اسی بدحواسی میں چلے جا رہے تھے۔ سڑکوں میں بڑی پُر کیف موسیقی ادا رہی تھی۔

شب معلم صاحب کے مکان پر بسر ہوئی۔ اور نماز فجر بھی وہیں ادا ہوئی۔ پھر مملوگ

چائے پی کر مکان کی تلاش میں نکلے۔ معلم صاحب نے متعدد مکان دکھائے مگر کوئی بھی مکان ہمارے لئے مناسب نہ ملا۔ پھر ہملوگ یعنی میں اور مولوی ولایت سین اور حافظ ریاض الحق صاحب مکان کی تلاش میں سرگرداں رہے۔ سامان جو سڑک پر رات بھر پڑا ہوا تھا اسکو معلم صاحب نے مدرسہ صولتیہ پہنچا دیا۔ مدرسہ صولتیہ کے مہتمم مولانا محمد سلیم صاحب کیرانہ کے رہنے والے ہیں اور چچی صاحبہ یعنی والدہ محترمہ کے عزیز قریب ہیں۔ سامان کے ساتھ باقی سب لوگ بھی مدرسہ صولتیہ میں آگئے وہاں نیچے کے درجہ میں ان سب کو قیام کی جگہ دیدی گئی۔ ہم تین انسداد مکان کی تلاش میں پھرتے پھرتے اپنے محترم محب ویرین حافظ محمد زکریا صاحب تاجر عطر جو پور کی تلاش میں ان کے مکان پر کسی ذریعے سے پہنچے مکان باب سعود کے باہل مقابل سڑک کے اُس پار واقع ہے۔

حافظ زکریا صاحب تقریباً پچیس سال سے ہجرت کر کے مکہ المکرمہ میں مقیم ہیں ان کے ساتھ ان کی اہلیہ اور دو لڑکے محمد الیاس اور محمد احمد ہیں۔ اور وہاں عطریات کی دکان ماشاء اللہ بڑے پیمانہ پر قائم ہے۔

حافظ زکریا صاحب سے ان کے مکان پر ملاقات ہوئی۔ محض دو دیکھ کر بیتاب ہو گئے اور معانقہ فرما کر رونے لگے اور فرمایا کہ آپ اب آئے جب ہم کسی خدمت کے قابل نہ رہے حافظ صاحب کو ثقل سماعت بہت زیادہ ہو گیا ہے۔ اور اعضاء میں نیچے کے دھڑک میں فالجی اور وجع المفاصل کی کمزوری بہت زیادہ لاحق ہو گئی ہے۔

ہملوگوں کو اپنے کمرہ میں لا کر شربت وغیرہ پیش کیا۔ ہم نے مکان کی دشواری کا مسئلہ پیش کیا۔ حافظ صاحب نے براہ راست ہم سے کچھ نہ کہا بلکہ اشارہ میں فرمایا کہ تقریباً تین ہزار ریال میں مکان مل سکتا ہے۔ اگر اس سے کم میں طلب ہو تو پھر اسکی تلاش کی جائیگی معلوم ہوا کہ خود حافظ کے مکان کا زیریں درجہ اس غرض کے لئے خالی ہے۔ جو حجاج کو اس زمانہ میں کرایہ پر دیا جاتا ہے۔ حافظ صاحب نے فرمایا کہ اس کا تعلق چونکہ براہ راست ان سے نہیں ہے اسلئے وہ کچھ نہیں کہہ سکتے بہر کیف ان کے صاحبزادے محمد الیاس صاحب نے اس مکان کو ہمارے مقام کے لئے صاف کرادیا۔ پھر ہملوگ بعد مغرب مدرسہ صولتیہ

سے معہ سب گھراہیوں اور سامان کے اس مکان میں پہنچ گئے مکان کے دوسرے درجہ میں دو کمرے ہیں ایک بہت بڑا کمرہ ہے جس میں ہمارے واسطے بہت بڑا قالین بچھا دیا گیا۔ اس میں ہم سب مرد فرد کش ہو گئے اور اس سے ملحق کمرہ جو کافی وسعت کا ہے اور اس میں سب عورتیں آرام پذیر ہو گئیں۔ اندر کے کمرے کے متصل برابر میں ایک اور کمرہ ہے جس میں سامان رکھ دیا گیا اور اسی سے متصل غسل خانہ اور پانی رکھنے کی جگہ ہے۔ سامان کے کمرے سے باہر جانے کے لئے پتلی گلی سی ہے۔ جس کے آخر میں پاخانہ ہے نیچے کی طرف جانے میں بھی ایک پاخانہ ہے اور پھر سب سے نیچے کے درجہ میں بھی ایک پاخانہ ہے اس لئے الحمد للہ بہت ہی آرام کا مکان ہے بڑی نعمت اور خوبی اس مکان میں یہ کہ مکان سے نکل کر سامنے چند قدم پر شارع عام ہے اور اُس کے اُس طرف حرم شریف ہے باب سعود نو تعمیر شدہ عمارت کی عالیشان عمارت ہے۔ اذان کی آواز اسی طرح سُنی جاتی ہے جس طرح خود حرم شریف میں۔ عورتوں کے لئے بالکل فراغت اور اطمینان کے ساتھ آمد و رفت میں جو آسانی تھی۔ اس کی طرف سے بالکل اطمینان تھا۔ بحمد اللہ تعالیٰ ہم سب کو حرم شریف میں پانچوں وقت باجماعت نماز نصیب تھی اور اس کے علاوہ طواف کعبہ شریف کے لئے حسبِ دلخواہ اوقات میسر تھے۔ باب سعود کے سامنے بازار تھا جہاں کھانے اور دیگر ضروریات کے حاصل کرنے میں بھی بے انتہا آسانی تھی۔

## سفر مدینہ طیبہ

تقریباً ۲۲ یوم مکہ المکرمہ میں قیام کے بعد ہم سب لوگ ۲۲ اپریل ۱۳۳۳ھ کو مدینہ طیبہ روانہ ہوئے بعد مغرب بس کے ذریعہ سے روانگی ہوئی اور دوسرے روز ۲۳ اپریل ۱۳۳۳ھ کو ظہر کے قریب ہم لوگ اس ارض پاک میں پہنچ گئے۔ جو اس یہاں بھی بجا نہ تھے۔ سفر کا تھکان اور اجنبیت مقام کی وجہ سے طبیعتوں میں عجب بے حسی سی طاری تھی ہماری بس بالکل حرم شریف کے سامنے باب مجیدی کے مقابل میں ٹھہری سڑک کے بالکل مقابل میں اصطفیٰ منزل ہے۔ وہاں پہلے سے محب صادق جناب اصطفیٰ خان مرحوم نے



بہاؤ الدین رئیس المزورین کو ہملوگوں کے متعلق خصوصی خط لکھ دیا۔ وہ ہملوگوں کے منتظر تھے۔ عجب اتفاق ہے ہمارے مدینہ طیبہ پہنچنے سے ایک ہی ہفتہ قبل جناب اصطفیٰ خان صاحب کراچی میں رحلت فرما گئے۔ انا للہ وانا الیہ راجعون۔ بہت ہی متواضع بزرگ تھے اللہ تعالیٰ ان کی مغفرت فرما دیں۔

اصطفیٰ منزل میں نیچے کے درجہ میں عورتوں کے لئے ایک شادہ کمرہ مل گیا اور اوپر کی منزل میں ہملوگوں کے لئے تین کمرے اور غسل خانہ و پاخانہ کا انتظام تھا۔ ہملوگ جلد از جلد ظہر کی نماز سے فارغ ہوئے حرم شریف میں نماز ظہر ہو چکی تھی۔ پھر وہاں سے کسی صاحب کے ساتھ حرم شریف میں داخل ہوئے باب جبرئیل کی طرف سے شرف باریابی ہوا نماز تحیتہ المسجد ادا کی اور پھر ہم سب مواجبہ شریف کے سامنے لائے گئے۔ جو اس یقیناً صحیح نہیں تھے معلم نے ہملوگوں کو جس طرح صلوٰۃ و سلام تلقین کیا وہ ہم ادا کرتے رہے۔ پھر اس کے بعد کہاں رہے اور کس طرح رہے کچھ یاد نہیں۔ مغرب سے قبل ہی تمام حرم شریف بجلیوں کے فانوس سے منور اور روشن ہو گیا۔ نماز مغرب باجماعت ادا ہوئی۔ پھر ہملوگ اپنی قیام گاہ پر آئے۔ تقریباً بیس یوم تک اس ارضِ تجلیت میں قیام رہا۔ نماز پنجگانہ کے علاوہ نماز تہجد کی بھی سعادت ملتی رہی۔ اور روضۃ الجنۃ اور ممبر شریف اور محراب نبوی صلی اللہ علیہ وسلم میں نمازیں ادا کیں۔ دو قرآن شریف ختم کئے۔ مناجات مقبول اور دلائل الخیرات ایک ایک بار ختم کی۔ دو تین بار جنت البقیع میں حاضری ہوئی اور پھر مسجد قبا۔ مسجد ذوقبلیتین۔ جبل اُحد۔ مزار حضرت حمزہ رضی اللہ عنہ اور اسی سے متعلق مقامات قدس میں ایک بار حاضری ہوئی۔

۲۹ ذیقعدہ ۱۳۳۳ اپریل بوقت مغرب یہاں سے واپسی ہوئی۔ مسجد نبوی میں حاضری اور آخری سلام عرض کرنے کے بعد احرام باندھا۔ نماز احرام ادا کی اور واپسی کے لئے تیاری ہوئی۔ کس طرح ہوئی اور کس دلی کیفیات کے ساتھ ہوئی وہ قابل بیان نہیں ہو سکتی۔ مکہ المکرمہ سے آتے وقت اشدراہ میں شب و دن مقام رافع میں قیام رہا تھا۔ واپسی میں مقام متورہ میں شب گزاری۔ اور ۳۰ ذی قعدہ کو بعد عصر مکہ المکرمہ

میں پہنچ گئے۔

ہمارے ہمراہیوں نے عمرہ ادا کیا اور احرام کھول دیئے۔ مگر میں بیمار تھا۔ اور شب مستورہ بھی میں بنی رہا۔ مبتلا ہو گیا تھا۔ دُرود مکہ المکرمہ کے وقت بھی شدید بخار میں مبتلا تھا اسلئے عمرہ ادا نہ کر سکا۔ اسطرح ۷ ذی الحجہ تک بنی رشید میں مبتلا رہا۔ چونکہ ۸ ذی الحجہ سے مناسک حج شروع ہوتے ہیں اس لئے میں نے ۷ ذی الحجہ کو بعد عشر شہری پر سوار ہو کر عمرہ ادا کیا اور نصف شب کے قریب عمرہ سے فارغ ہو کر احرام کھول دیا۔

دوسرے روز ۸ ذی الحجہ تھی۔ پھر ہم سب نے مسجد حرم میں جا کر احرام باندھا اور نماز احرام ادا کر کے تقریباً نصف النہار سے قبل سب لوگ معلم صاحب کی بس پر منی روانہ ہوئے قبل نماز ظہر منی پہنچ گئے۔

معلم صاحب سے ہملوگوں نے کچھ رقم زائد دیکر منی میں رمی جمار کے قریب ہی جگہ مقرر کرائی تھی۔ معلم صاحب نے ہملوگوں کے لئے ایک پہاڑی کے نیچے دو خیمے کھوادئے ہیں ایک عورتوں کے لئے اور دوسرا مردوں کے لئے۔ استنجار خانہ اور پانی کا بہت کافی اچھا انتظام تھا۔ کھانا بازار سے آجاتا تھا۔ دوسرے روز ۹ ذی الحجہ کو معلم صاحب ہم سب کو اپنی بس پر عرفات لیگئے۔ وہاں قبل ظہر ہملوگ پہنچ گئے۔ ہمارے خیمے تیار تھے ایک عورتوں کے لئے دوسرا ہملوگوں کے لئے۔ ہمارے خیموں کے قریب ہی ماموں محمد علی اسلٹ صاحب کے اور ان کے بھائی اور داماد کے بھی خیمے تھے معلم صاحب کا خیمہ بھی بالکل قریب تھا۔ بعد ظہر معلم صاحب کی طرف سے ہم لوگوں کی دعوت تھی۔ اس میں صرف دُنبہ کا پلاؤ تھا پانی بہت اچھا۔ ٹھنڈا اور افراط کے ساتھ مہیا تھا۔ عصر کے بعد معلم صاحب نے زور زور سے ماثورہ دُعائیں عجب انداز محویت میں پڑھیں۔ جس پر ہم لوگ آمین کہتے رہے۔ اس کے علاوہ بعد ظہر ہی سے ہم سب اپنی اپنی دعاؤں میں مشغول رہے اور ایک بار بلند آواز سے پوری مناجات مقبول پڑھی گئی جس پر سامعین برابر آمین کہتے رہے۔

مغرب کی نماز عرفات میں نہیں پڑھی جاتی بلکہ مزدلفہ میں پہنچ کر عشاء کی نماز سے قبل ادا کر لی جاتی ہے۔

ہملوگ عرفات سے معلم صاحب کی بس پر مزدلفہ سے بعد مغرب روانہ ہوئے اور کافی تاریکی ہو جانے کے بعد مزدلفہ پہنچے۔ نماز مغرب اور اسکے بعد ہی نماز عشاء پڑھی گئی۔ ہملوگوں نے اپنے بستر ریت پر بچھائے۔ عجیب منظر تھا دُور دُور تک مسلسل ایک ایک ساتھ لاکھوں اللہ کے بندے امیر و غریب سب بستر لگائے ہوئے تھے رات کافی ٹھنڈی تھی۔ میری طبیعت اچھی نہ تھی بخار و حرارت کا اثر تھا۔ رات میں کبیل اور ٹھنڈا پڑا۔ احرام کے شرائط کی بھی نادانستہ کئی بار خلاف ورزی ہوئی صبح فجر کے قبل سب حاجی تیار ہو گئے۔

طلوع فجر کے بعد ہی سب لوگ نماز فرض فجر سے فارغ ہوئے۔ اپنی اپنی جماعت جو جہاں تھا وہاں بنالی۔ چند منٹ وقوف کیا۔ یعنی قبلہ رخ کھڑے ہو کر دعائیں مانگی گئیں پھر وہاں سے بس پر روانہ ہوئے۔ مزدلفہ سے منیٰ تک مشکل سے ۳ میل کا فاصلہ ہے۔ مگر تقریباً بیس لاکھ حاجی بیک وقت روانہ ہوتے ہیں۔ ہزار ہا۔ موٹر۔ اور بس چلتی ہیں سڑکیں متوازی تقریباً چھ سڑکیں ہیں اور ایک ایک سڑک اس قدر کشادہ ہے کہ برابر چار بسیں چلتی ہیں۔ مگر اتنی مختصر مسافت بھی چھ سات گھنٹے میں طے ہوتی ہے۔ مشکل سے ایک ایک بالشت حرکت ہو سکتی ہے۔ بہت لوگ پیادہ جاتے ہیں بعض مقامی لوگ اونٹوں پر سفر کرتے ہیں منیٰ میں پہنچتے ہی بڑے شیطان پر رمی جمار ہوتا ہے۔ سات کنکریاں بیک وقت ماری جاتی ہیں۔ ہملوگوں نے مزدلفہ میں شب کے قیام میں کافی تعداد میں چھوٹی چھوٹی کنکریاں جمع کر لی تھیں چونکہ لاکھوں آدمی بیک وقت رمی جمار کے لئے سبقت کرتے ہیں اس لئے کمزور اور بیمار لوگوں کے لئے کچھ توقف ضروری ہے۔

رمی جمار کے فوراً بعد مذبح جانا ہوتا ہے اور وہاں قربانی کرنا پڑتی ہے۔ جانور بکرے۔ دنبے۔ گائیں۔ اونٹ اور انکودنچ کرنے والے وہاں موجود ہوتے ہیں۔

ہملوگوں نے منیٰ پہنچ کر کچھ ناشتہ وغیرہ کیا اور زوال سے پیشتر ہم سب رمی جمار کے لئے روانہ ہوئے۔ عورتیں بھی ہمراہ پیدل ساتھ تھیں۔ اس وقت جمع بہت کم ہو گیا تھا۔ عورتوں نے بھی بہت قریب سے پہنچ کر کنکریاں ماریں۔ ہملوگ واپس قیام گاہ پر آئے اور ہمارے چند احباب قربانی کرنے کے لئے گئے ہماری طرف سے بھی وکالتا

قربانی کی۔ قربانی کرنے کے بعد اُن لوگوں نے سر کے بال صاف کرائے اور کچھ قربانی کا گوشت لیکر قیام گاہ پر آئے۔ اُن کے آجانے کے بعد تقریباً مغرب کے وقت ہملوگوں نے بھی سر کے بال اُترائے اور ہم سب کے احرام کھل گئے۔ روزمرہ کے لباس پہن لئے تمام حاجی زیادہ تر اُسی روز طواف زیارت کے لئے روانہ ہو جاتے ہیں اور پھر منی واپس آ جاتے ہیں۔ ہملوگوں کو یہی مشورہ دیا گیا کہ چونکہ سب رفقا ر ضعیف ہیں اور مستورات بھی ہیں اس لئے ہجوم اور ازدحام کا تحمل نہ ہو سکیگا مناسب یہ ہے کہ دوسرے روز یعنی ۱۱ ذی الحجہ کو بعد عصر ر می جمار سے فارغ ہو کر طواف زیارت کے لئے مکہ المکرمہ جائیں۔ چنانچہ اسی مشورہ پر عمل ہوا اور ہملوگ ۱۱ ذی الحجہ کو نماز مغرب کے وقت مکہ المکرمہ پہنچے۔ نماز باجماعت مل گئی۔ اس کے بعد ہملوگوں نے اپنے جائے قیام پر جا کر کچھ آرام کیا۔ اور سفر کا تکان ختم ہو جانے پر طواف زیارت کے لئے روانہ ہوئے بحمد اللہ تعالیٰ بہت سکون کے ساتھ اس کا موقع مل گیا۔ طواف سے فارغ ہو کر۔ ملتزم اور مقام ابراہیم اور زمزم کے مراتب ادا کر کے صفام و امین سعی کی اور پھر نماز عشاء ادا کرنے کے بعد معلم صاحب کی بس پر منی واپس آ گئے۔ احرام تو ہملوگوں کے ۱۰ ذی الحجہ ہی کو مغرب کے وقت کھل گئے تھے اس لئے سادہ لباس میں سعی صفا و مروا ادا کیا۔ ۱۲ ذی الحجہ کو بعد عصر پھر آخری سعی کی گئی اور ہملوگ قبل مغرب منی سے مکہ المکرمہ روانہ ہو گئے اگر منی میں مغرب کا وقت ہو جاتا تو پھر ایک شب وہاں اور قیام کرنا پڑتا اور پھر ۱۳ تاریخ کو ر می کو نیکے بعد مکہ المکرمہ جا سکتے۔ پھر ۱۳ ذی الحجہ سے ۱۸ ذی الحجہ تک مکہ المکرمہ میں قیام رہا۔

۱۸ ذی الحجہ ۱۴۲۲ھ مطابق ۱۲ مئی ۲۰۰۳ء طواف وداع کر کے ہملوگ مکہ المکرمہ سے جسدہ روانہ ہو گئے۔

دو روز جسدہ میں انتظار جہاز میں قیام کرنا پڑا ۲۱ ذی الحجہ مطابق ۱۵ مئی سفینہ الحجاج جسدہ سے صبح اشراق کے بعد روانہ ہوا۔

۲۷ ذی الحجہ مطابق ۲۱ مئی ۲۰۰۳ء بروز چہار شنبہ بوقت گیا ر بجے دن ہملوگ بحمد اللہ کراچی پہنچ گئے۔ اس سفر کے معلومات۔ تجربات۔ مشاہدات و تاثرات انشاء اللہ تعالیٰ کسی وقت مفصل لکھنے کا ارادہ ہے۔



تسلیف  
سہ ماہی

وَأَوْفَتْ بِمَا رَحَمْنَاكَ

۱۳۸۲ھ مطابق ۱۹۶۳ء میں ادائیگی حج بیت اللہ شریف کے بعد دل میں تمنا تو یہی تھی کہ پھر ان آستانوں پر حاضری کی توفیق ہو۔ دل میں برابر ایک تشنگی سی محسوس ہوتی تھی یہ خیال بہت غالب تھا کہ دونوں آستانوں پر کچھ غفلت سی طاری رہی اور حق حضورؐ ہی تھا وہ ادا نہ ہو سکا۔ کاش پھر دوبارہ حاضری ہوتا کہ کچھ ہوش و حواس کے ساتھ ان آستانوں کا حق ادا کیا جائے۔

دوبارہ حج کے لئے بہت سی دشواریاں حائل ہیں۔ حکومت ایک بار حج کے بعد پھر پانچ سال حج کے لئے اجازت نہیں دیتی اس لئے عمرے ہی کے لئے خیال تھا۔  
رمضان المبارک کے عمرے کے بڑے فضائل احادیث نبوی صلی اللہ علیہ وسلم میں وارد ہیں۔ یہ معلوم ہو کر کہ اس زمانہ میں مکہ المکرمہ اور مدینہ طیبہ میں اس قدر سردی ہوتی ہے کہ جسکا تحمل شاید نہ ہو سکے۔ اس ارادہ کو ملتوی کر دیا۔ چونکہ عام پاسپورٹ پہلے سے تیار تھا۔ اس لئے پھر خیال ہوا کہ جب حاجیوں کو واپس لانے کے لئے پہلا جہاز کراچی سے جائیگا اسگس جائیں اور آخری جہاز سے قبل جو جہاز حاجیوں کو لیکر آتا ہے اسگس واپس آئیں۔ چنانچہ ماہ اپریل کی ۱۰ تاریخ سے قبل اسٹیٹ بینک کو عمرے کے واسطے اکسیجین کے واسطے درخواست دی گئی مگر قرعہ میں ہملوگوں کا نام نہیں نکلا۔ فوراً دوسری تدبیر پر عمل کیا گیا۔ یعنی اسٹیٹ بینک کی اجازت جو "پی" فارم پر حاصل کی جاتی ہے اس کے لئے تدابیر کی گئی اور الحمد للہ اس میں کامیابی ہو گئی۔ مگر بینک نے صرف دس پونڈ فی کس منظوری دی۔ ہملوگوں نے پان اسلامک کمپنی کے مینیجر وغیرہ سے ٹکٹ کے لئے کوشش کی۔ الحمد للہ ہملوگوں کو دو ٹکٹ فرسٹ کلاس میں مفت حاصل ہو گئے صرف کھانے کے مصارف ادا کرنے پڑے اور دو نفر کے لئے۔  
۲٪ ڈالر کے مبادلہ میں -/۲۵۵ روپے صرف ہوئے۔ کھانے کے لئے ادا کئے۔ ۵۰/۴۵۵ روپے اس طرح کل رقم صرف ہوئی ۵۰/۷۳۰ روپے۔

جہاز ۲۹ ذی الحجہ ۱۴۲۲ھ مطابق ۲ مئی ۱۹۰۵ء کو بروز یکشنبہ صبح ۱۱ بجے روانہ ہوا اور ہملوگ یکشنبہ ۱۰ مئی کو جدہ پہونچے بعد ظہر حسن ستمہ کے تعارف کرا دیئے پر۔ کپتان جہاز اور دیگر عمال نے ہملوگوں کا بہت خیال کیا اور محمد اللہ سفر نہایت آرام اور راحت کے ساتھ پورا ہوا۔ جدہ میں حکیم سید محمد ابراہیم صاحب اور حافظ ریاض الحق صاحب موجود تھے۔ معلم صاحب علی حسن صباغ اپنی موٹر بیکر موجود تھے۔ سامان موٹر پر رکھ کر پیسے کسٹم ہاؤس گئے وہاں سے فراغت کے بعد نفرت علی صاحب کے مکان پر گئے۔ وہاں نماز عصر ادا کی اور چاء پی کر ہملوگ مکہ المکرمہ روانہ ہو گئے عین نماز مغرب کے وقت حرم شریف پہونچے مغرب کی نماز ادا کرنے کے بعد فوراً عمرے کے ارکان ادا کئے پھر جائے قیام پر آ گئے۔

حافظ ریاض الحق صاحب نے ہملوگوں کے لئے باب السعود کے مقابل ہی میں فندق عرفات میں دو کمرے قبل سے طے کر لئے تھے ایک ماہ کے لئے مبلغ دو سو ریال میں کرایہ جمع کر دیا گیا تھا۔ ہوٹل کے کمرے صاف ستھرے اور آرام دہ ہیں۔ بجلی کا پنکھا۔ روشنی۔ اور پانی۔ اور پاخانہ غسلی نہ آرام دہ ہے۔

تیسری منزل پر ہمارا قیام تھا۔ ہوٹل میں لفٹ ہونے کی وجہ سے بہت آرام ملا ہر وقت آمد و رفت کی سہولت تھی۔ ۱۲ مئی ۱۹۰۵ء کو ہم سب نے مقام جعرانہ سے ایک عمرہ اور ادا کیا۔ یہ وہ مقام ہے جہاں سے حضور سرور عالم صلی اللہ علیہ وسلم نے عمرہ کے لئے احرام باندھا تھا مکہ مکرمہ کے قریب ایک مقام ”تنعیم“ بھی ہے جہاں سے عمرے کے لئے احرام باندھا جاتا ہے یہ وہ مقام ہے جہاں سے حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے عمرہ کے لئے احرام باندھا تھا۔ روزانہ بعد نماز فجر باب السعود پر ٹیکسی والے آواز لگاتے رہتے ہیں کہ بڑا عمرہ کے لئے جو حاجی جانا چاہیں وہ ایک ریال آمد و رفت کے لئے دیکر جاسکتے ہیں۔ آنے جانے میں مشکل سے ایک گھنٹہ بھر لگتا ہے۔ ان مقامات پر مسجد بھی ہے اور پانی کا انتظام بھی ہے ۱۵ محرم الحرام ۱۴۲۵ھ ۱۵ مئی ۱۹۰۵ء بعد نماز عصر۔ ماموں محمد علی اسد اللہ صاحب مدظلہ نے دو موٹر کار ہملوگوں کے لئے مہیا کئے اور ہملوگوں کو میدان عرفات لیگئے۔ جبل رحمت کے نیچے ہملوگ فسر دکش ہوئے۔ چاروں طرف تاحہ نظر بڑا وسیع میدان ہے

اور اس کے گرد پہاڑیاں ہیں حج کے دن تاحد نظر مختلف مقامات کے حاجیوں کے خیمے ہی خیمے نظر آتے ہیں۔ مکہ المکرمہ سے عرفات تک بڑی وسیع اور متوازی چھ سڑکیں ہیں۔ پانی کا بہت بڑا ذخیرہ نہر زبیدہ کے ذریعے ہر جگہ موجود ہے۔ نل بھی لگے ہوئے ہیں۔ ہملوگ جبل رحمت پر اوپر تک گئے۔ چڑھائی پر کٹا دہ زینے بنے ہوئے ہیں۔ اوپر دو مقام پر چھوٹی سی کھلی ہوئی مسجدیں ہیں وہاں مشہور ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے کچھ دیر مقام و قوف فرمایا تھا۔ ان دونوں مقامات پر ہملوگوں نے بھی دعائیں کیں۔ واپسی پر مسجد نمبرا کی زیارت کی پھر منظر الحرام کی زیارت کی اور پھر مغرب کی نماز مسجد خیف جو مٹی میں واقع ہے وہاں ادا کی۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے جس مقام پر نماز ادا کی تھی وہاں محراب بنی ہے ہملوگوں نے بھی دو رکعت نفل وہاں ادا کی۔

۱۷ مئی ۱۳۵۷ء کو بعد نماز عصر۔ محمد شمیم صاحب ابن محمد سلیم صاحب منتظم مدرسہ صولتیہ نے ہملوگوں کو اپنے مکان پر چاء پر مدعو کیا۔ وہاں سے وہ ہم کو جنت المصلیٰ کی زیارت کے لئے لے گئے۔ اس قبرستان کے دو حصے ہیں۔ آخری حصہ قرون اولیٰ کا ہے۔ اس کے کچھ حصہ میں پہاڑ کے بالکل نیچے کفار عرب کے قبور ہیں اور شروع کے حصے میں اصحاب کبار رضی اللہ عنہ کے مزارات ہیں سب سے زیادہ محترم ہستی جو اس خطہ پاک میں آسودہ ہے وہ حضرت خدیجۃ الکبریٰ رضی اللہ عنہا ہیں۔ ہملوگوں کو اس مقام پر حاضری کی سعادت نصیب ہوئی۔ پہلے تمام قبور پر گنبد اور کتبے تھے اب سب کے نشانات منہدم کر دیے گئے ہیں۔ اور اکثر و بیشتر قبور بے نام و نشان ہیں۔ محمد شمیم صاحب کی نشاندہی پر ہملوگ ان معسوف مزارات پر حاضر ہوئے۔ ہملوگ پھر حضرت حاجی امداد اللہ صاحب صاحبہ ماجہ مکی قدس سرہ العزیز کے مزار پر حاضر ہوئے۔ اس محدود خطہ میں تین بہت مفید ہستیاں خوابیدہ ہیں۔ حضرت حاجی امداد اللہ صاحب قدس سرہ العزیز کے مزار پر حاضری کے بعد متصل ہی مولوی رحمت اللہ صاحب نور اللہ مرقدہ کا مزار ہے یہ بزرگ کیرانہ کے رہنے والے اور بانی مدرسہ صولتیہ ہیں۔ مولوی سلیم صاحب کے دادا ہیں ان بزرگ کے مزار سے متصل ہی حضرت صاحب دلائل الخیرات قدس سرہ العزیز کا مزار ہے۔ ہملوگوں نے ہر

مزار پر فاتحہ پڑھی اور دعائیں کیں۔ میں نے مزار صاحب در نل الخیرات پر بعد فاتحہ یہ بھی عرض کیا کہ مجھ کو صاحب دلائل الخیرات اپنی روحانی توجہ سے دلائل الخیرات کی اجازت عطا فرمادیں۔ اللہ تعالیٰ اس التجی کو قبول فرمائیں۔ اس محدود خطہ قبرستان میں اور بھی بڑے بڑے مراتب کے سہیلی آرام فرما ہیں۔ مگر نشانات کا پتہ نہیں۔ اللہ تعالیٰ ان سب پر اپنی رحمت و مغفرت ہمہ وقت بیکر و بے حساب تاقیامت نازل فرمادیں۔ آمین۔

## ۲۰ محرم الحرام ۱۲۵۵ھ ۲۰ مئی ۱۸۷۵ء سفر مدینہ طیبہ جمعرات

ماموں محمد علی اسد اللہ صاحب مدظلہ کے صاحبزادے محمود ستلہ نے ہملوگوں کو اپنی کار سے مدینہ طیبہ بچانے کا انتظام کیا پانچ ہملوگ جمعرات کو بعد نماز عصر جو عربی وقت سے ۹ بجے ہوتی ہے۔ ۱۰ بجے روانہ ہوئے۔ رات میں مقام بدر میں ایک گھنٹہ قیام کیا اور پھر مدینہ طیبہ روانہ ہو گئے۔ اسی مقام بدر سے مدینہ طیبہ ۲ گھنٹے کے سفر کا ہے جس وقت ہملوگ فجر میں مدینہ طیبہ میں حرم شریف کے سامنے پہنچے ہیں۔ اسی وقت نماز فجر ختم ہوئی تھی۔ ہملوگوں نے سات کار ہی پر رہنے دیا۔ اور سب نے نہ میں وضو کر کے نماز فجر مسجد نبوی صلی اللہ علیہ وسلم میں ادا کی پھر باٹے قیام کے تعین کے سے دو گھنٹہ تک سرگردانی رہی جہاں جہاں ٹھہرنے کا انتظام ممکن تھا وہاں جا کر دیکھ کہیں آرام کی سورت نظر نہ آئی۔ آخر کار اصطفیٰ منزل ہی میں قیام کے لئے انتظام ہو گیا۔

اصطفیٰ منزل بائیکل حرم شریف کے سامنے ہی ہے صرف ایک گشت دہ سرک سامنے ہے۔ عورتوں کے لئے نیچے کا درجہ اور ہملوگوں کے لئے اوپر کا درجہ آرام دہ اور فراغت کامل گیا۔ اس جگہ قیام کی برکت سے ہر وقت نہایت ہی آسانی سے حرم شریف میں آنا جانا ممکن تھا۔ اور بحمد اللہ یہ ہمارے لئے بڑی نعمت غیر مترقبہ ثابت ہوا۔ جائے قیام پذیرد کش ہونے کے بعد ہملوگوں نے وضو خانہ ہی میں غسل کیا۔ کپڑے بدلے۔ حرم شریف میں داخل ہو کر روضۃ الجنۃ میں نماز تحیۃ المسبحہ ادا کی پھر باب حیریل کی طرف سے جا کر حوضہ شریف میں حاضر ہوئے۔



الحمد للہ پانچوں وقت نماز باجماعت بہت آسانی سے صفوںِ اول میں مل جاتی تھی۔ اس وقت حرم شریف میں ہجوم کم تھا مگر ایک ہفتہ کے اندر جب قدر حاجی مکہ المکرمہ میں باقی رہ گئے ہیں۔ اور انکو ابھی واپسی کے جہازوں کا انتظار تھا وہ سب مدینہ طیبہ آگئے۔ اس لئے روز بروز ہجوم بڑھتا گیا اور پورا حرم مآثر اللہ ہر وقت لبریز رہتا تھا۔ ہملوگوں کو صرف دو بار جنت البقیع جانے کا موقع ملا۔ ایک روز سینچر کی صبح کو۔ دوسرے روز کسی وقت بعد عصر۔ یہاں بھی مزارات زمین کی سطح کے برابر کر دیئے گئے ہیں۔ پھاٹک کے بائبل پلڈ آخر میں امیر المؤمنین سیدنا عثمان رضی اللہ عنہ کا مزار شریف کچھ بلند سطح پر ہے اور اطراف میں کوئی دوسرا مزار نہیں ہے۔ اس کے بعد ہی حضرت سیدہ حلیمہ رضی اللہ عنہا کا مزار ہے۔ پھر دیگر شہداء کے مزارات یکجا ہیں۔ پھاٹک سے داخل ہونے پر داہنے ہاتھ میں سب آخر ابتدار میں حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا کا مزار ہے اور اس کے نیچے کے حصہ میں حضرت حسن رضی اللہ عنہ حضرت زین العابدین رضی اللہ عنہ اور حضرت جعفر صادق رضی اللہ عنہ کے مزارات ہیں پھر اور نیچے حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا اور دیگر ازواج مطہرات رضی اللہ عنہم کے مزارات سب ایک ہی قبر میں ہیں۔ اور آگے صاحبزادگان حضرت طیب و طاہر علیہما السلام کے مزارات ہیں۔ وہیں ایک طرف حضرت امام مالک رضی اللہ عنہ کا مزار ہے۔

پھاٹک کے پاس گوشہ میں حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی پھوپھیوں کے مزارات ہیں۔ اللہ تعالیٰ ان تمام ازواج مطہرہ و معظمہ و محترمہ پر اپنی مغفرتیں اور رحمتوں کا تاج قیام قیامت نزول پیہم فرمادیں۔ آمین۔

یکم صفر مطابق ۱۳۵۷ھ کو ہملوگ زیارت کے لئے جبل اُحد پر گئے۔ وہاں ایک وسیع احاطہ میں صرف تنہا وسط احاطہ میں حضرت سیدنا امیر حمزہ رضی اللہ عنہ کا مزار شریف ہے وہاں فاتحہ اور ایصال ثواب کی سعادت نصیب ہوئی۔ جبل اُحد کی زیارت کی حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میں جبل اُحد سے محبت کرتا ہوں اور جبل اُحد مجھ سے محبت کرتا ہے آج کے سائنس دان طبقہ کا خیال ہے کہ اس پہاڑ کے نیچے سونے کی بہت بڑی کان ہے اس پہاڑ کے نیچے سے ایک قدرتی چشمہ جاری ہے جو زیر زمین ہے اور کچھ دُور تھوٹے حصہ

ہیں مزار حضرت سیدنا حمزہ رضی اللہ عنہ کے سر ہانے احاطہ کے نیچے اس کا پانی حوض کی صورت میں محفوظ ہے۔ وہاں قریب ہی ایک قدیم مسجد ہے جس میں ہملوگوں نے نماز نفل ادا کی پھر ہملوگ بیر عثمان گئے۔ وہاں حضرت عثمان کے زمانہ کا کنواں ہے جو خاص تاریخی اہمیت رکھتا ہے۔ کنواں بہت کثادہ ہے مگر اسمیں پانی نہیں ہے۔ اس کے متصل ہی ایک وسیع حوض تعمیر کیا گیا ہے جس میں کہا جاتا ہے کہ اس کنوے کا پانی ہے۔ بیر عثمان ایک بہت ہی سرسبز اور پُر لیف و سرور مقام ہے بہت وسیع باغ ہے اور دور دور تک اسمیں سبزہ اور شاداب رختوں کا ذخیرہ ہے۔

کچھ پرند اور جانور بھی اسمیں بطور ۵۵۵ (چڑیا گھر) رکھے گئے ہیں۔ وقت کی کمی کی وجہ سے ہملوگ اندر سے سیر نہ کر سکے۔

پھر ان مساجد کی زیارت کی جو ایک ہی جگہ پانچ مسجدیں ہیں۔ جو سب سے بلندی پر ہے اسمیں ہملوگوں نے دو رکعت نماز نفل ادا کی۔

پھر مسجد ذوقبالتین کی زیارت کی۔ وہاں بھی دو رکعت نفل ادا کی۔ پھر مسجد قبا میں حاضر ہوئے۔ یہ وہ مسجد ہے جو خاتم الانبیاء سید المرسلین رحمۃ اللعالمین محبوب رب العالمین نے ہجرت مدینہ میں اول قیام کے وقت مدینہ طیبہ سے باہر اپنے دست مبارک سے بنیاد رکھی تھی اور اس کی تعمیر کی تکمیل فرمائی تھی۔ اس کے متعلق حدیث شریف میں وارد ہے کہ جس نے اس میں نماز پڑھی اسکو ایک عمرہ کا ثواب ملتا ہے۔

یہاں مدینہ طیبہ میں مقدس ہستیاں ہیں جن سے شرف ملاقات حاصل ہوا۔

① حضرت شاہ کشیر محمد صاحب گھوٹکی والے (سندھ) جو عرصہ پندرہ سال سے ہجرت کر کے یہاں مقیم ہیں حضرت حکیم الامت مولانا شاہ محمد شرف علی صاحب نقانوی قدس سرہ العزیز کے خلیفہ ہیں اور مناسک حج جو مسائل حج کا ایک نادر اور بہت ہی مستند اور مشرح ذخیرہ ہے۔ ان کی تالیف گرانقدر ہے۔ متوکل زندگی ہے۔ ہملوگوں سے نسبت سلسلہ کے باعث بہت ہی اخلاق و محبت سے پیش آئے۔ ہملوگوں نے دو بار ان سے ملاقات کی۔ ورائی توجہات اور دعاؤں سے بہرہ ور ہوئے۔ اللہ تعالیٰ ان پر اپنا رحم و فضل بیکراں فرمادیں

اور درجات بلند فرما دیں۔

(۲) حضرت مولانا شاہ عبدالغفور صاحب عباسی مدنی۔ عرصہ ۲۵ سال سے ہجرت کر کے مقیم ہیں وہیں مکان بنوا لیا ہے صاحب اولاد ہیں سلسلہ نقشبندیہ کے بزرگ ہیں۔ سرحد نزارہ کے فریب کے رہنے والے ہیں۔ ہملوگوں سے انتہائی تواضع اور اخلاق سے پیش آئے۔ ہملوگ تین بار اُن سے مشرف بہ ملاقات ہوئے۔ ہر بار خاطر و مدارت سے معاملہ کیا۔ ایک بار خصوصی دعوت کی اور بہت اچھے کھانے کھلائے۔ اُن کے ایک مرید نے اسی زمانہ میں مری صہبائے سخن ان کی خدمت میں پیش کی تھی۔ مجھ سے زبانی اس کی بہت تعریف فرمائی اور اشعار کی پسندیدگی کا بہت خصوصی الفاظ میں اظہار فرمایا۔ اللہ تعالیٰ ان کے درجات بلند فرماویں۔ چلتے وقت مکان سے باہر آکر بیگم ہو کر ہملوگوں کو رخصت کیا۔

(۳) حضرت شاہ سید بدر عالم صاحب (میرٹھی) یہ حضرت ایک مدت طویل سے ہجرت کر کے یہاں مقیم ہیں۔ بڑے درجہ کے عالم ہیں اور عربی میں کئی کتابوں کے مصنف ہیں۔ مگر نقدی زلہ تین چار سال سے صاحب فراش ہیں۔ سر میں اس قسم کی تکلیف ہے کہ بہ مشکل سر اٹھا سکتے ہیں۔ شدید دوران سر پیدا ہوتا ہے۔ اس تکلیف کے سبب ہمہ وقت بستر ہی پر بیٹے رہتے ہیں۔ ویسے تمام جسم اور اعضاء صحیح ہیں۔ گو دن بدن نقاہت بڑھتی جاتی ہے ہاں ہمہ ملاقات کرنے والوں سے دیر دیر تک دین کی باتیں کیا کرتے ہیں اور روزانہ معمول ہے کہ عصر و مغرب کے درمیان بیٹھ کر حاضرین کو دین کی باتیں بتایا کرتے ہیں۔ میں جب ۱۳۷۲ھ میں مدینہ طیبہ حج کے زمانہ میں گیا تھا اس وقت بھی دو تین بار ان سے ملاقات کی تھی۔ ایک بار مجھے چار پر مدعو بھی کیا تھا اس بار بھی میں نے متعدد ملاقاتیں کیں۔ ہر دفعہ بڑی تواضع اور اخلاق کا معاملہ فرمایا۔ اور بہت ہی خصوصی بے تکلفی کی باتیں کرتے رہے۔ ایک بار میری اور میرے ہمراہیوں کی نہایت پُر تکلف دعوت کی۔

اسی زمانہ میں سید امیر حسن صاحب جو کراچی سے آئے تھے۔ میری کتاب صہبائے سخن حضرت مدظلہ کی خدمت میں پیش کی۔ جب میں حاضر ہوا تو کتاب کے فطری و باطنی محاسن و خوبیوں کا بڑی دلچسپی کے ساتھ تذکرہ فرماتے رہے۔ اور اشعار کی سنجیدگی اور متانت

پر اظہار پسندیدگی فرماتے رہے کتاب کھول کر نعتیہ اشعار کی غزل خود پڑھ کر سنائی۔

جب کبھی وہ ادھر سے گذرے ہیں

کتنے عالم نظر سے گذرے ہیں

بہت مزے لے کر شعر پڑھے جب اس شعر پر پہنچے۔

دل پر ایک تازہ چوٹ کھاؤ ہے

جب بھی ہم ان کے در سے گزرتے ہیں

تو آب دیدہ ہو گئے اور چورا شعر پڑھ کے کتاب بند کر دی۔

یہ امر میرے لئے بڑا سہرا یہ ناز ہے کہ ایک ہل دن نے میری بیاض کو پسند

فرمایا۔ رخصت ہوتے وقت بہت متاثر تھے۔ فرمانے لگے۔

بفر رفتت مبارک باد

بسلامت روی و باز آئی

اس شعر کو پڑھ کر فرمایا کہ یہ شعر بڑے مقام کا شعر ہے۔ حضرت جامی رحمتہ علیہ

جب مدینہ طیبہ سے رخصت ہوتے تھے تو مولانا حبشہ بن عباس باکر عرض کرتے تھے۔

میروم چہ فرمائی۔ تو دفعہ اقدس سے جواب ملتا تھا۔

بسلامت روی و باز آئی

چنانچہ کئی بار ایسا ہی ہوتا رہا۔ آخر دفعہ جب حضرت جامی رحمتہ علیہ نے بھی عرض

کیا تو جواب نہیں ملا۔ سمجھ گئے کہ بس اب اس کی سعادت نہ میسر ہوگی۔

اس واقعہ کے نقل کرنے کے بعد حضرت سید بدیع عالم صاحب مظلہ نے فرمایا کہ

میں آپ کے لئے بھی پڑھتا ہوں گا۔

بسلامت روی و باز آئی

میں نے عرض کیا کہ بغیر درخواست کے آپ ایسا فرماتا۔ انشاء اللہ فال نیک ہی

ہے پھر حاضر ہی ہوگی۔ اور بخیر و خوبی ہوگی۔

ایک دفعہ میں ملاقات کے لئے گیا تو تنہائی تھی مجھ سے دریافت کیا کہ تمہارا



خیال لاؤ ڈاسپیکر، ریڈیو اور ٹیپ ریکارڈ کے متعلق کیا ہے میں نے عرض کیا کہ ان کے استعمال پر منحصر ہے اگر استعمال لغویات سے پاک ہے تو استعمال میں کوئی مضائقہ نہیں۔

فرمایا کہ میں نے تمہارے ذوق کو معلوم کرنے کے لئے پوچھا تھا کہ اگر اس کو جائز سمجھتے ہو تو میں نے اپنی ایک نظم کراچی میں ایک صاحب سے ٹیپ ریکارڈ کرائی ہے۔ جس کا عنوان "شانِ حضور" ہے پھر اپنے صاحبزادے سے ٹیپ ریکارڈ منگوا کر وہ نظم سنوائی۔ ماشاء اللہ عجیب واردات بے تکلف ہیں جنہیں رعایت قواعد شاعری نہ سہی مگر جذبات بے ساختہ اور واردات صحیحہ کی ترجمانی ہے۔ یہ کتاب کی صورت میں شائع ہوئی ہے۔ بہت خوشخط چھوٹی سی تقطیع پر ہے اس کے علاوہ اپنی ایک کتاب "قریبا دمنظر" بھی عطا فرمائی۔ اس میں بھی مختلف اشعار مسلسل نظم کی صورت میں ہیں اور بہت خوب ہیں یہ کتابیں بہت ہی خصوصی امتیاز اور محبت کے ساتھ مجھ کو عطا فرمائیں۔ اللہ تعالیٰ مددِ حق کو صحت و توانائی اور قوت عطا فرمادیں۔ اور اپنے محبوب رسول مقبول صلی اللہ علیہ وسلم کے صدقے میں "نادیر اس معصوم ہستی سے فیوض و برکات دیں جاری رکھیں۔ آمین۔"

④ جناب مولوی عبدالقدوس صاحب مدظلہ (بنگالی) خلیفہ حضرت مولانا تھانوی قدس سرہ العزیز۔ یہ بزرگ بھی بہاجر ہیں اور عرصے سے رباط بنگالہ میں مقیم ہیں حضرت والا قدس سرہ العزیز کی نسبت معلوم ہونے پر ہملوگوں سے بہت ہی خصوصیت کا معاملہ فرمایا۔ پہلی بار جب حج میں آنا ہوا تھا اس وقت ہم سب ہمراہیوں کی جو تقریباً چودہ نفر تھے دعوت بھی کی تھی۔ اس بار بھی بڑی تواضع و اخلاق سے ہملوگوں کے ساتھ معاملہ فرمایا۔ اللہ تعالیٰ ان مراتب باطنہ میں ترقی عطا فرمادیں۔ آمین۔

⑤ جناب احمد عبداللہ المیننی۔ یہ بھی بہاجر ہیں اور طویل عرصے سے یہاں مقیم ہیں کپڑے کی دوکان ہے اور ہمارے سلسلہ کے بزرگ ہیں۔ بہت ہی متواضع ہیں۔ حاجیوں کی خدمت کرتے رہے ہیں۔ ہمارے تمام ضروریات خرید و غیرہ میں ان سے بہت مدد ملی۔ خصوصاً کھجوروں کے خریدنے اور ان کے بند کرانے میں خاص توجہ سے کام لیا۔ ایک بار ہم سب اہل سلسلہ کی دعوت بھی بڑی پُر تکلف طریقہ پر کی۔ باب مجیدی کے بازار میں ان کی

دوکان ہے :

⑥ عبدالرزاق طالب علم۔ متوطن جیکب آباد پاکستان۔ یہ بھی یہ سلسلہ تعلیم کئی سال سے یہاں مقیم ہیں مجھ سے بڑی محبت کا اظہار کیا اور سہلوگوں کو ناشتہ و چاء پر مدعو کیا۔ اللہ تعالیٰ ان کے مقاصد حسنہ پورے فرماویں۔

⑦ ڈاکٹر سید شریف حسین۔ بہاری۔ داماد محمد نسیم صاحب وکیل مرحوم (برادر محمد سلیم صاحب وکیل) یہ سعودی عرب میں فوجی ڈاکٹر ہیں۔ محمد سلیم صاحب وکیل نے ان کو خط لکھ دیا تھا۔ یہ پہلے سے ہی مجھ سے واقف تھے۔ انہوں نے سہلوگوں کا بڑا خیال کیا روزانہ مغرب میں حرم شریف میں آتے اور ہم سے ملاقات کرتے تھے۔ بہت مختلف ضرورتوں کے لئے بار بار دوائیں اپنے پاس سے لا کر دیتے رہے۔ آجکل مدینہ طیبہ میں تنہا ہیں۔ انکی بیوی کراچی گئی ہوئی ہیں۔ کھانا ہوٹل میں کھاتے ہیں۔ پھر بھی سہلوگوں کی بڑی یرتکلفت دعوت کی۔ اور سارا انتظام ہوٹل سے کیا۔ مگر خود ہی سب کام انجام دیا۔ بڑی محبت کے اور سادہ وضع کے نوجوان صالح ہیں۔ دین کا رجحان بہت زیادہ ہے۔ اللہ تعالیٰ انکو اپنی مرضیات کی زندگی عطا فرماویں۔

سہلوگ ۲۱ محرم الحرام مطابق ۲۱ مئی ۱۴۵۰ھ بروز جمعہ بوقت فجر بعد ختم نماز فجر حرم نبوی صلی اللہ علیہ وسلم پر پہنچے ہیں۔ اور ۵ صفر ۱۴۵۰ھ بروز جمعہ بعد نماز عشاء واپسی ہوئی۔ اس طرح الحمد للہ پندرہ دن کے قیام میں تین جمعہ مسجد نبوی صلی اللہ علیہ وسلم میں مل گئے۔ روضۃ الجنۃ میں ایک قرآن شریف ختم کرنے کی سعادت بھی حاصل ہوئی۔ ایک پوری مناجات مقبول ختم کی ایک بار دلائل الخیرات ختم کی۔

نفل نمازیں روضۃ الجنۃ میں اکثر و بیشتر ادا کیں۔ مہر نبوی صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے ستون عائشہ رضی اللہ عنہا کے چاروں طرف۔ ستون ابولبابہ رضی اللہ عنہ کے سامنے۔ نفل نمازیں ادا کیں۔

اکثر قرآن شریف مزار شریف کے سر پہنے والی جالی ہی کے متصل بیٹھ کر تلاوت کیا۔ ان تمام مقامات پر دعائیں مانگیں۔ مواجب شریف میں اکثر و بیشتر حاضری کی سعادت

نصیب ہوئی۔ اعزہ و احباب کی طرف سے سلام عرض کئے۔ والدین کی مغفرت کے لئے دعائیں کیں۔ ابا و اجداد اور اعزہ و اقرباء و احباب کے لئے دعائے مغفرت کیں اور موجودہ بزرگان خاندان۔ اعزہ و اقرباء بھائی بہن۔ اہل و عیال۔ اور احباب اور جمیع مؤمنین و مؤمنات کے لئے دعائیں کیں۔

ہملوگوں کا قیام باب مجیدی کے بالکل مقابل اصطفیٰ منزل میں تھا۔ درمیان میں صرف سڑک ہے۔ الحمد للہ ہر طرح کی سہولت و آرام و جمیعت خاطر حاصل رہی۔

۵۔ صفر مطابق ۲ جون بروز جمعہ بعد نماز عشاء اس دیار حبیب صلی اللہ علیہ وسلم سے واپسی ہوئی۔ مدینہ طیبہ سے تقریباً سات آٹھ میل کے فاصلہ پر مقام ذوالحلیفہ ہے۔ یہاں حضور محبوب رب العالمین صلی اللہ علیہ وسلم نے احرام باندھا تھا۔

ہم لوگ جب اس مقام پر پہنچے۔ تو تازہ وضو کیا۔ احرام باندھا۔ اور تلبیہ شروع کر دیا۔ نماز فجر جہدہ سے کچھ قبل ایک مقام پر ادا کی جہدہ پہنچ کر دوسری ٹیکسی کر کے مکہ المکرمہ روانہ ہوئے۔ وہاں عربی وقت سے تقریباً ایک بجے پہنچے۔ سامان ہوٹل میں رکھ کر عمرے کے لئے حرم شریف حاضر ہوئے۔ بحمد اللہ آسانی سے تمام ارکان پورے ہو گئے۔

ماموں محمد علی اسد اللہ صاحب مدظلہ گرمیوں میں بعد چچ طائف میں مع اہل و عیال پیئے جاتے ہیں۔ اس بار ہملوگوں کو بہت خصوصیت کے ساتھ مدعو کر گئے تھے۔

اُن کے صاحبزادے محمود سلمہ اپنی کار بیکر آ گئے۔ ہملوگ ۷ جون ۱۳۵۵ کو بعد نماز ظہر طائف روانہ ہوئے۔ طائف کا نیا راستہ جو پہاڑ کے بلندی پر سے بنایا گیا ہے۔ ابھی ایک ماہتہ ہوا کہ اسکی افتتاح کی رسم امیر فیصل نے ادا کی تھی۔ ہملوگ اسی راستہ سے پہاڑ کی پیچیدہ راہوں سے ہوتے ہوئے تقریباً دو گھنٹہ میں طائف پہنچے۔ عصر کی نماز طائف میں ادا کی۔

ماموں صاحب مدظلہ کا مکان محلہ یمانیہ میں متصل جامع مسجد واقع ہے۔ مکان بہت مختصر سا ہے مگر آرام دہ ہے۔ بڑی محبت اور تواضع کے ساتھ ہملوگوں کی مہمان نوازی کی۔

اپنے ہمراہ لیکر شہر طائف کی سیر کرائی اور خاص بازار وغیرہ دکھائے۔ مغرب کی نماز مسجد ابن عباس رضی اللہ عنہ میں ادا کی۔ یہاں مسجد کے داہنی طرف حضرت عبداللہ ابن عباس

یعنی اللہ عنہ کا مزار ہے۔ جو چاروں طرف سے بند کر دیا گیا ہے مسجد بہت خوبصورت اور بہت وسیع ہے والان اندر والان نئی عمارت کی توسیع کی گئی ہے۔ تمام مسجد میں قیمتی محلی نئے قالین چھے ہوئے ہیں۔ پراچی مسجد۔ مسجد کے صدر دروازہ کے بعد ہی سے ہے اور یہ بھی کافی وسیع ہے۔ اب توسیع ہو جانے پر بہت ہی عالی شان اور کشادہ ہو گئی ہے۔

اس مسجد میں نماز مغرب کے بعد حضرت عبداللہ رضی اللہ عنہ کی روح مبارک پر ایصال ثواب کیا۔ اور ان کے توسل سے دعائیں مانگی۔

۹ جون کی نماز فجر کے بعد ہملوگ پھر محمود سہیل کی کار پر واپس مکہ المکرمہ پہنچے ہملوگوں نے طائف ہی سے عمرہ کا احرام باندھ لیا۔ اشراق کے وقت حرم شریف پہنچے اور اس بار ہم سب نے نہایت اطمینان اور آسانی سے ارکان عمرہ ادا کئے۔ الحمد للہ علی ذلک۔

معلوم ہوا کہ جہاز ۱۲ جون کو آ رہا ہے اور ۱۳ جون کو کراچی روانہ ہوگا۔ اس لئے ہملوگ مکہ المکرمہ سے طواف کرنے کے بعد اور مغرب کی نماز ادا کرنے کے بعد جدہ کے لئے روانہ ہوئے۔ مدینہ الحجاز میں قیام کیا۔ نصرت علی صاحب کا مکان تلاش کیا۔ اور

عورتوں کو صبح ان کے گھر پہنچی دیا۔ ہملوگ مدینہ الحجاز ہی میں مقیم رہے۔ جہاز سے واپسی کے لئے بہت کوشش کرنا پڑی کیونکہ عمرے والوں کو آخری جہاز

واپسی ملتی ہے بہر حال اللہ تعالیٰ کا شکر ہے کہ ہملوگوں کو ۱۳ جون کے جہاز سے اجازت سفر مل گئی۔ ۱۳ جون ۱۹۷۵ء یوم یکشنبہ بعد نماز عصر جدہ سے جہاز روانہ ہوا۔ منگل کی شام کو مغرب کے قریب عدن پہنچی اور پھر بدھ کی صبح کو عدن سے روانہ ہو کر صبح یکشنبہ ۲۰ جون کو کراچی پہنچی۔ الحمد للہ علی احسانہ۔ سفر نہایت خیر و خوبی کے ساتھ سرانجام ہو گیا۔

۱۴ مئی ۱۹۷۵ء کو بروز یکشنبہ کراچی سے روانہ ہوئے اور بروز یکشنبہ ۲۰ جون ۱۹۷۵ء واپسی ہو گئی۔



مُحَمَّدُ اکْمَل خان

# حضرت مولانا قاسم چشتی دہلوی

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

سیدی و مرشدی الحاج جناب ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے جو ۱۹۶۳ء میں مودیک  
حضرات فریضہ حج ادا کیا تھا اور احقر بھی ہمراہ تھا اس سلسلہ میں مختصر حالات عرض ہیں۔  
احقر محمد اکمل خاں غلام دیرینہ الحاج جناب ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا  
سلسلہ حضرت والارحمۃ اللہ علیہ سے ۱۹۶۶ء سے تھا اور حضرت والا کی مجالس میں پاپوش نگر میں  
حاضر ہوا کرتا تھا ان مجالس میں جناب بابا نجم احسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ جناب مولوی ولایت  
حسین صاحب مدظلہ العالی اور دیگر اکابر شریک ہوا کرتے تھے۔

جنوری ۱۹۶۳ء میں احقر کو معلوم ہوا کہ ہمارے حضرت والارحمۃ اللہ علیہ مودہ اہلیہ محترمہ و دیگر  
بزرگان فرائض حج ادا کرنے تشریف لے جا رہے ہیں اور یسٹنکرا احقر کی بھی دلی خواہش ہوئی کہ کاش  
حضرت والارحمۃ اللہ علیہ کی ہمراہی میں احقر کی بھی حاضری حرم شریف میں ہو سکے۔

حضرت والارحمۃ اللہ علیہ نے مورخہ ۸ جنوری ۱۹۶۳ء کو ایک گروپ کی شکل میں گیا  
حضرات کی درخواستیں آدائے فریضہ حج کے سلسلہ میں کمشنر کراچی کے دفتر میں روانہ کر دیں

اور خود گروپ کے لیڈر تھے۔ اس گروپ میں مندرجہ ذیل حضرات کی درخواستیں تھیں۔

سیدی و مرشدی الحاج جناب ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب رحمۃ اللہ علیہ معہ اہلیہ محترمہ صاحبہ

الحاج جناب ڈپٹی علی سجاد صاحب رحمۃ اللہ علیہ معہ اہلیہ محترمہ صاحبہ ۲

الحاج جناب ڈاکٹر عبدالبہادی صاحب رحمۃ اللہ علیہ معہ اہلیہ محترمہ صاحبہ ۲

الحاج جناب علی ساجد صاحب رحمۃ اللہ علیہ معہ اہلیہ محترمہ صاحبہ ۲

الحاج جناب مولوی ولایت حسین صاحب قلد العالی معہ اہلیہ محترمہ صاحبہ ۲

الحاج جناب بابا بنجم حسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ ۱

اُس زمانہ میں حج گروپ زیادہ سے زیادہ گیا وہ حضرات پر مشتمل ہوتا تھا چنانچہ حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ نے بھی گیا وہی حضرات کا گروپ بنا کر درخواستیں پیش کر دیں۔ درخواستوں کا نتیجہ ۱۴ جنوری ۱۹۶۳ء کو معلوم ہوا تھا۔

احقر کی بھی دلی خواہش تھی کہ اس موقع پر حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی ہمراہی میں فریضہ حج ادا ہو جائے چنانچہ احقر نے بھی گیا وہ حضرات کا ایک گروپ بنا کر درخواستیں پیش کر دیں اور حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی اتباع میں احقر اُس گروپ کا لیڈر بن گیا۔

مورخہ ۱۴ جنوری ۱۹۶۳ء کو نتیجہ برآمد ہونے والا تھا اُس روز جوق در جوق مقصدین کمشنر کے دفتر میں پہنچے احقر بھی وہاں پہنچی۔ ہمارے حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ اور بابا بنجم حسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ پاپوش نگر ہی میں حضرت والا کے دولت کدہ پر تشریف فرما تھے۔

عصر اور مغرب کے درمیان درخواستوں کا بکس جناب حافظ محمد اسحاق صاحب سکریٹری کمشنر آفس کے پاس لایا گیا اور جناب حافظ صاحب موصوف نے ایک معصوم بچہ کو بلوا کر اُس میں سے صرف ۱۲۸ درخواستوں کے لفافے نکوائے یہ خیال کر کے کہ سیکنڈ کلاس میں صرف اسی قدر حضرات جا سکیں گے۔ ان لفافوں میں مختلف تعداد کی درخواستیں تھیں کسی لفافہ میں ۲، کسی میں ۳، کسی میں ۴ وغیرہ وغیرہ اور ہمارے حضرت رحمۃ اللہ علیہ کے لفافہ میں گیا وہ درخواستیں تھیں۔

چنانچہ لفافہ کھلنے شروع ہوئے اور درخواستوں کی جانچ پڑتال ہونے لگی۔ بیٹیس بیٹیس کامیاب حضرات کے بعد ہمارے حضرت رحمۃ اللہ علیہ کا اسم گرامی یہ کہہ کر پکارا گیا کہ ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب

معد دیگر حضرات کامیاب امیدوار قرار دیئے گئے۔ حضرت والا کی کامیابی کی خبر سن کر معتقدین مختلف  
ساریوں میں خوش خبری سنانے کیلئے حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت اقدس میں حاضر ہوئے اور  
خوش خبری سنائی۔ احقر کا نام اول ۱۲۸ حضرات کی فہرست میں نہیں آیا تھا۔

جب حضرت والا کو خوش خبری سنائی گئی تو حضرت والا نے احقر کے بارہ میں بھی دریافت کیا  
جُمہ حضرات خاموش رہے جس سے پتہ چلا کہ احقر کا نام کامیاب حضرات کی فہرست میں نہیں آیا ہے  
اسپر حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ نے نہایت عاجزی اور انکساری کے ساتھ بارگاہ ایزدی میں دُعا کی کہ  
یا اللہ اپنے علم میں ہے کہ ہم سب لوگ ضعیف ہیں بصارت کمزور ہے گھٹنوں سے چلا نہیں جاتا ہمارے ساتھ  
اگر کوئی جوان العمر ہوتا تو ہمیں آرام مل جاتا مزید عرض کیا کہ آپ قادر مطلق ہیں ہر شے پر قادر ہیں ہمارے  
مدد کے لئے کوئی جوان العمر ہمراہ فرمادیں۔

احقر عرض کر چکا ہے کہ عصر اور مغرب کے درمیان کا وقت تھا اُدھر حضرت والا دُعاؤں میں مشغول  
تھے اور اُدھر دفتر کمشنری میں جناب حافظ محمد اسحاق صاحب نے اعلان کیا کہ سیکنڈ کلاس کے لئے  
انتظارِی فہرست (Waiting List) میں ۶۲ حضرات کی درخواستیں مزید لی جائیگی چنانچہ  
معصوم بچہ ٹوٹا کر اُدسی بجس میں سے ۶۲ حضرات کی درخواستوں کے لفافے نکالے گئے اتفاق سے اُن  
لفافوں میں احقر کے نام کا لفافہ بھی شامل تھا۔

طریقہ یہ ہے کہ لفافہ کھول کر اُس میں سے درخواستیں نکالی جاتی ہیں اور ہر درخواست کی جانچ پڑتال  
ہوتی ہے کہ فوٹو وغیرہ موجود ہیں اور مطلوبہ قانون میں اُمیدوار کے دستخط موجود ہیں تو وہ درخواست  
کامیاب قرار دی جاتی ہے۔ اندازہ لگائیں کہ اگر صرف ایک ہی درخواست کی جانچ کی جائے تو اُس میں  
کم از کم ایک منٹ ضرور صرف ہوگا تو گیارہ درخواستوں میں اگر گیارہ منٹ نہیں تو کم از کم ۶۶ منٹ ضرور  
لگیں گے۔ خدا کی قدرت کا کثرتمہ کہ میری گیارہ درخواستوں کا لفافہ جانچ پڑتال کے بعد سب سے پہلے  
جناب حافظ محمد اسحاق صاحب سکرٹری کی میز پر پہنچ گیا جس پر جناب حافظ محمد اسحاق صاحب نے  
آواز دی کہ محمد اکمل خاں معد دیگر حضرات فہرست انتظارِیہ (Waiting List) میں سب سے  
اول نمبر پر ہیں اور مزید فرمایا کہ تم اپنے حضرت سے پہلے جاؤ۔

چونکہ مغرب کی آذان ہو رہی تھی اور نماز پڑھنے چلا گیا۔ واپسی پر احقر نے جناب حافظ صاحب

سے دریافت کیا کہ کیا واقعی میرا نام اول نمبر پر ہے یا ویسے ہی دل خوش کر رہے ہیں۔ اس پر جناب حافظ صاحب نے ٹائپ شدہ فہرست دکھائی جس میں میرا نام سرفہرست تھا۔ یہ دیکھ کر احقر خوشی خوشی حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت میں پا پوش نگر پہنچا اور عرض کیا کہ حضرت کی دُعاؤں سے میرا نام کامیاب امیدواروں میں سرفہرست ہے۔ یہ سن کر حضرت والا بہت خوش ہوئے اور سر جھٹکا کہ باری تعالیٰ کا شکر ادا کیا۔ حضرت والا کی تاریخ روانگی ۳، ۳، ۱۹۶۳ء تھی اور احقر کی تاریخ روانگی معلوم نہیں تھی چونکہ جس جہاز میں جگہ خالی ہوتی اُسی میں احقر کو بان ہوتا لیکن دلی خواہش تھی کہ حضرت والا ہی کے ہمراہ جانا ہو جائے تو اچھا ہو۔

عید الفطر سے قبل بھی پانی کے جہاز جانے والے تھے اور حضرت بابا نجم احسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا کہ تم ان جہازوں میں ہم سے پہلے چلے جاؤ اور مکہ مکرمہ ہی میں عید الفطر کرنا۔ احقر نے جانے کا ارادہ کر لیا۔ اتفاق کی بات ہے کہ جو جہاز ماہ فروری ۱۹۶۳ء میں عید الفطر سے قبل روانہ ہوئے اُس میں ایک بھی سیٹ خالی نہ تھی اس لئے احقر نہ پاسکا۔

اب ۳، ۳، ۱۹۶۳ء کے جب زکی انتظار یہ فہرست کا ثمر یا جس میں حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ تشریف لے گئے تھے۔ احقر کو اس جہاز میں سیٹیں مل گئیں اور احقر خوشی خوشی معالیہ موجود حضرت والا کی ہمراہی میں سفینہ حجاج جہاز میں سوار ہو گیا جو کہ ۳، ۳، ۱۹۶۳ء کو روانہ ہوا اور ۳، ۳، ۱۹۶۳ء کو بندر گاہ جدہ پہنچ گیا۔ راستہ بھر حضرت والا ہی بس ہوتی رہیں اور احقر اور دیگر حضرات شریک ہوتے رہے۔

جدہ کی بندر گاہ پر جناب نصرت علی صدیقی صاحب ہم کو لینے آئے جو کہ جدہ ہی میں ملازم تھے اور رات کو اُن کے مکان ہی میں قیام کیا اور اپنی آمد کی فائدہ پوری کر لی۔

دوسرے روز ۱۰، ۳، ۱۹۶۳ء کو ہم لوگ مکہ مکرمہ روانہ ہوئے۔ حضرت والا کے ماموں صاحب اُس وقت مکہ مکرمہ ہی میں تشریف فرما تھے اور ہم لوگوں سے بڑے اخلاق و محبت سے پیش آئے جناب علی حسن صاحب ہمارے معلم مقرر ہو گئے جو خود بہت نیک اور با اخلاق تھے۔ چونکہ فریضہ حج کی ادائیگی میں تقریباً دو ماہ تھے اس لئے معلم صاحب نے ہم لوگوں کو مدینہ منورہ شریف روانہ کر دیا۔ مدینہ منورہ شریف میں ہمارا قافلہ مصطفیٰ منزل میں ٹھہرا اور اللہ کے



فضل ورم سے ۳۳ روز قیام رہا اور مدینہ النبی کے فیوض و برکات سے مستفید ہوتے رہے۔ جناب مولانا شاہ بدر عالم صاحب رحمۃ اللہ علیہ، جناب مولانا شیر محمد صاحب رحمۃ اللہ علیہ جناب مولانا شاہ عبدالغفور صاحب مدنی رحمۃ اللہ علیہ و دیگر اکابرین سے بھی فیض حاصل ہوتا رہا اور ۳۳ روز کے بعد ہم لوگ واپس مکہ مکرمہ آ گئے۔

مکہ مکرمہ میں احقر حضرت بابا نجم حسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ کو طواف گزار ہاتھ کا احقر نے دیکھا کہ مولانا ولایت حسین صاحب اور جناب حافظ رباض الحق صاحب مرحوم تیزی سے طواف کر رہے ہیں اور عصر سے مغرب تک ۸، ۹ طواف کر رہے ہیں جبکہ احقر بابا صاحب کے ہمراہ مشکل سے ۳ طواف کرتا تھا، اور اس وقت کم بخت شیخین ملعون نے میرے دل میں دوسو ڈالا کہ مکہ مکرمہ شریف میں سب سے زیادہ ثواب طواف کرنے والوں کے لئے ہے اور طواف سولے مکہ مکرمہ کے دوسری جگہ ہو نہیں سکتا اس لئے احقر نے سوچا کہ بابا صاحب کو چھوڑ دیا جائے اور مولوی ولایت حسین صاحب و جناب حافظ رباض الحق صاحب ان سے زیادہ طواف کروں اور احقر نے دوران طواف بابا صاحب کو چھوڑ دیا۔ کیا دیکھتا ہوں کہ ہمارے حضرت والارحمۃ اللہ علیہ تشریف لے آئے اور بابا صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا ہاتھ پکڑ کر طواف کر رہے ہیں یہ دیکھ کر احقر نے بابا صاحب کا ہاتھ دوبارہ پکڑ لیا اور یہ سوج کر طواف کرنا شروع کیا کہ کل سے بابا صاحب کے ساتھ ہی نہ آؤں گا۔

مکہ مکرمہ میں ہمارا مکان باب سعود میں تھا جو کہ حرم شریف کے بالکل قریب تھا۔ اُس سال کراچی سے جناب مفتی محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ، جناب مولوی عزیز الحق صاحب رحمۃ اللہ علیہ جناب مولانا محمد یوسف صاحب بنوری رحمۃ اللہ علیہ و دیگر اکابرین بغرض اولائے فریضہ حج تشریف لے گئے تھے اور ہندوستان سے بھی جناب مولانا محمد احمد صاحب مودت حضرت تشریف لائے ہوئے قریب قریب روزانہ بعد مغرب حضرت والا کی مجلس حتمی تھی اور مذکورہ بالا جملہ اکابرین بھی شریک ہوتے تھے۔ دوران تقریر حضرت والارحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا کہ نجم صاحب بہت معذور ہیں، نجم صاحب ہمارے ساتھ آئے ہوئے ہیں جس نے نجم صاحب کو ایک طواف کرایا اُسے سیکڑوں کیلئے ہزاروں طوافوں کا ثواب ملے گا۔

حضرت والارحمۃ اللہ علیہ سے یہ الفاظ سنا کر احقر ششدر رہ گیا اور سوچنے لگا کہ چھنے تو ابھی تک کسی سے

ذکر بھی نہیں کیا ہے اور حضرت والا میرے دل کی بات بیان فرما رہے ہیں اُس وقت شیطان ملعون کو ٹھنی طبع  
 کر کے کہا کہ تم دفع ہو جاؤ اب تمہاری نہیں چلے گی اور حسب معمول بابا صاحب کو طواف کرنا شروع کر دیا۔  
 چونکہ آختر بابا صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے پاس روز نہ جاتا تھا اور قدر سے بے تکلف سا تھا اس لئے  
 اس واقعہ کو مفصل طور سے بابا صاحب سے عرض کیا اُس پر بابا صاحب نے فرمایا کہ تمہیں میرا انتخاب  
 نہیں معلوم ہے صرف ایک ہی شخص کا انتخاب یہ ہے اور وہ ہیں جناب امیر محمد عبد اللہ صاحب جو کہ قطب الرشاد بھی ہیں۔  
 یہ بات بھی عرض کرتے چلوں کہ حضرت دارا جتوہ کے لئے واپسی ۵۱۴، ۵۱۳ کی تھی جبکہ  
 آختر کی واپسی ۵۱۴، ۵۱۳ کی تھی۔ مگر مکرّمہ کے قیام میں حضرت والا نے آختر سے فرمایا کہ واپسی کا کیا  
 خیال ہے یعنی منشا یہ تھا کہ ہمارے ساتھ چلو گے یہ ۵۱۴، ۵۱۳ کو۔ اندر پاک معاف کریں کہ آختر نے  
 غلط بیانی کی اور عرض کیا کہ حاضر ہو رہے ہیں ہمراہ چلوں گا بات آئی تھی جو تھی۔ آختر نے جناب بابا نجم احسن  
 صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے عرض کیا کہ میں تو طواف کرے گا ہمنے بہت کم خوف کئے ہیں اور میں ہمراہ نہیں چلوں گا۔  
 مورخہ ۵۱۴، ۵۱۳ کو حضرت دارا مع دیگر حضرات کو پجدہ کے لئے روانہ ہوئے اور آختر  
 کو کچھ ریال دیئے کہ ملازموں میں تقسیم کر دیں اور تھوڑے چھنے وغیرہ کے بارے میں کچھ نہیں فرمایا اور سو رہا  
 ہو گئے۔ فدا کی قدرت کہ اُسی رات میری اہلیہ جو مرنے کی طبیعت ایسی ضرب ہوئی کہ وہ فرمانے لگیں کہ  
 بس اب چلو پہنے عرض کیا کہ طواف کریں گے اور ہمارے پاس کافی ریال ہیں سا مان خریدیں گے۔ جیسر اہلیہ  
 نے فرمایا کہ کھجوریں خرید لی ہیں اب زم زم شریف لپیپ ہے کافی ہے بس چیں۔ اتفاق سے میری طبیعت  
 بھی خراب ہونے لگی اور طواف میں انشراح نہ رہا دوسرے روز ۵۱۴، ۵۱۳ کو بخن قدام البنی کے ایک صاحب  
 نے جو میرا نام بھی نہیں جانتے تھے صرف یہ جانتے تھے کہ حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ سے میرا تعلق ہے انہوں نے  
 فرمایا کہ تمہاری اہلیہ کا نام ساجدہ خاتون ہے درمزیہ فرمایا کہ جہاز بجائے ۵۱۴، ۵۱۳ کے ۵۱۵، ۵۱۴  
 کو روانہ ہو گا اور تمہارا نام اس کے جب زکے مسافروں کی فہرست میں ہے تم اس جہاز سے جاؤ گے آختر کو حضرت  
 والا کی وہ بات یاد آگئی کہ یہ خیال ہے اور آختر سے چنے کیسے آمادگی نہ ہوئی تھی بعدہ جناب علی حسن صباغ  
 صاحب معلم شریف لائے اور فرمایا اکمل خاں امں خاں ڈکڑ صاحب ڈکڑ صاحب یہ سنا کہ آختر نے  
 بمنزہ بوسیا باندھا اور اہلیہ کو ہمراہ لے کر جتوہ روانہ ہو گیا اور پھر جہاز سفینہ حجاج ۵۱۵، ۵۱۴ کو جتوہ  
 سے روانہ ہو کر ۵۱۴، ۵۱۳ کو کراچی پہونچا اور مجیدہ حضرات بعافیت کراچی پہونچے۔

اللہ تعالیٰ نے اپنے حقوق کے بعد والدین کے حقوق واجب کئے ہیں۔ ان کی زندگی میں ان کی خدمت کرنا۔ ان کو دماغی و جسمانی راست پہنچانا۔ ان کو ہر طرح سے خوش رکھنا اور ان کی دعائیں حاصل کرنا شرعاً واجب ہے۔ ان کی وفات کے بعد التزاماً ان کے لئے ایسا مالِ ثواب کرتے رہنا، تلاوتِ کلامِ مجید، نوافل اور دیگر اوراد و مستونہ سے بھی اور مالی صدقہ و خیرات سے بھی خصوصاً خیرات جاریہ سے۔ اولاد کا صالح ہونا اور نیک اعمال کا عادی ہونا خود مرحوم والدین کے لئے خیرات جاریہ ہی کا درجہ رکھتا ہے حدیث شریف میں ہے کہ ہر سلفہ اولاد کے اعمال ان کے والدین کے سامنے عالم برزخ میں پیش کئے جاتے ہیں۔ اچھے اعمال سے ان کو خوشی اور بُرے اعمال سے رنج ہوتا ہے۔ اس لئے بڑے اہتمام کی ضرورت ہے کہ والدین کی روح کو اذیت نہ پہنچے بلکہ اس کا خیال رکھنا چاہیے کہ نیک اعمال سے اور ایسا مالِ ثواب سے ان کو نفع پہنچے۔

شركة الملح المحدودة

منجانب:-

al - milh - ltd

Post box 5886 KARACHI

”ذائقہ دار نمک تیار کرنے والے“

• مولانا رشید اشرف سیفی

## بہشت مرشد عارفی اور ان کا ذوق مزاج

مزاج و خوش طبعی زندہ دلی اور پاکیزہ ذوق کی علامت ہیں، بالخصوص ایسے مزاج جو واقعہ کے خلاف بھی نہ ہو، جیٹ گوئی، فحش کلامی اور کذب بھی پاک ہو انسان کے لئے نشا طون زرگی اور حیات نو کا سبب ہوتا ہے اسلئے انسان تازہ دم ہو کر اپنے اعلیٰ و ارفع مقاصد کیلئے تیار و مستعد ہو جاتا ہے۔

مزاج سے جہاں حظ نفس حاصل اور نشا طبع پیدا ہوتا ہے وہیں اس سے سامعین و فی طبعین کی طبیعتوں میں بھی بشارت آتی ہے، ان میں نکتہ رسی اور کثرت آفرینی کی صلاحیت پیدا ہوتی اور ابھرتی ہے ایسی بشارتیں اور نکتہ رس طبیعتیں بہت سے ایسے اہم اور مشکل عقود کو حل کریتی ہیں جن سے پشمرہ اور غیر بشارت طبیعتیں عاجز ہوتی ہیں، گویا مزاج و خوش طبعی افادہ و استفادہ کو آسان بنانے کا مؤثر ذریعہ ہیں اس سے اجنبی اور نامانوس طبیعتیں ایک دوسرے سے قریب آکر باہم مزاج شناس و ذوق آشنا ہو جاتی ہیں، ان کے لئے ایک دوسرے سے افادہ و استفادہ آسان ہو جاتا ہے، یہی وجہ ہے کہ حضرات انبیاء علیہم السلام نے کبھی خوش طبعی اور مزاج سے کلمۂ احتراز نہیں فرمایا بلکہ نفوس قدسیہ بڑے لطیف ذوق مزاج کے حامل تھے، اگر یہ بات نہ ہوتی تو ان حضرات کے رب سے سائلین و مستفیدین کو کبھی اسکی جرأت نہ ہوتی کہ وہ کوئی سوال یا استفادہ کرتے، خوش طبعی یا مزاج کا یہ کلمۂ عظیم فائدہ ہے کہ اس افادہ و استفادہ کے دروازہ کھل جائیں یہی وجہ ہے کہ آقائے نامدار سرکارِ دین و عالمی کریم صلی اللہ علیہ وسلم



کے بارے میں ایسے بہت سے واقعات مروی ہیں جن سے آپ کی ظرافت و خوش طبعی اور لطیف ذوق مزاح کا پتہ چلتا ہے، ان سب واقعات کی خصوصیت یہ ہے کہ یہ جہاں خوش طبعی اور مزاح سے بھرپور ہیں وہاں حدود و شریعت کے اندر بھی ہیں اور حکمت سے لبریز بھی۔

ہمارے مرشد و مرقی حضرت ڈاکٹر صاحب عارفی قدس اللہ سرہ جن کی ایک ایک اواسنت نبوی علی صاحبہا الصلوٰۃ والسلام کے سانچے میں ڈھلی ہوئی تھی اس سلسلہ میں بھی مذاق نبوی رکھتے تھے، آپ کی مجالس مبارکہ میں جہاں ظاہر و باطن کی اصلاح کا سامان ہوتا تھا وہاں علم و معرفت و حکمت و دانائی کی کلیاں بھی چمکتی تھیں مزاح و خوش طبعی کے سد بہار پھول بھی کھلتے تھے، آپ کا مزاح بڑا لطیف اور صداقت پر مبنی ہوتا تھا۔ خود بھی ایسے مزاح کو پسند فرماتے تھے جو کذب و افتراء سے پاک ہو اور مسخر و استہزار کا پہلو لئے ہوئے نہ ہو۔

ایک مرتبہ ایک حبیب آپ کی خدمت میں حاضر ہوئے اور موزوں کا ایک جوتا بطور ہریہ پیش کیا اور عرض کیا، "حضرت! یہ حقیر سا تحفہ پامال کر دینے کے قابل ہے؟" آپ ان کا یہ جملہ سن کر بہت محفوظ ہوئے اور ان کے حسن تعبیر کو بہت پسند فرمایا۔

ایک صاحب طباق میں شیرینی لائے اور عرض کیا کہ :

"حضرت! یہ کھویا ہے" اس پر آپ نے برجستہ فرمایا :

"کھویا تو تم نے ہے، ہم نے تو پایا ہے"

اسی طرح ایک صاحب بادام لائے اور کہنے لگے کہ :

"حضرت! یہ بادام ہیں"

آپ نے بے ساختہ فرمایا :

"ہمارے لئے تو بے دام ہیں"

حاجی ظفر احمد تھانوی جو حکیم الامت حضرت تھانوی قدس سرہ کے مجاز صحبت تھے، حضرت ڈاکٹر صاحب کی مجالس میں بھی پابندی سے حاضر ہوتے تھے، حضرت کو ان سے قلبی تعلق بھی تھا اور بے تکلفی بھی، ایک مرتبہ دوشنبہ کی مجلس میں دیر سے تشریف لائے، حضرت نے سوالیہ انداز میں فرمایا: "بہت دیر سے آئے؟" انہوں نے جواب دیا :

"گھٹنوں میں تکلیف ہے چلا نہیں جاتا"

آپ نے کسی قدر مسکرا کر فرمایا : "عذر لنگ ہے"

ایک مرتبہ آپ کی مجلس میں کسی تقریب کے سلسلہ میں دن کا تعین زیرِ غور تھا، کسی صاحبِ پیر کے دن کی تجویز پیش کی، حضرت مولانا مفتی محمد رفیع صاحب مدظلہم نے حیرت سے دریافت کیا :  
 ”پیر کا دن ؟“ (مطلب یہ تھا کہ پیر کا دن کیسے متعین کیا جاسکتا ہے جبکہ اُس دن تو حضرت کی ہفتہ واری خصوصی مجلس ہوتی ہے)

اس پر حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے تصدیق فرمایا :  
 ”ہاں بھئی ! پیر نہیں، پیر کا دن تو پیر کا :  
 ایک مرتبہ آپ نے مجلس میں اقبال کا یہ شعر پڑھا :  
 ہزاروں سال زگس اپنی بے نوری پہ ردقی ہے  
 بڑی مشکل سے ہوتا ہے جن میں دیدہ و پیدا  
 پھر فرمایا کہ :

”اس کا پہلا مصرعہ تو بہت اچھا ہے، لیکن اس کا دوسرا مصرعہ سبازِ ذوق کو نہیں بھاتا یہاں مشکل“  
 کا کیا جوڑ ہے ؟ اس نے ہم نے اس مصرعہ میں کچھ ترمیم کر دی ہے :  
 پھر آپ نے شعر کو اس طرح پڑھا :

ہزاروں سال زگس اپنی بے نوری پہ ردقی ہے  
 کہیں مدت میں ہوتا ہے جن میں دیدہ و پیدا  
 فائدہ ان کے بعض بے تکلف افراد نے آپ سے عرض کیا کہ :

”یہ جو لوگ آپ کو گھیر لیتے، ٹانگیں اور جسم وغیرہ دباتے ہیں، ہمیں تو یہ کچھ اچھا نہیں لگتا“ آپ نے ذرا توقف کے بعد مسکراتے ہوئے جواب دیا :

”کیا کریں بھئی ؟ لوگ ہمیں دباتے ہیں اور ہم دب جاتے ہیں“  
 کسی نے آپ کو خط میں دو سہ القابات کے ساتھ ”شیخی“ (میسٹر شیخ) لکھا، آپ نے جواب میں لکھا :  
 ”کیوں مجھے شیخی بناتے ہو ؟“

ایک مرتبہ دو مشنبر کی ایک پُر کیف، زعفران ناز اور علی نکات سے بھر پور مجلس کے آخر میں بڑے پردرد انداز میں آپ نے یہ شعر پڑھا :

کرو گے یا دجباتیں کرو گے

کہ کوئی رفتہ بہار گوتھا

قرآن جائے اس "بہار گو" پر جو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمان "الجلس الصالح خیر من الوحدة"۔ یہی شعب الایمان۔ (یعنی نیک و صلح ہم نشین تنہائی سے بہتر ہے) کا مصداق تھا اور مترجمان جاننے اس "بہار گوئی" پر جو آپ کے فرمان "املاء الخیر خیر من السکوت"۔ یہی شعب الایمان۔ (یعنی کلمہ خیر خاموشی اور سکوت سے بہتر ہے) کا مصداق تھی

آج کتنے دل ہیں جو اس "بہار گو" کی یاد میں ٹرپ رہے ہیں، کتنی نگاہیں ہیں جو اس کے دیدار کم ترس رہی ہیں، کتنے کان ہیں جو اس کے کلمات سنتے کو بیتاب ہیں، کتنی مجالس ہیں جو اس "جلوۃ جہاں آرا" سے محرومی پر غم کے آنسو درہی ہیں

آسمان تیری لحد پر شبنم افشانی کرے

سبزۂ نورستہ اس گھر کی نگہبانی کرے

اللہم لا تحرمنا أجرہ ولا تفتنا بعده

اللہم اغفر له وارحمہ وعافہ واعف عنه، واکرم نزلہ، ووسع مدخلہ، واجعل الجنة مثواه، اللہم اغسلہ بماء الشالی والبرد، ونقہ من الذنوب والخطایا کما یبقی الثوب الا بیض من الدنس۔

شادی اور غم کی تقریبات میں جہاں ہر طرح کی بدعات اور خلاف شرع باتیں ہوتی ہیں جہاں تک ممکن ہو سکے ان میں شرکت سے اجتناب کیا جائے اور خود اپنے یہاں سختی سے شرع پر عمل کیا جائے۔ کیونکہ خلاف شرع امور میں کبھی برکت نہیں ہوتی۔ بلکہ ہیشہ و نیادی نقصان کے علاوہ مواخذہ آخرت کا باعث ہوتے ہیں۔ (از: افادات عارفیہ)

• حارث بن عبد اللہ بن ابی سفیان



زبدہ زمان رخصت

۱۲۹۰ ۱۱۶

۱۳۰۶ھ

②

حضرت محمد عبدالحی عارفی

۳۶۱ ۱۲۵ ۹۲ ۱۴۰۸

۱۹۸۶ھ

①

وَيَعْلَمُكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ

۵۹۶ ۴۸۳ ۱۱۱ ۲۱۶

۱۳۰۶ھ

④

عبدالحی در فردوس بریں ہست

۴۶۵ ۲۶۲ ۳۵۰ ۲۰۴ ۱۲۵

۱۳۰۶ھ

③

قطبِ انام ڈاکٹر محمد عبدالحی عارفی

۳۶۱ ۱۲۵ ۹۲ ۶۲۵ ۲۰۳

۱۳۰۶ھ

⑥

ممدوح خلق محمد عبدالحی عارفی

۳۶۱ ۱۲۵ ۹۲ ۸۲۸

۱۳۰۶ھ

⑤

بروضہ العنبر دوس بود

۱۲ ۳۸۱ ۱۰۱۳

۱۳۰۶ھ

⑧

شیخ پرهیزگاران

۲۹۶ ۹۱۰

۱۳۰۶ھ

④

⑨ ستائیس مارچ صبح چھ بجے امام زمان علامہ عبدالحی جنت میں چلے گئے۔

۸۳ ۵۵۳ ۱۲۵ ۱۴۶ ۱۸۰ ۱۲۳ ۷۷۶

۱۹۸۶ھ



مخدومی مولانا محمد عبدالحی عارفی

30

۳۴) ۱۲۵ ۹۲ ۱۲۸ ۴۰۰

15-4

امام عصر نیک اوصاف مولانا محمد عبدالحی عارفی

11

371 125 92 128 208 222

517-4

﴿۱۲﴾ جمعرات کو ولی عالم صاحب دل مولینا محمد عبدالحی تے وفات پائی ۔

DL- 130 94 132 130 132 134 136

61984

قد قال الله جل علمه حَسَنٌ مُّسْتَقْرَأٌ وَمُقَامًا

100 801 518 125 33 44 235

1944

والله يبشره بمغفرة

12

1346 576 24

41984

﴿١٥﴾ وَقَدْ قَالَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ اِرْجِعِي اِلَى رَبِّكِ رَا ضَيْقَتِ



|      |     |    |     |     |    |     |     |
|------|-----|----|-----|-----|----|-----|-----|
| 1-14 | 222 | MI | 2AN | 114 | 44 | 141 | 110 |
|------|-----|----|-----|-----|----|-----|-----|

519A4

﴿١٤﴾ وَإِنَّمَا قَالَ جَلَّ أَمْرُهُ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ مِنَّا

14

|    |    |     |    |     |     |     |    |
|----|----|-----|----|-----|-----|-----|----|
| 92 | 41 | 439 | 94 | 424 | 333 | 133 | 97 |
|----|----|-----|----|-----|-----|-----|----|

15-4

(۱۷) وَقَدْ قَالَ اللَّهُ جَلَّ كَلَامُهُ إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْشَرَ

۱۱۰ ۱۳۱ ۶۶ ۲۳ ۹۶ ۵۲ ۱۶۱ ۷۵۷

۶۱۴۰۶

(۱۸) وَإِنَّمَا قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُتَفَرِّقَةٍ

۹۸ ۱۳۱ ۶۶ ۱۱۶ ۶۴۸ ۱۰۲ ۸۲۵

۶۱۹۸۶

(۱۹) جمعرات ستائیس مارچ کو زبدہ زماں علامہ عبدالحی چلے گئے

۷۱۴ ۵۳۲ ۲۴۴ ۲۶ ۱۱۶ ۱۴۶ ۱۲۵ ۸۳

۶۱۹۸۶

(۲۰) حکیم مالک ستائیس مارچ کو زبدہ زماں علامہ عبدالحی جنت میں چلے گئے

۱۶۱ ۵۳۲ ۲۴۴ ۲۶ ۱۱۶ ۱۴۶ ۱۲۵ ۵۵۳ ۸۳

۶۱۹۸۶

(اثرِ خامہ)

المخلص خلیل احمد حقانوی

۷۹۱ ۶۷۰ ۵۳ ۴۷۲

۶۱۹۸۶

استاذ دارالعلوم دینیہ

انجمن حمایت اسلام - لاہور

## بسم اللہ الرحمن الرحیم

### تاریخ ولادت و وفات

حضرت قبلہ عارف باللہ ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب قدس اللہ سرہ کی تاریخ پیدائش اُن کے جد امجد حضرت مولوی کاظم حسین صاحب نور اللہ مرقدہ نے مندرجہ ذیل دعائیہ کلمت کے ساتھ منظوم فرمائی :-

① صبح صادق روز سہ شنبہ ہشتم بود از ماہِ نخت

بخت نکور وقت مبارک شاہد دارد عبدالحی

عمر طویل و علم وسیع و دولت و دینش حق بدو

ہست بجا تاریخش کاظم فرخ باشد عبدالحی

② فجر ہشتم محرم ۱۳۱۶  
۱۳۱۶  
۱۳۱۶

حق نے تاریخ وفات پیری اور عیسوی مندرجہ ذیل الفاظ میں نکالی :-

① قطب الارشاد عارف باللہ عبدالحی صدیقی

۶۴۸ ۴۱۹ ۳۳۹

۱۳۰۶ھ

② قطب الارشاد عارف باللہ سیدنا حاجی محمد عبدالحی قدس سرہ العزیز

۶۴۸ ۴۱۹ ۱۲۵ ۷۲ ۲۱۸ ۵۵۳

۱۹۸۶ء

③ محمد عبدالحی صدیقی خلیفہ مولانا اشرف علی

۲۱۸ ۲۱۳ ۴۲۴ ۱۳۷ ۵۸۱ ۱۱۰

۱۹۸۶ء

③ قطب الارشاد عارف باللہ جناب مولوی محمد عبدالحیٰ قدس سرہ العزیز

|     |     |    |    |     |     |
|-----|-----|----|----|-----|-----|
| ۵۵۲ | ۲۱۷ | ۹۲ | ۵۶ | ۴۱۹ | ۶۴۸ |
|-----|-----|----|----|-----|-----|

۶۱۹۸۶

⑤ قطب الارشاد عارف باللہ مولینا جناب محمد عبدالحیٰ صدیقی مرحوم

|     |     |     |    |    |     |     |     |
|-----|-----|-----|----|----|-----|-----|-----|
| ۲۹۲ | ۲۱۲ | ۱۲۶ | ۹۲ | ۵۶ | ۱۳۷ | ۴۱۹ | ۶۴۸ |
|-----|-----|-----|----|----|-----|-----|-----|

۶۱۹۸۶

④ قطب الارشاد و عارف باللہ و ڈاکٹر جناب عبدالحیٰ صاحب

|     |     |    |     |   |     |   |     |
|-----|-----|----|-----|---|-----|---|-----|
| ۱۰۱ | ۱۲۵ | ۵۶ | ۶۲۵ | ۶ | ۴۱۹ | ۶ | ۶۴۸ |
|-----|-----|----|-----|---|-----|---|-----|

۶۱۹۸۶

⑥ جناب عبدالحیٰ صاحب سفر آخرت مبارک

|     |     |     |     |     |    |
|-----|-----|-----|-----|-----|----|
| ۲۶۳ | ۱۲۰ | ۲۴۰ | ۱۰۱ | ۱۲۵ | ۵۶ |
|-----|-----|-----|-----|-----|----|

۶۱۹۸۶

⑧ عالم عارف باللہ جناب محمد عبدالحیٰ جنت مکین

|     |     |     |    |    |     |     |
|-----|-----|-----|----|----|-----|-----|
| ۱۲۰ | ۴۵۳ | ۲۱۷ | ۵۶ | ۶۸ | ۳۵۱ | ۱۴۱ |
|-----|-----|-----|----|----|-----|-----|

۱۳۰۶

⑨ ولی اللہ آج رخصت

|      |   |     |
|------|---|-----|
| ۱۲۹۰ | ۴ | ۱۱۳ |
|------|---|-----|

۱۳۰۶



سید اظہر حسین صاحب

ڈپٹی کنٹرولر نیوز ریڈیو پاکستان

# گہائے عقیدت

بیاد شیخ طریقت مرشدی حضرت والا حضرت عارفی

|  |                                     |
|--|-------------------------------------|
| مرشد وہ حرف راز بتا کر چلے گئے         | سوئے ہوئے ضمیر جگا کر چلے گئے       |
| یہ انکا جذب شوق کرامت تو دیکھئے        | قلب و نظر میں شمع جلا کر چلے گئے    |
| دیکھا ہے ہم نے انکی توجہ کا یہ اثر *   | وہم و گماں کو دل سے مٹا کر چلے گئے  |
| دنیا بسی تھی جنکے مزاجوں میں دوستوں    | دینی مزاج انکا بست کر چلے گئے       |
| باتوں میں انکی گویا لطائف تھے غیب کے   | از راہ لطف سب کو سنا کر چلے گئے     |
| اہل نظر تھے شیخ تھے مصلح تھے عارفی *   | راہ نجات سب کو دکھا کر چلے گئے      |
| وہ سبزہ زار درس ہمیشہ ہو گلفشاں        | جس درس گاہ میں بسکون تھا کر چلے گئے |
| وقت سفر جمی تھی نظر، عرش کی طرف        | فرش زمیں سے رشتہ چھڑا کر چلے گئے    |
| محفل تھی جن کے دم سے منور وہ اب کہاں * | روشن مگر وہ راہ بتا کر چلے گئے      |
| گلزار اشرفی کے نگہبیاں تھے عارفی       | یا غ ارم، دلوں میں کھلا کر چلے گئے  |

اظہر جو تیری فکر میں ہے عارفانہ رنگ  
ہے فیض عارفی جو چپا کر چلے گئے

# تاثرات

وفات حسرت آیات عارف باللہ حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارفی قدس سرہ

دگرگوں دیکھتا ہوں آج کیوں عالم کا افسانہ  
نظر آنے لگا کیوں دفعتاً ہر سمت ویرانہ  
کلیجہ تھام کر آتا ہے سورج کیوں پشیمانہ  
گری جاتی ہے خلقت شمع پر ہمیشہ پرورانہ  
یہ کس شمع پہ ہے ماتم کناں ہر سمت پرورانہ  
ترے درویش کی میت کا یہ اندازِ شہانہ  
تو حوروں نے کہا صدمہ جیسا ہے جانِ جانانہ  
چلا جاتا ہے کس پر چھوڑ کر ساقی یہ مینخانہ  
تکیں گے اب کیسے میخور اور یہ جام و پیمانہ  
کہ جس سے ہو گیا سارا گلستاں دشت ویرانہ  
نظر آتا ہے اب سارا جہاں اغیار و بیگانہ

فی خیر کس کو مل گیا رخصت کا پروانہ  
ملک پر کیوں ادا سی چھا رہی ہے چارو آخر  
خار روتی ہے ہنگام سحر کیوں سسکیاں لے کر  
رحلت ہے جہاں سے آج کس محبوبِ عالم کی  
ل جاتا ہے اُن کا ندھوں پر میت کس کی اُٹانف  
لٹی دیکھ کر حیراں ہیں سب دیروِ حرم والے  
یہ رخصت شہنشاہِ قلوبِ اہل عالم کو  
جرے گا کون اب یوں پے پے رندوں کا پیٹا  
نمائے گا بلا نوشی کا عادی کون رندوں کو  
ہٹنا ہے پھول عزرائیل نے ایسا گلستان سے  
الٹی اب کہاں جہاں نہیں گدایاں تہی دامن

بلائے گابھلا اب کون الفت کی نکاہولے  
 مجدد اور فقیہ دین، محدث پیکر سنت  
 وہ گل جس کو سرا یا گلستان کہنا حقیقت ہے  
 کہاں سے لائے گی ملت تجھے اے عارفی کھو کر  
 کہاں ڈھونڈیں گے پروانے چراغ جستجو یکر  
 کہاں رخصت ہوئی وہ شمع اور شمع کے پروانے  
 تسلی کون دے گا اب پریشاں حال ملت کو  
 ہمیں نقش قدم وہ دے گئے ہیں عارفی عارف

ملے گا اب کہاں شفقت کا انداز کریمانہ  
 وہ جن کی ہر ادائے تربیت عالم حکیمانہ  
 وہ جو ہر جس پر شیدا جو ہری ہے مثل پروانہ  
 حکیم ملت بیضا کا انداز حکیمانہ  
 وہ شمع جو سراپا ہو غم ملت کا افسانہ  
 سسکت کر رہے ہیں یہ در و دیوار کا شانہ  
 رکھے گا کون سر پر اس کے اب دست کریمانہ  
 وہی جاہم محبت ہے وہی سنت کا پیمانہ

دکھائیں گے کسے اب زخم دل زخم جگر عارف  
 رکھے گا کون نبض دل پہ انگشت مسیحا نہ

خادم مشرف علی نقاوی



مہتمم دارالعلوم الاسلامیہ لاہور ۱۸

اتباع سنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی نیت سے کچھ وقت اپنے گھر کے اندر اپنے  
 اہل و عیال کے ساتھ صرف کرنا چاہیے اس سے ان کو تسوئیت اور انشراح رہتا ہے اور خود اپنی  
 زندگی میں بھی ان کے ساتھ انس و محبت پیدا ہونے سے نشاط خاطر رہتا ہے اور بہت سے امور  
 خانہ داری اور حسن انتظام میں مدد ملتی ہے۔ حضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے اہل و عیال کے ساتھ  
 شفقت و محبت اور حسن سلوک کے لئے خاص طور پر بہت تاکید فرمائی ہے۔ از: افادات عارفیہ

منجانب: **بافتیہ جنرل اسٹور**

ایس۔ ای۔ 6۔ بلاک بی۔ انجیڈری۔ نارتھ ناظم آباد کراچی ۳۳

# پیشانی عقیدت جناب برادر صاحب ڈاکٹر محمد عبدالحی عارفی

از طرف برادر خورد  مُحَمَّد عَبْد الرَّشِید صَدِّیق  موم

کریں کس طرح پیش آخر عقیدت کا یہ نذرانہ

درو دیوار لیں گے سیکیاں روئے گا کاشانہ

کہ وہ شاہ مشہاں تھا عارفی بالہ متانہ !  
 عہد کا وہ شیدائی تھا اور مرشد کا دیوانہ !  
 وہ تھا اک پیر کامل زندگی اس کی فقیرانہ !  
 سلوک اس کا ہر اک چھوٹے بڑے سے تھا شفیقانہ  
 ذریعوں حاکموں کو پسند تھی اس کی دلیرانہ  
 رکھی تبلیغ دیں جاری بہ انداز مسیحانہ  
 وہ تھا شمع ہدایت جس سے روشن تھا یہ دیرانہ  
 سواری چار کا ندھوں پر تھی۔ نظم و ضبط شاہانہ  
 ہجوم اتنا زیادہ تھا کہ دے سکے نہ تھے شانہ  
 پس مردن دیا اللہ نے اعزاز شاہانہ  
 لحد پر عارفی کی برکستیں نازل ہوں روانہ  
 عطا خدمت کو حوریں ہوں ملے جنت میں کاشانہ  
 خداوند اعظم ہو صبر بھلا و ج کو ایوبانہ !  
 اور انکو جن کا رشتہ عارفی سے ہے مُردانہ  
 رشید اب پیر اور جمعہ کو ہوگا بند میخانہ  
 ملو اس دم نہ اتنی بے رُخی سے بے نیازانہ

نہ پروا جاہ منصب کی، نہ کڑ و فقر شاہانہ  
 خلیفہ خاص تھا اشرف علی شاہِ محقق کا  
 نہ دولت اور ثروت تھی نہ منصب و جاگیریں  
 عزیز تھا غنی و مہسر باں تھا اور مخمض تھا  
 وہ ایک حق گو مجاہد تھا خدا کا بندہ عاجز  
 کیا تحریر ایک نسخہ حبیب حق کے اُسوہ پر  
 ہزاروں شمعیں ہوں روشن، نہ ہوگی روشنی دلیں  
 ہوا رخصت وہ دنیا سے تو پر تو قیر تھا عالم  
 عزیز و اقربا دینے کو کا ندھ اُگے بڑھتے تھے  
 ضیاء الحق نے کی تدفین جسکی اپنے ہاتھوں سے  
 نیری آغوشِ رحمت میں وہ سوئے حشر تک یارب  
 کرا کی مغفرت درجہ اتالی سے نوازا اس کو  
 حسن، مستحسن و احسن کو یارب صبرِ ہمت دے  
 وہیں خدام خاص انکے انھیں بھی صبر دے یارب  
 جہاں میں بیٹھ کر پیتے تھے مُرشد و ہدایت کی  
 تسلی دو نہ دو لیکن دکھا دمت دکھی دل کو



خدا تو فسیق دے ہم سب کو نیکو کار بننے کی  
 عمل اپنا بھی ہو جسائے شفیقانہ حلیمانہ  
 الھی صبر کی تو فسیق ہو ان سو گواروں کو  
 انھیں الفاظ پہ کرتا ہوں تشتر ختم افسانہ  
 سلام اے سو گوارو پھر ملیں گے گر رہے زندہ  
 خدا حافظ عزیز واقسر باؤ صاحب خانہ

۲۷ مارچ ۱۹۸۶ء

نشتہ کاظمی۔ ۱۷۱۱ ہلاک ایل

ہر روز جمعرات

نارنگہ ناسم آباد کراچی۔

جن عزیز ادیب سے صلہ رحمی کا تعلق ہے ان کا حق اما کرنا بھی واجب ہے اور شریعت  
 میں اس کی بڑی اہمیت ہے۔ ایک حدیث شریف کا مفہوم یہ ہے کہ صلہ رحمی صرف یہی نہیں ہے کہ  
 آپس میں حسن سلوک کا معاملہ رکھا جائے۔ یہ تو غیر شخص سے بھی کرنا چاہیئے۔ صلہ رحمی یہ ہے کہ اگر ایک  
 فریق رشتہ توڑے تو دوسرے رشتہ جوڑ دے۔ ایک شخص نے اگر حق ادا نہیں کیا تو دوسرا اپنے حق ادا کرنے سے  
 بری نہیں ہو سکتا۔ اگر کسی رشتہ دار نے معاملات خراب کئے یا کوئی اذیت پہنچائی تو یہ اس کا فعل ہے تم  
 کو چاہیئے کہ تم اس کو درگزر کرو اور اس سے منتقام نہ لو۔ اس کی بدگوئی نہ کرو۔ اور اگر اس پر کوئی دقت  
 پڑے تو سنبھلے قدم سے۔ درمیان اس کی مدد کرو۔ یہی طریقہ حق ادا کرنے اور رشتہ جوڑنے کا ہے۔ اگر ہو  
 سکے تو بعد اس سے معافیت کرو۔ اس میں بڑی عافیت ہے اور بڑا ثواب ہے۔ شریعت میں حقوق  
 العباد کی بہت زیادہ اہمیت ہے۔ احادیث میں اس کے لئے بہت تاکید آئی ہے اگر کوئی عزیز یا  
 صاحب معاملہ اپنے قصور کا اعتراف کر کے معافی چاہے تو شریعت کا حکم ہے کہ ضرور معاف کر دینا  
 چاہیئے ورنہ سخت گناہ ہے۔ اسی طرح اگر اپنا قصور ہو تو ضرور معافی مانگ لینا چاہیئے۔ عطا کتنا ہی  
 نفس تار یا کرے اور غفرت عموس کرے۔ اگر معافی مانگنے پر دوسرا فریق معاف نہ کرے تو وہ  
 گناہ گار ہوگا اور معافی مانگنے والے سے عذر اللہ اب کوئی مواخذہ نہ ہوگا۔ (از اذاعات علاقہ)

مولانا سُبْحانِ مُحَمَّدٍ  
شیخ الحدیث دارالعلوم کراچی<sup>۱۲</sup>

# تعالیم امارتی

الحمد لله وكفى وسلا على عباده الذين اصطفى - اما بعد —  
 ۱۳۸۵ھ میں راقم الحروف کے شیخ و مرشد حضرت مولانا عبد الرحمن صاحب کا ملپوری  
 رحمۃ اللہ علیہ کی وفات کے بعد حق سر کی زندگی میں جو خلا پیدا ہوا تھا، اس کو پُر کر نیکی فکر  
 دامن گیر ہوئی، اس دور میں ناکارہ پردارِ علوم کراچی کی انتظامی اور تدریسی ذمہ  
 داریاں اس قدر تھیں کہ اپنے ذاتی معاملات کی طرف توجہ نہ ہوتی تھی، اسلئے فوری طور پر اس  
 خلا کے پُر کر نیکی طرف کما حقہ التفات نہوسکا، پھر اللہ تعالیٰ نے محض اپنے فضل و کرم سے  
 دارالعلوم کی بدولت، دارالعلوم کے مونس و سرپرست مخدوم و محترم حضرت  
 مولانا مفتی محمد شفیع صاحب نور اللہ مرقدہ جیسی جامع شریعت و طریقت ہستی کی سرپرستی  
 اس ناکارہ کو عطا فرما رکھی تھی، اگرچہ حضرت مدوح سے ضابطہ کا اصلاحی تعلق نہ تھا،  
 لیکن حضرت مدوح کے اکثر و بیشتر راہنمائی کی سعادت سے بالواسطہ یا بلا واسطہ استفادہ  
 کا موقع ملتا رہتا تھا، اسبطرچ پانچ سال کا طویل عرصہ گزر گیا، اور یہ حق سر اپنے  
 خلا کو پُر نہ کر سکا، آخر ۱۳۹۰ھ میں مجبور ہو کر حضرت مفتی صاحب قدس سرہ سے ضابطہ

میں اصلاحی تعلق قائم کر نیکی درخواست کی۔ حضرت والاؒ نے بڑی شفقت سے مشورہ دیا کہ میرا اور آپ کا انتظام مدرسہ کا تعلق موجود ہے، اور نظم و نسق کے معاملات میں بفضل وقت غلط فہمیاں اور اختلافات پیدا ہو جاتے ہیں، جو ایک دوسرے سے بدظنی تک پہنچ جاتے ہیں، اور اس طسریق میں بدظنی و بد اعتمادی سالک کے حق میں ستم قاتل ہے، اس لئے ضروری ہے کہ آپ کسی اور سے رجوع کریں۔ بات بالکل صحیح اور حق تھی، اس لئے پھر اس ناکارہ نے کسی اور کا انتخاب حضرت ہی کے سپرد کر دیا، حضرت نے اسی وقت مرشدی و مولائی حضرت عارفی (قدس سرہ) کا انتخاب فرمادیا۔۔۔۔۔ اور ارشاد فرمایا کہ حضرت تھانویؒ کے علوم و معارف کا چشمہ فیض جس قدر حضرت ڈاکٹر صاحب سے جاری ہے اس وقت کسی اور سے نہیں، اور ڈاکٹر صاحب حضرت تھانویؒ کے مذاق و مزاج میں نہ صرف رنگے ہوئے ہیں، بلکہ غرق ہیں۔۔۔۔۔ اس ناکارہ کو فوری طور پر اس انتخاب سے قدمے حیرت ہوئی، کیونکہ حضرت عارفیؒ مروجہ علوم عربیہ میں شہرت نہ رکھتے تھے، اور ایک طالب علم کے لئے یہی معیار انتخاب ہوتا ہے۔ لیکن چونکہ حضرت مفتی صاحب پر اس ناکارہ کو کامل اعتماد تھا، اس لئے اس انتخاب کو اپنے حق میں سراسر ٹیبر سمجھ کر دل سے قبول کر لیا۔ اور حضرت عارفیؒ کی اولین مجلس میں جو آپ کے دولت خانہ پر ہو رہی تھی حاضر ہو گیا، فراغت مجلس کے بعد اپنا تعارف کرا کے حرف مدعا عرض کیا، حضرت عارفیؒ نے بڑی شفقت فرمائی، اور سورہ فاتحہ کی آخری آیت سے متعلق ایسی تشریح فرمائی کہ مروجہ علوم میں مشہور نہ ہونیکا جو وسوسہ دل میں آیا تھا وہ کافور ہو گیا، اور بے ساختہ دل سے یہ صدا آئی کہ علوم تو یہ ہیں جو حضرت نے بیان فرمائے ہم تو اب تک لکسیریں پیٹنے والوں میں سے ہیں۔

یہ حضرت عارفیؒ کے علوم و معارف کا نقش اول تھا، جو قلب پر ثبت ہوا، اور حضرت مفتی صاحب رحمہ اللہ علیہ کے موفی صیح انتخاب کی داد دینا پڑی۔ حضرت عارفیؒ نے اس کے بعد فرمایا کہ مجلس میں آتے رہو، اس کے بعد درخواست پر غور ہو جائے گا۔ لیکن۔۔۔ یہ ناکارہ غوائل نفس میں مبتلا ہوا، بظاہر خضوعی استغفار

ربماطن اپنی امتیازی شان کے اظہار کے لئے درخواست گزار ہوا! حضرت والا! مجھے بالی خصوصی وقت عطا فرمادیں جس میں ہر ہفتہ حاضر خدمت ہوتا رہوں، آپ نے کمال شفقت غور کرنے کے بعد ہر شنبہ کو عصر کے بعد مغرب تک کا وقت عطا فرمادیا، چنانچہ اس پر عمل پیرا ہو گیا، چند ہفتے تک اس پر عمل ہوتا رہا، مگر حضرت والا اپنے محترم صاحب کی علالت کی وجہ سے یہ وقت دینے سے معذور ہو گئے، اس طرح یہ سلسلہ قطع ہو گیا۔

اس چند روزہ حاضری میں اس ناکارہ کو تو کسی قسم کا فیض حاصل نہ ہو سکا، البتہ عزت والا کی عقیدت و عظمت اور اخلاق کریمانہ کے نقوش قلب میں اور گہرے ہوتے گئے۔

پھر یہ ناکارہ اپنے مشاغل میں منہمک ہو گیا، اور حاضری کا یہ طریقہ رہا کہ ہفتہ عشرہ میں جب بھی موقع ملتا تو کبھی مطب اور کبھی دولت خانہ پر حاضری ہو جاتا۔ اور حضرت الشافقت و عنایت سے بہرہ ور ہوتا رہا۔ اسی حال میں شوال ۱۳۹۶ھ میں حضرت امینی صاحب نور اللہ مرقدہ وصال فرما گئے، اب حضرت والا کی پوری توجہ دارالعلوم اور اس کے خدام کی جانب ہو گئی۔ دارالعلوم کے بعض اساتذہ کرام حضرت کی مجلس میں رہی پابندی سے حاضر ہونے لگے، جنہیں یہ ناکارہ بھی تھا، حضرت کی مجلس کیا سنی؟ ان کا اندازہ مجھ جیسے ناکارہ کو تو کیا ہوتا بس وہ تمام اشکالات جو ہفتہ بھر تک ذہن میں جمع ہوتے رہتے تھے، مجلس میں ان سب کا بڑا تسلی بخش حل سامنے آ جاتا، ایسا معلوم ہوتا کہ حضرت والا کو ہمارے اشکالات کا کشف ہو گیا ہے، اور ان کا جواب ارشاد فرما رہے ہیں۔ سال ۱۳۹۷ھ میں یہ ناکارہ شدید بیمار ہوا، کہ تین چار ماہ تک صاحب فرش رہا، حضرت والا نے اپنی اس بیماری کا علاج شروع کیا، آپ نے نہ صرف دوا دینے پر کفایت فرمائی بلکہ ہیشمار عاؤں سے بھی نوازا، اس بیماری کے پورے عرصہ میں حضرت والا ہر ہفتہ اپنے دولت خانہ دارالعلوم کورنگی تک کا طویل اور پر مشقت سفر طے فرما کر تشریف لاتے رہے اور ہرج سے تسلی فرماتے رہے، حالانکہ یہ زمانہ حضرت کے ضعف اور پیرائہ سالی کا تھا



اور اس طویل راستہ میں تقریباً تمام سڑکیں ایسی تھیں، کہ تندرست و توانا شخص کے بھی بدن کے جوڑ ڈھیلے ہو جاتے تھے، مگر کمال شفقت سے حضرت نے اس تعب و مشقت کو برداشت کیا۔ حضرت کا التفات اپنے خدام پر ایسا تھا کہ ہر ایک یہ سمجھتا تھا کہ مجھ سے زیادہ تعلق خاطر پیدا اور کسی سے نہیں، پوری توجہ سے بات سنتے اور نہ صرف مناسب مشورہ دیتے، بلکہ بے شمار دعاؤں سے نوازتے رہتے، اور اسی کے ساتھ تربیت و اصلاح سے غافل نہ رہتے، اگر کسی سے کوئی ایسی حرکت صادر ہو جاتی، جو قابل اصلاح ہو تو فوراً اصلاح فرماتے اور ترقی تربیت ادا فرما دیتے، ایک مرتبہ عرض حال کرتے ہوئے احقر کی زبان سے نکل گیا کہ "میری شامت اعمال سے یہ افتاد واقع ہو گئی، فوراً اصلاح فرمائی کہ یہ کیا کہا؟ شامت اعمال، کیا مؤمن کی یہ شان ہے کہ اس کے اعمال بد باقی رہیں، جنکی نحوست میں وہ مبتلا ہو، ادھر مؤمن سے کوئی گناہ صادر ہوا، ادھر اس نے توبہ استغفار کرا کے اسے معاف کرایا پھر شامت اعمال کہاں سے آگئی؟ مزید ارشاد فرمایا کہ "اس خیال سے توبہ کرو اس سے ایک تو مایوسی پیدا ہوتی ہے، دوسرے اللہ تعالیٰ کی جانب سے معافی و مغفرت میں شکوک و شبہات ظاہر ہوتے ہیں، اگر کوئی برا کام ہو جائے تو دل بھر کے توبہ کرو اور مطمئن ہو جاؤ!"

حضرت والا کی تعلیمات بالکل وہی تھیں جو آپ کے مرشد مجدد ملت حضرت مولانا تھانویؒ کی تھیں، آپ اپنے شیخ کے رنگ میں ڈوبے ہوئے تھے، اور شیخ سے آپ کو انتہائی عقیدت و محبت تھی، اپنے شیخ کی تعلیمات کے آپ شارح تھے، حضرت تھانویؒ کی کوئی تالیف، کوئی کتاب اور کوئی طبع شدہ وعظ، یا ملفوظات ایسے نہیں تھے جن کا آپ نے بار بار مطالعہ نہ فرمایا ہو، اور وہ آپ کے پاس موجود نہ ہو، گویا آپ اپنے شیخ کے علوم و معارف کے حافظ بھی تھے اور شارح بھی، آپ کی مجلسوں میں حضرت تھانویؒ کے ہی علوم و معارف شرح و بسط کے ساتھ بیان ہوتے تھے، اور آپ اپنے متوسلین کو بھی بار بار تاکید فرماتے کہ حضرت تھانویؒ کے مواعظ و ملفوظات کا روزانہ مطالعہ کرتے رہیں، اگرچہ ایک ہی صفحہ ہو، اور جو بات سمجھ میں نہ آئے اسکو لکھ لیں، اور مجھ

سے حل کر لیں، فرماتے تھے کہ حضرت کے مواعظ و ملفوظات تو علوم کا خزانہ ہیں، ایسے ایسے علمی مسائل اور اشکالات کا حل انہیں ملتا ہے، جو بڑی بڑی کتابوں کے مطالعے کے بعد بھی حل نہیں ہوتے، آپ اپنے شیخ کا بہترین نمونہ تھے، اور آپ کی مجالس حضرت تھانویؒ کی مجالس کا نمونہ تھیں۔

حضرت عارفیؒ اپنے معمولات کے بڑے پابند تھے، آپ اپنے ایک ایک لمحہ سے کام لینے والے تھے، آپ کا ذرا سا وقت بھی بیکار ضائع نہ جاتا، ہر وقت یہی لگن تھی کہ کسی طرح خدام اور متوسلین کو اپنے شیخ کے ذوق سے متعارف فرمادیں، بلکہ یہ ذوق گھول کر پلا دیں، اس مقصد کے لئے آپ تحریر و تفسیر سے کام لیتے، اور شب و روز اسی میں مشغول رہتے، نظام الاوقات کی پابندی حد درجہ تھی، حالانکہ گوناگوں مصروفیات تھیں، لیکن کیا مجال ہے کہ نظم اوقات میں ذرا سا غفل واقع ہو، خدام و متوسلین کو نظام الاوقات بنانے اور اس پر پابندی کی بڑی تاکید فرماتے، اور فرماتے کہ اسکی خاص برکت یہ ہے کہ ذرا سے وقت میں بہت کام ہو جاتے ہیں، حضرت کی آخری بہت سی مجالس میں اسی موضوع پر بیان بھی ہوتا رہا، فرماتے تھے کہ اگر کسی دن معمولات پورے ادا کر نیکی مہلت نہ ملے، تو وقت معین پر جتنا بھی ممکن ہو اس پر عمل کر لیا جائے، ناغہ نہ کیا جائے، کیونکہ ناغہ سے بے برکتی پیدا ہوتی ہے، اپنے مرض الوفات میں، کہ دو دن کے بعد دنیا سے رحلت فرمانے والے ہیں، بیماری کا شدید حملہ ہے، اور درد شکم کی سخت ناقابل برداشت تکلیف ہے، کسی پہلو چین نہیں ہے، کہ صبح کو معمول پورا کرنے کے لئے ارشاد فرمایا کہ قرآن کریم لاؤ تاکہ تلاوت کا معمول پورا کر لوں، خدام نے عرض کیا کہ ایسی شدید تکلیف میں اگر اسکو مؤخر فرمادیں تو اچھا ہے، فرمایا نہیں جتنا ممکن ہو گا تلاوت کر لوں گا، چنانچہ قرآن کریم پیش کیا گیا، آپ نے اس کو کھول کر ایک صفحہ کی تلاوت فرمائی، پھر مناجات مقبول کا بھی ایک صفحہ تلاوت کر کے واپس کر دیا۔ اللہ، اللہ، اسقدر معمولات کی پابندی تھی، اس پر مزید یہ کہ ان معمولات میں درجہ عزیمت پر عمل فرماتے اور متوسلین کو بھی اسکی ترغیب دیتے، کتنی ہی نقاہت یا بیماری ہو ہم نے کبھی آپ کو بیٹھکر نوافل ادا کرتے ہوئے نہیں دیکھا،

بعض اوقات کمزوری کی وجہ سے سجدہ سے قیام کے لئے اٹھتے وقت جسم کا توازن بگڑنے لگتا، اور آپ منہ کے بل گرنے کی طرف جھکے، لیکن ہمت کر کے پھر سیدھے کھڑے ہو جاتے اور تمام نوافل اس طرح کھڑے ہو کر پورے فرماتے، فرمایا کرتے کہ ہمت بڑی چیز ہے، اس سے تمام مشکلات حل ہو جاتی ہیں، اور عمل آسان ہو جاتا ہے، خود ہی اپنا واقعہ بیان فرمایا کہ ایک رات مجھے شدید بخار ہوا، تہجد میں اُٹھنے کی ہمت نہ رہی، لیکن پیشاب کے تقاضے سے اُٹھنا پڑا، جب استنجاء سے فارغ ہوا، تو سوچا کہ وضو تو کر لوں، ممکن ہے کہ نماز کی توفیق ہو جائے، اسی حال میں وضو کیا، پھر سوچا کہ یہ اچھی بات نہیں کہ بیٹھ کر نماز پڑھوں، جب استنجاء کے لئے کھڑے ہو کر جاسکتا ہوں، تو ہمت کر کے نماز بھی اسی طرح پڑھ لوں، چنانچہ مصلیٰ پر کھڑا ہو گیا، ہاتھ پاؤں لرز رہے تھے، کھڑا ہونا مشکل ہو رہا تھا، لیکن اللہ تعالیٰ نے مدد فرمائی، اور معمول کے مطابق نماز پڑھ لی، آپ کے صاحبزادے روایت فرماتے ہیں کہ وفات سے کچھ پہلے آپ بخاریں مبتلا رہتے تھے، تہجد کے وقت نماز کا ارادہ فرمایا، تو آپ کی اہلیہ محترمہ نے درخواست کی کہ آپ تخت پر بیٹھ کر نماز ادا فرمائیں، جواب دیا کہ ہاں، یہ رائے معقول ہے، لیکن کھڑے ہو کر دیکھتے ہیں، اگر نہ ہو سکا تو پھر اس رائے پر عمل کر لیں گے، چنانچہ ہمت فرما کر کھڑے ہو گئے، اور معمول کے مطابق نماز ادا فرمائی، صبح کو مطب میں جانے کا ارادہ فرمایا، تو پھر گھر والوں نے روکنا چاہا، فرمایا کہ کیا فرق پڑتا ہے، جا کر بیٹھ جائیں گے، اور اگر اس میں تکلیف ہوئی، تو واپس آجائیں گے چنانچہ مطب تشریف لے گئے، اور وقت مقررہ پر واپس تشریف لائے۔

آپ حقوق کی ادائیگی کا خاص اہتمام فرماتے، اور درجہ بدرجہ سب کے حقوق ادا فرماتے رہتے، بلکہ حق سے بہت زیادہ آپ ادا فرمادیتے، دعاؤں میں، ایصالِ ثواب میں اور تبرعات میں حسبِ مراتب قربِ حقوق کی ادائیگی فرماتے، ایک مرتبہ فرمایا کہ میں جب دعائے مغفرت یا ایصالِ ثواب کرتا ہوں، تو سب سے پہلے اپنے والدین کیلئے کرتا ہوں، پھر اپنے آباؤ اجداد اور جدات و اہبات کے لئے، اس کے بعد اپنے اساتذہ اور مشائخ کے لئے، پھر اپنے اہل و عیال اور دوسرے رشتہ داروں کے لئے،

پھر اپنے خدام کے لئے، اس کے بعد اپنے خدام سے فرمایا کہ تم بھی اسی طرح کیا کرو، فرمایا کہ ماں باپ کا بڑا حق ہے، اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول کے بعد انہی کا حق آتا ہے اور اتنا عظیم حق ہے کہ تمام عمر اخلاص سے انکی خدمت کرنے اور تمام عمر ان کیلئے دعا رحمت و مغفرت کرنے کے باوجود، ان کے حق کا عشر عشر بھی ادا نہیں ہوتا، اس لئے میں نے اپنی تمام عمر کی مستحب عبادتوں کا ثواب اپنے والدین کے لئے وقف کر رکھا ہے۔۔۔ اہل و عیال کے حقوق کی ادائیگی کی سخت تاکید فرماتے، اور فرماتے کہ اپنی اہلیہ کے ساتھ بالخصوص حسن سلوک کا اہتمام کیا جائے، اس بیماری نے اپنے ماں باپ بہن بھائی اور دوسرے تمام رشتہ داروں کو چھوڑ کر تنہا اختیار کیا ہے، لہذا یہ تمام محبتیں تمہاری جانب سے اسکو ملنا چاہئیں، اسکی ایذا پر صبر کرو گے تو اجر عظیم پاؤ گے، اس کے بارے میں اسلوک کی اصلاح تمہارے غیظ و غضب سے نہیں ہو سکتی، بلکہ اس کا تیر بہدف نسخہ یہ ہے کہ اس وقت اپنے غصہ کو پی جاؤ، پھر نرمی اور ہمدردی سے اسکی غلطی کی نشاندہی کرو، اگر اس میں ذرا بھی سلامتی ہے تو تمہاری اس نصیحت کو وہ قبول کر کے اپنی اصلاح کرے گی، کبھی آپ بطور مزاح فرماتے کہ آپ کی اصل مصلح آپ کی بیوی ہے، اس سے اپنے اصلاح یافتہ ہونے کا سرٹیفکیٹ حاصل کر لو تو یقیناً یہ پکتی سند ہے۔

فرمایا کرتے کہ اولاد کے حقوق کی ادائیگی انکی تربیت کرنے میں ہے، اولاد کی تربیت ایسی کرنی چاہیے کہ ان میں رجوع الی اللہ اور اتباع سنت کا جذبہ پیدا ہو، اور بزرگوں کی تعظیم دل میں راسخ ہو، اس پر اپنے ایک مرحوم صاحبزادے کا، جن کا انتقال کم سنی میں ہو گیا تھا اور ان کا نام غالب محسن تھا، واقعہ سنایا کہ میں نے اپنے بچوں کو بالخصوص اپنے مرحوم بچہ کو یہ تعلیم دے رکھی تھی کہ جب بھی کسی چیز کی ضرورت ہو، تو پہلے اپنے اللہ سے مانگنا، پھر اس شخص سے کہنا جس سے وہ مل سکتی ہے، فرمایا کہ جب میں نے اپنا مطلب شروع کیا تو اولاً رجوع برائے نام تھا، ایک دن میرا وہی مرحوم بچہ میرے پاس مطلب میں آیا اور ایک دپیہ طلب کیا، اس وقت میرے پاس دپیہ نہیں تھا، اسلئے میں نے اسے ٹال دیا، تھوڑی دیر کے بعد وہ پھر آیا، اور اس کے ساتھ ایک مریض بھی آیا، اس مریض نے دوا کے بعد



دو روپیہ مجھ کو دیئے، اس بچہ نے اس میں سے ایک روپیہ دینے کو کہا، اور کہا کہ یہ اللہ نے میرے لئے بھیجا ہے، مجھے دیکھئے، میں نے اس سے صورتحال دریافت کی تو اس نے بتایا کہ جب میں پہلی مرتبہ آیا تھا تو اپنے اللہ سے مانگا بھول گیا تھا، جب آپ نے انکار کر دیا تو میں سمجھ گیا، اس لئے میں نے جا کر اللہ سے روپیہ مانگا، اس نے اب یہ دو روپے مجھے دیئے، انہیں سے ایک مجھے دیکھئے۔ آپ کو اپنے اہل خانہ کو اتباع سنت کی تربیت دینے کی ایسی لگن تھی کہ زبانی تعلیم و تلقین کے علاوہ آپ نے ضرورت محسوس کی کہ انکو احکام سنت مرتبہ کے دیدیئے جائیں، تاکہ جب بھی یہ چاہیں تو اپنے ہر شعبہ زندگی میں اس سے راہنمائی حاصل کریں، فرماتے تھے کہ میں نے اسی نیت سے اسوۂ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی جمع و ترتیب کا کام شروع کیا تھا، جو بفضلہ تعالیٰ پورا ہوا، اور اسکو اللہ تعالیٰ نے فیض عام کا ذریعہ بنا دیا۔۔۔۔۔ اسی طرح بزرگوں کی تعظیم و توقیر بھی آپ کی تربیت اولاد کا ایک جزو تھی۔۔۔۔۔ حضرت کے ایک صاحبزادے راوی ہیں کہ ایک مرتبہ میری زبان سے نکل گیا کہ حضرت مفتی محمد شفیع صاحب نے فلاں معاملہ میں اچھا نہیں کیا، حضرت نے ڈانٹا اور فرمایا کہ حضرت مفتی صاحب میرے مرشد کی جگہ ہیں اگر آئندہ کوئی بات ان کی شان کے خلاف تم نے کہی تو مجھ سے زیادہ کوئی بُرا نہ ہوگا۔

حضرت فرمایا کرتے تھے کہ آج کل اولاد کی بے راہ روی، نافرمانی اور اللہ و رسول سے بغاوت، والدین کی تربیت سے غفلت کا نتیجہ ہے، اس پر فتن دور میں اگر اپنی دنیا اور آخرت کو درست رکھنا ہے تو اولاد کی دینی اور ایمانی تربیت کرنا چاہیئے، افسوس اس پر ہے کہ والدین اپنی اولاد کی دنیا اچھی رکھنے کی تو پوری کوشش کرتے ہیں، لیکن دین نہ تو ان کو سکھاتے ہیں اور نہ اسپر عمل کرانے کی طرف توجہ دیتے ہیں۔

حضرت عارفیؒ نے تربیت و اصلاح اولاد کا ایک نہایت مؤثر اور مجرب نسخہ ارشاد فرمایا، اور فرمایا کہ میرا بھی اسی پر عمل رہا ہے، اور کبھی میں نے اسکو بے اثر نہیں پایا، فرمایا کہ جب اپنے کسی بچہ کی اصلاح کرنا ہو، تو پہلے تنہائی میں اللہ سے جی بھر کے دعا کر لو کہ اے اللہ! میں آپ کا ضعیف اور ناتواں بندہ ہوں، آپ نے مجھے اولاد جیسی عظیم

نعمت سے نوازا ہے، اور اسکی اصلاح و تربیت کا فریضہ بھی محمد نواں پر عائد فرمایا ہے، نہ میری بات میں کوئی اثر ہے اور نہ مجھے تربیت کا ڈھنگ آتا ہے، میرے بچوں کے قلوب آپ کے قبضہ قدرت میں ہیں، ان کے دلوں کو خیر کی طرف اور اپنی اور میری فرمانبرداری کی طرف اور اصلاح حال کی طرف پھیر دیجئے، دعا کرنے کے بعد بچہ کو سمجھائیے، نصیحت کیجئے اور اسٹرپر توکل کر لیجئے، جب بھی نصیحت کرنا ہو، اسی طرح عمل کیجئے، اور ان کی عام اصلاح کے لئے نمازوں کے بعد بھی دعا کرتے رہیئے، انشاء اللہ آپ کا مقصود حاصل ہو جائے گا۔۔۔۔۔ راقم الحسرت عرض کرتا ہے کہ میں نے حضرت عارفیؒ کا یہ نسخہ ایسے متعدد ستم رسیدہ اور غمزدہ والدین کو بتایا، جو اپنی اولاد کی نافرمانی کی وجہ سے زندہ درگور ہو رہے تھے، انہوں نے اس پر پابندی سے عمل جاری رکھا، چند ماہ کے بعد ان کے بچوں کے حالات ٹھیک ہونا شروع ہوئے، اور سال دو سال کے بعد وہ اپنے بچوں کی جانب سے مطمئن ہو گئے۔۔۔۔۔ راقم الحسرت یہ بھی عرض کرتا ہے کہ یہ نسخہ صرف اپنی اولاد کے لئے خاص نہیں، بلکہ اپنے متعلقین میں سے جسکی اصلاح و تربیت کی ذمہ داری کسی پر آپڑی ہو، وہ بھی اس پر عمل کر کے فیضیاب ہو سکتا ہے، خواہ چھوٹا بھائی ہو یا بیوی وغیرہ۔

حضرت رحمۃ اللہ علیہ عصر حاضر کے فتنوں میں سے بے حیائی، بے پردگی، فحاشی، عربانی اور مرد و عورت کے بے محابا اختلاط کو عظیم فتنہ قرار دیتے، اور اسکی بیخ کنی اپنی تحریر و تقریر کے ذریعہ فرماتے رہتے، آپ کی مجالس میں اکثر اس موضوع پر سیر حاصل تبصرہ ہوتا، اور ہر پہلو سے اسکی دنیاوی اور اخروی مضرتیں ظاہر فرماتے تھے، فرمایا کرتے کہ ہر عمل کا "رد عمل" قانون قدرت ہے۔ یہ سمجھنا غلط ہے کہ اس فحاشی و عربانی کا رد عمل نہ ہوگا، آج معاشرتی زندگی تباہ ہو رہی ہے، زن و شوہر میں بنی نہیں، اولاد ماں باپ کی نافرمان ہے، بھائی بھائی کا دشمن ہے، لڑکیوں کی جوانی ڈھل رہی ہے لیکن کوئی رشتہ نہیں ملتا، دل بے چین ہے زندگی ناہموار ہے گھر کے گھر تباہ ہو رہے ہیں، طلاقیں کی کثرت ہے اور خدا جانے کیا کیا ہے، یہ سب

رہے عمل ہے ان بے حجابیوں، عریانوں اور فحشیوں کا، جو ہمارے معاشرے میں تیزی سے پھیل رہی ہیں، اللہ پناہ میں رکھے، شرم و حیا رخصت ہو رہی ہے، حالانکہ حدیث شریف میں حیا کو ایمان کا شعبہ فرمایا گیا ہے، جب کسی کی حیا رخصت ہو جائے تو اس کے لئے ہر برائی کو اختیار کرنا آسان ہو جاتا ہے، جب شرم جاتی رہے تو گناہ آلود زندگی گزارنے میں کوئی رکاوٹ نہیں رہتی، بار بار تنبیہ اور نصیحت فرماتے کہ خود کو اور اپنے اہل و عیال کو عصر حاضر کے تمام فتنوں سے، خصوصاً بے حیائی و عریانی اور بے پردگی و فحاشی کے چڑھتے ہوئے سیلاب سے بچالے کی موثر تدبیریں کرنے رہو، ورنہ دنیا و آخرت میں اس کے ایسے نتائج بد سامنے آئیں گے کہ الامان والحفیظ، سب سے آسان تدبیر یہ ہے کہ جن آلات سے یہ فتنہ گھروں میں داخل ہوتا ہے، جیسے ریڈیو اور ٹیلی ویژن وغیرہ ان سے اپنے گھروں کو محفوظ رکھنے کی ہر امکانی کوشش کرنے رہو، اور ساتھ ہی رب العزت کے حضور مسلسل دعائیں کرتے رہو کہ اے اللہ میں بندہ ضعیف، ماحول میرے خلاف، معاشرہ میرا مخالف، میں خود کو اور گھر والوں کو گناہوں سے بچانا چاہتا ہوں، لیکن بچا نہیں سکتا، آپ قادر مطلق ہیں، آپ کے ہی قبضہ قدرت میں ہم سب کے قلوب ہیں، آپ ہمارے ضعف اور بیماری اور بے کسی پر رحم فرمائیے، اے اللہ! آپ مجھے اور میرے گھر والوں کو عصر حاضر کی لعنتوں سے، زمانے کے فتنوں سے اور معاشرے اور ماحول پر چھائے ہوئے گناہوں سے بچالیجئے، اے اللہ! آپ ہماری حفاظت فرماتے رہیئے، اور نبی رحمت صلی اللہ علیہ وسلم کے صدقہ ہم پر اپنی رحمتیں نازل فرمائیے، اس دعا اور کوشش کا اثر یہ ہو گا کہ آپ لوگوں کا کم از کم اپنا گھرانہ لعنتوں سے محفوظ ہو جائے گا، اور گھر والوں کے قلوب بھی اللہ تعالیٰ خیر کی طسرفت پھیر دیں گے۔

”عمل“، اور ”رہ عمل“ کے قانون قدرت کے تحت فرماتے کہ یہ تمام مصائب و آفات، رسوائیاں، دلوں میں نفسترتیں، باہمی جنگ و جدل اور نئی نئی مہلک بیماریاں، اتفاقات نہیں ہیں، بلکہ عمل اور ”رہ عمل“ یعنی ”قانون مکافات“ کے

تحت ظاہر ہو رہے ہیں، ہم نے جیسا کچھ کیا یا کر رہے ہیں، اس کے نتائج سامنے آرہے ہیں یہ دانشمندی کی بات نہیں کہ جن حالات و نتائج میں گرفتار ہیں، انکو اپنے اوپر مسلط کر لیں، اور ان سے نکلنے کی فکر نہ کریں، اپنے مستقبل کو اگر درست کرنا ہے اور حالاتِ حاضرہ کی تباہ کاریوں سے بچنا ہے تو اولاً ان گناہوں کو چھوڑتے، جو اس عذاب کا سبب ہیں، پھر اللہ تعالیٰ کے سامنے عجز و نیاز کے ساتھ سورۃ بقرہ کی آخری آیت کی دعائیں پڑھیں انشاء اللہ تمام بادل چھٹ جائیں گے۔ اس موقع پر حضرت والا ان دعاؤں کی تشریح ایسے دلنشیں انداز میں بیان فرمانے کہ حاضرین آبدیدہ ہو جاتے۔

حضرت عارفی نور اللہ مرتضیٰ کی تعلیمات کا خلاصہ محمد جیسے ناقص الفہم اور ناکارہ کی نظر میں تین باتیں ہیں:— (۱) ادائے حقوق (۲) اتباع سنت (۳) رجوع الی اللہ ادائے حقوق کے سلسلہ میں جو کچھ حضرت کے ملفوظات اور مجلس سے حاصل ہوتا ہے وہ یہ ہے کہ حقوق کی تین قسمیں ہیں، ایک حقوق النفس، دوسرے حقوق العباد اور تیسرے حقوق اللہ،

حقوق النفس سے یہ مراد ہے کہ اپنے جسم و جان کے جو حقوق ہم پر ہیں، ان کو پورے طریقہ سے ادا کریں، یعنی اپنے آپ کو دنیا اور آخرت کی مضر توں سے محفوظ رکھیں، اور سعادت دارین حاصل کرنے کی بھرپور کوشش کرتے رہیں۔ ان میں سب سے پہلے اپنے آپ کو کفر و شرک بدعت اور معاصی سے خصوصاً معاصیِ کبیرہ سے بچنا ہے، لیکن اس پر فتنہ دور اور گناہ آلود معاشرے میں بظاہر اپنی حفاظت مشکل نظر آتی ہے، کیونکہ قدم قدم پر تو بہ شکن مناظر اور ایمان سوز معاصی کی یلغار ہے، فرمایا کرتے کہ میں ایسا طریقہ بتاتا ہوں کہ اس پر مسلسل عمل رہا تو انشاء اللہ ان تمام معاصی سے حفاظت ہو جائے گی، وہ طریقہ یہ ہے کہ روزانہ صبح کو نماز کے بعد یا تہجد کے بعد تھوڑی دیر کے لئے گوشہ تنہائی میں بیٹھ کر اپنے رب سے اس طرح عرض و عرض کریں کہ اے اللہ! میں آپ کا بندہ ضعیف و ناتواں ہوں آپ کے رسول کی امت مرحومہ کا ناچیز فرد ہوں، نفس و شیطان میرے ساتھ لگے ہیں، معاشرہ گناہ آلود ہے، میں اگر گناہوں سے بچنا بھی چاہوں تو اس پر



قادر نہیں، آپ میرے رب اور قادر مطلق ہیں، آپ مجھے اور میرے اہل و عیال کو  
 آج کے دن تمام گناہوں سے بچا لیجئے، اور مجھ پر اپنا فضل فرمائیے۔ جی بھر کر  
 اللہ تعالیٰ سے اسی طرح عرض کریں، اور شام کو اپنے تمام اعمال و اشغال کا سرسری جائزہ  
 لیکر جن گناہوں سے اللہ تعالیٰ نے حفاظت فرمائی ہے، اس انعام پر اللہ کا دل سے  
 شکرا ادا کریں، اور اگر کسی گناہ میں استلار ہو گیا ہے، تو اس سے توبہ استغفار کر لیں،  
 روزانہ اس پر عمل کرتے رہیں، انشاء اللہ گناہوں سے حفاظت بھی ہوگی اور روزانہ  
 توبہ استغفار سے کھانا بھی صاف ہوتا رہے گا، فرمایا کہ میں اللہ کی رحمت پر بھرپور  
 کر کے کہتا ہوں کہ اگر اس رات میں موت آگئی تو انشاء اللہ شہادت کی موت ہوگی۔  
 حقوق العباد سے یہ مراد ہے کہ اللہ تعالیٰ نے انسان کے قریب و بعید شتوں  
 کے مطابق ان کے حقوق لازم کئے ہیں، جنکی ادائیگی کے بغیر نہ تو دنیا میں سکون  
 مل سکتا ہے اور نہ آخرت میں، بلکہ دنیا کی بہت سی مصیبتیں حقوق العباد کے  
 تلف کر نیکی وجہ ہی سے آتی ہیں۔ حقوق العباد میں سب سے مقدم والدین کے  
 حقوق ہیں، جو نازک بھی ہیں اور اہم بھی، فرمایا کرتے کہ اگر کوئی شخص والدین کی تمام  
 عمر خدمت کرتا رہے، پھر بھی ان کے حق کا عشر عشر بھی ادا نہیں کر سکتا۔ اللہ تعالیٰ  
 نے اپنے اور اپنے رسول کے حقوق کے بعد والدین کے حقوق کو رکھا ہے، ان کے  
 حق کی ادائیگی تو کیا ہوگی، اگر اتنا ہی کر لیا جائے تو غنیمت ہے کہ انکو ہر حال میں  
 خوش رکھنے کی فکر کرتا رہے، اپنے کسی عمل کسی قول اور اشارے کنا پیسے  
 بھی ان کی دل آزاری کا مرتکب نہ ہو، انکی حیات میں اور خصوصاً ان کی وفات کے بعد  
 ان کے لئے دعائے مغفرت و بلندی درجات، اور حتیٰ المقدور صدقہ و خیرات  
 اور ذکر و اذکار کے ذریعہ ایصالِ ثواب کرتا رہے۔

پھر اپنے اہل و عیال کے حقوق ہیں اور ان کی بھی بڑی تاکید ہے، ان کے  
 حقوق کی ادائیگی کا طریقہ یہ ہے کہ ان کی جسمانی اور روحانی، یعنی دنیاوی اور  
 دنیوی ضروریات کا معقول اور موثر بندوبست کرے، اور انکی اخلاقی اور تعلیمی

رہیت کا انتظام کر کے نگرانی بھی کرتا رہے، اہل وعیال کے سلسلہ میں تحمل اور عفو و درگزر سے زیادہ کام لے، لیکن بوقت ضرورت تنبیہ و تادیب گریز بھی نہ کرے۔

حقوق اللہ کے سلسلہ میں آپ فرمایا کرتے کہ ان میں فرائض و واجبات بھی ہیں و مستحبات و آداب بھی، اللہ تعالیٰ کے اوامر و نواہی اس کے حقوق ہیں، اوامر کو فلاح کے ساتھ بجالانا اور نواہی سے اجتناب کرنا، اللہ تعالیٰ کے حق کی بجا آوری کی کوشش ہے، فرمایا کرتے کہ حق تعالیٰ تو بے نیاز ہیں مخلوق کی طاعت و عبادت ذرہ برابر نفع و رانگی نافرمانی و بغاوت سے ذرا سا نقصان نہیں پہنچتا، ان تمام حقوق کا نفع و نفعر خود بندوں کو پہنچتا ہے، انہوں نے محض ہمارے دنیوی و اخروی اور ظاہری و باطنی نفع کی خاطر یہ حقوق ہم پر عائد فرمائے ہیں، اس لئے نہایت خوشدلی کیساتھ اللہ تعالیٰ کی اس نعمت کا تہہ دل سے شکر ادا کرتے ہوئے ان حقوق کو حتی المقدور رانیکی کوشش کرتے رہنا چاہیے، اور اس تصور کے استحضار سے کہ یہ سب ہمارے نفع کے لئے ہے، حقوق کی ادائیگی نہ صرف آسان ہو جائے گی، بلکہ ذوق و شوق بھی پیدا ہو جائیگا۔

فرائض میں سب اہم اور مقدم نماز ہے، اور اس زمانے میں ایسے لوگوں کی تعداد کم نہیں، کہ جو اس اہم فریضہ سے خود بھی غافل ہیں، اور اپنے اہل وعیال کے حق میں بھی فرمانہ غفلت میں مبتلا رہیں، انکو یہ سوچنا چاہیے کہ کل کو یوم حشر میں جب اس کے بارے میں سوال ہوگا تو وہ اپنی اس غفلت کا کونسا معقول جواب دے سکیں گے، اگر وہ اسی کلمہ پر غور کر لیں تو انشاء اللہ انکی غفلت دور ہونے لگے گی، فرمایا کہ ہم میں بہت سے ایسے لوگ ہیں، جو اس وجہ سے نماز نہیں پڑھتے کہ اس میں دل نہیں لگتا، جب بھی نماز کے لئے کھڑے ہوتے ہیں، خیالات میں انتشار پیدا ہو جاتا ہے، برے برے و سو سے دل میں آنے لگتے ہیں، ذہنی یکسوئی حاصل نہیں ہوتی، حضور قلب کا نام و نشان بھی نہیں ہوتا، ایسی نماز سے کیا فائدہ، ایسے فاسد خیالات میں گرفتار لوگوں کو سوچنا چاہیے کہ نماز میں دل لگنا مقصود نہیں، لگنا مقصود ہے، اور دل لگنا بھی اپنے اختیار کی حد تک،

جب غیر اختیاری طور پر دل مہٹ جائے تو اسپر نہ تو مؤاخذہ ہے اور نہ نماز غیر مقبول، بات یہ ہے کہ نفس و شیطاں نے اس نیک کام سے روکنے کے لئے ایسے مہل اور لایعنی خیالات دل میں ڈال دیئے ہیں، اور ہم نے ان کو معقول سمجھ کر قبول کر لیا، کل کو قیامت میں کیا جواب دیں گے، اس پر غور کرنا چاہیئے۔۔۔۔۔ فرمایا کہ ہم میں ایسے لوگ بھی ہیں جو پابندی سے نماز پڑھتے ہیں، جماعت کا بھی اہتمام کرتے ہیں، اور نماز کو صحیح طریقہ سے ادا کر نیکی اپنی سی کوشش بھی کرتے ہیں، لیکن وہ اس دہم میں مبتلاء ہیں کہ ہماری نمازیں کیا نمازیں ہیں، نماز پڑھنے کھڑے ہوتے ہیں تو کبھی بیوی بچوں کے خیال میں، کبھی دفتر اور کاروبار کے دھیان میں اور کبھی ادھر ادھر کے لایعنی خیالات میں ڈوبے رہتے ہیں، کہیں ایسی نمازیں بھی قبول ہو سکتی ہیں؟ انکو سوچنا چاہیئے کہ یہ اللہ کا کتنا بڑا انعام ہے کہ اس نے اپنے لاکھوں بندوں میں سے تمکو توفیق عطا فرمائی کہ تم اس کے دربار میں، اسکی عالی بارگاہ میں ہاتھ باندھ کر کھڑے ہوئے، اسکی جانب سے اس توفیق کا آجانا ہی تمہاری اس ٹوٹی پھوٹی نماز کو قبول کر لینے کی نوبت ہے، ورنہ دوسروں کی طرح وہ تمہیں بھی اس توفیق سے محروم رکھتا، پھر یہ سوچنا چاہیئے کہ یہ خیالات کا انتشار ہمارے اپنے اختیار سے تو نہیں، یہ تو غیر اختیاری طور پر ہمارے قلب پر چھا گئے، اللہ تعالیٰ کو ہم سے ایسی منتشر خیالات والی نماز پڑھوانی تھی، جسکو وہ قبول فرمائیں گے۔۔۔۔۔ خلاصہ یہ کہ ہمیں اپنی نماز و عبادت کی طرف توجہ نہ کرنا چاہیئے، کیونکہ وہ تو کسی قابل نہیں، بلکہ حق تعالیٰ کی رحمت اور اس کے فضل و کرم پر نظر رکھنا چاہیئے کہ وہ اسی کو قبول فرمائیں گے۔۔۔۔۔ بندہ کا کام حتی المقدور امتثال امر ہے جو اسکی توفیق سے ہو رہا ہے، قبولیت رحمت خداوندی پر موقوف ہے اور موعود ہے جو انشاء اللہ حاصل ہو جائے گی، فرمایا کہ اگر ایک نماز کے بعد دوسری نماز کا شوق اور لگن ہو جائے پھر اس کے ادا کر نیکی توفیق بھی ہو جائے، تو یہ پہلی نماز کے قبول ہو جانے کی علامت ہے، ایک مرتبہ جمعہ کی مجلس ختم ہونے کے بعد جبکہ مغرب کی نماز تیار تھی، اور اس وقت صرف یہ ناکارہ حضرت والا کے قریب بیٹھا تھا،

تو حضرت والا نے سرگوشی کرتے ہوئے فرمایا کہ مولوی صاحب ایک نکتہ کی بات آپ کو بتا رہا ہوں کہ استہام کر کے اگر آخری سجدہ بھی اخلاص سے کر لیا، تو پوری نماز مقبول ہو جائے گی، میں نے عرض کیا کہ حضرت! اس اخلاص کا کیا طریقہ ہے، فرمایا کہ سہلانا استحضار کہ میرا یہ سجدہ صرف اللہ کے لئے ہے پھر فرمایا کہ اگر نماز کا آخری جزو بھی ایسے اخلاص سے ہو گیا، تو بھی پوری نماز مقبول ہے، پھر بڑے ہی پرورد الفاظ میں حقیر سے فرمایا کہ مولوی صاحب! اس پر آج ہی سے عمل شروع کر دیجئے، میں آپ کے لئے دعا کر رہا ہوں اور کرتا رہوں گا۔

مستحبات کے سلسلہ میں فرماتے کہ یہ لفظ "حُب" سے بنا ہے، جس کے معنی محبت کے ہیں، لہذا مستحب وہ عمل ہوگا، جس پر یا بندگی کے ساتھ عمل کرنے سے، بندہ اللہ کا محبوب ہو جائیگا۔ اور محبت کی خاصیت یہ ہے کہ وہ دونوں جانب سے ہوتی ہے، اس لئے بندہ محب بھی ہو جائیگا، گویا مستحبات پر عمل کرنا والے کو اللہ تعالیٰ کی محبت اور محبوبیت دونوں حاصل ہو جائیں گی، اور جس کو اللہ تعالیٰ کی محبت حاصل ہو جائے، اور وہ خود بھی اللہ کا محبوب بندہ بن جائے، تو اس سے بڑا اعزاز عالم امکان میں کسی کو حاصل نہیں ہو سکتا۔ آپ اپنے متوسلین کو مستحبات پر یا بندگی کرینگی بڑی ناکسیر فرمایا کرتے اور فرمایا کرتے کہ کسی بھی مستحب کو چھوڑنا نہ چاہیے کہ اس سے محرومی کا اندیشہ ہے، خصوصاً مستحب کو ادنیٰ اور معمولی بات سمجھ کر چھوڑ دینا تو بڑی فطرناک بات ہے، اگر کبھی مستحب پر عمل کرنے سے کوئی عذر معقول پیش آجائے تو، جس قدر بھی آسانی سے ممکن ہو اتنا ہی عمل کر لیا جائے، چھوڑنا نہ جائے، نمازوں کے بعد تسبیح فاطمی مستحب ہے اگر اس تسبیح کی پوری تعداد کسی وقت ممکن نہ رہے، تو جتنی ممکن ہو پڑھ لی جائے، بالکل ترک نہ کیا جائے، کیونکہ بزرگوں کا قول ہے کہ مستحبات ترک کرنا بڑا رشتہ رفتہ رفتہ سنتوں کو ترک کر بیٹھتا ہے، اور سنتوں کا چھوڑ دینا واجب کے چھوڑ دینے کا پیش خیمہ ہے، اور واجبات کو چھوڑ دینے والا کسی نہ کسی وقت فرائض چھوڑ بیٹھے گا، جو اس کے لئے دنیا و آخرت میں ہلاکت کا سبب ہے۔



فرمایا کرتے کہ ہائے ہائے مت کرو، یہ نہ کہو کہ "کچھ بن نہیں پڑتا"، ہم کیا کریں کیسے کریں، کہاں تک کریں، حق تعالیٰ کی وسعت رحمت پر نظر رکھو، سب کچھ بن پڑے گا سب ٹھیک ہو جائے گا، اپنے ضعف و ناتوانائی کو نہ دیکھو، ورنہ تو کچھ بھی نہ کر سکو گے حق تعالیٰ پر نظر رکھو، سب کچھ کر سکو گے، انکواراضی رکھنے کی فکر کرتے رہو، انشاء اللہ کامیاب ہو جاؤ گے۔

حضرت عارفیؒ کی تعلیمات کا دوسرا جزو اتباع سنت کی سختی سے تاکید کرنا ہے، آپ کی کوئی مجلس ایسی نہوتی تھی کہ جس میں کامل اتباع سنت کی اپنے متوسلین کو تلقین نہ فرماتے ہوں، حضرت والا بھی اتباع سنت کا نمونہ تھے، اور اپنے خدام کو بھی اسی رنگ میں رنگا ہوا دیکھنا چاہتے تھے، طاعات و عبادات میں تو اتباع سنت بہر حال مقصود و مطلوب ہے، آپ تو اخلاق و عادات اور حرکات و سکنات میں بھی اتباع کی تلقین فرماتے، شکل و صورت وضع قطع، رہن سہن، نشست و برخاست گفتار و رفت ر، پوشاک و لباس، بیداری و خواب، خورد و نوش اور تعلقات و معاملات میں بھی اتباع سنت کو مقصود اصلی قرار دیتے، فرمایا کرتے کہ اتباع سنت کے تمام طریقوں کو میں نے اپنی کتاب "اسوۃ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم" میں جمع کر دیا ہے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی ہر ادا، ہر انداز اور ہر کیفیت اس میں ضبط کر دی ہے، اس کو دیکھ کر اپنی زندگی کو، اور اپنی زندگی کے تمام اطوار و انداز کو سنت میں ڈھال لو، فرمایا کرتے کہ اتباع سنت کے بغیر کچھ حاصل نہیں ہوتا، نہ منزل ملتی ہے، نہ نجات، اور نہ ترقیاں حاصل ہوتی ہیں، نہ کمالات، اس پر حضرت مجدد الف ثانیؒ کا ایک ملفوظ سناتے کہ۔ میں اس مقام پر ہوں کہ اگر ظاہر کر دوں تو علمائے ظاہر مجھے کانسر کہیں گے، اور صوفیائے کرام زندیق، لیکن مجھے کسی کی پرواہ نہیں، اور مجھے جو یہ مقام ملا ہے، وہ صرف اور صرف سنت رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی اتباع کی بدولت ملا ہے" (ادکا قال)

حضرت عارفیؒ اعمال اختیار یہ میں تو سنت کا اہتمام کرتے کراتے ہی تھے،



نے کھانا کھایا ہے ہم بھی آپکے اتباع میں کھا رہے ہیں، اپنے پانی پیلے آپکے اتباع میں ہم پی رہے ہیں، اپنے آرام بھی فرمایا ہے آپکے اتباع میں ہم بھی کر رہے ہیں، پھر حضورؐ کے اس کام کے کرنے کا انداز معلوم کر کے اسکو اختیار کر لو، اس اتباع کی برکت یہ ہوگی کہ اس کام کا ہر لمحہ عبادت میں لکھا جائیگا اور اس کام میں اسقدر خیر و برکت اور نور حاصل ہوگا جس کا تصور بھی نہیں کیا جاسکتا۔ گویا حضرت عارفیؒ کے بتائے ہوئے طریقہ پر عمل کرنے والے کی زندگی کا ہر لمحہ، ہر انداز اتباع سنت کی تمام برکتوں سے مالا مال ہو جائیگا۔ جو آخرت کی زندگی میں نور بن کر چمکے گا اور دنیا کی زندگی میں لطف و سرور اور سکون و راحت کا سبب ہو جائیگا آپ اکثر فرماتے کہ حضرت حاجی صاحب کے طریق میں سالک کو بہت جلدی وصول ہو جاتا ہے، اسکا وجہ یہ ہے کہ حضرت کے طریق میں اتباع سنت بنیاد، اور یہ ایسی بنیاد کہ اسمیں نہ توشہ بیدریاضت کی ضرورت ہے اور نہ مجاہدات کی۔ بس کھلا ہوا روشن راستہ ہے جسپر سالک بے خوف و خطر چل کر منزل تک پہنچ جاتا ہے۔

آپ کی تعلیمات کا آخری جزو "رجوع الی اللہ" ہے جس کا مطلب خود حضرت عارفیؒ کے بیان کے مطابق یہ ہے کہ اپنے ہر ادنیٰ سے ادنیٰ اور اعلیٰ سے اعلیٰ معاملہ میں حق تعالیٰ کی طرف رجوع کرنا۔ فرماتے کہ جو کچھ بھی کرنا ہو پہلے اللہ تعالیٰ کی طرف اس معاملہ میں رجوع کر لو پھر اس کام کو کرو، صبح سے شام تک اور شام سے صبح تک انسان بے شمار کام کرتا ہے، ہر کام کے شروع میں پہلے اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع کر لیا جائے تو خیر و برکت اور مدد و نصرت کے علاوہ اس کام میں مشغولیت کے اوقات عبادت بن جائیں گے گھر سے باہر جانا ہے تو پہلے اللہ تعالیٰ سے رجوع کر لو کہ اے اللہ! میں باہر جا رہا ہوں، میری آمد و رفت کو عافیت و سلامتی اور خیر و برکت کے ساتھ پورا فرما دیجئے، کھانا کھانا ہے، پانی پینا ہے یا اور کوئی کام کرنا ہے تو اللہ تعالیٰ سے دل دل میں مناجات کر لو، فرمایا کرتے شروع میں قدرے الجھن ہوگی لیکن کچھ عرصہ کے بعد یہ عادت میں داخل ہو جائیگا۔ اور بلا تکلف ہر لمحہ رجوع الی اللہ کی سعادت حاصل ہو جائیگی۔ فرماتے کہ میں نے اس پر عمل شروع کیا تو اللہ تعالیٰ نے

میری مدد فرمائی اور یہ حالت ہو گئی کہ تھوڑے ہی عرصہ کے بعد بلا تکلف یہ بات میری عادت میں داخل ہو گئی۔

حضرت عارفیؒ کی تعلیمات کا تھوڑا سا نمونہ پیش کر دیا گیا ہے، راقم الحروف کو اپنی بے مانگی، کم فہمی اور نااہلی کا اعتراف ہے۔ اور اس کا بھی کہ یہ ناکارہ نہ تو حضرت عارفیؒ نور اللہ مرقدہ کی تعلیمات کا احاطہ کر سکا ہے اور نہ ان کو کما حقہ سمجھ سکا ہے۔ یہ تو آپ کی بعض تعلیمات کو جمع کرنے کی ناکام سی کوشش ہے اللہ تعالیٰ اسکو قبول فرما کر نافع بنائیں اور حضرت والاؒ کے نقش قدم پر چلنے کی توفیق عطا فرمائیں۔ آمین۔

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

لہذا کی پرورش و نگہداشت بہت اہم ذمہ داری ہے ان کو ابتدا ہی سے جب ان میں کچھ پیدا ہونے لگے۔ اللہ اور رسول کا نام سکھانا شروع کر دینا چاہیے پھر ابتدائی عمر میں قرآن شریف کا ختم کرانا اور ضروری مسائل پاک و ناپاکی کے جانور و نباتات، حلال و حرام چیزوں سے ضرور مطلع کر دینا چاہیے پھر ابتدائی سے نماز کی عادت ڈالنا چاہیے۔ ان کا لباس پوشاک صرف اسلامی طرز کا رکھنا چاہیے۔ ان کے اخلاق کی نگرانی رکھنا چاہیے ان کو نشست و برخاست اللہ کھالے پینے کے ادب سکھانا چاہیے۔ دین و دنیا کی ضروری تعلیم و تربیت کا خاص طور پر اہتمام رکھنا چاہیے۔ بُری صحبتوں سے ان کو خاص طور پر بچانے کی فکر رکھنا چاہیے۔ اس کے علاوہ اور رشتہ داروں کے ساتھ بھی حسن و سلوک کا معاملہ کرنا چاہیے۔ (از: افادست عارفیہ)



## ہفت مشفق حضرت عارفی

یہ نہ سوانح حیات ہے، نہ حضرت عارفِ قدس اللہ سرہ کی حیات پر تمصرہ۔  
ان دونوں کاموں کے لئے خاص اہلیت کی ضرورت ہے، جس سے ناچیز تہی دامن ہے  
مجھے مضمون نگاری کا سلیقہ بھی نہیں آتا۔ بس کچھ حسین اور انٹ یادیں ہیں۔ جن کو  
اسلئے سپرد قلم کر رہا ہوں کہ اللہ تعالیٰ کے حضور عارفی نمبر کے لکھنے والوں کی فہرست  
میں ناچیز کا نام بھی شامل ہو جائے۔

”بئیں ہمیں کہ قافیہ نکل شود بس ست“

بچے از خدام حضرت عارفیؒ

احقر محمد رفیع عثمانی غفرلہ

۲۷ ربیع الاول ۱۴۰۷ھ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

نحمدہ ونصلی ونسلم علی رسولہ الکریم، وعلیٰ آلہ واصحابہ اجمعین، ومن تبعہم باحسان الی

ستیری و ستیری، مرشد مشفق، منزلی معظم، حضرت ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عاتقی رحمۃ اللہ علیہ کا یہ شعر اس وقت حسب حال ہے، جو بار بار زبان پر آنے کے بعد اب قلم پر آ گیا ہے۔

ہو بھی سکے گا مجھ سے بیاں بزم یار کا ؟

اندازہ کر رہا ہوں دل بے قرار کا

آج سے ۳۵ سال قبل ۱۹۵۱ء میں ہم آرام باغ کے قریب، کیمپ اسٹریٹ پر اقبال نزلہ میں رہتے تھے، میری عمر ۱۵ سال تھی، کچھ فاصلہ پر رابن روڈ کی ایک دکان کے سامنے سے اکثر گزر ہوتا تھا، یہ ایک ہو میو میٹھک مطب تھا، جس میں ایک دراز قد نورانی بزرگ کے ارد گرد چند آدمی بیٹھے نظر آتے، وہ بزرگ محو گفتگو ہوتے، اور حاضرین بہ تن گوش یہ کون لوگ ہیں ؟ کبھی یہ سوال بھی دل میں پیدا نہ ہوا۔

رفتہ رفتہ سننے میں آیا "یہ ڈاکٹر عبدالحی صاحب ہیں" جو ہو میو میٹھک علاج کرتے ہیں۔ پھر کسی نے بتایا کہ یہ — حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے خلیفہ مجاز ہیں۔ پھر جلد ہی یہ دیکھنے میں آیا کہ حضرت والد ماجد سے ان کے بڑے اچھے مراسم ہیں۔

میں اس زمانے میں مسجد باب الاسلام (نزد آرام باغ) میں حفظ قرآن کریم کے مکتب میں زیر تعلیم تھا، دن رات اس میں مشغولیت رہتی، کچھ فارغ وقت مل جاتا تو وہ لوگوں کے لالہ بالی پن میں گزر جاتا، کبھی یہ خیال بھی نہ آیا کہ انکی خدمت میں حاضر ہونا چاہئے۔

## حضرت کی خدمت میں پہلی حاضری

ایک مرتبہ ہماری بہنوں میں سب سے چھوٹی ہیں بیمار ہو گئیں تو حضرت ڈاکٹر صاحب کا علاج ہوا، والد ماجد نے مجھے دوا لینے کے لئے مطب بھیجا۔ یہ ناچیز کہ پہلی حاضری تھی۔ میں نے سلام عرض کر کے حضرت والد صاحب کا پرچہ جس میں مریفہ کا حال لکھا تھا، انکے ہاتھ میں تھا دیا حضرت ڈاکٹر صاحب نے دوا کی کچھ پٹیاں میرے ایک ہاتھ میں، اور کچھ پٹیاں دوسرے ہاتھ میں عطا

فرمائیں اور انکے استحصال کا طریقہ بتا ہی رہے تھے کہ میں نے دونوں ہاتھوں کی پٹریاں ایک ہاتھ میں جمع کر لیں۔ آپ نے فوراً اپنی بات کاٹ کر فرمایا کہ ”نہیں انکو الگ الگ رکھنا تھا“۔ یہ کہہ کر وہ پٹریاں واپس لے لیں، اور کپوڑ کو حکم دیا کہ دوا دوبارہ تیار کر دے۔ میں نئی دوا جو اب الگ الگ لفافوں میں دی گئی تھی لیکر سلام کر کے چلا آیا۔ لیکن یہ خیال دماغ میں گھومتا رہا کہ دوا کا معائنہ کیسا نازک ہے، یہاں مریض اور بیمار دار کی منطق نہیں چلتی، صرف معالج ہی کی ہدایت پر بے چون و چرا عمل ناگزیر ہے۔ ساتھ ہی حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے پر شفقت دھیے پن کا احساس ہوا کہ ذرا بھی تو ناگواری چہرے پر آئی نہ لہجے میں۔ یہ پہلا نقش تھا جو دل پر پہلی ملاقات سے قائم ہوا۔

حضرت عارفؒ نے یشر اپنے شیخ کے بارے میں کہا ہوگا، لیکن مجھے تو یہ اپنے شیخ کے بارے میں معلوم ہوتا ہے کہ ۷

نہ جانے کس ادا سے میری جانب اس نے دیکھا تھا

ابھی تک دل میں تاثیر نظر محسوس ہوتی ہے

میں نے اور سال گزرتے رہے۔ حضرت کے مطب میں حاضرین کا حلقہ بڑھتا جا رہا تھا، جسمانی مریض بھی ہوتے، روحانی بھی، میں ایسا روحانی مریض تھا جسے اپنی بیماری ہی کی خبر نہ تھی، حضرت عارفیؒ محو گفتگو ہوتے اور حاضرین ہمد تن گوش، اور میں یہ دیکھتا ہوا بے پروائی سے گزر جاتا۔

۱۳۵۲ھ (۱۹۵۲ء) میں محلہ ناکہ واڑہ میں دارالعلوم کراچی قائم ہوا تو جن طلبہ سے اس درسگاہ

کا آغاز و افتتاح ہوا، اُن میں خوبی قسمت سے احقر، اور برادر عزیز مولانا محمد تقی عثمانی سلمہ بھی شامل تھے، ہماری درس نظامی کی تعلیم باقاعدہ شروع ہو گئی، جس میں منہمک ہو کر ہمیں دارالعلوم اور اپنے اسباق کے علاوہ کس چیز کا ہوش رہا نہ فرصت، اب مطب کے سامنے سے گزرنا بھی کم ہوتا تھا، کبھی کبھی حضرت ڈاکٹر صاحبؒ دارالعلوم کی کسی تقریب میں تشریف لے آتے، یا حضرت والد صاحبؒ کے ساتھ انکی خدمت میں حاضری ہو جاتی، بہ کیف کوئی خاص تعلق حضرتؒ سے اب بھی قائم نہ ہوا یہ قول حضرت عارفیؒ ۷

ہے قدم راہ طلب میں گو وہ ناقص ہی ہے

کچھ تو حاصل کر رہے ہیں، سعی لاحاصل سے ہم

یہ نہ سمجھے کار فرما ہے کسی کا لطفِ خاص

اپنی حالت سے رہے کچھ اس طرح غافل سے ہم

پھر جب دارالعلوم سنہ ۱۹۵۵ء میں کورنگی منتقل ہو گیا تو ہم دونوں بھائی بھی وہیں کے دارالطلبہ میں رہنے لگے۔ جہاں دارالعلوم کی یہ نئی عمارت بنی تھیں، یہ ایک بھیاںک ریگستان تھا، نہ کورنگی ٹاؤن بنا تھا، نہ لائڈھی کالونی۔ سڑک، بجلی، فون، ڈاک خانہ غرض کسی قسم کی شہریت کے آثار میلوں تک نہ تھے، قریب ہی ایک گاؤں "شرانی گوٹھ" کے نام سے تھا، جسکے ارد گرد کچھ کھیت اور باغات تھے۔ طالب علمی کا یہ دور تقریباً دیہاتی زندگی کا دور تھا، ہفتہ میں صرف جمعہ کا دن شہر میں بسبیلہ چوک کے پاس اپنے نئے مکان "اشرف منزل" میں والدین کے پاس گذرتا تھا۔ اس میں کبھی کبھار حضرت ڈاکٹر صاحب سے بھی، والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کے ساتھ ملاقات ہو جاتی تھی۔

حضرت والد ماجد کا معمول تھا، بلکہ وہ اس کے حریص رہتے تھے کہ جب بھی بن پڑا وہ بزرگوں کو دارالعلوم (کورنگی) لاتے، انکے پند و نصائح طلبہ اور اساتذہ کو سنواتے، اور دارالعلوم کے لئے دعا کرواتے۔ اس طرح برصغیر، ممالکِ عربیہ، اور افغانستان کے جو اکابر علماء و مشائخ دارالعلوم تشریف لاتے، ان سے ہمیں بھی استفادہ کا موقع مل جاتا، ایسے متعدد مواقع میں حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے بھی نیاز حاصل ہو جاتا تھا۔ حضرت ڈاکٹر صاحب کا ایک مکتوب حضرت والد صاحب کے نام اسی زمانے کا ہے، جو والد صاحب کی ایک کتاب میں رکھا ہوا ان کے انتقال کے بعد ملا تھا۔ تیر کا یہاں نقل کرتا ہوں۔

## مکتوب گرامی بنام حضرت والد صاحبؒ

معظم و محترم دام مجدکم وظلکم العالی

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ :

اس وقت ناک و اثر حضرت مولانا الطہر علی صاحب ظلکم کی زیارت و ملاقات کے لئے حاضر ہوا

۱۔ مشرق پاکستان کے مشہور ترین عالمِ دین، اہل حکیم الامت حضرت تھانویؒ کے خلیفہ مجاز انکی وفات اسی روز بمحمدیش میں ہوئی جس روز حضرت والد ماجد کراچی میں انتقال ہوا۔ رحمۃ اللہ علیہما۔ ریح۔



ہوں، اس قدر وسعت، وقت میں نہیں کہ وہاں (کورنگی) حاضر ہوتا، خصوصاً اس موقع کے بعد کہ وہاں (کورنگی میں) آج بخدی شریف کا قلم پھرا ہے، یہ ایسی سعادت ہے جس سے محروم رہنے کو جی نہیں چاہتا، اس لئے اوکا عرض ہے کہ میرے لئے اور میرے متعلقین کے لئے بھی دعا ہائے خیر فرادیں، اور مجمع دعاؤں میں شامل فرمائیں، جزاکم اللہ خیر۔

اس وقت یہ بھی معلوم ہو کر اطمینان ہو کہ جناب والا کا مزاج اب بہتر ہے، اللہ تعالیٰ ہمیشہ صحت و قوت کے ساتھ آپ کے فیوض و برکات کو جاری رکھیں۔

احقر محمد عبدالحی عفی عنہ

جب ہماری ضابطہ کی طالب علمی کا دور آخری مراحل میں تھا تو حضرت ڈاکٹر صاحب عارفیؒ کی رہائش ”پاپوش نگر“ میں، اور مطب پرانی جگہ ”رابسن روڈ“ پر تھا۔ اس زمانے میں ان کا غالباً روز کا، یا ہفتہ میں ایک مقرر دن کا معمول یہ تھا کہ صبح کو گھر سے مطب جاتے ہوئے سہیلہ چوک پر بس سے اتر جاتے، اور ہمارے گھر حضرت والد صاحبؒ کے پاس چند منٹ کے لئے تشریف لاتے، وہ بھی منتظر ہوتے تھے، دونوں مل کر باغ بلغ ہو جاتے، باتیں تو اب یاد نہیں رہیں، ضرر اتنا یاد ہے کہ بڑی پر لطف باتیں ہوتی تھیں جن میں حکیم الامت حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ اور ان کے حکیمانہ ملفوظات کا ذکر بار بار آتا۔ بات بات پر بڑے نفیس شعرا ایک دوسرے کو سناتے۔ آنے کا وقت بھی مقرر تھا واپسی کا بھی، چند منٹ بعد حضرت عارفیؒ جیب سے گھڑی نکال کر دیکھتے، اور رخصت ہو جاتے۔ نادھر سے جلد واپسی پر محذرت، نادھر سے مزید بیٹھنے پر اصرار ہے

راکھیں سے ڈھونڈ کر اے عمر رفتہ دل وہی

مئے وہی، مینا وہی، ساقی وہی محفل وہی

(حضرت عارفیؒ)

دورۂ حدیث سے فراغت کے بعد ہم دونوں بھائی دارالعلوم کے درجہ ”تخصّص فی الاقارار“ میں داخل ہو گئے، ابتدائی کتابوں کی تدریس بھی ہمیں سونپ دی گئی، ان دونوں کاموں میں انہماک اس قدر رہنے لگا کہ رات کے دو تین بجے تک سر اٹھانے کی فرصت نہ ملتی۔ اب ہمارے

والدینؑ نے بھی دارالعلوم کی انتظامی ضرورت سے، اور ہم دونوں بھائیوں کی سہولت کے لئے دارالعلوم کونگلی میں سکونت اختیار فرمائی تھی۔ کونگلی ٹاؤن اور لانڈھی کالونی کے آباد ہو جانے سے یہاں دیہاتی ماحول کی جگہ قصباتی ماحول نے لے لی تھی، شہری سہولتیں بھی رفتہ رفتہ حاصل ہوتی جا رہی تھیں۔

## تخصّص فی الاقارار اور درسِ طریقت

درجہ ”تخصّص فی الاقارار“ میں ہم طلبہ کی تعلیم و تربیت کا کام حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ نے بہ نفس نفیس اپنے پاس رکھا تھا، جس میں فتویٰ کی تربیت کے ساتھ باطنی تربیت اور تزکیہ نفس کا درس بھی عملاً جاری رہتا۔ وہ بہ مناسب موقع پر اصلاحِ باطن، تزکیہ اخلاق، شریعت و طریقت کے باہمی ربط و لزوم، ضرورتِ مُرشد، اوریعت و سلوک کی اہمیت پر نہایت دلکش انداز میں توجہ دلاتے۔

عقل اور علیٰ طور پر تو اگرچہ طالب علم کے ابتدائی دور ہی سے یہ بات واضح ہو گئی تھی کہ اصلاحِ باطن اور تزکیہ اخلاق کے بغیر علم و عمل دونوں بے جان رہتے ہیں۔ اور جس طرح نماز روزہ وغیرہ عبادات کے بغیر دین ناقص ہے، تزکیہ باطن کے بغیر بھی ناقص رہتا ہے۔ اور یہ کہ جب تک اصلاحِ باطن کے لئے خود کو کس مُرشد و مربی کے حوالے نہ کر دیا جائے مقصود حاصل نہیں ہوتا۔ لیکن یہ سب باتیں صرف عقل اور علم کی حد تک تھیں، دل میں نہ آتی تھیں۔ پانی کی ضرورت تو دلائل سے معلوم ہو گئی تھی، پیاس پیدا نہ ہوئی تھی۔ یہ پیاس ”تخصّص فی الاقارار“ کے زمانے ہی میں پیدا ہوئی شروع ہوئی۔

## دل کی دنیا ؟

دل میں یہ غش اکثر رہنے لگی کہ ہم نے ابھی علمِ دین کا ادھورا نصاب پڑھ لیا ہے، ایک بڑا اہم حصہ باقی ہے۔ صرف تعلیم حاصل کی ہے، تربیت باقی ہے، فقہ ظاہر پڑھا ہے، فقہ باطن کی اہمیت سے بھی وقف نہیں۔ ظاہری اعضاء ہاتھ پاؤں، زبان کان وغیرہ کے اعمال اور ان کے

شرعی احکام تو کچھ پڑھ لئے، مگر "دل کی دنیا" میں جھانک کر نہیں دیکھا۔ دل کی اس چھوٹی سی دنیا میں جذبات و خواہشات کا جو تلاطم برپا ہے، شریعت کی نظر میں یہ کیسا ہے؟ اس میں جو طرح طرح کی موجیں اٹھتی اور دبتی رہتی ہیں، ان میں سے ہر موج کے شرعی احکام کیا ہیں؟ اچھی موجوں کو اُبھارنے، اور بُری موجوں کو دبانے کے طریقے کیا ہیں؟ سینے میں دھڑکتے ہوئے اس دل پر قابو پانے اور اسے شریعت کے تابع کرنے کا نسخہ کیا ہے؟ یہ دل جو ہمارے تمام اعضاء پر حکمرانی کر رہا ہے، اس پر اپنی حکمرانی کرنے کا اگر کیا ہے؟ اس پر شریعت کی حکمرانی قائم کرنے کا آسان راستہ کیا ہے؟ ————— یہ اور اسی قسم کے بہت سے سوالات تھے، جنکے حل کے لئے کس استاد، اور رہبر و مرشد کی ضرورت تھی۔ گاہے گاہے تصوف کی کتابیں دیکھنے کی نوبت آنے لگی، بزرگوں کے واقعات و ملفوظات پڑھنے اور سننے میں مزا آنے لگا۔

## مرشد کی تلاش

اب یہ سوال بار بار ابھرتا کہ کس کے ہاتھ میں اپنا ہاتھ دیا جائے؟ کس سے بیعت کروں؟ کبھی ہی سوال حضرت عارفیؒ کو بھی پیش آیا ہوگا، جیسی تو انہوں نے فرمایا تھا کہ ۵  
جوش جنون عشق میں جاؤں کدھر کو میں؟  
حیرت سے دیکھتا ہوں ہر اک رہ گزر کو میں

حکیم الامت مجدد ملت حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی قدس اللہ سرہ کی تصانیف اور حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے بعض رسائل میں مرشد کے جو اوصاف بیان کئے گئے ہیں اور انتخاب مرشد کے لئے جو ہدایات درج ہیں، احقر انکو دیکھتا، پھر جن جن بزرگوں سے استفادہ ممکن تھا انکا تصور کرتا، حکیم الامت حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے بہت سے خلفاء اس وقت بھی بحمد اللہ پاکستان میں موجود تھے، مثلاً حضرت مولانا ظفر احمد صاحب عثمانی (صاحب اعلاء السنن) حضرت مولانا شاہ عبدالغنی صاحب پھولپوری۔ حضرت مولانا خیر محمد صاحب (بانی جامعہ خیر المدارس ملتان) حضرت مولانا ذاکر عبدالحی عارفی صاحب رحمۃ اللہ علیہ حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ۔ یہ حضرات تو بہت ہی مشہور تھے اور حضرت والد صاحب کی بدولت ان سب سے بار بار نیاز حاصل ہوا تھا، اور

سب ہی بے پایاں شفقت فرماتے تھے۔ خصوصیت سے اس زمانے میں تو حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے یہ معمول بنالیا تھا کہ جب بھی کسی بزرگ کے یہاں تشریف لے جلتے، یا وہ بزرگ دارالعلوم تشریف لاتے تو ہم دونوں بھائیوں کو ضرور اپنے ساتھ رکھتے تھے۔

## طبعی مناسبت

انتخاب مرشد کے لئے دیگر شرائط کے علاوہ ایک اہم شرط یہ ہے کہ جس کے ہاتھ پر بیعت کی جائے اس سے صرف عقیدت ہی نہیں بلکہ طبعی مناسبت بھی ہو۔ عقیدت بجز اللہ سب بزرگوں سے تھی مگر طبعی مناسبت ؟ یہ سب سے زیادہ حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ سے محسوس کرتا تھا جسکی ایک وجہ یہ بھی تھی کہ باقی بزرگوں کی خدمت میں اپنی اصلاح کی تڑپ لے کر حاضر ہونے، اور انکی صحبت سے استفادے کی نوبت ہی بہت کم آئی تھی۔ حضرت والد ماجد کسی بزرگ سے بیعت ہونے کی ترغیب دیتے، احقر خاموش ہو جاتا، یہ عرض کرنے کی جرأت نہ ہوتی کہ ”سب سے زیادہ عقیدت و مناسبت تو آپ سے ہے، آپ ہی بیعت فرمائیے“۔ یہ بہت اس وجہ سے بھی نہ ہوتی تھی کہ مجھے اپنے والد صاحب سے عشق تھا، اور اپنی کم فہمی کے باعث مجھے ڈرتھا کہ باپ بیٹے کے تعلق میں جو بے ساختگی اب ہے، وہ جاتی رہے گی، ایک قسم کا رسمی ادب بیچ میں حائل ہو جائے گا، اب جس طرح ہم اُن سے ناز کرتے، اور وہ ناز اُٹھاتے ہیں، اس کا مزاجاتا رہے گا جو حال میرا تھا، وہی سب بھائیوں کا تھا کہ وہ بھی والد صاحب سے بیعت ہونا چاہتے تھے، مگر زبان سے کہنے کی ہمت نہ ہوتی تھی۔ غرض احقر دارالعلوم میں باضابطہ مدرس ہو گیا، اور پھر شادی بھی ہو گئی، مگر یہ مسئلہ اب تک حل نہ ہوا تھا۔ حضرت عارفیؒ نے گویا میری حال بیان فرمایا ہے کہ ۵

میں دیکھتا ہی رہا کیا نیزنگ صبح و شام

عمرِ فسانہ ساز گذرتی چلی گئی

## حضرت والد صاحب سے درخواست

زندگی کے قیمتی سال یوں ہی گذرتے دیکھ کر بالآخر احقر نے ایک روز اپنی خواہش کا اظہار کر ہی دیا۔



حضرت والد صاحبؒ نے فرمایا "میری بجائے حضرت مولانا عبدالغنی صاحب پھولپوریؒ سے یا حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحبؒ سے بیعت ہو جاؤ، ماشاء اللہ یہ دونوں بزرگ کراچی میں ہیں، انکی صحبت و تربیت میں بڑی تاثیر ہے، انکی تربیت سے بہت سی زندگیوں میں خوشگوار یعنی انقلاب آیا ہے، بہت لوگوں کی اصلاح ہوئی ہے۔ یہ وہ زمانہ تھا جب کراچی میں ان تینوں بزرگوں، حضرت پھولپوریؒ، حضرت والد صاحبؒ، اور حضرت ڈاکٹر صاحبؒ عارفیؒ کے فیوض آب و تاب سے جاری تھے، تینوں کی ہفتہ وار مجلسیں مرجع خلافت بنی ہوئی تھیں اور تینوں ہی کی مجالس میں گاہے گاہے حاضری کی سعادت بھی نصیب ہو جاتی تھی۔ لیکن دل کا جھکاؤ حضرت والد صاحبؒ ہی کی طرف تھا۔ اسی کشمکش میں کئی سال اور گزر گئے۔ اور اس عرصہ میں ایک الناک حادثہ یہ ہو گیا کہ حضرت پھولپوری رحمۃ اللہ علیہ انتقال فرما گئے۔ اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ۔

## حضرت والد صاحبؒ کی مجلس

حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی ایک مجلس ارشاد ہر اتوار کو عصر سے مغرب تک، ہوتی تھی یہ کئی سال سبیلہ چوک کے پاس اشرف منزل میں اور اس کے بعد دارالعلوم کورنگی میں آخریات تک جاری رہی۔ اس مجلس میں دور دور سے، بلکہ دوسرے شہروں سے بھی لوگ جوق درجوق آتے، برمی پر کیف مجلس ہوتی تھی، اس میں "دل کی دنیا" ہی موضوع گفتگو ہوتی، بزرگوں کے واقعات و ملفوظات، پُر اثر اشعار، علمی باریکیوں کا دلنشین بیان، لطائف و ظرائف، احکام و حکم، موجودہ دور کے شبہات، اور انکا حل، نفس و شیطان کی دقیق حیلہ سازیاں اور انکا علاج سب ہی کا اثر انگیز بیان ہوتا جو دل کی گہرائیوں میں اترتا چلا جاتا تھا۔ کتنی ہی زندگیوں میں اس مجلس میں خوشگوار انقلاب آچکا تھا، بہت سے حضرات اور خواتین حضرت والد صاحبؒ سے اصلاحی تعلق رکھتے تھے، بہت سے بیعت تھے، اور کئی حضرات خلیفہ مجاز تھے، یہ سب حضرات، والد صاحبؒ سے اصلاحی خط و کتابت بھی جاری رکھتے تھے۔ میرا بھی بار بار دل چاہتا کہ اس سلسلہ میں باقاعدہ داخل ہو جاؤں، وقفہ وقفہ سے کئی بار عرض بھی کیا، مگر اب والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ ہر مرتبہ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ ہی کا نام لیتے، اور انکے انداز تربیت کی بہت تعریف فرماتے۔

## حضرت ڈاکٹر صاحب کی مجلس

اس پورے عرصے میں حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے اصلاحی تعلق رکھنے والوں اور مریدین کی تعداد میں بھی مسلسل اضافہ ہوتا تھا، بہت سے لوگوں کو میں جانتا تھا کہ حضرت ڈاکٹر صاحب سے تعلق قائم ہو جانے کے بعد، دیکھتے ہی دیکھتے انکی زندگیاں بدل گئیں، پاکیزگی اور عجیب قسم کا سرور و اطمینان، انکی زندگی میں نظر آنے لگا۔ حضرت کا مطب رابسن روڈ سے پاٹون نگر میں منتقل ہو گیا تھا، اُسی سے ملحق ایک صحن سا تھا جس میں ہفتہ وار مجلس عصر سے مغرب تک ہوتی تھی، ”یہ مجلس“ حاضرین کی کثرت کے باعث اب ”جلسہ“ کی سی صورت اختیار کرتی جا رہی تھی، لوگ دور دور سے، بلکہ دوسرے شہروں سے بھی اس میں شرکت کے لئے آتے، میرے بچپن کے مخلص دوست جناب ”نجیب الحق صدیقی“ بھی حضرت ڈاکٹر صاحب سے اصلاحی تعلق رکھتے، اور حضرت کی مجلس میں اہتمام سے شریک ہوتے تھے، انکی زبانی حضرت ڈاکٹر صاحب کے بہت سے حالات، اور بڑے حکیمانہ اور اثر انگیز ملفوظات سننے میں آتے رہتے تھے۔

چشم مست ناز ساقی کے پرستاروں سے پوچھ  
تشنگی ہوتی ہے کیسی، میکشی ہوتی ہے کیا؟

## حضرت ڈاکٹر صاحب سے عقیدت

حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے اصلاحی تعلق رکھنے والے جن حضرات سے بھی احقر کی ملاقات ہوئی۔ وہ سب کے سب حضرت کی محبت سے سرشار تھے۔ اس کا راز بھی حضرت عارفی ہی بیان فرما گئے ہیں کہ ۵

دیکھتا ہے جو میں سرشار ہو جا رہا ہوں وہ  
اس طرح کچھ پی کے اٹھے ہیں تری مغل سے ہم

حضرت کے جو ملفوظات سننے میں آتے، وہ بھی بڑے کیف آور، امید افزا، اور ہمت پیدا کرنے والے ہوتے تھے۔ بحمد اللہ یہ احقر کی خوش نصیبی ہے کہ دل میں حضرت کی عقیدت بڑھتی جا رہی ہے۔

## دونوں بزرگوں کے باہمی تعلقات

اس زمانے میں والد ماجد، اور حضرت ڈاکٹر صاحب (رحمۃ اللہ علیہما) کی باہمی ملاقاتیں، اور بھی زیادہ ہونے لگیں۔ شاید اس میں والد ماجد کی اس ارادی کوشش کو بھی دخل تھا کہ وہ ہم سب بھائیوں کو حضرت ڈاکٹر صاحب سے مانوس کرنا چاہتے تھے۔ بلکہ اب حضرت بابا نجم احسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ بھی ان دلچسپ ملاقاتوں میں اکثر موجود ہوتے تھے۔ حضرت بابا نجم احسن صاحب حکیم الامت حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کی طرف سے مجازِ صحبت تھے۔ صاحب کشف و کرامات، اور نہایت خوش مزاج و خوش مذاق بزرگ تھے۔ حضرت ڈاکٹر صاحب سے انکی بے تکلفانہ دوستی اور محبت تھی۔ جب یہ تینوں بزرگ جمع ہو جاتے تو عجیب پر کیف سہا ہوتا تھا۔ لطیفے بے تکلفانہ، حکیمانہ اور ادبیانہ چٹکے، روایات و حکایات، عشق و محبت میں ڈوبے ہوئے اشعار، احکام و مسائل، رموز و شریعت و طریقت اور خاص طور پر حکیم الامت حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے واقعات و ملفوظات ان ملاقاتوں کی جان ہوتی تھی۔

تینوں بزرگ شعر و ادب کا نہایت حساس اور اعلیٰ ذوق رکھتے، اور بلند پایہ شعر کہتے تھے۔ یہ اشعار کیا تھے؟ عشق و محبت، سوز و گداز، حکمت و معرفت، فصاحت و بلاغت، گہرے مشاہدے، نزاکتِ احساس، اور نفاستِ ذوق کا شاہکار ہوتے تھے، خواجہ عزیز الحسن صاحب مجذوب رحمۃ اللہ علیہ جو حکیم الامت حضرت تھانوی کے عاشقِ زار، اور برصغیر کے مشہور شاعر تھے، بلکہ بقول علامہ سید سلیمان ندوی ”فطری شاعر“ تھے اور حکیم الامت حضرت تھانوی کے قدیم خلفاء میں ممتاز مقام رکھتے تھے، بحمد اللہ احقر نے بھی بچپن میں انکی زیارت کی تھی، افسوس کہ ۱۹۴۳ء میں وفات فرما گئے۔ انکے والہانہ اشعار ان تینوں بزرگوں کی ملاقاتوں میں بار بار سننے میں آتے۔ ایسا محسوس ہوتا تھا کہ تینوں خانقاہ تھانہ بھون کی وجہ آور فضا میں گم ہو گئے ہیں۔ حضرت عارفی ہی فرماتے ہیں :-

اب یہ ہے مری بے خودی شوق کا عالم  
ہوں ہوش میں اس طرح کہ کچھ ہوش نہیں ہے

یہ مجلسیں اتنی اثر انگیز اور سرور بخش ہوتیں کہ مجھ جیسا کور ذوق بھی وہاں سے ٹلنا گوارا نہ کرتا۔  
بقول حضرت عارفیؒ ۷

تھی بہت گرم انکی محفلِ ناز  
آہ اے بے خودی کہاں تھے، سم

## حکیم الامت تھانویؒ کے خلفاء کا مشترک مزاج

حکیم الامت حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے تمام خلفاء میں اتباع سنت و شریعت، صفائی معاملات، حقوق العباد، آداب معاشرت، نظم اوقات، اور ہر کام میں سلیقہ و انتظام کا اہتمام تو خاص طور سے مشہور و معروف ہے۔ احقر کو جن اکابر خلفاء کی زیارت نصیب ہوئی، ان سب میں ایک خاص وصف یہ بھی نظر آیا کہ یہ سب حضرات ایک دوسرے کے متقین نہیں بلکہ ایک دوسرے پر فریقہ تھے، ہر ایک یہ محسوس کرتا تھا کہ اپنے شیخ کے مزاج و مذاق کو اپنانے اور ان سے کسب فیض میں سب خلفاء مجھ سے بہت آگے نکل گئے ہیں۔ میں ہاں سب سے پیچھے رہ گیا ہوں۔ جب بھی ایک دوسرے سے ملتے، یوں لگتا کہ پیاسے کے سامنے کنواں آگیا ہے۔ خود حضرت عارفیؒ فرماتے ہیں کہ ۷

کیوں دل کو غمِ عشق سے سیرابی نہیں ہوتی  
یہ بات خود اک راز نہاں میرے لئے ہے

یہ سب کنویں پیاسے نظر آتے، مگر انکے پاس جو ایک بار آگیا، سیراب ہوئے بغیر نہ لوٹا، وہ سیرابی یہی تھی کہ اس میں بھی پیاس پیدا ہو جاتی تھی، جوں جوں استفادہ بڑھتا، پیاس بھڑکتی جاتی تھی۔ یہ شعر بھی حضرت ڈاکٹر صاحبؒ ہی سے بار بار سنا کہ ۷

آب کم جو، تشنگی آور بدست  
تا بجوشد آب از بالا و پست

ان حضرات کے سامنے جب کوئی حکیم الامت حضرت تھانویؒ کے کسی واقعہ یا ملفوظ کا ذکر کرتا تو اسکو اتنی توجہ اور ذوق و طلب کے ساتھ سنتے کہ گویا پہلے یہ بات معلوم ہی نہ تھی حضرت



عارفیؒ نے خود اپنا یہ حال بیان فرمایا ہے کہ ۛ

شراب بے خودی شوق بھی کیا جلتے کیا شے ہے

برابر پی رہا ہوں، اور ذراتِ سکین نہیں ہوتی

حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کسی تقریبات میں شرعی تقاضے کے بغیر شریک نہ ہوتے تھے لیکن جس تقریب میں گمان ہوتا کہ حضرت ڈاکٹر صاحب تشریف لائیں گے، اس میں خود بھی اہتمام سے شریک ہوتے، ہمیں بھی ساتھ لے جاتے، اور جیسے ہی دونوں کی نظریں ملتیں، دونوں کے چہرے کھل اٹھتے، اور پرتپاک سلام و مصافحہ کے بعد حضرت والد صاحب فرماتے "بھئی ہم تو ڈاکٹر صاحب سے ملنے کی نیت سے آئے ہیں"۔۔۔۔۔ کبھی فرماتے "ہم تو اپنے ڈاکٹر صاحب کی نیت سے آئے ہیں"۔۔۔۔۔ اور حضرت ڈاکٹر صاحب کا انداز ملاقات یہ ہوتا کہ گویا ایسے دوست سے مل رہے ہیں جو اتنا ذہنی ہے، اور شیخ و مرشد بھی تعظیم و محبت اور بے تکلفی کا ایسا حسین امتزاج کہیں اور دیکھنے میں نہیں آیا۔

حضرت عارفیؒ کو اپنے شیخ، حکیم الامت حضرت تھانویؒ کے ملفوظات غیر معمولی طور پر بہت زیادہ یاد تھے، اس لئے والد صاحب تقریباً ہر ملاقات میں ان سے اپنے شیخ کے کسی نہ کسی ملفوظ کا اعادہ کرنے کی فرمائش کرتے، اور جب حضرت عارفیؒ سناتے تو دونوں ہی گویا وجد میں آجاتے۔

گا ہے گا ہے یہ دونوں بزرگ اور حضرت بابا صاحب (رحمۃ اللہ علیہم) ایک دوسرے کی دعوت بھی فرماتے تھے، جس میں ہمیں بھی شرکت کی سعادت نصیب ہوتی تھی۔ ان کی پدرانہ شفقتوں اور الطاف بے پایاں کی بدولت اب ایسی ملاقاتوں کا انتظار سارے ہنرے لگا تھا۔ میرا حال تو، بہ قول حضرت عارفیؒ یہ تھا کہ ۛ

اب ہوں کسی کے جذبِ کرم ہی کا منتظر

میری طلب تو ہے، مری تاب و تواں سے دو

یہ اسی "جذبِ کرم" کا فیض تھا کہ دل حضرت والدؒ کی طرف کھینچنے لگا تھا۔ بہ قول حضرت عارفیؒ ۛ

میری طلب بھی کسی کے کرم کا صدقہ ہے  
قدم یہ اٹھتے نہیں ہیں، اٹھائے جاتے ہیں

## بیعت سلوک کے متعلق طرح طرح کے توہمات

ابتداءً جب احقر نے بیعت سلوک کے متعلق سوچنا شروع کیا تھا، تو نہ جانے کیوں ایسا لگتا تھا کہ بیعت ہوتے ہی زندگی کی ساری دلچسپیاں قربان کرنی ہونگی، زندگی کا لطف جاتا رہے گا، ایک خشک سی سنجیدگی دل پر چھا جائے گی، دوستوں سے لٹنے کا مزار رہے گا نہ تفریحات کا۔ علمی مشاغل کی جگہ اوراد و وظائف لے لیں گے، تحقیقی اور ملکی و ملی خدمات کا جذبہ جواب تک محو زندگی بنارہا، چمکشی، اور گوشہ نشینی میں گم ہو جائے گا۔ مراقبہ اور صبر آزما مجاہدے ہوں گے، بات بات پر مُرشد کی روک ٹوک اور ڈانٹ ڈپٹ ہوگی، زندگی ایسی مقید ہو جائے گی کہ لطیف احساسات و جذبات گھٹ گھٹ کر افسردہ ہو جائیں گے۔ ثواب تو بہت ملے گا، مگر دوست کیا کہیں گے؟ رشتہ دار باتیں بنائیں گے، بیوی بچے کیا سوچیں گے؟ وغیرہ وغیرہ۔ نہ جانے کتنے اندیشے اور دوسے تھے جو بیعت سلوک سے ڈرتے تھے۔ لیکن بحمد اللہ یہ بات نوکین سے دل میں راسخ تھی کہ تزکیہ باطن فرض عین ہے اور اسکے بغیر دین ناقص، اور علم دین بے جان ہے۔ اس لئے بیعت ہونے کا ارادہ بھی اُسی طرح ڈرتے ڈرتے کر لیا تھا، جس طرح سخت گرمی کے رمضان کا چاند دیکھ کر روزوں کی نیت کرنی ہی پڑتی ہے، مگر پیش قدمی میں کم بہتی پھر بھی سدرہ نبی رہی۔

## توہمات کا ازالہ

یہ اندیشے اور دوسے ہر در تھے۔ مگر حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کی پوری زندگی سامنے تھی، جو ان تمام اندیشوں اور دوسوں کی نفی کرتی تھی، انکی زندگی کا ہر پہلو قابلِ رشک، اور توازن و اعتدال کا حسین نمونہ تھا، بیعت و سلوک نہ انکی علمی تحقیقات میں حائل ہوئے، نہ عظیم ملکی و ملی خدمات میں۔ بلکہ اس نے تو انکی زندگی کے ہر پہلو کو چار چاند لگا دیئے تھے۔ انکی زندگی میں دین و دنیا کی تفریق ہی نظر نہ آئی کہ ترکِ دل کا سوال پیدا ہو کہیں افسردگی نظر آئے، نہ خشک سنجیدگی، انکی گھڑلو

زندگی باغ و بہار تھی، بیوی بچوں کے ساتھ محبت و شفقت، ہنسی دل لگی، اور حکیمانہ تربیت۔  
رشتہ داروں کے ساتھ دل داری، خوش طبعی، خیر خواہی، اور ایثار دوستوں کے ساتھ گرم جوشی،  
پر لطف مجلسیں، اور دلکش و متوازن بے تکلفی۔ لیکن یہ بات تھی کہ انکی کوئی ملاقات، اور مجلس  
اللہ کی یاد اور اسکے ذکر سے خالی نہ رہتی تھی۔ علمی تحقیقات کا ذوق و شوق، تصنیف و تالیف، تدریس  
و تبلیغ۔ ملکی و ملی مسائل سے گہری دلچسپی، اور اخلاق و حکمت کے ساتھ ان میں ایک حد تک علمی  
حصہ۔ اوراد و وظائف، مراقبہ اور مجاہدے، سوز و گداز، سب ہی کچھ تھا، مگر ہر چیز ایک حد میں  
اور سنت کے دلکش سانچے میں ڈھلی ہوئی تھی، شاگردوں اور مریدوں کے ساتھ غایت درجہ شفقت  
کے ساتھ ہر ایک پر انفرادی نظر، اسکی انفرادی طبع اور خصوصی حالات کی ہر قدم پر رعایت۔ زندگی کا  
یہ حسین نمونہ میرے سب ادبام و دوساوس کو شتا چلا گیا۔

انکی بزم ناز میں اسکو سمجھا تھا کبھی

زندگی کچھ ہے کس کو، زندگی ہوتی ہے کیا

پھر جوں جوں حضرت ڈاکٹر صاحب سے قرب بڑھا زندگی کا یہ دلکش نمونہ وہاں بھی اسی  
آپ قباب سے نظر آیا، حضرت کا انداز لطف و کرم ہی ایسا تھا کہ دل کھپتا چلا جائے۔ ان کے  
شیخ کی کشش نے بھی کسی وقت انکو اپنی طرف کھینچا تھا، فرماتے ہیں ۵  
پھر یہ کیا ہے مگر نہیں انکی محبت کی کشش  
خود بخود انکی طرف یہ کیوں کھینچا جاتا ہیں میں

یہی حال حکیم الامت حضرت تھانوی قدس اللہ سرہ کے دوسرے اکابر خلفائے کرام کا  
نظر آیا۔ غرض وہ سب ادبام و دوساوس تو ختم ہو گئے، لیکن دل پھر بھی حضرت والد صاحب  
سے بیعت ہونے کی طرف زیادہ راغب تھا۔

اگست ۱۹۶۶ء کے اواخر میں حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے جنوبی افریقہ کے ویرینہ  
دوستوں کی دعوت پر وہاں کا سفر فرمایا، احقر کی خوش قسمتی سے اس ناکارہ کو بھی ساتھ لے  
لیا، واپسی میں عدن، اور اسکے بعد حرمین شریفین کی حاضری بھی نصیب ہوئی۔ سن شہور میں پونے  
دو ماہ کا یہ سب سے طویل سفر تھا جو حضرت والد ماجد کی ہجر کابی میں نصیب ہوا۔ جنوبی افریقہ

معمورہ زمین کے انتہائے جنوب میں واقع ہے، اس لئے وہاں اس زمانے میں سخت سردی تھی، راتیں خوب لمبی ہوتی تھیں، رات کو خلوت میں ایسی بہت سی باتیں کرنے کا موقع مل جاتا تھا جن کے لئے کراچی میں مہینوں انتظار کرنا پڑتا۔۔۔۔۔ ایک رات احقر نے پھر بیعت کی درخواست کی۔

## حضرت والد صاحب کا ارشاد

اس مرتبہ حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا کہ :-

”اصلاحِ باطن فرضِ عین ہے، لہذا اس میں تو تاخیر جائز نہیں جو مصلح بھی ل جائے اسکے زیر ہدایت کام شروع کر دینا چاہئے، میں تم کو کچھ معمولات بتاتا ہوں، آج ہی سے اُن پر عمل شروع کر دو، رہا بیعت کا معاملہ تو ایسی مثالیں بھی موجود ہیں کہ بیٹے نے باپ سے بیعت کی، اور کامیابی حاصل ہو گئی لیکن یہ ایک حد تک مشکل ہے، کیونکہ باپ بیٹے کا تعلق بے تکلفی کا ہوتا ہے، اور اس طریق میں مرید و مرشد کے درمیان بے تکلفی ابتداءً مضر ہوتی ہے، جس پر قابو رکھنا شاید میرے لئے بھی مشکل ہو، اور تمہارے لئے بھی۔ اس لئے میرا مشورہ تم بھائیوں کے حق میں یہی ہے کہ حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحب سے بیعت ہو جاؤ وہ اس ناکارہ سے تعلق کے باعث تم پر خصوصی توجہ فرمائیں گے، اور انشاء اللہ تم کو ان سے بہت نفع ہوگا۔

یہ ضرور ہے کہ وہ ضابطہ کے ”اصطلاحی عالم نہیں، مگر ”عالمِ گر“ ہیں، جو علوم انکے پاس ہیں، ظاہر بین خشک علما کو انکی ہوا بھی نہیں لگی، بلکہ ضابطہ کے فارغ التحصیل علماء کو، ایسے مصلح سے بیعت ہونے میں ایک مزید فائدہ یہ ہوتا ہے کہ علم کا جو ”خاس“ بہت سے ظاہر بین علماء کے دل میں پیدا ہو جاتا ہے، وہ ایسے مُرشد کی خدمت و تربیت میں جلدی دور ہوتا ہے۔ بزرگ اُٹھتے جا رہے ہیں، اب مزید تاخیر مناسب نہیں۔ ایسا نہ ہو کہ خدا نخواستہ یہ



موقع بھی ہاتھ سے جاتا رہے۔“

اس کے بعد حضرت والد صاحبؒ نے کچھ معمولات تلقین فرمائے جن پر بعد اللہ اس روز سے عمل کی توفیق ہوئی۔ یہ پہلا موقع تھا کہ اس موضوع پر انہوں نے اتنی تفصیل اور وضاحت کے ساتھ ارشاد فرمایا۔ بحمد اللہ اسی وقت دل مطمئن ہو گیا بلکہ حضرت عارفیؒ سے بیعت کرنے کا شوق پیدا ہو گیا۔ اب یوں لگتا ہے جیسے حضرت عارفیؒ اسی ناکارہ سے قرار ہے ہوں کہ ہے۔  
 بڑی غفلت میں گزری عارفیؒ عمر عزیز اب تک  
 کہیں ایسا نہ ہو، یہ وقت بھی یوں ہی گزر جائے

## حضرت ڈاکٹر صاحبؒ سے بیعت

مگر سستی اور کم ہمتی دیکھئے کہ اس سفر سے واپس آنے کے بھی تقریباً ۳ سال بعد، یعنی ۱۹۶۹ء کے اواخر، یا ۱۹۷۰ء کے اوائل میں بیعت کی نوبت آئی۔ غرض ایک روز حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے ساتھ احقر، اور برادر عزیز مولانا محمد تقی عثمانی صاحب سلمہ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے مطب میں حاضر ہوئے، یہ مطب وہ دکان معرفت تھی جہاں سے نہ جانے کتنے جاں برباب جسمانی و روحانی مریضوں نے شفا پائی تھی، اور کتنے تباہ حالوں کو آب حیات ملا تھا۔  
 جا رہا ہوں دیر سے گھبرا کے سوئے میکدہ،

بعد مدت راز ہوش و بے خودی بجھا ہوا ہیں (حضرت عارفیؒ)

حضرت والد صاحبؒ نے ہم دونوں کا مختصر حال اور مقصد بیان فرمایا، حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے توجہ کے عین مطابق نہایت بشاشت کے ساتھ منظوری عطا فرمادی، والد صاحبؒ سے فرمایا کہ آپ کے اس ارشاد کے بعد میں اس معاملہ میں تواضع سے کام نہ لوں گا، اور جو خدمت بن پڑے گی اس سے دریغ نہ کروں گا۔ پھر ہم دونوں سے بڑی شفقت سے فرمایا ”کل آپ دونوں تنہا آجائیں“۔ شاید وہ ہماری ذاتی طلب کا بھی اندازہ فرمانا چاہتے تھے۔

اگلے دن ہم دونوں، عصر کے بعد پہنچے، مجلس کا دن تھا، پاپوش نگر میں مطب کے برابر،

اندکی طرف جو صحن سا ہے، وہاں حسب معمول مجلس ہو رہی تھی۔ مجلس کے اختتام پر ملاقات ہوئی، حضرتؒ نے بہت مسرت کا اظہار فرمایا، اور نماز مغرب کے بعد ہمیں اپنے ساتھ مطب میں لے گئے، جہاں تک یاد پڑتا ہے اس وقت مطب میں کوئی اور نہ تھا۔

## طریقت کے چار سلسلے

حضرت والا نے مختصراً بیعت کی حقیقت بیان فرمائی، اور طریقت کے چار سلسلوں ”چشتیہ، نقشبندیہ، سہروردیہ اور قادریہ“ کا تعارف کرتے ہوئے فرمایا کہ :-

”جس طرح جسمانی صحت حاصل کرنے کے لئے علاج کے مختلف

طریقے طب یونانی، ایلوپیتھک، ہومیوپیتھک، اور ویدک وغیرہ ہیں، کہ مقصد سب کا ایک اور طریقے مختلف ہیں، اسی طرح باطنی اخلاق و اعمال کے علاج کے لئے طریقت کے یہ چار سلسلے ہیں۔ ان چاروں کا مقصد بھی ایک ہی ہے۔ اور وہ یہ کہ ہمارے باطنی اخلاق شریعت اور سنت کے سانچے میں ڈھل جائیں، اللہ تعالیٰ کے ساتھ قوی تعلق پیدا ہو جائے، شریعت و سنت کی پیروی آسان ہو جائے، اور اللہ تعالیٰ کی رضا نصیب ہو جائے۔ البتہ اس مقصد کو حاصل کرنے کے طریقے مختلف ہیں، جو ”چار سلسلوں“ کے نام سے مشہور ہیں۔

یہ چار سلسلے ایسے ہی ہیں، جیسے فقہ میں چار مشہور مذاہب حنفی، مالکی، شافعی اور حنبلی ہیں کہ ان سب کا ماخذ قرآن و سنت ہیں، اور مقصد شریعت پر ٹھیک ٹھیک عمل کرنا ہے، صرف استنباط احکام کے طریقوں میں تھوڑا تھوڑا فرق ہے۔

ہمارے شیخ کے مرشد حضرت حاجی امداد اللہ صاحب مہاجر مکی رحمۃ اللہ علیہ نے ان چاروں سلسلوں میں سلوک طے فرما کر چاروں کو حالاتِ زمانہ کے پیشِ نظر

یک جا کر کے بہت آسان فرادیا تھا، چنانچہ وہ اپنے مریدین کو بیک وقت چاروں  
سلسلوں میں بیعت فرمایا کرتے تھے۔ ہمارے شیخ و مرشد حکیم الامت حضرت  
تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کا یہی معمول تھا۔

یہ فرما کر حضرت ڈاکٹر صاحب عارفی قدس اللہ سرہ نے ہم دونوں بھائیوں کو بھی ان چاروں  
سلسلوں میں بیعت فرمایا۔ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا۔

## بیعت کا فائدہ

اس موقع پر بیعت کا ایک فائدہ حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ نے یہ ارشاد فرمایا کہ  
جس طرح مستند محدث وہی سمجھا جاتا ہے جس نے حدیث کسی مستند استاذ سے باقاعدہ  
پڑھی ہو، اور اس تاذ نے اس کو روایت حدیث کی اجازت دی ہو، آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم  
سے احادیث ہم تک اسی طرح پہنچی ہیں جب استاذ اپنے شاگرد کو کوئی حدیث سنا رہا ہے تو وہ  
اسکی سند بھی بیان کرتا ہے کہ میں نے یہ حدیث فلاں استاذ سے، اور اس استاذ نے فلاں  
سے، اور اس نے فلاں سے حاصل کی ہے، یہاں تک سند آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم تک پہنچ  
جاتی ہے، اور وہ حدیث بھی قابل اعتماد سمجھی جاتی ہے، اور روایت کرنے والا شاگرد بھی، پھر وہ  
شاگرد خود بھی اس حدیث کی سند کے سلسلہ کی ایک کڑی بن جاتا ہے جو ایک بڑی سعادت ہے  
روایت حدیث میں اس کا تعلق آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے اب باقاعدہ متصل اور مستند  
ہو گیا ہے۔ چنانچہ بڑے بڑے ائمہ حدیث اپنی سند کو متصل، اور عالی کرنے کے لئے لمبے لمبے سفر  
اسی لئے کرتے تھے۔

اسی طرح یہ بیعت کا سلسلہ ہے کہ یہ بھی سلسلہ کے تمام بزرگوں سے ہوتا ہوا، ہمارے  
سب سے بڑے محسن و مرشد آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم تک پہنچتا ہے، اس بیعت کے ذریعے  
ہم بھی اس سلسلہ میں داخل ہو جاتے ہیں، جس سے ہمارا تعلق ان تمام بزرگان سلسلہ سے حتیٰ کہ  
آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے باقاعدہ قائم ہو جاتا ہے، اس سے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم  
کی اور بزرگان سلسلہ کی برکات نصیب ہوتی ہیں اور سلوک کے تمام مراحل میں سہولت اور نورانیت

پیدا ہو جاتی ہے۔ اور مقصود تھوڑی سی محنت و توجہ سے بآسانی حاصل ہو جاتا ہے۔

حضرت والا نے اسکی مثال بیان فرمائی کہ جس طرح ہمارے سامنے کے اس بلب سے بجلی کے پاور ہاؤس تک کھمبوں کا ایک باقاعدہ طویل سلسلہ ہے، جو تاروں کے ذریعہ باہم مربوط اور منسلک ہیں، پاور ہاؤس کی بجلی اس بلب تک انہی تاروں اور کھمبوں کے ذریعہ پہنچ رہی ہے، اسی طرح آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم جو تمام معارف اور برکات و فیوض کا منبع و مخزن ہیں۔ انکا فیض ہم تک ان بزرگان سلسلہ کے ذریعہ پہنچتا ہے۔ — طریقت کے سلسلہ میں باقاعدہ داخل ہو جانے (بیعت ہو جانے) سے بزرگان سلسلہ کے ساتھ جو نسبت حاصل ہوتی ہے، وہ درحقیقت آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے فیوض و برکات کے حصول کا ذریعہ بنتی ہے۔ بشرطیکہ طلب صادق ہو، اور مُرید اپنے طبیب روحانی (مُرشد) کو اپنے مختلف باطنی کیفیات کی اطلاع کرتا رہے، اور مُرشد کی ہدایات پر اہتمام سے عمل کیا جائے۔

اسکے بعد حضرت والا نے کچھ تسبیحات و اذکار کی تلقین فرمائی کہ روزانہ وقت مقرر پر پابندی سے پڑھ لیا کریں اور فرمایا کہ اب آپ کا سب سے پہلا کام یہ ہے کہ اپنے روزمرہ کے تمام کاموں کا ایک مستحکم نظام الاوقات مرتب کر کے ہمت سے اسکی پابندی کی جائے۔ نظمِ اوقات کے بغیر نہ دنیا کے کام درست ہوتے ہیں، نہ دین کے، ہر وقت پریشان حال الگ رہتی ہے، نظمِ اوقات کی پابندی سے سب کاموں میں سہولت اور برکت ہوتی ہے۔ ”پھر فرمایا کہ جب موقع ملا کر بے تکلف آجایا کریں، آپ کے لئے کسی وقت کی پابندی نہیں ہے۔“

بیعت فرمانے کے بعد جب حضرت والا نے دُعا کے لئے ہاتھ اٹھائے تو چشمِ تصور میں مجھے دور تک بزرگان سلسلہ کے اُٹھے ہوئے ہاتھوں کی ایک قطار سی نظر آنے لگی جس سے دل کو بڑی تقویت محسوس ہوئی۔ یہ قول حضرت عارفیؒ ہے

اپنے دل کی جلوہ گاہِ حسن تھی پیشِ نظر

کیا بتاؤں بے خودی میں کیا نظر آیا مجھے

جب حضرت والا سے زحمت ہو کر ہم گھر واپس آ رہے تھے، تو قلب و دماغ کا



سارا بوجھ اتر چکا تھا۔ دین پہلے سے زیادہ آسان اور پرکشش نظر آنے لگا، اور سلوک و تصوف کے شکل ہونے کا جو تصور نہ جلنے کب سے لاشعور میں بیٹھ گیا تھا، وہم اور دوسوہ سے زیادہ اسکی وقعت نہ رہی۔

احقر جو اراد و وظائف پہلے سے پڑھا کرتا تھا، حضرتؒ نے ان سے بھی کم معمولات کی تلقین فرمائی لیکن جب ان پر عمل شروع کیا تو انکی لذت و حلاوت پہلے سے کہیں زیادہ محسوس ہونے لگی اور جب تاغہ ہو جاتا تو دل کھویا کھویا سا رہتا، ایک قسم کی ہول پورے دن مسلط رہتی اور تمام کاموں میں بے برکتی محسوس ہوتی۔

اس زمانے میں حضرتؒ کی رہائش پاپوش نگر ہی میں مطب کے ساتھ تھی، اور ہماری رہائش کورنگی میں — تقریباً اٹھارہ میل کا فاصلہ تھا، اور کم ہمتی اس پر مستزاد تھی تاہم کوشش یہ رہتی تھی کہ ہفتہ میں کم از کم ایک بار حاضری ہو جایا کرے۔ مگر اسکی بھی پوری پابندی اس زمانے میں نہ ہو پاتی تھی۔ دارالعلوم کی ہمہ وقتی مصروفیات کے علاوہ اس زمانے میں ہماری والدہ محترمہ مرحومہ سخت بیمار تھیں، حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ صحت بھی ٹھیک نہ رہتی تھی، ادھر کچھ عرصہ بعد احقر کو بھی کمر کی سخت تکلیف لاحق ہو گئی جس نے عرصہ تک صاحب فراش بنائے رکھا۔ یہ ہمارے پورے گھر کے لئے پریشانی کا زمانہ تھا۔

## حضرتؒ کا ہومیوپیتھک علاج

اس طویل بیماری میں تقریباً آٹھ ماہ حضرتؒ کا ہومیوپیتھک علاج بھی ہوا۔ حضرتؒ کی خدمت میں احقر نے اپنی دینی تربیت کے سلسلہ میں سب سے پہلا عرفینہ اسی بیماری کی ابتداء میں (۲۰ ربیع الثانی ۱۳۹۹ھ کو) لکھا تھا، چند روز میں جواب مل گیا۔ اسکے بعد آٹھ ماہ تک صرف جسمانی امراض اور امکا علاج ہی مراسلت کا موضوع بنا رہا۔ مجلس کی حاضری سے بھی اس زمانے میں محرومی رہی ————— ان تکالیف، پریشانیوں اور احساس محرومی کے ساتھ ساتھ حضرت والا کی خصوصی عنایات، دل کی تقویت کا بڑا سہارا تھیں — ایک بار اس ناکارہ غلام کی عیادت کے لئے حضرت والا خود بھی کورنگی تشریف لائے — حضرت عارفی

کا یہ شعر اگر اس وقت بھی سامنے ہوتا تو دل کو کتنی تسلی مزید ہوتی ہے  
 بے قدم راہِ طلب میں، گو دو ناقص ہی ہیں  
 کچھ تو حاصل کر رہے ہیں، سہی لا حاصل سے ہم

## حضرت والا کی غنایات

اس علاج کے ابتدائی ایام میں (۲۱ جمادی الاولیٰ سنہ ۱۳۹۰ھ کو) احقر نے اپنا حال لکھ کر  
 بھیجا تو اس میں یہ درخواست بھی پیش کی کہ :-

”دوا کا (خالی) پیکیٹ ارسال خدمت ہے، اس دوا کی قیمت ادا

کرنا اس روز بھول گیا تھا، آج ارسال خدمت ہے، جوئی دوا تجویز فرمائیں

اُسکی قیمت بھی مرسل ہے“

حضرت والا نے نہایت شفقت سے جواب میں تحریر فرمایا کہ :-

”قیمت کا خیال نہ کریں، میرے ذمہ بھی کچھ حقوق ہیں، میرا بھی دل

چاہتا ہے کہ کوئی خدمت کر سکوں، اس میں برگز کوئی تکلف نہیں ہے، آپ

انشرار کے ساتھ معاملہ جاری رکھیں، اللہ تعالیٰ صحت کاملہ عطا فرمائیں۔

انشاء اللہ تعالیٰ یہ کالیف رفع ہو جائیں گی“

اس کے بعد حضرت والا کی وفات تک بار بار اس ناچیز کو طویل اور شدید بیماریوں میں حضرت کا  
 علاج مہینوں کرنا پڑا، احقر کی والدہ محترمہ اور بیوی بچوں کا علاج بھی بجزرت ہوتا رہا، لیکن حضرت  
 والا نے کبھی دوا کی قیمت بھی لینا منظور نہ فرمایا۔ ایک دو بار احقر نے حضرت کے خادم (کمپوٹر صاحب) کو  
 قیمت دینے کی کوشش کی تو انہوں نے صاف فرمادیا کہ حضرت کی اجازت نہیں ہے۔ اس کے بعد تو مجھے  
 بھی کچھ عرض کرنے کی کبھی جرأت نہ ہوئی۔

## حضرت کا گرامی نامہ

حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ، اور حضرت ڈاکٹر صاحب کے درمیان بھی گا ہے گا ہے  
 خط و کتابت ہوتی تھی حضرت والد صاحب کی، اور ناچیز کی اس بیماری کے زمانے میں حضرت  
 ڈاکٹر صاحب نے انکو خط لکھا جس کا ابتدائی نصف حصہ یہ ہے :

منطقی و محترمی مدظلکم العالی۔

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

”جناب والا کی ناسازی طبع معلوم ہو کر، اور محمد رفیع صاحب سلمہ کی تکالیف معلوم ہو کر دل کو نہایت رنج و قلق ہے۔ دل سے دعا گو ہوں، اللہ تعالیٰ جلد از جلد دونوں صاحبوں کو صحت و راحت عطا فرمادیں۔ محمد رفیع صاحب سلمہ کے لئے دعا تجویز کر کے بھیج رہا ہوں، خدا کرے نفع ہو۔ پھر جلد حالات سے مطلع کیا جائے۔“  
احقر عبدالحی

## حضرت والد صاحب کا مکتوب گرامی بنام حضرت عارفیؒ

حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے خطوط بنام حضرت ڈاکٹر صاحبؒ، اگر تلاش کئے جائیں تو بہت ہونگے، اس وقت میرے سامنے صرف ایک گرامی نام ہے۔ احقر نے اپنی اسی علالت کے زمانے میں حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کو ایک عریضہ ۲۸ جمادی الاولیٰ ۱۳۹۰ھ (۲ اگست ۱۹۷۱ء) کو لکھا تھا والد صاحبؒ نے اسکی پشت پر اپنا یہ خط تحریر فرمادیا تھا، حسب معمول میرا وہ خط جب حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے پاس سے جوا واپس آیا تو والد صاحبؒ کی یہ تحریر بھی میرے پاس محفوظ ہو گئی، تبرکاً نقل کرتا ہوں:

مخدوم محترم ڈاکٹر عبدالحی صاحب دامت برکاتہم

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ!

”اللہ تعالیٰ نے آپ کی دعا اور دوا کو اثر دیا محمد رفیع سلمہ کی طبیعت اب سہولت پراگئی بخارا تر گیا۔“

یہ ناکارہ بھی اگرچہ بخار وغیرہ کی تکالیف سے اب عافیت میں ہے، مگر نواسیر کی سابقہ گٹھلی نے اس بیماری میں زور دیکھنا شروع کیا، اس کا علاج سابق جاری ہے، ضعف و نہایت بے حد ہے۔ کل بھائی شبیر علی صاحبؒ کے صاحبزادہ شیر علی کا کھل تھا۔

میں نے خاندانہ تھانہ بھون کے ناظم، اور حکیم الامت حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے بھتیجے، حضرت مولانا شبیر علی صاحبؒ جبکہ اس وقت انتقال ہو چکا تھا، پاپوش نگر کراچی کے قبرستان میں مزار ہے۔ حضرت تھانویؒ کے دیگر خلفائے طرہ والد ماجد بھی انکو ”بھائی جان“ کہتے تھے۔ رفیع۔

وہ بھی فیڈرل بی ایریا میں ————— طاقت ہمت کچھ نہ تھی مگر بھائی جان مرحوم کی تصویر سامنے آگئی، اس نے بے چین کر کے جانے پر مجبور کر دیا۔ نکلنے کے بعد اپنے صنف کا اندازہ ہوا کہ اسکا تحمل نہ تھا، مگر اللہ نے فضل کیا اس میں شرکت ہوگئی کچھ امید اس کی بھی تھی کہ شاید اس مجمع میں آپ کی بھی زیارت ہو جائے، مگر عندہ ہوگا۔ آج ولیمہ کی شرکت سے محضرت کر کے آگیا تھا۔ والسلام۔ محمد شفیع۔ اتوار۔

## حضرت کا ایک اور مکتوب گرامی بنام والد ماجد

اسی زمانے میں حضرت واللہ نے ایک اور گرامی نامہ، والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کے نام بھیجا، جو احقر کے پاس محفوظ رہ گیا ہے، تبرکاً اسے بھی نقل کرتا ہوں۔

»ممدومی ومغظمی وامت برکاتکم و مدظلکم

اسلام علیکم ورحمۃ اللہ تعالیٰ

آپ کی ناسازشی طبع کی اطلاع اجمالاً ہو چکی تھی۔ دعائے صحت و عافیت برابر جاری ہے۔ اللہ تعالیٰ قبول فرمادیں اور آپ کو قوت و صحت کے ساتھ ہم لوگوں کی صلاۃ و فلاح کی ہدایت کے لئے زندہ و سلامت رکھیں۔ آمین۔

میراجی خود چاہتا ہے کہ کسی وقت حاضر خدمت ہو کر شرف و طمانیت قلب حاصل کر دوں۔ لیکن مختلف معذورات میں مبتلا ہوں۔

محمد رفیع صاحب سبزہ کا حال کا پرچہ بغور مطالعہ کر کے دوا تجویز کر دی ہے انشاء اللہ تعالیٰ سکالیف رفع ہو جائیں گی۔

حالات برابر لکھتے رہیں اور دوا منگواتے رہیں۔

دعا و صحت کاملہ بھی کرتا رہتا ہوں۔

احقر

محمد عبدالحی عفی عنہ





احقر کی صحت جب ذرا بہتر ہوئی تو جمعہ کی مجلس میں حاضری بحمد اللہ پھر شروع ہو گئی، لیکن اس زمانے میں حضرت کی آنکھوں کے دو آپریشن ہوئے، جن میں حضرت کو کافی عرصہ سخت تکلیف پہنچائی۔ اس زمانے میں آنکھوں کے آپریشن اتنے آسان نہ تھے، جتنے اب ہو گئے ہیں۔ مجلس بعد عرصہ موقوف رہنے کے بعد دوبارہ شروع ہوئی تو خدام کی جان میں جان آئی ہے

کار فرما ہے ابھی تک جذبہ پیرمخاں  
مستی زنداں وہی ہے، اگر مٹی محفل وہی (حضرت عارفیؒ)

لیکن یہ ناکارہ اپنے امراض و عوارض، اور دارالعلوم کے مشاغل کے باعث کم ہی حاضر ہوتا تھا، جس سے ندامت کے ساتھ یہ خوف بھی رہتا ہے کہ کہیں حضرت ناراض نہ ہو جائیں اور تے ڈرتے ہیں۔ ایک عرضیہ ۲۰ ذی الحجہ ۱۳۹۰ھ کو بذریعہ ڈاک روانہ کیا، جواب میں یقین تھا کہ میری نالائقی پر ڈانٹ پڑے گی۔ طرح طرح کے اندیشے پریشان کر رہے تھے، لیکن جواب آیا تو سارے اندیشے کافور ہو گئے، وہی لطف و کرم، وہی حوصلہ افزائی، وہی مریبانہ شفقت، دور دور بھی ادنیٰ ناگواری کا نام و نشان نہ تھا۔

مرے اک اک قدم پر منزل مقصود قرباں ہے  
ملا بے خوبی قسمت سے ایسا رہنا مجھ کو (حضرت عارفیؒ)

## مشفقانہ تربیت اور مکتوب گرامی

حضرت کی حکیمانہ اور مشفقانہ تربیت کا بیان مجھ جیسے طفل مکتب سے کیا ہو گا، اپنا وہ عرضیہ اور سامنے کے کالم میں حضرت کے جوابی ارشادات بعینہ نقل کرتا ہوں، جس سے آپ کی حکیمانہ اور آسان تعلیم و تربیت کی ایک ہلکی سی جھلک سامنے آ سکے گی۔

از احقر محمد رفیع عثمانی غفرلہ

دارالعلوم کلچر ۱۳۹۰ھ

مخدومی و کرمی، مطاعی و سیدی، جناب حضرت  
ڈاکٹر صاحب۔ اٹال اللہ ظلمک المیمون علینا

وعلیٰ سائر المسلمین - السلام علیکم ورحمة  
اللہ وبرکاتہ۔

وعلیکم السلام ورحمة اللہ وبرکاتہ،

اللہ تعالیٰ سے دُعا ہے کہ حضرت والا کو صحت کاملہ  
عاجلہ مستمرہ عطا فرمائے۔

احقر کی صحت بحمد اللہ اب بہتر ہے، لیکن کمر کی  
تکلیف بالکل ختم نہیں ہوئی۔ اللہ تعالیٰ سے اُمید ہے کہ  
حضرت والا کی دعا و توجہ سے یہ باقی ماندہ تکلیف بھی  
ختم ہو جائے گی۔

حضرت والا جب ہسپتال میں تھے، دو بار احقر  
حضرت والد صاحب کی صحت میں ہسپتال حاضر ہوا  
دوسری حاضری کے وقت حضرت کا دوبارہ آپریشن ہوا  
تھا اور حضرت والا سخت تکلیف اٹھانے کے بعد ذرا سو  
گئے تھے اس کے بعد پھر زیارت سے فیض یاب نہ ہو سکا  
لیکن حضرت والا کی تکلیف سے دل بہت بے چین رہا، اور  
اللہ رب العالمین سے حضرت کی صحت کی دعا کرتا رہا نیز  
بالواسطہ بحمد اللہ صحت کا حال معلوم کرتا رہا، فون کرنے کی  
ہمت اس لئے کم ہوتی ہے کہ کہیں حضرت کو تکلیف نہ ہو۔  
چند بار کوشش کی تو سوء اتفاق سے لائن نہ مل سکی  
کے دن نماز کے فوراً بعد حاضر ہوا تھا، آج غائب مکان پر  
تشریف فرما نہ تھے۔

جزاکم اللہ تعالیٰ

حضرت کے ارشاد فرمودہ معنوت میں سے تلاوتِ  
قرآن کریم اور تینوں تسبیحیں تو بحمد اللہ اکثر پابندی سے  
ادا ہو جاتے ہیں، مگر اوقات کی بد نظمی کے باعث مناجات

جس قدر آسانی سے دوام ہو سکے اسکا  
معمول مقرر کر لیں

اکثر ناغہ ہو جاتی ہے

صرف ایک صفحہ پڑھ لیا کریں۔

اب نظام الاوقات از سر نو ترتیب دیا ہے انشاء اللہ

حضرت کی دعا و توجہ سے کامیابی کی قوی امید ہے۔

حضرت والا! ایک الجھن شدت سے محسوس ہو رہی

ہے کہ ایک سال پہلے تک توجہ کے لئے احقر شہر حاضر

ہوا کرتا تھا، گاڑی کا انتظام مسجد کی طرف سے تھا، تو

حضرت والا کی مہارک مجلس میں حاضری کی بھی کچھ توفیق

ہو جاتی تھی، مگر اب ایک سال سے حضرت والد صاحب

کے حکم سے اس مسجد کی بجائے دارالعلوم کی مسجد میں نماز

جمعہ، اور اس سے قبل بیان کا پابند ہو گیا ہوں۔

یہ بہت انسب ہے

جمعہ کے بعد یہاں گاڑی نہیں رہتی، بس سے حاضر

ہوں تو مغرب تک واپسی ممکن نہیں، اور مغرب کے فوراً

بعد دارالافتار میں حاضری ضروری ہوتی ہے۔

جمعہ کے علاوہ باقی آیام میں عصر اور مغرب کے

درمیانی وقت کے علاوہ تمام اوقات دارالعلوم کے لئے

معین کر دیئے گئے ہیں، اس طرح حاضری کے شرف سے

اکثر محرومی رہتی ہے، جس کے باعث افسردگی قلب

کے علاوہ ندامت بھی محسوس کرتا ہوں، صرف ایک چیز

سے کچھ اطمینان محسوس ہوتا ہے کہ اس محرومی کے باوجود

بھمد اللہ حضرت والا سے قلبی لگاؤ اور عقیدت میں

ترقی ہو رہی ہے۔ سوچتا ہوں کہ پابندی سے حاضری

ہوتی تو اور ترقی نصیب ہوتی۔ اس سال دارالعلوم کے

کاموں میں اضافہ اس لئے زیادہ ہو گیا ہے کہ احقر کی

آپ کے حالات و شغل و طلب طریق

اور دینی تعلق معلوم ہو کر خوش ہوئی۔ بس

اسی طرح نظام الاوقات مقرر کر لیجئے



کہ اپنے وقت پر سب کام ہوتے رہیں۔  
مجلس میں آنے کے لئے صرف ایک ماہ میں  
ایک بار بھی ہو جائے تو غنیمت ہے،  
اس کی تلافی کثرت و باضابطہ مکاتبت  
سے ہو جاتی ہے جس میں اپنے ترودات  
و اشکات و امراض باطنی کا معاملہ پیش نظر  
ہو۔

تحفیف کی ہرگز ضرورت نہیں ہے، بلکہ  
یہ مشاغل دینیہ بہر صورت اہم اور نافع  
ہیں۔ اللہ تعالیٰ آپ کی نصرت فرمادیں۔  
صحیح مقاصد کے لئے دل سے دعا  
کرتا ہوں۔

نااہلی کے باوجود حضرت والد صاحب مدظلہم نے اس ناچیز  
کو قوتی کے کام میں بھی لگا لیا ہے، مجھے قوتی کا کام سیکھنے کا  
عزمہ سے اشتیاق تھا، یہ موقع غنیمت معلوم ہوا کہ حضرت  
والد صاحب مدظلہم کی نگرانی میں یہ کام ہو جائے گا۔ مگر  
بڑھی ہوئی مصروفیت اختیاری ہے، اگر میں حضرت والد  
صاحب سے عرض کروں تو کاموں میں تخفیف ہو سکتی ہے،  
پھر مجلس میں حاضری کی بھی اکم از کم ہفتہ میں ایک  
بار سبیل نکل آئے گی۔ اب مشورہ طلب امر  
یہ ہے کہ اپنے ان کاموں میں تخفیف کی درخواست کروں،  
یا نہیں؟ ویسا اس کثرتِ کار سے بھرا اللہ صحت پر کوئی بُرا  
اثر نہیں پڑا، اور نہ آلتا ہٹ محسوس ہوئی، بلکہ دلچسپی  
سے سب کام ہو رہے ہیں۔ صرف مجلس سے محرومی کا قلق  
ہے۔ والسلام۔ احقر ناکارہ محمد رفیع عثمان

۹۰/۲/۲۰

## لفظی رعایتیں

حضرت کاشغری دادی ذوقِ اعلیٰ معیار پر تھا، مجموعہ کلام ”صہبائے سخن“ کے نام سے چھپ  
چکا ہے جس پر نیاز فتحپوری نے بھی جائزہ تبصرہ لکھا ہے، اب دوسرا ایڈیشن زیر طبع ہے۔ روزمرہ کی گفتگو  
بھی فصاحت و بلاغت کے اعلیٰ معیار کی ہوتی تھی، منتخب الفاظ، فصیح و فصلائی ترکیبیں، لفظی رعایتیں،  
اور اخلاص و محبت میں ڈوبا ہوا اسلوب بیان، دل میں اترا چلا جاتا تھا مجھے بزرگوں کے سامنے بولنے کا  
سلیقہ تھا نہ لکھنے کا، ایک مرتبہ میں نے اپنا عزیزینہ لفظی میں دستی پیش کیا، جس پر میں نے لکھا تھا:  
”بخدمت گرامی قدر مطارع معظم سیدی و شیخی حضرت الخ“

اس پر نظر پڑتے ہی حضرت مسکرائے، اور معنی خیز تبسم کے ساتھ فرمایا :

”شیخی؟ بھئی شیخی تو اچھی چیز نہیں ہوتی“

”شیخی“ کے جو معنی اردو میں مستعمل ہیں، میرا ذہن اس طرف بالکل زگیا تھا، حضرت نے

لطیف انداز میں توجہ دلائی تو شرم سے پانی پانی ہو گیا۔

تعلق بیعت قائم ہو جانے کے بعد ایک سال سے کچھ زیادہ عرصے تک ناچیز نے جو خطوط حضرت

کی خدمت میں بھیجے، ان میں القاب و آداب کبھی کبھی اس طرح لکھا کرتا تھا،

”مخدومی و مطاعی، سیدی و سندی حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحب

سبحان اللہ بفیوضہ و برکاتہ“

۲۹ ربیع الثانی ۱۳۵۹ھ کے عریضے میں بھی یہی الفاظ لکھے تھے، حضرت نے لفظ ”ڈاکٹر عبدالحی

صاحب“ پر خط ڈال کر تحریر فرمایا کہ :

”یہ الفاظ قابل حذف ہیں۔“

اشارہ اس طرف تھا کہ جس طرح بیٹا اپنے باپ کا نام خط میں نہیں لکھتا، اسی طرح تمہیں یہاں کرنا

چاہیئے۔

## خصوصی مجلس

طرح طرح کے عوارض اور مشکلات کے باعث جن کا کچھ ذکر پہلے بھی آیا ہے، ہم دونوں بھائیوں کو

جمعہ کی مجلس میں پابندی سے حاضری کا موقع نہ ملتا تھا، خصوصاً مجھے تو اور بھی کم موقع ملتا تھا، اسی لئے

حضرت نے پہلے مکتوب گرامی میں احقر کو تحریر فرمادیا تھا کہ مہینہ میں ایک بار بھی حاضری ہو جایا کرے

تو غنیمت ہے، لیکن حضرت کی بے پایاں توجہ و شفقت جو اللہ تعالیٰ نے محض اپنے فضل و کرم سے

عطا فرمائی اس کا شکر کس زبان سے ادا کیا جائے کہ حضرت والا نے ہم دونوں بھائیوں کے لئے ایک

خصوصی مجلس جمعرات کے دن کی مقرر فرمادی، حالانکہ اس زمانے میں حضرت کی علالت کا سلسلہ بھی

جاری تھا، آنکھ کے آپریشن کے اثرات بھی چل رہے تھے، اس مجلس میں اس وقت صرف ہم دونوں

بھائی ہی ہوتے تھے، حضرت کی رہائش پاپوش نگر سے شمالی ناظم آباد کے مکان میں منتقل ہو چکی تھی۔

ضعف و علالت کے باوجود حضرت اس مجلس کا نہایت بشاشت و انشراح کے ساتھ اہتمام فرماتے تھے۔

حضرت کی اس خصوصی عنایت و شفقت کی بدولت بحمد اللہ ہر ہفتہ حاضری ہونے لگی، والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ اس پر نظر رکھتے تھے کہ ہم حضرت کی خدمت میں پابندی سے حاضر ہوتے ہیں یا نہیں۔ اس زمانے میں ہماری والد صاحب مرحومہ کی علالت انتہائی تشویشناک صورت اختیار کر چکی تھی حضرت والد صاحبؒ بھی علیل تھے جب ہم حجرات کو حضرت کی خدمت میں حاضری کے لئے شہر جلتے تو والدہ صاحبہ مرحومہ کے معالج ڈاکٹر کے پاس بھی انکے معالجہ کے سلسلہ میں جانا ہوتا تھا، کیونکہ گاڑی دارالعلوم کی تھی، جو ہفتہ میں صرف ایک ہی دن مل سکتی تھی، اور مشکل یہ تھی کہ معالج کے ملنے کا وقت بھی تقریباً وہی تھا جو مجلس کا تھا، اس لئے بار بار اس مجلس میں بھی حاضری تاخیر سے ہوئی۔ حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کو علم ہوا تو فرمایا کہ :-

حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے صرف تمہارے لئے یہ وقت فارغ کیلئے، اب حاضری میں تاخیر سے انکو تکلیف پہنچے گی۔ جب کسی قوی عذر کے باعث تاخیر کا اندیشہ ہو تو پہلے سے فون پر اطلاع کر دیا کرو، تاکہ وہ منتظر نہ رہیں۔ اس طریق میں مُرید کی طرف سے مُرشد کو ادنیٰ تکلیف پہنچنا مُرید کے لئے سخت مضرت ہے۔“  
موجودہ صورتحال سے پہلے ہی دل سخت پریشان تھا، اب اور بھی گھبراہٹ رہنے لگی، حل کچھ سمجھ میں نہ آتا تھا۔ یہ عرصہ سخت پریشانی اور مذمت میں گذرا۔

## تواضع و شفقت

لیکن حضرت کی شفقت کا یہ حال تھا کہ عرصہ تک اشارۃً بھی شکوہ نہ فرمایا، اس کے برعکس جب بھی حاضری ہوتی، اس قسم کے ارشادات فرماتے :-

”بھئی آپ کے آجانے سے ہمارا جی بہت خوش ہوتا ہے۔“

”آپ حضرات کو بہت دور سے آنا پڑتا ہے یہ بھی بڑا مجاہدہ ہے۔“

”بھئی آپ حضرات کا ہمیں انتظار رہتا ہے جب موقع ملا کر آجایا کریں۔“

”وما شأنا لہ آپ حضرات میں طلب ہے، طلب بڑی چیز ہے، اس سے ہر مشکل آسان ہو جاتی ہے۔“

تواضع و شفقت کا اندازہ فرمائیے کہ یہ جملہ بھی اکثر و بیشتر فرمایا کرتے تھے کہ :-

”بھئی آپ حضرات کے آجانے سے ہمیں بڑی تقویت ہوتی ہے۔“

حضرت یہ ارشادات فرماتے، اور ہم اندر ہی اندر شرم سے پانی پانی ہو جاتے، کافی عرصہ یہی صورت رہی تو ایک دن حضرت کو شکایت کرنی ہی پڑی، حضرت نے یہ شکایت بہت لطیف انداز میں اشارۃً فرمائی، مگر دل سخت بے چین ہو گیا، ادھر اس واقعہ کے تین ہی روز بعد احقر کو کمر کی شدید تکلیف نے پھر صاحبِ فراش کر دیا۔ اس بے چینی کے عالم میں احقر نے ایک عریضہ کسی کے ہاتھ بھیجا، جس میں لکھا تھا کہ :-

”حضرت والا یہ پورا ہفتہ بہت بے چینی، افسردگی، اور کسی قدر یاس کے عالم میں گذرا، یہ احساس بار بار پریشان کر رہا ہے کہ حضرت والا نے محض احسان و کرم سے احقر پر جو شفقانہ نظر فرمائی، اور علالت کے باوجود طویل نشست کو خلافِ معمول برداشت فرمایا، اس سیاہ کار غلام نے اپنے عمل سے اس کی کما حقہ قدر نہ کی، دل میں اگرچہ اس احسانِ عظیم کا غیر معمولی شدت کے ساتھ احساس تھا، لیکن عمل سے مسلسل سستی اور لا پرواہی چپکتی رہی، حتیٰ کہ حضرت والا کو اشارۃً اس کا اظہار فرمانا پڑا۔ حضرت میں بہت پشیمان اور بے چین ہوں خدا را اپنے غلام کے اس کفرانِ نعمت سے درگزر فرمادیں، ورنہ اپنے دین و دنیا کی تباہی سامنے نظر آرہی تھی۔“

حضرتؑ نے تحریر فرمایا کہ :-

”ابتداء میں ایسے ہی خیالات و احساسات ہوتے ہیں، اور یہ رفتہ رفتہ معین و معاون ہو جاتے ہیں اہتمامِ عمل کے لئے، اور تلافیِ مافات کے لئے۔“

میراجی چاہتا ہے کہ نوجوان اور فہیم طالبانِ طریقی کو حقیقتِ طریقی سے جس قدر ممکن ہو آگاہ کر رہوں، تاکہ انکی طلب اور محنت میں حوصلہ افزائی ہو، وما توفیق الا باللہ العظیم



احقر نے آگے لکھا تھا کہ :-

” حضرت والا میری طبیعت میں سستی بہت ہے، اپنی نظر میں محنت بہت کرتا ہوں، لیکن ہر کام دیر میں ہوتا ہے، اس مصیبت سے نجات کی بھی دعا فرمائیے۔“

حضرت نے تحریر فرمایا :-

” جب اس کا احساس ہے کہ یہ بھی ایک مصیبت ہے، تو انشاء اللہ تعالیٰ اس سے بھی رفتہ رفتہ نجات حاصل ہو جائے گی۔“

آگے ناچیز نے لکھا تھا کہ :-

” حضرت! عرصہ دراز سے بار بار خط و کتابت کا سلسلہ باقاعدگی سے شروع کرنے کا ارادہ کرتا ہوں، مگر کچھ سستی اور مصروفیات کا ہجوم مانع بنتا ہے۔“

حضرت والا نے تحریر فرمایا :-

” مکاتبت کے لئے بھی اس کی اہمیت کا ذہن میں ہونا ضروری ہے، پھر کسی دن مقررہ کے ایک وقت مقررہ پر صرف دریافتِ خیریت کے لئے چند سطریں لکھنے کا معمول کر لیں، انشاء اللہ تعالیٰ پھر مضامین حالات کے، خود بخود عود کرنے لگتے ہیں۔“

احقر نے آگے لکھا تھا :-

” ایک بڑا سبب اور ہے، اور وہ یہ خیال ہے کہ سلوک، طریقت اور اصلاحِ باطن میں لگنا تو ان خوش نصیب لوگوں کا کام ہے جو شریعت کے اعمالِ ظاہرہ کے پابند ہو چکے ہوں، لیکن اپنا حال یہ ہے کہ شریعت کے وہ احکام و فرائض اور منہیات جن کا ایک ادنیٰ مسلمان بھی پابند ہوتا ہے، انہی میں بار بار بھرت تامل ہو جاتا ہے، نماز فجر کا بھرت تضا ہو جانا، اور دیگر منہیات، اور بعض اوقات صریح کبار کا بھی ارتکاب ہو جاتا ہے۔“

حضرت نے تحریر فرمایا کہ :-

”ادامرو نواہی شرعیہ پر کیا حق عمل، اصل مقصود ہے، اور یہ مقصود حاصل ہوتا ہے اصلاحِ باطن ہی کے اہتمام سے“

احقر نے آگے لکھا تھا کہ :-

”ان حالات میں حضرت کی خدمت میں احوالِ باطنی کیا لکھوں جب ظاہر

ہی کا یہ حال ہے“

حضرت والا نے تحریر فرمایا :-

”یہ جو کچھ لکھا ہے، اسی کا نام احوالِ باطنی ہے“

ناچیز نے آگے لکھا تھا :-

”گناہوں سے توبہ کرتا ہوں، پھر ہو جاتے ہیں، جس کے باعث خود سے نفرت

ہوتی جا رہی ہے، ایسا محسوس ہوتا ہے کہ اذنی سے ادنیٰ مسلمان مجھ سے بہت

اچھا ہے، اور شاید سب سے زیادہ مجرم میں ہی ہوں۔

حضرت نے تحریر فرمایا :-

”عمر بھر یہی ہوتا رہے گا، اور عمر بھر اس کا تدارک کرنا ہوگا، اور عمر بھر یہی

احساس قائم رکھنا ہوگا۔ اور اسی پر مدار کامیابی ہے“

احقر نے آگے لکھا تھا کہ :-

”حضرت یہ خیال اکثر ہوتا ہے کہ اگر اللہ تعالیٰ نے مغفرت فرما ہی دی تو شاید

درجاتِ عالیہ میرے مقدر میں نہیں ورنہ اعمال کا یہ حال یہ ہوتا“

حضرت نے تحریر فرمایا :-

”یہ وہم بھی قابلِ ترک ہے“

اسی خط میں احقر نے لکھا تھا کہ :-

”الحمد للہ اب فارغِ وقت میں مزید ذکر کو دل چاہنے لگا ہے، یہ حضرت

والا ہی کا فیض ہے، چنانچہ ایسے اوقات میں بقدرِ گنجائش ان اذکار میں سے کچھ

پڑھ لیتا ہوں، جو آنجناب نے وقتاً فوقتاً ارشاد فرمائے ہیں۔“

حضرت نے تحریر فرمایا:-

”رفتہ رفتہ اضافہ بقدر وسعت وقت، اور بقدر تحمل صحت کرنا چاہیئے۔“

آگے ناچیز نے لکھا تھا:-

”حضرت والا! تین روزے کم میں پھر شدید تکلیف شروع ہو گئی، صاحب

فرش ہوں، کررٹ لینا بھی مشکل ہے۔“

حضرت نے تحریر فرمایا:-

”اس اطلاع سے قلق ہوا۔ اللہ تعالیٰ جلد صحت کاملہ، اور عافیت کاملہ عطا

فرمادیں۔“

آگے احقر نے لکھا تھا کہ:-

”بار بار خیال ہوتا ہے کہ جمعرات تک اگر یہی حال رہا تو حاضری کے

محروم رہوں گا۔ فوراً لکھا ہے کہ کہیں یہ تکلیف کی شدت اس کفرانِ نعمت کا وبال

تو نہیں ہے جو میں جمعرات کی حاضری میں کوتاہی کی صورت میں مسلسل کرتا رہا۔“

حضرت نے تحریر فرمایا:-

”ایسا وہم ہرگز نہ کریں، انشاء اللہ تعالیٰ جلد صحت ہو جائے گی۔“

آخر میں احقر نے لکھا:-

”اللہ تعالیٰ معاف فرمائے۔ حضرت دعاء کی درخواست ہے۔“

حضرت نے حسب معمول تحریر فرمایا:-

”دل سے جمیع مقاصد حسنہ کے لئے دعا کرتا ہوں۔“

آخر میں میرے دستخط تھے جو صاف پڑھے نہ جاتے تھے۔ حضرت نے تنبیہ فرمائی کہ:-

”دستخط کے بجائے نام صاف لکھنا چاہیئے۔“

غرض میری مسلسل کوتاہیوں کے باوجود حضرت کے لطف و کرم میں اضافہ ہی ہوتا گیا۔ بلا مبالغہ تقریباً ہر ملاقات پر محسوس ہوتا تھا کہ حضرت کا التفات و کرم اور بڑھ گیا ہے۔

کار فرما ہے تری چشمِ کرم کی شوخی

ورنہ یہ جراتِ تقصیر، خطا کاروں میں؟ (حضرت عارفیؒ)

## پیر کی مجلس

جمرات کی یہ خصوصی مجلس ابتداءً بعد عصر ہوتی تھی، پھر کافی عرصہ تک بعدِ مغرب ہوتی رہی، پھر بدھ کو ہونے لگی۔ بالآخر پیر کا دن مقرر ہو گیا، اور آخر حیات تک تقریباً دس سال علم و عرفان کی یہ مبارک مجلس پیر ہی کو عصر سے مغرب تک ہوتی رہی۔ یہ مجلس ”خصوصی“ ضرور تھی، لیکن اس میں آنے سے کسی کو رد کا نہ جاتا تھا، جوں جوں اس خصوصی مجلس کی خبر حضرت کے پروانوں کو ہوتی گئی، اس میں بھی حاضری بڑھتی چلی گئی، آخر کے دس سال میں تو حاضرین کی کثرت کے باعث حضرت کو لاؤڈ اسپیکر استعمال کرنا پڑتا تھا۔ جمعہ کو عام مجلس ہوتی تھی، جس میں حاضرین کی تعداد دو خند ہوتی تھی۔ لاؤڈ اسپیکر کے ہارن زمانہ مکان میں بھی نصب کر دیئے جاتے تھے، کیونکہ دونوں مجلسوں میں خواتین بھی خاص تعداد میں بڑے شوق و ذوق سے حاضر ہوتی تھیں۔

پیر کی اس پر کیف مجلس کا کچھ حال ذکر کرنا چاہتا ہوں۔۔۔۔۔ لیکن سمجھ میں نہیں آ رہا کیا کہوں؟ کس طرح کہوں؟ قوتِ بیان کہاں سے لاؤں؟۔۔۔۔۔ کہہ بھی سکوں گا یا نہیں؟۔

## حضرت کی ایک غزل

اس کشمکشِ شوق میں یہ تائیدِ غیبی ہی ہے کہ حضرت والا کی ایک بڑی مترنم غزل سامنے آگئی، اسی کو تمہید بناتا ہوں، کیونکہ درحقیقت وہی اس بیان کے لئے حُدسی خواہ ہے، وہی میری موجودہ کشمکش کی ترجمان، اور اسی کا مقطع میری کشمکش کا اُمید افزا جواب ہے۔



کب تک آخریورش انکار کی باتیں کریں

آؤ اب کچھ دیر بزم یار کی باتیں کریں

اپنے دل کو اپنی خلوت کا بنا کر ہم نشیں

چپکے چپکے حسن و عشق یار کی باتیں کریں،

عشق کی رنگیں فضاؤں کے ترانے چھیڑ دیں

حسن کے پر کیف جلوہ زار کی باتیں کریں

بیچ و تاب غم کو دل سے محو کر دیں سر بسر

ہو کے بے خود چشم مست یار کی باتیں کریں

پہلے جان و دل میں بھر لیں مستی صہبائے شوق

پھر کسی لذت گفتار کی باتیں کریں

تمللا کر دل کی ہر خوابیدہ حسرت جاگ اٹھے

یوں کسی کی شوقی رفتار کی باتیں کریں

اضطراب شوق میں رنگ جنوں آنے لگا

کس طرح اب حسن عشوہ کار کی باتیں کریں؟

عادی و دارفتگی دل ہی جو چاہے کرے

ورنہ ہم اور اپنی جان زار کی باتیں کریں،

یہ ”دارفتگی“ حضرت والاؒ کا وہ مقام ”فنائیت“ تھا، جو انکی سہرا، اور حرکت و سکون

میں سمایا ہوا تھا، اسی کو وہ ہر کامیابی کی کلید، ہر مشکل کا علاج، اور طریقت کا حاصل قرار دیتے

تھے، یعنی خود کو ہیچ کر کے محض اللہ تعالیٰ پر نظر رکھنا، اور اپنے سب ارادے اس کے ارادے میں

فنا کر دینا۔ خود ہی فرماتے ہیں ۷

میں نے کر دی کشتی دل نذر گرداب فنا،

بحر غم میں اس سے بہتر دوسرا ساحل نہیں

## یہ قلم

جس قلم سے یہ صفحات لکھ رہا ہوں، یہ بھی حضرت والا ہی کا عطیہ ہے، جو مدت تک حضرت کے استعمال میں رہا، پھر وفات سے کچھ ہی عرصہ قبل اس ناکارہ غلام کو عنایت فرادیا تھا۔ یہ قلم بھی اگر اسی ”دار فنگی“ کی نذر ہو جائے تو زہے نصیب۔

## آدم برسر مطلب

پیر کی یہ خصوصی مجلس کیا تھی؟ اس کا اندازہ صرف وہی حضرات کر سکتے ہیں، جنکو اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے یہ دولت نصیب ہوئی۔ یہ علم و عرفان، عشق و محبت، رموز و طریقت، پند و موعظت، سوز و گداز، شعر و ادب، روایات و حکایات اور مزاح و طرافت کی ایسی پر کیف قوس قزح تھی کہ وہ عالم ہی کچھ اور نظر آتا تھا، اس پر حضرت والا کی شیریں بیانی، جیسے پھول جھڑ رہے ہوں، شفقت و مسرت کا یہ انداز کہ ایک ایک لفظ پیار و محبت کے رس میں ڈوبا ہوا، لہجہ ایسا اثر انگیز اور دھیمہ جیسے ابر رحمت کی ہلکی ہلکی بھجور پڑ رہی ہو۔ مجلس میں ہر ایک کا یہ حال ہوتا تھا کہ ۵ جہاں تک بھی نظر جاتی ہے جلوہ گاہ ہستی میں

محبت ہی محبت جلوہ گر معلوم ہوتی ہے، (حضرت عارفیؒ)

غرض ایک دلکش سماں تھا جس میں آنے والا سارے غم بھول جاتا تھا۔ اس کا انداز کیا تھا؟ خود ہی فرماتے ہیں کہ ۵

عارفی پیرِ مغانم "بادۂ غم سوز" داد

یافتم از کیف آں روح دگر جانِ دگر

حکیم الامت حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے حکیمانہ ملفوظات کی تشریح، اور مجددانہ معارف

کا بیان ایسے دلنشین انداز میں فرماتے کہ قلب کی حالت یکسر بدل جاتی تھی بلکہ قلب کی حالت تو مجلس کو جاتے ہوئے، راستہ ہی میں بدلنے لگتی تھی ۵

اس نے دیکھا دل کی جانب ایسے کچھ انداز سے

کائنات آرزو زیر و زبر ہونے لگی (حضرت عارفؒ)

اللہ تعالیٰ کی بے پایاں رحمتوں کا دھیان، عفو و مغفرت کی اُمیدیں، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے احسانات کا استحضار، ابتداء سنت کا دوق و شوق، اللہ تعالیٰ اور رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت، اپنے گناہوں پر ندامت، اصلاح کی پرامید فکر، جذبہ عمل، شوقِ ذکر، حقوق العباد اور آداب معاشرت کا اہتمام، اللہ تعالیٰ پر بھروسہ و اعتماد، تواضع و انکسار، شکر و قناعت، سکون و طمانینت۔ کیا کیا دولتیں تھی جو دل کو اس مجلس میں ملتی تھیں۔ خود ہی فرماتے ہیں کہ یہ

جسے پینا ہوا آنکھوں سے وہ میری بزم میں آئے

مراد دل چشم مست ناز ساقی کا ہے مے خانہ

کسی کا ذکر ہے اور اہلِ محفل مست و بے خود ہیں

بہ ظاہر یاں نہ ساقی ہے، نہ صہبایہ نہ پیماں

پیر کی یہ مجلس محمد اللہ رفیعہ رفیعہ جز و زندگی بنتی چلی گئی، شب و روز کے تمام انکار و مشاغل پر پھٹی مجلس کا کیف و سرور، اور اگلی مجلس کا شوق و اہتمام سایہ فگن رہنے لگا۔ بہ قول حضرت عارفؒ

وہی جلوے جو تھے آنکھوں سے پنہاں

انہی جلووں میں اب مستور ہیں ہم

آخر کے یہ دس سال محمد اللہ اس طرح گزرے کہ کراچی میں رہتے ہوئے پیر کی شام حضرت ہی کے ساتھ گزرتی تھی، پیر کی شام ہماری زندگی کی ایسی بنیاد تھی کہ فرائض و واجبات کے علاوہ تمام شاغل اور نظم اوقات اسکے تابع تھے۔ حضرت والا بھی اس مجلس کی ایسی پابندی فرماتے تھے کہ سخت بجا اور تکلیف میں بھی تاغذ نہ فرماتے تھے۔ اور اس وقت کوئی اور مصروفیت ہرگز قبول نہ فرماتے تھے۔

حضرت والد ماجدؒ کا ملفوظ

حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ نے احقر سے کئی بار فرمایا تھا کہ:

”ریوے جب اپنا ٹائم ٹیل مرتب کرتی ہے، تو سب سے پہلے وہ مین لائن  
کی ایکسپریس اور میل گاڑیوں کے اوقات مقرر کرتی ہے۔ اس کے تابع  
پسینجر ٹرینوں اور برانچ لائنوں کے اوقات مقرر کئے جاتے ہیں۔ اسی  
طرح ہمیں بھی منزل مقصود تک پہنچنے کے لئے اپنی زندگی کی ایک ”مین لائن“  
مقرر کر کے اسکا ایسا مستحکم نظام الاوقات مقرر کرنا ہوگا کہ باقی تمام مشاغل  
و اعمال اسکے تابع ہو جائیں۔“

حسرت ہوتی ہے کہ حضرت والد ماجدؒ کی حیات میں تو یہ نہ ہو سکا۔ اب وہ دیکھتے تو انکو  
بہت اطمینان ہوتا ہے

میں ہوں جس عالم میں اس عالم کا اب کیا رنگ ہے  
کاش بھولے سے کبھی تم بھی تو آکر دیکھتے ، (حضرت عارفیؒ)  
”ماہم محمد اللہ حضرت عارفیؒ قدس اللہ سرہ کی عنایات سے اس حد تک یہ دولت نصیب  
ہو گئی کہ میری یہ مجلس ہماری ”مین لائن“ کے نظام الاوقات کا محور بن گئی۔ بقول حضرت عارفیؒ  
اب نہ منزل کی طلب ہے، اور نہ منزل کا پتہ۔  
ایک دھن ہے، اور اسی دھن میں چلا جاتا ہوں

## ”پیر“ کا دن

یہ ”پیر“، کالفظ، دن کا نام تو ہے ہی، اردو میں شیخ و مرشد کو بھی ”پیر“ کہتے ہیں،  
اردو میں اگرچہ یہ لفظ پیشہ و دستجاہ نشینوں، اور نام نہاد پیروں کی وجہ سے مبتذل سا ہو گیا ہے،  
لیکن کبھی کبھی مبتذل کلمہ بھی لطف پیدا کر دیتا ہے۔ ایک آوار کو ہم حضرت م کے  
دولت خانے پر حضرت کی خدمت میں بیٹھے تھے، ایک صاحب ہمیں اپنے مدرسہ یا مسجد وغیرہ کے  
سلسلہ میں، یا کسی اور محلے میں مشورہ کے لئے اپنے یہاں لے جانا چاہتے تھے، حضرت کی بھی خواہش  
تھی کہ وعدہ کر لیا جائے۔ ان صاحب نے بھی تجویز پیش کی کہ کل شام کو بعد عصر چلیں، حضرت نے  
بھی تائید فرمائی۔ — شاید خیال نہ رہا تھا کہ کل پیر ہے — میں نے معنی خیز انداز



میں مسکرا کر حضرتؒ سے عرض کیا کہ ”حضرت کل تو ”پیر“ کا دن ہے“ حضرت مخطوط ہوئے اور فرمایا کہ ”ہاں بھائی کل تو ”پیر“ کا دن کا ہے“ ————— پھر فرمایا کوئی اور دن رکھ لو۔

## درد کا درماں

مجھے تو یہ صورت بکثرت پیش آئی، اور بھی کئی حضرات نے بیان کیا کہ ہم کوئی سوال یا الجھن لے کر حضرت کی مجلس میں حاضر ہوتے تو عموماً ہمارے کسی سوال کے بغیر ہی حضرت از خود وہ مسئلہ چھیڑ دیتے، اور دوران گفتگو اس پر ایسی سیر حاصل بحث فرمادیتے کہ دل کو ہوجاتی، حضرت والا اپنے مُرشد کی مجلس کا بھی یہی حال بیان فرمایا کرتے تھے حضرت والا اس کا راز بتایا کہ :-

”اس کی وجہ یہ نہیں کہ بولنے والے کو حاضرین کے دل کا حال معلوم ہوتا ہے بلکہ وجہ یہ ہے کہ جب طالب، اللہ تعالیٰ کی سچی طلب لے کر استاذ یا مرشد کے پاس جاتا ہے تو اللہ تعالیٰ کی خاص رحمت اس کی طرف متوجہ ہوجاتی ہے۔ اور وہی اُستاذ و مُرشد سے ایسی بات کہلوادیتے ہیں جو طالب کی ضرورت اور فائدے کی ہوتی ہے اگرچہ خود استاذ و مرشد کو یہ معلوم نہیں ہوتا کہ میں نے یہ بات کیوں اور کس کی طلب پر کہی ہے۔“

جب تک طاقت نے ساتھ دیا، حضرت والا پیر کو بھی عصر کی نماز محلے کے مسجد ”النور“ پڑھتے رہے، مجلس میں آنے والے حضرات کی بھی یہی کوشش ہوتی تھی کہ نماز وہیں پڑھیں۔ نما بعد حضرت اور سب خدام دولت خانے پر جمع ہو جاتے۔ گرمیوں میں یہ مجلس دولت خانے وسیع سبزہ زار پر ہوتی، اور موسم سرما میں مردانہ ہال میں۔ حاضرین کا رخ قبلہ کی طرف

لے اُحقر نے اس پر سے مضمون میں جہاں بھی حضرت والا کا یا حضرت والد ماجدؒ کا کوئی مخطوط کیا ہے اپنی یادداشت سے لکھا ہے، بعینہ الفاظ یاد نہیں، مفہوم حتی الامکان ٹھیک ٹھیک نقل کر۔ کوشش کی ہے۔ رفیع۔

اور حضرت کا رخ حاضرین کی طرف ہوتا تھا، حضرت ہمیشہ اسی سطح پر بیٹھتے جس پر سب حاضرین ہوتے تھے، چونکہ پر بیٹھنا پسند نہ فرماتے تھے۔ کسی قسم کا کوئی تکیہ بھی پیچھے نہ ہوتا تھا، علالت اور شدید ضعف و کان کی حالت میں بارہا خدام نے درخواست بھی کی، مگر کبھی مجلس میں تکیہ لگانا یا وہیں۔ سامنے فارمیکا کی ایک چوکی نما میز پر ہانگ رہتا تھا، جبکہ ارد گرد کئی کیسٹ ریکارڈر آپ کے ایک ایک حرف کو ٹیپ کرتے رہتے تھے، ان میں سے ایک پچھوٹا نفیس کیسٹ ریکارڈر خود حضرت کا تھا، باقی حاضرین کے ہوتے تھے، انہی کیسٹوں کی مدد سے حضرت کے ملفوظات کے متعدد چھوٹے بڑے مجموعے اب تک تیار ہو کر شائع ہو چکے ہیں۔

حضرت پان کھاتے تھے، لیکن اس میں تمباکو کے بجائے مختلف خوشبوئیں، اور خاص طور سے ایک خوشبودار سالہ استعمال فرماتے تھے، جو سفوف کی طرح کا تھا، مجلس کے دوران ایک صاف ستھری تعالیٰ میں پان اور اسکے تمام متعلقات پاس رکھے رہتے۔ سامنے میز کے نیچے ایک چمکدار اسٹین لیس سٹیل کا ڈھکن دار خوبصورت اکالداں رکھا رہتا۔ اس کے کسی حصے پر احقر نے کبھی کسی قسم کا نشان یا دھبہ نہیں دیکھا۔ حضرت کے مزاج میں بڑی نفاست اور لطافت تھی، کپڑے بھی ہمیشہ صاف اور اُچلے ہوتے تھے، خوشبو بڑی متوازن استعمال فرماتے تھے، جو قریب آنے والے ہی کو محسوس ہوتی تھی۔ حضرت کے دیرینہ نیازمند اور خلیفہ مجاز جناب ڈاکٹر محمد ایاس صاحب دامت برکاتہم (ڈائریکٹر جنرل ہمدرد وقف) حضرت کے پہلو میں ذرا پیچھے بیٹھے رہتے، وہ پان کا بیڑا حضرت کے مزاج کے عین مطابق بنا کر دہسنے ہاتھ کی انگلیوں میں تیار رکھتے۔ حضرت کو گفتگو ہوتے، اس محویت میں جب پان کی طلب ہوتی تو بے ساختہ انکی طرف ذرا سا مڑتے، اور وہ فوراً بیڑا پیش کر دیتے تھے، مجھے محترم ڈاکٹر ایاس صاحب کی اس اوپر بڑا رشک آتا تھا کہ برسوں میں کبھی یاد نہیں کہ حضرت نے انکی طرف گردن کو ذرا جنبش دی ہو، اور انہوں نے فوراً تیار بیڑا ہاتھ میں نہ تھا دیا ہو۔ اس طرح حضرت کے بیان کے تسلسل میں ادنیٰ خلل بھی واقع نہ ہوتا تھا۔

اکثر اذانِ مغرب سے ذرا پہلے مجلس ختم ہو جاتی تھی، اور حضرت اعلان فرمادیتے تھے کہ لوگ مسجد میں جا کر نماز پڑھ لیں، لیکن حضرت چونکہ ضعف کے باعث اس زمانے میں مغرب

۳ نماز دولت خانے ہی پر پڑھتے تھے، اس لئے ہم اور دوسرے بہت سے حاضرین یہی رک جاتے اور یہیں حشر کئے۔ مانتہ راجا جماعت نماز ادا کرتے۔

## اذان کا جواب

حضرت والا کا اذان کا جواب دینے کی سنت پر بھی بہت اہتمام سے عمل فرماتے اور حاضرین کو بھی تلقین فرماتے تھے۔ کتنی ہی اہم بات چل رہی ہو اذان کی آواز آتے ہی فوراً قطع فرمادیتے تھے۔ بسا اوقات کئی مسجدوں کی اذان یک وقت سُنانی دیتی تھی، ایسے میں جواب کو کسی اذان کا دیا جائے؟ حضرت کا معمول اور تعلیم یہ تھی کہ ایسے میں اپنے محلہ کی اذان کا جواب دیا جائے۔ کبھی ایسا بھی ہوا کہ کسی اہم فوری گفتگو کی محویت میں اذان کی طرف دھیان نہ گیا کچھ اذان کی آواز بھی ہلکی تھی، یہاں تک کہ اذان ختم ہو گئی، تو آپ نے فرمایا کہ بھی اذان کے کلمات اپنی زبان سے ادا کر کے اذان کے بعد کی دُعا پڑھ لی جائے، ایسی صورت میں خود بھی یہی عمل فرماتے تھے۔

## اذان کے بعد کی دُعا

آپ نے یہ ارشاد بار بار فرمایا کہ :-

”۲۔ حضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے اُمت کے لئے بے شمار دعائیں فرمائیں، اور ایسی دعائیں فرمائیں کہ ہم عمر بھر سوچتے رہتے تو دین و دنیا کی ہر بھلائی کے لئے ایسی جامع دعائیں نہ کر سکتے۔ ہر دُعا خیر میں انہوں نے ہمیں یاد رکھا، حتیٰ کہ معراج میں جب حق تعالیٰ

۱۔ مرقاۃ مشکوٰۃ میں ابن الملک کا یہ قول منقول ہے کہ ”روایت کی گئی ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو جب معراج ہوئی تو آپ نے اللہ تعالیٰ کی حمد ان کلمات سے فرمائی (اَلْحَيَاتُ لِلّٰہِ وَالصَّلٰوۃُ وَالطَّیْبَاتُ) پس اللہ تعالیٰ نے فرمایا : ”السلام علیک ایہا النبی ورحمۃ اللہ وبرکاتہ“ پس آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے عرض کیا ”السلام علینا یا وعلیٰ عباد اللہ الصالحین“ پس جبریل (علیہ السلام) نے کہا ”اشھدان لا الہ الا اللہ واشھدان محمدًا عبیدہ ورسولہ“۔ لیکن شیخ الاسلام علامہ شبیر احمد صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے فتح الملہم میں فرمایا ہے کہ ”مجھے اس قسمل کوئی سند نہیں مل، اور وہ مختار میں صریح ہے کہ (نمازیں) تشہد کے الفاظ سے نیت اُتار کی کرنی چاہیئے۔ خبر و حکایت کی نیت نہیں کرنی چاہیئے (یعنی فتح الملہم ص ۲۴۲) یعنی نمازیں تشہد پڑھتے وقت نیت نہیں کرنی چاہیئے کہ ہم وہ تصبیہ کر رہے ہیں بلکہ نیت کرنی چاہیئے کہ ہم ”الغیت“ اللہ تعالیٰ کو شہید کر رہے ہیں (علامہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو یہ بھی میں (فرشتہ کو یہ پڑھتے ہیں) فریج

شانہ کی طرف سے آپ کو یہ خطاب دلنواز فرمایا گیا ہے کہ ”السلام علیک ایہا النبی ورحمۃ اللہ وبرکاتہ“ (اے نبی آپ پر سلام ہو، اور اللہ کی رحمت ہو اور اس کی برکتیں ہوں) تو آپ نے اس وقت بھی امت کو یاد رکھا، اور انکو بھی اس انعام میں شامل کرنے کے لئے عرض کیا کہ ”السلام علینا وعلی عباد اللہ الصالحین“ (ہم پر سلام ہو اور اللہ کے نیک بندوں پر سلام ہو)۔ خلاصہ یہ کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمارے لئے بے شمار دعائیں فرمائی ہیں ————— البتہ ایک دعا کی فرمائش امت سے کی ہے کہ تم وہ دعا میرے لئے کرو۔ اور وہ یہی دعا ہے جو اذان کے بعد کی جاتی ہے۔ یہ ہمارے محسن اعظم صلی اللہ علیہ وسلم کی فرمائش ہے، اس کا بہت اہتمام کرنا چاہیے، انکے احسانات کا شکر تو ہم عمر بھر بھی ادا نہیں کر سکتے، لیکن یہ انکی محبت کا ادنیٰ حق ہے، جسے ادا کرنا ہمارے لئے جیسی سعادت ہے۔“

پھر فرمایا کہ

”معلوم ہوتا ہے کہ اذان کے بعد کا وقت، قبولیت دعا کا خاص وقت ہے، جبھی تو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے اس وقت اپنے لئے دعا کی فرمائش کی ————— لہذا اس وقت کو بہت غنیمت جانا چاہیے اس دعا کے فوراً بعد اپنے لئے بھی دعا کر لینی چاہیے، اللہ تعالیٰ کی رحمت سے قوی امید ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے صدقہ اور طفیل میں ہماری یہ دعا بھی قبول ہو جائے گی۔“

## یتیموں کی سرپرستی

حضرت والا سے بیعت کا شرف ۱۳۸۹ھ (۱۹۶۹ء) میں حاصل ہوا تھا۔ اور حضرت والک وفات ۱۵ رجب ۱۴۰۶ھ (۲۷ مارچ ۱۹۸۶ء) کو ہوئی۔ اس طرح اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے تقریباً

۱۷ چنانچہ صحیح مسلم وغیرہ کتب حدیث میں مسند صحیح کے ساتھ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی یہ فرمائش صراحتہً منقول ہے۔ رفیع



سترہ سال حضرتؒ سے استفادے کا موقع ملا۔ سو اسات سال حضرت والد ماجدؒ کی حیات میں اور پونے دس سال انکی وفات کے بعد۔

حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کی وفات کا حادثہ ہماری زندگی کا سب سے بڑا حادثہ تھا، اس حادثہ کا دُرجپن سے ایسا لگا ہوا تھا کہ وہ سفر میں تشریف لے جاتے تو مفارقت برداشت نہ ہوتی تھی، خود بھی انکے بغیر کسی لمبے سفر پر جانے کی ہمت نہ ہوتی تھی۔ میں یہ سوچ کر سہم سہم جاتا تھا کہ اگر یہ حادثہ میری زندگی میں پیش آ گیا تو برداشت کیسے ہوگا، انکے بغیر زندہ کیسے رہوں گا، اور زندہ رہ گیا تو وہ زندگی کتنی تلخ ہوگی؟

لیکن والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کا ہم پر یہ کتنا عظیم احسان ہے کہ انہوں نے اپنی وفات سے سات سال پہلے ہی ہمارا ہاتھ حضرت عارفی رحمۃ اللہ علیہ کے ہاتھ میں تمنا دیا تھا۔۔۔۔۔ جب حادثہ وفات پیش آیا تو بلاشبہ غم کا پہاڑ ٹوٹ پڑا، اس وقت میری عمر چالیس سال تھی، لیکن یہ عمر انکے سایۂ شفقت میں اس طرح گزری تھی کہ ہم سب بھائی خود کو بچہ ہی سمجھتے تھے۔ ان کا سایہ اٹھ جانے سے ہم بھی یتیم ہو گئے، دارالعلوم بھی، بلکہ بقول حضرت مولانا احتشام الحق صاحب تھانویؒ کے: ”برصغیر کے علماء کرام یتیم ہو گئے، لیکن یہ حضرت عارفی قدس اللہ سرہ کی دسارا اور توجہ خاص کی برکت تھی کہ اللہ رب العالمین نے اس وقت دل میں ایسی قوت اور برداشت پیدا فرمادی کہ اب بھی سوچتا ہوں توجہ یت ہوئی ہے۔“

۱۱۔ شوال ۱۳۹۶ھ کی صبح کو حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کا جنازہ گھر میں رکھا تھا، رات ۱۲ بج کر ۱۹ منٹ پر انکی وفات ہو چکی تھی، میں جنازے کی پانٹی کی طرف حضرت عارفی رحمۃ اللہ کے پہلو میں کھڑا تھا، اچانک دل میں ایک اُمید افزا احساس بڑی قوت سے پیدا ہوا، اور میں نے رُندھی ہوئی آواز میں مگر پر اعتماد انداز میں حضرت والاؒ سے عرض کیا کہ:

”حضرت ہم آپ کی موجودگی میں خود کو یتیم نہیں سمجھتے۔“

حضرت والاؒ نے دستِ شفقت میرے کاندھے پر رکھا، اور لمحہ بھر توقف کر کے پُر عزم انداز میں فرمایا کہ:-

”بلاشبہ آپ کو میرے متعلق یہی احساس رکھنا چاہیئے۔ میں بھی انشاء اللہ

آپ کے اس تعلق محبت کا حق ادا کرنے کی مقدور بھر کوشش کروں گا۔  
ایسے موقع پر لوگ تسلی کے لئے اس قسم کی باتیں کہہ تو دیا کرتے ہیں، لیکن نبھنا، کون ہے؟  
اور نبھانا آسان بھی تو نہیں، لیکن یہ عارف باللہ، دل اللہ کا وعدہ تھا جو اسکے تمام عواقب و نتائج  
پر غور کرنے کے بعد کیا گیا تھا۔ آپ نے زندگی بھر اسکے ایک ایک لفظ کا ایسا حق ادا فرمایا کہ اسکی نظیر  
کہیں دیکھنے میں نہیں آئی۔ حضرت کو معلوم تھا کہ حضرت والد صاحب ہم سب بھائیوں  
پر غیر معمولی شفقت فرماتے تھے، اور یہ بھی احساس تھا کہ بہ قول حضرت مولانا محمد یوسف جوڑی صاحب  
رحمۃ اللہ علیہ، "حضرت مفتی صاحب کے سب بیٹے اپنے باپ کے عاشق ہیں"۔ اس کا لحاظ حضرت  
عافیؒ نے عمر بھر رکھا، ہر قدم پر ہماری دلداری، اور دلنوازی کا وہی انداز اختیار فرمایا جس کی توقع  
صرف والد صاحب ہی سے کی جاسکتی تھی۔ ایسے بے شمار واقعات کی حسین یادیں آج بھی ہم سب  
کیلئے سراپا تسکین، اور باعث تقویت ہیں۔ بہ قول حضرت عافیؒ:

اس التفات خاص کا میں نصف کیا کہوں

جس نے دیا ہے درد و ہی غم گسار ہے

طبعی غم اور والد صاحب کی یاد تو اپنی جگہ، لیکن جن مواقع میں انسان کو اپنے باپ کی سرپرستی، رہنمائی  
حوالا فرازی اور دستگیری کی ضرورت ہوتی ہے، ان میں حضرت نے کبھی باپ کی کمی محسوس نہ ہونے دی، ان کی  
خدمت میں پہنچ کر یوں محسوس ہوتا تھا کہ اپنے والد صاحب کے پاس پہنچ گئے ہیں۔

## عیدی — اور "واحد نقصان"

عید پر حضرت والاؒ ہم سب بھائیوں کو عیدی بھی عنایت فرماتے تھے۔ حضرت والد صاحب کی  
وفات کے بعد پہلی عید الفطر پر نماز عید کے فوڈ بعد احقر کے تینوں بھائی برادر بزرگوار جناب محمد رضی عثمانی  
صاحب، جناب محمد ولی رازی صاحب، اور برادر عزیز مولانا محمد تقی عثمانی صاحب سلمہ عید ملنے کے لئے  
حضرت کے مکان پہنچے، احقر کو عید کی نماز دارالعلوم کونرگی میں پڑھانی جاتی ہے اس لئے احقر ساتھ نہ  
تھا۔ حضرت والاؒ نے تینوں کو عیدی عنایت فرمائی۔ اور احقر کو پوچھا، میرا عید بتایا گیا تو آپ نے  
ایک سفر حج کا داتا تو سنایا کہ :-

دوجہ سے مکہ کرمہ جانے کے لئے ہم بس میں سوار ہوئے، حسب دستور  
 سب حاجیوں کے پاسپورٹ ڈرائیور کے پاس جمع کر دیئے گئے تھے، جتنے پاسپورٹ  
 ہوں تھے ہی حاجی ہونے چاہئیں، مگر ایک حاجی کم تھا، عرب ڈرائیور بار بار پاسپورٹ  
 گنتا، پھر مسافروں کو شمار کر کے اعلان کرتا کہ ”واحد نقصان، واحد نقصان“  
 یہ واقعہ سن کر آپ نے فرمایا کہ

”بھئی آج ہمیں بھی دو واحد نقصان“ محسوس ہو رہا ہے، مولوی رفیع  
 کی کمی محسوس ہو رہی ہے۔۔۔۔۔ انکی عیدی میں آپ کے ہاتھ بھیج دیتا، مگر  
 جب وہ آئیں گے تو ان کو خود دوں گا، اس طرح اُن کو زیادہ خوشی ہوگی۔

جب ناچیز حاضر ہوا تو یہ واقعہ مجھے بھی سُٹایا اور عیدی عطا فرمائی۔ عید کے علاوہ بھی وقتاً فوقتاً  
 طرح طرح کے عطیات سے دلداری فرماتے رہتے تھے، قلم اور نفیس عطر بار بار رعایت فرمایا، ایک مرتبہ اپنا  
 ایک گرم کرتہ بھی جو خود پہنے ہوئے تھے، اتار کر عطا فرمایا۔ اس کا ایک بڑا ہی دلنواز واقعہ ہے جسے بیان  
 کرنے کا یہ موقع نہیں۔

حضرت والاؒ تہجد کے وقت سے ظہر کی نماز تک بلا وقفہ شدید مصروفیت میں رہتے تھے،  
 سہ پہر کو مختصر قیلولہ کے بعد چار بجے سے پھر رات کو سوتے وقت تک مصروفیت کا یہ عالم رہتا، کہ ایک  
 منٹ خالی نہ تھا، انظم اوقات کی ایسی پابندی کہ انکے معمولات کو دیکھ کر گھڑی ملائی جاسکتی تھی۔  
 اسکے باوجود اکثر فرمایا کرتے تھے کہ ”بھئی آپ کے لئے کسی وقت کی پابندی نہیں، جب موقع ملے آجایا  
 کریں“ چنانچہ ہم پیر کی مجلس کے علاوہ بھی جب موقع ملتا حاضر ہو جایا کرتے تھے شروع میں اچانک  
 جاتے ہوئے تشویش رہتی تھی کہ کہیں حضرت کو تکلیف نہ ہو، مگر حضرت کو جیسے ہی ہماری اطلاع ملتی  
 کتنی ہی مصروفیت ہو یا ہر تشریف لے آتے اور ہمیں دیکھ کر اتنے خوش ہوتے کہ بس نہال ہی فرمادیتے تھے  
 بار بار فرماتے ”آپ کے اچانک آجانے سے اور بھی جی خوش ہوا، ہمیں آپ کے آنے سے بڑی تقویت  
 ہو جاتی ہے“ ہمارا جی چاہتا ہے کہ حضرت (تعالیٰ) کا مزاج و مذاق آپ کو اچھی طرح سمجھا دیں آپ  
 کے والد صاحب اُس مزاج و مذاق میں ڈوبے ہوئے تھے، والد صاحب کا ذکر فرما کر یہ مصرع آپ بہشت  
 سنایا کرتے تھے کہ ۛ

میراث پدر خواہی، عظیم پدر آموز

اور اس کے بعد حکیم الامت حضرت تھانویؒ کے علوم و معارف، پند و موعظت اور رموز  
طریقت کا بیان شروع ہو جاتا، اور اس میں ایسی محبت، سوز و گداز اور بے اوقات جوش ہوتا تھا کہ جیسے  
اب انکو اپنی کوئی اور مصروفیت یاد نہیں رہی۔ خود ہی فرماتے ہیں ۷  
فکران کا چھین کر دیکھے کوئی اے عارفی  
بے خودی کیا چیز ہے، وارفتگی ہوتی ہے کیا  
بس یوں محسوس ہوتا تھا کہ جو دولت انہوں نے اپنے شیخ سے حاصل کی ہے وہ ہمیں گھل کر  
پلا دینا چاہتے ہیں۔ حضرت بار بار فرمایا کرتے تھے کہ ”جب حضرت مفتی صاحبؒ کا انتقال ہوا تو تم بھائیوں  
کو یہ حسرت تھی کہ والد صاحب سے ہم نے کچھ حاصل نہ کیا۔ میں اس حسرت کا مداوا کرنا چاہتا ہوں“

## خوشی آدھی کر دی

ایک شام احقر کسی شادی میں ناظم آباد گیا، وہاں پہنچ کر اندازہ ہوا کہ بارات آنے میں کم از کم ایک  
گھنٹہ ہے، سوچا کیوں نہ یہ وقت حضرت کی خدمت میں گزاروں، دولت خانے پر حاضر ہوا، اطلاع ملے  
حضرت مردانہ کمرے میں تشریف لائے تو حسب سابق بہت سرور و شاداں تھے، اچانک حاضری  
پر مزید خوشی کا اظہار فرمایا، اور دعائیں دیں، میں سامنے بیٹھ گیا تو خیریت دریافت فرمائی، پھر پوچھا  
”کیسے آنا ہو گیا“؟ میں نے عرض کیا کہ ”حضرت ناظم آباد ایک شادی میں آیا تھا، وہاں  
دیر تھی، سوچا حضرت کی خدمت میں حاضری دے لوں“۔ حضرت والا نے بے ساختہ  
مسکرا کر فرمایا:-

”بھئی آپ نے ہمیں یہ کیوں بتایا؟ ہم یہ سمجھ کر خوش ہو رہے تھے کہ ہمارے ہی پاس  
آئے ہیں، آپ نے یہ بتا کر ہماری خوشی آدھی کر دی“

## دارالعلوم کی صدارت

حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے انتقال سے دارالعلوم بھی یتیم ہو گیا تھا، بانی و صدر کا



سایہ سر سے اٹھ جا، دارالعلوم کے لئے بھی اس کی تاریخ کا سب سے بڑا حادثہ تھا، لیکن اللہ جل شانہ کا شکر کس زبان سے ادا کیا جائے کہ حضرت والا کی خصوصی غیایات دارالعلوم پر بھی سایہ فگن ہو گئیں حضرت دارالعلوم کی مجلس منتظرہ کے رکن تو کئی سال پہلے سے تھے، اس حادثہ کے چند ہی روز بعد دارالعلوم کراچی کی مجلس منتظرہ نے متفقہ طور پر حضرت والا کو دارالعلوم کا قائم مقام صدر بنانا طے کیا، پھر اگلے ہی اجلاس میں مستقل طور پر "صدر دارالعلوم" کا منصب قبول فرمانے کی درخواست کی۔ ان دونوں اجلاسوں میں حضرت والا خود بھی شریک تھے۔ اس کبر سنی، ہجوم مشاغل، اور اپنے مکان سے دارالعلوم تک حوصلہ شکن فاصلے کے باوجود یہ حضرت والا کا سراپا ایسا رہا تھا کہ یہ عظیم بھاری ذمہ داری بھی ہمہ تیموں کی سرپرستی کے لئے قبول فرمائی۔

وفات تک تقریباً دس سال آپ دارالعلوم کے صدر رہے، یہ دس سالہ دور دارالعلوم کی ظاہری و معنوی ترقیوں کا دور ہے، جن جن سمتوں میں والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کا منصوبہ اس دارالعلوم کو آگے بڑھانے کا تھا، ان تمام سمتوں میں بحمد اللہ پیش قدمی جاری رہی۔ بلا مبالغہ حضرت عارفی کے سایہ شفقت نے دارالعلوم کو اس کے عظیم بانی کی کمی محسوس نہ ہونے دی۔ اس دس سالہ دور میں دارالعلوم کا اہتمام احقر سے متعلق رہا۔ مہتمم کو اہتمام کے "ہجوم"، گھلا دیتے ہیں۔ کاموں کا بوجھ ضرور مجھ پر تھا، لیکن یوں محسوس ہوتا تھا کہ میرے تمام ہجوم کا بوجھ حضرت والا نے اپنے عظیم کاندھوں پر اٹھالیا ہے جب بھی کوئی الجھن پیش آتی حضرت کی خدمت میں حاضر ہو جاتا، اور دُعا و مشورہ مل جانے کے بعد وہ اللہ تعالیٰ کے فضل سے ایسی حل ہوتی چل جاتی تھی جیسے کوئی الجھن سرے سے تھی ہی نہیں۔ دارالعلوم کے اس ضابطہ کے تعلق کی بدولت ہم دونوں بھائیوں کا حضرت سے تعلق گونا گوں ہو گیا تھا۔ جب ہم دارالعلوم کے کسی نازک نظامی مسئلہ کی پیچیدگی سے پریشان ہو کر صدر دارالعلوم کی خدمت میں حاضر ہوئے تو حضرت بہت اطمینان و سکون سے سب حالات سنتے، اور ادنیٰ تشویش یا تذبذب کا اظہار کئے بغیر کچھ مشورے نصیحتیں، اور دعائیں دینے، اور ساری پیچیدگی اور سب پریشانیوں کا فوراً ہو جاتیں۔

حضرت والا دارالعلوم کی انتظامی جزئیات میں کبھی دخل نہ دیتے تھے، لیکن اصولی نگرانی میں انماض نہ فرماتے تھے۔ دارالعلوم کے مزاج و مذاق کی حفاظت پر انکی سب سے زیادہ نظر تھی۔ اس میں فوراً بھی کوتاہی نظر آتی تو فوراً بلا کر تنہائی میں بڑی شفقت و حکمت سے تنبیہ فرما دیتے تھے۔

ایک دوبار دارالعلوم کے بعض حضرات کی طرف سے حضرت کی خدمت میں دارالعلوم کے بعض انتظامی امور کی شکایت تحریری طور پر پیش کی گئی۔ لکھنے والے کا نام تحریر نہ تھا۔ حضرت والا نے مجھے کوڑنگی سے طلب فرمایا، اور وہ تحریر یہ کہہ کر میرے حوالے فرادی کہ ”اس فکر میں پڑے بغیر کہ یہ کس کی تحریر ہے، اس کا بغور جائزہ لیں، جو امور واقعی اصلاح طلب نظر آئیں، انکی اصلاح کا انتظام کر دیں، اور اگر سب یا بعض شکایات غلط فہمی پر مبنی ہوں تو انکے متعلق کسی کاوش میں پڑنے کی ضرورت نہیں، مجھے آپ پر اعتماد ہے، اللہ تعالیٰ نصرت عطا فرمائے“

ہماری بعض کتابوں پر کبھی کبھی مشفقانہ اظہارِ ناگواری بھی فرمایا۔ ایسے مواقع پر یہ ضرور یاد دلادیا کرتے تھے کہ

”دیکھو مولوی رفیع میں اس تعلقِ محبت کا حق ادا کر رہا ہوں جس کا وعدہ تم نے اپنے والد صاحب کی وفات کے دن مجھ سے لیا تھا۔ میں اس وعدے کو کبھی نہیں بھول سکتا، جب تک زندہ ہوں، وہ حقِ محبت ادا کرتا رہوں گا“

گمنا راضی کبھی نہ ہوئے تھے۔ ایک مرتبہ ہم خدام دارالعلوم سے ایک فیصلہ ایسا سرزد ہوا جس کے متعلق ہمارا خیال تھا کہ دینی مصالح کے لئے مفید ہوگا، اور حضرت والا بھی اسکو ناپسند نہ فرمائیں گے۔ بعد میں اندازہ ہوا کہ یہ دارالعلوم کے مزاج و مذاق کے مناسب نہ تھا۔ یہ غلطی حضرت والا کو سخت ناگوار گذری، حضرت نے منتظر رہے کہ ہمیں خود احساس ہو جائے اور تلافی کر لیں، مگر ہمیں بالکل احساس نہ ہوا، یہاں تک کہ حضرت نے پیر کے دن کی مجلس کا سلسلہ بند کرنے کا ارادہ ظاہر فرمایا، تو فکر ہوئی، اور تحقیق سے معلوم ہوا کہ حضرت نے اراض ہیں۔ ہم حضرت کی خدمت میں جا کر خوب روئے، اور اپنی غلطی سے توبہ کی حضرت نے معاف فرمادیا، اور فرمایا کہ :-

”مجھے آپ دونوں کی سعادت مندی کے پیشِ نظر اس (ندامت) کا انتظار تھا، تم نے وہ فیصلہ غلط کیا تھا، آئندہ کے لئے سبق مل گیا ہے۔ بس اپنا دل میلانہ کرو، مجھ پر آپ دونوں کی اور دارالعلوم کی بھاری ذمہ داری ہے۔ مولوی رفیع میں تمہاری اُس بات کا حق ادا کر رہا ہوں جو حضرت مفتی صاحب کے انتقال کے دن تم نے کی تھی۔ وہ حقِ محبت میں انشاء اللہ ادا کرتا رہوں گا۔ ساری فکری مجھ پر چھوڑ دو، بے فکر ہو کر اپنے کام میں لگے رہو، انشاء اللہ

فاز المرام پہونگے تمہیں نہیں معلوم میں تمہارے لئے کتنی دعائیں کرتا ہوں۔ رات کو تم  
بھائیوں کے گھروں اور دارالعلوم کا حصار کئے بغیر نہیں سوتا۔

یہ آخری بات حضرتؒ نے پہلے بھی کئی بار فرمائی تھی جنت سرکاء ایک ایک جملہ محبت و شفقت  
میں ڈوبا ہوا تھا نہ صرف یہ کہ سارا غم چند منٹ میں حضرتؒ نے دور فرما دیا، بلکہ اللہ کے دنوازا شادوات  
فرمائے کہ آج تک انکا لطف یاد آتا ہے۔ خود ہی فرماتے ہیں کہ ۵  
اک طرز التفات بکرم ہے جفائے دوست  
جی چاہتا ہے روز نیا امتحان رہے

حضرت کے لطف و کرم کے بعد عقلاً تو اطمینان ہو گیا بلکہ حضرت کا لطف و کرم اب اور زیادہ ہی  
ہو گیا تھا، لیکن دل کو کبھی کبھی یہ وساوس پریشان کرتے رہے کہ کہیں حضرت کے قلب مبارک کے کسی  
گوشہ میں اس ناگواری کا کوئی اثر باقی تو نہیں رہ گیا، اس حالت کی اطلاع اور علاج کے لئے احقر نے  
۱۴ رمضان المبارک ۱۳۵۵ھ کو یہ عریضہ تحریر کیا، جو حضرت کے جواب کے ساتھ یہاں نقل کرتا ہوں،  
اصلاحی خط و کتابت کے سلسلہ میں یہ حضرتؒ کا آخری مکتوب ہے، جو احقر کے لئے سرمایہ حیات  
ہے

## حضرتؒ کی خدمت میں آخری مکتوب اور اسکا جواب

”مخدوم مکرم، مطایع معظم، سیدی و سندی و مولائی۔ السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ  
خدا کرے حضرت والا کا مزاج گرامی بعافیت ہو، گرمی کی شدت اور حضرت  
کے ضعف کے باعث دل کو فکر رہتی ہے، اللہ تعالیٰ سے دعا کرتا رہتا ہوں، اللہ تعالیٰ  
حضرت کا سایہ و ادیر عافیت کے ساتھ قائم رکھے۔ آمین خصوصاً حضرت مولانا  
سبحان محمود صاحب سے یہ معلوم ہو کر اور فکر ہوئی کہ حضرت والا اس شدید  
گرمی اور ضعف میں بھی ما شاء اللہ روزے رکھ رہے ہیں۔ اور مطلب میں بھی

”رنجے تک مشغولیت رہتی ہے۔“

حضرت مؤدبانہ درخواست ہے کہ آنا تعب برداشت نہ فرمائیں، حضرت والا ہی سے بار بار سنا ہے کہ اللہ تعالیٰ اصحاب اعذار کے زخمتوں پر عمل کرنے سے بھی اتنے ہی راضی اور خوش ہوتے ہیں جتنے عزیمت پر عمل کرنے سے اگر اپنے غم میں تردد ہو تو کسی قابل اعتماد معالج سے دریافت فرمایا جائے۔

حضرت دل کے شدید تقاضے سے مجبور ہو کر یہ درخواست پیش کرنے کی جسارت کی ہے، امید ہے کہ حضرت اس گستاخی کو معاف فرمائیں گے۔“

حضرت نے تحریر فرمایا

”الحمد للہ اب تک تحمل ہے، دُعا کرتے رہیں۔“

آگے احقر نے لکھا تھا کہ

”شعبان میں تین مہینے تو سفر میں گزر گئے، سفر سے واپسی کے بعد صرف ۲ مرتبہ حضرت والا کی خدمت میں حاضری ہو سکی پھر رمضان المبارک شروع ہو گئے، رمضان میں بار بار حاضری کو دل بہت چاہتا ہے، لیکن احقر کا حفظ قرآن پختہ نہیں، تراویح میں سنانے کے لٹھون میں کئی بار چرنا اور اپنے سامع کے ساتھ کئی بار مختلف اوقات میں دور کرنا پڑتا ہے، دل و دماغ پر یاد کرنے کی فکر سوار رہتی ہے اس لئے اب تک حاضری کا موقع نہ مل سکا حضرت والا سے دعا کی درخواست ہے۔ حضرت: چندانہ سے ایک احساس دل میں ہے، حضرت کی خدمت میں حاضر کے بعد اس احساس میں اور اضافہ ہو جاتا ہے ہو سکتا ہے یہ احقر کا دہم ہو۔ لیکن حضرت کی خدمت میں پیش کرنا ضروری معلوم ہوتا ہے، وہ یہ کہ جب سے حضرت کے ساتھ اللہ تعالیٰ نے تعلق کی دولت سے نوازا، احقر کی مسلسل نالائقی کے باوجود حضرت کی خاص شفقت ہمیشہ دلوں و حوصلہ افزائی کرتی رہی۔ اور حضرت والا کی خصوصی توجہ



اور غنایات کا دل عادی ہو گیا ہے اس میں ذرا بھی، بلکہ ذرہ برابر بھی کمی محسوس ہوتی ہے تو دل ڈوبنے لگتا ہے، اور دل کی پوری کائنات ماریک محسوس ہونے لگتی ہے، اب چند ماہ سے احقر کچھ ایسا ہی محسوس کر رہا ہے، ہو سکتا ہے یہ محض میرا دواہمہ ہو، یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اسکا سبب حضرت کی نامائشی طبع ہو، لیکن یہ خوف دل بے چین کرتا ہے، کہ کہیں یہ اس نالائق و سیدہ کار کی مسلسل غلط کاریاں اور سستی تو رنگ نہیں لارہی، کہیں حضرت والا اس ناکارہ غلام کی اصلاح سے خدا نخواستہ مایوس تو نہیں ہو گئے؟

حضرت والا! اس ناکارہ غلام کے پاس کوئی بھی ایسی چیز نہیں جس پر دل کو مطمئن کیا جاسکے، سوائے حضرت والا سے تعلق و محبت کے، حضرت سے تعلق و محبت ہی اس ناکارہ غلام کی سب سے بڑی پونجی ہے اور حضرت کی شفقت و عنایت اور توجہ ہی سب سے بڑا سرمایہ۔ اللہ تعالیٰ اس سرمایہ عظیم کی حفاظت فرمائے، اس میں اضافہ فرمائے اور ہمیشہ باقی رکھے۔

دل یہ باتیں عرض کرنے کے لئے بے چین تھا، ان میں جو باتیں خلاف ادب ہوں ازراہ کرم معاف فرما کر اصلاح فرمادیں، والسلام

حضرت والا نے تحریر فرمایا کہ

”وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ“

تمہارے خط سے تمہارے قلبی جذبات، محبت محسوس ہو کر مجھے خوشی بھی ہے، اور تمہارے لئے نیک فال بھی ہے، انشاء اللہ تم کو اس جذبہ محبت کے ثمرات دنیا میں بھی ملیں گے اور آخرت میں بھی اور یہی جذبات انشاء اللہ تمہید ہیں تعلق مع اللہ و حب اللہ کی!

مطمئن رہو میں تمہارے دل و جان سے تمام دین و دنیا کی فلاح کی دعا کرتا

ہوں۔“

## تسلیم و رضا، اور رجا و فنا یت

حضرت کو اللہ تعالیٰ نے تسلیم و رضا، اور رجا و فنا یت کا ایسا مقام عطا فرمایا تھا کہ احقر نے سخت سے سخت حوادث میں بھی آپ کے چہرے پر پریشانی، غصہ، یا گھبراہٹ نہیں دیکھی، آپ کے اخلاق و عادات سنت کے حین سانچے میں ڈھلے ہوئے تھے، آپ اکثر اوقات ہشاش بشاش رہتے، چہرے پر تبسم رہتا، ہر ایک سے خندہ پیشانی اور محبت کے ساتھ اس طرح ملتے اور اس کو اتنی دعائیں دیتے کہ بس وہ نہال ہی ہو جاتا تھا، اللہ تعالیٰ کی ایک ایک نعمت کا ذکر اور استحضار، اور زبان پر **«اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ»** جاری ہو جاتا، غم کے وقت **«آہستہ آہستہ دِإِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ»** کا تکرار فرماتے۔ ناگواری، تعجب اور غصہ کے موقع پر آپ کی زبان سے بے اختیار **«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ»** کا کلمہ جاری ہو جاتا، ویسے بھی آپ کا حکیمہ کلام **«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ»** تھا۔ ہر حالت میں راضی و رضا رہتے تھے۔ خود ہی فرماتے ہیں ۛ

منزل بے خودی شوق کے سب ہو چکے پورے

بس اب باقی رہا ہے محو لذاتِ نفس ہونا

لوگ اپنی باطنی بیماریاں، جسمانی تکلیفیں، خانگی و کاروباری الجھنیں اور دیگر پریشانیاں حضرت کے سامنے بیان کرتے، آپ انہی بیماریوں اور پریشانیوں کے حال میں سے اُمید و رجا کا کوئی نہ کوئی پہلو نکال کر ان کے سامنے کر دیتے، ڈھارس بندھاتے، تسلیاں دیتے، اور مشوروں اور دعاؤں سے نوازتے۔ مایوسی اور پریشانی کو اپنے پاس آنے دیتے تھے نہ دوسروں کے پاس۔ خود ہی فرماتے ہیں کہ ۛ

آلام روزگار سے دل آشنا نہیں

ممنون عشق ہوں کہ غم ما سوا نہیں

## پابندی اوقات

زندگی کے تمام کاموں کے لئے صبح سے رات تک کا ایک مستحکم نظام الاوقات مقرر تھا،

جس کی پابندی صحت و بیماری میں اس طرح فرماتے تھے کہ انکو دیکھ کر گھڑی ملائی جاسکتی تھی۔ جب تک بیماری کی شدت سے بالکل بے بسی نہ ہو جائے معمولات میں فرق نہ آنے دیتے تھے۔ شدید مجبوری کی حالت میں بھی کوشش یہ رہتی تھی کہ کسی بھی معمول کا بالکل غلطیہ ناغہ نہ ہو، اُس معمول کی مقدار گھٹا دیتے تھے۔ مگر حق الامکان ناغہ نہ فرماتے تھے۔ احقر کو بھی کئی بار یقین فرمائی کہ ”شدید تکلیف یا کسی اور مجبوری کے باعث اگر ہر تبیغ پوری پوری پڑھنا ممکن نہ ہو تو۔ ہر تبیغ صرف ۳۳ بار یا ۱۱ بار، یا ۳ بار ہی پڑھ لیا کریں۔ ایسا کرنے سے ناغہ شمار نہیں ہوتا۔ اور ناغہ ہو ہی جائے تو اس کی تضا کر لیا کریں۔“

## ہمت و استقامت

آپ کو اللہ تعالیٰ نے ایسی ہمت اور حوصلہ عطا فرمایا تھا کہ تندرست نوجوان بھی اس پر حیرت اور رشک کرتے تھے۔ وفات کے وقت آپ کی عمر تقریباً اٹھاس (۸۸) برس تھی، طرح طرح کی جسمانی تکلیفوں کے علاوہ ضعف و لغاہت روز بروز بڑھتی جا رہی تھی مگر ہمت جوان ہی رہی۔ تہجد کے وقت سے رات کے کنس بجے تک تمام اوقات شدید مصروفیت میں گزرتے، صرف سپہر کو ایک گھنٹہ قیلولہ فرماتے تھے، زندگی کے آخری تین برسوں میں رمضان جس شدید گھلاوینے والی گرمی میں آئے، اس نے نہ جانے کراچی کی گرمی کا کتنے سالہ ریکارڈ توڑ دیا؛ بجلی کی لوڈ شیڈنگ اس پر مستزاد تھی، لیکن حضرت والکی ہمت میں فرق نہ آیا، مطب چھوڑا نہ روزے چھوڑے، مطب میں مریضوں کا بے پناہ ہجوم ہوتا تھا، وہاں پہنچ کر حضرت کو سر اٹھانے کی فرصت نہ ہوتی تھی، مگر ہر مریض کی دلداری اور اس پر بھرپور توجہ میں فرق نہ آنے دیتے تھے۔ حسب سابق عصر کی نماز محلے کی مسجد میں پڑھ کر مغرب تک وہیں ذکر و دعا میں مشغول رہتے، مختصر افطار کر کے مغرب کی نماز اور اوابین سے فارغ ہو کر گھر تشریف لاتے تھے۔ — ہمیں نصیحت کرتے ہوئے بار بار فرمایا کرتے تھے کہ:

”میں نے دو گراہیے سیکھے ہیں کہ ان سے مجھے زندگی کی تمام مشکلات میں

آسانی ملے ہے۔ ایک ہمت اور دوسرے پابندی اوقات۔ ان دو چیزوں سے مشکل سے مشکل کام آسان ہو جاتے ہیں، میں نے زندگی کے ہر مرحلے میں ان

سے کام لیا جائے۔“

## ہر ایک سے محبت

آپ جس سے بھی ملتے اسے محبت اور دعاؤں سے نہال فرمادیتے تھے، آپ سے جس کا بھی تعلق تھا وہ یہ محسوس کرتا تھا کہ حضرت کو مجھ سے خصوصی محبت ہے، حیرت ہوتی تھی کہ اتنی مصروفیت میں ہزاروں اہل محبت کا حق الگ الگ کیسے ادا کرتے ہیں؟ اور جس کے دل میں اللہ تعالیٰ کی محبت سمائی ہوئی ہو، وہ اتنی محبتوں کو اپنے دل میں کیسے جمع کرتا ہے؟ لیکن دیکھا جائے تو درحقیقت یہ ایک ہی محبت کے بے شمار مظاہر تھے۔ محبوب کی ہر چیز محبوب ہوتی ہے، لہذا اللہ تعالیٰ جو محبوب حقیقی ہیں، انکی ہر مخلوق سے آپ کو محبت تھی۔ ایک مرتبہ فرمایا کہ:

”اللہ تعالیٰ کی محبت کا مصرف یہ ہے کہ اللہ کی اطاعت کرو، اور مخلوق خدا سے محبت کرو۔“

زندگی کے آخری سفر لاہور میں آپ نے فارسی کا یہ لطیف شعر بار بار عجیب انداز میں سُنایا، جو درحقیقت حضرت والا کی اسی محبت کا ترجمان ہے۔

بند چوں کہ سوئے تو، گیرم سر را، ہش  
تا ذوق تماشاے تو، دزدوم ز شکا، ہش

## اندازِ تربیت

اصلاح و تربیت کا انداز نہایت آسان، حوصلہ افزا، اور بسا اوقات غیر محسوس ہوتا تھا، آپ کی تعلیم و تربیت، حدیث کے ارشاد ”يَتِيمًا وَلَا تَعْصِيَا“ (آسانی پیدا کرو۔ مشکل نہ بناؤ) کی دلکش عملی تفسیر تھی۔ آپ کے تمام ارشادات میں رجا و محبت، اور ترغیب کا پہلو ہی غالب رہتا تھا، طالب کو کسی بھی حال میں مشکل محسوس نہ ہونے دیتے تھے۔ اس کا حوصلہ بڑھاتے رہتے تھے، آپ کی آسان تعلیم و تربیت کا اندازہ کرنا ہو تو حضرت کا رسالہ ”محوالاتِ یومیہ و مختصر نصابِ اصلاح نفس“ کا بغور مطالعہ کیا جائے، پوری طریقت کا گویا عطر نکال کر رکھ دیا ہے، تمام فضائل کے حصول، اور تمام رذائل



سے مگو خلاصی کے لئے اُس میں چار گڑ (صبر، شکر، استغفار، استعاذہ) ایسے ارشاد فرما دیئے ہیں اور انکا ایسا آسان اور زود اثر طریقہ بتا دیا ہے کہ نہ کوئی وقت خرچ ہو تو ہے نہ محنت، صرف زاویہ نگاہ تبدیل اور معمول توجہ سے مراحل سلوک طے ہوتے رہتے ہیں، اور اللہ تعالیٰ سے ایک خاص تعلق پیدا ہوتا چلا جاتا ہے جس کا اثر تمام اعمال و اخلاق پر ہوتا ہے۔۔۔۔۔ آخر زمانے میں یہ شعرا آپ بکثرت پڑھا کرتے تھے کہ ۵

سن لو مجھ سے میری باتیں شاید کبھی کام آجائیں  
وقت فسانہ بن جائے گا، پھر کون کیسے یاد آتا ہے

یہ شعر بھی بار بار پڑھا کرتے تھے

مجھ سے سُن لو جو سُنا ہے غم کی داستان میری  
کہاں سے لائے گا پھر کوئی دل میلا زباں میری

ایک مرتبہ میں نے اپنی یہ تشویش عرض کی کہ ”حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے ایک بار مجھ سے فرمایا تھا کہ ”میں تمہارے اندر ترقیع محسوس کرتا ہوں“۔۔۔۔۔ آپ نے یہ سنتے ہی مسکرا کر بے ساختہ اندر جستہ فرمایا ”پھر آپ نے ان سے یہ کیوں نہ کہہ دیا کہ آپ نے میرا نام رفیع کیوں رکھا تھا“ ایک اور موقع پر میں نے پھر یہی الجھن عرض کی تو فرمایا ”حضرت مفتی صاحب بڑے حکیم تھے، انہوں نے یہ جملہ فرما کر دل میں غلش پیدا کر دی ہے، بس یہی غلش اسکا علاج ہے“ متعدد بار احقر نے اپنی اس قسم کی مختلف الجھنوں کا ذکر کیا تو کبھی تو بہت آسان سا علاج بتا دیا، کبھی یہ فرمایا کہ جب احساس پیدا ہو گیا ہے تو یہی احساس اسکا علاج ہے۔ اور کئی بار یہ فرمایا کہ ”زیادہ کاوش کی ضرورت نہیں ہو کبھی فرمایا ”کاوش نکل جائے“

دارالعلوم میں مجلس منتظر کے اجلاسوں، افتتاحِ بخاری شریف، اور ختمِ بخاری شریف کے موقع پر آپ پابندی سے تشریف لاتے تھے۔ ایک مرتبہ ختمِ بخاری کے بعد دوپہر کا کھانا سب مہمانوں کے ساتھ

لے اس پورے مضمون میں احقر نے حضرت والا کے جوارِ شاد داتِ نقل کئے اُن میں سے اکثر احقر کے پاس لکھے ہوئے محفوظ نہیں اپنے حافظہ سے لکھے ہیں، رفیع

تناول فرما رہے تھے، "حقیر پاس بیٹھا تھا، موقع دیکھ کر اپنی ایک بہت دیرینہ غلش حضرتؐ سے یہ عرض کی کہ:

”میرا مزاج یہ ہے کہ جب بھی کوئی چیز خریدتا ہوں، معمولی چیز خریدنے پر قادر نہیں ہوتا، اعلیٰ اور نفیس چیز کتنی ہی مہنگی ہو وہیں خریدتا ہوں، ورنہ نہیں خریدتا۔ اسی طرح گھریلو فطر وغیرہ میں کوئی چیز ٹیڑھی یا غیر متوازن نظر آئے تو جب تک وہ ٹھیک نہ ہو جائے، نظر بار بار وہیں آسکتی رہتی ہے۔“

حضرتؐ نے فرمایا:

”بھئی یہ بیماری ہمیں بھی ہے، دیکھئے یہ دو دسترخوان جہاں آپس میں مل رہے ہیں اگر یہ ذرا آگے پیچھے ہو جائیں تو الجھن ہوتی رہتی ہے، کسی کے گھر جائیں اور وہاں فرش وغیرہ کے نقوش یا کوئی چیز غیر متوازن نظر آئے تو آنکھوں میں کھٹکتی رہتی ہے، ہم نے تو اس کا علاج یہ کیا ہے کہ جہاں جاتے ہیں وہاں کی چیزوں سے قطع نظر کر لیتے ہیں۔ کیوں خود کو تکلیف میں ڈالیں۔“

حضرتؐ کے ذوق میں نفاست، اور مزاج میں لطافت تھی، تکلف، تصنع، اور نمائش سے نفرت تھی، سادگی محبوب تھی، استعمال میں جواشیاں رہتی تھیں، اُن میں نفاست اور سادگی ہوتی تھی، تکلف کا نام و نشان نہ تھا۔

## خادم کا منصب

پانے کوئی بار فرمایا کہ:

”ایک عظیم منصب آپ کو ایسا بتاتا ہوں کہ اس سے آپ کو کوئی معزول نہیں کر سکتا، کوئی اس پر حسد نہیں کر سکتا، کوئی اس کی راہ میں رکاوٹ نہیں ڈال سکتا، وہ منصب خدمت ہے، خادم بن جاؤ، ہر کام میں دوسروں کی خدمت کی نیت کر لو۔ ساری خرابیاں ”مخدوم“ بننے سے پیدا ہوتی ہیں، خادم بننے میں کوئی خرابی ہے نہ جھگڑا، یہ منصب سب سے اعلیٰ ہے، کیونکہ ہمارے اللہ میاں کو بندے کی عہدہ

سب سے زیادہ محبوب ہے۔ ستید القوم عا د مہر، یہ منصب سب سے

اعلیٰ بھی ہے، اور سب سے زیادہ محفوظ بھی۔

حضرت والا کے مزاج میں خادمیت کوٹ کوٹ کر بھری ہوئی تھی، مخدومیت کا نام و نشان نہ تھا۔ ایک دو مرتبہ خود فرمایا کہ :

”بحمد اللہ میں نے عمر بھر اپنی اہلیہ سے بھی اپنے کسی ادنیٰ کام کو نہیں کہا، مثلاً پانی پلا دو یا فلاں چیز اٹھا دو، یہ بھی کہہ نہیں کہا، — یہ احادیث ہے کہ وہ اپنی خوشی سے میرے بہت کام کر دیتی ہیں، اور کبھی سخت سے سخت ناگواری کے موقع پر بھی میں نے ان سے لہجہ بد لکر بات نہیں کی۔“

بالکل یہی بات حضرت کی خود اہلیہ صاحبہ بڑھاپا نے بھی ہمارے گھر والوں سے بیان فرمائی احقر عرض کرتا ہے کہ لوگ بزرگوں کی کرامتیں تلاش کرتے ہیں، مگر اس استقامت کے سامنے کرامت کی کیا حیثیت ؟ عارفین کا ارشاد ہے کہ ”الاستقامۃ فوق الف کرامۃ“ یعنی استقامت ہزار کرامتوں پر بھاری ہے۔

جس کی بے نفسی کا یہ عالم ہو کہ جو کسی سے بھی عمر بھر کسی کام کو نہ کہے، وہ کسی اور سے کیا خدمت لے گا ؟ لیکن حضرت والا کی بے نفسی کا دوسرا پہلو یہ ہے کہ وہ کسی کی ادنیٰ دل شکنی سے بھی بچتے تھے، چنانچہ خاص اہل محبت اگر خدمت کرنا چاہتے تھے تو ان کو روکتے بھی نہ تھے۔ سر میں تیل کی اش، اور پاؤں دبانے کی اجازت بھی دیدیتے تھے۔ — ایسے ہی ایک دو موقع پر اپنا یہ واقعہ سنایا کہ :

”ایک بار میں حضرت مولانا ستید میاں اصغر حسین صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت

میں حاضر تھا، موقع دیکھ کر میں نے انکے پاؤں دبانے کی اجازت چاہی تو اجازت

دے دی، جب میں پاؤں دبارہا تھا تو آپ نے مزاحاً فرمایا کہ ”ایسا معلوم ہوتا ہے تم

مخدوم بننا چاہتے ہو۔“

نہ دارالعلوم دیوبند کے مشہور محدث، بہت سی مفید کتابوں کے مصنف، حضرت والد ماجد کے استاذ، صاحب کشف و کرامات بزرگ تھے، اپنے بزرگوں کو احقر نے یہ کہتے سنا ہے کہ وہ دو مادر زاد ولی اللہ تھے، محمد اللہ پور میں احقر نے بھی بار بار انکی زیارت کی ہے۔ رنج۔

اشارہ اس طرف تھا کہ جو شخص اپنے بڑوں کی عزت و خدمت کرتا ہے، اس کے چہرے اُس کی عزت و خدمت کرتے ہیں۔

## علم کی لذت اور علمار

وفات سے تین ماہ قبل، پیر، ۱۲ ربیع الثانی ۱۳۸۲ھ کی مجلس میں فرمایا کہ:

”علم کی صورت کتابوں سے ملتی ہے

علم کی حقیقت عمل سے ملتی ہے

اور علم کی لذت بزرگانِ دین کی صحبت سے ملتی ہے“

ظاہر میں خشک علماء جو بزرگوں کی صحبت سے استفادہ نہیں کرتے ان کے متعلق آپ بشارت فرمایا کرتے تھے کہ:

علماء میں الا ماشاء اللہ یہ امراض عموماً پائے جاتے ہیں۔

۱۔ تاویل کوشی (یعنی اپنی غلطی اور کوتاہی کا اعتراف نہ کرنا، اور اسکی تاویل کرنا)۔

۲۔ جمود (یعنی حق پرستی کی بجائے اپنی رائے پر جمے رہنا)۔

۳۔ خود بینی و خود رافی (یعنی اپنے کمالات پر ناز، اور خود جوہیات سمجھ میں آجائے اس پر مطمئن

ہو جانا، دوسروں کے مشورے کی پروا نہ کرنا)۔

۴۔ حب جاہ (یعنی لوگوں کے دلوں میں اپنی عظمت پیدا ہو جانے کی خواہش)۔

## حب جاہ کا ایک علاج

حضرتؒ نے کئی بار فرمایا کہ تاملق کے اس شعر کا استحضار کیا جائے تو یہ حب جاہ کا بہت

آسان علاج ہے۔

سرود ہو جاتی ہے حب جاہ دنیا جس کے بعد

اک ذرا سی بات ہے لے دل کہ ”پھر کیا اسکے بعد“



## اللہ کی محبت پیدا کرنے کا طریقہ — اور محبت کا مصرف

فرمایا کہ دل میں اللہ تعالیٰ کی محبت پیدا کرنے کا طریقہ یہ ہے کہ

۱ — اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کا دھیان کرو، اور ان پر شکر ادا کرتے رہو۔

۲ — اہل محبت کی صحبت اختیار کرو، اور ان کے حالات و اشعار اور کتابوں کو پڑھتے رہو۔

۳ — زندگی کے سب کاموں میں اتباع سنت کا اہتمام کرو۔

پھر فرمایا کہ ”اللہ تعالیٰ کی محبت کا مصرف یہ ہے کہ اللہ کی اطاعت کرو، اور مخلوق خدا سے محبت

کرو۔“

## مستحبات کا اہتمام

آپ تمام امور زندگی میں مستحبات اور مندوبات کا خاص اہتمام فرماتے تھے، فرماتے تھے کہ

”فرائض و واجبات کی ادائیگی، اللہ تعالیٰ کی غفلت کا حق ہے، اور مستحبات پر

عمل کرنا، اللہ تعالیٰ کی محبت کا حق ہے۔ مستحبات کو معمولی چیز سمجھ کر ان میں سستی

نہ کرنی چاہیے۔ مثلاً تحیۃ المسجد اور نماز اور دعائیں وغیرہ۔ جب تک ان امور کا اہتمام

نہ ہوگا، آپ نہ سالک ہو سکتے نہ صوفی۔“

فرمایا: ”اللہ تعالیٰ کے ہم پر دو حق ہیں (۱) غفلت اور (۲) محبت۔ انہی دونوں حقوق کی

ادائیگی کا نام عبادت ہے۔“

فرمایا: ”بعض لوگ مستحبات کو اس لئے چھوڑ دیتے ہیں کہ یہ فرض و واجب نہیں ہیں کہتا

ہوں، فرض و واجب نہیں مستحب تو ہیں، تو مستحبات کرنے کے لئے ہوتے ہیں یا

چھوڑنے کے لئے؟ یہ آپ سے کس نے کہہ دیا کہ مستحبات چھوڑنے کے لئے ہوتے ہیں؟

— یہ مستحبات تو اللہ تعالیٰ کا بہت بڑا عطیہ ہیں۔ دیکھئے یہ لفظ ”مستحب“

”حب“ سے بنا ہے، جس چیز کا وہ اشتقاق ہی ”حب“ ہو، وہ معمولی چیز کیسے

ہو سکتی ہے؟ —

## پاسِ انفاس

ذکر کا ایک خاص طریقہ صوفیائے کرام میں معروف ہے، جسے ”پاسِ انفاس“ کہا جاتا ہے۔ ضیاء القلوب میں بھی اسکی تفصیل بیان کی گئی ہے، اس میں محنت بہت ہوتی ہے، آجکل وہ لوگوں کے لئے مشکل ہے، اسکے متعلق حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا کہ یہ

”پاسِ انفاس“ کا جو مخصوص طریقہ معروف ہے، ہمارے حضرت (مکمل الدین)

فرماتے ہیں کہ اس کا کوئی بڑا فائدہ نہیں۔ (اس کے بجائے اب آپ کے لئے )

”پاسِ انفاس“ یہ ہے کہ اپنے ہر نفس (سانس) کا محاسبہ کریں (یعنی) صبح

سے رات تک تمام حرکاتِ زندگی کا جائزہ لیں، حائگی امور، بیوی بچوں کے ساتھ

معاملات، کھانے، نشست و برخاست، دفتر اور باہر کے مشاغل میں تامل کریں، کون

کون سے کام صحیح نیت سے شریعت کے مطابق ہو رہے ہیں، ان پر اللہ تعالیٰ کا شکر ادا

کریں، اور کون سے کام شریعت و سنت کے خلاف ہوئے ان پر استغفار کریں۔

سوچیں نفس اور شیطان کہاں کہاں بہکاتے ہیں۔ فضائل کے محرکات ہوں یا

رذائل کے، سب کا دھیان کریں۔ دوسرے ہمارے ساتھ جو سلوک کرتے ہیں اس

پر ہمارے تاثرات و جذبات کیا ہوتے ہیں؟ اور ہم دوسروں کے ساتھ جو سلوک

کرتے ہیں، وہ کس نیت اور جذبے سے کرتے ہیں؟ دوسروں کے اور اپنے سلوک

کا موازنہ کریں، اور ان سے نتائج اخذ کریں، تاکہ اپنے رذائل پر نظر جانے لگے، دوسرے

کے تجبر و حسد، کینہ و غیروہ سے آپ نے کیا اثر لیا؟ اس کو مستحضر کیجئے جو جو تاثرات

اپنے نفس کے سامنے آئیں وہ مرشد کو لکھیں۔ دوچار رذائل کی اس طرح اصلاح

ہو جائے گی تو انشاء اللہ باقی کی اصلاح کا سلیقہ بھی پیدا ہو جائے گا۔ اور خود راستہ

اور علاج سمجھ میں آنے لگے گا۔

چند روز سے جہد کن باقی بنن۔“

## صراطِ مستقیم کی عجیب خصوصیت

حضرت واللہ نے کئی بار فرمایا کہ :-

”جب آدمی دنیا کے کسی سفر پر روانہ ہوتا ہے، تو اگر منزل پر پہنچ گیا تو سفر کامیاب سمجھا جاتا ہے، نہ پہنچ سکا مثلاً کراچی سے پشاور کے لئے روانہ ہوا مگر راستہ ہی میں انتقال ہو گیا تو سمجھا جاتا ہے کہ سفر ادھورا رہ گیا۔ مگر صراطِ مستقیم ایسا عجیب راستہ ہے کہ اس پر آدمی کو جہاں بھی موت آجائے وہیں منزل ہے۔ اس لئے سورہ فاتحہ میں صراطِ مستقیم کی دُعا سکھائی گئی، اور ہر نماز کی ہر رکعت میں اسے پڑھنے کا حکم دیا گیا ہے۔“

”بر صراطِ مستقیم اے دل کسے گمراہ نیست“

## نفسانی اور شیطانی دھوکہ کا فرق

یہ ارشاد بھی حضرت واللہ نے بار بار فرمایا کہ :-

”انسان کو دھوکہ شیطان بھی دیتا ہے، اور نفس بھی، مگر دونوں کے طریق کار میں فرق ہے۔ شیطان کسی گناہ کی ترغیب اس طرح دیتا ہے کہ اسکی تاویل سمجھا جاتا ہے کہ یہ کام کر لو اس میں دنیا کا یا دین کا فلاح فائدہ اور فلاح مصلحت ہے جب کسی گناہ کے لئے تاویل و مصلحت دل میں آئے تو سمجھ لو کہ یہ شیطان کا دھوکہ ہے اور نفس گناہ کی ترغیب لذت کی بنیاد پر دیتا ہے، کہتا ہے یہ گناہ کر لو بڑا مزا آئے گا جب کسی گناہ کا خیال لذت حاصل کرنے کے لئے آئے تو سمجھ لو کہ یہ نفس کا دھوکہ ہے۔ شیخ کی ضرورت نفس و شیطان کے دھوکوں ہی سے بچنے کے لئے ہوتی ہے۔“

## ایک لحاظ سے نفس شیطان بھی ہمارے محسن ہیں

یہ بات حضرت والا خوب لطف سے لے کر فرمایا کرتے تھے کہ :-

”بھئی ہر وقت نفس و شیطان کے پیچھے ہیں نہ پڑے رہا کرو، ایک لحاظ سے دیکھو تو یہ بھی ہمارے محسن ہیں، انکے دسوس نہ ہوتے تو ہمارے درجات میں کیسے ترقی ہوتی دیکھو یہ ہیں گناہوں کی رغبت دلاتے ہیں، مگر ہم غم کر کے گناہ سے بچ جاتے ہیں، تو ترک گناہ کا ثواب ہمارے نامہ اعمال میں لکھ دیا جاتا ہے۔ اور اگر خدا خواستہ گناہ سرزد ہو ہی گیا تو ہم کو فوج اندامت ہوتی ہے، توبہ و استغفار کرتے ہیں، اپنی عاجزی اور انالائق کا احساس پیدا ہوتا ہے، تقویٰ و پرہیزگاری کا گھنڈہ ختم ہو جاتا ہے، اول میں شکستگی اور تواضع پیدا ہوتی ہے۔ یہی عبادت ہے جو اللہ تعالیٰ کو سب سے زیادہ پسند ہے۔ تو دیکھو نفس و شیطان تو ہمارے لئے بلندی درجات، اور اللہ تعالیٰ کے قرب کا ذریعہ بن جاتے ہیں۔ بس شرط یہ ہے کہ آدمی ان کی حیلہ سازیوں سے غافل نہ رہے۔“

## سفر

حضرت والا سفر بہت کم فرماتے تھے، اگرچی سے حج و عمرہ کے سفر کے علاوہ ایک سفر سکھر کا احقر کے علم میں ہے جو حضرت حکیم ستید محمد ابراہیم صاحب کی عیادت کے لئے فرمایا تھا۔ اس سفر میں حضرت بابا نجم احسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے علاوہ ہمارے عزیز دوست جناب محمد کلیم صاحب بھی ساتھ تھے، جو ماشاء اللہ ہمارے حضرت کے خلیفہ مجاز ہیں، انہوں نے ایک بار اس سفر کی بعض پر لطف باتیں سنائیں تھیں۔ کاش وہ ان کو قلم بند فرما دیں تو انشاء اللہ سب کے لئے دنوار اور بصیرت افزا ہوں گی۔

تین چار مرتبہ لاہور کا سفر ”مجلس عیانتہ المسلمین“ کے سالانہ اجلاس میں شرکت کے لئے فرمایا۔ لاہور کے ان تمام سفروں میں حضرت حاجی ظفر احمد تھانوی صاحب رحمۃ اللہ علیہ ساتھ



تھے ان میں سے ایک سفر میں بحمد اللہ احقر کو اور برادر عزیز مولانا محمد تقی عثمانی صاحب سلسلہ کو بھی شرفِ ہمراہی نصیب ہوا۔۔۔۔۔ حضرت دلائل جہاز کے وقت سے کافی پہلے ایرپورٹ پہنچے ہم دونوں بھائی وہاں پہلے سے منتظر تھے، گاڑی ہی میں سے ہم پر نظر پڑی تو چہرہ مبارک پر دل آویز تبسم بکھر گیا۔ حضرت کے ساتھ سفر بڑا پر لطف ہوتا تھا، ایسے مواقع میں حضرت عموگاہ تفریح کی باتیں کیا کرتے تھے۔ امدانہی تفریح کی باتوں میں اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کا ذکر بڑے دلکش انداز میں فرمایا کرتے تھے۔ جہاز میں بیٹھنے، امد جہاز کے چلنے کے وقت مسنون دُعائیں پڑھیں، اور جب جہاز فضا میں بلند ہونے لگا تو چند منٹ کھڑکی سے شہر کا نظارہ فرماتے رہے، جب یہ نظارہ اوجھل ہو گیا، امد جہاز فضا میں خوب بلند ہو گیا تو فرمایا کہ:-

”اس وقت بھی کچھ ذکر کر لیتا چاہیے۔ اس فضا میں بھی اللہ کی یاد اور ان کے ذکر کے کچھ نشانات چھوڑ دینے چاہئیں شاید کسی وقت یہ فضا میں بھی اللہ تعالیٰ کے سامنے گواہی دیں۔“

کچھ دیر ذکر میں مشغول رہنے کے بعد چٹ منٹ خاموشی رہی، پھر پر لطف گفتگو شروع فرمادی۔ اس سفر کے علاوہ تین امد سفروں میں بھی احقر کو بحمد اللہ حضرت کی کفش برادری کی سعادت نصیب ہوئی، دوبار پٹنہ کے سفر میں، ایک بار لاہور کے سفر میں۔۔۔۔۔ یہ تینوں سفر پاکستان کی ایک اہم شخصیت کی نجی دعوت پر ہوئے تھے۔ پٹنہ کے پہلے سفر میں برادر عزیز مولانا محمد تقی عثمانی بھی ساتھ تھے۔ اُس موقع پر معزز میزبان نے حضرت کی خدمت میں یہ پیغام بھیجا تھا کہ:

”دیرانکاح حضرت مولانا مفتی محمد حسن صاحب نے پڑھایا تھا، میرے چھوٹے بھائی کا نکاح حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب نے پڑھایا، میرے گھرانے کے فلاں شخص کا نکاح حضرت حاجی محمد شریف صاحب نے پڑھایا تھا یہ تینوں بزرگ حکیم الامت حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے حلقہ رہیں، اب میری بیٹی کا نکاح ہے، اور میری خواہش ہے کہ اس کا نکاح آپ پڑھادیں۔“

حوالہ مُرشد تھانوی کی نسبت کا آگیا تھا، حضرت دلائل نے قبول فرمایا، اور ہم دونوں بھائیوں کو ساتھ چلنے کا حکم دیا۔ سردی کا موسم تھا، کراچی سے سہ پہر کو روانگی ہوئی، اور اگلے دن سہ پہر ہی کو کراچی

## زندگی کے آخری دوسفر

انہی صاحب کی عقیدت مندانہ دعوت پر دوسرا سفر پنڈی کا، اور تیسرا سفر لاہور کا ہوا، ان دونوں سفروں میں حضرت والا کے دونوں پوتے عزیزم انس سلمہ، اور عزیزم حارث سلمہ ساتھ تھے، حضرت نے احقر کو بھی ساتھ چلنے کا حکم فرمایا۔ منگل ۲۷ ربیع الثانی ۱۴۰۹ھ (۱۷ دسمبر ۱۹۸۵ء) کی سہ پہر کو بندہ یو جہاز راولپنڈی کے لئے روانہ ہوئی، وہاں اگلے روز آپ نے میزبان کی بیٹی کا نکاح پڑھایا اور اس سے اگلے روز یعنی ۱۹ دسمبر جمعرات کو ظہر کے وقت کراچی واپس تشریف لے آئے۔ پھر اگلے منگل یعنی ۱۱ ربیع الثانی ۱۴۰۹ھ (۲۴ دسمبر ۱۹۸۵ء) کو کراچی سے لاہور تشریف لے گئے، جہاں انہی صاحب کے صاحبزادے کا نکاح پڑھایا، اور اس سے اگلے روز یعنی ۲۶ دسمبر جمعرات کی سہ پہر کو کراچی واپس تشریف لے آئے۔ حضرت کی زندگی کا یہ آخری سفر تھا، جو وفات سے صرف تین ماہ قبل ہوا۔

پنڈی اور لاہور کے ان سفروں میں عبرت و موعظت، امر بالعرف و نہی عن المنکر اور آپ کے خاص انداز نصیحت و تربیت کی جو مثالیں سامنے آئیں، وہ ایک مستقل درس کی حیثیت رکھتی ہیں۔ جن کے لئے ایک مستقل ہی مضمون کی ضرورت ہے۔ حضرت کی بھی خواہش تھی کہ ان تینوں سفروں کی روئداد قلب بند کر کے محفوظ کر لی جائے، مگر بھی شائع نہ کی جائے، اس کی کچھ یادداشتیں احقر کے پاس درج ہیں، کچھ حلفے ہیں میں ہیں، اور کچھ باتیں عزیزم حارث سلمہ کے پاس کیسٹ میں محفوظ ہیں۔ یہ سبق آموز تفصیلات بھی ایک ماہم امانت ہیں، اللہ تعالیٰ مرتب کرنے کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین۔

## سفر آخرت کی تیاری

یوں تو حضرت والا کی پوری زندگی، سفر آخرت ہی کی تیاری کا عمل ہیہم تھی، لیکن ہمارے سامنے اپنی موت کا ذکر صراحت سے نہیں فرماتے تھے۔ جب سے نفاہت زیادہ ہو گئی تھی اس وقت

سے البتہ اشارۃً کنیۃً اس طرف بھی توجہ دلاتے رہتے تھے، چند ماہ سے تو تقریباً ہر ملاقات میں کسی نہ کسی انداز سے اس کا اظہار فرمانے لگے تھے۔ اور اب تو وہ خاموشی سے بالکل آخری تیاریوں میں لگے ہوئے تھے، وصیت نامے کو بھی آخری شکل دے رہے تھے۔ جب کسی معاملے میں ذرا بھی تردد ہوتا تو اہل فتویٰ علماء سے تحقیق کئے بغیر عمل نہ فرماتے تھے۔ وفات سے تقریباً تین ماہ قبل احقر کو تنہائی میں اپنی کچھ قلمی یادداشتیں سپرد کرتے ہوئے فرمایا کہ:

”عرصہ دراز سے میں وصیت نامے کے سلسلے میں یہ یادداشتیں لکھا رہا ہوں، جو میری املاک وغیرہ سے متعلق ہیں، تم انکا شرعی نقطہ نظر سے بغور جائزہ لیکر انکو اس طرح مرتب اور مکمل کر دو کہ کوئی بات شریعت کے خلاف نہ رہ جائے۔ اور کسی بات میں ایسا اجمال نہ رہ جائے جو میرے بعد وارثوں کے لئے کسی الجھن کا باعث ہو“

یہ حضرت کا کرم بالا اے کرم تھا کہ احقر کو اس ذاتی خدمت پر مامور فرما کر اظہارِ محبت فرمایا۔ لیکن وہ وصیت نامہ احقر نے کسی قلبی کشمکش اور کیسے لرزتے ہوئے ہاتھوں سے لکھا، اس کیفیت کی یاد آج بھی دل میں تازہ ہے۔

عارفی کچھ احتیاط ضبطِ غم کی حد بھی ہے

خود پھینکے جاتے ہیں اب تو اپنے سوزِ دل سے ہم

جب وصیت نامے کا مسودہ تیار کر کے خدمت میں پیش کیا تو حضرت پڑھ کر بہت مسرور

مطمئن ہوئے، اور حسبِ عادت دعائیں دیں۔ لیکن میرا سہما سہما دل گویا حضرت سے

کا یہ شعر پڑھ رہا تھا:

اے کاش کہ تھم جائے یہ گردشِ دہراں

کچھ ٹھہر جائیں یہ شام و سحر اور

## وفات سے پونے دو ماہ قبل کی ایک مجلس

حضرت کے ارشادات پر وقتِ قلمبند کرنے کا احقر کو شاذ و نادر ہی موقع ملا، کبھی کبھی مختلف

پرچوں پر مختصر یادداشتیں نوٹ کر لیا کرتا تھا، وہ پرچے احقر کے پاس محفوظ ہیں، اس مضمون میں حضرتؒ کے جوارشات احقر نے نقل کئے ہیں، ان میں جگہ جگہ ان پرچوں سے بھی مدد لی گئی ہے۔ آخر میں ایک کاپی اسی کام کے لئے بنائی تھی، مگر اس میں صرف تین چار ہی مجالس کی خاص نما باتیں نوٹ کرنے کی نوبت آئی تھی کہ حضرت والا ہم سے نصحت ہی ہو گئے۔ اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ۔ اُن مجالس کی بعض باتیں یہاں نقل کرتا ہوں۔

وفات سے پونے دو ماہ قبل پیر ۲۲ جمادی الاول ۱۳۲۸ھ کی مجلس شروع ہوئی تو چہرے پر ضعف و اضمحلال کے آثار بہت تھے، فرمانے لگے:-

”بے ثباتی کا استعمار ضعیفی میں زیادہ ہونے لگتا ہے

جو وقت بھی سکون سے گزرے نہ ہے نصیب

کیا اعتبار گردشِ لیل و نہار کا“

پھر فرمایا

”وہم نے انگریزی، اردو اور فارسی کی بہت کتابیں پڑھیں، نہ جلنے لکھنے موضوعات

اور علوم کی کتابیں پڑھ ڈالیں، مگر ایک موضوع پر کوئی کتاب نہ پڑھی، اور وہ ہے

برزخ“

اس کے بعد شاہ بوعلی قلندر رحمۃ اللہ علیہ کی خود نوشت سوانح کے حوالے سے اُکا ایک

عجیب و غریب واقعہ سنایا، جو برزخ ہی سے متعلق ہے، اور آخر میں فرمایا کہ:-

”و انہوں (شاہ بوعلی قلندرز) نے حساب کر کے لکھا ہے کہ برزخ کے چار منٹ

دنیا کے دو سو سال کے برابر ہوتے ہیں“

پھر آپ نے حضرت مولانا رشید احمد صاحب گنگوہی رحمۃ اللہ علیہ کے تمام ۱۰ اور حضرت صابر

صاحب رحمۃ اللہ علیہ (پیران کلیر) کا ایک دلچسپ واقعہ سنایا، اس کا تعلق بھی برزخ سے تھا۔

اسی مجلس میں یہ واقعہ سنایا کہ حضرت (تھانویؒ) کو ایک صاحب نے لکھا کہ:-

”حضرت سے اتنے عرصہ سے تعلق ہے، مگر میں دنیا اور دینی بچوں کے کاموں

میں اتنا پھنسا رہتا ہوں کہ کچھ حاصل نہ کر سکا۔ اب آخر وقت ہے، مجھے توکل تو



ہے ہی نہیں، وعار بھی صرف بیوی بچوں کے لئے مانگتا ہوں۔ تَحْسِبُ الدُّنْيَا  
وَالْآخِرَةَ ۝

حضرت (تھانوی) نے جواب لکھا کہ

”تم نے جو باتھا اٹھا کر وعار مانگی، یہ خود علامت ہے توکل کی۔ اور تم جو  
کہتے ہو کہ اب آخرت میں اللہ کو کیا منہ دکھاؤں گا، تو اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: (إِنَّ الَّذِينَ  
يَحْتَرُونَ رِقَبَهُمَا بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ)۔ (بے شک جو لوگ  
اپنے پروردگار سے بے دیکھ ڈرتے ہیں ان کے لئے مغفرت اور اجرِ عظیم ہے)  
\_\_\_\_\_ اور بیوی بچوں کے کاموں میں اشتغال تو جہادِ اکبر ہے“

## پیر کی آخری مجلس

پیر کی سب سے آخری مجلس، جو ۵ رجب ۱۴۲۸ھ (۱۷ مارچ ۱۹۸۶ء) کو ہوئی، اس میں  
حضرت کی طبیعت پر اضمحلال بہت تھا، آپ نے بے ساختہ فارسی کا یہ شعر پڑھا:  
گاہ آہم می رابید، گاہ اشکم می بُرد  
نقدِ من یک مشت خاک و این چنین سیلاب

مگر فرما ہی فرمایا

”حضرت (حکیم الامت) نے فرمایا ”میں گھر سے خانقاہ آ رہا تھا، راستہ میں  
اپنی کوتاہیوں کو یاد کرتا جا رہا تھا کہ ایسا معلوم ہوا کہ مجھ سے فرمایا جا رہا ہے کہ دیکھو ہم  
نے تم کو فلاں صلاحیت عطا فرمائی، فلاں فلاں احسانات کئے، فلاں فلاں کام کروائے  
\_\_\_\_\_ بس اللہ تعالیٰ کے انعامات ہی یاد آتے رہے“

پھر فرمایا کہ اس شعر کا استحضار کرتے رہنا چاہیئے کہ

سرد ہو جاتی ہے مُت جاہِ دنیا جس کے بعد  
اک ذرا سی بات ہے سہلے دل کہ، پھر کیا اسکے بعد

اس کے بعد فرمایا کہ

”اپنی کوتاہیوں پر ضرور نظر کرنی چاہیے، مگر اس میں آنا انہماک بھی نہیں  
ہونا چاہیے کہ اللہ تعالیٰ نے جن امور صالحہ کی توفیق اور صلاحیت عطا فرمائی ان کا  
کفرانِ نعمت ہونے لگے۔“

عارفی پیر مغاں نے ایسی کچھ ڈال نظر  
میری ہستی سرسرا عجاہز ہو کر رہ گئی۔“

پھر آپ نے مندرجہ ذیل اشعار پڑھے  
آنکھوں سے میں نے بھر لیا سب دل میں عارفی ساقی کی چشمِ مست میں جتنا فخر تھا

جسے پینا ہوا آنکھوں سے وہ میری بچ میں آئے مراد دل چشمِ مستِ ناز ساقی کا ہے مے خانہ  
حضرتِ والائے مصرعہ آخر حیات میں بار بار سُنا کر تے تھے آج بھی پڑھا کہ  
”کریں گے یاد مجھ کو تہ توں یارانِ مے خانہ“

پھر فرمایا کہ

”تشنگی اور چیز ہے اور ناکارگی کا احساس اور چیز ہے، تشنگی اچھی چیز ہے،  
احساسِ ناکارگی خطرناک ہے، گناہوں کا ارتکاب خطرناک ہے۔ اعمالِ صالحہ  
میں کمی کا اند کو تاہی کا احساس پسندیدہ ہے۔ یہ احساس کہ بن نہیں پڑتا یہ تشنگی  
ہے، یہ تکمیل کی طلب ہے۔ تکمیل کسی کی نہیں ہوتی۔“

تری شانِ بے نیازی کا مقام کس نے پایا  
مری سجدہ گاہ حیرتِ ترا حنِ آستانہ

آبِ کم جو تشنگی آور بدست  
تا، بجوشد آبِ از بالا و پست

عاشقی نام ہے تسلیم و وفاداری کا۔“

دارالعلوم کارواں تعلیمی سال اختتام پذیر تھا، اسی مجلس کے آخر میں حضرت والا کے مشورے سے طے ہوا کہ دارالعلوم (کوننگی) میں ختم بخاری شریف، آنے والے اتوار (۱۱ رجب) کو سہ پہر تین بجے رکھا جائے، حضرت نے بھی شرکت کا وعدہ فرمایا، اور یہ کہ حضرت ۱۲ بجے دوپہر کو دارالعلوم تشریف لے آئیں گے، اور صبح محمول وہیں کھانا کھا کر ظہر سے قبل آرام فرمائیں گے۔

## زندگی کی آخری تکلیف

طے شدہ نظم کے مطابق اتوار ۱۱ رجب ۱۴۰۶ھ (۲۳ مارچ ۱۹۸۶ء) کو دارالعلوم کے اساتذہ کرام اور طلبہ، حضرت والا کی تشریف آوری کی خوشیاں منا رہے تھے، صبح ہی سے ہر شخص اس کوشش میں تھا کہ حضرت کی تشریف آوری سے قبل اپنے سب کاموں سے فارغ ہو جائے تاکہ حضرت کی طرف ہمہ تن متوجہ رہ سکے اور ان کے ارشادات سے زیادہ سے زیادہ مستفید ہو سکے۔ لیکن کاتب تقدیر نے جو فیصلہ ازل میں کر لیا تھا اس کی کسی کو خبر نہ تھی۔ وہاں حضرت کو آج ہی کے وقت ہی سے پیٹ کی جان لیوا تکلیف شروع ہو چکی تھی، مگر اٹھاسی سال کے سن میں ہمت اب بھی جوان تھی، اس شدید تکلیف میں آپ تہجد، فجر کی نماز، اور صبح کے تمام معمولات پورے کر کے ناشتہ کئے بغیر وقت مقرر پر مطب تشریف لے گئے۔ دوا استعمال فرماتے رہے، مگر مریضوں کا علاج بھی اسی تنہی سے جاری رہا۔ پھر طے شدہ وقت کے مطابق ہمارے محترم دوست جناب ممتاز محمد بیگ صاحب کے ہمراہ وہاں سے دارالعلوم (کوننگی) بھی ٹھیک بار بجے پہنچ گئے۔

گاڑی سے اترے تو سفید راق کپڑے اور ہلکے بادامی رنگ کی حدری زیب تن کئے ہوئے تھے، بدن سے حسب سابق عطر کی ہلکی ہلکی خوشبو پھوٹ رہی تھی، اور چہرے پر حسب عادت تبسم تھا۔ لیکن تکلیف کی شدت سے پیٹ پر ہاتھ رکھے ہوئے، قدرے جھک کر چل رہے تھے، چہرے کی رنگت سفید پڑ گئی تھی، اور آنکھوں میں نقاہت نمایاں تھی، احقر کے دفتر میں داخل ہوتے ہی دروازے پر تھڑپی تو فرمایا کہ ”ماشاء اللہ اب یہ دفتر بہت اچھا ہو گیا ہے، ابھی ہمارے پیٹ میں صبح سے بہت تکلیف ہے، طاقت دوانائی بالکل نہ تھی، مگر ختم بخاری کی سعادت سے محروم

کو دل نہ مانا، بیٹھتے ہی دریافت فرمایا کہ ”مولوی تقی سفر سے کب آئیں گے؟“ وہ بیرون ملک سفر میں تھے، میں نے عرض کیا کہ ”انشاء اللہ بدھ تک آجائیں گے“ آپ حسب معمول باتیں کرنا چاہتے تھے، گفتگو شروع بھی فرماتے مگر ہاتھ بار بار پیٹ پر جاتا، اور فرماتے ”بھئی یہ عجیب قسم کی تکلیف ہے۔“ حضرت کے مددے میں شدید تکلیف تھی، جسکی لہریں بار بار اٹھتی تھیں، حضرت کے لئے بیٹھنا مشکل ہو رہا تھا، ہم لوگوں نے عرض کیا کہ ”حضرت تھوڑی دیر آرام فرمائیں، لیکن حضرت نے ٹلا دیا۔“ مجھے معلوم تھا کہ حضرت قیلولہ کے وقت سے قبل ہرگز نہ لیٹیں گے، خود ہی فرمایا کرتے تھے کہ ”مجھے تسطوں میں لیٹنے کی عادت نہیں۔“ لیکن تکلیف مدد سے بڑھتی دیکھی تو ہم سب کے اصرار پر آرام فرمانے کے لئے تیار ہو گئے، کھانا کھانے سے انکار پہلے ہی فرا چکے تھے، اور قیلولہ کا وقت بھی ہو گیا تھا۔ احقر کے غریب خانے پر تشریف لائے اور مردانہ کمرے میں لیٹ گئے، کسی کرٹ چین نہ تھا، ہر ممکن تدبیر و علاج کے باوجود تکلیف میں اضافہ ہو رہا تھا۔ مجھ سے فرمایا کہ ”تم جا کر مہانوں کے ساتھ کھانے میں شریک ہو جاؤ، میں نے عرض کیا کہ ”مہانوں کے ساتھ شریک ہونے کے لئے بھی حضرت مولانا سبہان محمد صاحب مدظلہم تشریف لے گئے ہیں، اور مجھے حضرت والا کے پاس چھوڑ گئے ہیں۔ اب وہاں میرا جانا ضروری نہیں، میں حضرت ہی کے پاس رہنا چاہتا ہوں۔“ خاموش ہو گئے، پھر نماز ظہر کے وقت فرمایا کہ ”تم نماز مسجد میں پڑھ آؤ، میں نے عرض کیا کہ ”حضرت آپ ہی کے ساتھ پڑھ لوں گا۔“ اجازت دے دی، پھر ظہر کی نماز باجماعت کھڑے ہو کر ادا کی، استسنا، وافر، اور نماز کے بعد کے تمام معمولات پورے فرما کر لیٹ گئے۔ دارالعلوم کے مدرس، عزیز مولوی راحت علی سلمہ، اور جناب ممتاز صاحب جو ٹیلر بھی حضرت کی خدمت میں رہے، پیٹ پر تیل کی مالش کر دئی، مگر تکلیف اور بڑھ گئی تھی، ختم بخاری کا وقت پوچھا، احقر نے عرض کیا کہ ”تین بجے کا وقت طے ہے، لیکن وقت میں رد و بدل آسانی سے ہو سکتا ہے۔“ حضرت والا نے رد و بدل سے منع فرما دیا۔ جب تین بجے تک بھی تکلیف میں اضافے کا یہی عالم رہا تو فرمایا ”ایسا معلوم ہوتا ہے ختم بخاری میں شرکت نہ ہو سکے گی،“ پھر فرمایا ”اب ہمیں گھر واپس جانا چاہیئے،“ ہمیں واپسی کی بھی قدرت نہ رہے، گھر والے پریشان ہوئے گئے۔ اس عرصے میں جناب حافظ عتیق الرحمن صاحب، محترم زبیری صاحب، اور حضرت کے بہت سے پروردگار نے شہر سے یہاں



پہنچ چکے تھے، سب کے ساتھ گاڑیاں تھیں، اور ہر ایک کی خواہش تھی کہ حضرت کو اپنی گاڑی میں لے جائے، لیکن حضرت والاؒ نے سب سے فرمادیا کہ ”آپ حضرات ختم بخاری میں شریک ہوں، میں انوار کی گاڑی میں چلا جاؤں گا۔“

غرض آپ عزیز انوار صاحب کی گاڑی میں دعائیں دیتے ہوئے رخصت ہو گئے۔ کیا خبر تھی کہ اب دارالعلوم میں آپ کی واپسی یہاں کے قبرستان میں دائمی آرام ہی کے لئے ہوگی۔ حضرت محمدؐ سے دردمزور تھا، مگر محد کے تکلیف حضرت والا کو پہلے بھی ہو جایا کرتی تھی، اس لئے شروع میں اسکی سنگینی کا اندازہ نہ ہوا۔ تکلیف کی اس شدت میں ۲۴ گھنٹے سے زائد عرصے تک حضرت کوئی غذا لے سکے نہ کوئی مشروب، طبیعت کسی چیز کو قبول نہ کرتی تھی جس سے گردوں کے عمل میں رکاوٹ پیدا ہوگئی اور پیشاب بند ہو گیا۔ پیر کو عصر کے وقت در دولت پر حاضر ہوا تو لوگ حسب معمول مجلس کے لئے آئے ہوئے تھے، مگر حضرت والا سخت تکلیف کے سبب باہر تشریف نہ لاسکے تھے۔ ۵

دیکھ کر یہ رنگ عالم دم بخود ہوں عارفی  
جانے یہ کیا ہو رہا ہے، جانے کیا ہونے کو ہے

ہم سب کی رائے تھی کہ اس تکلیف میں حضرت والا کو کس کے آنے کی اطلاع نہ دی جائے۔ لیکن حضرت کے چھوٹے صاحبزادے جناب مستحسن صاحب نے ازراہ محبت احقر کی آمد کی اطلاع کر دی، اور حضرت نے فوراً یاد فرمایا ۵

پاتا ہوں عجب کیفیت، جذب محبت

اے محویتِ دل یہ مجھے کس نے کیا یاد (حضرت عارفی)

حضرت والا کا چہرہ جس پر ہمیشہ تبسم ہی دیکھا تھا، تکلیف اور نقاہت کی شدت سے گویا سُت گیا تھا، احقر کو دیکھتے ہی سلام و دعا کے بعد کرب آمیز لہجہ میں فرمایا ”مولوی رفیع یہ دو دن ہم پر بڑی تکلیف کے گذرے ہیں۔“ میں نے اس خیال سے کہ حضرت کو بونانہ پڑے عرض کیا، ”حضرت مجھے سب تفصیل معلوم ہے، حضرت کو بہت تکلیف ہے، لیکن انشاء اللہ تشویش کی بات نہیں، جلد آرام ہو جائے گا۔“ فرمایا ”کچھ پڑھ کر میرے اوپر

دم کر دو، احقر نے تعمیل کی۔ اسکے بعد رات گئے تک مختلف ڈاکٹروں نے معائنہ کیا، ٹیسٹ وغیرہ کا سلسلہ جاری رہا، صاحبزادگان کے مشورے سے محترم جناب ڈاکٹر محمد الیاس صاحب کو حضرت کے علاج اور تیمارداری کا نگران مقرر کیا گیا۔

ایسے میں کس کا دل مانتا تھا کہ گھر واپس جائے، لیکن اہل محبت کا ہجوم تھا جس سے علاج و تیمارداری میں رکاوٹ پیش آرہی تھی، اس لئے مناسب یہی سمجھا گیا کہ ہم سب واپس چلے جائیں۔ اس کے بغیر ہجوم ٹھٹھنے کا امکان نہ تھا، اس لئے بادل ناخواستہ رات گیارہ بجے کے بعد واپس جانا پڑا۔

ہم ہوئے واپس، دائے ناکامی شوق  
رہ گئی اُس بزم ہی میں دکن تندر داک ساتھ (حضرت ماری)  
منگل کو پیٹ کی تکلیف تو تقریباً رفع ہو گئی، لیکن گردوں کا عمل تشریش ناک حد تک رک گیا تھا۔ احقر حاضر ہوا تو دواؤں کے اثر سے حضرت والا غنودگی کی کس حالت میں تھے ایک منجیف سی نظر احقر پر ڈالی اور پوچھا ”مولوی نفع میں؟“ میں نے فوراً عرض کیا ”جی حضرت! رفع ہوا“ حضرت کے لئے ہم سب بہت دعا مانگیں کر رہے ہیں ”پھر“ اچھا بھئی ”لہذا آنکھیں بند فرالیں جیسے زبان حال سے اپنا یہ شعر فرما رہے ہوں ۛ

یہ بھی ہے ایک منظر حسن خیال دوست

جس حال میں ہوں رہنے بھی دیں چارہ گر مجھے

بدھ کی صبح حضرت والا کو ناظم آباد بڑا کے ”المرقضہ ہسپتال“ میں داخل کرنا پڑا، جہاں پہنچ کر حالت میں قدمے بہتری کی صورت نظر آنے لگی۔ اہل محبت کمرے کی کھڑکی ہی سے حضرت کی زیارت کرتے تھے۔ رات کو کوئی ہسپتال سے واپس جانے کو تیار نہ تھا۔ ۛ

مجھ کو رہنے دو یونہی محو تماشاے جمال

نہیں ہوتی جو مرے شوق کی سیری دہی (حضرت ماری)

لیکن معالجین نے اطمینان دلایا، اور بتایا کہ اب حالت بہتر اور امید افزا ہے، رات میں مزید بہتری کی امید ہے۔ اب آپ حضرات کو واپس چلا جانا چاہیئے۔ چنانچہ رات کو حضرت والا کے پاس

آپ کے چھوٹے پوتے عزیزم حارث سلمہ حضرت کے چچا زاد بھائی کے صاحبزادے، اور جناب ممتاز صاحب (جوئیل) رہے۔ میں بھی کمرے میں قریب جا کر حضرت پر آخری بار دم کر کے گیارہ بجے کے بعد واپس آگیا۔ ۷

لے چلے سب تری محفل سے مرادیں دل کی  
ہم بھی اک حسرتِ ناکام لئے جاتے ہیں (حضرت عارفی)  
اس وقت حضرت والا سوچکے تھے۔ محترم ڈاکٹر حافظ محمد الیاس صاحب نصف شب کے بعد تک وہیں رہے۔ اور جب حالت مزید بہتر محسوس کی تو وہ بھی گھر چلے گئے۔ کیا خبر تھی اب حضرت والا بزبانِ حال وہی فرما رہے ہیں جو کبھی بزبانِ شعر فرمایا تھا کہ ۷  
آؤ وقتِ نزع، اب کیا کام مشکل رہ گیا  
ادراک دم بھر کا باقی قصہ دل رہ گیا  
نوحہ غم بے صدا میں نغمہ شادی خموش  
اب یہ سازِ زندگی عبرت کے قابل رہ گیا

عزیزم دوست جناب محمد کلیم صاحب کا گھر اس ہسپتال کے بالکل قریب تھا، طے ہوا کہ وہ نمازِ فجر کے فوراً بعد ہسپتال پہنچ کر حضرت کی خدمت میں رہیں گے، ان سے احقر نے وعدہ لے لیا تھا کہ صبح ہسپتال پہنچتے ہی وہ احقر کو فون پر حضرت کے حال کی اطلاع دیں گے۔ رات اُمید و بیم کی حالت میں گزری جس منزلِ دشوار پہ اب دل کا گزر ہے

اک ایک قدم پر وہاں آتا ہے عطیاد (حضرت عارفی)

صبح کو جمعرات تھی، رجب ۱۴۳۹ھ کی ۱۵، اور مارچ ۱۹۸۹ء کی ۲۷ تاریخ۔ نمازِ فجر کے فوراً بعد ٹیلی فون کی گھنٹی بجی۔ دھڑکتے ہوئے دل کے ساتھ ریسیور اٹھایا تو کلیم صاحب نے زندہ ہی ہوائی آواز میں وہ المناک خبر سنائی۔ جس کا دھڑکا کئی مہینے سے لگا ہوا تھا۔ ہم دوبارہ یتیم ہو گئے۔ حضرت والا ٹھیک اذانِ فجر کے وقت، اذان کا جواب دیتے ہوئے اس دار فانی سے رخصت ہو چکے تھے۔ انا للہ وانا الیہ راجعون۔

صبح گیارہ بجے کے قریب حضرت والا کو جناب کلیم صاحب اور ان کے ایک ساتھی غسل دے رہے

تھے، حضرت کے خادم خاص جناب احمد حسین صاحب غل کا سامان اٹھا اٹھا کر دے رہے تھے، احقر حضرت والاؒ کی کتاب ”احکام میت“ کھولے اس میں لکھی ہوئی ہدایات کلیم صاحب کو تیار ہا تھا، تاکہ کوئی بات حضرت کی ہدایات کے خلاف نہ ہو جائے۔ برادر عزیز مولانا محمد تقی صاحب سلمہ احقر کے ساتھ تھے۔ برادران محترمانہ جناب بھائی حسن عباس صاحب بھائی احسن عباس صاحب اور بھائی مستحسن صاحب وہ تیرکات نکال نکال کر ہمارے حوالے کر رہے تھے، جو حضرت نے اپنے کفن کے لئے جمع کیے تھے۔

جنازہ تقریباً ساڑھے تین بجے دارالعلوم (گورنگی) پہنچا، خلقِ خدا پر روانہ وار ٹوٹی پڑتی تھی۔ حضرت والد رحمۃ اللہ علیہ کے انتقال کے بعد یہ دارالعلوم میں سب سے بڑا مجمع تھا جنازے کی چارپائی میں لمبے لمبے بانس باندھ دیئے گئے تھے، تاکہ زیادہ سے زیادہ اہل محبت کا نذر دینے کی حسرت پوری کر سکیں، جنازہ آدمیوں کے سمندر میں تیرتا ہوا معلوم ہوتا تھا، علماء و طلبہ کا بھی عظیم اجتماع تھا۔

برادر عزیز مولانا محمد تقی صاحب سلمہ نے تقریباً ساڑھے چار بجے دارالعلوم کے اسی میدان میں نماز جنازہ پڑھائی جس میں پونے دس سال قبل حضرت والاؒ نے ہمارے والد ماجدؒ کی نماز پڑھائی تھی۔ نماز جنازہ میں شرکت کے لئے پنڈی، لاہور، سکھر، حیدرآباد اور نہ جانے کتنے شہروں سے لوگ آئے تھے، صدر پاکستان جنرل محمد ضیاء الحق صاحب بھی پنڈی سے خاص اسی مقصد کے لئے عین وقت پر ایئر پورٹ سے سیدھے دارالعلوم پہنچے تھے۔ گورنر سندھ، اور اعلیٰ شہری حکام نے بھی نماز جنازہ میں شرکت کی سعادت حاصل کی۔ دارالعلوم کے قبرستان میں حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کے قریب ہی آپ کو سپرد خاک کیا گیا۔ اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُونَ۔ نہ جانے حضرت والاؒ نے یہ شعر کس کے بارے میں فرمایا تھا۔

نیز نگِ حسن و عشق کی وہ آخری بہار

تُربت تھی میری اور کوئی اشک بار تھا

مگر میرے پاس اس سوال کا ایک جواب ہے، اور وہ یہ کہ حضرت کا یارِ شاد و انشا اللہ اپنے ان تمام اہل محبت سے منقطع ہو جوا ر پر آکر ایصالِ ثواب کے ذریعہ حق محبت ادا کریں گے۔ کیونکہ زندگی میں



بھی حضرت والا اپنے پاس آنے والوں سے بہت ہی خوش ہوا کرتے تھے، اور حضرتؒ ہی نے یہ بھی فرمایا تھا کہ ۷

مجھے حق محبت کی بس اتنی ہی تمنا ہے  
 دعا خیر کر لینا جو مری یاد آجائے  
 احقر نے یہ صفحات ایسے عالم میں سپرد قلم کئے ہیں کہ جذبات کا نہ الفاظ ساتھ دے سکے،  
 نہ قوتِ گویائی بس حضرت والا کے اشعار ہی قدم قدم پر میرے جذبات کی ترجمانی کرتے رہے ۷  
 کچھ یہی محسوس ہوتا ہے وہ شور و فوج میں  
 ہر ادائے دوست جیسے تیرے دل کا راز ہے (حضرت عارفؒ)  
 جب ہی تو حضرت والا نے فرمایا تھا کہ ۷

اے عارف اپنے دل پر شوق کی باتیں  
 اچھا ہے کہ تو اپنی زبان ہی سے سنائے  
 ممکن ہے کوئی کاشفِ اسرارِ محبت  
 پھر محفلِ احباب میں آئے کہ نہ آئے  
 اور یہ فرما کر بھی حضرتؒ ہم سے بے دل کی بات کہیں بے کہ ۷  
 محفلِ سوز و گداز غم کو گرائے گا کون  
 اہلِ دل کو اپنے دردِ دل سے دپائے گا کون

موزن ہے کس کے دل میں آتشِ ستیاں غم  
 مستیِ خون جگر آنکھوں سے برمائے گا کون  
 کس پہ غاری ہے جنونِ عشق کی وارفتگی  
 یوں زبان پر والہانہ رازِ دل لائے گا کون

عارف میرا ہی دل ہے محرمِ ناز و نسیاں  
 بعد میرے رازِ حسن و عشق سمجھائے گا کون

جب یہ صفات لکھنے شروع کئے تو وہم و خیال میں بھی نہ تھا کہ مفسرین آتاہوں ہو جائے گا ۛ  
 صرف دو آنسو بہت تھے شرح غم کے واسطے  
 کیا خبر تھی منتظر دریا کا دریا دل میں ہے  
 (حضرت عارفؒ)

مگر حضرت عارفؒ نے تو یہ پیشینگوئی خود ہی فرادی تھی کہ ۛ  
 جب کبھی اہل دنیا یاد کریں گے مجھ کو  
 جانے کیا کیا مری روداد کے عنوان ہونگے

اللہ تعالیٰ ہم سب کو "اہل دنیا" میں شامل فرما کر صبر جمیل عطا فرمائے، حضرت کے فیوض سے  
 نیا و آخرت میں مالا مال رکھے، اور حضرت کے درجات اعلیٰ علیین میں بلند سے بلند ترقی فرمائے۔  
 فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا اخَذَ وَلَهُ مَا اعْطٰی وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ۔ فصَبْرٌ  
 جَمِيلٌ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْهِ التَّكْلَانِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ  
 الْعَظِيمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى رَسُوْلِهِ الْكَوْنِ الْوَحِيْمِ

کتبہ احقر  
 محمد رفیع عثمانی عفا اللہ عنہ  
 ۲۱ ربیع الثانی ۱۴۰۷ھ  
 شب جمعرات

شریف گمر کی عورتوں میں آج کل کے معاشرے میں آزادی بہت بڑھتی جا رہی ہے۔  
 روایات شرم و حیا اور پردہ داری ختم ہوتے جا رہے ہیں، محرم و نامحرم کا امتیاز ختم ہوتا جا رہا ہے  
 جس کا نتیجہ یہ ہے کہ ناگفتنی واقعات کثرت سے رونما ہو رہے ہیں جنسی قانونِ فطرت کبھی نہیں  
 بدل سکتا، اس لئے محنت احتیاط کی ضرورت ہے۔  
 از: اخلاص عارفیہ

مفتی اعظم پاکستان حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ  
کے علمی و عملی کمالات پر مشتمل (البلاغ کا)



# مفتی اعظم ہند

۱۳۸۸ صفحات پر مشتمل

اس نمبر کے نکتے والوں میں

شیخ الحدیث حضرت مولانا محمد زکریا صاحب  
حکیم الاسلام حضرت مولانا قاری محمد طیب صاحب  
حضرت مولانا محمد منظور نعمانی صاحب — حضرت مولانا شمس الحق صاحب افغانی  
حضرت مولانا سرفراز خان صاحب مہمد — حضرت مولانا غلام اللہ خان صاحب  
حضرت مولانا محمد اشرف خان صاحب (پشاور) — حضرت مولانا عثمان محمود صاحب مظاہری  
حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب مدظلہ — حضرت مولانا محمد تقی صاحب عثمانی نائب بہتر درہم  
حضرت مولانا عاشق ہانی صاحب بلند شہری — صاحب ڈاکٹر حمید اللہ صاحب (پیرس)  
جناب ڈاکٹر امتیاز حسین قریشی صاحب — جناب ڈاکٹر تنزیل الرحمن صاحب

ان دوسرے بہت سے مشاہیر اہل علم و اہل تہذیب شامل ہیں۔



ناشر  
ملت سٹیشن ایڈیٹورز کراچی

نمبر کی قیمت وقت کے قریب تیرہ روپے  
گنتی ہے یعنی صفحہ ۸۰ روپے

• حضرت مولانا محمد رفیع عثمانی

## شیخی و سنی

بچپن میں جب سے آنکھ کھولی۔ اپنے گھر میں وقت کے بڑے بڑے علماء، صلحاء، بزرگوں اور زعماء کی آمد و رفت روزمرہ کے معمول میں شامل دیکھی۔ والد ماجد حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب قدس سرہ کی شخصیت ان تمام حضرات میں ایک مرکزی حیثیت کی حامل تھی، اور یہ سب حضرات آپ سے ملنے کے لئے ہمارے گھر میں تشریف لایا کرتے تھے۔ اور اس طرح وہ عظیم شخصیتیں جنہیں دیکھنے اور جن سے ملنے کے لئے ہزار ہا لوگ آرزو مند رہتے ہیں، ہمیں اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے کسی محنت کے بغیر گھر بیٹھے انکی زیارت اور ملاقات کی سعادت حاصل ہوتی رہتی تھی۔

حضرت والد صاحب سے ملاقات کے لئے آنے والی ان عظیم شخصیتوں کے رنگ مختلف تھے اور ہر ایک کے ساتھ والد صاحب کا معاملہ بھی اسی نسبت سے الگ تھا، جہاں کا اکرام تو شریعت کا حکم ہے، لیکن اس اکرام کے انداز مختلف ہوتے تھے، کہیں یہ صرف اکرام و اعزاز ہوتا، کہیں اس اکرام و اعزاز میں قدر وانی، کہیں اس کے ساتھ عقیدت اور کہیں اس سے بھی آگے بڑھ کر محبت کی چاشنیاں شامل ہو جاتی تھیں۔



اسی دور میں (تقریباً سنہ ۱۳۷۱ھ مطابق سنہ ۱۹۵۰ء و ۱۹۵۱ء کے زمانے میں جبکہ میرے بچپن کا بھی آغاز ہی تھا اور ہم برنس روڈ کے ایک مکان میں رہتے تھے) میں دیکھتا تھا کہ کبھی کبھی ایک دراز قات اور حبیب و شکیل بزرگ تشریف لاتے ہیں، انتہائی دلکش اور نورانی چہرہ، خوبصورت سفید ڈاڑھی، روئے منور پر سدا کھلتا ہوا تبسم، لباس میں نفاست اور سادگی کا حسین آمیزہ، سر پر تھانوی انداز کی گول ٹوپی، غرض حسن، قنات، سادگی، خوش خلقی اور نورانیت کا ایک پیکر مجسم جس کی ادا ادا سے محبت و شفقت کی خوشبو پھوٹی، اور بات بات سے پھول جھڑتے تھے۔

جب کبھی یہ بزرگ ہمارے یہاں تشریف لاتے تو حضرت والد ماجد قدس سرہ کا انداز استقبال بالکل مختلف ہوتا تھا، جس میں اکرام و اعزاز سے زیادہ قلبی مسرت، بے تکلفی اور اظہار دوستی کا رنگ نمایاں تھا۔ حضرت والد صاحب انہیں دیکھتے ہی بے ساختہ کھل اٹھتے، چہرے پر لباشاشت آجاتی، آگے بڑھ کر دلبہان بے تکلفی کے ساتھ ان کا استقبال کرتے، انہیں اپنے قریب بٹھاتے، اور زبان حال سے گویا یہ فرماتے کہ "مشاغل کے اس بڑے توڑ بنگامے میں مجھے کچھ دیر آپ کی پرکیف رفاقت کی ضرورت تھی اور پھر کچھ وقت کے لئے دونوں بزرگ ماحول سے بے نیاز ہو کر ان باتوں میں غور ہو جاتے جو اس وقت ہماری سمجھ سے تو باہر تھیں، مگر اتنا احساس ضرور ہوتا کہ یہ باتیں دونوں کے لئے اتنی پرکیف ہیں کہ ان سے دونوں پر مہرہ در کا ایک عالم طاری ہے۔

بچپن کی بے شعوری کے باوجود کچھ تو ان بزرگ کی نورانیت کا اثر تھا، اور کچھ والد صاحب کے اس غیر معمولی انداز استقبال کا کہ دل انکی طرف کھینچتا تھا، لیکن معلوم کچھ نہ تھا کہ یہ کون بزرگ ہیں، والد صاحب کے پاس آنے والے عموں کا چونکہ بڑے مشہور اور مقتدر لوگ ہوتے تھے جن میں چوٹی کے علماء سے لیکر اونچے درجے کے زعماء اور وزرات تک شامل تھے، اس لئے قیاس یہی تھا کہ یہ بھی کوئی بہت بڑے عالم ہوں گے، ان کا کوئی بڑا حلقہ درس ہوگا، انہوں نے بہت سی کتابیں لکھی ہوں گی، یا کسی جماعت کے سربراہ ہوں گے۔

ایک روز میں حضرت والد صاحب کے ساتھ جا رہا تھا تو دیکھا کہ والد صاحب رابن روڈ کی ایک چھوٹی سی دوکان میں داخل ہونے لگے جس پر کسی ہومیوپیتھک ڈاکٹر کے نام کی تختی لگی ہوئی تھی، اندر پہنچے تو وہی نورانی بزرگ کمرے کی مرکزی نشست پر تشریف فرما تھے، جو والد صاحب کو دیکھ کر

اپنی نشت سے کھڑے ہو گئے اور دونوں زندگوں میں ملاقات کا وہی انداز شروع ہو گیا۔ دل نے کہا :  
 ”یا اللہ! یہ ہو میو پیٹیک ڈاکٹر ہیں“ بہ اقل تو صورت و سیرت عام ڈاکٹر دل کی صورت و سیرت سے  
 کوئی مطابقت نہیں رکھتی تھی، دوسرے یہ بات سمجھ سے بالاتر تھی کہ حضرت والد صاحب رحمہ اللہ علیہ  
 کو محض ایک ہو میو پیٹیک ڈاکٹر سے ایسا والہانہ تعلق کیسے ہو سکتا ہے؟ غرض ذہن چکر اکر رہ گیا۔  
 یہ بعد میں معلوم ہوا کہ درحقیقت یہ بزرگ حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی صاحب  
 تھانوی قدس سرہ کے خلیفہ ہیں، وہی حکیم الامت جن کا تذکرہ اور جنگی باتیں شب و روز حضرت والد  
 صاحب کی زبانی کان میں پڑتی رہتی تھیں، اور جبے بارے میں یہ تسوگشتی میں پڑا ہوا تھا کہ وہ اس  
 آخری دور میں اسلامی زندگی کا غنیمتیں نمونہ تھے۔ اور یہ بات تو ایک مدت بعد سمجھ میں آئی۔ اور یہی وہ  
 ڈاکٹر تو ایک بہانہ ہے، وہ درحقیقت اس مطلب میں قلب و روح کی بیماریوں کا علوت ہوتا  
 ہے۔

یہ تھاسیدی و سندی و مولانا دمرمدی حارف باللہ حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحب قدس سرہ کے ساتھ  
 اس ناچیز کا ابتدائی تعارف :

اس کے بعد بارہا حضرت سے شرفِ نیاز حاصل ہوا، لیکن اس وقت مطلب میں جب بھی  
 حاضری ہوتی، کسی نہ کسی جسمانی بیماری کے ملنے کے سلسلے میں ہوتی، حضرت دوا بھی عنایت فرماتے،  
 اور دعاؤں سے بھی نہال فرمادیتے، دواؤں کی قیمت حضرت نے بھی قبول نہ فرمائی، شروع میں  
 ایک مرتبہ احقر نے دبی زبان سے قیمت پیش کرنے کی درخواست کی تو جواباً حضرت نے بیسے بیسے نیزہ تبسم  
 کے ساتھ احقر کو دیکھا جیسے فرما رہے ہوں: ”کوئی اپنے باپ کو بھی قیمت پیش کیا تو بے؟“ میں! اس کے بعد  
 کبھی اس پیشکش کی نہ صرف جرأت ہوئی، بلکہ اس کا خیال بھی گستاخی معلوم ہوا۔

وقت گذر گیا، حضرت کا مطلب راسن روڈ سے پانچ گنا منتقل ہو گیا۔ رہائش میں وہیں اختیار  
 فرمالا، اس کے بعد حاضری اور کم ہو گئی، تاہم گاہے گاہے حضرت والد صاحب قدس سرہ کے ساتھ اور  
 کبھی کسی علاج کے سلسلے میں جانا ہوتا، حضرت کی شفقت و محبت کا وہی انداز تھا۔

دارالعلوم سے فاضلے میں فارغ التحصیل ہونے کے بعد حضرت والد صاحب قدس سرہ کی  
 تعلیم و تلقین اور تربیت کے اثر سے یہ خیال تو مسلسل دائگیر رہا کہ تنہا حروف و نقوش کا کتابی علم انسان

کی اصلاح کے لئے ہرگز کافی نہیں، اور جب تک انسان کسی مرشد سے اصلاح کا تعلق قائم نہ کرے۔ عادتاً اس کے اعمال و اخلاق کی اصلاح نہیں ہوتی، لیکن ساتھ ہی اس بات سے ڈر بھی لگتا تھا کہ یہ تعلق بڑا نازک ہے، اس میں شیخ کے ساتھ صرف عقیدت ہی نہیں، مناسبت اور محبت بھی درکار ہے، اور اپنے نفس کی شرارتوں کی بنا پر خوف یہ تھا کہ اگر اس تعلق کا حق ادا نہ ہو سکا تو یہ بات بڑی خطرناک بھی ہے۔ اس لئے اسی ادھیڑ میں کئی سال گزر گئے۔

اس وقت تک احقر حضرت والد صاحب قدس سرہ کے سوا کسی بزرگ کی مجلسوں میں باقاعدہ شریک نہ ہوا تھا، دوسرے بزرگوں کی خدمت میں کبھی کبھار ہی جانا ہوا اور دل میں یہ خیال بھی تھا کہ جب گھر میں خود ایک دریائے فیض رواں ہے تو کہیں اور جانے کی ضرورت بھی نہیں، اس کے علاوہ الحمد للہ، حضرت والد صاحب قدس سرہ کے ساتھ تعلق صرف ایک باپ بیٹے کی محبت کی حد تک محدود نہ تھا، بلکہ محمد لہند انکی عقیدت سے بھی دل معمور تھا، اور مناسبت کا بھی یہ عالم تھا کہ انکی ہر بات دل میں اُترتی ہوئی محسوس ہوتی تھی، اس لئے احقر نے ابتداءً حضرت والد صاحب قدس سرہ ہی سے بیعت کی درخواست کی، لیکن جواب میں حضرت نے ارشاد فرمایا کہ ”اگرچہ ماضی میں ایسی مثالیں بھی ملتی ہیں کہ باپ نے بیٹے کو بیعت کیا ہے، لیکن نسبی تعلق کے ساتھ اس تعلق کا حق ادا کرنا بہت مشکل ہوتا ہے، اور عموماً یہ نسبی تعلق افاضہ اور استفاضہ میں رکاوٹ بن جاتا ہے، اس لئے مناسب یہ ہے کہ کسی اور سے بیعت کا تعلق قائم کرو۔“

اس کے بعد جب گرد و پیش پر نگاہ ڈالتا تو اپنی اصلاح و تربیت کے لئے اس وقت ایک ہی ہستی پر نظر جاتی، اور وہ تھی حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ کی ذات والا صفات، حضرت والد صاحب قدس سرہ آپ کے بارے میں اصفہر گونڈی کا یہ شعر اکثر پڑھا کرتے تھے۔

خطِ ساغر میں رازِ حق و باطل دیکھنے والے

ابھی کچھ لوگ ہیں ساتی کی محفل دیکھنے والے

اور کبھی حضرت مجذوب قدس سرہ کا یہ شعر۔

مجھے دیکھ آئینہ یار ہوں میں

جلا کر وہ حسنِ دل دار ہوں میں

چنانچہ بالآخر ۱۳۸۹ھ مطابق ۱۹۶۹ء میں ایک دن حضرت والد صاحب قدس سرہ برادر  
معلم حضرت مولانا مفتی محمد رفیع عثمانی صاحب مدظلہم العالی اور احقر کوئے کر حضرت کی خدمت میں  
تشریف لے گئے، اور بیعت کی فرمائش کر دی۔ حضرت والا نے حسبِ معمول محبت و شفقت کا معاملہ فرمایا  
اور اگلے دن دونوں کو تنہائی میں حاضر ہونے کی ہدایت فرمائی۔ اگلے دن ہم دونوں حاضر ہوئے اور  
بفضلہ تعالیٰ حضرت کے دستِ حق پرست پر بیعت کا شرفِ عظیم حاصل ہوا۔

اس طرح بفضلہ تعالیٰ حضرت والا سے سترہ سال اس ناکارہ کا اصلاحی تعلق رہا۔ جب  
ان سترہ سالوں پر نگاہ باز گشت ڈالتا ہوں تو یہ طویل مدت حضرت والا کی ناقابلِ بیان شفقتوں  
عظمتوں اور توجہات اور دوسری طرف اپنی انتہا درجے کی غفلتوں اور بے علییوں کی ایک عجیب  
و غریب داستان نظر آتی۔ ایک طرف اللہ تعالیٰ کے اس انعام و کرم پر حق شکر ادا کرنا میرے بس سے  
باہر ہے کہ اس نے نہ صرف حضرت کی خدمت میں حاضری کی، بلکہ حضرت والا کے غیر معمولی الطاف  
و عنایات کا موردِ بخشش کی توفیق مرحمت فرمائی، اور دوسری طرف اپنی ان غفلتوں اور کوتاہیوں پر حق  
استغفار نہیں ہو سکتا کہ اس سرچشمہ فیض سے لے کر قریب ہونے کے بلوجود میں اس سے کما حقہ  
استفادہ نہ کر سکا۔

آج جب حضرت والا کے بارے میں یہ سطور لکھ رہا ہوں تو حضرت کی ایک ایک ادائیگی  
دلنوازاں بات کا تقاضا کر رہی ہے کہ اسی کو موضوعِ سخن بنایا جائے، لیکن یہ فلم کرنا مشکل ہے  
کہ بات کہاں سے شروع کی جائے ؟

جہاں تک حضرت کے عام حالاتِ زندگی کا تعلق ہے، ان پر حضرت کے بڑے صاحبزادہ گرامی  
برادر مکرم جناب جن عباس صاحب نے اپنے مضمون میں احقر ہی کی درخواست قبول فرما کر  
تفصیل سے روشنی ڈالی ہے، اور وہی اس کے اہل بھی تھے، اس لئے ان باتوں کا اعادہ کرنا نہیں  
ہے، البتہ دل یہ چاہتا ہے کہ اس مضمون میں حضرت والا کے دلکش مزاج و مذاق کی کچھ باتیں  
ہدیہِ ناظرین کروں۔ کیونکہ وہ ہم سب کے لئے بڑی سبق آموز اور ہمیشہ کے لئے مشعلِ راہ

ہیں۔  
احقر کو یہ دعویٰ نہیں ہے کہ میں حضرت کے مزاج و مذاق کو پوری طرح سمجھ چکا ہوں،



لیکن کسی اللہ والے کے مزاج و مذاق کی مثال درحقیقت ایک خوشبو کی سی ہے جو اسکی ادا ادا سے پھوٹتی ہے، اور نا اہل سے نا اہل شخص کا مشام جان بھی اس سے معطر ہوئے بغیر نہیں رہتا، اس لئے اس بات کا اعتراف کرنا بھی ناشکری ہوگی کہ الحمد للہ، اللہ تعالیٰ نے ایک مدت دراز تک اپنی کسی کوشش یا استحقاق اور اہلیت کے بغیر بھی اس خوشبو سے فیض یاب ہونے کا موقع بخشا ہے اس لئے انشاء اللہ اسکی مختلف کیفیات کا اظہار اپنی حدود سے تجاوز نہیں ہوگا۔

## حضرت حکیم الامت کا خاص رنگ

حضرت والا کے انداز زندگی اور مزاج و مذاق کا مرکزی نقطہ اپنے شیخ (حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ) کی اتباع اور زندگی کی ایک ایک نقل و حرکت کو اپنی زندگی میں رنگنے سے عبارت تھا۔ احمق کے والد ماجد حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب قدس سرہ نے حضرت کی تالیف ”ماثر حکیم الامت“ پر اپنے تاثرات تحریر فرماتے ہوئے لکھا ہے کہ:-

”کراچی میں ہمارے محترم بزرگ حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحب دامت برکاتہ کو حق تعالیٰ نے حضرت سے چند دیوہ خصوصیتیں عطا فرمائی ہیں، خلیفہ مجاز تو بھلا اللہ اور بھی بہت ہیں مگر شیخ کا رنگ جن میں جھلکتا ہو، وہ کم ہی ہوا کرتے ہیں ہمارے محترم خواجہ عزیز الحسن صاحب مجذوب نے فرمایا تھا ہے

مجھے دیکھ، آئینہ یار ہوں میں

جلا کردہ دست و لہار ہوں میں

اے تعالیٰ مبالغہ اور تزکیہ من غیر حق سے محفوظ رکھیں۔ ڈاکٹر صاحب کو دیکھ کر مجھے

مجنوب صاحب کا یہ شعر یاد آیا کرتا ہے:-

(ماثر حکیم الامت ص ۱۲)

اس کی ایک وجہ خود حضرت ہی کے ارشادات سے یہ سمجھ میں آئی کہ حضرت والا نے اپنے علم اور عمل دونوں کو سو فی صد مکمل طور پر اپنے شیخ سے وابستہ فرمایا تھا، خود فرمایا کرتے تھے کہ اور لوگوں نے تو دوسرے متعدد ذرائع سے بھی علم دین حاصل کیا، لیکن میرا مبلغ علم جو کچھ ہے وہ حضرت

حکیم الامت قدس سرفہی کے ارشادات، آپ ہی کی تصانیف، آپ ہی کے مواعظ و ملفوظات اور آپ ہی کے انداز زندگی کا مطالعہ ہے۔ لہذا دین کے بارے میں میری ساری معلومات حضرت ہی کی رہنمائی میں ہیں، اور میں نے پورے کا پورا دین اپنے طرف کے مطابق حضرت ہی سے حاصل کیا۔ اور چونکہ ایک مسلمان کو اپنی دینی زندگی میں جتنی ضروریات پیش آسکتی ہیں، شاید ہی ان میں سے کوئی ضرورت ایسی ہو جو حضرت کی تقریر و تحریر یا آپ کے انداز زندگی سے واضح نہ ہو گئی ہو، اس لئے حضرت والا کا ایک مذاق یہ جس تھا کہ جو کچھ اپنے شیخ سے سیکھا، اسی میں اپنی زندگی کو رنگتے ہیں اس درجہ محو اور منہمک رہے کہ کسی دوسرے کی تصانیف اور دوسری مقالات و مضامین کے مطالعے کی طرف التفات ہی نہیں ہوا، نتیجہ یہ کہ دینی معاملات میں فکری اور عملی طور پر ایک ہی رنگ چڑھتا پیدا گیا جس میں کوئی دوسری آمیزش نہیں تھی۔ حضرت والا اپنے اس مذاق کا ذکر کرتے ہوئے کیا خوبصورت شعر چڑھا کرتے تھے:

موتہ گل میں پو پھتے ہو کیا حال تم اس دیونے کا

بہن نظر نے ایک ہی گل میں سارا گلستاں دیکھ لیا ہے

آپ حضرت کی سوانح حیات میں پڑھیں گے کہ حضرت دواؤں میں نظامی کے رستے سے علم دین کی طرف نہیں آئے، بلکہ آپ نے انگریزی تعلیم سے اپنی زندگی کا آغاز کیا، لیکن طالب علمی ہی کے دور سے حضرت حکیم الامت سے تعلق قائم ہو گیا۔ جو بالآخر بیعت پر منتج ہوا۔ بیعت کے وقت حضرت حکیم الامت نے آپ سے فرمایا تھا کہ اپنے حالات پر مشتمل ہر ہفتے خط لکھتے رہا کریں، چنانچہ فرماتے تھے کہ الحمد للہ، اس کے بعد سے ہر مہینے چاہی خط حضرت والا کو لکھے، اور حضرت کے وصال تک اس معمول میں سب موقوف نہیں آیا۔

اس کے علاوہ وقتاً فوقتاً خود خانقاہ تھانہ بھون حاضر ہو کر کئی کئی ہفتے حضرت حکیم الامت کی خدمت میں رہنے اور آپ کی صحبت سے فیض یاب ہونے کا سلسلہ بھی جاری رہا۔ طلب صادق تھی، اللہ تعالیٰ نے قلب میں استعداد بدرجہ کمال عطا فرمائی تھی، شیخ سے والہانہ تعلق کی روایت نصیب تھی۔ اور ہر قدم پر شیخ سے استفادے کا جذبہ بقیاب موجزن تھا، نتیجہ یہ ہوا کہ یہ جو ہر قابل شیخ کی صحبت سے جلا پاپا کرکندن ہوا گیا۔

حضرت حکیم الامت قدس سرہ کی جو ہر شائے نگاہ نے یقیناً اندازہ فرمایا تھا کہ اللہ تعالیٰ آپ سے دین کی خدمت کا کام لینے والے ہیں، اس لئے حضرت کی جو خصوصی توہیات آپ کو حاصل رہیں، اور جس خصوصی تعلق کا مظاہرہ آپ کے ساتھ فرمایا، اس کے واقعات بہت طویل ہیں، لیکن چند جہزیل چند مثالوں سے اس کا کچھ اندازہ ہو سکے گا یہ واقعات احقر نے حضرت ہی سے سنے ہوئے ہیں:-

(۱) حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ کے ایک صاحبزادے بچپن ہی میں انتقال کر گئے تھے، وہ صاحبزادے عجیب و غریب اور غیر معمولی اوصاف کے حامل تھے، نابالغی کے باوجود اتباع شریعت کا حیرت انگیز حد تک اہتمام کرتے تھے بس کے کئی واقعات حضرت سے سنے۔ بہر کیف! انکا انتقال ایسے وقت ہوا جب حضرت ڈاکٹر صاحب اپنی اہل خانہ کے ساتھ خانقاہ تھانہ بسون میں قیام کے لئے آئے ہوئے تھے۔ جب صاحبزادے کا انتقال ہوا تو آپ انکی تجسین و کفن کے انتظام کی وجہ سے ظہر کے بعد کی مجلس عام میں شریک نہ ہو سکے۔ فرماتے ہیں کہ عصر کے بعد میں ایک چارپائی پر بیٹھا ہوا تھا کہ حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب تشریف لائے، اور میرے ساتھ چارپائی پر بالکل متصل ہو کر بیٹھ گئے، اندازاً یہاں تک کہ گویا کندھے سے کندھا ملائے کا خاص اہتمام فرما رہے ہیں۔ میں نے اسکی وجہ پوچھی تو فرمایا کہ دراصل آج حضرت والا (یعنی حضرت تھانوی قدس سرہ) ظہر کے بعد کی مجلس میں مسلسل آپ کا ہی بڑی محبت کے ساتھ ذکر فرماتے رہے، یہاں تک کہ میرے دل میں یہ داعیہ قوت سے پیدا ہوا کہ آپ کے ساتھ جتنا اتصال نصیب ہو سکے اتنا ہی بہتر ہے!

یہ واقعہ دونوں ہی بزرگوں کے مقام بلند کا منفرد واقعہ ہے، ایک طرف اس سے اندازہ ہوتا ہے کہ حضرت حکیم الامت کو حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ سے کس وجہ تعلق تھا، اور دوسری طرف اس سے والد ماجد حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب قدس سرہ کے اپنے شیخ کے ساتھ عشق کی کیفیت اور نہایت و تواضع عجیب و غریب انداز سلنے آئے ہیں کہ شیخ نے جس کا ذکر محبت کے ساتھ کر دیا، وہ بھی ایسا محبوب ہو گیا کہ اسکے ساتھ معمولی اتصال کو بھی غنیمت سمجھنے لگے۔ یہ حب فی اللہ کی خاصیت ہے کہ اس میں رقابت کا گندہ نہیں ہوتا۔ وہاں محبوب کے ساتھ نہایت رکھنے والی ہر چیز محبوب ہوتی ہے۔

(۲) حضرت ڈاکٹر صاحب فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت حکیم الامت قدس سرہ کی مجلس میں بار بار گوشش کی کہ حضرت کے ملفوظات قلم بند کر دوں، لیکن وہاں حضرت کی زیارت اور آپ کی

باتیں سننے کی محویت ایسی رہتی تھی کہ کبھی اس پر قدرت نہ ہوتی، ان حضرات پر رشک بھی آتا تھا جو مجلس میں ملفوظات قلمبند کرتے رہتے تھے۔

ایک مرتبہ حضرت حکیم الامت قدس سرہ مسجد کے حوض کے پاس ٹہل رہے تھے، میں بھی حاضر تھا، میں نے اپنی اس الجھن کا ذکر حضرت ہی سے کر دیا کہ ملفوظات لکھ کر محفوظ رکھنے کو بیت دل چاہتا ہے، مگر قدرت نہیں ہوتی۔ حضرت نے جواب میں ارشاد فرمایا: "تم خود ہی صاحب ملفوظ کیوں نہ بنو؟" — میں سن کر حیران اور ششدر رہ گیا کہ میں صاحب ملفوظ کیسے بن سکتا ہوں؟ کچھ توقف کے بعد حضرت نے خود ہی فرمایا کہ "ملفوظات کا مقصد انہیں رُمت نہیں ہوتا، بلکہ جب آپ نے کوئی بات سنی اور طبیعت نے اسے قبول کر لیا تو وہ آپ کی ہوئی۔ اب انشاء اللہ جب موقع آئے گا وہ فائدہ پہنچائے گی" اور تائید یہ بھی فرمایا کہ "جب اللہ تعالیٰ کو کام لینا ہوگا تو وہ باتیں خود بخود یاد آجائیں گی۔"

(۳) حضرت حکیم الامت قدس سرہ جب مرضِ وفات میں تھے تو حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ علالت کی خبر سن کر تھانہ جموں پہنچے، اس وقت شدتِ علالت کی بنا پر معالجین نے ملاقاتوں سے منع کیا ہوا تھا، لیکن جب حضرت حکیم الامت قدس سرہ کو آپ کی آمد کا علم ہوا تو اندر بلالیا، اس وقت حضرت چارپائی پر آنکھیں بند کئے ہوئے لیٹے تھے، آپ کو دیکھ کر سلام و دعا کے بعد بے ساختہ ارشاد فرمایا: "آپ نے کیوں زحمت کی؟ آپ کا نقصان ہی کیا تھا؟"

اللہ اکبر! اس ایک فقرے سے حضرت حکیم الامت قدس سرہ نے اپنے اس مُریدِ رشید کے ساتھ تعلقِ خاطر کی کس کیفیت کو ظاہر فرادیا۔ مقصد یہ تھا کہ آپ نظردوں کے سامنے ہوں یا نہ ہوں، قریب ہوں یا دور، آپ کے ساتھ تعلق، آپ کی طرف توجہ اور آپ کے لئے دعاؤں کی کیفیت یکساں ہے۔ اس لئے اگر خود نہ آتے تب بھی آپ کا کوئی نقصان نہ تھا گویا اے غائب از نظر کہ شدی ہم نشینِ دل

می بنیت عیاں و دعای فرستمت

(۴) اسی مرضِ وفات کا واقعہ ہے کہ حضرت حکیم الامت قدس سرہ کو اسہالِ کبدی کی سنگین شکایت تھی متعدد معالجین کا علاج ہو چکا تھا، مگر فائدہ نہیں ہو رہا تھا۔ ایک دن حضرت حکیم الامت



قدس سرؔ نے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ سے فرمایا کہ: ”آپ کے ہومیوپیتھک طریقہ علاج میں بھی تو اس بیماری کی کچھ موثر دوائیں ہونگی،“ آپ نے اثبات میں جواب دیا تو حضرتؒ نے فرمایا کہ ”اللہ کے نام پر اب آپ علاج شروع کیجئے“ چنانچہ آپ نے تین دن حضرتؒ کے علاج کا شرف حاصل فرمایا۔ اس دوران حضرتؒ نے آپ سے پرہیز کے بارے میں پوچھا تو چونکہ اسہال کبیری کی تکلیف تھی، اس لئے آپ نے متعدد غذاؤں کو منع کر دیا، دوسری طرف حضرتؒ کی حالت یہ تھی کہ بہت کم چیزوں کی طرف رغبت ہوتی تھی، اور جن چیزوں کی طرف رغبت ہوتی انہیں مبالغہ میں منع کر دیتے، نتیجہ یہ کہ غذا گھٹتے گھٹتے معدوم سی ہو گئی، اور اس کی وجہ سے کمزوری بہت بڑھنے لگی۔ حضرت حکیم الامتؒ نے ایک مرتبہ آپ سے اپنی کچھ مرغوب اشیاء کے بارے میں پوچھا تو آپ نے طبی نقطہ نظر سے انہیں مضر سمجھ کر ان سے پرہیز کا مشورہ دیا، اس پر حضرت حکیم الامتؒ نے فرمایا:

”واہ بھئی ! یہ ساری پرہیز کی مشق ہمارے ہی لئے ہے، ہم نے تو کوئی خاص پرہیز نہیں کرایا تھا، ذرا سی نوک پلک سنوار کر جانے کہاں سے کہاں پہنچا دیا؟“ حضرت فرماتے تھے کہ یہ سن کر مجھ پر لرزہ سا طاری ہو گیا۔ واقعہ حضرت والاؒ نے ہمارے باطنی علاج میں شفقت و حکمت کا وہ طریقہ اختیار فرمایا کہ کٹھن سے کٹھن منزل سے بھی سبک سیر گذر گئے، اور راستہ کی مشکلات کا پتہ بھی نہ چلا۔

(۵) ایک اور عجیب و غریب واقعہ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ قدس سرؔ سے کئی بار سنا۔ فرماتے ہیں کہ ایک مرتبہ حضرت ڈپٹی علی سجاد صاحب رحمۃ اللہ علیہ (جو حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے خسر بھی تھے، اور پھر باپ بھی) اور حضرت حکیم الامتؒ قدس سرؔ کے مجازِ صحبت بھی) حضرت حکیم الامتؒ قدس سرؔ کے پاس تھانہ بھون گئے ہوئے تھے۔ میں نے بھی وہاں حاضری کا ارادہ کر لیا، اور سفر کے تمام انتظامات مکمل کر کے حضرتؒ کو اطلاع بھی دے دی کہ میں حاضر ہو رہا ہوں۔ اتفاق سے انہی دنوں حضرت حکیم الامتؒ قدس سرؔ نے تھانہ بھون سے (غالباً کانپور ہی کے) سفر کا ارادہ فرمایا۔ اس موقع پر حضرت ڈپٹی علی سجاد صاحبؒ نے حضرتؒ سے عرض کیا کہ ”حضرت سفر پر تشریف لے جا رہے ہیں، اور عبدالحی

(قدس سرہ) یہاں آنے والے ہیں“ اس پر حضرت حکیم الامتؒ نے فرمایا کہ ”میں نے انہیں منع کر دیا ہے“ حضرت ڈپٹی صاحبؒ مطمئن ہو گئے کہ شاید خط یا مار وغیرہ کے ذریعہ روک دیا ہوگا۔

حضرت ڈاکٹر صاحبؒ فرماتے ہیں کہ ادھر میں سفر کا بالکل پختہ ارادہ کر چکا تھا، تمام انتظامات مکمل تھے، لیکن جب سفر کا وقت آیا تو قلب میں سفر کی طرف سے اس قدر شدید انقباض پیدا ہوا کہ میں عجیب تر و دکا شکار ہو گیا، طبیعت کو بہت آمادہ کرنے کی کوشش کی، لیکن دل کسی طرح آمادہ نہ ہو کر دیتا تھا، ہزار دل کو سمجھایا کہ تمام انتظامات مکمل ہیں، اطلاع بھی دے چکا ہوں، تمنا بھون حاضری کا موقع بھی بہترین ہے، لیکن انقباض تھا کہ بڑھتا گیا۔ یہاں تک میں نے مجبور ہو کر سفر کا ارادہ ملتوی کر دیا۔

بعد میں پتہ چلا کہ حضرتؒ سفر پر روانہ ہو چکے تھے، اور اس کے بعد (غالباً) کانپور ہی میں) حضرتؒ سے ملاقات ہوئی تو میں نے سارا واقعہ آپ سے ذکر کیا۔ ادھر حضرت ڈپٹی صاحبؒ جو یہ سمجھے ہوئے تھے کہ حضرتؒ نے کسی خط کے ذریعہ مجھے روک دیا ہے، انہیں جب یہ پتہ چلا کہ میرے پاس حضرتؒ کی طرف سے کوئی اطلاع نہیں پہنچی تو وہ بھی بہت حیران ہوئے، اور حضرتؒ سے پوچھا، تو حضرتؒ نے اس مفہوم کی کوئی بات ارشاد فرمائی کہ ”کیا ایک مؤمن کے قلب میں اتنی بھی طاقت نہیں کہ وہ اپنے کسی دوست کو کوئی پیغام پہنچا سکے؟“

اللہ اکبر! حضرت حکیم الامتؒ قدس سرہ کا معمول تصرفات وغیرہ کے طریقے استعمال کرنے کا نہیں تھا، ان چیزوں کو کوئی خاص اہمیت دیتے تھے، لیکن حضرت ڈاکٹر صاحبؒ قدس سرہ کے ساتھ تعلق خاطر کا یہ عالم کہ اس پر جتنا غور کیجئے، شیخ و مرید دونوں کے مقام بلند اور باہم تعلق کا غیر معمولی انداز سامنے آتا ہے کہ ع

جو سانس آ رہا ہے کسی کا پیام ہے

ان چند واقعات ہی سے یہ اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ حضرت حکیم الامتؒ قدس سرہ نے جس جوہر قابل کی اس تعلق خاطر کے ساتھ تربیت فرمائی ہو، وہ خانقاہ تھا نہ بھون سے کیا کچھ بکر نکلا ہوگا؟ بس!

حضرت تیغ کا زندگی کی ایک ایک ادھر ایسا گہرا رنگ چڑھا کہ  
عالم پیر معال نے ایسی کچھ ڈالی نظر  
میری ہستی سرسبز اعجاز ہو کر رہ گئی

اس رنگ کی پوری تشریح و توضیح کے لئے تو دفتر کے دفتر چاہئیں، اور مجھ جیسے شخص کے لئے  
اس کا کافقہ بیان ممکن بھی نہیں، لیکن حضرت کی حیات طیبہ کے جو واقعات نظر سے گذرے، یا خود حضرت  
ہی سے سننے میں آئے، ان سے یہ رنگ خود بخود جھلکتا ہے، اس لئے یہ واقعات چند عنوانات کے  
تحت پیش خدمت ہیں، اُمید ہے کہ اللہ ان کا ذکرہ خود احقر کے لئے اور پڑھنے والوں کے لئے  
مفید ہوگا۔

## اتباع شریعت و سنت

حضرت والدؒ کی حیات طیبہ اور اسکے مخصوص رنگ کا سب سے پہلا عنوان ”اتباع شریعت و  
سنت کا متواتر اہتمام“ ہے، جو آپ کی زندگی میں رچا بسا ہوا تھا۔ ہر ہر قدم پر شریعت کے باریک احکام  
کی طرف بھی دھیان رہتا تھا، اگرچہ آپ نے درس نظامی کی باقاعدہ تحصیل نہیں فرمائی تھی، لیکن حضرت حکیم الامت  
قدس سرہ کے فیضِ صحبت سے شریعت کے بہت سے وہ مسائل ہمیشہ مستحضر رہتے تھے جو اچھے اچھے فارغ  
التمہیل علماء کو بھی بسا اوقات یاد نہیں ہوتے۔ اسکے باوجود بعض اوقات ذاتی معاملات میں اپنے پھوٹوں  
اور خدام تک سے شریعت کا حکم معلوم فرما کر اس پر عمل فرماتے تھے۔

جب احقر کے والد ماجد حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب قدس سرہ کی وفات ہوئی تو  
حضرت کئی روز تک ہم لوگوں کی تسلی کے لئے دارالعلوم تشریف لاتے رہے، ایک دن چہرے پر تعب  
اور نقابت کے آثار نمایاں تھے، برادر مکرم حضرت مولانا مفتی محمد رفیع عثمانی صاحب مدظلہم  
نے احقر سے کہا کہ ”حضرتؒ کے لئے گھر سے خیرہ لے آؤ“ احقر نے خیرہ لے جا کر حضرت کو پیش کیا  
تو ہاتھ میں لے کر فرمایا: ”کیا یہ خیرہ حضرت مفتی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا تھا؟“ احقر نے اثبات  
میں جواب دیا تو فرمایا کہ ”اس میں تو تمام ورثا کا حق ہے، تنہا آپ کے لئے کسی کو اس کا حصہ کرنا جائز  
نہیں“ جب احقر نے اطمینان دلایا کہ الحمد للہ تمام ورثا بالغ ہیں، اور سب یہیں موجود ہیں، جسکی عین  
خوشی یہ ہے کہ حضرت والا استعمال فرمائیں“ تو حضرت نے اسے نوش فرمایا۔

اب یہ وہ مسئلہ ہے جس کی طرف عمل کے وقت آجکل لچھے اچھے علماء اور مفتیوں کی نگاہ بھی لم ہی جاتی ہے، لیکن چونکہ شریعت پر عمل طبیعت ثانیہ بن چکا تھا، اس لئے علی ضرورت کے تمام احکام صرف علم میں نہیں، بلکہ عمل میں ہر وقت مستحضر رہتے تھے۔

اتباع سنت کا خاص فہم تھا، اور ہر کام میں اس بات کی جستجو رہتی تھی کہ اس میں سنت کا طریقہ معلوم ہو، اسی جستجو کے نتیجے میں آپ نے ”اسوۂ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم“ کے نام سے وہ کتاب تالیف فرمائی جو زندگی کے ہر شعبے میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے اسوۂ حسنہ کی تفصیلات پر مشتمل ہے، اور جو اردو کے علاوہ، عربی، فارسی، انگریزی، سندھی، پشتو اور نہ جانے کتنی زبانوں میں شاید لاکھوں کی تعداد میں چھپ چکی ہیں، اور اللہ تعالیٰ نے اسے عجیب قبولِ عام عطا فرمایا ہے۔

مسنون اعمال اور مستحبات کا اہتمام اور فضائل کے حصول کی حرص زندگی کے ہر معاملے میں نمایاں تھی، جب تک قویٰ نے ساتھ دیا، صفِ اول میں نماز باجماعت سے تخلف نہیں ہوتا تھا، اور اتنی دیر پہلے مسجد میں تشریف لیجاتے کہ تحیۃ المسجد اور سنن قبلیہ دونوں کو الگ الگ ادا کرنے کا وقت مل جاتے۔ جائز یہ بھی ہے کہ سنن قبلیہ ہی میں تحیۃ المسجد بھی نیت کر لی جائے، لیکن حضرت والا عموماً تحیۃ المسجد علیحدہ اور سنتیں علیحدہ پڑھتے تھے۔

فرمایا کرتے تھے کہ فرائض و واجبات کی ادائیگی تو ہر مسلمان کے ذمے لازم ہی ہے، اور وہ حقِ عبادت ہے، لیکن نوافل و مستحبات حقِ محبت ہیں، اور انکی کبھی ناقدری نہیں کرنی چاہیے، بلکہ حتی الوسع انکی انجام دہی کا اہتمام کرنا چاہیے۔

ایک مرتبہ حضرت والا مغرب سے پہلے اپنے مکان سے دارالعلوم نانک واڑہ میں مجلس منتظر کے اجلاس میں شرکت کے لئے تشریف لے گئے، احقر اور برادر مکرم حضرت مولانا مفتی محمد رفیع صاحب ظلم بھی ساتھ تھے، اجلاس مغرب کے متصل بعد ہوا تھا، مغرب کا وقت راستے ہی میں ہو گیا، اور راستے کی ایک مسجد میں اتر کر مغرب کی نماز پڑھی، چونکہ نانک واڑہ پہنچنے کی جلدی تھی، اس لئے سنت مؤکدہ پر اکتفا فرمایا، اور صلوٰۃ الاذان پڑھے بغیر روانہ ہو کر نانک واڑہ پہنچ گئے۔ مجلس کے اختتام پر وہیں عشاء کی نماز پڑھی، نماز کے بعد مسجد سے باہر تشریف لائے اور گاڑی میں بیٹھنے لگے تو احقر سے پوچھا کہ: ”تقی میاں! آج اذان کا کیا ہوا؟“ احقر نے عرض کیا کہ ”حضرت! آج تو جلدی کی وجہ



سے وہ رہ گئیں، فرمایا کہ ”کیوں رہ گئیں؟“ اس وقت نہ پڑھ سکے تھے تو عشاء کے بعد پڑھ لیتے، پھر فرمایا کہ ”اگرچہ فقہی طور نوافل کی قضا نہیں ہے، لیکن ایک سالک کو ایسے موقع پر تلاقی کے طور پر جب موقع ملے، معمول کی نوافل ضرور پڑھ لینا چاہئیں، خواہ ان کا اصل وقت گزر گیا ہو، آج مجھ سے بھی اپنے وقت میں ادابین ادا نہیں ہو سکی تھیں، لیکن الحمد للہ، میں نے مشلہ کے بعد عشاء کے تواج کے ساتھ چھ رکعات مزید بطور تلاقی ادا کیں، اور معمولاً ایسا ہی کرتا ہوں“ پھر فرمایا کہ ”تم نے حدیث میں پڑھا ہوگا کہ اگر کوئی شخص کھانے کے آغاز میں بسم اللہ پڑھنا بھول جائے تو کھانے کے دوران بھی جب یاد آئے تو بسم اللہ اولہ و آخرہ پڑھ لینا چاہئے۔ بس اسی پر دوسری نوافل کو بھی قیاس کر لو“

آخر عمر میں بھی جب عمر اسی سال سے متجاوز ہو چکی تھی، اور ضعف و امراض کا غلبہ تھا، نوافل و اوراد کے معمولات اسی طرح جاری رہے۔ ہم لوگوں کو سبق دینے کے لئے ایک مرتبہ فرمایا کہ ایک رات مجھے بخار تھا، جسم بُری طرح ٹوٹ رہا تھا، آخر شب میں معمول کے مطابق آنکھ کھلی تو کسل کا اتنا غلبہ تھا کہ اٹھنے کی بالکل طاقت محسوس نہیں ہو رہی تھی، خیال آیا کہ ضعف بھی ہے اور علالت بھی، اگر ایک رات یہ معمول قضا ہو جائے تو کچھ حرج نہیں۔ لیکن میں نے اپنے نفس کو بہلایا کہ ذرا دیر اٹھ کر بیٹھ جاؤ، حضوری کا وقت ہے، کچھ دعائیں کر کے سو جانا، نماز نہ پڑھنا۔ اس خیال کے تحت اٹھ کر بیٹھ گیا، پھر سوچا کہ جب اللہ تعالیٰ نے اتنی توفیق دے دی ہے تو چلو نیم ہی کے ساتھ کچھ رکعتیں بیٹھ کر پڑھ لینا۔

ابھی تو ان کی آہٹ پر میں آنکھیں کھول دیتا ہوں

وہ کیسا وقت ہو گا جب نہ ہو گا یہ بھی امکان میں

چنانچہ اٹھ کر غسل خانہ تک گیا اور مصیبت تک پہنچ گیا، وہاں پہنچ کر میں نے کہا کہ غسل خانہ تک نہ کھڑے ہو کر چلے گئے نماز ہی بیٹھ کر کیوں پڑھی جائے؟ چنانچہ جلدی سے میں نے کھڑے ہو کر نیت باندھ لی، اور الحمد للہ، رزقے کا پتہ ہی سہی، لیکن معمول پورا کر لیا۔

یوں تو فرمایا کرتے تھے کہ رخصت کے مواقع پر رخصت پر ضرور عمل کرنا چاہئے، عزیمت اللہ تعالیٰ کی غفلت کا حق ہے تو رخصت اللہ تعالیٰ کی محبت کا حق ہے، اس لئے رخصت پر عمل کرتے ہوئے کبھی دل تنگ نہ ہونا چاہئے، حدیث میں بھی ہے کہ اِنَّ اللہَ یحبُّ اَنْ تُؤْتیَ رخصۃً کما

محبت اُن توفیق عظامتہ (اللہ تعالیٰ جس طرح اپنی عزیمت پر عمل کو پسند فرماتے ہیں، اسی طرح رخصتوں پر عمل کو بھی پسند فرماتے ہیں) اور مولانا رومیؒ فرماتے ہیں کہ :

چونکہ برمیخت بہ بند دبستہ باش

چوں کشاید چابک و برجستہ باش

لیکن رخصت کے مواقع کی تعیین میں خود عملاً بہت احتیاط فرماتے تھے، چنانچہ عمر کے آخری رمضان تک روزے رکھنے کا سلسلہ جاری رہا۔ ایک مرتبہ حضرتؒ کو بہت ضعف تھا، شدید گرمی پڑ رہی تھی، رمضان شریف شروع ہو گئے، احقر مطب حاضر ہوا تو دیکھا کہ اس ضعف کے باوجود روزے سے ہیں، احقر نے عرض کیا کہ حضرت! اس موقع پر تو رخصت پر عمل فرمایا ہوتا، فرمایا کہ ”ہاں بھائی! رخصت بہت اچھی چیز ہے، اس پر ضرور عمل کرنا چاہیئے“ اور پھر رخصت کے موضوع پر خاصی دیر تک مختلف باتیں ارشاد فرماتے رہے، احقر نے پھر عرض کیا تو فرمایا کہ ”انشاء اللہ اگر ضرورت ہوئی تو رخصت پر ضرور عمل کریں گے، لیکن ابھی میں نے روزہ رکھ کر دیکھا تو محمد اللہ رکھ لیا گیا“

عبادات کے علاوہ زندگی کے ہر کام میں اتباع سنت کا اہتمام عادت ثانیہ بن گیا تھا جس کی متعدد مثالیں انشاء اللہ اگلے عنوانات کے تحت آئیں گی، لیکن یہاں ایک بات کا ذکر مناسب ہو گا :-

فرمایا کرتے تھے کہ میں نے سالہا سال اس بات کی باقاعدہ مشق کی ہے کہ صبح سے شام تک کی زندگی کا ہر کام اتباع سنت کی نیت سے کیا جائے۔ اور مشق اس طرح کی ہے کہ لذیذ کھانا سامنے آیا، بھوک لگی ہوتی ہے، دل چاہ رہا ہے کہ اسے کھائیں، لیکن چند لمحوں کے لئے نفس کو کھانے سے روک لیا، ”نفس کی خواہش پر نہیں کھائیں گے“ پھر سوچا کہ یہ اللہ تعالیٰ کی نعمت اور انکی عطیہ ہے، اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی سنت یہ تھی کہ نمائے خداوندی کو شکر ادا کر کے استعمال فرماتے تھے اب اس سنت کی اتباع میں کھائیں گے۔ گھر میں داخل ہوئے، بچہ پیارا معلوم ہوا، دل چاہا کہ اسے گود میں اٹھا کر اس سے دل بہلائیں۔ لیکن چند لمحوں کے لئے نفس کو روکا کہ نفس کی خواہش پر اسے نہیں اٹھائیں گے، پھر چند لمحوں بعد مراقبہ کیا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم بچوں سے محبت فرماتے تھے، اور انہیں کھلایا کرتے

تھے، اب آپ کی اس سنت کی اتباع میں اٹھائیں گے۔ ٹھنڈا پانی سامنے آیا، پیاس لگی ہوئی ہے، اور دل کی خواہش ہے، کہ اسے جلدی سے پی لیا جائے، لیکن کچھ وقفے کے لئے اپنے آپ کو روکا، اور کہا کہ صرف دل کی خواہش پر پانی نہیں پئیں گے، پھر تھوڑے وقفے کے بعد استحضار کیا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو ٹھنڈا پانی بہت مرغوب تھا، اب آپ کی سنت کی اتباع میں پئیں گے، اور انہیں آداب کے ساتھ پئیں گے جنہی آپ رعایت فرمایا کرتے۔

غرض، فرمایا کہ، صبح سے شام تک ہر کام کے وقت اس مراقبے کی مدتوں مشق کی، الحمد للہ، اس نتیجے میں ہر کام کے وقت اتباع سنت کی نیت کی عادت پڑ گئی، اور اب خود بخود ہر کام میں یہ نیت مستحضر ہو جاتی ہے۔

اسی کو حضرت فرمایا کرتے تھے کہ دین دراصل زاویہ نظر کی تبدیلی کا نام ہے۔ رذرمز کے بیشتر کام اور شاغل وہی باقی رہتے ہیں جو پہلا انجام دئے جاتے تھے، لیکن دین کے اہتمام سے ان کی انجام دہی کا زاویہ نگاہ بدل جاتا ہے، اور اس تبدیل کے نتیجے میں سارے کام جنہیں ہم دنیائے کام کہتے اور سمجھتے ہیں، عبادت اور جہود دین بن جاتے ہیں۔

اسی مشق پر یاد آئے کہ ایک مرتبہ حضرت نے فرمایا کہ الحمد للہ، احقر نے غصے بصر کی عادت ڈالنے کے لئے مدتوں یہ مشق کی ہے کہ کبھی کبھی مرد کو بھی نگاہ بھر کر نہیں دیکھا، دل میں تہیہ کر لیا تھا کہ مخالف مرد ہو یا عورت، ہمیشہ نگاہ نیچی کر کے بات کریں گے، چنانچہ اس کی باقاعدہ مشق کی، اور سالہا سال تک کبھی کسی سے نظر اٹھا کر بات نہیں کی رفتہ رفتہ جب عادت پڑ گئی تو اب کبھی کبھی بات کے وقت مردوں کے سامنے نظر اٹھا لیتا ہوں، لیکن وہ بھی بہت کم۔

چنانچہ اس بات کا مشاہدہ تو ہم خدام نے بھی کیا کہ حضرت عموماً نیچی نظر کر کے بات کرتے تھے کبھی اگر نظر اٹھاتی بھی تو اچھلتی ہوئی، آنکھوں میں آنکھیں ڈال کر بات کرنے کا وہاں سوال ہی نہیں تھا۔

حضرت والا اپنی اس مشق کا تذکرہ کرتے ہوئے کبھی کبھی یہ شعر بھی پڑھا کرتے تھے۔

جگر پانی کیا ہے مدتوں غم کی کشاکش میں

کوئی آسان ہے کیا خوگر آزار ہو جانا

فرماتے تھے کہ جب میں نے دکالت ترک کر کے ہو میو پیٹھک طریقہ علاج کو اختیار کرنا چاہا تو ایک قوی اسکال دل میں یہ تھا کہ علاج کے دوران مردوں کے علاوہ ہر طرح کی خواتین سے بھی سابقہ پیش آئے گا۔ میں نے حضرت حکیم الامت کو اپنا یہ اسکال لکھا کہ یہ ذریعہ معاشرہ کہیں موجب فتنہ نہ ہو جائے، حضرت نے جواب میں تحریر فرمایا کہ ”اپنی آنکھ اور دل کی حفاظت کیجئے، میں بھی آپ کے لئے دعا کرتا ہوں، انشاء اللہ کچھ نہیں ہوگا“

فرماتے تھے کہ یہ شیخ کی دعا و توجہ کی برکت تھی کہ الحمد للہ اسکے بعد سے ایسا محسوس ہوتا ہے کہ دل پتھر ہو گیا ہے، اللہ تعالیٰ نے دل اور نگاہ دونوں کی حفاظت فرائی، غصہ بصر کی بدولت مرد و عورت کا فرق ہی مٹ گیا، اور شدید سے شدید فتنے کے مواقع پر بھی بفسدہ تعالیٰ قلب و نظر میلے نہیں ہوئے۔

## تعلق مع اللہ

حضرت والا کی حیات طیبہ کا دوسرا اہم عنوان جو زندگی کی ایک ایک نفل و حرکت اور ہر قول و فعل میں رہا ہوا تھا، ”تعلق مع اللہ“ اور ”رجوع الی اللہ“ ہے۔ حضرت والا فرمایا کرتے تھے کہ ایک مومن کی زندگی کا پورا اخلاص اللہ تعالیٰ نے سورۃ فاتحہ کے چار لفظوں میں بیان فرما دیا ہے، اور وہ ہے اَیَّاکَ نَعْبُدُ وَ اَیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ (اے اللہ! ہم آپ ہی کی عبادت کرتے اور آپ ہی سے مدد چاہتے ہیں) چنانچہ ایک مومن کی معراج یہ ہے کہ وہ اللہ تعالیٰ کی بندگی اور اس سے استعانت کی تصویر بن جائے، اور حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ کی زندگی اسی ”بندگی“ اور ”استعانت“ کا پیکر محسوس بن گئی تھی۔ وہ ہر ہر لمحے چھوٹے سے چھوٹے کام میں بھی اللہ تعالیٰ سے دعا کرنے کے عادی تھے، یہ دعا رہا تھ اُنھا کر زبان سے بھی ہوتی، اور بڑی ذہنیت کے ساتھ ہوتی، اور اکثر دل ہی دل میں ہر وقت جاری رہتی تھی۔

تقویٰ و سلوک کی منزل مقصود درحقیقت یہی ہے کہ بندہ کا تعلق اللہ تعالیٰ کے ساتھ مضبوط ہو جائے۔ صوفیاء کرامؒ کے یہاں جتنے مجاہدات اور جتنی ریاضتیں کرائی جاتی ہیں ان سب کا آخری مقصد یہی ہے کہ ”تعلق مع اللہ“ پیدا ہو جائے۔ اس کے لئے ایک طریقہ تو اُن



ریاضتوں اور مجاہدات کا ہے جو ہر شخص کو نظر آتے ہیں، لیکن ایک طریقہ پوشیدہ طور پر چلتے پھرتے، لٹکتے بیٹھتے "رجوع الی اللہ" کا ہے، حضرت فرماتے تھے کہ اسی مؤخر الذکر طریقے کو تقوف کی اصطلاح میں "طریق القلندر" کہا جاتا ہے۔ اس میں بظاہر طویل اور پر مشقت مجاہدات نہیں ہوتے، لیکن قلب کو ہمہ وقت اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع کی عادت ڈالی جاتی ہے، اس میں دیکھنے والا محسوس نہیں کرتا کہ کوئی شخص مراقبے یا مجاہدے میں مشغول ہے لیکن کرنے والا دل ہی دل میں اللہ تعالیٰ سے رجوع کرتا رہتا ہے، اور رفتہ رفتہ یہ عادت اس قدر پختہ ہو جاتی ہے کہ انسان بظاہر دنیا کے تمام کاموں میں دوسروں کی طرح مشغول رہتا ہے، لیکن اسکے قلب کا رشتہ اللہ تعالیٰ کے ساتھ ہمہ وقت جڑا رہتا ہے۔ اسی کو بعض حضرات نے "باہمہ و بے ہمہ" سے بھی تعبیر کیا ہے۔

حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ کی یہ بات حضرت نے بارہا نقل فرمائی کہ "پہلے اس بات پر سخت حیرت ہوتی تھی، اور سمجھ میں نہیں آتا تھا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم جن کا رابطہ ہر وقت اللہ تعالیٰ کے ساتھ استوار تھا، وحی کا نزول مسلسل جاری تھا، اور معرفت الہیہ کی وہ تجلیات ہر وقت آپ پر نازل ہوتی رہتی تھیں جن کا کوئی دوسرا شخص تصور بھی نہیں کر سکتا، ان مقامات عالیہ میں استغراق کے باوجود آپ ازواجِ مطہرات کے ساتھ کس طرح خوش طبعی کی باتیں کر لیتے تھے؟ دوستوں کے ساتھ کس طرح گھل مل جلتے تھے؟ دنیا کے دوسرے کام کس طرح انجام دے لیتے تھے؟ فرمایا کہ پہلے اس بات پر حیرت ہوتی تھی، لیکن الحمد للہ، اب سمجھ میں آنے لگا ہے کہ یہ دونوں باتیں کس طرح جمع ہو سکتی ہیں؟ اب احساس ہوتا ہے کہ یہ دونوں کام بیک وقت ہو سکتے ہیں۔"

حضرت ڈاکٹر صاحب فرماتے تھے کہ حضرت حکیم الامت قدس سرہ کی حیاتِ طیبہ اس سنت پر عمل سے عبارت تھی۔ وہ بھی بظاہر اپنے دوست احباب اور اعزاء اقربا کے ساتھ گھل ملے رہتے رہتے تھے، گھر میں خوش طبعی کی باتیں کرتے، بچوں کو چھیڑتے، لیکن ان تمام باتوں کے ساتھ قلب رجوع الی اللہ میں مشغول رہتا تھا۔ فرماتے تھے کہ جب کبھی کوئی شخص کوئی سوال پوچھتا ہے تو الحمد للہ! کبھی اس میں تامل نہیں ہوتا کہ چند لمحوں کے لئے دل ہی دل میں دعا کرتا ہوں کہ "یا اللہ! میں کیا جواب دوں گا؟ اپنے فضل سے صحیح جواب دل میں ڈال دیجئے" اس کے بعد جواب دیتا

ہوں۔

اسی طرح فرمایا کہ جب کبھی اپنے احباب میں سے کسی کو اسکی غلطی پر تنبیہ کرتا ہوں تو اگرچہ لہجہ غصے کا اختیار کرتا ہوں، مگر دو باتوں کا استحضار بحمد اللہ ہمیشہ رہتا ہے، ایک یہ کہ عین اسی ڈانٹ ڈپٹ کے دوران دل ہی دل میں اللہ تعالیٰ سے دعا کرتا رہتا ہوں کہ ”یا اللہ! مجھ سے اس طرح مواخذہ نہ فرمائیے گا“ دوسرے عین اس غصے کے اظہار کے وقت بھی اپنے آپ کو مخاطب سے افضل نہیں سمجھتا، بلکہ اپنی مثال اس جلاذکی سی سمجھتا ہوں جسے بادشاہ نے کسی شہزادے کو سزا دینے پر مامور کیا ہو۔ وہ جلاذ بادشاہ کے حکم کی تعمیل میں شہزادے کو سزا تو دیتا ہے، لیکن آگاس میں عقل کا ذرہ بھی موجود ہے تو کبھی یہ نہیں سمجھ سکتا کہ وہ شہزادے سے افضل ہے، وہ سزا دیتے وقت بھی دل سے یہی سمجھتا رہتا ہے کہ افضل شہزادہ ہی ہے، اور میں تو درحقیقت بادشاہ کے حکم کی تعمیل میں سزا کا ایک بے حقیقت آلہ بنا ہوا ہوں۔

اللہ اکبر! جس ذات گرامی کی عبدیت و فنایت اور رجوع الی اللہ کا یہ مقام ہو، اس نے اپنے خاص متوسلین کو رجوع الی اللہ کی کسی منزل تک پہنچادیا ہوگا؟

چنانچہ حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ کی حیات طیبہ میں بھی تعلق مع اللہ کی عجیب و غریب کیفیت ہم جیسے بے ذوق خدام کو بھی محسوس ہوئے بغیر نہیں رہتی تھی، شاید یہ کہا جائے تو مبالغہ نہ ہوگا کہ حضرت والا اپنی زندگی کے ہر کام اور ہر نقل و حرکت میں اللہ تعالیٰ سے رجوع کر کے اسی سے مدد مانگنے کے عادی تھے، چھوٹے سے چھوٹے کام میں اس سے ذہل نہیں ہوتا تھا۔ اپنے خدام سے فرمایا کرتے تھے کہ ہر کام سے پہلے ”إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ فَسْتَعِينُ“ کہنے کی عادت ڈالو، بلکہ ہر وقت دل ہی دل میں یہ رٹ لگاؤ کہ ”یا اللہ! اب کیا کروں؟“ پھر دیکھو کیا سے کیا ہو جاتا ہے؟

حضرت والا نے تمام اعمال باطنی میں سے چار اعمال کو پورے طریق و سلوک کا خلاصہ قرار دے کر حقیقت یہ کہ ”رجوع الی اللہ“ اور ”تعلق مع اللہ“ کا خطر کمال کر رکھا ہے، وہ چار اعمال ہیں صبر، شکر، استغفار اور استعاذہ۔ فرمایا کہ زمانہ حال میں یا کوئی بات ناگوار پیش آرہی ہوگی، یا پسندیدہ، ناگوار بات پر صبر اور پسندیدہ بات پر شکر کی عادت

ڈالو، زمانہ ماضی کا خیال آئے تو اس پر استغفار کرتے رہو، اور مستقبل میں کسی ناگواریات کا اندیشہ سامنے آئے تو استعاذہ کرو (یعنی اس سے اللہ کی پناہ مانگو) اور حیر کی دعا کرو۔ اس طرح انسان کی زندگی کا کوئی لمحہ ان چار اعمالِ باطن سے خالی نہیں ہونا چاہیے، اور اگر ان اعمال کو ہمہ وقت انجام دینے کی شوق کر کے انکی عادت ڈال لی جائے تو وہ ”تعلق مع اللہ“ جس کے حصول کے لئے لمبے چوڑے مجاہدات کئے جاتے ہیں، وہ خود بخود حاصل ہو جائے گا۔ حضرت والاؒ نے اس نسخہ کیمیا کو اپنے مختصر رسالے ”معمولاتِ یومیہ“ میں بھی بیان فرمایا ہے، اور اس موضوع پر حضرتؒ کا ایک مستقل وعظ بھی شائع ہو چکا ہے۔

## مقامِ رجاء

اسی ”رجوع الی اللہ“ اور ”تعلق مع اللہ“ کا ایک نتیجہ وہ ”مقامِ رجاء“ تھا جس پر اللہ تعالیٰ نے حضرت والاؒ کو فائز فرمایا تھا۔ حضرت والاؒ کی مجلس میں چند لمحے بیٹھنے والا بھی یہ ضرور محسوس کرتا تھا کہ اس مجلس میں مایوسی اور ناامیدی کا گندہ نہیں ہے، حضرت کی مجلس میں ہر شخص کو دین کے بارے میں یہی پیغام ملتا تھا کہ

سوئے تاریکی مرد، نورِ شید ہاست

راہِ نومیدی مرد، امید ہاست

حضرتؒ کے سامنے کوئی شخص اپنے آپ کو گناہگار، کہتا تو فوراً فرماتے کہ ”بھائی، اپنے آپ کو گناہگار کیوں کہتے ہو؟ جب اللہ تعالیٰ نے توبہ اور استغفار کا دروازہ کھول رکھا ہے تو اس سے کیوں فائدہ نہیں اٹھاتے؟ یہ دروازہ تو اسی لئے ہے کہ کوئی مومن گناہگار نہ رہے۔“

تعلیم و تبلیغ میں حضرتؒ کا عمل عین سنت کے مطابق ”یتوا ولا تعسروا، تبشروا ولا تنفروا“ کے ارشادِ نبویؐ پر تھا۔ آپ ہر شخص کو اس کے حالات کے مناسب اصلاح کا ایسا طریقہ تعلیم فرماتے جسے سن کر وہ مطمئن ہو جاتا، اور محسوس کرنے لگتا کہ دین کا راستہ مشکل نہیں، آسان ہے۔ بلکہ بعض اوقات ظاہر میں نگاہ کو حضرتؒ کی باتیں سن کر یہ محسوس ہوتا ہے کہ آپ نے اتنی ڈھیل دے دی ہے کہ سننے والوں میں کہیں ناجائز امور پر جرأت نہ پیدا ہو جائے، لیکن ”قلند رہر چہ گوید، دیدہ گوید“ تجربہ یہی تھا کہ ان باتوں کو سن کر جرأت اور غفلت کے بجائے خشیت پیدا ہوتی تھی، اور

گناہوں سے بچنے کا جذبہ ترقی کرتا تھا۔ بہت سے رائج الوقت ایسے تھے کہ حضرتؑ ان کا صراطِ بہت کم ذکر فرماتے تھے، لیکن تجربہ یہ تھا کہ حضرتؑ کے پاس آنے والے خود بخود ان منکرات سے بے تعلق ہو جاتے تھے۔

احقر کے ایک کرم فرماؤ حضرتؑ کے دیرینہ خادم، جو نو تعلیم یافتہ اور عصری ماحول کے پروردہ ہیں ایک دن فرمانے لگے کہ ”حضرتؑ نے ہم پر بہت زیادہ روک روک نہیں فرمائی، لیکن زاویہ نظر اس طرح بدل دیا کہ الحمد للہ، بہت سے گناہوں سے نفرت کے بجائے بے تعلق پیدا فرمادی پھر فرمانے لگے کہ ”نفرت بھی درحقیقت ایک قسم کا تعلق ہے، حضرتؑ واسکے فیض سے الحمد للہ یہ تعلق بھی باقی نہیں رہا، اور ایسی بے تعلق (INDIFFERENCE) پیدا ہوئی کہ اب ان گناہوں کا خیال بھی نہیں آتا۔“

احقر انکی زبان سے یہ عجیب و غریب بات سن کر مجو حیرت تھا کہ اللہ والوں کی صحبت کس قدر کیمیا تاثیر مہول ہے کہ ان صاحب نے کبھی کسی مدرسے میں تعلیم حاصل نہیں کی۔ کبھی مترجم علوم دین سے باقاعدہ آشنا ہوئے، لیکن نہ صرف یہ کہ اعمال و اخلاق کی کیفیت کہیں سے کہیں پہنچ گئی، بلکہ ایسی باریک حقیقتوں کا فہم و ادراک نصیب ہو گیا۔

حضرتؑ کا ایک مذاق یہ بھی تھا کہ جس کسی وقت جس کسی عبادت یا کارِ خیر کی توفیق ہو جائے، خواہ وہ بے دل، بے رغبتی اور جو اس باحکمی کے عالم میں ہوئی ہو، اسکی ہرگز نافندی نہ کی جائے، بلکہ اس توفیق پر پہلے اللہ تعالیٰ کا شکر ادا کیا جائے، پھر اپنی طرف سے اسکی ادائیگی میں جو کوتاہیاں ہوئیں ان پر استغفار کیا جائے، بعض لوگ اپنی نماز کو مجوم و سادس و غیرہ کی بنا پر ”اٹھک بیٹھک“ سے تعبیر کر دیتے ہیں، حضرتؑ کو اس تعبیر سے سخت انقباض تھا، فرماتے تھے کہ نماز کو تم اپنی طرف منسوب کرتے ہو، اس لئے اسکی ناقدری کر کے اسکے لئے ایسے الفاظ استعمال کرتے ہو، ارے یہ تو دیکھو کہ یہ توفیق کس کی طرف سے ملی ہے، اور کہتے ہیں جو اس سے محروم ہیں؟ جب اس بات کا تصور کرو گے تو اسی نماز کو قابلِ شکر پاؤ گے، ہاں جب ان کوتاہیوں کا تصور آئے جو اسکی انجام دہی میں تم سے سرزد ہوئی ہیں تو ان پر استغفار کر لو، استغفار کو تاہیوں کا تریاق ہے، اور شکر نعمتوں کے اضافے کا نسخہ، انہی دو باتوں پر عمل کرتے جاؤ، انشاء اللہ کوتاہیاں بھی دور ہوتی جائیں گی، ہائے ہائے



کرنے سے کیا فائدہ ؟

ایک مرتبہ ایک صاحب نے عرض کیا کہ حضرت! ہمارا سجدہ کیا ہے؟ ایک مذاق ہے، دل و دماغ میں گندے اور ناپاک خیالات بھرے ہوئے، ذہن دساوس و افکار کی آماجگاہ بنا ہوا، ایسی حالت میں پیشانی زمین پر ٹیک دینے سے کیا حاصل؟ حضرتؐ نے فوراً فرمایا کہ ”کیا یہ گندہ اور ناپاک سجدہ تم مجھے کر سکتے ہو؟“ ظاہر ہے کہ انکا جواب نفی میں تھا، حضرتؐ نے فرمایا کہ ”اگر یہ سجدہ ایسا ہی گندہ اور لا حاصل ہے تو کسی مجھ جیسے گندے انسان کو کیوں نہیں کیا جاسکتا؟ پھر فرمایا کہ جب یہ پیشانی اللہ تعالیٰ کے سوا کسی اور کے آگے ٹک ہی نہیں سکتی تو سجدہ اللہ ہی کے لئے تھا، اور پہلے اس بات کا شکر ادا کرو کہ انکی طرف سے اس سجدے کی توفیق ہو رہی ہے، ورنہ کتنے ہیں جو اس سے محروم ہیں، پھر اپنی طرف سے اس کی ادائیگی میں جو کوتاہیاں ہیں، ان سے استغفار کرو، لیکن خبردار! اسکو کبھی لا حاصل اور رائیگاں نہ سمجھنا“ یہ فرما کر حضرتؐ خود اپنا ایک شعر پڑھا کرتے تھے کہ ۵

کم نہیں یہ بھی کہ ہوں میں بھی حرمِ ناز میں

الطافِ حسن سے بخود سہی، غافل سہی

اور ۵ جبہ سائی سے اگر کچھ نہیں حاصل، نہ سہی

کس طرح چھوڑ دے سنگِ درجناں کوئی

بعض لوگ بڑے درجے کے اولیاء اللہ اور بزرگانِ دین کے کثرتِ عبادت کے حالات سن سن کر مایوسی کا شکار ہونے لگتے ہیں کہ اس درجے کی عبادت ہمارے بس سے باہر ہے، لیکن حضرتؐ فرمایا کرتے تھے کہ اللہ تعالیٰ نے ہر شخص کو جداگانہ صلاحیت اور ظرف عطا فرمایا ہے، اسی کے مطابق وہ مکلف بھی ہے، اور اگر کوئی شخص اپنی صلاحیتوں کا شریعت کے مطابق پورا پورا صحیح استعمال کرے تو مقصود حاصل ہے۔ لہذا یہ دیکھو کہ اپنی صلاحیتوں کے مطابق تم کن امور کے مکلف ہو، بس انکو انجام دینے کی فکر کرو، اور جب اللہ تعالیٰ کی طرف سے ان کی انجام دہی کی توفیق ہو جائے تو اللہ تعالیٰ کا شکر ادا کرو، اور بڑے لوگوں کے حالات سے ان کا مقابلہ کر کے ان کی ناقدری نہ کرو، کیونکہ تمہیں اپنی صلاحیت کے مطابق جن اعمال کی توفیق ہوئی ہے تمہارے

لئے وہی عین کرم ہے ع  
 کہ انچہ ساقی مار نخت، عین الطاف است  
 خود حضرت ہی کا شعر ہے ۷

مجھ کو اس سے کیا غرض، کس جا میں ہے کیسی مے پڑ میرے پیانہ میں لیکن حاصل میخانہ ہے  
 حب اس توفیق کی قدر دان کے ساتھ اس پر شکر ادا کر دگے تو لازماً تنکم کے وعدے کے  
 مطابق انشاء اللہ اس توفیق کو دوام و استحکام عطا ہوگا، اور اپنے ظرف و صلاحیت کے مطابق ترقی  
 کے مدارج بھی طے ہونگے۔

## مقام شکر

حضرت والا کو ہمہ وقت اولئے شکر کا خاص ذوق تھا۔ فرماتے تھے کہ انسان پر ہر لمحے اللہ تعالیٰ  
 کی جو بے شمار نعمتیں مبذول رہتی ہیں، ان سب پر شکر ادا کرنا تو انسان کے لئے ممکن ہی نہیں ہے، لیکن  
 کم از کم اتنا تو انسان کو کرنا چاہئے کہ جو مسرت یا راحت واضح طور محسوس ہو، اس پر شکر ادا کرتا رہے  
 فرماتے تھے کہ اگر ہوا کا ایک جھونکا بھی چلے اور اس سے راحت محسوس ہو، تو اس پر بھی شکر ادا کرنا چاہئے،  
 اس طرح جو نعمتیں بظاہر چھوٹی سی چھوٹی نظر آتی ہیں، ان پر بھی شکر ادا کرنے کی عادت ڈالنی چاہئے۔ اور  
 چونکہ "شکو" کی حقیقت ہی یہ ہے کہ انسان یہ محسوس کرتا ہے کہ جو نعمت مجھے میسر ہوئی ہے، میں اس  
 کا مستحق اور اس کے قابل نہیں تھا، محض اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے مجھے حاصل ہوئی ہے، اس لئے  
 "شکو" کا لازمی خاصہ یہ ہے کہ اس کی وجہ سے تکبر، عجب اور غفلت جیسے امراض پیدا نہیں ہوتے،  
 اور تواضع حاصل ہوتی ہے۔

حضرت والا کی پوری زندگی چونکہ مقام شکر میں ڈوبی ہوئی تھی، اس لئے آپ ہر نعمت سے  
 دوسرے دل سے زیادہ لطف اندوز ہوتے، اکثر اوقات بکاش رہتے، اور کوئی چھوٹی سے چھوٹی چیز بھی  
 حاصل ہو جائے تو اس پر اس قدر مسرت کا اظہار فرماتے اور بار بار اس کا ذکر فرما کر شکر ادا کرتے جیسے  
 یہ نعمت غیر مترقبہ ایسا کہ کسی استحقاق کے بغیر حاصل ہو گئی ہے۔

بعض حضرات کا انداز تواضع یہ ہوتا ہے کہ وہ بار بار اپنے آپ کو ”ناکارہ“ اور ”ناچیز“ اور اپنے ہر عمل کو ناقص، ادھورا اور عیب دار کہتے رہتے ہیں۔ جو لوگ یہ باتیں تصنیف کرتے ہیں، ان کا تو کوئی ذکر ہی نہیں کہ بقول حضرت حکیم الامت قدس سرہ یہ تواضع نہیں، تکبر ہی کی ایک خفیہ قسم ہے جس میں تواضع کی ریا شامل ہو گئی ہے، لیکن جو حضرات سچے دل سے ایسا کرتے ہیں انہیں حقیقی تواضع کی بنا پر نہ اپنا آپ نظر آتا ہے، نہ اپنا کوئی عمل قابل تعریف محسوس ہوتا ہے۔ یہ بلاشبہ تواضع کا ایک مقام بلند ہے، لیکن حضرت والاؒ کے انداز تواضع کا رنگ مختلف تھا، ان پر چونکہ اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کے استحضار کا غلبہ تھا، اس لئے وہ ہمہ وقت اپنے اوپر اللہ تعالیٰ کے احسانات کا تذکرہ فرماتے رہتے تھے، اور اس پر ادائے شکر میں مشغول رہتے تھے، یہاں تک کہ بعض اوقات بعض ظاہر میں افراد کو جو حضرتؒ کے مزاج شناس نہ ہوں، اس پر خود ستائی کا شبہ ہونے لگتا تھا، حالانکہ حقیقت حال یہ تھی کہ وہ اپنے کسی عمل کو کبھی اپنی طرف منسوب ہی نہ فرماتے تھے، انکے ذہن میں یہ خیال ہی نہیں ہوتا تھا کہ کوئی عمل میرا عمل ہے، وہ تو اسے سراسر عطائے الہی سمجھ کر اس کی تعریف اور اس پر شکر ادا فرماتے رہتے تھے، اپنی ذات کا تو نہ کوئی خیال ہوتا تھا، نہ اس کا کوئی ذکر۔

چنانچہ ایک مرتبہ خود اس حقیقت کا اظہار فرمایا کہ بعض مرتبہ میرے انداز بیان سے بعض افراد کو تعلیٰ کا شبہ ہو گیا، لیکن واقعہ یہ ہے کہ الحمد للہ، حضرت شیخؒ کے فیض سے کبھی قلب پر اپنے کسی کمال کا واسطہ بھی نہیں گذرتا، ہاں اللہ تعالیٰ نے جو بے شمار انعامات احقر پر فرمائے ہیں انکا تذکرہ تحدیثِ نعمت کے لئے کرتا ہوں، یہ تعریف اللہ تعالیٰ کی اور اسکے الطاف و کرم کی ہوتی ہے، کبھی حاشیہ خیال میں بھی یہ بات نہیں آتی کہ اس تعریف کی کوئی نسبت احقر کی ذات سے بھی ہو سکتی ہے۔

پھر فرمایا کہ میں نے کسی بزرگ کا واقعہ پڑھا ہے، منسا ہے، کہ جب انکے سامنے کوئی شخص انکے کسی عمل کی تعریف کرتا تو وہ بہت مسترت کا اظہار فرماتے تھے، ایک مرتبہ کسی نے پوچھا کہ حضرت! آپ اپنی تعریف سن کر بہت خوشی کا اظہار کرتے ہیں؟ فرمائیے لگے: ”اپنی تعریف سن کر؟ ارے بھائی! وہ تو میرے اللہ میاں کی تعریف ہوتی ہے، کیونکہ جو کوئی بھی عمل

خیر ہے۔ وہ انہی کی عطا اور انہی کی توفیق ہے، میرا اس میں کیا دخل؟ اس لئے جب لوگ اللہ تعالیٰ کی تعریف کرتے ہیں تو میں خوش ہوتا ہوں کہ میرے مالک کی تعریف ہو رہی ہے۔ اگر واقعہ کسی کو یہ مقام حاصل ہو جائے (محض اس مقام کا دھوکا نہ ہو) تو یہ تواضع اور ندامت کا بہت نازک اور اوجھا مقام ہے، اور حضرتؑ کی ادا ادا سے محسوس ہوتا تھا کہ وہ بفضلہ تعالیٰ اسی مقام پر فائز ہیں۔

## ادائے حقوق

حضرتؑ کے مذاق زندگی کا شاید اہم ترین عنوان "ادائے حقوق" ہے، اور اس سلسلے میں آپ کا طرز عمل مجسم کرامت سے کم نہ تھا۔ حضرتؑ خود فرماتے تھے کہ دین دراصل "ادائے حقوق" کا نام ہے، "حقوق اللہ" یا عبادات کا کچھ ذکر تو بھیجے کر چکا ہوں، لیکن "حقوق العباد" وہ چیز ہے جس کی طرف اس دور میں بہت کم توجہ دی جاتی ہے، لوگوں نے اسے دین سے خارج ہی سمجھ رکھا ہے، اور اچھے اچھے بظاہر دیندار قسم کے لوگ جو عبادتوں کا ماسا اللہ خوب اہتمام کرتے ہیں، بعض اوقات دین کے اس اہم شعبے سے بالکل غافل رہتے ہیں۔ حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ کے اندازِ تعلیم و تربیت میں اس شعبے کا خاص اہتمام تھا، چنانچہ حضرتؑ کے تربیت یافتہ حضرات میں "حقوق العباد" کی رعایت کا خاص رنگ نمایاں ہوتا ہے۔

حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ نے بھی "ادائے حقوق" کا جیسا اہتمام کر کے دکھایا، وہ اپنی مثال آپ ہی ہے۔ اس بات کو شاید کوئی مبالغہ سمجھے، لیکن یہ حقیقت ہے کہ حضرت والاؒ نے تمام عمر کبھی اپنی اہلیہ محترمہ سے نہ صرف یہ کہ کبھی لہجہ بدل کر بات نہیں کی، بلکہ کبھی یہ بھی نہیں فرمایا کہ "فلان کام کر دو" وہ خود اپنی خوشی سے حضرتؑ کی خدمت فرماتی تھیں، لیکن حضرتؑ نے کبھی ان سے پانی پلانے کے لئے بھی نہیں کہا۔ یہ بات خود حضرتؑ نے بھی ہماری تربیت کی خاطر ارشاد فرمائی تھی، اور حضرتؑ کی اہلیہ محترمہ نے اس حق پر کی بیوی سے بھی اس کا کئی بار ذکر فرمایا۔

اندازہ فرمائیے کہ تقریباً ساٹھ سالہ رفاقت ہے، اور رفاقت بھی وہ ازدواجی رفاقت



جس میں سرد گرم حالات دنیا میں سب سے زیادہ پیش آتے ہیں، ناگوار امور بھی خواہی نخواستہ سامنے آتے رہتے ہیں، لیکن اس طویل مدت میں غصہ کے اظہار کے تو کیا معنی، کبھی بدلے ہوئے لہجے سے بھی خطاب نہیں فرمایا۔ پھر عموماً شوہر اپنا حق سمجھتے ہیں کہ بیوی سے اپنا کام لیں، لیکن حضرتؑ نے تمام عمر کبھی کوئی چیز اٹھانے یا رکھنے تک میں از خود انہیں کوئی کام کرنے کے لئے نہیں فرمایا۔ اللہ اکبر! لوگ ہوا میں اڑنے اور پانی پر چلنے کو کرامت سمجھتے ہیں، لیکن اس جیتی جاگتی زندگی میں اس سے بڑی کرامت کیا ہوگی؟ یہ کام صرف وہ شخص انجام دے سکتا ہے جس نے اپنی ذات کو بالکل فنا کر کے اسے شریعت و سنت پر قربان کر دیا ہو، حدیث میں حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے:

حیا و کرم حیاء کما لیسناہم، وانا خیر کما لیسنا

تم میں بہترین لوگ وہ ہیں جو اپنی عورتوں کے لئے بہتر ہوں اور میں اپنی عورتوں کے لئے تم میں سب سے بہتر ہوں۔

اس سنت عظیمہ پر عمل کا یہ انداز جو حضرت والاؑ نے اختیار فرمایا، وہ آپ سے پہلے نہ کبھی دیکھا، نہ سنا، اور اگر خود حضرت والاؑ اور آپ کی اہلیہ محترمہ سے براہ راست یہ بات نہ سنی ہوتی تو اس قدر میں اس کا تصور بھی مشکل تھا۔

حدیث میں "احسان" کی تعریف اس طرح فرمائی گئی ہے کہ:-

أَنْ تَعْبُدَ اللَّهَ كَأَنْ تَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاتَّقِ اللَّهَ

احسان یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی عبادت اس طرح کرو جیسے تم اسے دیکھ

رہے ہو، اور اگر تم نہیں دیکھ رہے تو وہ تمہیں دیکھ رہا ہے۔

ایک مرتبہ ایک صاحب نے حضرتؑ سے عرض کیا کہ "الحمد للہ، احقر کو احسان کا درجہ حاصل ہو گیا ہے" حضرتؑ نے پوچھا: "کیا نماز میں؟" فرمانے لگے "جی ہاں"، آپ نے فرمایا: "ما شاء اللہ بڑی مبارک بات ہے، لیکن ذرا اسکا بھی دھیان ہے کہ احسان کا یہ درجہ بیوی بچوں کے ساتھ معاملات میں بھی حاصل ہوا یا نہیں؟ پھر فرمایا کہ لوگ "احسان" کو نماز روزے اور اذکار و اذکار کے ساتھ خاص سمجھتے ہیں، اور معاملات زندگی کو اس سے خارج سمجھتے ہیں،

حالانکہ "احسان" جس طرح نماز روزے وغیرہ میں مطلوب ہے، مخلوق کے ساتھ معاملات میں بھی مطلوب ہے۔

حضرت والاؒ اپنے متعلقین، اعزہ و اقرباء، احباب اور توسلین میں سے ہر شخص کے ساتھ حق تعلق اس طرح ادا فرماتے تھے کہ ہر شخص یہ سمجھتا تھا جیسے آپ کو سب سے زیادہ محبت اسی سے ہے۔ آپ ہر شخص کے ذاتی اور نجی معاملات میں دخل اور اس کے مسائل سے نہ صرف باخبر، بلکہ ان کے لئے فکر مند اور دعا گو رہتے تھے۔

حضرت احقر سے تو اکثر ملاقاتوں میں فرماتے ہی تھے کہ "بھئی، ہم تمہارے لئے بہت دعا کرتے ہیں، لیکن میں نے دیکھا کہ آپ کے توسلین اور متعلقین کی تعداد یقیناً سینکڑوں میں تھی، اکثر یہ دیکھا کہ جب ان میں سے کوئی بھی شخص ملتا تو آپ ان سے فرماتے: "ارے بھائی! ہم تمہارے لئے بہت دعا کرتے ہیں، مجھے حضرتؒ سے یہ جملہ سن کر حیرت ہوتی تھی کہ یقیناً یہ بات خلاف واقعہ تو ہو نہیں سکتی، پھر آپ اتنے سارے آدمیوں کے لئے اتنی دعا کرنے کا وقت کہاں سے لاتے ہیں؟ اور ہر شخص کے لئے دعا کا خیال کیسے آجاتا ہے؟ سوچا کہ شاید حضرتؒ کوئی عمومی دعا فرمالتے ہوئے ہونگے جس میں سب شامل ہوں، لیکن ایک مرتبہ غالباً حضرتؒ ہی سے یہ سنا کہ آپ اپنے متعلقین کے لئے فرڈا فرڈا نام لے کر دعا فرماتے ہیں، اس لئے یہ احتمال بھی خارج از بحث ہو گیا۔ پھر اسی پر بس نہیں، حضرتؒ اکثر اپنے مرحوم بزرگوں یا دوستوں کا ذکر فرماتے تو انکے بارے میں بھی یہی فرماتے کہ الحمد للہ! میں ان کے لئے بہت دعا کرتا ہوں حیرت اس بات پر تھی کہ حضرتؒ ان تمام افراد کے لئے دعا کا اہتمام کیسے فرماتے ہیں؟

ایک روز حضرتؒ نے خود ہی یہ عقدہ کھولا، اور فرمایا کہ میں نے اپنے نمازوں کے اوقات کو اپنے متعلقین وغیرہ پر اس طرح تقسیم کر رکھا ہے کہ ایک نماز کے بعد صرف اپنے رشتہ دار بزرگوں اور مرحومین کے لئے دعا کرتا ہوں، ایک نماز کے بعد اپنے موجودہ اعزہ و اقرباء کے لئے دعا کرتا ہوں، ایک نماز کے بعد اپنے اساتذہ اور مشائخ وغیرہ کے لئے دعا کرتا ہوں، کسی نماز کے بعد اپنے احباب اور اصلاحی تعلق رکھنے والوں کے لئے۔ غرض ہر نماز کے ساتھ وہ لوگ متعین کر رکھے ہیں جن کے لئے اس وقت دعا کرنی ہے۔

اس نظم و ترتیب کے علم میں آجانے کے بعد یہ مسئلہ کسی حد تک تو حل ہوا، لیکن اقل تو اس ترتیب کا اہتمام ہی ہر شخص سے نہیں ہو سکتا، دوسرے اس ترتیب کے باوجود اپنے تمام متعلقین کو دعا میں نام بنام یاد رکھنا "الاستقامۃ فوق الکوامۃ" کے سوا اور کیلئے ہے ؟

ایک دن ————— جبکہ حضرتؑ سے باقاعدہ اصلاحی تعلق قائم ہوئے کئی سال گزر چکے تھے۔ احقر حاضر ہوا تو فرمائے لگے، "سبح کہتا ہوں کہ مجھے تم سب بھائیوں سے بہت تعلق خاطر ہے، اور کوئی دن خالی نہیں جاتا جب میں رات کے وقت سونے سے پہلے تم سب کے مکاتوں کا باقاعدہ حصار کر کے نہ سوتا ہوں" اللہ اکبر! میں یہ سن کر دنگ رہ گیا کہ ہم لوگوں پر حضرتؑ کی شفقت و محبت کی کوئی انتہا ہے ؟ مدتوں سے حضرتؑ یہ عمل فرماتے ہیں، اور آج سے پہلے کبھی ذکر بھی نہیں کیا۔ احقر کو معلوم تھا کہ سونے سے قبل حضرتؑ کے بہت سے معمولات ہوتے ہیں، اُن معمولات کے ساتھ اپنے ناکارہ خدام کو نہ صرف دعائیں، بلکہ حفاظتی حصار کے اس عمل میں یاد رکھنا کوئی معمول بات ہے ؟

کافی عرصے تک احقر حضرتؑ کے اس ارشاد ہی پر محو حیرت رہا، لیکن اس کے بعد ایک دو نہیں، حضرتؑ کے خاص خدام اور توسلین میں سے بہت سے افراد نے مختلف مواقع پر بتایا کہ حضرتؑ والا سونے سے قبل انکے گھر دوں کا بھی حصار فرماتے ہیں۔ ادائے حق محبت کو جیتی جاگتی کرامت کی حد تک پہنچا دینا کوئی ان اللہ والوں سے سیکھے !

حضرت ڈپٹی علی سجاد صاحب رحمۃ اللہ علیہ حضرتؑ کے پھوپھا بھی تھے، اور خسر بھی، اور حضرت حکیم الامتؑ کے مجاز صحبت بھی۔ انکی عمر نوے سال کے قریب پہنچ چکی تھی، آخر میں ضعف و علالت کی بنا پر کئی سال بستر ہی پر گزارے۔ اس حالت میں انہیں اگر کسی کی موجودگی سے تسلی اور ڈھارس ہوتی تو وہ حضرتؑ والا کی ذات تھی۔ حضرتؑ کو بھی اسکا احساس تھا، اس لئے اس زمانے میں یہ معمول بنایا کہ روزانہ بلا ناغہ عصر کے بعد انکے گھر تشریف لے جاتے، اور مغرب تک تو روزانہ اور اکثر عشر تک انہی کے پاس رہتے، اور انکی دلجوئی میں لگے رہتے۔ یہ بات کہنے میں جتنی آسان معلوم ہوتی ہے، کرنے میں اتنی ہی مشکل ہے، حضرتؑ کی مصروفیات بہت زیادہ تھیں، ان تمام مصروفیات کے باوجود روزانہ اتنا وقت نکالنا، اور ایک دو دن یا ایک دو ہفتے نہیں، مہینوں، بلکہ

شاید سالوں اسکی پابندی کراوہی شخص کر سکتا ہے جس نے اپنے آپ اور اپنی ذات کو "ادائے حقوق" کے جذبے میں بالکل فنا ہی کر لیا ہو۔

جب حضرت ڈپٹی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی وفات ہوئی تو حضرت خود بہت ضعیف و علیل تھے۔ نقاہت کی وجہ سے چند قدم چلنا دشوار تھا، اس پر حضرت ڈپٹی صاحب کی وفات کے صدمے سے مزید ڈھال تھے۔ ایسے میں متعدد خدام نے، اور شاید خود اہل خانہ نے، نمازِ خیارہ کے بعد عرض کیا کہ قبرستان تشریف لے جائیں، لیکن حضرت زلزلے، اور تدفین کے آخری مراحل تک وہی موجود رہے۔ حضرت ڈپٹی صاحب سے تو رشتہ داری کا تعلق بھی تھا، بہت سے وہ حضرات جن سے رشتہ داری کا بھی تعلق نہیں تھا، ان کے ساتھ بھی حضرت نے یہی معاملہ فرمایا۔

حضرت کے ہم زلف جناب حاجی ظفر احمد صاحب تعازن رحمۃ اللہ علیہ بھی حضرت حکیم الامت کے مجازِ صحبت تھے، اور حضرت والا کی طرف سے مجازِ بیعت بھی۔ جب انکا انتقال ہوا تو اسکے بعد سے مستقل معمول یہ بنایا کہ دوپہر کو مطلب سے اٹھنے کے بعد روزانہ نمازِ ظہر پڑھ کر انکے گھر تشریف لے جاتے، اور انکی اہلیہ اور صاحبزادوں کی خبر گیری فرماتے۔ بعد ازاں وہ حضرات خود اپنے پاؤں پر کھڑے ہیں، اور اگر کسی مسئلے میں صلاح مشورے وغیرہ کی ضرورت ہوتی تو وہ ٹیلی فون پر یا بالواسطہ بھی ہو سکتی تھی، لیکن حضرت روزانہ بنفس نفیس وہاں تشریف لے جاتے۔ یہ عمر کے بالکل آخری دور کی بات ہے جب قویٰ بید مغفل ہو چکے تھے، ذرا دیر گفتگو سے سرگرم ہو جاتا تھا، نقاہت کی بنا پر چلتے چلتے ڈولنے لگتے تھے، اس زلزلے میں صبح ۸ بجے سے ایک بجے دوپہر تک مسلسل مطلب میں مشغول رہنے کے بعد جب آرام و سکون کی شدید ضرورت ہوتی تھی، اُس وقت بھی "ادائے حق و محبت" کا یہ اہتمام نظروں سے اوجھل نہ ہوا اور یہ معمول آخر دن تک برابری رہا۔

حضرت اکثر و بیشتر حکیم الامت حضرت تھانوی قدس سرہ کی آخری عمر کا یہ ارشاد سنایا کرتے تھے کہ "وہ لمحات زندگی کس کام کے جو کسی کی خدمت میں صرف نہ ہوں؟" ایسا لگتا تھا کہ حضرت نے اس ارشاد کو اپنی زندگی کا ہمہ وقتی رہنما بنایا ہوا ہے، اور یہ ارشاد کسی وقت نظر سے اوجھل نہیں ہو سکتا۔



ہمارے والد ماجد حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی وفات ہمارے لئے  
زندگی کا سب سے بڑا حادثہ تھا، اس موقع پر ایک مرتبہ برادر مکرم حضرت مولانا مفتی محمد رفیع  
صاحب عثمانی مدظلہم نے حضرت سے عرض کیا کہ: "حضرت! آپ کی موجودگی میں ہمیں یہ احساس  
نہیں ہوتا کہ ہم والد کے سامنے سے محروم ہیں۔" حضرت نے فرمایا: "آپ کو ایسا ہی سمجھنا چاہیے، اور  
انشاء اللہ میں حق محبت کی ادائیگی میں کوئی کسر اٹھا نہیں رکھوں گا" اور پھر واقعہ بھی یہی ہوا،  
حضرت والا نے حضرت والد صاحب کے ساتھ اپنے تعلق کا حق جس طرح ادا فرمایا، اس کی اس  
دور میں مثال ملنی مشکل ہے۔ حضرت ہمارے گھر میں معاملات کی جزئیات تک سے باخبر رہتے،  
ان میں دخیل رہتے، اور ایک شیخ و مرشد کی رہنمائی کے علاوہ ہمیں ایک باپ کی شفقت سے  
نوازتے۔

ایک مرتبہ حضرت ہمارے یہاں تشریف لائے، کھانا بھی وہی تناول فرمایا، اور ہر چیز  
کی تعریف فرمائی کہ بہت اچھی بنی ہوئی ہے، پھر فرمایا کہ یہ تمہاری تعریف نہیں، بلکہ ان گھروالوں  
کی تعریف ہے جنہوں نے محنت سے کھانا پکایا ہے، پھر فرمانے لگے کہ جب اچھا کھانا کھاؤ تو  
پکالنے والے کی تعریف کر کے اس کا دل ضرور بڑھا دیا کرو، پھر ایک واقعہ سنایا کہ میں ایک صاحب کے  
یہاں کھانے پر گیا، کھانے کے بعد میں نے کھانے کی تعریف کی اور کہا کہ ماشاء اللہ آپ کے گھر والوں  
نے کھانا بہت اچھا بنایا ہے، میرا یہ جلد صاحب خانہ کی اہلیہ نے پردے کے پیچھے سنا تو وہ رو پڑیں،  
میں بڑا حیران ہوا کہ نہ جانے کیا بات ہوئی؟ بعد میں انہوں نے بتایا کہ آپ کی زبان سے یہ جملہ سن کر  
مجھے اس لئے رونا آگیا تھا کہ میں سالہا سال سے اپنے شوہر کی خدمت کرتی ہوں، لیکن آج تک  
کبھی انکی زبان سے اس قسم کی ہمت افزائی کا کوئی کلمہ نہیں سنا۔

حضرت فرماتے ہیں کہ یہ سن کر میرے دل پر بہت اثر ہوا، واقعہ یہ ہے کہ کسی کی خدمت پر  
ادائے شکر اور مسرت کا اظہار اس کا حق ہے، خاص طور سے بیوی کا، یہ بڑی شرافت ہے،  
گری ہوئی بات ہے کہ انسان کبھی اسکی ہمت افزائی نہ کرے۔

خلاصہ یہ کہ حضرت کی پوری زندگی "ادائے حقوق" سے عبارت تھی، اور جو چیز مثالیں  
پیش کی گئی ہیں انکی حیثیت محض مثال اور نمونے ہی کی ہے، ورنہ حضرت کے جس تعلق رکھنے والے

سے پوچھے، اسکے پاس اس عنوان کی نہ جلد نہ کتنی داستانیں محفوظ ملیں گی۔

## سادگی اور نفاست

حضرت کی زندگی سادگی اور نفاست کا ایک دلکش آمیزہ تھی، اللہ تعالیٰ نے حسنِ باطن کے ساتھ حسنِ ظاہر سے بھی نوازا تھا، اور طبیعت کی پاکیزگی، نفاست اور خوش مذاقی ادا دل سے نمایاں تھی۔ فرماتے تھے کہ کوئی چیز بے قاعدہ رکھی ہو تو بڑی ذہنی کوفت معلوم ہونے لگتی ہے۔ اس نفاست مزاج کا اثر گفتگو پر بھی تھا، گفتگو میں الفاظ کو اثر و تسنیم میں ڈھلے ہوئے استعمال فرماتے، بات چیت میں کوئی لفظ جو شائستگی کے معیار سے ذرا ہٹا ہوا ہو، طبیعت پر بار گزرتا تھا۔

جب حضرتؒ سے ابتداءً اصلاحی تعلق قائم ہوا تو ایک مرتبہ احقر حاضر خدمت ہوا، حضرتؒ کو کہیں تشریف لے جانا تھا، مگر سواری موجود نہ تھی، احقر کے پاس کار تھی، احقر نے عرض کیا کہ : ”حضرتؒ! میں آپ کو چھوڑا جاؤں گا“ حضرتؒ نے بے ساختہ فرمایا : ”چھوڑتے جاؤ گے، یا پہنچاتے جاؤ گے؟“ بھئی، ہمیں یہ پسند نہیں کہ کوئی ہمیں چھوڑ کر جائے“ پھر فرمایا کہ ”آج کل یہ جملہ بہت برا رواج پا گیا ہے کہ کسی شخص کو اپنی سواری میں کہیں پہنچانے کو چھوڑنے سے تعبیر کر دیتے ہیں، حالانکہ چھوڑنے کے لفظ میں ایک بیزاری کا سا پہلو ہے، صحیح لفظ پہنچانا ہے، وہی استعمال کرنا چاہیے“

اس سے پہلے اس باریک نکتے کی طرف کبھی توجہ نہیں ہوئی تھی، غور کیا تو محسوس ہوا کہ واقعہ یہ لفظ بڑا نامناسب، بلکہ بڑوں کے لئے تو بے ادبی کا لفظ ہے، اور آج کل اس سے بھی زیادہ برا لفظ ”ڈراپ“ (DROP) کرنا رائج ہو گیا ہے، لوگ کہتے ہیں کہ میں آپ کو فلاں جگہ ”ڈراپ“ کر دوں گا۔ حالانکہ اس لفظ کے معنی ”شیکانے“ کے ہیں۔ خاص طور سے کسی بڑے کے لئے اس لفظ کا استعمال بڑی بد مذاقی ہے۔ حضرتؒ کی اس تنبیہ کے بعد بحمد اللہ اب کبھی یہ لفظ استعمال نہیں کرتا۔

باس حضرتؒ والا حرافہ سہرا استعمال فرماتے، اور اس میں عموماً بہت لطیف خوشبو بھی استعمال فرماتے تھے جو نہ بہت زیادہ تھی کہ طبیعت پر بار ہونے لگے، اور نہ بالکل ہلکی کہ اس کا احساس

ہی نہ ہو۔ لیکن لباس میں تکلف اور تصنع نام کو نہیں تھا، سادگی کے ساتھ جو صاف ستھرا لباس میسر ہوتا، زیب تن فرماتے، اور سنت کے مطابق سفید لباس زیادہ پسند تھا۔  
 نشست کے انداز میں بھی سادگی کا یہ عالم تھا کہ عمر بھر کبھی مجلس میں تکیہ لگا کر نہیں بیٹھے، آخر عمر میں جب ضعف بہت زیادہ ہو گیا تھا، ہم خدام نے بار بار باصرار کہا کہ تکیہ لگائیں، لیکن حضرتؒ نہ مانے، شروع میں مجلس کے اندر کسی ممتاز اونچی جگہ پر بیٹھنا بھی پسند نہیں فرماتے تھے بعد میں جب لوگ زیادہ ہو گئے، اور ارشادات سے استفادے میں انہیں دقت ہونے لگی تو مجمعہ کی مجلس میں ایک چوکی پر بیٹھنے کو منظور فرمایا، مگر دو شنبہ کی مجلس میں نیچے ہی بیٹھتے، اور اپنے لئے کوئی امتیاز قائم نہ فرماتے۔

## جذبہ تبلیغ

ہم نے توجہ سے حضرت والا کو دیکھا، آپ کو جذبہ تبلیغ کی دھن میں محو پایا۔ آپ کی دعوت و تبلیغ اور تعلیم و تلقین صرف ہفتہ وار مجلسوں کی حد تک محدود نہیں تھی۔ بلکہ آپ جہاں بیٹھتے، دینی اشارات کا ایک سلسلہ شروع ہو جاتا، اور ہر جگہ کے مناسب ایسی ہلکی پھلکی باتوں کا انتخاب فرماتے جو اس خاص ماحول میں سننے والے پر بار دہوں، اور کوئی نہ کوئی دین کی بات کان میں پڑ جائے، سترہ سالہ تعلق میں اگر کبھی چند منٹ کے لئے سہرا ہے بھی کوئی ملاقات ہوئی تو کوئی نہ کوئی کام کی بات حضرتؒ نے ضرور کان میں ڈال دی۔

عام طور سے مشائخ طریقت کا طریقہ یہ رہا ہے کہ وہ طلبہ کی اچھی طرح جانچ کرنے کے بعد جب تک یہ اندازہ نہ کر لیتے کہ وہ طلبہ صادق لے کر آیا ہے، اس وقت تک اسے اپنے زیر تربیت نہیں لاتے تھے، لیکن ہمارے زمانے میں لوگوں کی طلب کا جو حال ہے، وہ سب کو معلوم ہے لیکن حضرت والاؒ نے تبلیغ اور خیر خواہی کے جذبے کے تحت یہ محسوس فرمایا کہ اب طلبہ صادق کا انتظار کیا گیا تو کتنے لوگ محروم ہی رہ جائیں گے، اس لئے انہوں نے اپنے پاس آنے والوں میں طلب پیدا کرنے کی ذمہ داری بھی خود ہی اٹھالی، آپ جلتے تھے کہ یہ لوگ جدید دور کی حواس باختہ زندگی میں پھنسے ہوئے ہیں، اس لئے جتنا تھوڑے سے تھوڑا وقت بھی کوئی شخص دین کے لئے نکال لے، اسی

کو غیبت سمجھ کر اسے ایسی باتیں بتادی جائیں جو اسکی زندگی پر اثر انداز ہوں۔

چنانچہ جب کسی بے تکلف شخص سے ملاقات ہوتی، آپ از خود فرماتے کہ: ”بھئی، آجایا کرو، اگر ہمیشہ موقع نہ ملے تو جب بھی موقع ملے، آجایا کرو،“ کبھی فرماتے: ”بھائی، ہم سے ہماری کچھ باتیں سُن لو، کان میں پڑ جائیں گی تو انشاء اللہ کبھی کام آئیں گی“ کبھی فرماتے کہ ”یہ باتیں شاید اب کہیں اور سننے کو نہ ملیں، ہماری زبان سے سن لو“، اور اکثر یہ شعر پڑھا کرتے ۛ

بھی سے سُن لو جو سننا ہے غم کی داستاں میری  
کہاں سے لائے گا پھر کوئی دل میں زبان میری  
کبھی فرماتے ۛ

کرد گے یاد جب باتیں کرد گے

کہ کوئی رفتہ بسیار گوتا

سامعین میں طلب پیدا کرنے کے لئے حضرت بکثرت ان باتوں کی اہمیت اور ان کے قابلِ قدر ہونے کا ذکر کرتے، فرماتے کہ میں نے جو باتیں حضرت حکیم الامت قدس سرہ سے سنی ہیں، اور جن سے مجھے نفع پہنچا ہے، وہ آپ لوگوں کے دل میں اتارنا چاہتا ہوں، ۛ

سنی میں جوان کے لب جانفزا سے

وہ باتیں سنائے کوچی چاہتا ہے،

اس لئے بار بار متوجہ کرتا ہوں کہ باتیں سُن لو جو کتابوں میں نہیں ملیں گی، بعض لوگ

میری اس بات کو عقلی پر محمول کرتے ہیں، اچھا بھئی، جو چاہو سمجھو، لیکن یہ باتیں سُن لو، یہ نہ دیکھو کہ کون کہہ رہا ہے؟ یہ دیکھو کہ کیا کہہ رہا ہے؟ میرے پاس جو کچھ ہے، حضرت ہی کی باتیں ہیں، اس لئے میں ان کی اہمیت بیان کرتا ہوں، درنہ الحمد للہ، عقلی کا داہمہ بھی دل پر نہیں گذرتا ۛ

بات منہ کی جو ترے آن کے دہرائی ہے

تیرے قاصد کو بھی دعوائے سیجائی ہے



## علمی مذاق

حضرت فرمایا کرتے تھے کہ ابتداء عمر سے میرا مذاق طالب علمانہ رہا ہے۔ حضرت نے باقاعدہ درس نظامی کی تحصیل تو نہیں فرمائی تھی، بلکہ انگریزی تعلیم اور قانون کی تعلیم حاصل فرمائی تھی، لیکن حضرت کے ناما بڑے عالم دین تھے، اور انہوں نے حضرت کو پہلے فارسی کی تعلیم دی، اور فارسی کی اعلیٰ ترین کتابیں خود پڑھائیں، یہاں تک کہ آپ کو فارسی پر مکمل عبور حاصل ہو گیا۔ پھر عربی صرف و نحو کی ابتدائی کتب بھی پڑھائیں، فقہ میں غالباً مختصر القدوری بھی پڑھائی، اور قرآن کریم کا ترجمہ و تفسیر بھی سبقاً سبقاً پڑھایا۔ اس کے بعد حضرت حکیم الامت سے تعلق قائم ہوا تو حضرت کی تصانیف اور مواعظ و ملفوظات کا اہتمام کے ساتھ مطالعہ کیا، حضرت کی مجالس میں بیٹھے، مدتوں صحبت اٹھائی۔ اس سب کے نتیجے میں دینی علوم کی بقدر ضرورت تمام وہ معلومات حاصل ہو گئیں جو بعض اوقات اچھے اچھے علماء کو بھی حاصل نہیں ہوتیں۔

آخر عمر میں حضرت والا نے اپنے زمانے کی ضروریات کے مطابق تصنیف و تالیف کا بھی نہایت مفید سلسلہ قائم فرمایا۔ دینی موضوعات پر حضرت کی سب سے پہلی تالیف غالباً "احکامیت" ہے جو احقر کے حضرت سے اصلاحی تعلق قائم ہونے سے پہلے ہی شائع ہو چکی تھی، اس کا پہلا ایڈیشن مختصر تھا، آخر عمر میں حضرت والا نے اسے برادر مکرم حضرت مولانا مفتی محمد رفیع عثمانی صاحب مدظلہم العالی کی مدد سے از سر نو مرتب فرمایا۔ اس نئی ترتیب میں یہ کتاب زیادہ جامع، مفصل اور فہمی اعتبار سے زیادہ مستند ہو گئی۔ ادھر حضرت کے ایک متوسل جناب مسعود احسن صاحب مرحوم نے حضرت کی مجلس سے خاص خاص ملفوظات کا انتخاب "افادات عارفی" کے نام سے مرتب کر کے شائع کر دیا تھا۔ جب احقر نے حضرت کی مجلس میں جانا شروع کیا تو حضرت "ماثر حکیم الامت" کی تالیف میں مشغول تھے، یہ حضرت حکیم الامت قدس سرہ کی عجیب و غریب سوانح ہے جس میں سوانحی حالات سے زیادہ حضرت کے مزاج و مذاق کی وضاحت پر زور دیا گیا ہے۔ اسے بھی ابتداء میں مسعود احسن صاحب مرحوم نے حضرت ڈاکٹر صاحب سے حضرت حکیم الامت کی باتیں سن سن کر بڑے دلکش پیرائے میں قلمبند کیا تھا، لیکن کتاب کی اشاعت سے

پہلے ہی مسودہ اس صاحب مرحوم کا انتقال ہو گیا، انا للہ وانا الیہ راجعون۔ حضرت اکثر مرحوم کا ذکر کر کے یہ مصرعہ پڑھا کرتے تھے ع۔

خوش دہشتید، ولے شعلہ مستعجل بود

انکی وفات کے بعد حضرت والاؒ نے اس پر نظر ثانی فرمائی، اور بہت سے مضامین کا اضافہ فرمایا۔ اس کتاب کی خصوصیت یہ ہے کہ اس میں حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے مدق زندگی کو زیادہ تر خود حضرت ہی کے ملفوظات کی روشنی میں مرتب کیا گیا ہے، خانقاہ نقانہ بھون کی ایسی مفصل اور دقیق قلمی تصویر کس دوسری کتاب میں نہیں ملیگی۔ اس کتاب کے مطالعے سے صرف حضرت حکیم الامت قدس سرہ کی سوانح حیات اور حضرت کے کارنامے ہی سامنے نہیں آتے، بلکہ ہر صفحے سے قاری کو خود اپنی زندگی کے لئے عجیب و غریب درس ملتے ہیں

”ماثر حکیم الامت“ کے بعد حضرت نے ”اسودہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم“ کی تالیف شروع فرمائی۔ اس تالیف کا مقصد یہ تھا کہ زندگی کے ہر شعبے سے متعلق آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی سنتیں اور آپ کا طرز حیات ایک کتاب میں جمع ہو جائے، تاکہ ایک طالب کو ہر شعبہ زندگی میں سنت کی رہنمائی آسانی سے دستیاب ہو سکے، اور اس کے لئے ”اتباع سنت“ جو شریعت و طریقت کی روت و روال ہے، ملا آسان ہو جائے۔

اس غرض کے لئے حضرت والاؒ نے ابتدا میں یہ مسودہ تیار کیا کہ اس کے اختصار و اندماجہ حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب قدس سرہ لو پیش کیا۔ حضرت والد صاحب قدس سرہ نے محسوس فرمایا کہ اسکے بعض مآخذ مستند نہیں ہیں، اور یہ اپنی موجودہ صورت میں مفید نہیں ہوگا، چنانچہ اپنی اس رائے کا اظہار حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ سے فرمادیا۔ حضرت نے باوجودیکہ اس مسودے کی تیاری پر کافی محنت اٹھائی تھی، لیکن اس مسودے کو یکاخت منسوخ فرمادیا، اور دوبارہ حضرت والد صاحب کے مشورے سے مستند مآخذ کو سامنے رکھ کر از سر نو تالیف شروع فرمائی۔ بالآخر کئی سال کی محنت اور عرق ریزی سے یہ کتاب تیار ہوئی، اور محمد اللہ اپنے مومنوع پر اس قدر جامع، مفید اور عام فہم کتاب تیار ہو گئی کہ ”اتباع سنت“ کا جذبہ رکھنے والے کے لئے اس سے زیادہ جامع اور سہل الحصول کتاب کم از کم اردو میں شاید کوئی دوسری نہ ہو۔ اللہ تعالیٰ نے اسے

مقبولیت بھی اس قدر عطا فرمائی کہ اب تک اسکے بیسیوں ایڈیشن شائع ہو چکے ہیں، مختلف کتب خانوں نے اسے شائع کیا ہے، اور انگلہ ہے کہ بڑھتی جاتی ہے۔

اس کے بعد حضرت نے وہ مختصر رسالہ ”معمولاتِ یومیہ اور مختصر نصابِ اصلاحِ نفس“ تالیف فرمایا جو اپنے موضوع پر دریا بجوزہ کا مصداق ہے۔ اس کا واقعہ بھی یہ ہوا کہ ایک روز ہم حسبِ معمول دو شنبہ کی مجلس میں حاضر ہوئے تو حضرت نے فرمایا ”کاغذ قلم لے کر آؤ“ آج ہم تمہیں کچھ ضروری باتیں لکھوانا چاہتے ہیں ”حقیر کاغذ اور قلم لے کر حاضر ہو گیا تو فرمایا کہ ”آج میرے دل میں قوت کے ساتھ یہ داعیہ پیدا ہوا کہ تم لوگوں کو سلوک و طریق کے تعلق چند ضروری باتیں قلمبند کر دوں، تاکہ وہ تمہارے پاس محفوظ ہو جائیں، اور بعد میں تمہیں یہ حسرت نہ ہو کہ تم نے اپنے والد ماجد سے جو حاصل کرنے کی چیز تھی، وہ حاصل نہیں کی۔“

یہ کہہ کر حضرت دالانے برجستہ املا کرانا شروع کیا، اور مغرب تک یہ املا مکمل فرمادیا، حقیر نے صاف کر کے یہ تحریر حضرت کو پیش کی، حضرت نے اس میں کچھ مزید اضافات فرمائے، بس یہ کتاب ”معمولاتِ یومیہ اور مختصر نصابِ اصلاحِ نفس“ کے نام سے شائع ہو گئی۔ دیکھنے میں یہ ایک مختصر رسالہ ہے، لیکن اس میں حضرت نے طریقِ تصوف و سلوک کا عطر نکال کر رکھ دیا ہے، اگر انسان اپنی زندگی میں صرف اس ایک رسالے پر کاربند ہو جائے تو انشاء اللہ اسکی دینی اصلاح کے لئے کافی ہے۔

اللہ تعالیٰ نے اس رسالے کو مقبولیت بھی اس قدر عطا فرمائی کہ یہ اب تک لاکھوں کی تعداد میں چھپ چکا ہے جب اسکی اشاعت ملک و بیرون ملک بہت زیادہ ہو گئی تو حضرت نے ایک دن ہم سے فرمایا کہ ”یہ کتاب لکھی تو تم لوگوں کے لئے گئی تھی، مگر ماشاء اللہ بے شمار لوگ اس سے فائدہ اٹھا رہے ہیں، اس پر مجھے اپنا ایک واقعہ یاد آیا۔ حضرت والا یعنی حکیم الامت حضرت تھانوی قدس سرہ نے ایک مرتبہ اپنی شفقت سے حقیر کو شہد کی ایک بٹول عطا فرمائی۔ حقیر کو بہت مسرت ہوئی، اور اسے بہت احتیاط سے ایک الماری میں رکھ دیا، خیال یہ تھا کہ یہ حضرت والا کا عطا فرمودہ تبرک ہے، اس لئے اس سے بہت قدر کے ساتھ کبھی کبھی تبرک حاصل کریں گے، لیکن میں اسے الماری میں رکھ کر بھول گیا، کافی عرصے کے بعد ایک دن یاد آیا تو سوچا کہ آج حضرت والا کے اس

شہد کو تبرکاً استعمال کیا جائے۔ اب جو الماری کو کھول کر دیکھا تو بے شمار چوڑے پٹے پٹے ہوئے تھے اور اسے صاف کر گئے تھے۔

یہ واقعہ سنا کر حضرتؒ نے فرمایا کہ ”بھئی، ایسا نہ ہو کہ ”معمولاتِ یومیہ“ جو تمہارے لئے لکھی گئی تھیں، شہد کی قول ثابت ہو جسے تمہارے بھائی دوسرے چوڑے پٹے صاف کر جائیں۔ اللہ تعالیٰ حضرتؒ کی اس کتاب پر ٹھیک ٹھیک کار بند ہونے کی توفیق عطا فرمائیں۔ آمین۔

اس کے بعد حضرتؒ کے دل میں یہ داعیہ پیدا ہوا کہ حضرت علیہ الامت قدس سرہ نے اس دور میں تصوف اور طریق کو جس طرح بے غبار فرادیا ہے، وہ عہد حاضر کے مسلمانوں کے لئے غنیمت کبریٰ ہے، لیکن حضرتؒ نے اس سلسلے میں جو کچھ تحریر یا ارشاد فرمایا ہے، وہ بہت سی کتابوں میں منتشر ہے، اور ہر شخص کی پہنچ سے باہر ہے۔ اس لئے تصوف و طریق کے اہم مسائل کو ایک فن کی صورت میں ایک کتاب میں مدون کر دیا جائے، چنانچہ حضرتؒ والا نے یہ کارنامہ ”بصائر حکیم الامت“ کے نام سے انجام دیا۔

”بصائر حکیم الامت“ کا منفرد امتیاز یہ ہے کہ وہ تمام تر حضرت حکیم الامت قدس سرہ کی ایضات یا مواعظ و ملفوظات کے اقتباسات پر مشتمل ہے۔ یہ اقتباسات کسی ایک کتاب سے نہیں بلکہ دسیوں مختلف کتابوں سے لئے گئے ہیں جن میں التکشف، التشریف، تربیت السالک، تعلیم الدین، قصد البییل، کلید مشنوی، عرفان حافظ، اور نہ جانے کتنے مواعظ و ملفوظات شامل ہیں۔ لیکن ان متفرق اقتباسات کو حضرتؒ نے اس ترتیب کے ساتھ یکجا فرادیا ہے کہ وہ ایک مسلسل کتاب بن گئی ہے جس میں تصوف کا پورا علم مدون اور مرتب صورت میں سامنے آگیا ہے۔ ایک متبدی شخص بھی اس کتاب کی مدد سے مرتب طریقے پر علم تصوف سے آگاہی حاصل کر سکتا ہے۔

اس کتاب کی قدر اس وقت معلوم ہوتی ہے جب انسان تصوف کے موضوع پر لکھی ہوئی مفصل اور طویل کتابیں نگمائے کے بعد اس کی طرف رجوع کرے، اس وقت پتہ چلتا ہے کہ ہزاروں اوراق کا مخزن کس طرح اس ایک کتاب میں جمع ہو گیا ہے۔

پھر جس زمانے میں حضرتؒ ”بصائر حکیم الامت“ کی تالیف کے دوران حضرت حکیم الامت قدس سرہ کی کتابوں کے مطالعے اور ان میں سے اخذ و انتخاب میں مشغول تھے، اسی زمانے میں



بہت سے ایسے اقتباسات ضمناً سامنے آتے رہے جو اگرچہ "بھائے حکیم الامت" کے موضوع سے متعلق نہ تھے، لیکن بذاتِ خود خاص علمی یا عملی اہمیت کے حامل تھے، حضرتؒ ایسے اقتباسات کو الگ جمع فرماتے رہے یہاں تک کہ ان کا ایک ضخیم ذخیرہ جمع ہو گیا، بعد میں آپ نے اس ذخیرے کو "معارف حکیم الامت" کے نام سے مرتب فرمایا، یہ بھی بحمد اللہ شائع ہو چکا ہے، اور بڑے گرانقدر مضامین پر مشتمل ہے۔

اسی طرح حضرت والاؒ کے ایمار سے حضرتؒ کے متوسل خاص جناب مسعود احسن صاحب مرحوم نے (جن کا ذکر "مآثر حکیم الامت" کے تعارف کے تحت آچکا ہے) حضرت حکیم الامت کے مواعظ و ملفوظات سے وہ ارشادات منتخب فرمائے تھے جو عہدِ حاضر کے مسائل جدید گراہیوں اور جدید شبہات سے متعلق تھے۔ مرحوم نے اس سلسلے میں ارشادات کا ذخیرہ تو کافی جمع فرمایا تھا، لیکن مرتب نہ کر سکے تھے کہ وفات ہو گئی۔ حضرت والاؒ نے اس منتشر ذخیرے کو مرتب فرمانے اور اس میں مناسب ترتیب و اضافہ کی ذمہ داری بھی خود اٹھائی، اپنے متعدد دھرم سے بھی اس سلسلے میں کام لیا، اور خود بھی اس میں مصروف رہے، یہاں تک کہ یہ کتاب "اصلاح المسلمین" کے نام سے شائع ہوئی، اور عہدِ حاضر کے عام مسلمان، بالخصوص نو تعلیم یافتہ افراد کے لئے بڑے قیمتی ارشادات پر مشتمل ہے۔

آخر دور میں حضرتؒ کے دل میں اس بات کا داعیہ قوت کے ساتھ پیدا ہوا کہ حضرت حکیم الامت قدس سرہ کی تمام تصانیف اور مواعظ کی ایک جامع فہرست ان کے مختصر تعارف کے ساتھ مرتب کی جائے چنانچہ پہلے یہ کام خود شروع فرمایا، پھر اپنے متعدد دھرم سے اس میں مدد مل، بالآخر سعودی عرب سے خاب کریم الدین صاحب نے اس کام کی تکمیل حضرتؒ کے منشاء کے مطابق فرمائی، خود حضرتؒ کے زمانے میں مواعظ کی جو فہرست "مرآۃ الموعظ" کے نام سے شائع ہوئی تھی، اسے بنیاد بنا کر ہر ہر دعوئے کے بارے میں اس کا مختصر تعارف لکھا کہ اس میں کونسی آیت تلاوت کی گئی؟ اور بنیادی موضوع کیا تھا؟ آخر میں حضرت والاؒ نے حضرتؒ کی تصانیف کی مکمل فہرست، اور اہم تصانیف کی فہرست ہائے مضامین اس میں شامل کر دیں۔ جن تصانیف اور مواعظ کا ذکر اس میں نہیں آ سکا تھا، انکی مزید تکمیل حضرتؒ کے زیرِ ہدایت احقر کے معاون مولانا عبداللہ مبین صاحب نے کی۔ حضرتؒ کی حیات میں اس کتاب کی کتابت "مکتبہ دارالعلوم" کے زیرِ اہتمام شروع ہو چکی تھی، لیکن انسوس ہے کہ حضرتؒ کی حیات میں شائع نہیں ہو سکی، اب اس کی کتابت مکمل ہو چکی ہے اور زیرِ طبع ہے۔

یہ تو حضرت بالاک مستقل تالیفات تھیں، اس کے علاوہ حضرت جمعہ اور دوشنبہ کو جو خطاب فرماتے تھے، بعض خدام ان خطابات کو قلمبند کر لیتے، حضرت ان پر نظر ثانی فرماتے، اور وہ شائع ہو جاتے اس طرح درجنوں کتابچے جو مختلف اصلاحی اور تربیتی موضوعات پر مشتمل ہیں، شائع ہو چکے ہیں۔ صدیقی ٹرسٹ کے حضرات نے ان کتابچوں کا ایک سیٹ بھی شائع کیا تھا اور بعد میں برادر مکرم مولانا محمد اسحاق صاحب نے ”ادارہ تالیفات اشرفیہ“ سے ان تمام کتابچوں کو یکجا جمع کر کے ”افادات عارفیہ“ کے نام سے الگ بھی شائع فرمادیا ہے۔

## صہبائے سخن

شعر و شاعری بھی انہماک جذبات کا ایک بہترین ذریعہ ہے، اور چونکہ شعرِ دل کے لطیف تاروں کو چھیرنے کا وہ نازک کام انجام دیتا ہے جو عموماً شاعر سے ممکن نہیں ہوتا، اس لئے شعر اور تصوف کا چولی دامن کا ساتھ رہا ہے۔ اس لئے ہمارے تمام بزرگوں کو شعر کا خاص ذوق رہا، بہت سوں نے تو خود بھی شعر کہے، اور جنہوں نے خود نہیں کہے، وہ کم از کم شعر نہیں کی حد تک اس کو چمے سے وابستہ رہے، اگرچہ اس کو باقاعدہ مشغلہ کسی نے نہیں بنایا۔ کیونکہ ایک شغل تنہائی کی حد تک شعر جتنا لطیف اور تسکین بخش ہے، اگر اسے شب و روز کا مستقل مشغلہ یا پیشہ بنالیا جائے تو وہ اتنا ہی کثیف، لایعنی اور بھونڈا مشغلہ بن کر رہ جاتا ہے۔

حضرت والا شاعر کی حیثیت سے کبھی متعارف نہیں ہوئے، لیکن شعر کا فطری ذوق بچپن سے تھا، چنانچہ نوجوانی کے آغاز ہی سے آپ نے بڑی پائے کی غزلیں کہنی شروع کر دی تھیں، پھر خانقاہ تھانہ بھون سے وابستگی کے بعد اس ذوق کو اور جلال مل گئی، اور آپ نے بڑے معرکے کی جنہیں کہیں، ایسی غزلیں کہ ان کو بلا تکلف اردو کے صفِ اول کے معروف شعرا کے کلام کے مقابلے میں رکھا جاسکتا ہے۔ لیکن آپ نے اپنا کلام نہ کبھی کسی شاعر سے میں پڑھا، نہ اس کو کہیں چھپوایا۔ یہ تو اس دردِ دل کے اظہار کی ایک راہ تھی جو خانقاہ تھانہ بھون نے پیدا کیا تھا، یہ اظہار تنہائی میں اپنے سامنے ہی ہوتا تھا، کسی اور کے لئے نہیں لہذا خود بقول حضرت سے

زیرِ مژگاں ہی رہا سرمایہ خونِ جگر  
یہ وہ آنسو ہی نہ تھا جسکو بہا کر دیکھتے

حضرت دالائے اپنی شاعری کا تعارف اس طرح کرایا ہے :

یہ مرے اشعار، یہ ضرباتِ قلب بے قرار  
ہیں مرے وجدانِ حسن و عشق کے آئینہ دار  
شاعری ہے میری تنہائی کا اک شغلِ لطیف  
اپنی بزمِ دل کا خود ساقی ہوں، خود ہوں گیسار  
جب ہوا کچھ کیفِ دل میں، کہہ لئے دو چار شعر  
پھر بقدرِ ذوق ان کو پڑھ لیا دو چار بار  
عمر بھر میں نے چھپایا ان کو مثلِ رازِ دل  
کیا سہِ محفلِ سناٹا ماجرائے ناگوار  
یہ نوائے تلخ و شیریں، یہ فغانِ گرم و سرد  
کیوں کسی اہلِ نظر کی طبعِ نازک پر ہو بار  
میں ہوں جس عالم میں رہنے دے مجھے لے عارفی

محفلِ اہلِ ہنر سے دور اور بیگانہ دار

حضرت کا یہ شغلِ لطیف اکثر تنہائی کی حد تک ہی محدود رہتا تھا، لیکن کبھی کبھی مخصوص احباب کے سامنے بھی آجاتا تھا۔ حضرت بابا نجم احسن صاحبِ قدس سرہ (مجاز حضرت حکیم الامت قدس سرہ) جو بذاتِ خود اعلیٰ درجے کے ادیب اور شاعر تھے، حضرت کے خاص دوست اور طریق و تصوف سے لیکر شعر و سخن تک ہر چیز میں حضرت کے ہم مذاق تھے۔ جب کبھی یہ دونوں بزرگ تنہائی میں فرصت سے بیٹھتے تو شعر و شاعری کی باتیں بھی ہوتیں، اور اشعار کا تبادلہ بھی۔ بالآخر حضرت بابا نجم احسن صاحبِ قدس سرہ نے خلا جانے کس انداز سے اصرار فرمایا کہ حضرت کو اپنے مجموعہء کلام کا اشاعت پر آمادہ کر لیا۔ چنانچہ یہ مجموعہء کلام ”صہبائے سخن“ کے نام سے شائع ہوا۔

آخر عمر میں جب حضرت اپنی تمام پیش نظر تالیفات سے فارغ ہو چکے تھے، اور ضعف و علالت کا سلسلہ رہنے لگا تھا، حضرت فرمایا کرتے تھے کہ ”اب میں تھک چکا ہوں، اب کسی نئی تالیف کو شروع کرنے کی ہمت نہیں، اب میں بطورِ تفریح و ہیلے سخن پر نظر ثانی کر رہا ہوں“ چنانچہ یہ نظر ثانی بڑی حد تک فرما چکے تھے، اور جنابِ حماد رضا صاحب سے بھی اس سلسلے میں کافی مدد ملی تھی، اب یہ نظر ثانی شدہ مجموعہ جنابِ حماد رضا صاحب کے پاس ہے جو اس پر حضرت کی ہدایات کے مطابق کام کر رہے ہیں :

حضرت کے کلام پر صحیح تبصرہ کسی نثری شاعر کے بس کا نہیں ہے، بلکہ اس پر صحیح تبصرہ وہی کر سکتا ہے جو اہلِ دل بھی ہو، اور اسے شہرِ فہمی سے بھی محضہ وافر ملا ہو، اور آج کل ان

دو دنوں صفتوں کا اجتماع نایاب نہیں تو کیا ب ضرور ہے، اس لئے احقر اس پر تبصرہ کرنے کا  
 اپنے آپ کو اہل نہیں پاتا، لیکن جب حضرتؒ کے کلام کا ذکر نکل آیا ہے تو حضرتؒ کے کچھ منتخب اشعار  
 پیش کئے بغیر بھی دل نہیں مانتا۔ ملاحظہ ہوں ۵

مرا کیفِ نغمہ دل، مرا ذوقِ شاعرانہ      ترے حسن کا ترنم، ترے عشق کا ترانہ  
 ترے حسن کی عطا ہے ترے عشق کا صلہ ہے      مری آہ صبح گاہی، مرا نالہ شبانہ  
 تری یاد دے اجازت تو باتوں میں کہ کیوں ہے      مرا ہر نفس حقیقت، مرا ہر نفس فسانہ

پردہ دارِ شوشِ دل خاموش ہوتی ہے کیا  
 اہتمام ضبط سے غم میں کس ہوتی ہے کیا؟  
 پارہا ہوں دردِ دل میں لذتِ ایمانے دوست  
 ایسی حالت بھی محبت میں کبھی ہوتی ہے کیا؟  
 اک ادائے چارہ فرما، اک نگاہِ دل نواز  
 اور اک آرزوہ خاطر کی خوشی ہوتی ہے کیا؟

یاد انکی ہے اک بادۂ سرخوشِ محبت      اور اب مری رگ رگ میں یہی چیز بھری ہے  
 جو کچھ بھی ہوا انجام گدازِ غم نہیں      فی الحال تو کچھ باعثِ تسکین یہی ہے  
 اے عارفی اب اس دل پر شوق کا عالم  
 اک عالمِ صدا بادۂ وحدتِ شنہ لبی ہے

اب دل میں نہیں کوئی تما کئی دن سے      پاتا ہوں مچھوپائے تنہا کئی دن سے  
 ابلے میں توپتی نہیں مجروح امیدیں      رستائیں اب زخمِ تما کئی دن سے  
 ہوا مگر پریش کش نگہ لطف کسی کی      اب یہ بھی نہیں دل کو گوارا کئی دن سے



یہ حسنِ یقینِ روحِ رواں میرے لئے ہے      خود انکا حریمِ رگِ جاں میرے لئے ہے  
 بس رہنے دے اس جذبِ ثیابِ وفا کو      جو خاطرِ نازک پہ گراں میرے لئے ہے  
 میں عارفِ آوارہ صحوئے فنا ہوں ،  
 اک عالمِ بے نام و نشان میرے لئے ہے

محوِ مقامِ ناز ہوں کون و مکان سے دور      گم ہوں رہِ نیاز میں نام و نشان سے دور  
 ادبے نیازِ پاسِ وفا اک نگاہِ رحیم      ہے کوئی سرِ بجدہ ترے آستان سے دور

نشاطِ کامِ اس کا، حیاتِ جاوداں اس کی      جو دل لذت کش ذوقِ نگاہِ یار ہو جائے  
 دل پر شوق جس کو جلوہ گاہِ ناز بننا تھا      غضب ہے یوں رہیں شورشِ افکار ہو جائے  
 مری آنکھوں میں چشمِ مست سا کد ہے دُعا      نظر بھر کر جسے بھی دیکھ لوں میخوار ہو جائے  
 زباں پر آ رہے ہیں بر ملا سرِ رے خانہ      جسے مدہوش ہونا ہو، ذرا ہشیار ہو جائے

دل بیتاب ہی میں دم نہیں ہے      مجھے اب نازِ ضبطِ غم نہیں ہے  
 نہ جلنے کتنے عالمِ دل پہ گذرے      مگر اب کوئی بھی عالم نہیں ہے

بہت ہے عارفِ بے کیفِ دل  
 مگر کیفِ محبت کم نہیں ہے

دل جو یوں طالبِ پیماںِ وفا ہے اے دوست

یہ بھی کچھ ذوقِ محبت کی خطبہ ہے اے دوست  
 کس طرح جلوہ گر ناز میں انھیں گے قدم ؟

یاں تو ایک ایک نفسِ ہوش رہا ہے اے دوست

جو ترے نازِ تغافل کی فضا میں گم ہے  
 کیا تجھے بھی کہیں اس دل کا پتلا ہے لے دوست  
 شرحِ غم کے لئے آنکھوں میں جواشک آجائیں  
 آئی جرات بھی تو تیری ہی عطا ہے لے دوست

یہ بھی لے دن اثر در دہاں ہے شاید      دیکھ رگ رگ مری اب تو رگ جاں ہے شاید  
 عارفِ دل میں یہ احساسِ تنہا ہے      اپنی ہستی کا کوئی وہم و گماں ہے شاید

بھگو اپنی بنجودی کا وہ بھی عالم یاد ہے  
 جب کسی کو اپنے دل میں میہاں سمجھا تھا میں  
 لذتِ درد نہاں بھی بارِ خاطر تھی مجھے  
 کچھ اسے بھی اک حجابِ درمیاں سمجھا تھا میں  
 منزلِ فدوی طلب میں جاؤ ہستی سے دور  
 تم دہیں آخر ملے بھگو جہاں سمجھا تھا میں  
 رفتہ رفتہ ہو گئی برہم زنِ صبر و قرار  
 یاد انکی باعثِ تسکینِ جاں سمجھا تھا میں  
 اللہ اللہ تھی انہی کے پائے نازک چہیں  
 بنجودی میں سجدہ کہ کو آستان سمجھا تھا میں

محبت میں یہ کیا کہتے کہ رازِ بنجودی کیا ہے      نہ گذرے جو کسی کی یاد میں وہ رنگ کیا ہے؟  
 برابر ایک دھن رہتی ہے تجدیدِ تمنا کی      خدا علومِ دل کو عافیت سے دشمنی کیا ہے؟  
 یہ بزمِ ناز میں آخر ترا کیا حال ہے نامح      یہ آہِ زیر لب کیوں ہے؟ یہ آنکھوں میں نمی کیا ہے؟

ہر تعلق، ہر خیال و فکر سے بیگانہ ہے اب تو کچھ اپنی ہی دھن میں یہ دل دیوتا ہے  
 میں ہوں اب دنیا و مافیہا کے غم سے بے نیاز جامے ہے، بیخودی ہے، گوشہ نشینا ہے  
 کیا کس سے کہئے رازِ بادۂ سرخوشِ عشق  
 عارفِ لب پر مرے ہر لب پیمانہ ہے

اب تو کر سکتے ہیں یہ احساس بھی شکل سے ہم کیا تھے؟ اور کیا ہو گئے تاثیرِ درِ دل سے ہم  
 ہے قدمِ راہِ طلب میں، گودۂ ماقص ہی سہی کچھ تو حاصل کر رہے ہیں سبھی لا حاصل سے ہم  
 اے دفورِ شوق! ان محرومیوں کا کیا علاج ہے تو منزلِ پاس، لیکن دور میں منزل سے ہم

سازِ دل شکستہ نہ چھڑا کرے کوئی ناموسِ ضبطِ غم کو نہ رسوا کرے کوئی  
 اس ربطِ حسن و عشق کا عالم ہی اور ہے دل میں رہے، اور آنکھ سے پردہ کئے کوئی  
 تاثیرِ سوزِ غم، ترا انجامِ الاماں! کس کا جگر کہ تیری تمنا کرے کوئی  
 جی چاہتا ہے پھر وہ نگاہِ ستم طراز میرے دلِ حزیں سے تعاضا کرے کوئی  
 میں اپنے رازِ عشق کا محرم بنا تو لوں میرا سا طرفِ دل بھی تم پیدا کرے کوئی  
 جب انکوائیِ عترتِ فاسدِ محبت ہے عارفی  
 کیا اس سے بڑھ کے اور تمنا کرے کوئی

جو ضبطِ غم سے نینوںِ خونِ مدعا کرتے بتا کہ پھر ترے مجبور اور کیا کرتے  
 کسی کے قدموں پر سر رکھ کے ہوش اگر رہتا قضا ہوئے تھے جو سجدے وہ ہم ادا کرتے

آج پاسِ ضبط کا کچھ رُخ بدل کر دیکھتے خود تڑپ کر اپنی بیابانی کا منظر دیکھتے  
 میں ہوں جس عالم میں اس عالم کا اب کیا رنگِ کاش بھولے سے تم بھی تو آکر دیکھتے  
 زیرِ مشرگاں ہی رہا سراپائے خونِ جگر یدوہِ آنسو ہی نہ تھا جس کو بہا کر دیکھتے

راہِ وفا میں عالم تنہا روی نہ پوچھ      دو گام بھی ملا نہ کوئی ہم سفر مجھے  
لے تو چلی ہے ہمت پر داز سوئے گل      چنچلیاں جتنی دور بھی اب بال و پر مجھے  
مجبور کر رہے ہیں کہ سر ناپا پھوڑ لوں      زندانِ اختیار کے دیوار و در مجھے

مجھ سے ممکن ہی نہیں ترکِ تمناے وفا      کیفِ صد حاصل مجھے اس سنی لاحال میں  
اس محبت کا مذاق صبرِ آشوبی نہ پوچھ      جو قیامت تک نہ ہو پوری وہ حسرتِ دل میں  
صرف دو آنسو بہت تھے شرحِ غم کے واسطے      کیا خبر تھی منتظر دریا کا دیا دل میں ہے  
ہر طرح پُر امن ہے آغوشِ گردابِ فنا      اور ہر اندیشہ جاں و امن ساحل میں ہے  
ناشناسِ چشمِ ولبِ بیگانہ شرحِ و بیاں      مضربِ ساکِ تقاضائے محبتِ دل میں ہے  
کہہ چکا جی بھر کے جو کچھ ان سے کہنا تھا مجھے      پھر بھی اب تک حسرتِ شرحِ تبادل میں ہے

اس مذاقِ بلند کی انتہائی ناتمام جھلک ہے جو پوری ”صہبائے سخن“ میں رواں دواں ہے،  
لیکن جو حضرات شعر و سخن سے ذوق رکھتے ہیں، وہ اس نونے سے بھی اس مذاق کا کچھ نہ کچھ اندازہ کر سکتے  
ہیں۔ یہ وہ رفعتِ فکر ہے جس سے آج کی شاعری روز بروز محدود ہوتی جا رہی ہے۔

الحمد للہ حضرت والا نے آخری دور میں ”صہبائے سخن“ پر نظر ثانی کا کام مکمل فرمایا تھا، اور اب  
وہ جنابِ حماد رضا صاحب کے زیرِ اہتمام ترتیب کے بعد انشاء اللہ اہل ذوق کے لئے سراپائے سکین  
بنے گا۔

## آخری لمحات

الحمد للہ اللہ تعالیٰ نے تقریباً سترہ سال حضرت والا کی نظرِ شفقت کے سلسلے میں رہنے کی توفیق  
مرحمت فرمائی۔ اپنی ہزار نا اہلی کے باوجود حضرت والا کے لطافت کی بارشیں بغیر کسی استحقاق کے برتی  
رہیں، الحمد للہ ان کے دل سے نکلی ہوئی دعائیں میسر آئیں، اپنی طرف سے کوتاہیاں ہی کیا یہاں تھیں،  
لیکن ادھر سے پیہم التفات و عنایت کا معاملہ جاری رہا، اور میں اس کو بھی حضرت کی کرامت ہی سمجھتا



ہوں کہ اپنی طرف سے نالائقوں کی انتہا ہو جانے کے باوجود ان کے لطف و کرم میں کبھی فرق نہیں آیا۔ بہت سی باتوں پر روک ٹوک بھی جاری رہی، بہت سے کاموں سے روکا بھی گیا، اور ہماری کسی ادنیٰ غلطی پر بھی سکوت کو آپ نے گوارا نہیں فرمایا، لیکن ہمیشہ اس شفقت و محبت اور لطف و عنایت کے ساتھ کہ اس پر ہزار ہمت افزائیاں قربان ہوں۔ الحمد للہ اس عرصے میں زنگ کا کوئی اہم قدم حضرت سے استصواب کے بغیر نہیں اٹھا، اللہ تعالیٰ کی اس نعمت پر حق شکر ادا ہو ہی نہیں سکتا۔

حضرت کے ضعف و علالت کا سلسلہ تو جاری ہی تھا، اور ہر وقت دھڑکا لگا رہتا تھا کہ یہ چراغِ آخر شب نہ جلنے کی طرف نہ جانے کا مہمان ہے، خود حضرت بھی کبھی کبھی یہ شعر پڑھا کرتے تھے کہ ۵

غالبِ خمستہ کو پاؤ گے کہاں

کر لو اس کی مہمانی چند روز

مجھے رجب ۱۳۵۷ھ میں "مجمع الفقہ الاسلامی" کے اجلاس میں شرکت کے لئے سعودی عرب جانا تھا، وہاں سے استنبول (ترکی) آئے ایک مذاکرے میں شرکت کرنی تھی جو "تراجم قرآن کریم" کے موضوع پر منعقد ہونے والا تھا۔ حسبِ معمول اہقر نے دونوں سفروں کی حضرت سے اجازت لی، اور اجازت لینے کے بعد روانگی کا پروگرام بنایا۔

روانگی سے پہلے حضرت کی خدمت میں حاضر ہوا، حضرت نے حسبِ عادت بڑے پیار کے ساتھ رخصت کیا، دعائیں دیں، ہمیشہ کی طرح آیۃ الکرسی پڑھ کر دم کیا، سفر پر جانے سے پہلے حضرت کی یہ دعائیں میرے لئے سب سے بڑا زادِ راہ ہوتی تھیں، چنانچہ اس دولت سے مالا مال ہو کر روانہ ہوا۔

تقریباً دس دن حرمین شریفین اور جدہ میں گزرے، اسکے بعد میں استنبول چلا گیا۔ استنبول میں پانچ دن گزرنے پر وہ مذاکرہ ختم ہو گیا جس میں شرکت کے لئے وہاں جانا ہوا تھا۔ اسکے بعد پل آئی اے کی پرواز چار دن بعد تھی، اور سفر کے قواعد کے مطابق مجھے پل آئی اے سے واپس آنے میں کئی فوائد تھے، استنبول کے کئی احباب بھی مُصر تھے کہ یہ تین چار روز ترکہ ہی میں گزارے جائیں، اور اس عرصے میں قوتیہ اور انقرہ کا سفر ہو جائے۔

حضرت مولانا روٹی کی وجہ سے قوتیہ جانے کا مجھے بھی اشتیاق تھا، لیکن نہ جانے کیوں طبیعت ایک بیک الٹ گئی، اور مجھے یہ تین چار دن پہاڑ معلوم ہونے لگے، میں نے کانفرنس کے منتظمین پر زور دیا کہ وہ جس ایئر لائنز سے بھی ممکن ہو، میل ٹکٹ جلد از جلد کراچی کے لئے بک کر ادیں، چنانچہ انہوں نے بھاگ

دور کر کے ٹرکشن ایئر ویز سے میری سیٹ لگے ہی دن کے لئے بک کرادی، اور میں ایک نامعلوم اضطراب کے عالم میں استنبول سے سیدھا کراچی پہنچ گیا۔

ساری رات کی پرواز کے بعد میں صبح ہوتے ہی کراچی ایئر پورٹ پر اترا تو احقر کے خسر محترم جناب شرافت حین صاحب اور احقر کے معاون مولانا عبداللہ مین صاحب نے بتایا کہ حضرت والا کی طبیعت خراب ہے، سن کر ماتھا ٹھنک گیا، دل کو یہ کبکرتی سی دی کہ حضرت والا ان دنوں متحدہ مرتبہ طبیعت ناماز ہوئی ہے، انشاء اللہ پہلے کی طرح اس مرتبہ بھی صحت ہو جائے گی۔ لیکن جس انداز سے خبر دینے والوں نے خبر دی تھی اس سے انداز یہ ہو رہا تھا کہ اس مرتبہ معاملہ کچھ اور ہے، گھر پہنچنے کے بعد احقر ناشتہ وغیرہ کر کے سیدھا حضرت کے مکان پہنچا، معلوم ہوا کہ حضرت کو ہسپتال میں داخل کر دیا گیا ہے، دل پر چوٹ سی لگی، ادا خاں خیزاں ہسپتال پہنچا، حضرت ایک کمرے میں آرام فرماتے تھے، بجائی نماز صاحب سر ہائے کھڑے تھے، بجائی ممتاز صاحب نے احقر کی آمد کی اطلاع کی تو حسب معمول احقر کی آمد پر مسرت کا اظہار فرمایا، فرمانے لگے: ”الحمد للہ، تم آئے، بجائی ہیں یہاں ہسپتال میں داخل کر دیا گیا ہے، دیکھو ہم کس عالم میں ہیں؟“ احقر کو اندازہ تھا کہ حضرت والا طبیعت طویل ہسپتال میں داخل ہونے کو پسند نہیں فرماتے اور اس واقعے سے بھی متاثر ہونگے، اس لئے احقر نے عرض کیا کہ: ”حضرت! تیمار داروں کے دل میں قوت کے ساتھ یہ داعیہ پیدا ہوا کہ ہسپتال میں داخل کر کے ضروری امتحانات وغیرہ کرائے جائیں، یہ داعیہ بھی منجانب اللہ ہے، انشاء اللہ اسی میں خیر ہوگی، امتحانات وغیرہ ہو جائیں تو انشاء اللہ حضرت جلد ہی گھر تشریف لے جائیں گے،“ حضرت نے فرمایا: ”ہاں بجائی، ہر حال میں اللہ تعالیٰ کی رضا پر راضی رہنا چاہئے“

علالت اور کچھ شاید دواؤں کے اثر سے زبان قدرے موٹی ہو گئی تھی، اور الفاظ صاف سمجھ میں نہیں آ رہے تھے، لیکن آواز میں وہی قوت اور کھرج برقرار تھی، حضرت نے اسکے بعد چند جملے ارشاد فرمائے جو کوشش کے باوجود احقر کی سمجھ میں نہیں آئے، صرف ایک جملہ سمجھ سکا، اور وہ یہ کہ: ”جو لمحہ بھی زندگی کا اللہ تعالیٰ کی یاد میں متیسرا آجائے، بڑا غنیمت ہے“

دل چاہتا تھا کہ حضرت کی خدمت میں دیر تک رہوں، لیکن خیال یہ ہوا کہ احقر کی موجودگی میں حضرت باتیں کریں گے، اور سنا لیجئے نے زیادہ گفتگو سے منع فرمایا ہوا تھا، اس لئے احقر جلد ہی کمرے

سے باہر آگیا۔ کمرے کے سامنے لان تھا، ظہر کے بعد وہاں سے کھڑکی کے ذریعے زیارت ہوتی رہی۔ اس وقت تک صاحبین کی طرف سے قدمے اطمینان بخش خبریں ملتی رہیں۔ جن سے حالت کے رد و بہ اصلاح ہونے کا اندازہ ہوتا تھا، احقر ظہر کے بعد دارالعلوم واپس آگیا، اور شام کو برادر مکرم حضرت مولانا مفتی محمد رفیع عثمانی صاحب مدظلہم ہسپتال گئے، ان سے فون پر رابطہ قائم رہا، گیارہ بجے رات کے بعد وہ واپس آئے تو مزید افقے کی خبر لائے، اور بفضلہ تعالیٰ حالات معلوم ہو کر دوپہر سے بھی زیادہ اطمینان ہوا۔

لیکن کسے معلوم تھا کہ آج کی صبح کو اللہ تعالیٰ نے اپنے اس بندے کو اپنے پاس بلانے کیلئے منتخب فرما رکھا ہے۔ صبح ہوتے ہی ٹیلی فون سے یہ جانکاہ خبر ملی کہ حضرتؒ اس دنیائے آب و گل کی سرحد عبور فرما چکے ہیں۔ انا، اللہ وانا الیہ راجعون۔

حضرت والد ماجد قدس سرہ کی وفات ہوئی تو حضرت والا کا سایہ محمد اللہ سر پر تھا، اس لئے یتیمی کا احساس ناقابل تحمل نہیں ہوا، لیکن آج نگاہوں کے سامنے دور دور تک سناٹا نظر آتا تھا۔ حضرت کے مکان پر پہنچے تو وہاں متعلقین کا ایک ہجوم تھا، حضرت کا جسم مبارک برآمدے میں تھا، چہرے پر دہی و لنواز بسم اور سکینت و طمانینت جیسے ایک تھکا ماندہ مسافر منزل پر پہنچ کر آسودہ ہو گیا ہو۔ رحمہ اللہ تعالیٰ رحمة واسعة۔

## آخری عطا

حضرت والا کے صاحبزادگان نے حضرت کے منشا کو پیش نظر رکھتے ہوئے ایثار سے کام لیا، اور تدفین کے لئے دارالعلوم کے قبرستان کو منتخب فرمایا۔ چنانچہ دارالعلوم میں حضرت والد صاحب قدس سرہ کے بعد نماز جنازہ کے لئے آنا بڑا اجتماع پہلے نہیں ہوا تھا، نماز جنازہ کی امامت کے لئے حضرت والا کے صاحبزادگان نے کچھ اس انداز سے احقر سے فرمائش کی کہ اپنی نااہلی اور صدمے کی شدت کے باوجود اس سعادت سے انکار نہ ممکن تھا نہ مناسب کچھ عجیب آقابل بیان جذبات کے ساتھ یہ نماز جنازہ پڑھائی گئی۔ بعد میں ایک دوست نے بتایا کہ ایک موقع پر حضرت والا نے یہ اظہار فرمایا تھا کہ میں نے عمر بھر میں جتنی جنازے کی نمازیں پڑھائی ہیں، ان سب کے بارے میں اللہ تعالیٰ سے یہ دعا کی ہے کہ یا اللہ:

ان سب کا ثواب اس شخص کو عطا فرما دے جو میری نمازِ جنازہ پڑھائے۔

اللہ اکبر! ابھی ہم حضرت کی روح کو ایصالِ ثواب شروع بھی نہ کر پائے تھے مگر حضرت والاؒ جلتے جلتے بھی اپنے جود و کرم کا ایک اور بادل برس گئے۔ واقعہ تو یہی ہے کہ حضرت والا کی رفعتِ فکر ہمارے خیال کی ہر پرواز سے کہیں بلند تھی۔

آج بظاہر حضرت والاؒ ہمارے درمیان موجود نہیں ہیں، لیکن انہوں نے سترہ سال کی محنت سے جو باتیں ہماری طلب اور استحقاق کو قطعی نظر انداز کر کے زبردستی سینے میں آمار دی ہیں، ان کا فیض یہ ہے کہ ہر روز بار بار مختلف مواقع پر حضرتؒ کی آواز کانوں میں گونجتی رہتی ہے جب کوئی کشمکش پیدا ہوتی ہے تو حضرتؒ ہی کی کوئی ہدایت اس دنوازِ لمحے میں سنائی دے جاتی ہے، اور اس طرح نہ ٹٹنے کتنی راہیں کھل جاتی ہیں۔ حضرتؒ کے اس فیض کا تصور کرتا ہوں تو منہ ہی کے یہ شعر زبان پر آ جلتے ہیں ۛ

کالبد من حیث الفت وایتہ یمہدی الی عینیک نوراً شاقباً

کالبدِ من حیث الفت وایتہ جوداً، ویبعث للبعید سحائباً

یا اللہ! حضرت والاؒ پر اپنی خاص رحمتوں کی کڑیوں بارشیں نازل فرما، یا اللہ! انکی روح کو اپنے خصوصی انعام و اکرام سے نہال فرما دے، یا اللہ! انہیں اپنی آغوشِ رحمت میں پیہم ترقی و درجات عطا فرما، اللہ العالمین! آپ کے اس بندے نے اپنے قول، فعل، قلم اور نقل و حرکت سے دین کی جتنی حدتیں کی ہیں ان سب کو اپنے فضل و کرم سے قبول فرما، اور انکا بہترین صلہ اپنے مقاماتِ قرب کی صورت میں انکو عطا فرما۔ یا ارحم الراحمین! آپ نے اپنے مقرب بندوں کے لئے جتنے انعامات، متعلات اور انوار و تجلیات مقرر فرمائے ہیں، وہ سب حضرتؒ کو عطا فرما۔

یا ارحم الراحمین! حضرتؒ کے نسب اور روحانی پس ماندگان کو صبرِ جمیل عطا فرما، یا اللہ! ہم سب کو حضرتؒ کی تعلیمات پر عمل اور حضرتؒ کے دینی مذاقِ سلیم کے مطابق زندگی بسر کرنے کی توفیق عطا فرما۔ یا اللہ! ہم سب کیلئے آخرت میں سرخ روئی کے ساتھ حضرتؒ والا سے پرستِ ملاقات کو مقدر فرما۔ دنیا انٹ وؤف دھیم، وانٹ علی کل شیء تدیر، وببلا حجابۃ

جدیدو۔



# مُشَاهَدَاتُ تَاثِرَاتُ

اَنَرَقْلَمُ حضرت مولانا تذریرا احمد صاحب  
مہتمم جامعہ امدادیہ قیمل آباد

جامع الہامین والکمالات، پیکر محبت، مجسم سوز و گداز، طالبینِ خدائے ذوالجلال کیلئے عظیم راہنہ  
وسہارا، عمدۃ العارفین، سراج السالکین حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارفیہ  
نور اللہ مرقدہ سے خصوصی تعلق رکھنے والوں میں سے ہونے کی بنا پر جناب والا نے حضرت اقدس قدس سرہ  
کے کچھ حالات زیب قرطاس کرنے کی فرمائش کی ہے۔

حضرت والا سے خصوصی تعلق محبت و اعتماد تو واقعی احقر کے لئے نعمتِ عظمیٰ ہے لیکن حضرت اقدس  
کے حالات و کمالات کو ضبط کرنا مجھ جیسے بے بضاعت کے بس کی بات نہیں ہے  
دامانِ نگہ تنگ و گل حسن تو بسیار و گچین بہار تو ز دامن گلہ دارد

اس پیکر جمال و کمال کی صحبت میں بجزرتِ حاضری کی سعادت ملتی رہی جلوت میں بھی خلوت میں بھی۔  
لیکن میثاقِ اصلاح و تربیت کے سلسلہ میں، ارشاداتِ عالیہ سننا رہتا اور اپنے نقائص و عیوب کے جزم میں  
ترقی کرتا جاتا۔ نفس کے مکائد و قریب کھلتے جاتے، اپنی ہی دامن پر افسوس بڑھتا جاتا، اس سے آگے  
گذر نہ ہو سکا۔

حضرت والا کی مبارک مجلس کے خزمینہ جو اہر کو ضبط کرنے کا ایک طریق تو یہ ہے کہ خود ان سے آراستہ  
ہوتا رہنا۔ اس رنگ سے رنگین ہوتا رہنا۔ یہ جواہر رنگِ طبیعت بن کر محفوظ ہو جاتے، تنگی دامن اور کم ظرفی  
کی وجہ سے ایسا نہ ہو سکا۔ جیسے یہ مرشد کامل تھے اتنا ہی یہ مُستَرشد ناقص الاستعداد اور بالکل اس کا

تھی دوستانہ قسمت راجہ سودا زہر کا مل ۶ کہ خضر از آب حیات تشنہ می آرد و کندید  
دوسرا طریقی ضبط یہ ہے کہ ان مقدس و اکسیر ارشاد کو ضبط تحریر میں لاتا رہتا ۔ یہ معمول بھی نہ بنا سکا ،  
کو تاہنہ ملی کے علاوہ یہ کبھی تصور بھی نہیں آیا تھا کہ ہم پر مغارت کی یہ ضرب کاری لگے گی بعد میں یہیں کوئی حالات  
لکھنے کی فرمائش کرے گا ۔

حضرت والا عجیب نوعیت کی جامع و محبوب شخصیت تھے ، حضرت کی خوبیوں کا احاطہ تو کسی کے بس  
کی بات نہیں ۔ انشاء اللہ بہت سے اربابِ قلم اور اصحابِ ذوق حضرت والا کی خوبیوں پر قلم اٹھانے کی  
سعادت حاصل کریں گے ۔ شاید کچھ محبوب اداؤں کو حسن تعبیر کا جامہ پہنا کر پیش کر سکیں ۔  
آپ کے امر کی تعمیل کرتے ہوئے احقر کسی خاص ترتیب کا لحاظ رکھے بغیر چند منتشر باتیں عرض  
کر رہا ہے ۔



## حضرت والا طریقی انقلاب کی علامتِ عظمیٰ تھے

اہلِ دل ، اہلِ حقیقت اور اصحابِ ذوق کے ہاں یہ بات طے شدہ ہے کہ محاسن و کمالات کا رنگ  
کسی بالکمال شخصیت کی صحبت سے ہی چڑھتا ہے محض مطالعہ کے نور سے معلومات کے فرقوں کے ذریعہ  
کئے جاسکتے ہیں ، لیکن کمالات کا نفس میں انتقال جب بھی ہوا کسی مقدس شخصیت کی صحبت کے فیض سے ہوا  
کتاب و سنت میں بھی یہ حقیقت مختلف اطوار و اسالیب سے بتائی گئی ہے ۔ مثلاً مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ  
یہ ایک قرآنی دعویٰ ہے ، سورۃ فتح کے آخر میں اس دعویٰ کے اثبات کے لئے تعلیمی اعجاز پیش کیا گیا وَالَّذِیْنَ  
مَعَهُ اَشْهَدُوْا عَلٰی الْکُفَّارِ رُحَمَآءٌ بَیْنَہُمْ (الایہ) اس میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی تعلیم و تربیت  
کے معجزانہ آثار و نتائج پیش کئے گئے ہیں ۔ اس پر فطری طور پر یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ کونسا طریقہ تعلیم یا  
نصابِ تعلیم تھا جس پر ایسے آثار نمودار ہوئے ۔ قرآن کی معجزانہ بلاغت نے اس کا جواب مَعَهُ کے لفظ  
سے دے دیا ہے کہ جیسے انقلابِ صحابہ میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی معیت و صحبت سے ہی حاصل ہوا ۔

حضرت صحابہ علی، علی، اخلاقی تمام کمالات میں انبیاء علیہم السلام کے بعد ممتاز ترین شخصیات ہیں۔ لیکن لقب صحابہ یا اصحاب رکھا گیا ہے اس لئے کہ ان تمام کمالات کا انتقال ان میں خاتم کمالات صلی اللہ علیہ وسلم کی صحبت سے ہی ہوا ہے۔

تجربات و تاریخ سے بھی یہ بات واضح ہے کہ کمالات کا انتقال صحبت سے ہی ہوتا ہے۔ ہمارے حضرت نور اللہ مرقدہ اس کی واضح علامت تھے۔ ایک وکیل، پھر ایک ڈاکٹر ہیں لیکن روحانی کمالات، حسن اخلاق، حسن عادات، حسن معاشرت، حسن معاملات، حسن نظم، حسن اصلاح و تربیت میں تمام اصحابِ دل اور اربابِ ذوق کے لئے محبوب ترین مرجع و مطمح نظر بنے ہوئے ہیں۔ قریب و بعید لوگوں کے قلوب ان کی طرف کس والہانہ انداز سے منجذب ہو رہے ہیں۔ اہل علم اہل نظر سب حضرات کی نظر میں حضرت اقدس کی رائے گرامی کا کیسا وقیع مقام ہے۔ یہ دولت کہاں سے ملی؟ حسن طلب، حسن صحبت، حسن اعتماد، حسن انقیاد سے حضرت مجدد الملتہ حکیم الامت رحمۃ اللہ علیہ کی صحبتیں حاصل کیں۔ شہرہ بریں نکلتی اپنی قوتوں کو حضرت کے اس طرح حوالے کئے رکھا کہ فنا فی الشیخ کا کامل ترین مقام حاصل کیا جس کا ثمرہ ظاہر ہے۔ شیخ کے مزاج، ذوق و دشواریوں اصلاح و تربیت میں خوب رنگین ہوئے۔

حضرت حکیم الامت رحمۃ اللہ رحمۃً واسعۃً کے تمام خلفاء کرام میں حضرت اقدس کے محاسن و کمالات کی جھلکیاں نمایاں تھیں۔ البتہ جہات کا فرق تھا کسی صاحب میں شیخ کی ایک ادا غالب ہے، دوسرے میں دوسری وجہ حسن نمایاں ہے، لیکن حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ تو اپنے محبوب شیخ کی خوبیوں میں بالکل ڈوبے ہوئے تھے۔ اور ان کے محاسن و ذوق و مزاج کے صحیح امین و ناشر بننے کی سعادت حاصل کی۔

تاثیر صحبت کے لئے طلبِ کامل، اعتمادِ کامل، محبتِ کاملہ سے بننے کا جذبہ، اخذِ کمالات کا مضبوط غزم و داعیہ ضروری ہے۔ تاثیر صحبت کے یہ لوازم جتنے زوردار ہوں گے اتنا ہی پختگی سے کمالات کا انتقال ہوگا۔ ان لوازم صحبت میں حضرت عارفی قدس سرہ کو کمال کا اعلیٰ مرتبہ حاصل تھا۔ اس لئے اقتباسِ محاسن میں مقامِ ممتاز حاصل ہو جانا لازم تھا۔

احقر راقم الحروف کا اصلاحی تعلق پہلے حضرت شیخ المعظم جامع الخیرات حضرت مولانا خیر محمد صاحب مدظلہ

سے تھا۔ ان کے انتقال کے بعد فکر دامن گیر ہوا کہ اصلاحی تعلق کن سے قائم کیا جائے؟ اس وقت حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے کافی خلفاء موجود تھے۔ ان میں علیل القدر علماء بھی تھے۔ احقر کو ان سب انتہائی قلبی گرویدگی کا تعلق تھا، ان میں سے کسی کے دامن سے وابستگی نعمت کبریٰ تھی، لیکن احقر نے اس خاص تعلق کے لئے حضرت عارفی نور اللہ مرقدہ کا انتخاب کیا۔ وجہ انتخاب یہ تھی کہ حضرت والاؒ پر حضرت حکیم الامت رحمہ اللہ کے مربیانہ ذوق، مرشدانہ مزاج، حکیمانہ تربیت، مشفقانہ گرفت کا غلبہ بالکل نمایاں تھا۔ اصلاح و تربیت میں مقصد مطیع نظر رہتا تھا۔ اس میں کسی ایسی مصلحت کی آمیزش کا اندیشہ نہیں تھا جو اصلاح کے راستہ میں مفرساختہ تک لے جاسکے۔ معاملات و واقعات سے اس وجہ انتخاب کے صواب ہونے کا یقین بڑھتا ہی گیا اور بڑھتا ہی جا رہا ہے۔

## محاسن شیخ کی نشر و اشاعت

آخری سالوں میں تو حضرت عارفی قدس سرہ کو خصوصیت سے اپنے شیخ کی نسبت سے جو اہر سنت، گہمائے حکمت کی نشر و اشاعت کی اس انداز سے توفیق ملی، جسے مخصوص عطیہ الہیہ اور مہربیت ربانیہ ہی قرار دیا جاسکتا ہے۔ حضرت حکیم الامت رحمہ اللہ کے علوم و حکم میں ڈوب کر امت کی نفع رسانی کے لئے حیرت انگیز کارنامے سرانجام دینے کی توفیق سے نوازے گئے۔

حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے خلفاء بہت تھوڑی تعداد میں رہ گئے۔ تمام سالکین کی ٹکاوٹ تھا، بریم اشرف کے اسی چراغ پر تھی۔ کثرت سے اصلاحی خطوط کا تانا باندا بندھا رہتا۔ سنتِ شیخ کے مطابق بلا تاخیر جواباتِ شافیہ کا سلسلہ چلتا رہتا۔

محاسن میں کشاں کشاں طالبانِ خدا پر دانہ دار حاضر ہوتے۔ بیرانہ سالی اور ضعف کے باوجود ان کے قلوب کو میرابی کا سامان مرحمت فرماتے رہتے۔ حضرت عارفی رحمہ اللہ کا مطلب صرف جسمانی معالجہ کے لئے ہی نہ تھا، بلکہ ایک دُکان معرفت بنا رہتا تھا۔ بکثرت اہل قلوب یہاں سے غذائے رُوح اور دوائے دل حاصل کرتے تھے۔



حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے کارناموں میں سے ایک نمایاں کارنامہ مفید ترین تصانیف کی کثرت ہے۔ حضرت عارفی کو اس ادا کا بھی دلفرقتہ نصیب ہوا۔ علم و حکمت کے جواہر اور موتی اپنے شیخ کی کتابوں سے انتخاب کرنے کے عنوانات سے خوب دل بہر کر اُمت کے سامنے پیش کئے۔

کہیں ”مآثر حکیم الامت“ کے عنوان سے اپنے شیخ کی اداؤں، محاسن اور مخصوص مصلحانہ اسالیب کی توضیح ہو رہی ہے گویا قاری کو ہاتھ پکڑ کر خانقاہ امدادیہ تھانہ بھون میں بٹھا دیتے ہیں۔

کہیں ”بصائر حکیم الامت“ کے عنوان سے اپنے شیخ کی تصانیف انتخاب کر کے اصلاح و تربیت، سلوک و احسان، تصوف و معرفت کا ایک بے نظیر قسم کا مجموعہ نافذ امت کے سامنے پیش کیا جا رہا ہے۔

کہیں ”معارف حکیم الامت“ کے عنوان سے ایسی عجیب و غریب علمی تحقیقات کا مرتع پیش فرما دیا ہے جو علماء و صلیاء کے قلوب میں نشاط و طرب کا سامان مہیا کر رہا ہے۔

تمام مصلحین امت کا مقصود اصلی خاتم الانبیاء صلی اللہ علیہ وسلم کی سنت طیبہ کی نشر و اشاعت ہے، اتباع سنت ہی معیار ولایت ہے۔ ”اسوہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم“ لکھ کر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی تعلیم و سنن کا جامع مجموعہ آسان ترین انداز سے پیش فرما دیا جسے حیران کن مقبولیت و محبوبیت و نافعیت حاصل ہوئی۔ اردو کے علاوہ انگریزی، فارسی، عربی، سندھی وغیرہ مختلف زبانوں میں اس کے تراجم ہوئے اور لاکھوں کی تعداد میں پوری گردیدگی سے اُمت مسلمہ کی آنکھوں اور دلوں کی ٹھنڈک کا سامان ہوئی۔

”معمولات یومیہ“ کے عنوان سے ذکر و شغل، اصلاح و تربیت کا جو اکسیر اور جامع اجمالی مگر کافی و شافی خاکہ پیش فرمائے اس کی تو نظیر ہی نہیں ملتی، حق تعالیٰ نے امت مسلمہ کو اس سے بے حد نفع پہنچایا اس کے متعلق بہت سے صحابہ کو خواب میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف سے مبشراتِ عظیمہ سنائی گئیں۔

کہیں ”احکامِ مہیت“ کی شکل میں اسلام کے ایک اہم حصہ کے متعلق ایسے مسائل جمع فرمادیے جس سے بہت سی بدعات و رسوم کی تردید بھی ہو گئی ہے۔ اس کے علاوہ اور بھی کثیر التعداد رسائل و مواظظ اور طفو ظات کی صورت میں سالیکن کے دلوں کو گرماتے رہے، ان کے ضمیروں کو حرکت دیتے رہے، جمود و غفلت سے نکالتے رہے، مایوس لوگوں کے لئے سامانِ رجاء بنے رہے۔ افراط و تفریط کی نشاندہی کر کے راہِ اعتدال واضح فرماتے

رہے۔ مکائد نفس پر مطلع فرماتے رہے، ظلمت زدہ افراد کے ضمیروں میں جلا بخشتے رہے۔ مردہ دلوں کو زندگی کا سامان فراہم کرتے رہے۔

جس طرح حضرت حکیم الامت رحمہ اللہ کی تصانیف کثیرہ متنوعہ کی بداعت کا انتظام غیب سے حضرت کی حیات ہی میں کثرت سے ہوتا رہا اسی طرح ان کے رنگ میں رنگے ہوئے اس خلیفہ ارشد کی تصانیف ملفوظات و افادات کی ان کی زندگی میں ہی والہانہ انداز سے اشاعت ہوئی۔

۵۔ ایں سعادت بزور بازو نیست تانہ بخشہ خدائے بخشندہ

یہ سب امور اس بات کی واضح علامات ہیں، کہ حضرت عارفی قدس سرہ کو حق تعالیٰ نے اس دور میں امت مسلمہ کی راہنمائی کے لئے خصوصیت سے منتخب فرمایا ہوا تھا۔ مامورین اللہ بھی تھے مؤیدین اللہ بھی۔ حق تعالیٰ جب کسی متبع سنت امتی سے کام لینا چاہیں تو اس کی تائید و تقویت کے سامان بھی پیدا فرمادیتے ہیں۔

## حضرت اقدس سے اصلاحی تعلق اور چند مکتوبات شریفہ

احقر نے محدث حلیل فقیہ میل حضرت مولانا خیر محمد صاحب قدس سرہ کے انتقال کے بعد حضرت والا سے اصلاحی تعلق پیدا کیا۔

ادائل ذی الحجہ ۱۳۸۵ھ میں ایک عریفہ کے ذریعہ مختصر تعارف کے ساتھ اصلاحی مکاتبت کی اجازت طلب کی جس پر حضرت اقدس نے مندرجہ ذیل کلمات ارشاد فرمائے :

”وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ“

حالات مندرجہ سے مطلع ہوا اس طریق کے شرائط و آداب سے آپ واقف ہو ہی چکے ہیں ان کا لحاظ رکھتے ہوئے اپنی طلب خلوص اہتمام کے ساتھ جاری رکھئے میرے امکان میں جو اعانت ہوگی اس سے انکار نہیں اللہ تعالیٰ نصرت فرمائے۔ دعا گو عبدالحی عفی عنہ

۱۳ اردو الحجہ ۱۳۹۰ھ کو عرفہ تشکر لکھا اور اپنے سابقہ معمولات کی اطلاع دے کر اس میں محو اثبات کی گزارش کی اس پر یہ کلمات ارشاد فرمائے :

”آپ کے معمولات بہت کافی و شافی ہیں۔ اللہ تعالیٰ استقامت عطا فرمائیں۔ اور اس کے برکات و ثمرات نصیب فرمائیں۔“

## نقشہ معمولات

احقر وافر تذریعہ تدریجاً احمد غفرلہ

نماز : تہجد - اشراق - اوایلین  
اوراد : ① دوازده تسبیح بعد از نماز عشاء

② تسبیحات لا اِلهَ اِلاَّ اللہ

• • • اہم ذات پاک ”اللہ“

۱ پارہ تلاوت قرآن پاک و ۱ منزل مناجات مقبول عربی  
تہجد کے بعد شروع کر کے نماز فجر سے قبل یا بعد حجب ختم ہو جائیں۔

③ ایک تسبیح سبحان اللہ والحمد للہ ولا اِلهَ اِلاَّ اللہ واللہ اکبر

بعد نماز مغرب و اوایلین

④ ایک ایک تسبیح درود شریف و استغفار و درمیانی اوقات میں کسی وقت

باقی اوقات میں حوائج ضروریہ و آرام کے بعد مواعظ، مآثر حکیم الامت، تربیت السالک وغیرہ کا مطالعہ۔

ارشاد حضرت اقدس : ”انشاء اللہ تعالیٰ اسی قدر کافی ہے۔“

اللہ تعالیٰ استقامت و برکت عطا فرماوے

آمین ، ، ،

اس کے بعد مسلسل اصلاحی خطوط لکھتا رہا۔ درمیان میں تعلیمی مصروفیات یا غفلت سے مکاتبت میں

نا غیر بھی ہوتی رہی۔ اظہارِ مذمت کے ساتھ پھر لکھنے کی توفیق مل جاتی۔

اپنے اصلاحی عرلیفہ جات میں دو باتوں کی اطلاع کا التزام رہتا :

معمولاتِ مجوزہ پر پابندی ہو رہی ہے یا غفلت۔ جیسا واقعہ جو تاجے تکلف اطلاع دیتا رہا۔

تبلیغِ دین اور مواظطِ حکیم الامت کی روشنی میں جو مذاکرہ نفس میں آئے ایک ایک کے انکی اطلاع

در تجویزِ مبارک کی اتباع کی توفیق ملتی رہی۔ ہر موقع پر منتہانہ، مصلحانہ، مرتیانہ، مشفقانہ ارشادات

سے حوصلہ افزائی اور رہنمائی اور تعدیل فرماتے رہے۔ کبھی مایوسی کے قریب بھی پہنچے نہیں دیا۔

ایک موقع پر احقر نے اصلاحی عرلیفہ میں یہ لکھا :

”والحمد للہ معمولاتِ پابندی سے ادا ہو رہے ہیں کچھ حقہ حضورِ قلب سے کبھی بدرون اس کے۔

بہر کیف پورا کر لیتا ہوں۔ اپنی طرف منسوب ہونے اور تقصیرات کی وجہ سے ان کو ناقص بھی

سمجھتا ہوں اور پورا کرنے کی توفیق الہی کو ان کا انعام سمجھ کر مسرت بھی رہتی ہے۔“

اس کے جواب میں کلماتِ ذیل ارقام فرمائے :

”کیف و بے کیفی، انشراح و انقباض ان کی عنایات و احسانات کے مختلف

عنوانات ہیں جو بات سامنے آتی جاتی ہے اس کا حق ادا کرتے رہیں۔ یہی مقصود حیات ہے

اور یہی رازِ بندگی ہے اللہ تعالیٰ آپ کو اور میں اپنی رضا پر کار بند رہنے کی توفیق

عطا فرمائیں۔“

کبھی غیر معمولی تعلیمی دباؤ کی وجہ سے معمولات میں اضمحلال بھی ہو جاتا تھا اس کی بھی مع بیانِ عذر

اطلاع کر دیا کرتا تھا۔ اس پر ہمیشہ تسلی کے کلمات ہی فرماتے رہے۔ اس نوعیت کے ایک عرلیفہ کے جواب میں

حضرت اقدس ارشاد فرماتے ہیں :

”یہ معروفیت (تعلیمی) ذکر و تلاوت کی برکات ہی سے معمور ہے اور زیادہ اہم ہے ،

جس قدر آسان ہو وہ مقدار مقرر کر لیں اللہ استقامت اور اس کے برکات و ثمرات عطا فرمائیں۔“

ایک موقع پر ایسے ہی عرلیفہ کے جواب میں فرمایا :-



”جو کام آپ کر رہے ہیں ان کی قیمت معمولات سے کہیں زیادہ ہے اور ترک معمولات کا ثواب کہیں زیادہ ہے؟“

ایک طرفہ میں احقر نے لکھا کہ :

”معمولات کا اہتمام جاری ہے ذکر و اصلاح اور مطالعہ و مواظبت کی دھن و شوق بہت غالب ہے لیکن تعلیمی مصروفیات اور اس سے متعلق مطالعہ کتب کی وجہ سے شوق پورا نہیں ہوتا تو تعلیم و مطالعہ حدیث، تفسیر اور اصول فقہ کا ہی ہے۔ لیکن دل بھی چاہتا ہے کہ اب تو انہی کی یاد میں لمحات گزریں مگر تعب کار کی وجہ سے رسم ہی پوری ہوتی ہے۔“

اس پر حضرت اقدسؒ نے یہ تحریر فرمایا :

”یہ شوق پورا ہونے کی چیز ہی نہیں بلکہ اللہم زد فرزد۔ یہ بھی انہی کی یاد ہے بلکہ اللہ تمام یادیں انہی سے وابستہ ہیں۔ اخلاص اور صدق کا تعلق تو صحت نیت پر ہے اور یہ امر اختیاری ہے۔“

لیکن اس کے ساتھ ہی کبیرہ نفس سے بچانے کے لئے معمولات کی پابندی کی ترغیب و تحریض و تاکید اور غفلت پر تنبیہ زبانی ملاقات میں فرماتے رہتے تھے۔

گا بے گا بے قلبی رجحانات و حالات کی اطلاع کرتا رہتا تھا۔ جواب میں کلمات سکینت سے نوازتے رہتے۔

مثلاً ... ایک موقع پر احقر نے یہ لکھا :

”اپنے کاموں میں اسباب مظلومہ کو اختیار تو کرتا رہتا ہوں ان کو نعم الہیہ سمجھ کر لیکن اکثر کیفیت یہ رہتی ہے کہ اسباب کو بے اثر سمجھتا ہوں۔ جزئیات و واقعات میں مستبک رہتا ہوں کی قدرت و تاثیر کارفرما نظر آتی ہے۔ یہ یقین غالب رہتا ہے کہ کام بنا تا صرف انہی کے بس میں ہے۔“

اس پر حضرت اقدس رحمہ اللہ نے یہ ارشاد فرمایا :

”یہ عقیدہ و استحضار راس الاعمال اور کلید کامیابی ہے۔“

ایک موقع پر احقر نے اصلاحی عریضہ میں یہ حالت تحریر کی :

” سب معمولات سے زیادہ دعا و افتخار کی طرف میلان ہے اپنے اعمال کے قابل پیشی نہ ہونے کے یقین کے باوجود توفیق ملنے پر فرحت و تشکر اور فقدان یا اختلال سے طلل ہوتا ہے۔ ظاہر و باطن کی اصلاح کی دعا کی درخواست ہے۔“ والسلام  
اس پر ارشاد فرمایا :-

” یہ علامات بہت امید افزا ہیں اور کلید کامیابی ہیں دل سے دُعا کا بے خیر کرنا ہوں اپنے لئے ان امور کے لئے دُعا کی استدعا ہے۔“  
ایک عریضہ میں عرض کیا کہ :

” وعظا یا درس کے کبھی طبیعت میں انتظار ہوتا ہے کہ سامعین اس پر اذعانہ تبصرو کریں اس کے ساتھ دل میں سوچتا ہوں کہ اگر یہ عمل جاہ عند الناس کے لئے بن گیا تو اکارت جائے گا۔ اس سے اس میں کمی ہو جاتی ہے اس کے متعلق جو تجویز مبارک ہو اسی کی اتباع ہوگی۔“

اس پر عمدة العارفین رحمہ اللہ نے حسب ذیل ہدایت ارقام فرمائی :-  
” تقریر شروع کرنے سے قبل چند بار یا حَیُّ یا قَیُّوْم بِرَحْمَتِکَ اَسْتَغِیْثُ  
اَصْلِحْ لِيْ شَآئِیْ کُلَّہٗ وَلَا تَکُنْ لِیْ اِلٰی نَفْسٍ طَرَفَۃً عَیْنٍ پڑھ لیا کیجئے۔ انشاء اللہ  
اعانت الہی شامل حال رہے گی اور عجب پیدا نہ ہوگا۔“

اس انداز سے یہ سلسلہ مکتوبات چلتا رہا۔ پہلے مکتوب میں اصل درخواست اصلاحی تعلق کی اجازت طلب کرنا تھا بیعت پر اصرار نہیں کیا البتہ غیر ضروری سمجھے ہوئے شوق کی اطلاع دی تھی جس کے جواب میں اصلاحی تعلق کی تو اجازت مرحمت فرمادی (کما مر) لیکن بیعت کے متعلق نفیاً یا ثبوتاً کچھ نہیں فرمایا۔ کافی سالوں کے بعد

۲۳ صفر ۱۳۹۸ھ کے ایک عریضہ میں احقر نے یہ لکھا کہ :-

” مقصود اصلاح ہی سمجھتا ہوں اس کو بیعت پر موقوف نہیں سمجھتا نہ ہی اس پر اصرار ہے

تاجم تقویت ربط و برکت کے لئے اس کا شوق ضرور ہے۔ مودبانہ درخواست ہے کہ اگر طبیعت مبارکہ پر گرائی نہ ہو تو ناگوارہ کو بیعت فرمائیں۔ جندہ کو جناب والا سے طبعی مناسبت تاجم ہے تعلیم سے نفع ہوتا ہے۔ کسی بات پر اعتراض کا تصور بھی نہیں۔۔۔ والسلام  
اس کے جواب میں کلمات ذیل سے نوازا :

”آپ سے کوئی دریغ نہیں بذریعہ تحریر ہذا آپ کو بیعت کر کے سلسلہ میں داخل کرنا ہوں اللہ تعالیٰ بزرگان سلسلہ کے طفیل فیوض باطنی سے ہمیشہ مستفیض فرمائیں“  
دعا گو عبدالحی عفی عنہ  
۱۹ صفر ۱۳۹۸ھ

حضرت والا کا ایک ایک مکتوب حرز جاں بنانے اور آپ زر سے لکھنے کے قابل ہے لیکن تذکر نگاری میں تطویل مناسب نہیں اس لئے مکتوبات شریفہ کا نمونہ دکھلانے کے لئے چند نقوش مبارکہ نقل کرنے پر ہی اکتفا کیا جا رہا ہے۔

احقر کو حصول اجازت بیعت کی قابلیت کا اپنے اندر کمی تصور بھی نہیں آیا ہوگا۔ ذی قعدہ ۱۳۹۸ھ میں حضرت اقدس رحمہ اللہ نے اجازت سے متعلق دو دفعہ یکے بعد دیگرے پرچے ارسال فرمائے دونوں ہی احقر کو نہ ملے۔ ۲۴ ذی قعدہ ۱۳۹۸ھ کو دارالعلوم فیصل آباد سے ایک عریضہ لکھا۔ اس کے جواب میں ارشاد فرمایا :

”آپ کا پہلا خط آیا اس کے جواب کے ساتھ ایک پرچہ ملفوف کیا تھا پھر آپ کا دوسرا خط آیا اس میں پہلے خط کے پہنچنے نہ پہنچنے کا کوئی ذکر نہ تھا اس خط کے ساتھ بھی ایک پرچہ ملفوف کیا تھا۔ آج آپ کے خط سے معلوم ہوا کہ وہ دونوں خط آپ کو نہیں ملے۔ تعجب ہے کیا ڈاک میں تلف ہو گئے یا پھر آپ کے پاس پہنچ کر آپ کو نہیں ملے کسی اور کے ہاتھ لگ گئے۔۔۔ واللہ اعلم۔ اس خط کے جواب کے بعد معلوم ہوگا کہ یہ خط بھی آپ کو ملتا ہے یا نہیں“

اس عریضہ کے جواب میں اجازت بیعت کی بشارت کے عنوان سے ایک پرچہ تھا جس کی فوٹو اسٹیٹ

## بشارت

۶ رذی الحجہ ۱۳۹۸ھ / نومبر ۱۹۷۸ء

ماشاء اللہ تعالیٰ آپ کے معمولات و حالات کا اندازہ کرتے ہوئے دل کو اطمینان ہے اور تقاضا ہے کہ آپ کو بیعت و تلقین کی اجازت دے دی جائے لہذا توکل علی اللہ تعالیٰ آپ کو اجازت دیتا ہوں، اللہ تعالیٰ نفع کو عام و تمام فرمادیں۔ اگر کوئی طالبِ صادق جمع کرے تو انکار نہ کریں اس اجازت کی اطلاع اپنے خاص اصحاب کو بھی کر دیں۔ دل سے دُعا کرتا ہوں کہ اللہ تعالیٰ صدق و اخلاص کے ساتھ آپ کو توفیق عطا فرمادیں اور مساعی و تبلیغ دین میں ہمیشہ آپ کی اعانت فرمادیں اور مکائدِ نفس و شیطان سے ہمیشہ بہتہ محفوظ رکھیں۔ آمین

دعا گو محمد عبدالحی عفی عنہ

اس پرچہ کے موصول ہونے پر احقر نے یہ عریضہ لکھا:

”ناچیز کے دونوں عریضوں کا جواب اکٹھا موصول ہوا۔ پرچہ بشارت و احسان و شفقت نامہ بھی موصول ہوا۔ اس عنایت و کرم و توجہ پر شکر ادا کرنے سے قاصر ہوں جنابِ تشکر کے ساتھ دل میں مندرجہ ذیل احساسات اُبھرے۔

عجز و انکسار اور فکرِ اصلاح میں ترقی ہوئی ذکر و طاعت کی مداومت کا جذبہ تیز ہوا، اس یقین میں اضافہ ہوا کہ میرے مرشدِ پاک کی توجہ و شفقت و حکمت و تربیت سے اللہ اللہ العزیز نفس کے بل پیچ نکل جائیں گے۔ اور مکائدِ نفس و ابلیس سے محفوظ رہ جائے گا محبت و عقیدت سے اصلاحی ربط مضبوط کرنے کا افتقار و احتیاج کا احساس بڑھا۔ مرشدِ پاک کے توسط سے سلسلہ و اکابرِ سلسلہ کی برکات دنیا و عقبیٰ میں حاصل ہونے کی توقع میں ترقی ہوئی۔ توبہ و ندامت کی کیفیت نمایاں طور پر زائد ہوئی“

حضرت اقدس رحمہ اللہ نے اس پرچہ کلمات ارقام فرمائے :



”ماشاء اللہ آپ کے تاثرات معلوم ہو کر بہت دل خوش ہوا آپ کے حالات بہت امید افزا ہیں۔ سب سے زیادہ اہتمام اپنے ہی نفس کی نگہداشت میں کرنا ہے۔ کتاب مآثر حکیم الامت غور سے بار بار پڑھیں۔ دیکھیں کہ حضرت رحمہ اللہ کا مذاقِ تصوف کیا تھا اسی کی اتباع کی ضرورت ہے۔ اسی طرح فن سے واقف ہونے کے لئے بار بار اربعہ بحکیم پڑھیں اور اس کے ضوابط کو اچھی طرح ذہن نشین کرتے رہیں۔ جب دل میں جذبہ خلوص کے ساتھ دوسروں کو تبلیغ و تعلیم کا تقاضا پیدا ہو اس وقت یہ کام شروع کریں۔ اللہ تعالیٰ ہمیشہ آپ کو اپنے حفظ و امان میں رکھیں اور مقاماتِ دنیویہ میں آپ کی نعمت و اعانت فرماتے رہیں۔ میں دل سے آپ کے لئے دُعا لائے خیر کرتا ہوں۔“

## محالیں مبارکہ میں حاضری و چند ارشادات

احقر نے حضرت عارفی قدس سرہ سے اصلاحی ربط اوائل ذی الحجہ ۱۳۹۰ھ میں پیدا کیا تھا۔ اس وقت احقر مدرسہ خیر المدارس ملتان میں بطور مدرس مقیم تھا۔ پہلی مرتبہ حضرت اقدس کی خدمت میں حاضری دولت خانہ پر شام کے وقت ہوئی۔ عجب رُوح افزا ارشادات تھے۔ اس مجلس میں صبر و شکر استغفار و استعاذہ کی ضرورت و برکت پر کیفِ اسلوب سے بیان فرمایا۔ اس کا اثر دل و دماغ پر اب تک محسوس ہو رہا ہے۔ لیکن حضرت والا کی تعبیر و ادا کو الفاظ میں پیش کرنے سے قاصر ہوں۔ اس مضمون کا مقصد ”معمولاتِ یومیہ“ میں آگیا ہے۔ یہ حاضری اور اس کے بعد کی حاضری مختصر ہی رہی۔ ان حاضریوں کے موقع پر مفتی اعظم پاکستان جامعہ انجلیات حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب قدس سرہ کی خدمت اقدس میں بھی حاضری ہوتی رہی۔ حضرت مفتی صاحب قدس سرہ کی زیارت اس سے قبل بار بار مدرسہ خیر المدارس میں کر چکا تھا۔ احقر کو حضرت مفتی صاحب قدس سرہ سے بے حد قلبی محبت و اعتماد تھا۔ حضرت مفتی صاحب رحمہ اللہ بھی بے حد شفقت و عنایت فرماتے۔ کراچی میں جن حضراتِ فقیہ العصر جامعہ شریعت و طریقت حضرت مولانا مفتی رشید احمد صاحب مدظلہ کی معیت میں نصیب ہوئیں۔

شوال ۱۳۹۵ھ میں مدرسہ خیر المدارس کا قیام ترک کرنے کی نوبت آئی۔ تعلیمی خدمت کے لئے گواہی بھی

جنگیں تھیں لیکن احقر نے خطیب اسلام حضرت مولانا احتشام الحق صاحب تھانوی رحمہ اللہ کے ارشاد پر حضرت مولانا مفتی رشید احمد صاحب مدظلہ کی سرپرستی میں سنڈوالیہا کے دارالعلوم الاسلامیہ میں قیام کا فیصلہ زیادہ تر اس لئے کیا کہ حضرت عارفی قدس سرہ کی خدمت میں حاضری کثرت سے سہولت نصیب ہو جائے گی دو سال وہاں قیام کیا دونوں سال بحیثیت سے حضرت اقدس کی خدمت میں حاضری کا شرف حاصل رہا۔

اس وقت سے ۱۳۹۶ھ کی آخری حاضری تک معمول یہی رہا کہ قیام کی سعادت حضرت مولانا رشید احمد صاحب مدظلہ کی نگرانی میں دارالافتاء والارشاد ناظم آباد میں حاصل رہتی تھی۔ حضرت عارفی قدس سرہ کی مجالس عامہ کے وقت اور مطلب کے پورے اوقات میں حضرت والا کے ہاں حاضر ہوتا رہا۔ عصر کے بعد حضرت مفتی صاحب مدظلہ کی خدمت میں حاضری کی سعادت رہتی۔ حضرت مفتی صاحب مدظلہ کی عنایات و احسانات کا قلب پر گہرا نقش ہے۔ جب بھی حاضری سے قبل بذریعہ عرفیہ دارالافتاء والارشاد میں قیام کی اجازت مانگتا تو اکثر شفقت بھرے اس قسم کے کلمات میں اجازت فرماتے کہ نہ صرف اجازت ہے۔ بلکہ انتظار ہے۔

کراچی میں کبھی بھی ان دونوں جگہوں میں بغرض اصلاح حاضری دینے کے علاوہ کوئی اور مقصود سفر نہیں ہوا۔ ان دونوں بزرگوں کی متعدد مجالس میں شرکت سے کوئی کمال تو پیدا نہ ہو سکا اہل کمال کا مزاج خوب ذہن نشین ہوا ہے۔

جامعہ اسلامیہ امدادیہ فیصل آباد قائم ہونے کے بعد ایک دفعہ حضرت عارفی قدس سرہ کی خدمت میں حاضری کی اجازت کا عرض کیا تو وقت کم تھا جواب کا انتظار کے بغیر ہی کراچی حاضر ہو گیا اس عرض میں یہ بھی گزارش کر دی کہ مخصوص اجاب کو اس دفعہ مدرسہ کے چندہ کے لئے عرض کر رہا ہے۔ چنانچہ احقر حضرت کے ایک مسترشد چوہدری عبدالحمید صاحب زید مجرم کی معیت میں پیر کے دن عصر سے قبل حاضر ہوا عصر کے بعد مجلس خاص تھی۔ مصافحہ کرتے ہی حضرت کا انداز بالکل مختلف و متغیر نظر آیا۔ پوری مجلس خاص میں علم و مشائخ کی موجودگی میں امرار سے چندہ کے خطاب خاص کرنے پر اپنے مخصوص انداز میں شدید تحیر فرمائی اور آخر میں یہ مثال بھی پیش فرمائی کہ شفیق والد کی موجودگی میں بچہ اگر کسی اور سے مانگے تو باپ کس قدر ناراضگی محسوس کرے گا۔ حق تعالیٰ کے دربار کو چھوڑ کر امرار سے چندہ کا خطاب غیرت ایمانی کے منافی ہے۔ عجیب کیفیت سے حضرت اقدس نے اس موضوع پر ارشادات فرمائے پوری

مجلس پہلے حداثہ تھا۔

دوسرے دن مطلب پر حاضری ہوئی تو احقر کو خطاب کر کے فرمانے لگے کہ مقصود تو آپ تھے لیکن کل کی مجلس میں بہت کام کی باتیں ہو گئیں۔ احقر اپنے ساتھ معافی نامہ لکھ کر لے گیا تھا پیش کر دیا۔ اس پر بہت ہی مسرور ہوئے اور دعائیں دیں۔

عجیب بات ہے احقر اور میرے رفیق سفر یہی سمجھتے رہے کہ حضرت کو ہمارا خط مل گیا ہے تبھی ایسا ہوا۔ احقر کراچی سے پہلے واپس آ گیا۔ دوسرے رفیق ابھی کراچی میں تھے اور میرے بعد بھی مجلس میں حاضری دیتے رہے۔ میری واپسی کے بعد میرے رفیق کے سامنے ہمارا ریفیہ حضرت کو ڈاک میں موصول ہوا۔ اور پڑھ کر فرمانے لگے کہ وہ واپس بھی چلا گیا ہے خط اب مل رہا ہے۔ اب معلوم ہوا کہ اس دفعہ ہمارے مقصود سفر میں غل و غش حضرت کو مشکف ہو گیا ہے یا ثمرہ نود فراست ہے۔

احقر کا کئی کئی دن قیام رہتا۔ یہ التزام تھا کہ مطلب میں اقل وقت سے اقامت تک حاضری رہے۔ ابتدائے مجلس میں تو حضرت والا نے مریضوں کو دیکھنے سے قبل ملاقات و ارشادات کا وقت رکھا ہوا تھا ہی۔ اس سے بھی مستفید ہوتا۔ اس کے بعد درمیانی دفعات اور آخر میں نہایت ہی شفقت و عنایت و تسوی سے خصوصی خطاب سے جو اہل محفوظات طیبہ سے نوازتے رہتے۔ حتیٰ کہ دماغ بالکل تھک جاتا پیرانہ سالی اور ایسی کیفیت ضعف میں اصغر سے ایسا معاملہ و تسوی، دلداری اور جذبہ تفع رسانی دیکھنے میں نہیں آیا۔

ان مجالس میں ایسی ایسی عارفانہ مصلحانہ باتیں ارشاد فرما جاتے جن کو سننے کے لئے اب ہمیشہ ترستے رہنے کے سوا اور کوئی چارہ نہیں۔ ہر دفعہ واپس آ کر دل ہمیشہ انتظار میں رہتا کہ اب حاضری کا شرف حاصل ہوگا۔ دل کی یہ آواز رستی سے

ترائے شاہ خوباں بازو دین آرزو دارم ۛ سخن ہا از لب شیریں شنیدن آرزو دارم  
افسوس ان باتوں کو ضبط تحریر میں نہ لاسکا۔ سننے میں ہی محو رہتا۔ قلب و دماغ پر کافی عرصہ تک ان ارشادات کا نمایاں اثر رہتا۔

حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے ملفوظات میں بھی دیکھا ہے۔ حضرت عارفی قدس سرہ سے بھی بار بار

سننا تھا کہ محفوظ کا اصل مقصود یہ ہے کہ سامع کا دل اسے قبول کرے اس کا اثر نفس میں پیدا ہو جائے۔ یعنی الفاظ یا درکنا مقصود نہیں ہے۔

ان جواب کو غور سے سننے پر حضرت والا خود بھی مختلف عنوانات سے متنبہ فرماتے رہتے تھے واقعی آپ کے بعد سوز و گداز کی یہ باتیں سنانے والا ہے بھی کون؟ صہبائے سخن میں خود حضرت کا ارشاد گرامی ہے

محفل سوز و گداز غم کو گرامے گا کون      اہل دل کو اپنے دردِ دل سے تڑپائے گا کون  
موجزن ہے کس کے دل میں آتشِ سیالِ غم      مستیِ فونِ جگر آنکھوں سے برسائے گا کون  
کس پہ طاری ہے جنونِ عشق کی وارفتگی      یوں زباں پر دالہا نہ راز دل لائے گا کون  
عارفی میرا ہی دل ہے محرمِ راز و نیاز      بعد میرے راز حسن و عشق سمجھائے گا کون

یہ آخری شعر تو کثرت سے مجلس میں بیان فرما دیا کرتے تھے۔ موقعِ موقع پگھلا دینے والے اشعار چسپاں فرمانے کا ذوق تو بے مثل تھا۔ احقر بذوق ہے سن کر لذت اندوز تو ہو جاتا لیکن ضبط نہ کر سکتا تھا۔

ایک دفعہ حضرت مولانا مفتی رشید احمد صاحب مدظلہ کی میعت میں شام کے وقت دولت خانہ چھری ہوئی۔ عجیب و غریب حقائق کے منہ میں ایک شعر بھی سنایا جسے میں یاد نہ رکھ سکا۔ دوسرے دن مطب میں جانے سے پہلے حضرت مفتی صاحب مدظلہ نے یہ شعر پوچھا احقر نے لاعلمی کا اظہار کیا اس پر مولانا عبدالرحیم صاحب نیز مجید کے ذریعہ پیغام بھیجا کہ حضرت سے پوچھ کر آنا حضرت سے سوال کرنا میرے لئے نہایت گراں ہوتا تھا حضرت مفتی صاحب مدظلہ کی فرمائش کی وجہ سے سوال کا حوصلہ کر لیا اور اس وقت لکھ بھی لیا۔۔۔ فرمایا

اے خیالِ دوست اے بیگانہ سازِ ماسوا

اس بھری دنیا میں تو نے مجھ کو تنہا کر دیا

واقعی عجیب مضمون اور عجیب تعبیر ہے۔ اس کے بعد احقر کو یہ یاد ہو گیا۔ اکثر تنہائیوں میں بے اختیار یہ دردِ زبان رہتا ہے۔

یہاں حضرت کی چند ایسی باتیں پیش کرنے پر اکتفا کروں گا جو بارہا سنی ہیں الفاظ محفوظ نہیں لیکن مضمون قلب پر نقش ہے



مطلب میں ہی ارشاد فرمایا کہ ہمارے جتنے اعمال ہیں وہ ہماری طرف منسوب ہونے کے اعتبار سے بہر حال ناقص ہی رہیں گے۔ یعنی ان میں کمال کا انتظار نہ ہونا چاہئے۔ لیکن حق تعالیٰ ان اعمال ناقص پر اجر اپنی شان کمال کے مطابق کامل ہی عنایت فرمائیں گے۔ ہم ناقص ہماری ہر چیز ناقص۔ حق تعالیٰ کامل ان کا ہر فعل کامل ہے۔ اس قسم کی باتوں سے دلوں کو مضبوط فرمائے رکھتے تھے کبھی مایوس نہ ہونے دیتے۔ اکثر مجالس میں خطاب خاص سے اکثر اہل علم کی یہ کمزوری بیان فرماتے رہتے کہ ان کے مستحبات کا اہتمام بہت کم ہے ترغیب دیتے رہتے تھے کہ اپنی زندگی میں مستحبات پر عمل کرنے کا بھی بہت اہتمام کیا جائے فرمایا کرتے تھے کہ فرائض و واجبات تو حق غفلت میں اور مستحبات ان کی محبت کا حق ہیں۔ حق غفلت بھی ادا ہونا چاہئے حق محبت بھی۔

حضرت اقدس کثرت سے فرماتے رہتے تھے کہ وقت کا حق ادا کیا جائے یعنی جو نسا وقت جس معمول کا ہو اس میں اس کے ادا کا اہتمام کیا جائے۔ حضرت والا خود اس کے بہت پابند تھے فرمایا کرتے تھے میں نے ہمیشہ اس کا لحاظ رکھا ہے اور جو کام بھی ہوا ہے اسی کی بدولت ہوا ہے۔ واقعی حضرت اقدس کو ادائے حقوق وقت کا التزام کرتے ہوئے سب دیکھنے والوں نے کھلی آنکھوں دیکھا ہے۔ مثلاً مطلب پر تشریف لانے کا جو وقت مقرر ہے حضرت اس وقت مطلب پر تشریف فرما ہی ملتے تھے۔ حضرت کی خدمت میں ماضی کے لئے جب کراچی قیام کی سعادت حاصل ہوتی تو اکثر بے تکلف اجاب کے گھروں میں بھی صبح کے ناشتہ کی دعوت قبول کرنے سے گریز کرتا تھا تاکہ آزادی رہے اور مطلب پر وقت پر پہنچ سکوں۔ اگر چند منٹ کی تاخیر بھی ہو جاتی تو حضرت تشریف فرما ملتے اور پاس بیٹھنے کی جگہ بھی نہ رہتی تھی۔ ایک دفعہ کسی محرم بزرگ کے ہاں شب کا قیام کر لیا صبح بارش ہو رہی تھی دل میں یہی خیال تھا کہ آج تو حضرت والا بھی تاخیر ہی سے تشریف لائیں گے۔ اس لئے جلدی کا اہتمام نہ کیا تاخیر سے پہنچے تھوڑی تھوڑی بارش ہونے کے باوجود حضرت مطلب پر تشریف لائے ہوئے تھے۔

حسن نظم بھی ادائے حق وقت کے اہتمام کے بغیر پیدا نہیں ہو سکتا۔ اسی التزام کی بنا پر حضرت آثار قدسیہؒ اپنے شیخ حکیم الامت رحمہ اللہ کی شان حسن انتظام کے بہترین نمونہ تھے۔

عام طور پر ذکر و عبادت کرنے والوں کو یہ شکایت رہتی ہے کہ ذکر و عبادت میں کمی ہوئی اور حضور قلب

کی دولت حاصل نہیں۔ بلکہ بھسولی میٹر نہ آنے کی وجہ سے ترک ذکر تک آمادہ ہو جاتے ہیں۔ حضرت والا عجیب تمثیلات سے تسلیاں دیا کرتے تھے۔ ایک دفعہ فرمایا کہ زیادہ ٹریفک والی سڑک پر کسی کی دکان ہو بہ وقت اس پر شور رہے تو اس دوکاندار کو کبھی تصور بھی نہیں آتا کہ جیتک شور ختم نہ ہو دوکان کا کام کیسے کروں۔ شور کے باوجود کام جاری رکھتا ہے۔ ٹیلیفون اسی حالت میں کرتا بھی بگڑتا بھی ہے۔ اسی طرح ہر قسم کے وسوسے آتے جاتے رہیں ذکر کو اپنے کام کی طرف متوجہ رہنا چاہئے اس شور کی طرف التفات ہی کیوں کیا جائے؟ اپنے کام سے کام رہنا چاہئے۔

تربیت السالک دیکھنے کی بہت تاکید فرمایا کرتے تھے احقر کو متعدد مرتبہ اس کے مطالعہ کا یہ طریق ارشاد فرمایا کہ سالک کے خط کا مضمون پڑھ کر حضرت حکیم الامتؒ کا جواب پڑھنے کے بغیر خود اس کے جواب پر خوب غور کیا جائے۔ پھر حضرت حکیم الامتؒ کا جواب دیکھا جائے۔ احقر نے اس کا تجربہ کیا اس فن کا درک پیدا کرنے کے لئے یہ نظیر طریق ہے۔

مآثر اربعہ حکیم الامتؒ بغور دیکھتے رہنے کی تاکید فرماتے رہتے تھے۔ جب بھار حکیم الامتؒ طبع ہوئی تو ایک دوست کے ہاتھ بطور ہدیہ حضرت والہ نے اپنے یادگار نقوش مبارکہ کے ساتھ اس کا ایک نسخہ اس روسیہ کو ارسال فرمایا۔ احقر نے عریفہ میں اس کے متعلق یہ لکھا :

”آج عریفہ لکھنے کا ارادہ ہی کر رہا تھا جبکہ حضرت والا کا ارسال فرمود انعام عظیم اور خیریت مزاج عالی کی خبر موصول ہوئی۔ بھار حکیم الامتؒ کا نسخہ اور معمولاتِ یومیہ کے نسخہ جات دیکھ کر وجوہِ عدیدہ سے یہ انعامات نور بھر، نور قلب اور نور دماغ بنے۔ فرحت کی کوئی انتہا نہیں رہی۔ اس عنایتِ غلیظہ اور احسانِ جلیل پر دل سے شکر سے قاصر ہوں۔“

بھار حکیم الامتؒ توفیق کی عجیب نعمت تیار ہو گئی ہے۔ اس دورِ انحطاط میں مجددِ عظم قدس سرہ کی ہدایات و خصوصیات کے جلا و اظہار کے لئے حق تعالیٰ نے حضرت والا کا انتخاب فرمایا ہے۔ حق تعالیٰ سلامت و عافیتِ تامہ کے ساتھ حضرت والا کو عمرِ نوح سے نوازے اور یہ فیض بڑھتے ہی جائیں۔“

اس کے جواب میں حضرت والائے ارقام فرمایا :

” ماشاء اللہ تعالیٰ آپ کی اس قدر شناسی سے بہت ہی مسرت ہوئی ۔ اللہ تعالیٰ

اِسے سرمایہ سعادت اور ذخیرہ رفقاہتی بنائے ۔ آمین ۔ دعار کے لئے استدعا ہے ؟“

مجلس مبارک میں بار بار ان کتب کی خصوصیات بیان فرماتے رہتے تھے ، مقصد یہ تھا کہ قدر شناسی

سے ہمیں ان سے استفادہ کاملہ کی طرف توجہ بڑھے ۔ معارف حکیم الاقت جب طبع ہو کر آئی ، احقر اس وقت

بھی حاضر تھا اس کا بھی ایک نسخہ حضرت اقدس نے احقر کو عنایت فرمایا ۔

اصلاحی امور میں حضرت اقدس مسامحات نہیں فرمایا کرتے تھے ۔ اپنے متوسلین کے حالات پر

نظر رکھتے اور موقع بوقع تنبیہات فرماتے رہتے ۔ فیصل آباد سے ایک رفیق احقر کے ساتھ طالب بیت ہو کر

خدمت اقدس میں حاضر ہوئے ۔ احقر کی سفارش پر حضرت نے غلاب معمول اتنی جلدی بیعت فرمایا ۔ اس کے

بعد پھر جب کراچی حاضری ہوئی یہ بزرگ اب بھی ساتھ تھے ۔ ملاقات کے وقت احقر نے تعارف کروایا ۔

اور بطور تعارف گزشتہ حاضری میں بیعت کا بھی تذکرہ کر دیا ۔ حضرت نے ناراضگی کے لہجے سے فرمایا ۔

بیعت کا کیا ذمہ جب خطوط وغیرہ سے تعلق نہ رکھا جائے ۔ اس کے بعد بھی ایک مجلس تنبیہ فرمائی کہ میرے

بعض احباب بعض لوگوں کی بیعت کی سفارش کر دیتے ہیں ۔ بیعت کے بعد وہ آداب طریق کے مطابق

اصلاحی رابطہ نہیں رکھتے ۔

متوسلین کے حالات پر نظر کی ایک اور مثال ملاحظہ کیجئے ۔ کسی مدرسہ کے دستور و تعارف کی کاپی

کے شروع میں احقر نے چند کلمات لکھے تھے ۔ احقر سے پوچھے بغیر انہوں نے حضرت اقدس کی طرف احقر کی

نسبت ظاہر کر دی ۔ مجھے طباعت کے بعد اس کا علم ہوا ۔ اس کی ایک کاپی حضرت اقدس تک بھی

پہنچ گئی ۔ اس دفعہ ملاقات میں حضرت کا انداز بدلا ہوا تھا ۔ اس موضوع پر متعدد ارشادات فرماتے رہے

کہ آج کل شہرت پسندی کا مرض بہت ہے ۔ بزرگوں کی نسبتوں کو بھی شہرت پسندی کے لئے استعمال

کیا جاتا ہے ۔

احقر کو عملیات کی طرف میلان خاطر نہیں حضرت اقدس بھی اس طرف بہت کم توجہ دیتے تھے اس کے

انکار نہیں کیا جاسکتا۔ لیکن آج کل اکثر بلکہ تمام طبائع میں کم و بیش خود رانی، خود پسندی اور شہرت پسندی کا مرض وبائی انداز سے سراپت کئے ہوئے ہے۔ جس کی نخواست سے نہ صرف اجتماعیت کی برکات سے حرمان ہوتا ہے، بلکہ بعض افراد اپنی صلاحیت سے اجتماعیت میں اتنا کام بھی نہیں کر سکتے جتنا وہ تنہا سرانجام دے سکتے ہیں۔ اسی بناء پر حضرت والا کی طبیعت مبارکہ اجتماعی اچھی تحریکات کی طرف بھی مائل نہ ہوتی تھی۔

تعلق کے ابتدائی ایام میں احقر کے دل میں ایک جذبہ موجزن تھا۔ اشاعتِ خیر اور خوش رکھنے حضرت اقدس کی سرپرستی میں ایک اجتماعی تنظیم قائم ہونی چاہئے۔ یہ جذبہ اس حد تک پہنچا کہ حضرت اقدس کی خدمت میں اس مضمون کا طویل عریضہ لکھ دیا۔ جس کے جواب میں حضرت والا نے طویل مکتوب ارتقا م فرمایا۔ جس کی نقل درج ذیل ہے :

”افسوس ہے کہ میں ایسے جذبات سے محروم ہوں۔ اگر ایسی تحریکات سے متاثر ہو کر کچھ تقلید کام کروں بھی تو اس میں کیا جان ہوگی؟ بلکہ ہر سہی طمانیت قلب بھی زائل ہو جائے گی۔ برکے! بہر کار سے ساقطند۔ جس بات کی تھوڑی بہت استعداد ہے وہی کام شایانِ کار نہیں بن پڑتا۔ اللہ تعالیٰ نے آپ کے دل میں جو جذبات پیدا فرمائے ہیں آپ خود ہی ان کا حق ادا کر سکتے ہیں۔ اور دنیا میں جو کام بھی مقدر ہوا ہے، وہ فرد واحد ہی کی قوتِ ارادی اور بہتِ استقلال ہی سے ہو رہے۔ اللہ تعالیٰ آپ کی نصرت فرمادیں۔ آپ نے جس مقصد کا اور جماعت کی تنظیم کا ذکر کیا ہے۔ وہ سب کچھ حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی دعوتِ الحق میں موجود ہے۔ جس پر اکثر مقامات کچھ نہ کچھ عمل بھی ہو رہا ہے۔ و ما توفیقی الا باللہ“

احقر کو اپنی اس جسارت پر بہت شرمندگی ہوئی۔ اور حضرت اقدسؒ کے مزاج مبارک کا ایسا پرتو پڑا کہ خود اپنا مزاج ایسا ہی بن گیا۔ اس قصہ کے کئی سال بعد بطور مشاورت کسی اجتماعی کام کے متعلق گفتگو فرمائی۔ احقر نے بے تکلف عرض کر دیا کہ حضرت انفرادی حیثیت سے جو کاروائی نمایاں سرانجام



باوجود بعض علیات احقر کو تھامے۔ اور صراحتہ ان کی اجازت بھی مرحمت فرمائی۔ احقر نے یہ اسی وقت اپنی ریاض میں قلمبند کر لئے تھے۔

۱۔ سفلی غل اور آسیب کے دفع کے لئے: ”دو رکعت نفل۔ پہلی رکعت میں فاتحہ کے بعد قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْعَلَمِیْنَ، دوسری رکعت میں قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْعَلَمِیْنَ۔ اس کے بعد ۱۱ مرتبہ درود شریف، ۵۰۰ مرتبہ لَا حَوْلَ اِلَّا بِاللهِ ۱۱ مرتبہ درود شریف۔ یہ عمل چالیس دن تک کیا جائے۔

۲۔ تلاش گشہ کے لئے (چیز ہو یا مرد): ”دو رکعت نفل۔ ہر رکعت میں سورہ اخلاص پانچ پانچ مرتبہ۔ اس کے بعد ۱۱ دفعہ درود شریف پھر پانچ سو مرتبہ اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُونَ اس کے بعد پھر ۱۱ مرتبہ درود شریف۔ یہ عمل تین دن تک کیا جائے۔

۳۔ زچگی کے لئے: ”وَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِیْنَ۔ رَبِّ سَبِّحْهُ لَا تَعْصُوْا وَاَتَمِّمُوا بِالْخَيْرِ ثُمَّ السَّبِّحُ لَبَّيْكَ“

یہ عملیات ۶ جمادی الاولیٰ ۱۴۰۲ھ کو مطب پر صبح کی مجلس میں مع تصریح اجازت ارشاد فرمائی۔ سفر حج کے وقت کراچی میں حضرت اقدس کی خدمت میں حاضری دی۔ بصاحب حکیم الامت جیسی چند کتب مطالعہ کے لئے سفر میں ساتھ رکھ لیں۔ اور حضرت کو اطلاع دی کہ حضرت سفر حج میں مطالعہ کے لئے یہ کتب ساتھ لے جا رہا ہوں۔ اس پر ارشاد فرمایا کہ کوئی کتاب ساتھ نہ رکھیں، صرف مناجات مقبول ساتھ رکھ کر ہر مقام میں اس کی منزلیں پوری توجہ سے پڑھتے رہیں۔ احقر نے ایسا ہی کیا جیسی سائز کی مناجات ساتھ رکھ لی۔ تمام سفر میں اُسے ساتھ رکھتا اور مخصوص ادعیہ کے علاوہ اس کی منزلیں پڑھتا رہتا۔ مثلاً عرفات میں اس کی ساری منزلیں اطمینان سے پڑھیں۔ اس سے سہولت بھی ہوئی نفع بھی ہوا۔

دینی کام اجتماعیت سے کرنے کے برکات واضح ہیں اس کی برکات و افادیت سے

حضرت اقدس کا مزاج مخصوص

ہو رہے ہیں۔ انہی کی طرف توجہ بہتر معلوم ہوتی ہے۔ ایسی اجتماعیت اکثر چلا نہیں کرتی۔ حضرت والا اس جواب پر بے حد مسرور ہوئے۔ اور فرمایا کہ تم نے میرے دل کی بات کہی ہے۔

اس سے مقصد اجتماعی تعلیموں کی افادیت کی بالکل نفی نہیں۔ بلکہ یہ بتانا مقصود ہے کہ حضرت اقدس ان شخصیات میں سے ہیں جن کی ذات انفرادی طور پر ہی اتنے وجود افادیت کی حامل ہوتی ہیں کہ کئی انجمنوں و جماعتوں سے بڑھ کر بے تکلف اور سہولت ان کے ہاتھ سے حیرت انگیز کارہائے نمایاں سرانجام ہو جاتے ہیں۔ ایسے مزاج والوں کو اجتماعیت میں الجھنا یقیناً افادیت میں تھکیل کا باعث ہوگا۔ اس امر میں حضرت عارفی قدس سرہ اپنے شیخ کے مشیل تھے۔

**حضرت اقدس کا دینی مدارس کا تعلق** | مدارس عربیہ دین کے تحفظ کا بہترین ذریعہ ہیں۔ حضرت اقدس کو مدارس عربیہ سے قلبی تعلق تھا۔

ان کی ترقی و افادیت، ضرور و آفات سے حفاظت کے لئے دعائیں فرماتے رہتے تھے۔ ان کی نصرت و اعانت بھی فرماتے رہتے۔ دو مدرسے (۱) دارالعلوم کراچی (۲) جامعہ اسلامیہ امدادیہ فیصل آباد کے تو باقاعدہ سرپرست اور صدر تھے۔ ان کے لئے دعائیں، توجہات و عنایات اور ہر ممکن نصرت کا سلسلہ تو چلتا ہی رہتا ہے۔ ان کے علاوہ دوسرے مدارس عربیہ کی بھی خواہی اور دل سے ان کی اصلاح و ترقی کے لئے دعائیں جاری رہتی تھیں۔

حضرت اقدسؒ کے متوسلین میں سے ایک مخلص صاحب نے احقر کو مدرسہ میں علوم جدیدہ کی تعلیم جاری کرنے کا مشورہ دیا۔ اس کی ضرورت بیان فرمائیں۔ احقر نے یہ بات حضرت اقدس قدس سرہ کی خدمت میں پیش کر دی۔ حضرت اقدسؒ نے فی الید یہ ارشاد فرمایا کہ جن کاموں کی ہمیں صلاحیت ہے ہم وہی کر سکتے ہیں۔ جو کام بزرگوں کے مطابق جاری ہے اسی نہج پر کرتے رہو۔ ایسے امور کی طرف کبھی توجہ بھی مت کرو۔ ان صاحب میں اس کی صلاحیت ہے تو وہ خود کر لیں۔ ہم اپنی صلاحیت سے آگے بڑھنے کی سعی نہ کریں گے۔

مقصد اس کے عرض کرنے کا یہ ہے کہ حضرت نے بلند پایہ انگریزی تعلیم حاصل کی ہوئی تھی عالم گیر

ہونے کے باوجود مدارس کا مروجہ نصاب نہ پڑھاتا تھا۔ لیکن بزرگوں کے تعلق کی برکت سے سرتاپا بزرگوں کے مزاج میں ہی رنگین تھے۔ کسی مصلحت کی بنا پر سیر مو اس سے انحراف نہیں تھا۔ بلکہ جوابی علم حضرت والا سے متوسل ہیں حضرت کی برکت اور دباؤ سے وہ ایسی آلودگیوں سے محفوظ رہتے تھے حضرت سب کے لئے معتدل تھے۔ ہم سب اب اس رحمت سے محروم ہیں۔ اسی تصور سے جوں جوں دن بڑھ رہے ہیں، فراق کا مددہ ترقی پذیر ہے۔ ہمیں سنبھالنے والا اب کون ہے؟ حق تعالیٰ ہماری حفاظت فرمائیں۔

حضرت اقدس کا زور دار غشاء مبارک تھا کہ مدارس ہر قسم کی سیاسی آلودگیوں سے محفوظ رہیں۔ احقر اس مزاج پر سختی سے کاربند ہے۔ تعلیم و دعوت کے سلسلہ میں ہر ایک کی خدمت کے لئے اپنی وسعت کی حد تک تیار ہیں۔ لیکن عملی سیاست میں نہ کسی کی موافقت کی نہ مخالفت۔ مثلاً حضرت کی زندگی میں جو آخری ریفرنڈم اور انتخابات ہوئے۔ ہمارے مدرسہ میں یہ دن اس طرح گزرے جیسے ان کا وجود ہی نہیں ہے۔ حضرت نے بعض مجالس میں صراحتہ احقر کے اس تہلب کی تحسین فرمائی۔

حضرت والا کی زندگی کے آخری سال شوال ۱۴۰۵ھ میں حضرت کا افتتاح صحیح بخاری کے موقع پر دارالعلوم کراچی میں عجیب روح پرور بیان ہوا۔ وہ السبلاغ میں بھی طبع ہوا۔ بعد میں دارالعلوم کراچی نے مستقل طور پر اس کی اشاعت کا کارنامہ سرانجام دیا۔ احقر نے دورہ کے طلباء میں سے ہر ایک کو ایک ایک کاپی دی اور مدرسہ کے تمام شعبہ جات کے اساتذہ و طلبہ کا اجتماع رکھ کر یہ بیان باقاعدہ پڑھ کر سنایا۔ اور یہ اعلان بھی کرایا کہ اس کی حیثیت صرف وعظ کی نہیں۔ حضرت اقدس ہمارے صدر و سرپرست ہیں۔ یہاں کے تمام اراکین و معلمین و طلبہ حضرت کے ارشاد کے پابند ہیں۔ یہ ارشادات سب کے لئے ضابطہ کی حیثیت رکھتے ہیں۔ اس کی اطلاع حضرت اقدس کو بذریعہ مکتوب دی۔ حضرت نے اس پر بہت ہی مسرت کا اظہار فرمایا۔ اور دعائیں دیں۔ یہ احقر کا آخری طریقہ ہے جس کا جواب وفات شریف سے چند روز قبل ہی مل چکا تھا۔ دل سے دعا ہے کہ حق تعالیٰ ہم تمام متوسلین کو حضرت کے مزاج سلیم کی اتباع کی توفیق عنایت فرمائیں۔ اور حضرت کی خدمات دینیہ کو قبولیت تامہ سے نوازے ہوئے ان کو مقامات رفیعہ عطا فرمائیں۔

امین بن امین

• جناب سید محمد ابن ابراہیم رحمہ

یہ حالت ہو گئی تھی ایک سیاق کے نزدیک سے  
کہ خیم کے خیم ہرے میں سے اور میں خالی

قیام پاکستان کے بعد حضرت والا جب کراچی تشریف لائے تو ابن روڈ پر ایک چھوٹے سے کمرے  
میں گھر کے سارے نفوس کے ہمراہ رہائش پذیر تھے ایک چھوٹی سی دکان ملی جس میں مطب کھولا کوئی  
واقف نہ تھا۔ مجھی نصرت علی صدیقی پہلی بار مجھے حضرت والا کی مجلس میں لے گئے۔ میں تھوڑی دیر  
بیٹھا قلب پر ایک خاص اثر محبت ہوا۔ شہر واپس آکر ہم نے لوگوں سے ذکر کیا۔ آہستہ آہستہ لوگوں کی  
رجوعات بڑھیں۔

پہلی ملاقات میں حضرت والا کی محبت کا جو اثر ہوا تھا۔ اس کے بعد قلب میں تقاضا ہوا کہ حضرت  
والا کی مجلس میں بار بار حاضری دی جائے۔ آمدورفت شروع ہو گئی۔ ہم سکھر میں قیام پذیر تھے ہمراہ  
حضرت والا کی مجلس میں حاضری کے لئے کراچی جاتے اس طرح حضرت سے دلی تعلق بڑھتا گیا۔ غالباً آج  
سے دس سال قبل مجھ پر دل کا دورہ پڑا۔ یہ خبر سن کر حضرت والا مع حضرت نجم صاحب ودیگر احباب کے  
ہمراہ سکھر تشریف لائے روابط محبت کچھ اور بڑھے۔ حضرت والا کی کراچی واپسی کے بعد میں نے  
حضرت والا کو خط لکھا کہ میں آپ سے اصلاحی تعلق پیدا کرنا چاہتا ہوں۔ حضرت والا نے جواب میں فرمایا  
کہ آپ کی حالت ترقی باطن میں ہے میں آپ کی تشنگی پوری نہ کر سکوں گا۔ نہ ہی میں اپنے کو اس قابل سمجھتا



ہوں۔ میں نے پھر لکھا پھر ہی جواب آیا۔ میرے مزاج میں تیزی ہے میں نے لکھ دیا ہے

آپ گھبراتیں نہیں جو ریسے تو بہ نہ کریں

آپ پچھتائیں نہیں داغ کا حال اچھا ہے

اب جواب آیا ہے

عارفی جذبات خفتہ کو نہ چھیڑ  
پھر بھڑک اٹھے نہ سوز و سازِ دل

میں نے بھی لکھ دیا ہے

در پہ تیرے کیوں نہ جھک جاتی ہے جبین نازِ دل  
سننے والا کون تھا تیرے سوا آوازِ دل  
دل کی بربادی کا ناحق غم ہے تجھ کو ہم نشین  
وہ اگر پامال کر دیں، ہے یہی اعزازِ دل  
اُنکی محفل میں لئے بیٹھ ہے رزمی اک طرف  
ایک سوزِ نامکمل ایک شکستہ سازِ دل

اس کے جواب میں حضرت والاؒ نے لکھا کہ یہ حالت تو میری ہے۔

روابطہ محبت کچھ اور بڑھے میرے اور کشف و کرامات کا ایک شدید دور شروع ہوا میرا راتہ چلنا مشکل ہو گیا۔ مجھے انسان کے بجائے بندہ نظر آئے اور بہت کرہ یہ صورتیں نظر آئیں میں نے حضرت والاؒ کو یہ حالت لکھی۔ آپ نے جواب میں فرمایا کہ یہ تیرے ہی قلب کی حالت ہے اللہ تعالیٰ مشاہدہ فرما رہے ہیں جواب میں میں نے عرض کیا کہ حضرت والاؒ نے جو یہ فرمایا ہے کہ یہ میرے ہی قلب کی کیفیت ہے تو حضرت والاؒ کا یہ ارشاد میرے دل کو قبول نہیں۔ میری حالت خرید و گرگوں ہوتی گئی۔ میں نے پھر لکھا پھر اسی قسم کا جواب آیا میں نے پھر لکھا کہ قلب مطمئن نہیں ہے۔ پھر جواب آیا کہ آپ اللہ تعالیٰ سے یہ دعا فرمائیں کہ آپ اپنے بندوں کی یہ حالت جو میرے اور پر منکشف کر رہے ہیں۔ اس سے مجھے کیا فائدہ ہے آپ میرے باطن کی حالت میرے سامنے کر دیجئے اور اس تکلیف دہ حالت سے نجات فرمائیے الحمد للہ کچھ عرصہ بعد یہ تمام کیفیات فرو ہو گئیں دل و داغ میں سکون آ گیا۔ حضرت والاؒ کا یہ اعجاز نہیں تو اور کیا ہے

یہی تھا نہ بھون کے آسمان کے وہ ستارے ہیں ضیائے ملے اشرف ہے عیاں جگہی نگاہوں سے  
غضب کا سوز ہے ان میں بلا کا جذب رکھتے ہیں ذرا جا کر تو دیکھیں آپ ان کی جلوہ گاہوں میں  
بشناور بن گئے انکی بدولت ڈوبنے والے سلیقہ ان فقیروں سا نہیں ہے بادشاہوں میں  
رجہ ہے تصرف ہے نہ ہو حق ہے نہ چلے ہیں مگر حقانیت ہے ان کی سادہ خانقاہوں میں  
غلیغی و عارفی ہوں یا حسن ہوں یا غنی احسن نشان معرفت ہیں معرفت کی شاہراہوں میں  
ناسب ہے دکھاؤ انکو جلوہ خلوت دل کا لئے بیٹھے ہو تم جو بکلیاں اپنی نگاہوں میں

ایک روز خبر سنی کہ حضرت والا بچ اپنے چچ صاحب۔ حضرت نجم صاحب اور دیگر بارہ احباب کے ہمراہ حج کو جا رہے ہیں یہ نہیں معلوم تھا کہ کس کے نام سے درخواست داخل کی ہے میں عصر کی نماز مسجد میں پڑھ رہا تھا کہ کسی کو کہتے سنا کہ نفاذ نکل آیا ہے۔ اکل صاحب وہ نفاذ لے کر حضرت والا کی خدمت میں حاضر ہوئے کھول کر دیکھا تو حضرت والا کا نام تحریر تھا۔ حج کی روانگی کی تیاریاں شروع ہو گئیں۔ حضرت والا کی روانگی کے بعد میں ایک روز عصر کی نماز پڑھ رہا تھا کہ اچانک نظروں کے سامنے منظر آگیا دیکھا کہ سب بزرگ حرمین شریفین پہنچ گئے ہیں حضرت والا گے چچا جو کہ نیم مجذوب کی حالت کے تھے۔ وہ جال مبارک پکڑے رو رہے ہیں۔ اور چچا ہادی صاحب میناب رحمت کے نیچے غلاف کعبہ کو پکڑے رو رہے ہیں۔ حضرت نجم صاحب بے خود میں مگر ہمارے حضرت والا مکہ مدینے کے درمیان ایک مقام رائج ہے وہاں کھڑے ہیں میں نے دیکھا کہ انکے سر پر ایک ترازو رکھی ہے اس ترازو کی ڈنڈی پر لکھا ہے: ۵

برکف جام شریعت برکف سندان عشق

ہر ہوس ناک نادانند جام و سندان بافتن

آواز آئی ڈاکٹر عبدالحی کو لسان شیخ عطا کی گئی ہے۔

جب حضرت والا حج سے واپس تشریف لائے تو میں حاضر خدمت ہوا۔ موجودہ مکرہ جو مطلب کا تھا وہاں پر اپنی جگہ پر بیٹھ گیا۔ مفتی اعظم پاکستان حضرت مفتی محمد شفیع صاحب اور حضرت ڈپٹی علی سجاد صاحب وہاں پر موجود تھے۔ میں خاموش بیٹھا تھا کہ میں نے یہ منظر دیکھا اور دس یا پندرہ منٹ تک مسلسل دیکھتا رہا۔ دیکھا کہ روضہ مبارک میرے سامنے آگیا ہے۔ اور ستونِ توبہ اسطوانۃ البوابہ حضرت عائشہ صدیقہؓ کے

کمرے میں جالی کے پیچھے حضور سرور کائنات صلی اللہ علیہ وسلم کا لاجپتہ مبارک پہنچے تشریف فرما ہیں۔ اب حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے دست مبارک میں ایک باوامی رنگ کا گتے کا ٹکڑا ہے۔ اس پر کال روشنائی سے لکھا ہے "ڈاکٹر عبدالحی قطب الارشاد" حضور صلی اللہ علیہ وسلم یہ گتے کا ٹکڑا دکھا رہے ہیں میں دس یا پندرہ منٹ تک یہ منظر دیکھتا رہا میرے سارے جسم پر لرزش کیلپا ہٹ اور تھر تھراہٹ طاری تھی سا جسم ہل رہا تھا آواز بند ہو گئی تھی حضرت والا جب میری طرف متوجہ ہوئے تو میری حالت دیکھ کر گھبرا گئے جلدی سے میرے اوپر شال ڈال دیا سب احباب متوجہ ہو گئے میں نے حضرت والا سے پوچھا قطب الارشاد کی علامات کیا ہیں اور میں مذکورہ منظر کافی دیر سے دیکھ رہا ہوں۔ آدھے گھنٹے بعد میری حالت سنبھل میں نے دیکھا کہ حضرت ڈپٹی علی سجاد صاحب اور حضرت مفتی محمد شفیع صاحب انتہائی مسرت سے اس کشف کے متعلق ارشاد فرما رہے تھے اور حضرت والا بالکل خاموش تھے۔ دوسرے روز صبح میں پھر حضرت کے مطب میں حاضر ہوا۔ اس وقت حضرت والا بالکل تنہا تھے مجھ سے فرمایا کہ ابراہیم جو کچھ تم نے دیکھا وہ بھی صحیح ہے اور جو کچھ تم نے سنا وہ بھی صحیح ہے۔ ہمارے تمہارے لئے جملہ حالات مبارک و مسود ہیں۔

اس سحابت بزور بازو نیست

ماز بخشد خلدے بخشد

حضرت والا کو حضرت حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانویؒ کے خلفا میں سے ایک ممتاز مقام حاصل ہے آپ اپنے شیخ کے حقیقی مزاج شناس اور انکی تعلیمات کے امین تھے ساری زندگی شیخ کی تعلیمات کی ترجمانی فرماتے رہے۔ بیعت اصلاح و تربیت کے ساتھ ساتھ آپ نے ایک یادگار تقریری سرمایہ بھی چھوڑا ہے۔ جو طالبان حق اور تشنگان معرفت کی راہنمائی کرتا رہے گا۔ حضرت والا کی داستانِ حیات کا دل کش اور حسین باب اگرچہ ختم ہو گیا ہے مگر آپ کی کتاب زندگی کے روشن ابواب و صرف ہمیشہ تابندہ رہیں گے بلکہ اس کی ضیاء پاشیاں لاکھوں بندگانِ خدا کے دلوں کو منور کرتی رہیں گی۔ سمجھ میں کچھ نہیں آتا کہ مجسمہ لہجہ کی شگفتگی آواز کی نغمی مزاج کی شائستگی کردار کی پاکیزگی بے داغ زندگی اتباع سنت عشق الہی۔ درد مندی دل سوزی۔ عالم اسلام کی فکر امت مسلمہ کے لئے بے قراری اسوہ رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے مطابق مسالو کو زندگی بسر کرنے پر آمادہ کرنے کی تڑپ تمام دینی و دنیوی معاملات میں شریعت کی پابندی۔ بے لوث

دینی و اصلاحی کوششیں و کاوشیں غرض حضرت والا کی شخصیت ہر پہلو سے اس قدر روشن اور تابناک ہے کہ اس پر کچھ کہنا یا لکھنا سورج کو چرغ دکھانے کے مترادف ہے۔ آپ کی پوری زندگی اتباع سنت اور عشق الہی کا ایسا نادر نمونہ تھی جسے نفلوں میں بیان نہیں کیا جاسکتا۔ آپ کی درویشانہ اور صوفیانہ عظمت عظیم المثال ہے۔ آپ کے روحانی فیوض و برکات میری زندگی کے دستور العمل کا سرمایہ افتخار ہیں۔ آپ اہم خصوصیات اور اعلیٰ صفات کے حامل مجسمہ اخلاق و ایشار فرشتہ صفت انسان تھے آپ کی شخصیت میں اپنا گرویدہ بنا لینے والا عجب سحر تھا۔ انداز اصلاح و تربیت میں جو سلیقہ اللہ تعالیٰ نے آپ کو عطا فرمایا تھا۔ اس کی مثال موجودہ دور میں کم ہی نظر آتی ہے۔

لاکھوں بندگانِ خدا نے آپ سے دینی استفادہ کیا۔ بلاشبہ آپ نے لاکھوں لوگوں کے دلوں میں دینی انقلاب برپا کر دیا۔ آپ کا مطلب مرجعِ خلافت تھا آپ بلا امتیاز مذہب و ملت و عقیدہ امیر و غریب ہر ایک کی بات کا دل تو جہ اور شفقت سے سنتے مایوس سے مایوس مریض جب اپنا حال کہہ اٹھتا تو ایک گونہ خوشی اور توانائی محسوس کرتا حضرت والا کی ہمہ گیر محبت متوافع خلیق و ملنسار شخصیت مریض کے قلب پر گہرے اثرات چھوڑتی اسے یقین کا دل ہو جاتا کہ انشاء اللہ اسی در سے صحت حاصل ہوگی۔ مایوسی اُمید میں بدل جاتی۔ بندگانِ خدا کی امکانی خدمت آپ کا محبوب مشغلہ تھی جسے آپ اپنا ایک دینی فریضہ جانتے مریض کی صحت جسمانی کے ساتھ اصلاح روحانی کو بھی پیش نظر رکھتے۔

آپ کی مجالس میں ہر طبقہ کے عوام و خواص۔ آسمانِ علم کے آفتاب اور ذرے سب ہی ذوق و شوق سے حاضر ہوتے اور عرفانِ عارفی سے فیض یاب ہوتے۔ لاکھوں افراد آپ کی مجالس کی برکت سے مسیح انسان بن گئے انکی بگڑی زندگیوں میں پاکیزہ دینی انقلاب برپا ہو گیا اتباع سنت اور عشق الہی کا شعلہ انکے دلوں میں بھڑک اٹھا اور انہیں شریعت کے مطابق زندگی بسر کرنے کا سلیقہ آگیا۔ آپ کی ایک خاص مجلس میں تصوف و معرفت کی راہ پر چلنے والے حاضر ہوتے جس میں آپ اپنے خاص دل نشیں انداز میں مسائل تصوف و معرفت و سلوک بیان فرماتے بڑے بڑے علماء محدثین اور بزرگانِ دین آپ کی اس مجلس میں شریک ہو کر رہنمائی حاصل کرتے اور سیراب ہو کر لوٹتے۔ آپ کی اصلاح و تربیت کی ادائیگری نرالی بڑی انوکھی اور بڑی پیاری تھی۔ بے تکلفی، شگفتگی اور شفقت کا عجب انداز ہوتا کہ سننے والا ہر فرد قلب میں غام



کیفیت راحت و محبت محسوس کرتا۔ آپ کی پوری زندگی اتباعِ سنت تعلق مع اللہ اور سنت مع اللہ پر مبنی تھی۔ آپ اپنے شیخ کی ہو بہو تصویر تھے آپ کی مجلسیں اپنے شیخ کی تعلیمات حالات اور کمالات کے تذکرے کی مہک سے معمور ہوتی تھیں حضرت والا کی یہ خصوصیت تھی کہ حاضرین مجلس کو ایسے مؤثر طریقے پر اور دل نشیں انداز میں روزمرہ معمولاتِ زندگی میں خلوص کے ساتھ عمل کرنے کی تدبیر بیان فرماتے کہ سننے والوں کو زبردست ترغیب حاصل ہوتی۔ اور آپ کے ارشادات پر عمل پیرا ہونا ان کے لئے آسان ہو جاتا۔ فنِ تصوف میں حضرت والا کو اس قدر مہارت حاصل تھی کہ سالکوں کے پیچیدہ مسائل کو نہایت سہل انداز میں اور عام فہم الفاظ میں حل فرما دیتے تھے کہ..... سالک کی نہ صرف تشنگی ہو جاتی تھی شکوک و شبہات بھی ختم ہو جاتے تھے آج حضرت والا رحمۃ اللہ علیہم میں موجود نہیں ہیں اس احساس سے دل مغموم ہے۔

|   |                                      |
|---|--------------------------------------|
| اب کے تو کچھ بہار کا سماں نہیں رہا        | دامن نہیں رہا ہے گریباں نہیں رہا     |
| وہ گل نہیں رہے وہ گلستاں نہیں رہا         | گلشن میں جب وہ جان بہاراں نہیں رہا   |
| پانی کا کوئی نقش نمایاں نہیں رہا          | آنسو گرا تو زینتِ داماں نہیں رہا     |
| نشر یہ اعتمادِ رگِ جاں نہیں رہا           | مل جائے کچھ سکون یہ امکاں نہیں رہا   |
| سکھر کے بادِ خوارِ دل کا نگراں نہیں رہا   | کس کو بتائیں حالِ دلِ آشفہ حال کا    |
| کوئی بھی کائنات میں پر ساں نہیں رہا       | جب تم نہیں تو اس دلِ آشفہ حال کا     |
| کوئی شریکِ ظلمتِ حیراں نہیں رہا           | ایک ایک کر کے تارے بھی روپوش ہو گئے  |
| اب کوئی اضطراب کا امکاں نہیں رہا          | افشائے رازِ درِ دین ایسا سکون ملا    |
| کوئی بھی بادِ خوارِ دل کا پر ساں نہیں رہا | ساقی نہیں تو درہم و درہم ہے میکہ     |
| مزا بھی شوقِ دید میں آساں نہیں رہا        | جینا تو دردِ حیر میں دشوار تھا مگر   |
| نشر کوئی شریکِ رگِ جاں نہیں رہا           | اب ہر جا ہے ایک اضافہِ خلش کا اور    |
| بے کیفِ زندگی کا بھی سماں نہیں رہا        | ان کے قدم کے ساتھ گیا کیفِ زندگی     |
| ظلمتِ کدہ میں تیرتا باں نہیں رہا          | کچھ روشنی تو اب بھی ہے یکن تیرے بغیر |
| آپے میں اپنے شہرِ خموشاں نہیں رہا         | آسودہ گانِ خاک میں شامل ہوا ہے کون   |

جس میکہ میں چلتا تھا دورِ شرابِ عشق اس میکہ کا ساقی دوراں نہیں رہا  
 رزمی کو عارفی کی نگاہوں سے دیکھتے  
 آسودہ ہو چکا ہے پریشاں نہیں رہا

## دو کشف اور انکے بشايرت

آج بتاریخ ۱۵ شعبان المظہم ۱۴۳۹ھ کو صبح حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحب کے مزار پر حاضری ہوئی  
 فاتحہ کے بعد کشف ہوا کہ حضرت ڈاکٹر صاحب فرما رہے ہیں ۔  
 فنا کے بعد بھی مجھ کو تمہاری یاد آتی ہے ۔ اور پھر میرے چہرہ پر دستِ مبارک پھیر دیا  
 پھر اس کے بعد حضرت مفتی محمد شفیع صاحب کے مزار پر حاضری ہوئی ۔ فاتحہ کے بعد کشف ہوا کہ آپ  
 فرما رہے ہیں کہ تو اور مولوی طیب صاحب اور مولوی محمد اسحاق صاحب اور میں دیوبند سے ایک ساتھ فارغ  
 ہوئے تھے پھر آپ کے بھائی کو مراد آباد کے مدرسہ میں بھیج دیا تھا، اس سبب مجھے تم سے محبت ہے، اور تم  
 میری تفسیر معارف القرآن کا مطالعہ کرتے رہنا۔

حاجی محمد فاروق صاحب جو حضرت مولانا مسیح اللہ خان صاحب مدظلہم کے خلیفہ ہیں حال ہی میں  
 عمرہ کے لئے تشریف لے گئے تھے وہاں انہوں نے ایک خواب دیکھا کہ سنگ مرمر کی پانچ یا سات میٹریا  
 ہیں اور انکے اوپر ایک سنگ مرمر کا چوترا ہے، اس پر ہم دونوں یعنی میں حکیم محمد ابراہیم اور حضرت ڈاکٹر عبدالحی  
 صاحب رحمۃ اللہ علیہ اور پھر نیچے اتر رہے ہیں ادب کے طوطے پر میں پیچھے ہوں اور حضرت ڈاکٹر صاحب  
 آگے، پھر کیا کیا دیکھتا ہوں کہ آپ کا اور حضرت ڈاکٹر صاحب کا جسم ایک جیسا ہو گیا، اور شکل و صورت  
 بھی ایک جیسی ہو گئی اور حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے دائیں ہاتھ میں کتابیں ہیں اور بائیں ہاتھ میں  
 گوشت کا ایک ٹوٹھلہ ہے۔ پھر حضرت ڈاکٹر صاحب نے فرمایا کتابیں یہ آپ لے لیجئے اور فرمایا ہمیں اور حکیم  
 صاحب کو قیام کی اجازت مل گئی ہے، پھر آنکھ کھل گئی، تہجد کا وقت تھا۔

تصادیر اور ریڈیو ٹیلی ویژن پر گندگھروں میں نہ ہونا چاہیئے۔ اس سے نوجوان لڑکوں کو

لڑکیوں کے اخلاق ضرور خراب ہوتے ہیں۔ (افادات عارفیہ)

• جناب مولانا مفتی عبدالرفیق صاحب مکھڑی

شفقت و محبت کی جیتی جگانی تصور

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## حضرت والد ماجد کاسنہری معمول

ناچیز نے اپنے والد ماجد حضرت مولانا مفتی عبدالحکیم صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا بچپن ہی سے ہمیشہ یہ معمول دیکھا، سکھر میں جب کوئی بزرگ تشریف لاتے، حضرت والد ماجد ہم بھائیوں کو اور اپنے خاص احباب کو ساتھ لیکر ان کی خدمت میں حاضر ہوتے، اور موقع ملنے پر ہمیں ان کی خدمت میں پیش کر کے دعا کراتے، اور اگر کوئی بزرگ سکھر تشریف نہ لاتے، لیکن کراچی سے لاہور، یا لاہور سے کراچی، جاتے ہوئے روٹری اسٹیشن سے گزرتے تو ہمیں، اور اپنے احباب کو لیکر روٹری اسٹیشن تشریف لیجاتے، اور ان بزرگ سے ملتے، ان کے ارشادات سنتے، اور دعائیں لیکر واپس لوٹتے۔

چنانچہ اس معمول کی برکت سے ناچیز کو بچپن ہی میں بہت سے بزرگوں کی زیارت نصیب ہوئی، جس کا ایک حسین اور منور نقش دل پر قائم ہے۔ اللھم لك الحمد ولك الشكر

## حضرت ڈاکٹر صاحب کی خدمت میں پہلی حاضری

حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کے اس مبارک مہول کے طفیل حضرت والا حضرت ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارفی رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت اقدس میں بھی حاضری نصیب ہوئی، آج سے کوئی بیس پچیس سال پہلے حضرت والا سکھر میں جناب حضرت ڈاکٹر حفیظ اللہ صاحب مظلیم کے یہاں تشریف لائے، حضرت والد ماجد کو اطلاع ہوئی، چنانچہ، چیزان کے ہمراہ حضرت ڈاکٹر حفیظ اللہ صاحب مظلیم کے گھر حاضر ہوا، حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ اس وقت ان کے موجودہ مکان کی بیٹھک کے ایک کونہ میں سر جو کائے بالکل خاموش تشریف فرما تھے، نہ بیان تھا، نہ دعاء تھی، مگر عجیب پر کیف مجلس تھی، حاضرین کے قلوب آپ کے فیضان صحبت سے سیراب ہو رہے تھے، اور جنہیں حق تعالیٰ نے نور باطن عطا فرمایا ہے نہ جانے انہیں کس قدر نفع ہوا ہوگا؟ یہ طفل مکتب اور عشق و محبت سے بیگانہ جب گھر واپس پہنچی تو بے ساختہ زبان پر حق تعالیٰ جل شانہ کا ذکر مبارک جاری ہو گیا جو اس سے پہلے زبان پر جاری نہ تھا، اس غیر معمولی کیفیت پر مجھے تعجب ہوا، لیکن قورای ذہن میں آیا کہ یہ سب حضرت ڈاکٹر صاحب کا فیض ہے، اور اسی وقت سے حضرت رحمۃ اللہ علیہ کی عظمت و محبت دل میں اتر گئی۔

حضرت رحمۃ اللہ علیہ کی یہ سب سے پہلی زیارت اور خدمت اقدس میں حاضری تھی اس کے بعد پھر کبھی سکھر میں حضرت کی زیارت نہیں ہوئی۔

ناچیز جامعہ اشرفیہ والس روڈ سکھر میں حضرت والد ماجد اور دیگر اساتذہ کرام سے درس نظامی کی کتابیں پڑھتا رہا اور جب "موقوف علیہ" تک کتابیں پڑھ لیں تو ۱۳۸۹ھ میں دورہ حدیث کے لئے حضرت والد ماجد نے دارالعلوم کراچی ۱۲ میں سیدی و مولائی حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت میں بھیج دیا جو ناچیز کے لئے نہایت مبارک اور مسعود ہوا۔

## دومرشد

دارالعلوم کراچی پنیچر مرشد اول حضرت مفتی اعظم پاکستان مولانا محمد شفیع صاحب



رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت میں حاضری ہوئی اور تعلیم شروع ہو گئی، ان دنوں پاکستان میں ہفتہ واری سرکاری چھٹی اتوار کو ہوتی تھی، چنانچہ اتوار کے دن صبح ۱۱ بجے اور ۱۲ بجے کے درمیان حضرت مفتی صاحب کی عام مجلس ہوتی تھی، شہر کراچی سے، اور دارالعلوم کے قریب جوار سے بہت سے حضرات تشریف لاتے اور مجلس میں شریک ہوتے دوسری مجلس جمعرات کے روز عصر کے بعد ہوتی، اور ویسے روزانہ بھی کچھ دیر عصر کے بعد حضرت مفتی صاحب دارالافتاء کے سامنے والے چوتھرے پر تشریف لے آتے اور کچھ احباب و اساتذہ حاضر خدمت ہوتے ناچیز بھی حسب توفیق ان مجالس خیر میں شریک ہونا رہتا۔

حضرت ڈاکٹر صاحب کی فیض رسانی سے چونکہ ناچیز پہلے ہی متاثر ہو چکا تھا اس لئے آپ کی مجلس کی جستجو پیدا ہوئی، معلومات کرنے پر علم ہوا کہ پاپوشنگریں مطبع کے قریب جمعہ کے روز عصر کی نماز کے بعد حضرت کی مجلس عام ہوتی ہے، چنانچہ وہاں حاضری ہوئی اور حضرت کی زیارت اور مبارک مجلس میں شرکت کی سعادت نصیب ہوئی، اور پھر الحمد للہ سالہا سال تک پابندی سے جمعہ کے روز شرکت ہوتی رہی پھر وفات سے چند سال پیشتر بجائے جمعہ کے، پیر کو حاضری ہوتی رہی اور وفات تک یہ نعمت کبریٰ حق تعالیٰ نے اپنے فضل و کرم سے عنایت فرمائی،

کراچی پہنچ کر اور بھی بہت سے اکابر و مشائخ کی زیارت نصیب ہوئی، لیکن دلی مشائخ اور قلی رحمان اول حضرت مفتی صاحب نور اللہ مرقدہ کی طرف، اور پھر حضرت ڈاکٹر صاحب کی طرف رہا، اور اسی ترتیب سے ناچیز نے ان دونوں بزرگوں سے اصلاح و تربیت کا تعلق قائم کیا، اس طرح حق تعالیٰ نے اپنے فضل و کرم سے ناچیز کو ان دونوں بزرگوں سے وابستہ فرمایا اور ان کی مجالس میں شرکت کی سعادت بخشی حضرت مفتی صاحب کی خدمت میں تقریباً پانچ سال اور حضرت ڈاکٹر صاحب کی خدمت میں پندرہ سال تک کی توفیق میسر ہوئی، مجھ حقیر پر ان بزرگوں کی بڑی شفقتیں اور عنایتیں رہیں جسکی ایک خاص یہ بھی تھی کہ حضرت والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ کا ان دونوں اکابر سے بہت گہرا اور خاص تعلق تھا اس لئے بھی یہ دونوں مجھ پر مثل باپ کے شفیق اور مہربان تھے۔

## حضرت ڈاکٹر صاحب سے اصلاحی تعلق

شروع میں دورہ حدیث سے فارغ ہونے کے بعد باقاعدہ بیعت و اصلاح کا تعلق حضرت مفتی صاحب سے قائم کیا، لیکن ساتھ ہی محمد رشید جمعہ کو پابندی سے حضرت ڈاکٹر صاحب کی مجلس میں حاضر ہوتی رہی، پھر جب حضرت مفتی صاحب اللہ تعالیٰ کو پیارے ہو گئے تو باقاعدہ اصلاحی تعلق حضرت ڈاکٹر صاحب سے قائم کیا، ایک بار بیعت کی درخواست بھی پیش کی لیکن حضرت نے فرمایا حضرت مفتی صاحب سے بیعت کا قوی ترین تعلق ہوتا ہے ہوئے بچے سے بیعت کی ضرورت نہیں ہے، چنانچہ پھر ناچیز نے اصرار بھی نہیں کیا، کیونکہ بیعت ہونا کچھ ضروری نہیں بلکہ اصلاح ضروری ہے، اور یہی اصل چیز ہے، وہ الحمد للہ جاری رہی۔

## حضرت ڈاکٹر صاحب کی مجلس

اوپر عرض کیا کہ شروع میں حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی مجلس پاپوشنگ میں جمعہ کے روز ہوا کرتی تھی، اس مجلس میں پہلے حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے ملفوظات سنائے جاتے تھے اس کے بعد حضرت والا کا مختصر بیان ہوتا تھا، اور آخر میں حضرت اپنے مخصوص انداز میں طویل مانگر بڑی والہانہ دعا فرماتے تھے۔ کچھ عرصہ کے بعد ملفوظات پڑھوانے کا سلسلہ موقوف ہو گیا، صرف حضرت ہی کا بیان ہوتا، اور الہامی دعا ہوتی، اور مجلس بھی سچی پاپوشنگ کے حضرت کے مکان واقع ناٹھ ناٹھ آباد ایف بلاک میں ہونے لگی اور پھر وفات تک گھری پر یہ مبارک مجلس جاری رہی۔

## حضرت کا انداز بیان

حضرت کا انداز بیان ایسا منفرد اور دلنشین تھا کہ الفاظ میں اس کا نقشہ کھینچنا کم از کم محمد ناچیز کے لئے مشکل ہے، لہجہ کی شیرینی ادب کی سلاست، الفاظ کی روانی، اور مضمون کی جامعیت یہ سب خوبیاں اس بے تکلفی سے جمع تھیں کہ بالکل شیر و شکر معلوم ہوتی

تھیں اور ان سب پر لٹہیت اور روحانیت اس قدر غالب تھی کہ بیان کا براہ راست دل پر اثر ہوتا، مجلس میں ایک شخص بھی ایسا نہ ہوتا جس پر حضرت کی باتوں کا اثر نہ ہوتا اور اس پر کمال یہ کہ حضرت کا یہ انداز ہمہ وقتی تھا، اس لئے ناچیز اتنا ہی کہہ سکتا ہے کہ ایسا شفقت بجز اندازِ بیان حضرت ہی کا امتیازی نشان تھا، قارئین حضرت کی مطبوعہ مجالس "افادۃ عارفی" سے اس کا کچھ اندازہ کر سکتے ہیں۔

## حضرت تھانویؒ کی تعلیمات کا عملی نمونہ

حضرت رحمۃ اللہ علیہ، حضرت تھانوی قدس سرہ کی تعلیمات کا چلتا پھرتا، جیتا جاگتا، نمونہ اور ان کے مزاج و مذاق کے پتے این تھے، چنانچہ آپ کی مجلس کا اصل محور اور مرکزی نقطہ تعلیمات اشرفیہ اور مزاج اشرف کا بیان ہوتا، ہر مجلس میں مختلف انداز سے ذوق اشرف کی تفسیر و تشریح فرمایا کرتے اور فرماتے مجھے اپنا ذوق نہایت عزیز ہے اور شیخ سے جو چیز حاصل کی جاتی ہے وہ یہی ہے، حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ بھی اس کی بڑی حفاظت فرماتے تھے اور تلقین کرتے تھے اور آج کل سب زیادہ اسی کا فقدان ہے، اور نیز حضرت تھانویؒ کے ملفوظات و مواعظ اور تصنیفات و تالیفات کا جو عظیم مہمون حضرت کے پاس تھا بس اُسی سے تمام اہل مجلس کو مہکایا کرتے تھے اور ذوق اشرف کے بیان کے وقت اکثر یہ شعر سنایا کرتے تھے ۛ

عارفی میرا ہی دل ہے محرم ناز و نیاز

بعد میرے رازِ حُسن و عشق سمجھائیگا کون

بعض مرتبہ فرماتے بھئی! میں نہ عالم ہوں، نہ مفسر، نہ مدرس ہوں نہ مقرر، نہ خطیب ہوں نہ واعظ کہ نئے نئے وعظ کہوں یہ علماء کا کام ہے، میں نے حضرت حکیم الامت، مجدد الملت حضرت تھانویؒ قدس سرہ کی فیض صحبت سے کچھ باتیں اخذ کی ہیں جن سے محکوم بہت نفع ہوا ہے، وہ سب مستند و معتبر ہیں، وہی باتیں تمہارا منہ بیان کرتا رہتا ہوں اور ان کا تکرار کرتا ہوں، اور دین کی باتوں کا تکرار بھی بلاشبہ

مفید ہے اور اس کا ایک فائدہ یہ بھی ہے کہ جب کوئی بات بار بار کہی جائے اور کان میں پڑتی رہے تو آخر وہ دل میں جم جاتی ہے اور پھر عمل کی توفیق بھی ہو جاتی ہے۔

## حضرت ننھا نوی کی تعلیمات کا خلاصہ

چنانچہ حضرت رحمۃ اللہ علیہ اپنی پُر اثر مجالس میں اکثر تعلیماتِ اشرفیہ کا خلاصہ اور لب لباب ارشاد فرمایا کرتے تھے ان میں سے چند اہم اور زیادہ سے زیادہ مفید باتیں قارئین کی خدمت میں حاضر ہیں، ان کو بھیجئے اور عمل کر کے دونوں جہاں کی سرفرازی حاصل کیجئے۔ اللہم وفقنا، اللہم وفقنا۔

## اتباع سنت

حضرت رحمۃ اللہ علیہ اپنی مجالس میں اتباع سنت پر بہت زور دیا کرتے تھے، اور بہت کثرت سے اس کا بیان فرماتے، اور اس کی اہمیت ذہن نشیں فرماتے، کبھی فرماتے ہمارے سلسلہ میں باطنی نفع جلد شروع ہونے کی وجہ یہ ہے کہ ہمارے یہاں اتباع سنت اصل چیز ہے، اول بھی یہی ہے اور آخر بھی یہی ہے، اس کا بہت اہتمام کرنا چاہیئے، کبھی فرماتے بھی اتباع سنت ایسی عظیم نعمت ہے کہ اگر بلا قصد و ارادہ بھی اس پر عمل ہو جائے تب بھی نفع سے خالی نہیں ہے اور کبھی فرماتے اتباع سنت حق تعالیٰ تک پہنچنے اور ان کے نزدیک محبوب ہونے کا سب سے زیادہ محفوظ و مامون اور سہل ترین راستہ ہے ایک بار فرمایا مجھے بچپن ہی سے یہ خیال تھا کہ کوئی ایسی جامع کتاب ہو جس میں زندگی کے تمام شعبوں کے متعلق رسالہ کتاب صلی اللہ علیہ وسلم کی تعلیمات اور سنتیں مستند اور معتبر کتابوں سے جمع ہوں، تاکہ اس کو پڑھ کر ہر شخص باسانی عمل کر سکے الحمد للہ ثم الحمد للہ ”اسوۃ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم“ اسی جذبہ کے تحت لکھی گئی ہے جس کی خصوصیت یہ ہے کہ اقوال کہیں نہیں ہے یعنی اپنی طرف سے کوئی بات نہیں کہی گئی جو کچھ بھی ہے، وہ قال ہے یعنی ہر بات رسالہ کتاب صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشادات سے ثابت ہے،



چنانچہ اس میں زندگی کے مختلف حالات کے متعلق تقریباً ۶۵۶ عنوانات ہیں، ہر عنوان کے تحت احادیث ہی جمع کی گئی ہیں۔

## حضرت مجدد الف ثانی اور اتباع سنت

حضرت نے اتباع سنت کے موضوع پر بیان کرتے ہوئے کئی بار حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کا یہ واقعہ بھی سنایا کہ جب حضرت مجدد الف ثانیؒ تمام علوم ظاہرہ پڑھ کر فارغ ہو گئے اور قرآن و سنت کے تمام علوم پر یدِ طولیٰ حاصل کر چکے تو ایک روز فرمانے لگے تمام علوم ہم نے حاصل کر لئے، ان خانقاہوں میں بیٹھنے والے درویشوں کے پاس کون سے علوم ہیں؟ چلکر دیکھنا چاہیے!

چنانچہ سب سے پہلے حضرت خواجہ باقی باللہ رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا کہ حضرت آپ کے یہاں وہ کون سے علوم ہیں جن کا آپ درس دیتے ہیں؟ فرمایا، ہماری خانقاہ میں رہو، علم ہو جائے گا، حضرت مجدد الف ثانیؒ ان کی خانقاہ میں رہ پڑے اور حضرت خواجہ باقی باللہؒ سے بیعت ہو کر ان کے حلقہ ارادت میں داخل ہو گئے اور ان کی رہنمائی میں ذکر و شغل اور اصلاحِ باطن میں مشغول ہو گئے جس سے ان پر ایسے ایسے علوم آشکارا ہوئے جنہیں دیکھ کر حضرت مجدد الف ثانیؒ دنگ رہ گئے اور بالآخر اس مقام کو پہنچ گئے کہ ان کا باطن چمک گیا اور قلب ذکر الہی کے انوار سے منور ہو گیا، اور حضرت خواجہ باقی باللہ رحمۃ اللہ علیہ نے ان کو خلافت سے نوازا دیا۔

اس کے بعد حضرت مجدد صاحبؒ دوسرے سلسلہ کے کسی بزرگ کی خانقاہ میں تشریف لے گئے، اور ان سے بھی دریافت کیا کہ حضرت! آپ کون سے علوم کی تعلیم دیتے ہیں؟ فرمایا یہاں رہو پتہ چل جائے گا، چنانچہ حضرت مجدد صاحبؒ ان بزرگ سے بیعت ہو گئے اور ان کی خانقاہ میں رہ پڑے اور ان کی ہدایات کے مطابق تربیتِ باطن میں مشغول ہو گئے جس کے نتیجہ میں باطن میں ایسی ترقی ہوئی جو اس سے پہلے کبھی نہ ہوئی تھی اور ایسے ایسے علوم قلب پر وارد ہوئے جو نہ کسی کتاب میں پڑھے اور نہ آج تک کسی سے سنے

بالآخر ان بزرگ نے بھی حضرت مجدد صاحب کو اپنا خلیفہ مجاز بنایا۔

اب حضرت مجدد صاحب کے تیسرے سلسلہ کے کسی بزرگ کی خدمت میں حاضر ہوئے، اور ان سے بھی یہی پوچھا کہ حضرت! تمام علوم کا درس تو اہل مدارس اور اہل علم دیا کرتے، آپ کے یہاں کون سے علوم کی تعلیم ہوتی ہے، فرمایا ہمارے علوم کا تعلق حال سے قال سے نہیں ہے، اگر آپ انہیں سمجھنا اور حاصل کرنا چاہتے ہو تو کچھ عرصہ ہماری خدمت میں رہو، انشاء اللہ تعالیٰ آپ کو بھی ان کا علم ہو جائے گا چنانچہ حضرت مجدد صاحب ان سے بھی بیعت ہو گئے اور ان کی خانقاہ میں مقیم ہو گئے اور ان کی ہدایات کے مطابق اصلاح قلب اور تربیت ظاہر و باطن میں مشغول ہو گئے، اور چند ہی روز میں پہلے سے کہیں زیادہ حق تعالیٰ کا قرب محسوس ہونے لگا، اور باطنی علوم کا دریادل میں پہننے لگا جس کا آج تک دل میں خیال بھی نہ گزرا تھا، اور ان بزرگ نے بھی حضرت مجدد صاحب کو خلافت و نیابت سے سرفراز فرمایا،

اسکے بعد حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ چوتھے سلسلہ کے کسی بزرگ کی خدمت میں تشریف لے گئے اور ان سے بھی عرض کیا کہ حضرت! آپ کن علوم کا درس دیتے ہیں، آپ کے یہاں کون کون سی کتابیں پڑھائی جاتی ہیں؟ ان بزرگ نے جواب دیا اگر ہمارے یہاں رہ جاؤ تو ان علوم کا کچھ اندازہ ہو سکتا ہے، محض زبانی بات چیت سے سمجھ میں آنا مشکل ہے چنانچہ حضرت مجدد صاحب ان سے بھی بیعت ہو گئے اور ان کی خانقاہ میں ٹھہر گئے اور جس جس طرح انہوں نے ذکر و شغل اور مراقبہ کرنے کو کہا اس طرح کرنے لگے اور ان کی راہنمائی میں مقامات باطن طے کرنے لگے، اور بہت جلد تمام مقامات طے کر لئے اور ان بزرگ نے بھی حضرت مجدد صاحب کو خلافت سے نوازا۔

اس طرح حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کو تمام علوم ظاہرہ حاصل کرنے کے بعد تربیت باطن کے چاروں سلسلوں چشتیہ، نقشبندیہ، قادریہ اور سہروردیہ کے مشائخ کی جانب سے خلافت عطا ہوئی اسکے بعد حضرت مجدد صاحب نے قریب خدا کی لامتناہی منزلیں طے کرتی شروع کیں اور بے پناہ علوم کا سمندر دل میں

ٹھانٹھے مارنے لگا، اور بغیر انہ علوم کا مشاہدہ ہونے لگا جیسے حضرت عارفِ رومیؒ کا شعر ہے  
 بنی اندر خود علوم انبیاء : یہ کتاب دے معید وادستا  
 مجدد صاحبِ قربانے ہیں کہ پھر ایک وقت ایسا بھی آیا کہ خود سرکارِ دو عالم صلی اللہ  
 علیہ وسلم نے اپنے دستِ مبارک سے میرے سر پر پگڑی باندھی اور مجدد ہونے کی  
 خلعت سے نوازا، اس کے بعد بہت تیزی سے عروج ہوا، اور اس قدر ترقی ہوئی کہ بیان  
 نہیں کر سکتا، تمام حجابات مرتفع ہو گئے بس ایک حجاب، حجابِ اکبر میرے اور حق تعالیٰ کے  
 درمیان رہ گیا، اور میں ایسے مقامِ نازک پر پہنچ گیا کہ اگر زبان کھولوں اور اپنے مافی الضمیر  
 کو ظاہر کروں تو علماءِ ظاہر مجھ پر کفر کا فتویٰ دیں، اور علماءِ باطن مجھے ملحد و زندقہ کہیں،  
 لیکن مجھے سوائے خدا کے کسی کی پرداہ نہیں۔

پھر فرمایا اس بلند مقام پر پہنچ کر مجھے جو چیز سب سے اہم اور باطن کی تمام  
 کامیابیوں کا چشمہ اور حق تعالیٰ تک پہنچنے کا سب سے آسان اور اسلم راستہ معلوم  
 ہوا، اور جو میری سب سے بڑی آرزو اور تمنا رہی وہ یہ ہے کہ حق تعالیٰ مرتے دم  
 تک صرف اور صرف رسالتِ مآب صلی اللہ علیہ وسلم کی سنتوں کے اتباع کی توفیق عطا  
 فرمائے اور اسی پر خاتمہ ہو، آمین

نکل جائے دم تیرے قدموں کے نیچے  
 یہی دل کی حسرت یہی آرزو ہے

## حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ اور اتباعِ سنت

حضرت ڈاکٹر صاحبِ اتباعِ سنت کے متعلق حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کا  
 یہ واقعہ بھی بار بار سنایا کرتے تھے کہ ایک بار حضرت تھانویؒ نے اتباعِ سنت کے موضوع  
 پر وعظ کیا، دورانِ وعظ رحمتِ عالم صلی اللہ علیہ وسلم کی کھانے کی چیزیں بھی ذکر کیں جن  
 میں آپ کی ایک مرغوب اور پسندیدہ غذا لو کی بھی بیان کی، اس کے بعد حضرت تھانویؒ  
 نے دیکھا کہ ان کے گھر میں روزانہ لو کی پکے لگی جب کئی روز گزر گئے تو ایک روز حضرتؒ

نے اہلیہ محترمہ سے دریافت کیا کہ کیا بات ہے روزانہ لوکی پک رہی ہے ؟ اہلیہ محترمہ نے عرض کیا آپ ہی نے وعظ میں بیان فرمایا تھا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو نوکی بہت پسند تھی ، یہ سن کر اسی دن سے میں نے بھی اس کا اہتمام شروع کر دیا اور خادم سے کہہ دیا کہ جب تک لوکی کی فصل چلے تم لوکی ہی لاتے رہنا یہ سنکر حضرت رحمۃ اللہ علیہ لرز گئے اور دل دل میں سوچنے لگے کہ ہم صبح سے شام تک قرآن و سنت کا درس دیتے ہیں مگر ہم میں کبھی اتباع سنت کا ایسا جذبہ بیدار نہ ہوا جیسا اس خاتون کے دل میں پیدا ہوا ۔ اسی وقت سے حضرت مخاویؒ نے اپنی ہر نشست و برخاست ، چال ڈھال ، وضع قطع ، بول و چال غرض کہ ہر ہیئت و حالت کا جائزہ لینا شروع کیا اور تین دن تک اپنی ہر ہر بات کو سنت کے معیار پر جانچا اور سنت کے مطابق پا کر حق تعالیٰ کا شکر ادا کیا ۔

سلسلہ اشرفیہ سے وابستہ حضرات پر لازم ہے کہ اتباع سنت کو مضبوطی سے محسوس کریں اور اسمیں ذرا کمی کوتاہی نہ ہونے دیں ، اگر اتباع سنت نہیں ہے تو کچھ نہیں ہے خواہ ہوا پر اڑتا ہو یا پانی پر چلتا ہو ۔

## رجوع الی اللہ

حضرت رحمۃ اللہ علیہ اپنی مجالس میں اتباع سنت کے بعد جس اہم بات کی طرف توجہ دلایا کرتے تھے وہ ہے رجوع الی اللہ یعنی اپنے ہر کام میں حق تعالیٰ کی طرف رجوع کرنا اور دعار کرنا ، بہت کثرت سے حضرت اسکو بیان فرمایا کرتے تھے ، کبھی فرماتے ہر طرف حادثات ہیں ، سانحات ہیں ، واقعات ہیں ، پریشانیاں ہیں ، دشواریاں ہیں ، تکلیفیں ہیں ، مصیبتیں ہیں ، خطرناک بیماریاں ہیں ، منکرات و فواحشات اور بے حیائی و بے غیرتی کا سیلاب ہے ایسے حالات میں نجات کا صرف اور صرف یہی راستہ ہے کہ حق تعالیٰ جل شانہ کی طرف رجوع کیا جائے ، اسی سے عافیت مانگی جائے ، کیونکہ سب کچھ اسی کی مشیت کے مطابق ہو رہا ہے اور وہی ہر طرح قادر ہے جو اسکی طرف رجوع ہوگا اسکو ضرور پناہ ملے گی ۔



بہتر یہ ہے کہ شب کے اخیر حصہ میں اٹھکر بیٹھ جائیں اور بارگاہ الہی میں نیاز مندانہ ہاتھ پھیلا دیں اور الباقہ کریں یا اللہ! آپ ان سب پریشانیوں سے نجات عطا فرمائیے اور حفاظت فرمائیے، ہمارے قلوب کی صلاحیتیں درست فرما دیجئے، ایمانوں میں تازگی عطا فرمائیے، تقاضائے ایمانی بیدار فرمائیے، ہمارے دلوں میں گناہوں سے نفرت دیجئے اور غیرت پیدا فرما دیجئے۔

یا اللہ! ہمیں ظاہری و باطنی ہلاکتوں سے بچا لیجئے یا اللہ اپنی مغفرت و رحمت کا مورد بنالیجئے اور عذابِ نار سے بچالیجئے۔

جب بھی کوئی کام کرنا ہو بڑا ہو یا چھوٹا، آسان ہو یا مشکل، علمی ہو یا عملی، دینی ہو یا دنیوی فوراً دل ہی دل میں اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع ہو جائیں، اور عرض کریں یا اللہ! آپ میری مدد فرمائیے آسان فرمادیجئے، پورا فرمادیجئے، قبول فرمالیجئے، پھر دیکھئے آپ کے کاموں میں کیسی آسانی اور سہولت پیدا ہوتی ہے۔

ایک مرتبہ حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کا معمول بیان فرمایا کہ حضرت کا معمول تھا کہ جب کوئی شخص حضرت سے کوئی بات دریافت کرتا تو جواب سے پہلے حضرت دل ہی دل میں فوراً اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع ہوتے اور جواب دینے میں حق تعالیٰ سے مدد چاہتے چنانچہ اس کے بعد بتوفیق اللہ جو جواب مرحمت فرماتے وہ ہر لحاظ سے کامل ہوتا یہ سب رجوع الی اللہ کی برکت تھی آج بھی جو شخص چاہے اس نسخہ کو آزمائے۔

آج کل لوگ بیماریوں میں، پریشانیوں میں، تکالیف وغیرہ میں ظاہری تدابیر تو بہت کرتے ہیں مگر حق تعالیٰ جو قادر مطلق ہیں ان کی طرف رجوع نہیں کرتے اور جو رجوع ہوتے ہیں وہ پوری توجہ اور یقین سے رجوع نہیں ہوتے جس کے نتیجہ میں وہ رجوع الی اللہ کی برکات سے محروم رہتے ہیں، حق تعالیٰ کی طرف بالکل عاجز و محتاج بن کر بھکاری اور رسوالی بھکر رجوع ہونا چاہیئے، اور پورے یقین و اعتماد کے ساتھ دعا کرنی چاہیئے۔

## وساوس و خطرات کا نیا علاج

حضرت رحمۃ اللہ علیہ اس موضوع پر بھی بڑے شرح و وسط کیساتھ کلام فرمایا

رتے تھے چنانچہ ایک مرتبہ ان کا ایک ایسا علاج بیان فرمایا جو نہایت آسان اور سادہ  
 کو ختم کرنے والا ہے، فرمایا قلب و ذہن میں خواہ کتنے ہی خبیث اور گندے خیالات آئیں،  
 بغیر و شرک اور دیگر ناپاک وساوس آئیں جنہیں زبان پر لانا بھی ناقابلِ تحمل ہو، ہرگز  
 ان سے نہ گھبرائیں اور قطعاً ان کی پرواہ نہ کریں، بلکہ فوراً دل ہی دل میں حق تعالیٰ کی طرف  
 رجوع کریں اور عرض کریں یا اللہ! یہ سب وساوس و خطرات نفس و شیطان کے پیدا  
 کردہ ہیں۔ یا اللہ! میں ان سے بیزار ہوں اور بری ہوں، آپسے عرض کرتا ہوں میرا ان  
 سے کوئی واسطہ نہیں ہے کچھ تعلق نہیں ہے یا اللہ! آپ مجھ سے ان پر متواخذہ نہ فرمائیے گا،  
 اتنا کرنے کے بعد بے فکر اور مطمئن ہو جائیں، تمہیں ان سے کچھ ضرر نہ پہنچے گا، اور بہت  
 جلد وہ دفع ہو جائیں گے، اور آئندہ بھی جب کبھی کوئی پریشان کن خیال آئے اس کا یہی  
 علاج کر لیا کریں۔ بلاشبہ یہ علاج بہت مفید ہے اور بالکل نیا ہے، ہر شخص اس کے ذریعہ  
 اپنے وساوس و خطرات کا کامیابی سے علاج کر سکتا ہے۔

## معمولات پر مداومت

حضرت رحمۃ اللہ علیہ معمولات کی پابندی اور ان پر ہمیشگی کی بہت تاکید فرمایا کرتے  
 تھے اور خود بھی معمولات کے پیچہ پابند تھے۔ ایک بار فرمایا الحمد للہ میرے معمولات ناغہ  
 نہیں ہوتے، پابندی کرتے کرتے اب ان کی ایسی عادت ہو گئی ہے جب ان کا وقت آتا  
 ہے بغیر کسی تکلیف کے خود بخود پورے ہونے لگتے ہیں۔ ایک مرتبہ معمولات کی  
 پابندی کے سلسلہ میں ایک اہم گریہ ارشاد فرمایا کہ جب کوئی ایسا عذر یا کوئی ایسی مشغولیت  
 پیش آئے جس سے معمول فوت ہونے کا اندیشہ ہو تو بھی معمول کو ناغہ نہ کریں، بلکہ اگر پورا  
 نہ کر سکیں تو آدھا ادا کر لیں، آدھا نہ کر سکیں تو تہائی ادا کر لیں مثلاً پوری تسبیح نہ پڑھ سکیں  
 تو تینتیس تینتیس مرتبہ پڑھ لیں ورنہ گیارہ مرتبہ، یہ بھی مشکل ہو تو تین تین مرتبہ یہ بھی نہ کر سکیں  
 تو ایک مرتبہ ہی پڑھ لیں اور اس تفصیل کے مطابق تمام معمولات محقق کر لیا کریں گے کبھی معمول  
 بالکل ہی ناغہ ہو جائے تو اس وقت استغفار سے تلافی کر لیں اور فقیہ اعتبار سے گوان

معمولات کی قضاء نہیں ہے، لیکن نفس کو آزادی سے پچانے کے لئے کسی دوسرے وقت اس معمول کو ادا کر لیا کریں، ایسا کرنے سے تمہارا نفس وقت پر معمول پورا کرنے پر آمادہ ہو جائے گا۔ تاہم اگر کبھی کسی سخت مجبوری کی وجہ سے ایسا ہو جائے کہ ان صورتوں میں سے کسی صورت پر عمل نہ ہو سکے تو اس وقت کم از کم استغفار ہی سے تلافی کر لیا کریں۔

ایک روز حضرت نے اپنا طرز عمل بیان فرمایا کہ جب میں صبح مطب جاتا ہوں تو مطب پہنچے تک گاڑی ہی میں تمام تہیہات کا معمول پورا کر لیتا ہوں، لیکن جب کبھی کسی وجہ سے مجھے ناغہ کا اندیشہ ہوتا ہے تو یقیناً تینتیس بار ورنہ گیارہ مرتبہ ورنہ تین تین بار ادا کر لیتا ہوں۔

اس وضاحت کے بعد معمولات پر استقامت اور ان کی پابندی اس قدر آسان ہو گئی جو بیان سے باہر ہے، حادثات و ساختات زندگی کا لازمہ ہیں اور معمولات میں اکثر یہی غل ہوئے ہیں حضرت کی اس راہنمائی سے ایک بہت ہی آسان راہ عمل معلوم ہو گئی، اب بھی اگر معمول ترک ہو تو سوائے غفلت و سستی کے اور کیا کہا جاسکتا ہے جو اس راہ باطن میں سالک کے لئے بڑے راہزن ہیں۔

## مستحبات پر عمل

حضرت رحمۃ اللہ علیہ مستحبات پر عمل کرنے اور ان پر مداومت کرنے کی بھی بطور خاص تلقین فرمایا کرتے تھے، بالخصوص اہل علم میں ترک مستحبات کا مرض عام پایا جاتا ہے چنانچہ ایک مرتبہ دارالمعلوم کراچی تشریف لائے اور دوپہر کو آرام کرنے کے لئے حضرت ناظم صاحب مظلہم کے کمرہ میں آرام فرما ہوئے ناچیز اور چند خدام خدمت کے لئے حاضر تھے۔ حضرت کی عجیب شان تھی افادہ کا اس قدر غلبہ تھا کہ کوئی وقت اس سے خالی نہ جاتا، اس آرام کے وقت میں بھی افادات کا سلسلہ جاری تھا، ناچیز نے عرض بھی کیا حضرت! یہ آپ کے آرام کا وقت ہے کچھ دیر آرام فرم لیجئے فرمایا! ابھی ہمارا یہی آرام ہے اور پھر مستحبات پر عمل اور ان کی پابندی کی تلقین فرماتے رہے، اسی دوران یہ بھی

فرمایا ایک حدیث پاک کا مضمون ہے کہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم ہر کام دائیں جانب سے کرنے کو پسند فرمایا کرتے تھے، چنانچہ میں بھی اس کا خیال رکھتا ہوں، حتیٰ کہ نماز کے اندر بھی خیال ہی خیال میں رکوع میں جاتے وقت پہلا دایاں ہاتھ گھٹنوں پر رکھتا ہوں پھر بایاں اور رکوع سے اٹھتے وقت پہلے بایاں ہاتھ اٹھاتا ہوں پھر دایاں۔ اس طرح سجدہ میں جاتے وقت پہلے دایاں گھٹنہ اور ہاتھ زمین پر رکھتا ہوں اور پھر بایاں اور اٹھانے میں پہلے بایاں پھر دایاں یہ سب بلا تکلیف اور بظاہر یکسانیت کیساتھ ہوتا ہے۔۔۔ اس وقت حضرت رحمۃ اللہ علیہ کی سنت پر عمل کرنے کی گہرائی کا اندازہ ہوا رحمہ اللہ تعالیٰ۔

اسکے بعد اذان ہوئی، حضرتؒ نے اذان کا جواب دیا اور اذان کے بعد وضوء کیلئے غسل خانہ تشریف لے گئے اور وضوء کے لئے پٹرے پر بیٹھے، لیکن حضرتؒ کی قبلہ کی طرف سے پشت ہو گئی، کیونکہ غسل خانہ میں پانی جانے کا رخ ایسا ہے کہ اگر اس کے مطابق کوئی بیٹھے تو قبلہ کی طرف بالکل پشت ہو جاتی ہے، مگر حضرتؒ نے پٹرہ کا رخ گھما کر قبلہ رخ کر دیا اور وضوء فرمایا، اور ارشاد فرمایا کہ آدمی کو حتیٰ الامکان مستحب پر عمل کرنا چاہیئے۔۔۔ اس وقت آنکھیں کھلیں اور علم ہوا کہ اس طرح بھی مستحب پر عمل ہو سکتا ہے۔

## نظام الاوقات

حضرت رحمۃ اللہ علیہ نظام الاوقات کی سب سے زیادہ تاکید فرمایا کرتے تھے، خود بھی نظام الاوقات کے پابند تھے اور دوسروں کو بھی اس کی تلقین کرتے، نظام الاوقات کی پابندی میں حضرت رحمۃ اللہ علیہ، حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کا بالکل عملی نمونہ تھے، صبح سے شام تک کی تمام تر زندگی ایک مضبوط اور مربوط نظام الاوقات کے تحت گزرتی تھی مضمون کے طویل ہونے کے اندیشہ سے اسکی تفصیل چھوڑتا ہوں۔

اس بارے میں حضرت رحمۃ اللہ علیہ اکثر حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے حالات سنایا کرتے تھے، اور حضرت شیخ الہند رحمۃ اللہ علیہ کا حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے یہاں تشریف لانا، اور حضرت تھانویؒ کا حضرت شیخ الہندؒ سے اجازت لیکر بیان القرآن لکھنے





اور کامل محبت رکھنی لازم ہے، لہذا حق تعالیٰ کی محبت پیدا ہونے کے لئے تسبیح پڑھنا ہوں اسکے بعد توجہ سے تسبیح پڑھیں۔

اس طرح تسبیحات پڑھنے سے بہت جلد نفع ہوتا ہے، ذکر کے انوار و برکات محسوس ہونے لگتے ہیں اور بہت جلد اصلاح باطن میں نمایاں فرق معلوم ہونے لگتا ہے۔

## حسن نیت

حضرت رحمۃ اللہ علیہ صبح سے شام تک کے تمام جائز اور مباح کاموں اور دیگر فرائض و واجبات حقوق اللہ اور حقوق العباد میں حسن نیت کی تاکید فرمایا کرتے تھے، فرماتے کہ حسن نیت ایسی عظیم دولت ہے جسکے صدقہ میں زندگی کے تمام لمحات عبادت و طاعت بن سکتے ہیں۔

فرماتے روزانہ صبح چند منٹ کے لئے بیٹھ جایا کریں اور دن بھر کے تمام بڑے بڑے کام شمار کریں اور ساتھ ساتھ نیت کرتے جائیں یا اللہ یہ کام آپ کے لئے کرونگا یا اللہ فلاں کام بھی آپ کی رضا کے واسطے کروں گا، پھر آخر میں دعا کر لیں یا اللہ یہ تمام کام محض اپنی رضا کے لئے کرنے کی توفیق دیجئے میری مدد فرمائیے اسکے بعد امور دنیا میں قدم رکھئے اب درمیان میں بار بار نیت کرنے کی ضرورت نہیں، صبح سے شام تک کی ایک بار نیت کافی ہے جس طرح نماز کے شروع میں ایک بار نیت کافی ہے، ہر رکن میں نئی نیت کی ضرورت نہیں اسی طرح یہاں بھی ہر ہر کام سے پہلے بار بار نیت کرنے کی ضرورت نہیں جب تک آپ از خود کوئی دوسری نیت نہ کریں گے پہلی نیت جاری رہے گی۔ پھر جب آپ گھر لوٹیں تو سونے سے پہلے چند منٹ کے لئے بیٹھ جائیں اور دن بھر کے کاموں کا جائزہ لیں کہ کتنے کام اللہ تعالیٰ کی رضا کے لئے کئے اور کتنے اسکے خلاف کئے، جتنے اللہ تعالیٰ کے لئے کئے ان پر شکر ادا کریں اور جو غلط یا گناہ ہوئے ان پر ندامت و شرمندگی کے ساتھ حق تعالیٰ سے معافی چاہیں اور آئندہ اللہ تعالیٰ کی رضا کے مطابق کرنے کا عہد کریں۔ روزانہ اسی طرح کیا کریں کچھ ہی روز میں زندگی کو حق تعالیٰ کی رضا کے مطابق گزارنے

کا سلیقہ آجائے گا اور حسن نیت کی بدولت تمام لمحاتِ زندگی عبادت و طاعت بن جائیں گے۔

## شفقت و رحمت

حضرت رحمۃ اللہ علیہ یوں تو بڑے جامع صفات اور جامع کمالات تھے، لیکن ایک خاص صفت حضرت میں ایسا ممتاز اور نمایاں تھی جو حضرت کے ہر قول و فعل اور نشست و برخاست سے ظاہر تھی اور وہ آپ کی شانِ "شفقت و رحمت" تھی۔ آپ کا ہر انداز گفتگو اور اندازِ بیان اسی سے بھرا ہوا تھا، اول سے آخر تک سارا بیان رحمت ہی رحمت ہوتا، ایسا لگتا جیسے حضرت رحمۃ اللہ علیہ کے یہاں ناامیدی اور مایوسی کا کوئی ٹھانہ ہی نہیں ہے، کوئی کیسا ہی گناہگار، خطا کار اور سیاہ کار ہوتا، اگر ایک بار حضرت کا بیان سُن لیتا تو ہمیشہ کے لئے اسکی ناامیدی کا قاتمہ ہو جاتا۔

آپ کی شفقت و رحمت کا یہ بھی ایک انداز تھا کہ آپ روزانہ اپنے احباب و متعلقین کے لئے دعائیں فرمایا کرتے تھے اور فرماتے جب میں دعا شروع کرتا ہوں تو احباب کی صورتیں فلم کی ریل کی طرح سامنے آتی جاتی ہیں اور میں سب کے لئے دعا کرتا رہتا ہوں اور یہ بھی فرماتے جب تک میں سب کے لئے دعا نہ کر لوں سوتا نہیں ہوں، وفات سے کچھ روز پہلے ارشاد فرمایا اب میرا یہ حال ہے کہ جب تک تمام اہل دارالعلوم کا اور اپنے تمام مریدوں کا خواہ وہ دنیا کے کسی کونے میں ہوں ان کے لئے دعا اور ان کی حفاظت کیلئے حصار نہ کر لوں اس وقت سوتا نہیں ہوں، اللہ اکبر! کس قدر شفقت تھی اپنے تعلق رکھنے والوں پر، جزاء اللہ تعالیٰ خیر الجزاء۔

## دُعَاء

حق تعالیٰ جل شانہ نے حضرت رحمۃ اللہ علیہ کو دعا کرنے کا بھی ایسا ممتاز اور والہانہ طریقہ عنایت فرمایا تھا جو کم از کم ناچیز نے حضرت کے علاوہ اور کسی میں نہ پایا، دعا کے دوران حضرت کی شانِ "عارف باللہ" بطور خاص ظاہر ہوتی، ایسا معلوم

ہوتا جیسے دُعا کا ایک ایک جملہ حق تعالیٰ کی طرف سے القاء ہو رہا ہے اور حضرت والا زبانِ مبارک سے ادا فرما رہے ہیں، ہمیں بھی یہی انداز اپنانا چاہیے اسی طرح دُعا کی عادت دالنی چاہیے، آخر میں حضرت رحمۃ اللہ علیہ کی ایک دُعا پر مضمون ختم کرتا ہوں۔

یا اللہ! ہمارے قلوب میں بیداری پیدا فرما دیجئے ہماری غفلتوں کو دور فرما دیجئے۔  
یا اللہ! ہم پر جو بے حسی طاری ہے اُسے دور فرما دیجئے۔

یا اللہ! تمام عالمِ امکان میں جہاں جہاں مسلمانوں پر تباہیاں اور بربادیاں آرہی ہیں ان پر رحم فرمائیے؛ سب ہمارے شامتِ اعمال کی صورتیں ہیں ان کو اپنی رحمت سے بدل دیجئے۔

یا اللہ! دشمنانِ اسلام کی سازشوں سے اہلِ اسلام کی حفاظت فرمائیے، کفار و مشرکین یہود و نصاریٰ جو اہلِ اسلام کو مٹانے کے دُرپے ہیں، یا اللہ! آپ دشمنانِ اسلام کو سمجھ لیجئے اور ان کے تسلط سے اہلِ اسلام کو بچا لیجئے۔

یا اللہ! ہماری توبہ اور استغفار کو قبول فرما لیجئے اور اپنے قہر کو ہم سے دور کر دیجئے۔

یا اللہ! ہر طرح کے مصائب اور آلام سے، ہر طرح کے حادثات و سانحات ہماری، ہمارے اہل و عیال کی، ہمارے دوست و احباب کی، ہمارے اعزہ و اقارب کی اور تمام مسلمانوں کی حفاظت فرمائیے۔

یا اللہ! ہمارے وجود کو دنیا و آخرت کے دردناک عذاب سے بچا لیجئے، دردناک آزمائشوں سے بچا لیجئے۔

یا اللہ! ہم ضعیف الایمان ہیں، کسی آزمائش کی سہار نہیں رکھتے ہیں، ہم کو اپنی رحمت میں ڈھانپ لیجئے۔

یا اللہ! آپ خالق کائنات ہیں، ہم تمام کسب و کار اور فتن سے آپ کی پناہ چاہتے ہیں اور ہر طرح دین و دنیا کی خیر آپ سے طلب کرتے ہیں۔

یا اللہ! ہمارے ایمانی تقاضے بیدار فرما دیجئے، ہمارے ایمان کو قوی فرما دیجئے، ہم کو سچا مومن و مسلمان بنا دیجئے۔



یا اللہ! ہم کو، ہمارے اہل و عیال کو، ہمارے دوست و احباب کو، ہمارے عزیز و اقرباء کو سب کو عافیت دارین نصیب فرمائیے۔

یا اللہ! جو حاضر ہیں ان کے حق میں بھی اور جو حاضر نہیں ان کے حق میں بھی ہماری دُعا میں قبول فرمائیے۔

یا اللہ! لبنان، فلسطین، ہندوستان اور افغانستان کے مسلمانوں کی امداد و نصرت فرمائیے، وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا، وَكُفِّ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكُفِّ بِاللَّهِ نَصِيرًا۔

اور جہاں جہاں مغلوب ہیں، دشمنان اسلام پر انہیں غلبہ عطا فرمائیے۔  
یا اللہ! رشد و ہدایت کے دروازے ہمارے لئے کھول دیجئے۔

یا اللہ! ہمارے جو صاحب اقتدار ہیں انکو ہوش عطا فرمائیے اسلام اور ایمان کی سچی محبت سے ان کے دلوں کو بھر دے۔

یا اللہ! رشد و ہدایت کا فیصلہ اس قوم اور ملک کے حق میں صادر فرمادے۔

یا اللہ! جو آپ کی نافرمانیوں اور گناہوں میں ملوث ہیں، ان کے قلوب کو بدل دیجئے، ان کو ہدایت نصیب فرمائیے۔ ان کو سچی توبہ کی توفیق عطا فرمائیے۔ ان کو اپنا فرمانبردار بنادینا بھیجئے۔

یا اللہ! اس ملک میں دین اور قرآن و سنت کی ہوائیں چلا دے اور فسق و فجور کے طوفان ٹھنڈے فرمادے۔

یا اللہ! ہم کو اپنی اور اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کی سچی محبت عطا فرمادے، اسلام اور ایمان کی عظمت ہمارے دلوں میں بٹھادے۔

مِنَّا اللّٰهُ! ہم میں جو صاحب اقتدار ہیں اور جو مصلح ہی خواہاں قوم و ملت ہیں، جو واعظین اور مبغضین ہیں ان کے ماسعی میں اور ان کے ذرائع و وسائل میں

اعانت و نصرت فرمادے۔ آمین یا رب العالمین آمین ثم آمین۔

وصلی اللہ تعالیٰ علی خیر خلقہ محمد و آلہ و اصحابہ و بارک و سلّم

## بزم اشرف کابرانِ جبرائیل

### مقام عارف باللہ

اے خیال دوست اے بے گانہ ساز ماسوا  
اس بھری محفل میں تو نے مجھ کو تنہا کر دیا (عارف)  
مخدومی حضرت عارف باللہ عائنی کا یہ شعر آپ کے مقام تعلق مع اللہ کا غماز ہے۔ بقول حضرت  
صغریٰ گوئی رحمت اللہ علیہ

اصغر سے ملے لیکن اصغر کو نہیں دیکھا  
سنتے ہیں کہ کچھ کچھ وہ شعروں میں نمایاں ہے

### مقام مبتل کی تفسیر

خلق سے انقطاع تعلق یعنی مقام مبتل کا یہ مفہوم ہرگز نہیں ہے کہ تعلقات ضرور یہ سے کنارہ کش  
وہ حقوق واجبہ مخلوقات سے دست بردار ہو جائے۔ یہ راہبانہ تصوف محض جاہلانہ ہے۔ حضرت حکیم الامت  
بدو الملت نے بیان القرآن میں مقام مبتل کی جو تفسیر تحریر فرمائی ہے وہ یہ ہے کہ "مبتل، مہ ہے تعلقات  
اسوئی اللہ پر اللہ تعالیٰ کا تعلق غالب ہو جائے" جیسا کہ جگر صاحب فرماتے ہیں

میرا کمال عشق بس اتنا ہے اے جگر  
وہ مجھ پہ چھا گئے میں زمانہ پہ چھا گیا

اور اصغر گوندوی صاحب فرماتے ہیں ۵  
اب نہ کہیں نگاہ ہے اب نہ کوئی نگاہ میں  
محو کھڑا ہوا ہوں میں حسن کی جلوہ گاہ میں

## حسن اخلاق کی تعریف

مدارۃ الخلق مع مراعاة الحق (مرقاۃ شرح مشکوٰۃ)

حضرت عارف باللہ ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ پر حضرت حکیم الامت مجدد الملت کی تیس سالہ صحبت کے فیضان سے اللہ تعالیٰ کی محبت کا ایسا ہی غلبہ تھا۔ اس نسبت مع اللہ کی برکت سے حضرت خلق خدا پر جہاں سراپا شفیق اور محسن تھے وہاں اتنا ہی درجہ اپنے محمولات خلوت پر جبل استقامت تھے۔ حضرت کی مجلس میں یہ بات محسوس ہوتی تھی کہ آپ بیک وقت حقوق خلق اور حقوق خالق کا پورا پورا استحضار رکھتے تھے۔ اجاب کے ساتھ شفقت اور رحمت کا ایسا رنگ تھا جو حضرت حاجی امداد اللہ صاحب مہاجر مکیؒ سے ملتا جلتا تھا جیسا کہ حضرت حکیم الامت حضرت حاجی صاحب کے متعلق فرماتے ہیں کہ :

"ہمارے حضرت حاجی صاحب سراپا رحمت اور شفقت تھے، خفا ہونا اور ڈانٹنا تو جانتے ہی نہ تھے لیکن آپ کا فیض عام اور تمام تھا۔ آپ کے فیضانِ صحبت سے کوئی محروم نہ ہوتا تھا۔"

علماء عصر کا رجوع جس طرح حضرت حاجی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی طرف ہوا، تقریباً اسی طرح پاکستان کے جلیل القدر علماء کافی تعداد میں اصلاح و تربیت کے لیے آپ سے منسلک تھے۔ حضرت نے کبھی اپنے کو مخدوم نہیں سمجھا اور ارشاد فرمایا کہ سند اجازت دراصل سند خادمیت ہے سند مخدومیت نہیں اور فرمایا کہ لوگ سمجھتے ہیں کہ میں رہنما ہوں مگر بھائی ایک شہر سنو ۵ ہم سفر مجھ کو سمجھتا تھا کہ میں ہوں رہنما اور خود اس کے سپہ سالار پر چلا جاتا ہوں میں

(عارفیؒ)

## روحانی طاقت کا استعمال نفس کے ساتھ جہاد میں ہے

حضرت فرماتے کہ نوافل اور اذکار و اذکار سے قلب میں جو انوار پیدا ہوتے ہیں اس سے ایک روحانی طاقت پیدا ہوتی ہے لیکن اس طاقت کا استعمال بارگاہِ خلوتِ حق میں نہیں ہے بلکہ اللہ تعالیٰ کی مخلوق کے ساتھ حسن اخلاق سے پیش آنا، بے جا غصہ کو ضبط کرنا، بد نظری سے آنکھوں کو محفوظ رکھنا، مخلوق کی خطاؤں کو معاف کرنا، شہوت اور غضب سے مغلوب نہ ہونا۔ کسی کو حقیر نہ سمجھنا۔ انتقام نہ لینا، اپنے کو مخلوق خدا کا خادم سمجھنا، اکرام مومن کرنا، اپنے کو بڑا نہ سمجھنا، وغیرہ وغیرہ میں ہے۔ اگر خلوت میں ذکر شغل ہے اور مخلوق خدا پر ظالم اور مغلوب الغضب ہے تو اس شخص نے روحانی طاقت کا صحیح استعمال نہیں کیا۔

## شانِ رحمتِ حق

حضرت عارف باللہ فرمایا کرتے تھے کہ پوری کراچی کا پیشاب پاخانہ سمندر میں گرتا ہے اور سمندر کی ایک موج سب پاک کر دیتی ہے، پس اپنے معاصی کی غلاظتوں اور نجاستوں سے یلوس نہ ہونا چاہیے۔ دل سے توبہ و استغفار و ندامت اور اشکبار آنکھوں سے کرتے رہو۔ اللہ تعالیٰ کی رحمت کے غیر محدود سمندر کی ایک موج ہماری مغفرت کے لئے کافی ہے۔ اور فرماتے کہ اگر گناہ تم سے نہیں چھوٹتے تو استغفار و توبہ کا سلسلہ مت چھوڑو۔ ایک دن انشاء اللہ تعالیٰ نیکی غالب ہو جاوے گی۔

## شیطانِ محبت سے محروم تھا

حضرت فرماتے کہ ہمارے حضرت رحمۃ اللہ علیہ فرماتے تھے کہ شیطان کے اندر تین عین تھے۔ عارف، عالم، عابد مگر عاشق کا عین نہ تھا اس لئے بریاد ہو گیا۔ پھر منس کر فرمایا کہ چوتھا عین عاشق کا نہ ہونے سے اس کا عین غین ہو گیا۔ اللہ تعالیٰ کی محبت بڑی نعمت ہے جو اہل محبت ہی کی صحبت سے عطا ہوتی ہے۔ عابد ہونا تو ظاہر ہی ہے کہ ہزاروں سال عبادت کی تھی، عالم ہونا بھی ظاہر ہے کہ تمام نبیوں کی شریعتوں کے جزئیات و کلیات سے باخبر ہے اور عارف ہونے کی دلیل یہ ہے کہ





## علاج بلا

ایک صاحب نے عرض کیا کہ حضرت ایک سخت بلا آنے والی ہے فرمایا کہ ۷۸۶ مرتبہ بسم اللہ الرحمن الرحیم اور آیت الکرسی پڑھ کر یہ دعا کرو کہ اللہ تعالیٰ اپنی تمام مخلوق کی جان و مال کو اس سے بچالیں اور تمام عالم کے مسلمانوں کے گھروں کا حصار کرے۔

## تذہیر مغفرت

فرمایا کہ جب خطا ہو جائے تو استغفر اللہ کہو۔ تمام زندگی استغفر اللہ کہتے رہو اور معافی مانگتے رہو اور رب اغفر وارحم الخ کہتے رہو۔ یہ سرکاری منہوں معافی کا ہے۔ ہماری خطائیں محدود اور انکی مغفرت غیر محدود۔ استغفر اللہ کی طاقت کو محمول مت سمجھو۔ اللہ تعالیٰ آخری عمر میں پاک و صاف ہو کر مرد گئے۔ جب رب اغفر وارحم پڑھو تو یہ تصور کر دو کہ غیر محدود مغفرت و رحمت کی ہمارے اوپر بارش ہو گئی اور ہماری سب خطائیں معاف ہو گئیں۔ یہ تریاق ہے گناہ کے زہر کا۔ جب گناہ کا زہر کھایا تو تریاق کھانے میں کیوں دیر کرتے ہو تو استغفر اللہ کا تریاق کھاؤ۔ یہ انکا عطا فرمودہ تریاق ہے انکی طاقت کے سامنے گناہوں کی کیا طاقت ہے استغفار کے بعد اپنی مغفرت کا سو فیصد امید دار رہنا چاہیئے۔

## انعام اتباع سنت

فرمایا کہ اتباع سنت کا اہتمام کرو۔ کیا آپ کے باپ و دامین کرسی پر کھاتے تھے۔ اب کیا ہو گیا ہے کہ آپ کو فرش پر سنت کے مطابق کھانے پر عار ہے؟ محمد علی جناح کی انگریزی تقریر سے انگریز بھی شرماتے تھے کہ ہم ایسی نہیں بول سکتے مگر آخر میں شیردانی پا جامہ ٹوپی پہنتے تھے اور ہمارے نوجوانوں کو کیا ہو گیا ہے کہ کوٹ، پٹون، مائی اور ڈاڑھی صاف؟ معلوم نہیں ہوتا ہے کہ یہ مسلمان ہیں یا عیسائی۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے جب قیامت کے دن حاضری دو گئے تو کیا پسند کرتے ہو؟ کہ بابون کر کوٹ، مائی پٹون، ڈاڑھی مونچھ صاف۔ اس طرح سے پیش ہو کر کہو

گئے کہ یا رسول اللہ! میں آپ کا امتی ہوں۔ ارے کس منہ سے کہو گے؟ جلدی اصلاح کر لو۔ اور فرمایا کہ کھانے پینے، سولے جاگنے، استنجا کرنے اور ہر کام میں سنت کا خیال رکھو۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی سنتوں کو سیکھنے اور ان پر عمل کرنے کے لیے ہماری کتاب اسوۂ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا مطالعہ کرو۔ ایک ایک سنت کو اپناؤ۔ اتباع سنت کو معمول عمل نہ سمجھو۔ اللہ تعالیٰ کا اتباع سنت پر وعدہ ہے **يُحِبُّكُمْ اللَّهُ** اللہ تعالیٰ تم سے محبت فرمائیں گے۔ عجیب انعام ہے۔ ہماری اتباع سنت ناقص ہوگی مگر اللہ تعالیٰ جب محبت فرمائیں گے تو کامل فرمائیں گے کیونکہ وہ نقص سے پاک ہیں انکا کوئی کام ناقص نہیں ہو سکتا۔

## دعا مانگنے کا عجیب مضمون

فرمایا کہ جب دعا مانگتے مانگتے تھک جاؤ تو یوں عرض کرو کہ اب آپ بدون مانگے ہم کو سب دے دیجئے کیونکہ ہم تو تھک گئے اب مانگنے کی طاقت نہیں۔  
جامع کہتا ہے کہ یہ مضمون آپ زہر سے لکھنے کے قابل ہے۔

## تربیت روحانی اور ذکر

فرمایا کہ جسمانی غذا مانگنے کے بعد اللہ تعالیٰ کے فضل سے وہ تمام بدن میں غذا بن کر پہنچ جاتی ہے۔ سفید بالوں کو سفید غذا کالے بالوں کو کالی غذا۔ اسی طرح ذکر کرنے کے بعد روحانی غذا اللہ تعالیٰ کے فضل سے روح کو تربیت دے گی آپ سے کچھ مطلب نہیں جس طرح غذائے جسمانی کھانے کے بعد آپ سے کچھ مطلب نہیں۔

فرمایا کہ ایک صاحب نے لکھا کہ آپ تو شیخ بن گئے اور مسند خلافت پر فائز ہو گئے میں نے انکو لکھا اور فی البدیہہ یہ شعر موزوں ہو گیا۔

دیکھ کر میرا مذاق خدمت جام و سبو  
میکدہ والے مجھے پیرمغاں کہنے لگے

## قدر نعمت الہیہ

فرمایا کہ حضرت تھانویؒ نے فرمایا کہ جس نعمت کے اجزائے کثیرہ سے ہم اپنی حاجت پوری کرتے ہیں اس نعمت کے اجزائے قلیلہ کو ضائع کرتے ہوئے دیکھ کر دل لرز جاتا ہے۔

## ایک وظیفہ

ایک صاحب نے کہا کہ میرا تالہ بہت تکلیف دہ جگہ ہو رہا ہے تو فرمایا ہر نماز کے بعد یہ دعا پڑھیں :

قَبْلِ اَدْخَالِنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ مُسْلِمًا نَّاصِيًا ۝

## حضرت سید سلیمان ندوی کا واقعہ

فرمایا کہ سید سلیمان ندویؒ نے حضرت تھانویؒ سے جب پہلی ملاقات کی اور اس وقت میں بھی حاضر تھا تو سید صاحب نے عرض کیا کہ کچھ نصیحت فرمادیجئے۔ حضرت نے فرمایا کہ آپ جیسے فاضل کو کیا نصیحت کروں ؟ لیکن اپنے بزرگوں سے جو سنا ہے اسی کا تکرار کرتا ہوں اور وہ یہ ہے کہ تمام تعوف کا حامل اپنے کو مٹا دینا ہے۔ بس سید صاحب پر گریہ طاری ہو گیا۔ میں نے اسی وقت یہ شعر کہا :

بہت چاہا نہ ظاہر ہو کسی پر راز ضبط غم  
دوا نسو کہہ گئے لیکن شکست دل کا افسانہ

(عارفیؒ)

اس کے بعد یہ اشعار سنائے۔

نہ چھوڑا شائبہ تک دل میں احساس دو عالم کا

معاذ اللہ محبت کا یہ انداز حسرتِ فغانہ

عجب کیا تھی بنائے گلِ محبت ایسا دیوانہ

(عارفیؒ)

مجھے بننا پڑے گا خود محبت ہی کا افسانہ



پھر سید صاحب تھانہ بھون گئے تین دن مجلس میں شریک ہوئے تیسرے دن کھڑے ہو کر  
 سردری پر یا تھ کر رکھ کر رونے لگے۔ فرمایا تمام عمر جس کو علم سمجھا تھا اب معلوم ہوا کہ سب جہل تھا  
 علم تو ان بڑے میاں کے پاس ہے اور سید صاحب نے فرمایا  
 جلنے کس انداز سے تقریر کی  
 پھر نہ پیدا شبہ باطل ہوا  
 آج ہی پایا مذاق قرآن میں  
 جیسے قرآن آج ہی نازل ہوا

## علماء کی تربیت کیلئے عجیب اور مفید مثال

حضرت عارف باللہ نے فرمایا کہ علماء کے علوم کی مثال ایسی ہے جیسے بریانی کے اجزاء  
 سب دیگ میں ہوتے ہیں مگر خوشبودار کھانے کے قابل نہیں۔ دم کی ضرورت ہے۔ ماہر فن آنچ  
 کم ککے دم دیتا ہے۔ ایک منٹ قبل یہ دیگ کا لودم خاموش ہے نام و نشان تھی، دم کے بعد ایک  
 ہی منٹ میں خوشبوئے بریانی نے محلہ بھر میں پھیل مچادی۔ علماء کے سینوں میں یہ علوم مثل  
 اجزاء بریانی ہیں کسی اہل اللہ کی صحبت سے جب اس کو دم دے دیا جاتا ہے پھر نئے سینوں  
 سے ایسے علوم و معارف بیان ہوتے ہیں کہ علماء ظاہر و محیرت ہو جاتے ہیں اسی کو حضرت  
 عارف رومیؒ نے فرمایا ہے

|                          |   |
|--------------------------|---|
| قال را بگذار مرد حال شو  | ترجمہ: قال کو چھوڑو صاحب حال بنو        |
| پیش مرد کلے پامال شو،    | مگر کیسے بنو گے کسی شیخ کمال کے قدموں   |
| بنی اندر خود علوم انبیار | میں اپنے کو متاد پھر دیکھو گے اپنے اندر |
| بے کتاب و بے حیدر اوستا  | علوم انبیاء بدون کتاب و حوزن ہونگے      |

|                             |  |
|-----------------------------|--|
| گر تو سنگ خارہ و مرمر بوی   | ترجمہ: اگر تم پتھر کی طرح سخت ہو تو اہل دل کی صحبت میں |
| گر بیا صاحب دل رسی گوہر شوی | بیٹھو انکی برکت سے موتی ہو جاؤ گے یعنی صاحب نسبت       |
|                             | اللہ والے بن جاؤ گے۔                                   |

## تاثیر صحبت اہل دل

اور فرمایا کہ لوہا پارس پتھر کی خدا داد خاصیت سے جس طرح سونا بن جاتا ہے اسی طرح اللہ والوں کی صحبت میں منجانب اللہ ایسی خاصیت ہوتی ہے کہ انسان رفتہ رفتہ حقیقی معنوں میں انسان بن جاتا ہے۔ پھر فرمایا کہ ایک بار مولانا شاہ عبدالغنی صاحب پھولپوری نے فرمایا کہ اہل اللہ کی صحبت سے کیا ملتا ہے اس کو کیسے سمجھا دوں پھر یہ شعر پڑھا

آہن کہ بہارِ س آشنائش

فی الفور بصورتِ طلا شد

ترجمہ: لوہا جب پارس پتھر سے متصل ہوتا ہے فوراً سونا بن جاتا ہے اب یہ بات کیسے سمجھا دوں کہ لوہا سونا کیوں بن جاتا ہے اور کیسے بن جاتا ہے لوہے کو چاہیے کہ بیٹھ کر تجربہ کر لے۔

پھر حضرت ڈاکٹر صاحب نے فرمایا کہ آگ کے متعلق پانچ سو صفحات پر لکھی ہوئی کتاب پڑھ ڈالیے گرمی نہیں ملے گی لیکن انگلیش کے پاس بیٹھ جائیے تو آگ کی گرمی بھی ملے گی اور آگ کی کتاب بھی سمجھ میں آ جائے گی۔

## دولت عشق

فرمایا کہ دولت عشق ہر ایک کو عطا نہیں فرماتے اور یہ شعر پڑھا

سرمد غم عشق بواہوس راند دہند

سوز غم پروانہ گس راند دہند

ترجمہ: اے سرمد اللہ تعالیٰ اپنی محبت کا غم اہل ہوس حریص دنیا کو نہیں عطا فرماتے اور پروانے کا سوز غم مکھیوں کو نہیں عطا فرماتے۔

اور فرمایا کہ حکیم الامت فرمایا کرتے تھے کہ راہ عشق سے سلوک طے کرنا آسان ہوتا ہے جیسا کہ اس شعر میں فرمایا گیا ہے

## صنما رہے قلندر سزا دار بن نمائی

کہ دراز و دور دیدم رہ درسم پارسائی

ترجما: اے محبوب مرشد مجھے اللہ تعالیٰ کی محبت کا راستہ دکھائیے کہ یہ راستہ مجھے بہت محبوب ہے اور خشک راستہ بدون محبت کے بہت دراز معلوم ہوتا ہے۔

پھر فرمایا لیکن راہ عشق سے یہ مراد نہیں ہے کہ ہم راہ شریعت سے بے پروا ہو جائیں بلکہ عشق سے راہ شریعت پر چلنا آسان ہو جانے کا بدون عشق شریعت پر چلنا مشکل ہوتا ہے۔

## حاصل تصوف

فرمایا کہ حضرت تھانوی نے ارشاد فرمایا کہ تمام سلوک اور تصوف کا حاصل صرف یہ ہے کہ طاعت کے وقت ہمت کر کے طاعت کو بجالائے اور معصیت کے تقاضہ کے وقت ہمت کر کے معصیت سے رک جائے اس سے تعلق مع پیدا ہوتا ہے، محفوظ رہتا ہے، ترقی کرتا ہے۔

## دور حاضر کی ترقی کا مفہوم

فرمایا کہ دور حاضر کی ترقی یہ ہے کہ بکادات اور اسباب تعیش کی فراوانی اور اخلاق سوراہہ کتوں سے بڑے۔ حسد، بغض، کینہ، جہازوں کا اغوا، آدمیوں کا اغوا، ڈاکہ، چوری، ہراسنہار پرادر ہر سان بورد پر عورت کی تصویر، عورتوں کا پیٹ کھلا، بازو کھلے اس بے حیائی اور بے شرمی کا نام ترقی و تہذیب ہے، نوجوان لڑکے نوجوان لڑکی کا مخلوط تعلیم حاصل کرنا، حد ہمساس بے حیائی کی؟

## کثرت مصافحہ سے عجب کا علاج

حضرت عارف باللہ نے فرمایا کہ حکیم الامت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا کہ ایک بار لوگوں کے مصافحہ کی کثرت سے نفس میں عجب کے آثار محسوس ہوئے تو میں نے مصافحہ کی یہ نیت نفس کی اصلاح کے لئے کی کہ یا اللہ میں ان لوگوں سے اس لئے مصافحہ کرتا ہوں کہ شاید آپ کے کسی بیک بندہ کے ہاتھ میں میرا تھا آجائے اور وہ سبب میری نجات اور مغفرت کا بن جائے۔

## عبرت ناک واقعہ

فرمایا کہ نواب مولوی محسن الملک علی گڑھ کالج کے سکریٹری تھے۔ کالج کو یونیورسٹی بنانے کی منظوری کے لئے لارڈ کرزن وائسرائے کے مہم میں گئے۔ ساتھ دو بیرسٹر لے گئے۔ مغرب کا وقت ہوا۔ تنہا وائسرائے لاج میں نماز پڑھی۔ ان بیرسٹروں نے وائسرائے سے کہا حضور یہ مولوی صاحب دقیانوسی آدمی ہیں آداب شاہی سے واقف نہیں۔ ہم لوگ بہت شرمندہ اور معافی کے خواستگار ہیں کہا ہوں نے یہاں نماز شروع کر دی۔ وائسرائے سگریٹ پتارہا اور خاموش رہا۔ جب محسن الملک صاحب نماز پڑھ کر آئے تو وائسرائے کھڑا ہو گیا اور مولوی صاحب کو کرسی پر بٹھا کر پھر خود بیٹھا اور کہا کہ مولوی صاحب آپ سے دل بہت خوش ہوا۔ وائسرائے لاج کی تاریخ میں پہلی مرتبہ خدا کا نام لیا گیا۔ یہ بیرسٹر مسلمان ہیں یا منافق ہیں اگر آپ کی خاطر محفوظ نہ ہوتی تو انکو کان پکڑ کر نکال دیتا جو خدا کی عبادت سے معافی طلب کر رہے ہم کو خوش کرنے کے لئے۔

## تلافی مافات

فرمایا کہ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ اور استغفر اللہ سے شیطان کی کمر ٹوٹ جاتی ہے کیونکہ شیطان نے ایمان کو کو نقصان پہنچایا اسکی تلافی لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سے ہو گئی ہے پھر اس نے اعمال کو نقصان پہنچایا اسکی تلافی استغفر اللہ سے ہو گئی۔

## تعمیر باطن کی اہمیت

مولانا محمد رفیع صاحب مہتمم دارالعلوم کراچی نے ایک دفعہ دعائے درخواست کی کہ تحفیظ القرآن کی چھت پڑنی ہے فرمایا دعا کرتا ہوں لیکن اس تعمیر کی تکمیل تو دوسرے بھی کر سکتے ہیں مگر تعمیر باطن کی تکمیل کا اہتمام ضروری ہے کیونکہ اس کام کو دوسرے نہیں کر سکتا۔

## استغراق اور اختیار

فرمایا ایک صاحب نے حکیم الامت کو لکھا کہ میرے لئے استغراق دائمی کی دعا کر دیجئے۔ حضرت



نے جواب تحریر فرمایا کہ میں تو اس سے حفاظت چاہتا ہوں کیونکہ استغراق میں مجبور ہو جاؤں گا اور مختار نہ رہوں گا اور اختیار سے ایک بار سبحان اللہ کہنا استغراق اور غلبہٴ صغیری بے اختیاری والی سے بہتر سمجھتا ہوں۔

## بعض مشہور مصرعہ کا نکلہ

فرمایا کہ بعض وقت ایک مصرعہ مشہور ہو جاتا ہے اور دوسرا مشہور نہیں ہوتا جیسے کہ:  
 مے خانہ کا محروم بھی محروم نہیں ہے  
 اس کا پہلا مصرعہ یہ ہے

مستی کے لیے بوئے مئے تند ہے کافی  
 اسی طرح یہ مصرع بہت مشہور ہے  
 درکارِ غیرِ حاجت، بیچِ استخارہ نیست  
 اس کا پہلا مصرعہ یہ ہے

آں دم کہ دلِ بشتِ دی خوش دے بود

## حقِ عظمت اور حقِ محبت

فرمایا کہ حضرت تھانویؒ کا ارشاد ہے کہ فرائض و واجبات حقِ عظمت الہیہ میں اور مستحبات حقِ محبت الہیہ میں۔ یہ سن کر ڈاکٹر تنزیل الرحمنؒ نے فرمایا کہ مستحبات کا ماوہ بھی محبت ہے اور باب استفعال طلب کے لئے ہوتا ہے۔

فرمایا اللہ کا راستہ جان کی بازی لگانے کا ہے میرا شعر ہے  
 جائز نہیں اندیشہٴ جاںِ عشق میں اسے دل

ہمیشہ کہ یہ مسلک تسلیم درمنا ہے (عارف)

## بزرگوں سے تعلق

فرمایا کہ حضرت تھانویؒ نے فرمایا ہمیشہ اپنے بڑوں سے وابستہ رہے اور اپنے کو کبھی

مستقل بانذات نہجے جو اپنے کو مستقل بانذات سمجھتا ہے وہ مستقل بذات ہو جاتا ہے۔  
 فرمایا کہ حضرت تھانویؒ فرماتے تھے کہ میں نے تین کتابیں درسیات کے علاوہ پڑھی ہیں حاجی  
 امداد اللہ صاحبؒ۔ مولانا رشید احمد صاحب گنگوہیؒ اور مولانا یعقوب صاحب۔

## جملہ پریشانیوں کا عجیب حکیمانہ علاج

فرمایا کہ میں نے جو پورے حضرت حکیم الامتؒ کو خط لکھا کہ بیمار ہوں، مقروض ہوں تمام خط  
 پریشانیوں سے بھرا تھا اس خط کا جواب مشفق سے مشفق معالج یہی لکھا کہ صدمہ ہوا دل سے دعا کرتا  
 ہوں یہ وظیفہ پڑھ لیا کرو مگر ہمارے حضرت حکیم الامتؒ نے ایسا جواب لکھا کہ سبحان اللہ رُخ بدل دیا۔  
 حضرتؒ نے لکھا کہ حالات موجودہ میں بدون استحقاق جو نعمتیں آپ کو حاصل ہیں آپ نے اس خط میں انکا  
 کوئی ذکر نہ کیا اگر وہ بھی سلب ہو جائیں تو کس قدر مصائب کا سامنا ہو اس جواب نے میرا رُخ بدل دیا تمام  
 پریشانیاں سکون سے تبدیل ہو گئیں۔

فرمایا کہ ہر نعمت پر شکر کی عادت ڈالنے اس پر ترقی نعمت کا وعدہ ہے اور معاشی سے بھی خفایت  
 رہے گی۔ شکر کی چار صورت ہے۔

- ① احساس شکر یعنی دل میں یہ خیال کرنا کہ بدون استحقاق عطا ہوا ہے یہ احساس شکر ہے۔
- ② زبان سے اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ کہنا۔
- ③ نعمت کا استعمال صحیح ہو مثلاً بنیائی کو لچھے کاموں میں لگائے کسی کو حسد کی نظر سے حقارت کی  
 کی نظر سے شہوت کی نظر سے اگر دیکھا تو یہ ناشکری ہوگی کیونکہ استعمال غلط ہو گیا۔
- ④ نعمت جس واسطے سے حاصل ہو اس کا بھی شکرا دا کرنا اور زبان سے جزا اَللّٰهُ کہنا۔ جو شخصی  
 شکر کے یہ چار اعمال کرے گا معاشی سے بھی محفوظ رہے گا۔

## تکرار نصائح کا افادہ

فرمایا کہ اللہ والوں کے نصائح کا اگر تکرار ہو تو یہ تکرار بھی نافع ہے۔ تکرار نصائح سے گھبرانا یا  
 تکرار علوم نافعہ سے متوجش ہونا اس کی فطرت کا نقص ہے اس کا قلب سقیم ہے اس کو علاج کرانا

چاہیے کیونکہ خالق فطرت انسانیت نے اپنے کلام کو تکراریات کے ساتھ نازل فرمایا ہے۔ پس فطرت انسانیت کے لئے پند و نصائح کا بار بار ہونے کا نافع ہونا ظاہر ہے۔

## بطرز سیاست اصلاح پر ضروری تنبیہ

فرمایا کہ اشرف السوانح حشود میں حضرت والا تھانویؒ کے اس طریق اصلاح بطرز سیاست کے متعلق ایک ضروری تنبیہ منقول ہے وہ یہ کہ ہر شخص اس طرز کے اختیار کا ہرگز اہل نہیں لہذا عام مصلحین اس کے اختیار کرنے کی ہرگز جرأت نہ کریں ورنہ کورانہ تعلید کر کے اپنا اور طالبین اصلاح کا بھی نام کریں گے۔

## مشائخ بھی اپنی اصلاح سے مستثنیٰ نہیں

فرمایا کہ حضرت تھانویؒ نے فرمایا کہ جو شیخ صاحب نظر صحیح ہو وہ بھی اپنے واسطے کسی شیخ کو تجویز کرے اپنے احوال خاصہ میں اسکی رائے پر عمل کیا کرے اپنی رائے سے عمل نہ کرے کیونکہ اپنی رائے میں ایک پہلو پر نظر ہوتی ہے اور دوسرے کی ہر پہلو پر نظر رہتی ہے اگر کسی کو دوسرا شیخ نہ ملے تو وہ اپنے چھوٹوں ہی سے مشورہ کر لیا کرے۔ جب مشائخ کے لئے میں ضروری سمجھتا ہوں کہ وہ بھی اپنا بڑا کسی کو بنالیں تو غیر مشائخ کے لئے تو بہت ہی زیادہ ضرورت ہے۔

## صحبت اہل اللہ اس زمانے میں فرض عین ہے

فرمایا کہ حضرت تھانویؒ فرماتے تھے کہ اس زمانے میں اہل اللہ کی صحبت کو میں فرض عین کہتا ہوں اور فتویٰ دیتا ہوں کہ اس زمانے میں اہل اللہ اور عامان حق کی صحبت اور ان سے تعلق رکھنے کے فرض عین ہونے میں کسی کو کیا شبہ ہو سکتا ہے؟ اور تجربہ سے معلوم ہوا کہ آج کل ایمان کی سلامتی کا ذریعہ صرف اہل اللہ کی صحبت ہے اس تعلق کے بعد بعضہ تعالیٰ کسی جلود کا اثر نہیں ہوتا۔

یہ چند باتیں احقر نے حضرت کی زبان مبارک سے جو سنی تھیں اُمتِ مسلمہ کے لئے مفید سمجھ کر ضبط کر دیں۔

حضرت کی رحلت سے ہم سب خدام کے قلوب میں ٹوڑ شینہ نگ کی طرح اچانک نور کی کمی محسوس ہوئی۔ اہل اللہ کے انتقال سے شعوری اور غیر شعور میں طور پر ہر خاص و عام کا قلب متاثر ہوتا ہے۔

حضرت والا سے احقر کا سنہ ۱۳۵۷ء سے تعلق تھا حضرت جو پور سے پھولپور تشریف لایا کرتے تھے اور اپنے اشعار عارفانہ حضرت شیخ پھولپوری رحمۃ اللہ علیہ کو بہت کیف سے سنایا کرتے تھے۔ اللہ تعالیٰ حضرت کے درجات کو ساتھ فسادۂ متنازعہ اعتبار کا مستاعداً بلند فرمائیں اور مجاہد پسماندگان کو صبر جمیل عطا فرمائیں۔

تمام زندگی حضرت کی سرایا اس سوال کا جواب تھی کہ اہل اللہ کی صحبت سے کیا ملتا ہے۔ حضرت کے خلفا کی خاصیت تھی کہ اللہ تعالیٰ انکی مجالس ارشاد سے مخلوق کو استفادہ کی توفیق بخشیں اور شرف قبول عطا فرمائیں، جنازہ میں تقریباً تمام اکابر علماء اور طبیب اور علماء نیز علماء شہر۔ بادشاہ سے لے کر فقیر تک تقریباً ہر طبقہ کا آدمی شریک تھا حضرت عارف باللہ بزبان حال یہ شعر پڑھتے ہوئے منزل آخرت کی طرف عازم سفر ہوئے۔

۵ شکریہ اے قبر تک پہنچانے والو شکریہ

اب اکیلے ہی چلے جائیں گے اس منزل سے ہم  
حضرت شاہ مظہر جانِ جاناں رحمۃ اللہ علیہ انتقال سے قبل اپنے پسماندگان کی تسلی کے لئے اپنے روزنامہ میں یہ شعر تحریر فرما گئے تھے۔

۵ لوگ کہتے ہیں کہ مظہر مر گیا

اور مظہر درحقیقت گھر گیا

حضرت خواجہ صاحب کا یہ قطعہ بھی ایسے موقع پر یاد آتا ہے جو نہایت باعث عبرت

۵ ہے

یہ عالم عیش و عشرت کا یہ دنیا کی فـ وستی کی

بلند اپنا تخیل کر یہ سب باتیں ہیں پستی کی

جہاں دراصل دیرانہ ہے گو صورت ہے بستی کی

بس اتنی سی حقیقت ہے غریب خواب ہستی کی

کہ آنکھیں بند ہوں اور آدمی افسانہ بن جائے



اور اسی حقیقت کے ترجمان حضرت کے یہ دو شعر ہیں ۷

عاری زندگی افسانہ و رافسانہ ہے

صرف افسانوں کے عنوان بدل جاتے ہیں

ہم دیکھتے ہی رو گئے نیرنگ صبح و شام

عسrfانہ ساز گزرتی چلی گئی

حضرت عارف باللہ کی حسب ذیل تصانیف اُمت کے لئے باعث ہدایت اور حضرت کے لئے انشاء

اللہ تعالیٰ صدقہ جاریہ ہیں :

① اسوہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم۔

② مآثر حکیم الامت۔

③ مبصر حکیم الامت۔

④ معارف حکیم الامت۔

⑤ معمولات یومیہ۔

⑥ احکام مہیت۔

اللہ تعالیٰ خلق کو ان کتب سے استفادہ کی توفیق بخشیں یہ تمام کتابیں دراصل حضرت حکیم الامت کی

تمام تر تعلیمات کا خلاصہ ہیں۔

اللہ تعالیٰ احقر کے اس مقالہ کو شرف قبول بخشیں۔

احقر محمد اختر عفا اللہ تعالیٰ عنہ

۲۲ رجب ۱۴۰۶ء گلشن اقبال

کراچی

کہکشاں جیولرز

(درآمد کنندگان)

۲۔ بی۔ آمنہ مینشن روڈ لیاقت آباد کراچی ۱۹۔

• حضرت مولانا مفتی رشید احمد صالک دہلوی

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

حضرت ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا جب نام لیا تو زبانِ دامت برکاتہم کہنے کو سبقت کر رہی تھی، اچانک خیال آیا کہ وہ تو وطن جا چکے ہیں، لیکن اگر کوئی شخص خود تو چلا گیا، اور اس کے فیوض و برکات دنیا میں جاری ہیں اور مخلوق ان سے نفع اٹھا رہی ہے تو کیا پھر بھی اس کے لئے دامت برکاتہم کا دعائیہ جلاستعمال نہیں کر سکتے؟ اللہ تعالیٰ ان اکابر کے فیوض و برکات کو قیامت تک کے لئے باقی رکھے، آمین۔

انہی کے نقش قدم پر جو یا خدا حبیبنا

ویرحمہ اللہ عبدًا یقول آمینا

گذشتہ کل حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے مکان پر تعزیت کے لئے پہنچا تو بڑے صاحبزادے اور چھوٹے صاحبزادے دونوں تو موجود تھے، ڈاکٹر احسن عباس نہیں تھے، وہ اپنے مطب میں تشریف لے جا چکے تھے، تعزیت کے بعد خیال آیا کہ ان کا بھی حقِ محبت ادا کرنا چاہیے اس لئے میں ان کے مطب چلا گیا انہوں نے فرمائش کر دی کہ حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے حالات پر دارالعلوم سے نمٹ رہے ہوں گے واللہ، آپ بھی اس میں کچھ نکھیں، یہ فرمائش انہوں نے اس لئے کی کہ وہ یہ جانتے تھے کہ حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ کا میرے ساتھ بہت ہی گہرا، بہت ہی شفقت و محبت کا تعلق تھا، میرا معمول یہ ہے کہ میرے سامنے بہت سے

اکابر شیوخ اور اساتذہ وطن آخرت چلے گئے مگر میں نے آج تک کسی کے حالات نہیں لکھے، یا جو دیکھ حالات لکھنے پر روائشیں بھی کی گئیں، وجہ اس کی یہ ہے کہ ان اکابر اور بزرگوں کا مقام اتنا بلند ہے کہ ہمارے وہم و گمان سے بھی بالاتر ہے۔ جب ہم اظہار عقیدت و محبت میں ان کے حالات بیان کریں گے تو ہم اپنی سمجھ اور اپنے ذہن کے مطابق بیان کریں گے، جبکہ ان کا مقام اس سے کہیں زیادہ بلند ہوگا، تو سننے والا یہ خیال کریگا کہ ان کا مقام بس اتنا بلند ہے جتنا بیان کیا گیا ہے حالانکہ ہم نے تو صرف ایک بڑے ہزار حصہ بیان کیا ہے، تو ان کے حالات بیان کرنے میں بظاہر تنقیص ہو جائے گی۔ اس لئے میں سکوت اختیار کرتا ہوں۔ مگر ڈاکٹر احسن عباس صاحب کی فرمائش ایسی نہیں ہے کہ اسے ٹھکرایا جاسکے، اسے تو پورا کرنا ہی پڑے گا۔

حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے حالات اس لئے بتا رہا ہوں تاکہ کوئی اہل قلم اس مضمون کو صحیح انداز میں درست کر کے صحیح عنوان دیکر لکھے تو شاید کسی کو اس سے نفع پہنچ جائے۔ بہر حال! تعیل کیلئے کچھ بتا دیتا ہوں پہلی بات یہ ہے کہ حضرت ڈاکٹر محمد رحمۃ اللہ علیہ پر تعلق مع اللہ اور آخرت کے شوق کا غلبہ وہ چیزیں تھیں جو اکثر مجلس میں سامنے آتی تھیں۔

حضرت مفتی محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ آخری عمر میں اکثر بیماریاں بردہ کرتے تھے، ایک مرتبہ میں اور حضرت ڈاکٹر صاحب ملاقات کے لئے حضرت مفتی صاحب کی خدمت میں گئے، باتوں باتوں میں مفتی صاحب فرماتے گئے: ہر وقت یہ الجھن سوار رہتی ہے کہ وطن جانے کا وقت کب آئیگا؟ دنیا سے رخصت ہونے کا وقت کب آئے گا؟ انتظار ہے کہ وقت کب آئے گا؟ حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے ہنس کر فرمایا: یہ فکر جانے دیجئے۔ جب وقت آنا ہوگا آپ ہی جانیگا شکر کرنے کی کیا ضرورت ہے؟

مجھے سن کر بڑا مزہ آیا کہ شوق وطن ہو تو ایسا ہو اور اللہ تعالیٰ سے تعلق ہو تو ایسا ہو۔ اگر دنیا میں ہیں تو بھی ان کی میت حاصل ہے اور اگر اللہ تعالیٰ وہاں بولیں گے، تب بھی ان کی میت حاصل ہو جائیگی۔

وفات سے ڈیڑھ دو مہینے پہلے حضرت ڈاکٹر صاحب نے ایک شعر پڑھا تھا، جس سے ان کی حالت کا اندازہ ہوتا ہے۔ فرمایا:۔

فنا کیسی بہت کیسی جب ان کے آشنا ٹھہرے

کبھی اس گھر میں اٹھتے، کبھی اس گھر میں جا ٹھہرے

اس سے حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا مقام معلوم ہوتا ہے۔ یعنی کیا فنا، کیا بقا، جب ہمیں

ان کی محبت حاصل ہے۔ جب ہمیں ان کے ساتھ محبت کی دولت عطا فرمائی ہے۔ تو بچہ چاہیے وہ اس گھر میں ٹھیرائیں یا اس گھر میں ٹھیرائیں۔ جہاں ان کی مرضی ہو وہاں ٹھیرائیں۔ بس ہمیں تو جب ان کی محبت حاصل ہے تو بچہ ہمارے کچھ پرواہ نہیں۔

دنیا میں جنت کا مزد پانے والے حضرات کی حالت ایسی ہوتی ہے، یہیں ان کو جنت کی نعمتیں اس کی علالت اور لذت حاصل ہو جاتی ہیں۔

## حضرت ڈاکٹر صاحب کے مکارم اخلاق

دارالعلوم کے قیام کے زمانہ میں ایک مرتبہ پانچ چھ ماہ کی میری بچی سخت بیمار ہو گئی، اور بے ہوش ہو گئی، برنس روڈ پر ایک ایلیمنٹی ڈاکٹر بہت مشہور تھے، حضرت مفتی محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے ساتھ ان کے گھر سے تعلقاً تھے، حضرت مفتی صاحب نے ان کے نام ایک پرچہ لکھ دیا کہ یہ تشریف لے رہے ہیں، ان کی بچی کا علاج توجہ سے کریں۔ جب میں ان کے مطب پہنچا اور حضرت مفتی صاحب کا پرچہ ان کو بھیج دیا، مگر انہوں نے کوئی توجہ نہیں کی۔ اور ہنسی کی حالت خراب ہو رہی تھی اور دوسرے مریض بھی بچی کی حالت کو دیکھ کر ڈاکٹر صاحب کہنے لگے کہ ان کی حالت زیادہ خراب ہے۔ آپ پہلے ان کو دیکھ لیں، مگر ڈاکٹر صاحب تو اپنے گھمنڈ میں تھے۔ توجہ ہی نہیں کر رہے تھے۔ حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحب کا مطب ان دنوں برنس روڈ ہی میں تھا، میں نے سوچا کہ یہ تو دیکر رہے ہیں، اس سے ذرا حضرت ڈاکٹر صاحب کو دکھا دوں ہم لوگ گاڑی میں بیٹھ کر سیدھے حضرت ڈاکٹر صاحب کے مطب پہنچے۔ حضرت ڈاکٹر صاحب نے مطب ہی سے ہمیں دیکھ لیا اور ابھی ہم گاڑی سے اترنے بھی نہ پائے تھے کہ حضرت ڈاکٹر صاحب مطب سے نکل کر فوراً گاڑی کے پاس آگئے اور پوچھنے لگے، کیا بات ہے؟ کیا بات ہے؟ میں نے بتایا کہ بچی کا یہ حال ہے، تو اسی وقت فوراً دوا دی، اور ساتھ ساتھ بہت سی دعائیں بھی دیں۔

یہ ہیں مکارم اخلاق اور ان کی شفقت و محبت کا حال۔ تو ایک طرف تو اس ڈاکٹر کا حال دیکھنے کہ حضرت مفتی محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے اس کا خاص تعلق اور حضرت مفتی صاحب کے سفارشی خط کے باوجود یہ حال، اور یہاں یہ حالت۔ اللہ تعالیٰ ان کے درجات زیادہ سے زیادہ بلند فرمائے اور رحمت کی بارشوں سے نوازے۔ آمین۔

میرا معمول ہے کہ میں ہومیوپیتھک کی اکثر دوائیاں اپنے پاس رکھتا ہوں۔ جہاں کوئی بچہ بیمار ہوا تو



اگر خود کوئی دوا سمجھ میں آئی تو دیدی، ورنہ حضرت ڈاکٹر صاحب کو فون کر کے پوچھ لیا کہ کیا دوا دینی چاہیے وہ ٹیلی فون پر بتا دیتے۔

دارالعلوم کے قیام کے زمانے میں کئی بار ایسا ہوا کہ آدھی رات کو بچے کی طبیعت خراب ہوئی اور فوراً کوئی دوا دینے کی ضرورت ہوئی اور میں نے حضرت ڈاکٹر صاحب کو فون کیا اور یہ سوچا رہا کہ سب سے پہلے معذرت کروں گا کہ حضرت رات کے وقت آپ کو بے آرام کیا، مگر کیا کرتا۔ آپ کی شفقت نے ہمیں ایسا کر دیا ہے، اور بچے کی حالت بہت خطرناک ہے، تو یہ تمہیں سوچا رہا کہ پہلے اس طرح معذرت کروں گا، مگر جیسے ہی حضرت ڈاکٹر صاحب نے ٹیلی فون اٹھایا اور میں نے التماس کی کہ، اور معذرت پیش کرنے سے پہلے ہی حضرت نے فرمایا: کوئی بات نہیں، گھبرانے کی کوئی بات نہیں، پوچھو کیا بات ہے؟ تو حضرت میرے ساتھ ایسی شفقت فرماتے کہ معذرت کا موقع ہی نہیں دیتے تھے۔

یہیں کا واقعہ ہے کہ ایک مرتبہ گھر میں سخت تکلیف ہو گئی اور سردی کا موسم، رات دو بجے کا وقت، ایک دوست کو بلایا کہ آپ گاڑی لے آئیں۔ ہسپتال چلتے ہیں، وہ گاڑی لے آئے اور گھر میں یہ کہہ رہی تھیں کہ میں مر رہی ہوں، کوئی دوا میرے منہ میں ڈال دو، تو میں نے لاسوچے سمجھے ہو میو پیٹھک کی ایک دوا ان کے منہ میں ڈال دی۔ تاکہ ذراطمینان ہو جائے۔ ابھی دوا حلق میں بھی نہیں گئی تھی، منہ میں ہی لکھی کہ اسی وقت فوراً کہنے لگیں کہ میری جان بچ گئی، اب ہسپتال کا ارادہ چھوڑ دو، اور حضرت ڈاکٹر صاحب کے پاس چلنا چاہتے، پھر میں ان کو لیکر تو نہیں گیا، بلکہ خود ہی چلا گیا، اس وقت ڈاکٹر صاحب اوپر کی منزل میں رہتے تھے، سردی کا موسم تھا، جب میں نے ان کے یہاں پہنچ کر گھنٹی بجائی اور بتایا کہ میں ہوں، تو آدھی رات کے وقت سردی کے موسم میں اس عمر میں چادر اوڑھے ہوئے خود ہی چلے آئے اور پوچھا: کیا قصہ ہے؟ میں نے بتایا کہ یہ بات ہے، فرمایا: کہ جس دولہے فائدہ ہوا ہے وہی دوا دیتے رہیں اور پھر دعا فرمائی۔

حضرت ڈاکٹر صاحب کا یہ معمول تھا، بینک کے قوت تھی کہ ایک مہینہ سے زیادہ گزرنے نہیں پاتا کہ وہ میسر یہاں تشریف لاتے۔

یہ ہیں مکارم اخلاق اور چھوٹوں کے ساتھ شفقت اور محبت کرنا، اور تعلقات کو اس طرح سے نبھانا، دوسروں کے خاطر محنت اور مشقت برداشت کرنا، یہ چیزیں دنیا میں ایسی ہی ملتی ہیں۔

**آپ کی ہمت** | ابھی وقت سے چند روز پہلے جب بیماری شروع ہوئی تو ایسی بیماری میں اتنی عمر میں

دارالعلوم میں ختم بخاری میں شرکت کے لئے تشریف لے گئے۔ اس بیماری کی حالت میں اتنا بیمار کرنا، یہ ہمت کی بات ہے۔

آخر عمر میں میں نے کئی بار عرض کیا کہ پھڑکی لیا کریں۔ جب کہ آخری چند مہینوں میں دوم تہہ گرے بھی اور چوٹ بھی آئی۔ مگر یہی جواب دیتے کہ ساری عمر تو بے پھڑکی کے گزار دی۔ اب پھڑکی لیتے اچھا محسوس نہیں ہوتا، شرم معلوم ہوتا ہے۔ یا کبھی آپ بیٹھے ہوتے، اور اٹھنے کا ارادہ فرماتے، میں نے کہا، کریں ذرا اٹھا دوں، فرماتے، نہیں، نہیں، میں خود اٹھ جاؤں گا، پھر ایک دم اٹھ کر ایسے چلتے پھرتے جیسے کوئی تکلیف ہی نہیں ہے۔ ہمت سارے کام کر دیتی ہے۔ اس لئے حضرت ڈاکٹر صاحب ہمیشہ ہمت سے کام لیتے تھے۔ اللہ تعالیٰ ان کے درجات بلند فرمائے۔

### معاملات میں انصاف

یہ واقعہ حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے خود ہی سنایا تھا کہ ایک تہہ اپنے صاحبزادے کی گاڑی پر جا رہے تھے، راستہ میں دوسری گاڑی کے ساتھ ایکسڈنٹ ہو گیا، سب لوگ تو کہنے لگے: کہ دوسری گاڑی والے کا قصور ہے، اس سے ہرجانہ وصول کرنا چاہئے۔ لیکن حضرت ڈاکٹر صاحب نے رپورٹ لکھوانے والے سپاہی سے کہا: بھائی صاف معاملہ یہ ہے کہ میسرے بیٹے کا قصور ہے، لوگ تو یہ کہہ رہے تھے کہ حضرت ڈاکٹر صاحب کے تعلقات بہت وسیع ہیں، اگر کسی کو اشارہ کر دیتے، کہ معاملہ ایسا نہیں ہے اور اپنے بیٹے کی طرف داری کر دیتے تو دوسرے سے سارا نقصان کا ہرجانہ وصول ہو جاتا، مگر آپ فرما رہے ہیں: نہیں، نہیں، میسرے بیٹے کا قصور ہے، اس پر سزا دے دو، وہ الگ بات ہے، مگر قصور میرے بچے کا ہے، اتنا انصاف کا معاملہ آپ نے فرمایا۔

ایک قصہ ان کے صاحبزادے ڈاکٹر حسن صاحب نے سنایا کہ ہمارے رشتہ داروں میں دو آدمیوں میں جھگڑا تھا، انہوں نے حضرت ڈاکٹر صاحب سے کہا کہ آپ فیصلہ فرمادیں۔ آپ نے فیصلہ فرمایا، وہ فیصلہ جس کے خلاف پڑا وہ آپ کا بہت مخالف ہو گیا، اس نے آپ کی بے ادبی کی اور گستاخی کی، اور بہت برا بھلا کہا۔ میں نے اس پر کہا: میرا معمول یہ ہے کہ میں کبھی فیصلہ کرتا ہی نہیں، ایک بار جب میری عمر ۲۰ سال تھی، اس وقت میں نے اپنے رشتہ داروں کے درمیان ایک فیصلہ کیا تھا، جس کے خلاف وہ فیصلہ کیا، وہ میرا مخالف ہو گیا، اور مجھے برا بھلا کہنے لگا، اس وقت سے میں نے ہمیشہ کے لئے توہ کر لی کہ آئندہ کبھی فیصلہ

نہیں کروں گا

اس پر ان کے صاحبزادے نے بڑی عجیب بات بتائی کہ حضرت ڈاکٹر صاحب فرمایا کرتے تھے کہ میں نے فیصلے کئے ہیں، فیصلہ کروں یا ہوں، کرتا ہوں گا، فیصلے کی وجہ سے کوئی میرا مخالف ہو کر مجھے برا بھلا کہے، مجھے اس کی کوئی پرواہ نہیں، الحمد للہ! پانچ منٹ کے اندر اندر میرا دل صاف ہو جاتا ہے، اور مجھے یاد بھی نہیں رہتا کہ کسی نے مجھے برا بھلا کہا تھا، یا نہیں۔

کتنی بڑی ہمت کی بات ہے کہ کوئی مستعد یا مرید ہو، رشتہ دار ہو یا غیر ہو، مگر فیصلہ عین شریعت کے مطابق فرماتے۔ چاہے کوئی راضی رہے یا ناراض ہو جائے۔ اس پر حضرت ڈاکٹر صاحب کا سنایا ہوا ایک شعر یاد آگیا جو کسی بار حضرت سے سنا۔

دریائے فراہاں نہ شود تیرہ برسنگ

عارف کہ بر نہجد تنگ آب است ہنوز

یعنی جس طرح دریا میں پتھر پھینکیں، غلاطیس ڈالیں، اس میں کوئی تغیر پیدا ہی نہیں ہوتا، اسی طرح جو مجھ معنی میں عارف ہوتا ہے، وہ اللہ تعالیٰ کی محبت اور محبت کا دریا ہوتا ہے۔ اس کی تعریف کیجئے، یا اس کو برا بھلا کہاجئے، اس میں ذرا بھی تغیر نہیں ہوتا، اور اس کو ان چیزوں کی کوئی پرواہ بھی نہیں ہوتی۔ یاں اگر پانی تھوڑا ہو اس میں پتھر ڈالیں، تو پانی گدلا ہو جائے گا، اسی طرح کوئی شخص اپنے کو عارف کہے، اور اس میں کسی کی ذرا سی بات سے تغیر پیدا ہو جائے، رنج پیدا ہو جائے، وہ حقیقت میں عارف نہیں ہے۔

حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ حقیقی معنی میں عارف تھے، لوگوں کے ناراض ہونے اور برا بھلا کہنے سے ان پر کوئی اثر نہیں ہوتا، اسی لئے فرمایا کرتے تھے کہ جو دوست ناراض ہو جاتے ہیں اور برا بھلا کہنے لگتے ہیں ان کا اثر پانچ منٹ سے زیادہ نہیں رہتا۔ پانچ منٹ کے بعد مجھے یاد بھی نہیں رہتا کہ کس نے مجھے کیا کہا تھا، اور کیا نہیں کہا تھا۔

چھوٹوں کے ساتھ شفقت و محبت اور آپ کی تواضع و انکساری

حضرت ڈاکٹر صاحب اپنے چھوٹوں کے ساتھ بڑی شفقت اور محبت کا معاملہ فرمایا کرتے تھے، اور آپ کی تواضع اور انکساری بھی انتہا درجہ کی تھی۔ چنانچہ ایک مرتبہ میں حضرت شاہ عبدغنی صاحب بھولپوری رحمۃ اللہ علیہ

کی خدمت میں حاضر تھا کہ حضرت ڈاکٹر صاحب تشریف لے آئے، میں نے اٹھ کر مصافحہ کیا فرمایا: صرف مصافحہ نہیں، بلکہ معافہ کریں گے۔ کہاں میں، اور کہاں حضرت ڈاکٹر صاحب کا مقام اور پھر اس بے تکلفی اور محبت سے پیش آنا، انتہائی درجہ کی تواضع ہے۔

ایک بار یہاں تشریف لائے، معافہ فرماتے ہوئے کہنے لگے، کچھ اپنے دل سے بارے دل میں داخل کر دیجئے، میں نے عرض کیا: حضرت! جس طرف نشیب ہوگا، اس طرف خود ہی آجائے گا۔ تو اس طرح اپنے چھوٹوں سے کہنا کہ کچھ دیدیجئے۔ اعلیٰ درجہ کی انکساری ہے۔

ایک بار حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے پوتے کی سادی پر دعوتِ ولیم میں مجھے بلایا، میں جیسے ہی حاضر ہوا تو وہ بہت خوش ہوئے اور بہت ہی مستی کا اظہار فرمایا اور اس کے ساتھ یہ بھی فرمایا کہ جو آپ یہاں تشریف لائے ہیں، یہ مجھ پر احسان کیا ہے۔ اور یہ احسان میں مدتِ عمر گنتی نہیں بھولوں گا۔ ایسے الفاظ سے چھوٹوں کی دلجوئی کرنا اور محبت و شفقت کا معاملہ کرنا اور ایسی تواضع اور انکساری کی مثالیں نہیں ملتیں۔

آخر میں پھر وہی شعر ۷

انہی کے نقشِ قدم پر جو یا خدا جیسا

ویرحمہ اللہ عبداً یقول آمینا

اللہ تعالیٰ حضرت کی کامل مغفرت فرمائیں اور ان کو مقامِ عالیہ میں اپنا قرب عطا فرمائیں، آمین۔

تعلقاتِ زندگی کے ساتھ رہتے ہیں لیکن ان کو بھی بہت ہی غم دہی تعلقات پر افسوس و تڑپ محسوس ہوتی ہے۔ غیرہ دہی تعلقات خواہ اعتدال و اقرب سے ہوں یا دور دست و اجنبات سے ہوں یا کاروباری زندگی میں ہوں کسی کسی درجے میں غم و پریشانی منہایت ہوتی ہے کیونکہ سب کا حق ادا کرنا محال و شرا ہو جاتا ہے۔ اس وجہ سے غم و تڑپ ہوتا ہے کیونکہ ایسے غیرہ دہی تعلقات میں اکثر نیٹے کسی حد تک دور سے رہنے کا توفیق نہ ہو۔ اور اگر کسی کی وجہ سے تو اس کو رنج و شکایت ہوتی ہے اور پھر جو یہ کہہ کر غم و تڑپ ہوتی ہے جو میں رسمی تعلقی اور دوستی رکھنے والے اکثر بیمار موت سے فائدہ اٹھاتے ہیں جن سے بعض وقت مالی نقصان اٹھانے پڑتا ہے یا عاقبت سوز و محالہ ہو جاتا ہے، یہ بھی یہی عبادت کرنا چاہیے۔

(از افاضاتِ عارفیہ)



جناب حضرت علی صدیقی

حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارف باللہ

حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارف باللہ نور اللہ مرقدہ  
مجدد الملت حکیم الامت حضرت مولانا مولوی محمد اشرف علی تھانوی قدس سرہ العزیز  
کے ممتاز خلیفہ مجاز بیعت تھے۔ اپنے پیر و مرشد کے مزاج شناس اور ان کی تعلیمات کے  
اہلین تھے۔ حضرت والا کو مجد الملت کے موقوفات اُن ہی کے الفاظ میں یاد تھے۔ اور اپنی مجلس  
میں فرمایا کرتے ہمارے حضرت نے یوں فرمایا۔ یوں فرمایا۔۔۔

ایک بار حضرت والا نے احقر سے فرمایا کہ ہمارے حضرت اپنے وقت کے مجدد تھے۔  
اور اب تک جتنے مجدد ہوئے ہیں سب سے زیادہ مشقت حضرت والا نے برداشت کیں۔  
ہمارے حضرت ایسے وقت میں مجدد ہوئے جب سب سے زیادہ بگاڑ ہر گھر میں عام تھا۔  
جائز ناجائز کا اہتمام ہی نہ تھا۔ ہمارے حضرت نے ہی عقائد۔ عبادات۔ معاملات۔ معاشرت  
اور اخلاق کی بے مثل درستی فرمائی ہے۔

حضرت ڈاکٹر صاحب نور اللہ مرقدہ فرماتے ہر برے کام کو چھوڑنے میں اول اول  
بہت دشواری ہوتی ہے مگر ہمت اور اختیار سے برابر کام لیتا رہے تو رفتہ رفتہ دشواری  
مبدل سہولت ہو جاتی ہے اور گناہوں سے بچنے کی عادت پڑ جاتی ہے۔

ایک بار احقر سے حضرت والا نے فرمایا ہمارے حضرت بیسایا مجدد اب تک نہیں آیا۔  
ہمارے حضرت کی تعلیمات عجیب و غریب ہیں۔ زندگی کے ہر شعبہ میں کامل رہبری ملتی ہے۔

ایک مرتبہ فرمایا ہمارے حضرتؑ کے اسم مبارک کے ساتھ تحریر - تقریر اور بول چال میں مجدد الملت شامل کرنا اب بہت ضروری ہو گیا ہے۔

ایک مرتبہ احقر سے فرمایا مجدد الملت حکیم الامت حضرت مولانا مولوی محمد اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ العزیز کے مواعظ، ملفوظات اور دیگر تصانیف پڑھنے کے بعد ہماری کتاب اسوۂ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی اہمیت سمجھ میں آئے گی۔

ایک بار فرمایا میری تمام تصانیف میں میری یہ کوشش رہی ہے کہ حضرت مجدد الملت حکیم الامت کی نعمت لیا شامل رہیں۔ اپنی تصانیف میں میں نے حضرت کی تعظیم کو آجا کر کیا ہے۔ ایک مرتبہ احقر سے فرمایا اسبکل حالات تیزی سے بگڑ رہے ہیں۔ حضرت کے ملفوظات پڑھاؤ۔ عشاء کے بعد شراطیب بھی روزانہ پابندی سے پڑھاؤ امن میں رہو گے۔ ہم بھی روزانہ پڑھتے ہیں۔

حضرت دالامحبت و شفقت کے پیکر عظیم تھے احقر پر اور احقر زادہ پر بہت شفقت فرماتے۔ فرماتے میں تم سے اپنے گھردلوں کی طرف محبت کرتا ہوں۔ احقر کا قیام مکہ مکرمہ میں تھا۔ فرمایا کبھی تمہارے خطوط آنے میں دیر ہو جاتی ہے ہمیں انتظار رہتا ہے اب جب تم چھٹی گزار کر واپس جاؤ تو اپنے ہتھ کے لفافے ہم کو دے جانا جب تمہارے خط میں معمول سے زیادہ دیر ہوگی ہم خود خط لکھ دیا کریں گے۔

حضرت والا نے ازراہ شفقت اور احقر کا دل رکھنے کے لئے ہدیہ لانے کی اجازت مرحمت فرما رکھی تھی۔ حضرت فرماتے تھے مجھے بچپن سے ہی بڑیا قلم اور بڑھا گھڑی کا شوق ہے ہمارے حضرت دالابہت حسین و جمیل تھے ایک مرتبہ نہایت صاف سُستمرے کپڑے پہنے ہوئے تھے احقر سے فرمایا یہ کپڑے تم ہی لائے ہو۔ مجھے کپڑے بنوانے کی ضرورت ہی نہیں ہوتی۔ یہ اس قدر محبت بھرے الفاظ میں فرمایا کہ احقر کے آنسو بے اختیار جاری ہو گئے۔ حضرت والا نے فوراً بات کا رخ بدل دیا۔

احقر زادہ عظمت علی صدیقی جو معودی عرب میں ایک امریکن کمپنی میں منیجر ہیں ان پر اس قدر شفقت اور محبت تھی کہ خطوط اور تحریروں میں نور چشم راحت جان طول عمرہ وغیرہ

تقریر فرماتے ہیں۔ حضرت والا نے ایک بار احقر زادہ کو نصیحت فرمائی کہ اپنی اہلیہ اور بچوں کا بہت خیال رکھا کرو۔ عورت کی مثال کا پنچ جیسی ہے۔ بہت احتیاط اور محبت کا برتاؤ کرنا چاہیے اور اور عورت بھی خیال رکھے کہ اگر کا پنچ میں بال پڑ جائے تو بیکار ہو جاتا ہے۔ لہذا عورت کو گھر کے کاموں میں گہری دلچسپی لینا چاہیے۔ بچوں کی تربیت اور دینداری اور تعلیم کا بہت خیال رکھنا چاہیے۔ ایک بار فرمایا جب تم گھر سے باہر جایا کرو تو گھر سے نکلنے وقت پڑھ لیا کرو۔ بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ۔ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ۔ اَسْتَعِیْزُ بِاللّٰهِ مِنْ كُلِّ دُئْبٍ وَآتُوبُ اِلَيْهِ۔ وَافْوُضْ اِلَى اللّٰهِ۔ اس کے پڑھنے سے تمہاری بیوی بچوں کی اور خود تمہاری حفاظت رہے گی۔ حضرت والا کی توجہ کا ایک اثر یہ بھی ہے کہ یہ جب بھی کسی ڈنرو وغیرہ میں شریک ہوتے ہیں تو اسلامی شعار کو قائم رکھتے ہیں مثلاً داہنے ہاتھ سے ہی کاٹنا اور داہنے ہاتھ سے ہی کھانا۔

حضرت والا کی شفقت کا یہ عالم تھا کہ کوئی حضرت کے متعلقین میں سے حج کو جاتا تو احقر کے نام خط تحریر فرماتے۔ اور اس شخص سے فرماتے نصرت سے ملنا تم کو صحیح رہبری سہولت اور آرام ملے گا۔ جب حضرت کے متعلقین عمرہ یا حج کو جاتے تو واپسی پر دریافت فرماتے نصرت سے ملے تھے اگر کوئی صاحب احقر سے نہیں مل پاتے تو فرماتے تعجب ہے تم نصرت سے نہیں ملے۔

ایک مرتبہ احقر سے فرمایا تم اپنے مبشرات اور خواب مکھ کر مجھے دو جن میں سے چند درج ذیل ہیں۔



بَشَارَاتُ نِعْمَتِ عَظْمٰی  
شَرَفِ قُبُولِیَّتِ

اَسْوۃُ رَسُوْلٍ کَرِیْمٍ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

محبت صادق جناب نصرت علی صاحب مدنی مقیم مکتہ المومنین حسب ذیل بشارت نامہ

حضرت ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب مدظلہ کو مدینہ طیبہ سے تحریر فرمایا ہے۔

۲۱، رمضان المبارک ۱۳۹۶ھ کو احقر نے حضور دالاکے کتاب "اُسوۂ رُؤل اکرم صلی اللہ علیہ وسلم" میں دربار رسالت کتاب صلی اللہ علیہ وسلم مواجد شریف میں پیش کی۔ احقر نے دیکھا کہ آنقبہ خود بہ نفس نفیس اپنی کتاب پیش کر رہے ہیں۔ آنقبہ اُسوقت سراپا نور نظر آ رہے تھے۔ چہرہ انور پر بشارت تھی سکون و اطمینان تھا قدرے مکاہٹ تھی جیسی کہ آنقبہ کے چہرہ انور پر رہتی ہے۔ ہر طرف نوری نور متاع عجیب منظر تھا صرف آنقبہ خوب اچھی طرح دکھائی دے رہے تھے۔ احقر کو محسوس ہوتا تھا کہ حضور پر نور صلی اللہ علیہ وسلم شفقت فرما رہے ہیں اور آنقبہ پوری طرح متوجہ ہیں۔

اس کے جواب میں حضرت والانے فرمایا:

"لاکھوں بشارتوں کا انعام عظیم ہے اس پر شکر ادا بھی ناممکن ہے مگر بجز بھی شکر ہی ادا کیا جائے۔ اللہ تعالیٰ مزید انعامات و بشارتوں سے ہمیشہ سرفراز فرماتے رہیں اور انکی اہمیت و قابلیت عطا فرماویں۔"

احقر کی دلی آرزو تھی کہ جامع المجددین حکیم الامت حضرت مولانا تھانوی قدس سرہ العزیز نور دیکھ لے۔ احقر نے ایک مرتبہ خواب دیکھا کہ عجیب ہی منظر ہے بہت دینر بہترین سبزہ دُور دور تک ہے اس پر ایک بہت ہی خوبصورت عایشان ٹم ٹم چل رہی ہے جسمیں کئی گھوڑے جتے ہیں یہ ٹم ٹم اس سبزہ پر چل رہی ہے اور جامع المجددین حکیم الامت حضرت مولانا تھانوی قدس سرہ العزیز نہایت ہی بھولے پن سے سوار ہیں۔ چہرہ انور نورانی ہے۔ عجیب کیفیت ہے سر مبارک کے بال کانوں تک ہیں۔ سفید کپڑے کی ٹوپی پہنے ہیں۔ یہ ٹم ٹم نہایت خوبصورت عالی شان نورانی محل کے کونہ پر پہنچی جو دودھ سے زیادہ سفید ہے جسکی تعریف کرنا ممکن نہیں۔ اس محل میں حضرت جامع المجددین حکیم الامت مولانا تھانوی قدس سرہ العزیز داخل ہو گئے احقر بھی ساتھ تھا۔

اس پر حضرت والانے یہ ارشاد فرمایا:

"ماشاء اللہ بڑا مبارک مقدر ہے الحمد للہ بشارت ہے حضرت کے ساتھ



قلبی تعلق اور فیوض و برکات روحانی کے جاری ہونے کے لئے۔“

احقر نے ایک اور خواب دیکھا کہ احقر کسی جگہ پر ہے پھر ایک پہاڑ آگیا احقر کے پیچھے اور بہت لوگ ہیں۔ احقر اس پہاڑی پر چڑھ گیا جو لوگ پیچھے تھے وہ بھی احقر کے ساتھ تھے پھر احقر پہاڑ کی چوٹی سے دوسری طرف نیچے اُترا تو سامنے بیت اللہ شریف تھا۔  
فرمایا: مبارک ہے۔

احقر نے ایک بار خواب دیکھا تھا کہ ایک طویل مضمون پڑھا جا رہا ہے معلوم ہوا کہ یہ مضمون پیر و مرثری حضرت مولانا مولوی محمد حبیب اللہ صاحب قدس سرہ العزیز کا ہے احقر بھی اس مضمون کو سن رہا ہے پھر معلوم ہوا کہ یہ مضمون جامع المجددین حکیم الامت حضرت مولانا مولوی اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ العزیز کا مضمون ہے اور احقر کے متعلق لکھا گیا ہے۔

فرمایا: انشاء اللہ تعالیٰ یہ خواب آپ کے حق میں بہت بشارت ہے

حضرت کے فیوض برکات کا ظہور ہوگا انشاء اللہ تعالیٰ۔

احقر جب سب سے پہلے ج کوگی تو احقر طواف کر رہا تھا اور اپنے دونوں ہاتھ اپنے جسم سے ملائے تھا تاکہ احقر کسی کو دھکا نہ لگے۔

حجرا سود کے قریب احقر نے سنا پیچھے سے آواز آرہی ہے معلوم ہوتا ہے کہ اس کے ہاتھ جو جسم سے ملے ہیں یہ شخص معذور ہے۔ یا مریض ہے پھر آواز آئی معلوم ہوتا ہے کہ کوئی بزرگ ہے۔ احقر آواز سن تو رہا تھا مگر التفات نہیں تھا احقر کا سارا دھیان طواف میں تھا جب احقر حجرا سود سے حطیم کے قریب پہنچا جہاں ہجوم کم تھا احقر کو دو لڑکے پندرہ سولہ سالہ کے نہایت حسین جمیل دکھائی دیئے جو احرام باندھے تھے اور احقر کی طرح ہاتھ جسم سے ملائے تھے ایک لمحہ کو احقر کو خیال ہوا کہ بچے بھی نقل کر رہے ہیں اور احقر ان کے بالکل ہی قریب پہنچ گیا۔ پھر وہ دونوں لڑکے ایک دم غائب ہو گئے۔ یہ واقعہ بیداری میں اور طواف کرتے وقت ہوا۔

فرمایا: ”معلوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے آپ کے اس ادب کے معاملہ کو

فرشتوں کے ذریعہ سے پسند فرمانا ظاہر فرمایا۔ مبارک ہو“

ایک مرتبہ احقر مدینہ المنورہ گیا۔ سلام پڑھتے ہوئے شریف پر پہنچی۔ باتیں بات کی کلائی میں شدید درد تھا۔ سلام پڑھنے سے آواز بہت بلند ہو جاتی تھی اور درد شدت سے تھا احقر کو خیال آیا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے دعا فرمانے کے لئے عرض کروں فوراً ہی خیال آیا کہ اگر درد اچھ ہو گیا تو احقر کا عقیدہ عرش پر پہنچ جائے گا اور اگر درد اچھا نہ ہوا تو کہیں عقیدہ پر اثر نہ پڑے ابھی یہ پورا خیال تک بھی نہیں آیا تھا کہ اس کی جگہ فوراً تیسرا خیال آ گیا کہ احقر کی حقیقت ہی کیا ہے۔ یہ دربارِ توبہ سے بڑا ہے اگر احقر کو نکال بھی دیا جائے تو یہ احقر کی خرابی ہے دربار کی شان تو بہت عالی ہے جو مجھ سے بھی بالا تر ہے۔ درد کی بے چینی میں زبان سے خود بخود نکلیا کہ یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میں آپ کو سلام عرض کرنا چاہتا ہوں اور احقر کے ہاتھ میں درد شدید ہے۔ اُسی وقت درد ختم ہو گیا احقر نے مزید دو روز اور قیام کیا مگر درد کا خیال تک نہیں آیا۔ تقریباً پندرہ سولہ سال ہو گئے بفضلہ تعالیٰ پھر کبھی درد نہیں ہوا۔ یہ سب کچھ بیدار میں ہوا۔ فرمایا: "الحمد للہ بڑی قبولیت کا شرف حاصل ہوا۔ اللہ تعالیٰ کا بڑا ہی عظیم فضل ہے۔ اور قابلِ صدمہ مبارکباد ہے۔ اللہم زد و فزد۔"

ایک مرتبہ احقر نے خواب میں دیکھا کہ احقر کہیں چلا جا رہا ہے پھر ایک پہاڑ پر چڑھ گیا احقر نے دیکھا کہ کچھ حضرات احقر کے پیچھے آرہے ہیں احقر پہاڑ کی پوٹی پر چڑھ گیا اور پھر مع اور لوگوں کے اترنے لگا کہ سامنے بیت اللہ شریف نظر آ رہا تھا۔ احقر نے کبھی بھی اس خواب کے طرف التفات نہیں کیا اور یہ خیال فوراً ہی آیا ایک چہرہ اسی کو بھی راستہ بتانے کے لئے بھیج دیا جاتا ہے یہی حال اپنا ہے۔

فرمایا: "ماشاء اللہ تعالیٰ یہ حالات قابلِ ہزار شکر ہیں اور اپنی نااہلیت کا احساس بہ مزید براں نعمت ہے جس سے ہمیشہ ترقی ہوتی رہتی ہے۔"

حضرت والا نے ایک بار احقر سے فرمایا کہ دعا خوب بیان کر کے مانگا کرو۔ یا اللہ میں فلاں چیز چاہتا ہوں میں تو اس کا اہل نہیں مگر آپ قادرِ مطلق ہیں آپ کی بڑی شان ہے مجھے اس کا اہل بنا کر مجھے یہ چیز عطا ہی فرمادیں۔ میں فلاں پریشانی میں مبتلا ہوں اپنی پریشانی خوب بیان کرے پھر وہ رو کر عرض کرے کہ آپ کے سوا میرا کوئی نہیں آپ ہی اسے دور

فرمادیں مزید فرمایا اس کا ہمیشہ خیال رکھنا جب دعا قبول ہو جائے تو دل و جان سے اللہ سبحانہ تعالیٰ کا شکر ادا کرنا۔ شکر ادا کرنے سے نعمت میں زوال نہیں ہوتا۔

ایک مرتبہ حضرت نے ازراہ شفقت اور دلجوئی کے فرمایا اگر کسی وجہ سے ہم اپنے گھر سے جانا چاہیں تو مکہ مکرمہ تمہارے ساتھ ہی رہیں گے۔ حضرت والا کی کیا شفقت اور محبت تھی۔ حضرت ہر وقت ہر موقع پر یاد آتے ہیں۔

ایک مرتبہ فرمایا ہر شخص کی صلاحیتیں جدا جدا ہوتی ہیں۔ اللہ سبحانہ تعالیٰ کو جسے جو کام لینا ہوتا ہے ویسی ہی صلاحیتیں عطا فرماتے ہیں۔ ہمارے حضرت سے مجتہد وقت کا کام لینا تھا ویسی ہی صلاحیتیں عطا فرمائیں۔ اور سب مجتہدین سے بڑھ کر صلاحیتیں عطا فرمائیں انشاء اللہ تعالیٰ ہمارے حضرت کا فیض ہمیشہ جاری رہے گا۔

حضرت والا کے تینوں صاحبزادگان بڑی بڑی خوبیوں کے مالک ہیں۔ پختہ عقائد، معاملہ کے بالکل صاف، حق گو۔ بڑے صاحبزادے جناب مکرمی و محی حسن عباس صاحب کے لئے حضرت فرماتے تھے ”حسن میں بہت خوبیاں ہیں“ ملنسار ہے۔ مزاج میں تحمل بہت ہے۔ انشاء اللہ تعالیٰ میرے بعد اپنے بھائیوں میں اتفاق اتحاد قائم رکھے گا۔

حضرت والا ایک دینی ادارہ کی سرپرستی فرماتے تھے۔ اساتذہ کی سیاست میں حصہ لینے سے حضرت والا بہت مغموم ہوئے اور حضرت کو خیال آیا کہ اس ادارہ کی سرپرستی سے کنارہ کشی فرمائیں۔ مگر شفقت کا یہ عالم تھا احقر سے فوٹا فرمایا کہ پھر یہ کہاں جائیں گے کہیں غلط راستہ پر نہ ہو جائیں۔ فوٹا معاف فرمادیا اور برابر شفقت اور محبت کا برتاؤ فرماتے رہے۔

ہمارے حضرت دارالعلوم کراچی کے صدر تھے۔ آپ کی وفات کے بعد حضرت مولانا مفتی محمد رفیع عثمانی صاحب دامت برکاتہم صدر اور حضرت مولانا محمد تقی صاحب دامت برکاتہم نائب صدر مقرر ہو گئے۔ دلی مسرت ہوئی۔ انشاء اللہ تعالیٰ دارالعلوم مجدد الامت حکیم الامت

حضرت مولانا مولوی محمد اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ العزیز کے مسلک پر چلتا رہے گا اور سالہ السبلاغ زیر سرپرستی حضرت مولانا فاروق القاسمی صاحب دامت برکاتہم جاری کریگا۔ آمین ثم آمین یا رب العالمین بحرمۃ سید المرسلین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم۔

۳۴۳  
حفظ ابرار الحق صاحب

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تمام تعریفیں اس ذات کے لئے ہیں جو ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ رہے گی، اس نے تمام کائنات کو وجود بخشا، وہ کسی کا محتاج نہیں سب اس کے محتاج ہیں وہ باقی ہے اور اس کے سوا سب کو قلاب ہے۔

اور درود و سلام اس ذات پر جس کو اللہ تعالیٰ نے سرایا رحمت بنا کر مبعوث فرمایا اور آپ کی آل پر اور آپ کے اصحاب پر جو کہ مظہر رحمت و شفقت بن کر نجوم بن گئے جو ہادی دہندین کے القاب سے نوازے گئے، اور بیکر صدق و صفا کہ انکو دیکھ کر خدا یاد آئے گا مصداق ہوئے۔

اور ان پر جو ان کے نقش قدم پر چل کر صراطِ مستقیم پر گامزن ہوئے اور دوسروں کے راہِ حق پانے کا باعث ہوئے۔

بعد حمد و صلوة کے

بندہ ابرار الحق بن الحاج اکاظم ریاض الحق صاحب مرحوم عرض گزار ہے کہ آج سے تائیں اٹھائیس سال قبل ۱۹۵۸ء تا ۱۹۵۹ء میں حضرت عارف باللہ مرشدی و مولائی و ملیجائی جناب ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارفی رحمۃ اللہ علیہ کے یہاں میں اپنے والد ماجد حضرت حافظ ریاض الحق صاحب مرحوم کے ساتھ حضرت



عارف باللہ کے مطب (واقع رابن روڈ) میں جایا کرتا تھا، بہت کم عمری تھی حضرت کی باتیں سننا تھا مگر سمجھ میں کچھ نہیں آتا تھا کہ یہ کیا باتیں کرتے ہیں؟ پس یہ جانتا تھا کہ یہ بزرگ (حضرت عارف باللہ) حضرت مولانا تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے خلفاء میں سے ہیں اور بہت بزرگ ہستی ہیں۔

میرے والد ماجد رحمۃ اللہ علیہ بزرگوں کی خدمت میں بہت حاضر باش تھے اور چونکہ حضرت والد صاحب مرحوم کا بچپن ہی سے حضرت مولانا تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے یہاں اپنی خالہ صاحبہ کے ساتھ (کیونکہ والدہ صاحبہ کا انتقال ہو گیا تھا) آنا جانا بہت کثرت سے رہتا تھا اور کئی کئی ماہ کا قیام کرنے کا موقع ملتا تھا اس لئے حضرت والد صاحب نے حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کو خوب دیکھا اور بہت فیض اٹھایا اس لئے دل میں یہ ہی فیصلہ کیا کہ میں اپنا اصلاحی تعلق حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ سے قائم کر دوں گا چنانچہ آپ جب ذرا جوان ہوئے تو آپ نے حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ سے بیعت کی درخواست کی اور وہ منظور ہوئی حضرت کے وصال کے بعد حضرت والد صاحب نے حضرت مولانا عبدالمجید صاحب پھراونی رحمۃ اللہ علیہ سے اپنا اصلاحی تعلق قائم کیا اور بعد میں حضرت والد صاحب انکے مجازین میں سے ہوئے غرض کہ

ستر و ع سے اس گھرانے میں حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کا سلسلہ رہا حضرت والد صاحب حضرت مولانا پھراونی رحمۃ اللہ علیہ کے وصال کے بعد حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے ان خلفاء کے پاس جو کراچی میں تھے یا باہر سے آتے تھے بہت کثرت سے جایا کرتے تھے اور میری یہ سعادت اور خوش بخشی تھی کہ حضرت والد صاحب مجھے اپنے ساتھ ضرور لے جاتے، ان میں حضرت عارف باللہ ڈاکٹر محمد عبدالمجید صاحب عارفی رحمۃ اللہ علیہ، حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب مفتی اعظم پاکستان، حضرت مولانا حبیب اللہ صاحب ضحاک (بہت ہنسنے والے) حضرت مولانا فقیر محمد صاحب بکار (بہت رونے والے) حضرت مولانا عبدالمفتی صاحب پھول پوری، حضرت مولانا عبدالحمن صاحب کیمبل پوری، حضرت مولانا محمد یوسف صاحب بنوری، حضرت حاجی عبدالغفور صاحب جوید پوری، حضرت مولانا مسیح اللہ خان صاحب، حضرت بابا نجم احسن صاحب نگرال وغیرہم رحمہم اللہ علیہم۔

میں حضرت والد صاحب کے ساتھ ان بزرگوں کے پاس بکثرت گیا ہوں اور خوب دعائیں ملی

ہیں۔

لیکن میرا کثرت سے تین جگہ جانا ہوا حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کے یہاں مطب میں بھی اور آپ کے دولت خانہ پر پاپوش نگر میں بھی اور حضرت مفتی محمد شفیع صاحب کے مکان واقع بسبیلہ پراور حضرت بابا

نجم احسن صاحب کے مکان ناظم آبادی پر بھی اسی اشار میں کچھ باتیں سمجھ میں آنے لگیں اور حضرت والد صاحب نے حکماً مجھے حضرت تھانوی رحمۃ اللہ کے مواعظ و ملفوظات پڑھوائے جن کی تعداد تقریباً دو سو ہوگی میں نے کہا تمام باتیں تو میری سمجھ میں نہیں آئیں فرمایا کہ تم پڑھتے رہو سمجھ میں آئیں یا نہ آئیں یہ تمہارا صرف پڑھنا بھی بہت کارآمد ہوگا جب وقت آئے گا اور جس مضمون کی ضرورت ہوگی وہ یاد آجائے گا اور آج کی پڑھی ہوئی باتیں کل تمہارے کام آئیں گی میرے لئے حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا فرمانا القائی معلوم ہوتا ہے آج انحمد للہ اس کا خوب مشاہدہ کرتا ہوں، حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے مواعظ و ملفوظات پڑھنے سے دل میں ایک خلش پیدا ہونے لگی، اور اپنی اصلاح کی فکر ہونے لگی وقت گزرتا گیا اور اس خلش میں اضافہ ہوتا گیا میں نے حضرت والد صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے عرض کیا کہ میں کس سے اپنا اصلاحی تعلق قائم کر دوں میرے سامنے دو ہستیاں تھیں حضرت پیر المرشد رحمۃ اللہ علیہ اور حضرت مولانا مفتی صاحب رحمۃ اللہ علیہ، حضرت والد صاحب نے فرمایا جہاں تمہیں مناسبت ہو وہیں رجوع کرو، چنانچہ میں بہت سوچ بچار کے بعد اس نتیجہ پر پہنچا کہ اگر حضرت عارف باللہ مجھے اپنے متوسلین میں داخل فرمائیں تو میری سعادت ہوگی، آخر میں نے ۱۳۸۶ھ ۱۹۶۶ء ربیع الاول میں حضرت والا سے بہت بہت کے بیعت کی درخواست کی کیونکہ ایک تو میری عمر ۲۶ سال تھی دوسرے حضرت کا رعب بھی غالب تھا، جب میں نے درخواست کی تو فرمایا کہ آتے رہا کرو کسی وقت بیعت کر میں گے مجھ سے سوال کیا بیعت کیوں ہونا چاہتے ہو میں نے عرض کیا اپنی اصلاح کے لئے، فرمایا کسی وقت کر لیں گے، میرے چند بار درخواست کرنے پر حضرت نے ایسا کرم فرمایا کہ مجھے چند دن بعد ہی، ربیع الثانی ۱۳۸۶ھ مطابق ۲۷ جولائی کو بعد نماز مغرب دولت خانہ بیت الاشرف پاپوش نگر میں اپنے دستِ حق پر چاروں سلسلوں میں بیعت فرمایا۔

ایں سعادت بزورِ بازو نیست

تانا بخشد خداے بخشنده

حضرت والا کی نگاہ کرم اس ناکارہ پرایسی پڑی رہی کہ حضرت والا نہایت دل سوزی سے اپنے علوم و معارف کے خزانے لٹاتے رہے اور وہ موتی عطا فرمائے کہ ہر ایک نے اپنی جھول اپنی دست کے مطابق بھری اور دامن کے ٹنگ ہونے کا احساس کرنے لگے کیونکہ خزانہ اصل و جواہر کے لا محدود ہیں، اور آپ نے شرابِ طہور

کے وہ جام لٹکھائے کہ ہر طرف اپنی وسعت کے مطابق بھری ہو گیا، اور اس نے روئیں روئیں کو سیرور کر لیا۔ اور سرمایہ دو جہاں کی دولت لازوال سے مالا مال ہو گیا ۵  
وہ تو وہ ہیں، تمہیں ہو جائے گی الفت مجھ سے

اک نظر تم مرا محبوبِ نظر تو دیکھو  
اللہ تعالیٰ نے حضرت والارحمۃ اللہ علیہ کو وہ مقام بلند عطا فرمایا جو مقامِ عارفی ہے۔  
۵ افر دختن و سوختن و جامہ دریدن

پر دانہ زمین شمع زمین گل زمین آموخت

آپ کی صحبت بابرکت کا لازمی یہ اثر تھا کہ اتباعِ سنت کا اس قدر اہتمام ہوتا کہ ناامیدی امید  
میں بدل جاتی ناکامی کامرانی میں بدل جاتی ۵

کوئے نو میدی مرد کامید باست

سوئے تاریکی مرد خورشید باست

اور اس صراطِ مستقیم پر اللہ کے فضل و کرم سے گامزن فرماتے کہ پھر کسی کی ہمت ہی نہیں ہوتی  
کہ کوئل اور راہ اختیار کرے اور اس کا حال اور قال یہ ہو جاتا ۵

خلافِ پیمبر کے رہ گزید

کہ ہر گونہ منزل نہ خواہد رسید

پندار سعدی کہ راہِ صفا

تو ال رفت جز در پے مصطفیٰ

آپ کے شفقت بھرے انداز ہی میں بیمار کو دوا مل جاتی اور اس کے مرض کو دور کرنے کے لئے  
ایسا شتر لگاتے کہ پتہ بھی نہ چلتا اور وہ مرض ہمیشہ کے لئے نیست و نابود ہو جاتا اور اس شخص کو اپنی اصلاح  
احوال اور درستی اعمال کی فکر لاحق ہو جاتی اسی میں کامیابی کی راہ پر گامزن ہو جاتا۔

آپ کس قدر پیارے انداز سے توجہ دلاتے جس میں جمال ہی جمال کی جھلک ہوتی شفقت ہی  
شفقت میں مرض کا علاج وافی فرماتے ایک واقعہ عرض کرتا ہوں کہ ایک مرتبہ میں حضرت والا  
رحمۃ اللہ علیہ کی خدمتِ اقدس میں بڑے سیر بدیدے کر حاضر ہوا میں نے عرض کیا کہ آج اتفاق سے

اچھے بیرل گئے تو دل چاہا کہ حضرت کی خدمت میں ہدیہ پیش کر دوں۔ حضرت نے فرمایا کہ بعض اتفاق کوئی چیز نہیں اتفاق کیا ہوتا ہے اللہ تعالیٰ کا فضل اصل چیز ہے کہ اللہ کے فضل سے اچھے بیرل گئے ہمیشہ کے لئے ایسی اصلاح فرمائی کہ بات کرنے کا ڈھنگ بھی بتلادیا اور دل جوئی ایسی فرمائی کہ اتباع سنت کا کامل نمونہ پیش فرمایا، فرمایا اس میں سے تمام حاضرین کو دو دو بیر دیدیہ تو جنت کے پھل ہیں اور پھر فرمایا ہمیں بھی ہمارا حقہ (یعنی دو) بیر دیدو حکم کی تعمیل میں دو بیر حضرت کو میں نے اپنے ہاتھ سے دیئے اور پھر حضرت نے وہ بیر دونوں لیکر اپنی جیب میں ڈال لئے، پھر میں نے حضرت والا سے عرض کیا حضرت آپ ہی اپنے دست مبارک سے مجھے بھی دیدیجئے حضرت نے دو بیر مجھے دیئے اور فرمایا باقی ہمارے قبیلے میں رکھ دو جس کو مزاحاً عمر عیار کی زمیل فرمایا کرتے تھے اور اس کے بعد مجھ اس قدر دعائیں دیں جو میرے لئے اور میرے متعلقین کے لئے دونوں جہاں کا بہترین سرمایہ ہیں۔

حضرت والا انوار کی ندیاں بہاتے اور لوگ اس میں غوطہ زن ہو کر تمام ناپاکیاں اور الاٹشیں دور کرتے اور اپنے ظاہر و باطن کو معنی و منزلت و منجما ہوا قلب لے کر باہر آتے، حضرت والا کے معطر انفاس کی خوشبو سے وافر حسدیتے کہ خود بھی مہکتے اور دوسروں کو بھی مہکاتے۔

حضرت والا کی تمام زندگی اتباع سنت سے عبارت تھی اور تمام لوگوں کو بھی یہ ہی تعلیم دی کہ اللہ تعالیٰ سے رشتہ جوڑنے اور حضرت جناب نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی تعلیمات پر عمل پیرا کرنے کے لئے ایسی کاوش کی کہ ایسے گلدستہ تیار کر کے جو اپنے رنگ و بو میں بالکل منفرد تھے بعد والوں کے لئے میراث چھوڑے ہیں کہ جو شخص بھی انسان بننا چاہے وہ ان گلدستوں کو حاصل کر کے ان پھولوں سے خوشبو حاصل کرے اور علوم معرفت کے نعل و جواہر سے جھولیاں بھر کر فیضیاب و کامیاب ہو۔

حضرت والا کو اللہ تعالیٰ نے سراپا جمال بنایا تھا ہمیشہ اپنے تعلق والوں کو رحمت اور جمال کے عنوان سے ہی دین سمجھاتے اور اسی میں اصلاح فرماتے، میں کبھی بھی کتنا ہی پریشان آپ کی خدمت بابرکت میں گیا اور اپنی پریشانی کا ذکر کیا آپ ایسے پرتاثر الفاظ سے اور اپنے دست شفقت سے ایسی تسلی دیتے کہ ذرا سی دیر میں تمام حیرانی اور پریشانی اور قلبی اضطراب ختم ہو جاتا اور یہ یقین ہو جاتا کہ یہ جو کچھ ہوا ہے اس میں کتنے فائدے ہیں ایک مرتبہ میں گیا کچھ انقباضی کیفیت کا ذکر کیا مسکرا کر فرمایا بھئی بھلی کا کھبا بنجاؤ نہ تکلیف ہوگی نہ پریشانی وہ کھبا بھی یچارہ سیدھا کھڑا رہتا ہے نہ اسے تکلیف نہ پریشانی پھر خوب مسکرانے



کے بعد فرمایا اس میں کتنے فائدے ہیں وہ مسلمان ہی کیا جو حضرت جناب نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی سنت پر عمل نہ کرے ارے یہ تو سب باتیں ہوں گی کبھی حیرانی کبھی پریشانی کبھی خوشی کبھی غمی اس قدر پیارے انداز سے سمجھایا کہ زخمی دل پر مرموم رکھ دیا اور فرماتے جو حالت بھی ہو اللہ تعالیٰ سے کہو اسی سے سب کچھ کہہ دیا کرو۔

حضرت والا جismanی مطب کے ساتھ ساتھ روحانی مطب میں بھی بے شمار پیاسوں کو سیراب فرماتے اور روحانی مطب ..... کے مریض بہ نسبت جسمانی مطب کے زیادہ تعداد میں آتے، بارہا مشاہدہ کیا بلکہ ہمیشہ مشاہدہ کیا حضرت والا اپنے روحانی مطب میں آنے والے مایوس سے مایوس مریض کو اپنے عارفانہ اور عقائد سلام سے جو پڑا ہوتا جو ٹھہرت سے پڑھتا یا اس کو آس میں بدل دیتے اور سرمایہ آخرت اس کی جھولی بھر دیتے کہ وہ سرمایہ آخرت کی لازوال نعمتوں کو لے کر شاداں دفرہاں لوٹتا۔

حضرت والا کی سادہ گفتگو مگر جادو اثر ہوتی کہ قلب کی کیفیت ہی بدل جاتی اور قلب و دماغ منور و محمور ہو جاتے، حضرت کی مجلس میں بیٹھ کر تمام خامیوں پر نظر جاتی اور حضرت والا ہی کی شان تھی کہ آپ کی مجلس میں ہر بیٹھنے والا یہ ہی محسوس کرتا کہ حضرت میرے ہی تعلق فرما رہے ہیں۔

جمعہ کی مجلس میں ایسا محسوس ہوتا کہ ہفتہ بھر کے دلزدہ دور ہو گئے اور مجلس کے اختتام پر طبیعت بالکل ہلکی پھلکی اور ہشاش بشاش ہوتی، حضرت بابا نجم احسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ بھی ہم سے حضرت والا صاحب کی نسبت سے بہت محبت فرماتے تھے فرمایا کرتے تھے تم میرے بیٹوں کی طرح ہو ایک مرتبہ کا واقعہ ہے کہ حضرت بابا صاحب رحمۃ اللہ علیہ ؒ کے ادائے میں حضرت والا صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی شام کی مجلس میں بہت دن کے بعد اشرف لائے (علالت کی وجہ سے شام کی مجلس میں آنا کم فرما دیا تھا) اس دن اللہ تعالیٰ کے فضل سے میں بھی حضرت والا صاحب کی مجلس میں تھا جب نماز مغرب کا وقت ہوا تو حضرت والا نے حضرت بابا صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے فرمایا کہ آج تو آپ موجود ہیں آج آپ ہی امامت فرمائیں (کیونکہ حضرت والا کی مجلس میں حضرت بابا صاحب اور ان کی عدم موجودگی میں حضرت والا صاحب نماز کی امامت فرماتے تھے) اس پر حضرت بابا صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا کہ ہمارے ساتھ تو امام صاحب موجود ہیں یہ نماز پڑھائیں گے اور یہ کہہ کر مجھ ناچیز کو حکم فرمایا چلو بیٹے تم نماز پڑھاؤ۔

”نامہ بخشہ خدا سے بخشندہ“

چنانچہ میں تبیل حکم میں آگے بڑھ گیا کیونکہ الامرفوق الادب اس دلی سے حضرت کے یہاں امانت کی کس سادت نصیب رہی اور حضرت امام صاحب کے الفاظ سے یاد فرماتے جو میرے لئے سرمایہ صدانتخار ہے اور حضرت والا دل جوئی کا اس قدر خیال فرماتے کہ اگر کبھی کوئی بڑے بزرگ عالم موجود ہوتے تو یہ نہیں فرماتے کہ فلاں شخص نماز پڑھائیں گے یا براہ راست ان سے فرمائیں کہ آپ نماز پڑھائیں بلکہ چپکے سے کان میں فرماتے کہ فلاں صاحب سے نماز پڑھا لینا۔

حضرت کی صحبت بابرکت میں حاضری برابر رہی ۱۹۵۵ء جولائی میں میں حج کے لئے جانے لگا تو میں سب سے ملا اور دعائیں لیں اس میں یہ واقعہ بہت اہم ہے کہ میں اشراق کے وقت حضرت بابا صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے پاس دعاؤں کے لئے اور الوداعی ملاقات کے لئے گیا جو حقیقت میں الوداعی ملاقات ہوئی کہ میرے چند دن بعد بابا رحمۃ اللہ علیہ کا انتقال ہو گیا۔

جب میں حضرت بابا صاحب کی خدمت میں پہنچا تو حضرت بابا صاحب اس وقت کمرے میں اکیلے تھے میں نے عرض کیا بابا میں حج کے لئے جانے والا ہوں ملاقات اور دعاؤں کے لئے حاضر خدمت ہوا حضرت بابا صاحب نے مجھے بہت نصیحتیں کیں اور حضرت والا صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا تذکرہ کرنے لگے اور اس قدر دعائیں دیں جو احاطہ سے باہر ہیں اسی اشار میں حضرت بابا جو لیٹے ہوئے تھے ان پر اس قدر رقت جاری ہوئی کہ خوب رونے لگے اور مجھے بھی رلایا اور لیٹے لیٹے ہی مجھے اپنے سینے سے چٹایا اور اس قدر اہمیت اور تاکید کے ساتھ فرمایا بیٹے ابراہیم بات کی نصیحت اور وصیت کرتا ہوں کہ تم ڈاکٹر عبدالحی کو معمولی آدمی مت سمجھنا یہ وہ بزرگ اور قابل قدر ہستی ہیں کہ اگر ان کے لئے میری جان کی بھی ضرورت پڑے تو میں اس واحد ہستی کے لئے جان دینے کے لئے بھی تیار ہوں بیٹے تم ڈاکٹر عبدالحی کی بے قدری مت کرتا اور ہمیشہ قدر کرنا اور پھر اس قدر دعاؤں کے ساتھ رخصت فرمایا جو میرے لئے سرمایہ سادت ہے، حضرت بابا صاحب کی اس نصیحت کے بعد میری آنکھیں اور بھی کھل گئی اور میں حضرت کی صحبت میں بہت کثرت سے جانے لگا یہاں تک کہ حضرت کی جمعہ کی مجلس کو میں نے اپنے لئے خاص طور پر فرض واجب کے درجہ میں ضروری قرار دیا اور ہر تقریب مجلس سے غائب ہو جاتا لیکن حضرت کی مجلس میں حاضر رہتا، ایک عجیب واقعہ ۱۳۹۹ھ

مطابق ۱۹۷۹ء میں ایک عجیب معاملہ ہوا ۲۶ رمضان المبارک ۱۴۰۰ھ کو میری اہلیہ کے پیٹ میں درد ہوا اور میں ایک دوست کے ہمراہ حضرت والارحمۃ اللہ علیہ کے مطب میں حاضر ہوا، حضرت دیکھ کر بہت خوش ہوئے اور فرمایا بہت اچھا ہوا کہ تم آگئے پھر ایک خادم سے فرمایا کہ ڈاک میں ڈالنے کیلئے جو خطوط دیئے ہیں وہ کہاں ہیں ان کا ایک خط ہے میں حیران ہوا کہ میں نے حضرت کو کوئی خط نہیں لکھا حضرت نے ان خطوط میں سے ایک لفافہ نکال کر مجھے دیا اور تاکید سے فرمایا اس کو یہاں نہ کھونا گھر جا کر کھونا، میں نے بڑے ادب سے لے لیا اور حجب میں رکھ لیا میرے ساتھ جو دوست تھے بہت بے تکلف تھے کہنے لگے حضرت نے اجازت نامہ دیا ہے میں نے کہا ہم اس لائق کہاں ہیں اور اسی شروع رمضان میں میں ایک خواب دیکھ چکا تھا کہ حضرت والارحمۃ اللہ علیہ اپنے مصلیٰ پر تشریف فرما ہیں میں اور میرے دو تعلق والے اور موجود ہیں عصر کی نماز کا وقت ہے میرے دو ساتھیوں میں سے ایک دوسرے ساتھی سے ٹھونکا مار کر چپکے سے کہہ رہے ہیں کہ تم نماز پڑھانا جیسے شایان کو معصوم ہے کہ میں حضرت والا کے یہاں نماز پڑھتا ہوں میں خاموش بیٹھا یہ منظر دیکھتا رہا جب حضرت والا نماز کے لئے کھڑے ہوئے لگے تو میں نے آپ کا ہاتھ پکڑ کر کھڑا کیا اور میں پیچھے صف میں آگیا اور حضرت والا اس طرح کھڑے ہوئے جیسے آج خود امت فرمائیں گے اور اپنا کرتہ ٹھیک کیا اور قیہ رو کھڑے ہو گئے، پھر ایک دم آپ ہماری طرف بڑے درجے فرمایا بھی تم نماز پڑھاؤ میں فوراً آگے بڑھا اور حضرت کا ہاتھ تعام لیا اور حضرت کو صف میں کھڑا کیا اور میں مصلیٰ پر چلا گیا اور نماز پڑھائی، صبح میں نے اہلیہ سے خواب بیان کیا اہلیہ کہنے لگیں کہ حضرت تمہیں اجازت دینے والے ہیں، میں نے کہا میں اس لائق کہاں ہوں، جب میں حضرت کے مطب سے وہ لفافہ لیکر گھر پہنچا تو میں نے کہا لو یہ تمہاری تعبیر حضرت نے لفافہ کی صورت میں دی ہے تمہیں کھولو جب اس کو کھولا تو اس میں حضرت والا کے دست مبارک سے عطائے نعمت کے عنوان سے تحریر مضمون تھا، چند ایام کے بعد مناسب موقع ہوا حضرت اکیلے مطب میں تھے میں نے خواب اور تعبیر اہلیہ کی بیان کی تو حضرت نے فرمایا الحمد للہ ہمارا فیصلہ درست ہے اور پھر استقامت کی اور فلان دارین کی اور خدمت کے شرف کی بہت دعائیں دیں۔

ہمارے حضرت اس قدر بے تکلف تھے کہ ہر بات کر لیتے تھے اور تنہائی میں تو بہت ہی راز و نیاز کی باتیں فرماتے اور یہ مواقع زیادہ تر مطب میں میسر آتے کہ حضرت کے سر میں تیل ماش کرنے کا

شرف بھی میں رہا ہے اور فیوض و برکات بھی، باتوں ہی باتوں میں کام کی باتیں بنا رہے ہیں بڑے بڑے معرفت کے عقد کھل فرما رہے ہیں، بے مد شغقت سے جب میں مطب میں جاتا تو دیکھتے ہی مصافحہ کا ہاتھ بڑھاتے اور ہاتھ پکڑ لیتے اور فرماتے بھی ہمارے سر پرست آگئے ہیں ذرا ہمارے سر میں تیل ڈال دیں ماش ہو رہی ہے نسخے تجویز ہو رہے ہیں، روحانی بیماروں کے علاج ہو رہے ہیں، نصیحتیں ہو رہی ہیں۔

حضرت اس قدر محبت فرماتے کہ اکثر آنے والوں کے سامنے بھی فرمادیتے کہ یہ ہمارا سر پرست ہیں اور مزاج بھی بہت فرماتے، ایک مرتبہ میں نے حضرت سے حسنت الابرار سیات المقرین کے کیا معنی ہیں سوال کیا اتفاق سے میرے برابر میں ایک نابینا خانہ بیٹھے ہوئے تھے حضرت نے سن کر بہت سنجیدہ ہو کر جو سنجیدگی بھی مزاج سے پڑتی تھی اسے حافظ صاحب سنئے یہ آپ کے برابر میں حافظ الابرار الحق بیٹھے ہوئے ہیں اور یہ کیا کہہ رہے ہیں حسنت الابرار سیات المقرین یہ بہت چالاک اور ہوشیار آدمی ہیں ساری حسنت اپنے مقدمہ میں نکالیں اور سیات سب آپ کے حقد میں لگا دیں ذرا ان سے دور ہو جائیے اور فرمایا تم بہت چالاک ہو سب اچھائیاں خود دے لیں اور ہمیں سیات دے دیں پھر خوب مسکرائے اور جب خوب مزاج فرما چکے تو فرمایا یہ مطلب ہے جو چند جملوں میں سمجھا دیا اور تسلی فرادی، اسی طرح ایک مرتبہ حضرت والا کے یہاں عید کے موقع پر میں نے عرض کیا حضرت آج ہم شیر خوار ہو جائیں حضرت کو یہ جملہ اتنا پسند آیا کہ ہر سال عید کے موقع پر جب احباب جمع ہوتے تو فرمایا کرتے کہ بھئی ہمارے حافظ الابرار الحق نے بڑی اچھی بات کہی کہ ہم آج شیر خوار ہو جائیں گے۔

اسی طرح میں نے ایک مرتبہ عرض کیا کہ حضرت میرا اور میری ہلیہ کا دن چاہتا ہے کہ حضرت کے لئے ایک جوڑا بنائیں، حضرت نے فرمایا کہ بھئی ہم کیا کریں گے ہمارے پاس تو بہت کپڑے ہیں آخر میں وقفہ وقفہ سے درخواست کرتا رہا خوش قسمتی سے ایک دن منظور فرمایا اور فرمایا کہ کسی وقت گھر سے ناپ کے لئے جوڑا لے جانا میں نے موقع غنیمت جانا میں شام ہی کو حاضر ہوا اور ناپ کے لئے جوڑا لے آیا اور دوسرے دن بعد نماز مغرب جوڑا اسی کہ حضرت کے دولت خانہ پر حاضر ہوا، فرمایا کیسے آنا ہوا؟ میں نے عرض کیا حضرت یہ آپ کا جوڑا اور یہ ناپ کا اس جڑبہ فرمایا اور یہ آپ کا اور یہ کبکروہ جوڑا مجھے عطا فرمادیا جو میں نے بڑے ادب سے لے کر آنکھوں کو لگایا سر پر رکھا، پھر فرمایا ارے بھئی تم آزاد



اہیہ ماشا اللہ بہت ہوشیار اور خدمت گزار اور لائق فائق ہیں ارے معلوم ہوتا ہے کہ مشین ہیں جو اتنی جلدی سی دیا اور اس قدر دعائیں دیں کہ بیان سے باہر ہے، ایک مرتبہ رمضان المبارک ۱۳۸۵ھ میں پہلے جمعہ کو آپ کی خدمت اقدس میں آپ کی مسجد نور میں دعا کی درخواست اور ملاقات کے لئے حاضر ہوا اور ایک ٹوپی نئی حضرت کے لئے ہدیہ کرنے کی نیت سے لے گیا جب ملاقات پر بات چیت سے فریاد ہوئی تو میں نے ٹوپی پیش کی تو اس پر فرمایا تم بہت چالاک آدمی ہو تمہیں تبرک لینے کا بھی طریقہ خوب آتا ہے، پھر فرمایا بھی ہمارے پاس دو ٹوپیاں ہو گئیں اور میں تو نئی مل گئی اس لئے یہ پانی ٹوپی ہماری طرف سے تم لے لو میں نے فوراً ادب سے لے کر اسی وقت سر پر اوڑھ لی اسی طرح میں نے مختلف اوقات میں حضرت سے چند ٹوپیاں حاصل کیں ایک مرتبہ آپ نے ایک صف بھی عطا فرمائی اور ساتھ ساتھ اس کے محفوظ رکھنے کے لئے طریقہ بھی از خود بتایا کہ اس کو تکیہ بنالینا جس طرح ہم نے حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کی عطا فرمائی ہوئی رضائی کو تکیہ بنا کر اپنے مطب میں رکھ رکھا ہے، حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی زندگی میں خوب آپ کی جوتیاں سیدھی کیں خوب دست بوسی کے مواقع نصیب ہوئے۔ اور حضرت کی لاتعداد دعائیں قدم قدم پر لیتا رہا، آخر میں حضرت فرمایا کرتے تھے تم بڑے خوش نصیب ہو کہ تم نے ان آنکھوں کو دیکھا ہے جن آنکھوں نے بڑی بڑی ہستیوں کو دیکھا ہے تم قدر کرو اور ہماری باتیں سنو اور عمل کرو یہ باتیں مجھ سے سن لو پھر یہ باتیں سنائے والا کوئی نہیں ملے گا یہ باتیں تانے والا کوئی نہیں ملے گا اس انداز سے یہ عقیدہ حل کرنے والا پھر کہاں پاؤ گے، حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت میں یہ حاضری کا سلسلہ ۱۹۵۵ء سے شروع ہوا اس میں روز بروز اضافہ ہوتا رہا بیان تک کہ اس میں شدت ۱۹۷۵ء سے آتی گئی اور اس قدر عروج پر گئی کہ حضرت کے مطب اور گھر کے والہانہ چکر لگانے اور بغیر آپ سے ملے چہن نہیں ملتا تھا آخر یہ سلسلہ ۱۹ مارچ ۱۹۸۶ء کو دنیا کی آخری سے پہلی ملاقات پر ختم ہوا اس روز اتوار کا دن تھا دو تین احباب بھی موجود تھے تفصیلی گفتگو فرمائی اور میں جامع مسجد فیڈرل ایریا سے جامع مسجد قبا کلیان ٹاؤن سیکٹر ۱۱ میں منتقل ہونے والا تھا اس کے متعلق بہت تفصیل سے معلوم کیا اور میں نے عرض کیا عنقریب منتقل ہونے والا ہوں اس پر مجھے اور میرے اہل عیال کو بہت دعائیں دیں اور سب سے آخری ملاقات ۲۱ مارچ ۱۹۸۶ء کو جمعہ کے دن عصر کی نماز کے لئے

میں دست مبارک تھمے لیکر آ رہا تھا اس وقت ہوئی میری طرف دیکھا میں نے عرض کیا ابراہیم حق پھر خیریت دریافت فرمائی اور سیڑھی سے اترتے اترتے مجھ بہت ہی دعائیں دیں اور پھر معنی پر نماز کئے لئے کھڑے ہو گئے پھر مجلس ہوا اور ختم ہو گئی کسی کو کیا معلوم تھا کہ یہ علوم و معارف کا خزانہ اب دنیائے پردہ کرنے والا ہے اور آئندہ جمعہ کو یہ بیاں نہیں بلکہ ہمیشہ بریں میں ہوں گے، یہاں تک کہ یہ جمال اودیا اپنے جمال جہاں آرا سے دنیا کو ۹۰ سال تک دیدار کی نعمت سے مشرف فرماتے رہے اب اس دارِ فنا سے پردہ فرما کر ستر ہونے والے ہیں۔ چنانچہ ۲۳ مارچ ۱۹۸۶ء کو تہجد کے وقت سے میل ہوئے اور پیٹ کی تکلیف میں مبتلا رہ کر مختصر سے وقت میں یعنی ۲۳ مارچ کو میل ہوئے اور ۵ ربیع المرجب ۱۴۰۷ مطابق ۲۴ مارچ ۱۹۸۶ء بروز جمعرات (بغوائے حدیث شریف پیٹ کی بیماری میں مزاحمت کا مرتبہ عطا کرتا ہے) صبح اذان فجر کے وقت اذان کا جواب دیتے ہوئے جامِ شہادت نوش فرماتے ہوئے اپنی جان جانِ آفریں کے سپرد کی۔ انا للہ وانا الیہ راجعون۔

### محارمت کندا میں عاشقانِ پاکِ طہنیت را

یہ حق گو گناہی میں زندگی گزارنے والے، طابانِ حق کو سیراب کرنے والے علوم و معارف کے خزانے بنائے والے ہر غم زدہ کے غم خوار، ہر ایک کے دکھ درد میں کام تنے والے، ہر ایک کے خیر خواہ، ہر ایک کے مآوی اور ملجا، اور ہر ایک کو رحمتِ خداوندی کی اُمید دلانے والے، ٹوٹے ہوئے دلوں کو بڑھانے والے، ہر وقت اللہ و رسول کی باتیں سننے والے، ہر ایک کی پریشانی میں برابر کے شریک، ہر ایک کی خوشی میں برابر کے شریک، ہر لمحہ خیر خواہی اور بھلائی کرنے والے، ہر لمحہ خیر کی دعا کرنے والے، اُمت کے لئے اللہ سے لو لگانے والے، غیروں کو اپنے بنانے والے، گناہگاروں کو نیک بنانے والے، کافروں کو مسلمان بنانے والے، مسلمانوں کو مؤمن بنانے والے، مایوسوں کو آس دلانے والے، جہنمیوں کو جنتی بنانے والے، گایاں دینے والوں کو دعائیں دینے والے، غیروں کی تقلید کرنے والوں کو متبعِ سنت بنانے والے، مخلوق سے رشتہ جوڑنے والوں کا خالق سے تعلق جوڑنے والے، ساری زندگی اعلا رکھتے تھے حق میں وقف کرنے والے، اللہ اور رسول کے منجوس لوگوں کو اللہ اور رسول کے محبوب بنانے والے، دنیا کی زندگی میں ہمیشہ مسکرانے والے مرنے کے بعد بھی دیدارِ حق کی دولت سے ملاماں ہو کر مسکرانے والے۔ رضی بقضائے حق کو اللہ ہی و قیوم کے سپرد فرماتے والے، اللہ کی رحمت اور مقامِ رضا پانے والے، جنت الفردوس میں اعلیٰ سے اعلیٰ مقام پانے والے لاکھوں عاشقانِ حق کو رنجیدہ اور خاطر کبیدہ چھوڑ کر جانے والے

اب بھی اپنے فیض سے مستفیض فرماتے رہتے ہیں یا اللہ ہیں صبر جمیل عطا فرمائیے اور حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کو مقام قرب اور مقام رضا نصیب فرمائیے اور حضرت والا کی تعلیمات پر عمل کی پوری توفیق عطا فرمائیے پورا آپ کی تعلیمات اور فیوض و برکات کو مانگ کر انکی ہمیشہ توفیق کامل عطا فرمائیے، یہ حضرت والا کی زندگی کے کچھ نمونے پیش کئے ہیں جو میرے حضرت والا سے تعلق اور محبت اور شفقت کے عکاس ہیں مجھے نہ تو لکھنے کا سلیقہ نہ مضمون نویسی کا ذہن نہ تو کلام علی اللہ کچھ تاثرات محدثِ نعمت کے طور پر کرم و محترم جناب مولانا محمد تقی صاحب عثمانی کے حکم پر سپرد قلم کئے ہیں اس میں ناز کا کوئی پہلو نہیں حضرت کی غیبات تو اتنی ہیں کہ سب کے احاطہ کے لئے دفتر کے دفتر جاتیں اس میں کوئی بھی بات کس کو ناگوار خاطر ہو تو میں معافی کا خواست گارہوں یہ میں نے غور نہیں بلکہ محدثِ نعمت کے طور پر لکھا ہے چونکہ مجھے لکھنا نہیں آتا اس لئے الفاظ کی غلطیوں سے بھی اُمید کروں کہ صرف نظر فرمائیں گے اور مجھ کا کارہ خلاق کو دعاؤں میں یا د فرمائیں گے عنوان میرے دل میں اللہ تعالیٰ نے حضرت کے جمال ہی جمال ہونے کی نسبت سے "جمالِ اولیاءِ ستور ہو گیا" ڈالا، اس لئے اس کا یہ عنوان اختیار کیا، مدیر صاحب کو میری طرف سے پورا پورا اختیار ہے۔

آخر میں حضرت والا ہی کے کلام پر اس مضمون کو ختم کرتا ہوں حضرت والا کی شفقت کا اندازہ کرنے کے لئے حضرت والا کا ایک خط بھی ساتھ میں منسلک کر رہا ہوں جو حضرت والا نے میرے خط (قیام مکہ مکرمہ کے زمانے میں) کے جواب میں تحریر فرمایا تھا مناسب ہو تو شائع فرمادیں۔

## جذبہ بے احتیاء

مغل سوز و گدازِ غم کو گر ملے گا کون

اہلِ دل کو اپنے دردِ دل سے تڑپائے گا کون

موجزن ہے کس کے دل میں آتشِ بے نیالِ غم

مستیِ خونِ جگرِ نکمہوں سے برسلے گا کون

کس پہ طاری ہے جنوں شوق کی دارِ فتنگی

یوں زہل پر دہانہ رازِ دل لائے گا کون

غافل میرا ہی دل ہے محرمِ راز و نیاز

بعد میرے رازِ حسن و عشقِ سمجھائے گا کون

## بزرگوار انسان کی زندگی

اللہ تعالیٰ نے انسان کو جو جبلت عطا فرمائی وہ انسان کی محدود نگاہی کے باعث ابتداءً اسکی ذات اور وجود کے تحفظ کی تدابیر تک محدود رہی اور جب اسی طور پر محبک پیاس دور کرنے اور آفات ارض و سماوی سے خود کو محفوظ رکھنے کے علاوہ ودیعت کردہ صلاحیتوں کو بروئے کار لانا اس کے احاطہ امکان میں نہیں تھا اس لئے کہ اس کو اللہ کی طرف سے خود اُس ہی کے لئے بخشے ہوئے شرف کو محسوس کرنے کی نہ تو صلاحیت اس میں پیدا ہوئی تھی اور نہ ہی..... اس کو اس کا علم ہو سکتا تھا۔ در آں حالے کہ اللہ تعالیٰ نے اسکی محدود نگاہی کو شعور و ادراک کی روشنی عطا فرمائی۔ اس کے سامنے چھلے ہوئے اندھیریل کو دور کیا اور فطرت پر قابو پانے اور موسموں۔ دنوں۔ برسوں اور زمانوں کی تبدیلی کے خوف سے اس کو آزاد کرنے کی استفہامی قوت عطا فرمائی۔ تمام عالم کو اپنا مطیع بنانے کے احاس قوتی اور اس ادراک سے اسکو آشنا کرنے کے سامان عطا فرمائے۔ اس طرح جب انسان خود پر اعتماد کرنے لگا تو وہ اس حقیقت کی تلاش میں مصروف ہوا کہ آخر وہ کون ہے؟ اور جس بستی نے اسی آسائش و بہولت کے لئے اس جہانِ زمسریہ کی تخلیق فرمائی تو اسکی غرض و غایت آخر کی تھی؟

یہ سوال انسان کے لئے بہت بڑا سوال تھا۔ اس کا جواب جو اسکے ذہن سے تجویزات و شہادت



ادراک سے پھوٹا تھا اسکو گراہ بھی کر سکتا تھا اور تکبر بھی بنا سکتا تھا۔ سو ایسا ہی ہوا کہ شیطان اور اس کے پیدا شدہ دوسروں کی رسائی انسان کے شعور و ادراک اور احساس و خیال تک دراز کر کے اس کے لئے عرصہ امتحان پیدا کر دیا گیا۔ اس سے وہ بیک گیا تکبر ہوا اور منکر بھی لیکن اللہ تعالیٰ کی اس حکمت تک اس کی محدود نگاہی اور فہم کی کمی کیسے پہنچ پاتی کہ رات کے اندھیرے کے بعد صبح کی روشنی بھی اللہ تعالیٰ نے پیدا کی ہے۔

سبب انسانوں پر اللہ تعالیٰ کا کرم بھی ہوا اور اس روشنی کو سمجھنے کے لئے انکو ایک ایسے وسیلے کی ضرورت ہوئی کہ جس کی وساطت سے اپنے ذہنی دوسروں سے نجات بھی پاسکیں اور ابدی حقیقت کو بھی جان سکیں ابدی حقیقت سے آگاہی دراصل وہ مرحلہ ہے کہ جو پہلے خود آگاہی کا اعلا شعور پیدا کرتا ہے اور پھر خدا شناس کی راہ کا عرفان عطا کرتا ہے۔

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ

اس طرح اس راہ مستقیم تک پہنچنے کے لئے کہ جو انسان کے واسطے روزِ ازل ہی سے متعین کی جا چکی تھی ایک وسیلے کی اہمیت ابھر کر ذہن انسانی میں اپنا نشان چھوڑ جاتی ہے۔

بچ بھوک کو محسوس کر کے چیخ تو سکتا ہے کہ یہ اسکی جلت ہے۔ پیٹ بھرنے اور بھوک مٹانے کا وسیلہ خود اس کے ہاتھ اس وقت تک نہیں آ سکتا جب تک کہ اس سے محنت کرنے والی ہستی اسکی پکار کو نہ سن لے اللہ تعالیٰ نے انسان کو پیدا کیا تھا وہ انسان کا خالق تھا اس کے لئے ہی یہ کائنات اور یہ آفاق بنائے گئے تھے اس نے انسان کی اس جلی پکار کو بھی سنا کہ وہ اپنے احساس خیال اور ادراک کی اس طلب کو مٹانا چاہتا ہے کہ وہ کیوں پیدا کیا گیا ہے۔ اس کائنات اور فطرت سے اس کا کیا تعلق ہے اور وہ ہستی کون سی ہے کہ جس کی اس نظام شمسی پر حکمرانی ہے اور دریا، ہوا، برق و باران کس کے تابع ہیں؟ زندگی کی بہترین نعمتوں اور سہولتوں کی فراہمی کا سرچشمہ کون ہے؟ یہ جاننے کے لئے اور اس حقیقت کا ادراک کرنے کے لئے رسولوں اور پیغمبروں کے توسط سے اللہ تعالیٰ نے بندوں کی راہ نمائی فرمائی اور ہر قوم میں مصلحین بھیجے گئے کہ وہ ان بے چنیوں کی طمانیت و روح کا سامان کرنے کے لئے اللہ تعالیٰ کا پیغام ان تک پہنچائے کہ جو انہی کے ادراک، انہی کی فہم و زبان میں ہو "لَنْكَلِ قَوْمًا هَٰذَا" (ہم نے ہر قوم میں ہدایتی پیغمبر (القرآن)۔

اس لئے کہ اللہ تو موجود تھا کہ وہی تو ہے کہ جو ہو سکتا ہے لیکن یہ بتانے والا بھی تو کوئی ہو کہ وہ "ہے" اور اس کے بغیر کچھ نہیں۔ ہر شے اس سے ہے اور اسکے پر تو سے روشن و متحرک ہے اس سے صبح کے جلوے اور نمودِ شام ہے اور اس کے حکم سے شبِ افروزی و جگر سوزی۔ یہ وسیلہ انسانوں کو اس طرف نصیب ہوا کہ جو فرمانِ الہی لے کر ایسی معاشرتی اقدار کے ساتھ بھیجے کہ جن میں انسان کی فز و فلول کے سامان موجود تھے تاکہ اس کا کبر و در ہو اور وہ خود کو مقامِ الوہیت پر سرفراز سمجھنے کے دوسو سوں کے چنگل سے نکلنے میں آسانی پاسکے وہ اس کائنات میں اپنی اہمیت کو بھی سمجھے اور خالق کائنات کو بھی پہچاننے کا ممکن شعور اور ادراک حاصل کر سکے۔ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ۔

زمانے کے ساتھ ساتھ کائنات اور موجودات میں جو تبدیلیاں اللہ تعالیٰ فرماتے گئے وہ انسانوں کے لئے تو وقت کے پیمانوں سے پالی جاسکتی ہیں کہ انسان کی جتنی قوتیں حضرت کی پابند رکھی گئی ہیں لیکن اللہ تعالیٰ جس نے زمان و مکان کو محدود کیا اور خود کو لامحدود کہ وہ ان سب تعینات سے ماوراء ہے اس کی مصامت یہ تھی کہ انسانی شعور و ادراک تجربات و مشاہدات کی ٹھوکریں کھا کر پختہ ہوتے ہیں اور اللہ تعالیٰ کا پیغام بھی زمان و مکان کے تعینات اور ضروریات کے مطابق اس تک پہنچتا رہے اور بالآخر جب انسان کا شعور پختہ ہو گیا اور ادراک کو بلوغ نصیب ہوا تو وہ منتہائے مقصود بھی انسان کو عطا فرما دیا گیا کہ جو باعثِ تخلیق کائنات اور مکاں و لامکاں کے تعینات کا امین و مہذبزل سے ہی قرار دیا جا چکا تھا اور جو اللہ تعالیٰ نے نوری سے آشکار ہوا تھا اور اسکے ذریعہ سے صراطِ مستقیم عطا فرما کر آخری پیغام قرآن حکیم کی صورت میں حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے ذریعہ انسان کو عطا کر کے اتمامِ حجت فرمادی گئی۔

"الْيَوْمَ اكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَانْتُمْ عَلَىٰ نَفْسِكُمْ وَرَضِيْتُ لَكُمْ اِلٰهًا سَلَامًا" حضور قبولِ صل اللہ علیہ وسلم نے انسان کو اللہ تعالیٰ کی آخری شریعت عطا فرما کر اس کا رشتہ سابقہ شریعت سے جوڑ دیا اور ساتھ ہی یہ آگاہی بھی فرمائی کہ اللہ کو پانے کا وسیلہ اور خود پہچاننے کی راہ کون سی ہے اور انسان کہ جواب راہِ مستقیم اور کلامِ حق پا کر مومن و مطہر ہو چکا تھا اور جو پیدا ہی اس لئے کیا تھا کہ وہ "وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْانْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنَ" کے تحت اپنے آپ کو اس نور مجسم میں گم کر دینے کی سعی و کوشش کرے جو تمام کائنات اور تمام عالموں میں اس طرح جاری و ساری ہے کہ کہیں بارش کا پہلا قطرہ بن کر پیاسی زمین کو سیراب کر رہا ہے اور کہیں سمندروں کی غمی تک کو بھاپ بنا کر اڑا

دینے پر قادر ہے۔ وہی بنانا اور بگاڑتا ہے کہ سب کچھ اس سے ہے مگر وہ کسی سے نہیں۔  
 ان اللہ علی کل شیء قدید۔ ان اللہ بالغ امرہ ، بس چارہ گر مطلق و مختار ہمارا  
 اللہ ہے اللہ ہے اللہ ہے اللہ۔

اور اس طرح انسان نے اپنا مرتبہ پہچانا: اپنی ہستی کو پایا اور اس کائنات میں اپنی موجودگی  
 کی صورت کو سمجھا لیکن دوسرے اور شیطان تجسس عالم امکان میں اپنی طاغوتی طاقتوں سے ذہن  
 انسانی پر حملہ آور ہوتے رہتے ہیں کہ یہ دنیا اس کے لئے امتحان گاہ بنائی گئی ہے جہاں وہ حق و باطل  
 میں امتیاز کر کے اپنی راہ خود تعین کر سکے ورنہ شر اور بولہبی کی سستیزہ کاریوں کو تو اب تک چھوٹ  
 دی جا چکی ہے۔ اس لئے گم رہی اور شیطانی دوسووں کو موجود رکھا گیا ہے تاکہ اللہ تعالیٰ کے نیک  
 بندے اپنے اعتبار تمیزی سے نیک اور خدا آگاہ بندوں کا دامن ہدایت تمام کر سرخ رو ہو سکیں۔  
 آج کے مادی دور میں اعلیٰ کلمۃ الحق کا نعرہ لگانے کے باوجود جن پچیدگیوں اور  
 قباحتوں سے زمانہ گزر رہا ہے اس کی وجہ سے کسی نہ کسی وسیلے اور آسے کے بغیر گم رہی سے ہدایت  
 خود انسان کے لئے پناہ محال ہو گیا ہے پچھلی امتوں سے گمراہ لوگ اللہ کی شریعتوں اور ہدایات مفصل  
 کی تکذیب کرتے رہے اور اس کی شریعت لانے والوں سے ایسے مطالبات کرتے رہے جو اصول فطرت  
 اور قوانین الہی کے خلاف تھے اور انہی وجوہ سے انکا ایمان متزلزل رہا اور انہوں نے اپنی خواہشات  
 نفسانی کے تحت شریعتوں میں تحریف کر ڈالی لیکن جس طرح اندھیرے میں روشنی کی کرن پھپ  
 تو جاتی ہے لیکن فنا نہیں ہوتی۔ ان گمراہ لوگوں میں سے ہی اللہ کے ان نیک بندوں نے جو فتنہ  
 و فساد سے خود کو محفوظ کر کے اللہ کی رسی کو مضبوطی سے پکڑے رکھا اور اپنے لئے شراغیز طاقتوں سے  
 کنارہ کشی اختیار کی اور جہاد و قتال اور تسلط دنیوی کی خواہشوں کو مٹا کر اپنی باطنی قوتوں کو اتنا مضبوط  
 کر لیا کہ اندھیروں کی یلغار بھی اس تک نہ پہنچ سکی۔ یہی وہ مقام ہے جہاں سے تعارف کی وہ مختلف  
 راہیں جو اللہ تعالیٰ کی آخری شریعت میں اس طرح پیوست تھیں کہ ان جیسے بالغ نظر لوگ ہی اس کے  
 تار و پود تلاش کر سکتے تھے۔ اللہ کے ان نیک بندوں نے سلوک و معرفت کی حدوں کو تجسس دینی سے پالیا۔  
 مجاہدہ نفس کی منزلیں طے کیں اور سلوک و طریقت کا عرفان حاصل کیا۔ ایسے لوگ ہر دور میں گزرے  
 ہیں مگر عام سمجھ بوجھ کے انسان کے لئے ان راہوں پر چلنا بنیر کسی روشنی اور وسیلہ کے ممکن نہیں ہوتا کہ اس کی

بارکیاں وہی جلتے ہیں جو اس ازلی روشنی کو اپنے سینے میں اتار چکے ہوتے ہیں کہ جو وسیلہ نجات قرار دی گئی ہے۔

ایسے ہی مراحل کے لئے عارف باللہ حضرت ڈاکٹر محمد عبدالحی صدیقی خلیفہ ارشد مجدد ملت ممی السنت حکیم الاقت شیخ طریقت عارف شریعت حضرت مولانا محمد اشرف علی تھانوی نور اللہ مرقدہ نے ایک جگہ ارشاد فرمایا ہے "طریقت و سلوک کے لئے ایک مرشد کمال کی رہ نمائی لازمی ہے تاکہ بندگانِ عالی تعالیٰ ادا مردنواہی سے واقف ہو کر اسکی روح کو سمجھ سکیں۔ ایک اور جگہ حضرت والا شیخ عارف باللہ نور اللہ مرقدہ نے اس ارشد و ہدایات کی توضیح فرمائی کہ "اللہ تعالیٰ نے اپنے بندوں کو جو احکام عطا فرمائے ہیں وہ دو قسم کے ہیں۔ ان میں سے بعض احکام انسان کے ظاہری اعمال سے متعلق ہیں جن کو شریعت کہا جاتا ہے اور بعض احکام باطنی ہیں اور یہ اعمال باطنی درحقیقت انسان کے اعمال ظاہری کی بنیاد ہیں اور اگر انسان باطنی فضائل سے آراستہ ہو تو اسکے اعمال ظاہری بھی درست ہو جاتے ہیں۔ اسی وجہ سے ہر مسمان کے لئے اخلاق باطنی کی اصلاح کے واسطے کسی شیخ و مرشد سے رجوع کرنا ناگزیر ہے تاکہ شیخ کے بتائے ہوئے معمولات پر عمل کر کے قلب کی صلاحیت درست اور مقادست نفس آسان ہو جائے اور قلب میں کیفیت تقویٰ راسخ ہو۔"

آپ نے اس سلسلے میں آج کے حالات پر روشنی ڈالتے ہوئے فرمایا :

"دورِ حاضر میں ہماری زندگی بہت الجھ گئی ہے اور مصروفیات زندگی بڑھ گئی ہیں چنانچہ فی زمانہ سالکیت کے آسان اور قوی الاثر تدابیر کی ضرورت ہے جن کو معمولی توجہ اور اہتمام کے ساتھ سالکیت اختیار کر سکتے ہیں" اس باب میں ایک مجلس میں آپ نے فرمایا "ہم دیکھتے رہے کہ لوگ روزانہ عازم سفر آخرت ہیں۔ کبھی ہم نے سوچا کہ ہم آخر اس سفر آخرت کے لئے کیا اہتمام کر رہے ہیں ہمارے پاس سرمایہ سفر آخرت کیا ہے، آپ نے فرمایا "اس موجودہ گھاؤ نے معاشرہ میں صبح سے شام تک کے ہماری زندگی کے تعلقات سے اسلام کے بتائے ہوئے اصولوں کے تحت وابستگی ہی ہمارا سرمایہ آخرت ہے۔"

حضرت مولانا عارف باللہ کی خدمت میں میری رسائی ایک ایسا واقعہ ہے جس پر مجھے خود بھی بعض اوقات حیرت ہوتی ہے کہ جب اللہ تعالیٰ اپنے کسی ایسے بندے کو جو اپنی ہی تلاش



میں ہودہ راہ عطا فرمادیتے ہیں کہ جو اسکی نجات کا ذریعہ ثابت ہوتا ہے۔

میں شروع ہی سے اپنی ذات کائنات اور زمان و مکاں کے تعلق کو حتی المقدور اپنی عدم بلوغت فکر کے سہارے تلاش کرنے میں غلطیاں رہا لیکن جیسا کہ بعد میں عارف باللہ حضرت ڈاکٹر مولانا محمد عبدالحی صاحب کی صحبت میں مجھان نکات سے آگاہی ہوئی کہ جنہوں نے مجھے سکون قلب اور راحت جان کی نعمتوں سے سرفراز فرمایا۔ اللہ تعالیٰ نے اپنی حقیقت جاننے والوں کو مختلف گروہ میں منقسم فرمایا ہے اور انکے علم و فراست کی حدود بھی انکی اپنی صلاحیتوں کے مطابق متعین فرمادی ہیں۔ اپنی اس تلاش و جستجو کے زمانے میں میری ابتدائی دستگیری ایک بزرگ محترم بابا نجم احسن علیہ الرحمۃ نے فرمائی۔ جو نہ صرف حضرت ڈاکٹر صاحب کے بمعصرتھے بلکہ پیر بھائی بھی تھے۔ دونوں بزرگ حضرت مولانا محمد اشرف علی تھانوی نور اللہ مرقدہ کے اجازت یافتہ تھے۔ اور یہ بھی جمیب اتفاق تھا کہ دونوں پیشدہ کے لحاظ سے وکیل تھے۔ اور خود بقول حضرت اقدس جناب ڈاکٹر صاحب حضرت بابا صاحب اپنے سفر آخرت کے موقع پر اس ناکارہ کو ان ہی کے (حضرت مولانا عارف باللہ نور اللہ مرقدہ) کے حوالے فرما گئے تھے۔ اور یہ بھی اس ناکارہ خلافتی ہی کے لئے خالق حقیقی نے سولات لکھ دی کہ حضرت بابا صاحب کا دم آخر میرے ہی ہاتھوں میں اپنے سفر آخرت کی طرف پرواز کر جائے۔ یہ ۱۹۷۶ء رمضان المبارک کی بات ہے اور جب انہوں نے ایک شیخ مشفق کی طرح مجھ اپنے سینہ مبارک سے متصل فرما کر قتل دی کہ بابا صاحب مرحوم و مغفور آپ کو میرے حوالے کر گئے ہیں تو گویا مجھے وہ سب کچھ مل گیا کہ جس کام میں مدتوں سے تلاشی تھا اور راہ سلوک کی بہت سی منزلیں میری باطنی دنیا کو متور کر گئیں۔ اور مجھے معلوم ہوا کہ مظاہر کو حقیقت سمجھنا ایک بڑا فریب ہے۔ حضرت عارف باللہ نے مجھے آگاہ فرمایا کہ راہ سلوک کے مختلف درجات ہیں۔ حضرت شیخ فرمایا کرتے تھے کہ فنا فی اللہ، حوئے کے لئے سب سے پہلے فنا فی الشیخ ہونا ہوتا ہے اور چونکہ شیخ اصل معنوں میں وہی ہوتا ہے کہ جو متبع سنت ہو اور اس لحاظ سے پھر دوسرا درجہ شیخ کی اتباع کمال کے بعد فنا فی الرسول صلی اللہ علیہ وسلم کا درجہ آتا ہے اور پھر آخری درجہ فنا فی اللہ کا آتا ہے اور جو مقصود بھی ہے۔ فنا فی الشیخ ہونے کے لئے حضرت والا نے تین منزلیں فرمائیں۔ سب سے پہلے ”عقیدت“ ہے کہ ہمیں کسی سے عقیدت ہو جائے اور یہ عقیدت اس شیخ تک لے جائے اور پھر آہستہ آہستہ یہ عقیدت ”انیت“ میں تبدیل ہو جائے۔ پس یہ لگاؤ

جب محبت میں تبدیل ہو گیا تو یہ درجہ فنا فی الشیخ کا درجہ کہلاتا ہے۔

پہلا درجہ شیخ کی اطاعت سے حاصل ہوتا ہے اس درجے کو فنا فی الشیخ کہتے ہیں۔ اس درجے کے حصول کے لئے مجھے اپنی مانوس و محسوس جذباتوں سے اور خواہشوں سے بڑی نبرد آزمائی کرنی پڑی اور بالآخر اس ناکارہ کو یہ شرف حاصل ہوا کہ حضرت والا عارف باللہ اور یہ ناکارہ باطنی طور پر قلب میں دوڑنے والے خون کی طرح ہم رشتہ ہو گئے۔

فنا فی الشیخ کا درجہ حاصل ہو جانے کے بعد کے درجات تک رسائی حاصل کرنے کے لئے بھی شیخ کا اعانت اور توجہ کی بڑی ضرورت ہوتی ہے اس لئے کہ راہ میں توحید کے تصور کی بہت سی قسموں سے سالک کو واسطہ پڑتا ہے توحید کی راہ کی مشکلات کو سمجھنے کے لئے ہم کو احتیاط سے دنیا میں موجود افکار کی آلودگی سے اپنے دامن کو بچانا پڑتا ہے۔

یعنی پرستِ مفکرین کے ذریعہ سے توحید کا جو تصور ہمیں ملتا ہے اسکے تحت حقیقتِ اصل ایک خیال باطل ہوتی ہے لیکن یہ تصور پوری طرح اس توحید پر محیط نہیں ہوتا جو لائقین کی طرف جاتا ہے۔ دوسرے تصور مادیت پرستوں کا ہے جو مادے ہی کو ازل و ابدی مانتے ہیں اور اس میں تغیر اور صورتوں کے فرق کو مادے کی خاصیت کہتے ہیں۔ چنانچہ انہیں اس کائنات میں جو کچھ نظر آتا ہے وہ مادے ہی کی صورتیں ہیں۔ حقیقتِ اصل ان کے نزدیک صرف مادہ ہے۔ یہ تصور اپنی نوعیت میں قطعی ناقص اور گمراہ کن ہے اس لئے فہم و فکر ملنے کی کوئی آخری اور حقیقی تعریف متعین کرنے سے عاری و محروم ہیں۔

تیسرے تصور توحید ہے جو انبیاء کے ذریعہ سے ہم تک پہنچا ہے کہ ہم نے اللہ کی غلت و بلندی اور اسکے وجود کو انبیا علیہم السلام ہی کے ذریعہ سے جانا ہے۔ ورنہ وہ نور حقیقت تو خود سے ہے اور رہے گا اس تصور کا حشرِ شہم براہِ راست باری تعالیٰ ہے اور اس حیثیت سے یہ تصور حقیقی اصل سے ہم کنار ہے اور اس کا درجہ آخر مقام لائقین ہے حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے دنیا میں رہ کر دنیا کی طرف سے ماند ذوق داریوں کو پورا کرتے ہوئے دامنِ عبدیت تک پہنچنے کا جو راستہ ہم کو بتایا ہے وہی شیوخِ وقت سلوک و طریقت کے ذریعہ سے آپے سالکین کو بتاتے ہیں۔ یہی وہ نعمتِ غیر مترقبہ ہے جو سلوک و طریقت کے رموز حضرت عارف باللہ جناب ڈاکٹر مولانا محمد عبدالحی صدیقی خلیفہ حضرت حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانوی قدس سرہ کے دامنِ فیض سے مجھے نصیب ہوا۔ مجھے دنیا

سے نفور نہیں حضرت عارف باللہ کے فیض سے مجھے دنیا کے سیدھے سادھے یا گمراہ لوگوں کو وہ روشن راہ بتانے اور انہیں راہِ مستقیم پر لا ڈالنے کی ہدایت دروشتی ملی ہے اور یہ حقوق اللہ کے لئے اپنے آپ کو وقف کر سکتا ہے نسبت باطنی کے اس فیض کو جو مجھے عطا ہوا ہے لوگوں تک پہنچانے کے لئے میری طبیعت دنیا کی طرف رجوع نہیں ہوتی لیکن جو درجہ کمال اس تعلق خصوصی سے کہ جو حضرت شیخ عارف باللہ سے مجھ ناکارہ کو عطا ہوا ہے، ادراک اور اہمیت حقوق العباد ہے کہ جو میرا دامن تمام لیتا ہے اور میرے قدموں کو روک دیتا ہے کہ میں ترک دنیا کر کے فنا فی الشیخ، فنا فی اللہ کے درجہ تک نہیں پہنچ سکتا بلکہ واحد ذریعہ "اتباع سنت" کو ہی اپنا کر مقصد حیات تک پہنچ سکتا ہوں۔ حضرت والا! ادائیگی حقوق العباد پر بہت متشدد تھے۔

آج جبکہ حضرت والا عارف باللہ جناب ڈاکٹر محمد عبدالحی صدیقی صاحب نور اللہ مرقدہ دنیوی حیثیت سے ہم سے جدا ہو گئے ہیں اور اس مسئلہ پر حضرت والا نے بار بار انفرادی طور پر اس ناکارہ سے بھی فرمایا اور مجلس خصوصی میں بھی فرمایا کہ "یہ نہ سمجھا جائے کہ شیخ" صرف اپنی زندگی ہی میں اپنے طالبین اور سالکین کے لئے راہ نمائی اور ہماری کاسبب بنتا ہے نہیں بلکہ اس عالم فنا سے عالم بقا کو رجوع کرنے کے بعد "شیخ" کا تعلق اور زیادہ قوی ہو جاتا ہے اور پھر اپنے طالبین کے لئے اس کا فیض روحانی کا سلسلہ برابر جاری رہتا ہے اور یہ ناکارہ الحمد للہ اس فیض روحانی کو قوی محسوس کرتا ہے۔

اللہ تعالیٰ ہمارے حضرت کو حضرت حاجی صاحب حضرت تھانوی صاحب اپنے ہم عصر حضرت بابا نجم احسن صاحب اور حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب کی معیت میں بلند درجات سے سرفراز فرمائے انکی قبر کو اپنے نور سے منور فرمادے۔ آمین۔

### ”عطر مجموعہ“

ایسی خوشبو یا ت کا دلاؤ ویز مجموعہ، ہر نماز اور تلاوت کے موقع پر لگائیے۔۔۔۔۔۔ ہر جگہ دستیاب  
عبد الغنی محمد اسماعیل تاجر عطر کراچی، لیاقت آباد

• حافظ عتیق (رحمۃ اللہ علیہ)

ڈائریکٹر فنانس بہادر پاکستان  
(مجاز بیعت حضرت والا)

آہ! مرشدی حضرت ڈاکٹر محمد عابد العسوی صاحب (رحمۃ اللہ علیہ)

احقر کے والد محترم حافظ خلیل الرحمن نور اللہ مرقدہ ۱۹۲۰ء میں حضرت مولانا محمد عمر صاحب تھانوی سے بیعت ہوئے تھے۔ مولانا محمد عمر صاحب حضرت مولانا نور محمد صاحب (میاں جیسے) کے صاحبزادے تھے جو حضرت حاجی املاہ صاحب مہاجر مکی رحمۃ اللہ علیہ کے پیر بھائی تھے۔ حضرت مولانا محمد عمر صاحب قدس اللہ سرہ کی وفات کے بعد قبلہ آبا جی نے حضرت حکیم الامت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی رحمۃ اللہ علیہ سے اصلاحی تعلق قائم کیا۔ ۱۹۳۰ء سے ۱۹۴۲ء تک مسلسل ۱۲ سال تھانہ بھون حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت میں حاضری کا سلسلہ جاری رہا۔ قبلہ آبا جی گھر میں اکثر و بیشتر حضرت رحمۃ اللہ علیہ کے ملفوظات اور واقعات سنایا کرتے تھے چنانچہ احقر کو بچپن ہی سے حضرت تھانوی قدس اللہ سرہ سے عقیدت پیدا ہو گئی تھی ۱۹ جولائی ۱۹۴۳ء کو جب حضرت تھانوی کا وصال ہوا تو احقر مدرسہ امدادیہ مراد آباد میں قرآن کریم حفظ کر چکا تھا حضرت کے وصال کی اطلاع موصول ہونے پر مدرسہ میں تعطیل کر دی گئی تھی۔

۱۹۵۳ء میں جب یہ ناکارہ ہندو کالج مراد آباد میں ایف۔ اے کا طالب علم تھا تو اس زمانے میں احقر نے ایک خواب دیکھا کہ مراد آباد کی جامع مسجد میں ایک عالم دین وعظ فرما رہے ہیں احقر نے بحالت خواب کسی سے دریافت کیا کہ یہ وعظ فرمانے والے کون صاحب ہیں اس نے بتایا کہ یہ مولانا اشرف علی



صاحب ہیں یہ سن کر احقر والہانہ طور پر استیجاب کی جانب بڑھا حضرت حکیم الامتؒ اس وقت وعظ ختم کر چکے تھے۔ حضرت نے احقر کو اپنے سینے سے لگایا۔ ۱۹۶۲ء میں ناظم آباد نمبر ۲ میں رہائش اختیار کرنے پر احقر کو حضرت بابا نجم الحسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی زیارت کا شرف حاصل ہوا ۱۹۶۳ء سے ۱۹۷۶ء تک انکی مجالس میں برابر حاضر ہوتا رہا۔ اور حضرت بابا صاحب احقر کی تعلیم و تربیت فرماتے رہے ایک دن حضرت بابا صاحب کو یہ خواب سنایا۔ تو انہوں نے خواب سن کر فرمایا کہ تم کو روحانی طور پر حضرت حکیم الامتؒ نے بیعت کر لیا ہے۔

مرشدی و مولائی سیدی و سندی حضرت ڈاکٹر محمد عبد الحمی صاحب عارفی نور اللہ مرقدہ کی زیارت سب سے پہلے حضرت بابا صاحب ہی کے یہاں ہوئی۔ حضرت بابا صاحب کے آخری زمانے میں حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ تعالیٰ نے ہر پیر کو صبح مطب جلنے سے قبل بابا صاحب کے یہاں تشریف لانے کا معمول بنالیا تھا اور احقر بھی اس مجلس میں شریک ہوتا تھا۔ چنانچہ حضرت بابا صاحب کی وفات سے ۲ یوم قبل یعنی ۱۷ رمضان المبارک ۱۳۹۶ھ بروز پیر حضرت مرشدی حضرت بابا صاحب کے یہاں تشریف لائے احقر بھی اس مجلس میں حاضر تھا اور اسکے ۲ یوم کے بعد ہی یعنی ۱۹ رمضان المبارک کو حضرت بابا صاحب کا وصال ہو گیا۔ انا للہ وانا الیہ راجعون۔

حضرت بابا صاحب کے وصال کے بعد شوال ۱۳۹۶ھ سے احقر نے مرشدی حضرت ڈاکٹر صاحب کی مجالس میں جانا شروع کر دیا۔ اور حضرت والا نے ۲۵ شوال الکریم ۱۳۹۶ھ کو احقر کو باقاعدہ طور پر بیعت فرما کر سلسلہ میں داخل فرمایا۔ اور اس طرح حضرت والا کے ساتھ احقر کا تقریباً دس سال تربیت و اصلاح کا سلسلہ جاری رہا۔

حضرت والا کا انداز تربیت بالکل منفرد تھا اہل سلسلہ سے نہ چلہ کشی کرتے تھے اور نہ کوئی خاص مجاہدہ اس کے باوجود انکی ایسی تربیت ہوتی تھی کہ قلوب بدل جاتے تھے اور زندگی میں انقلاب پیدا ہو جاتا تھا۔ حضرت والا اکثر و بیشتر اپنی مجالس میں جائز و لینے پر بہت زور دیتے تھے اور فرمایا کرتے تھے کہ روزانہ رات کو سونے سے قبل دن بھر کے کاموں کا جائزہ لے لیا کرو کہ آج صبح سے شام تک کیا کیا کون سے نیک کام کئے اور کون سے گناہ سرزد ہوئے گناہوں پر استغفار اور نیکیوں پر اللہ کا شکر ادا کرو۔ حقیقت یہ ہے کہ یہ جائزہ کا عمل ایسا مجرب نسخہ ہے کہ اگر اس پر پابندی کے ساتھ عمل کیا جائے تو انسان سے بہت سے

گناہ خورد خورد چھوٹ جائیں گے۔ آخرت کا خوف ہمہ وقت مستحضر رہے گا اور خدا کے خوف کا وجہ سے گناہوں کا ارتکاب بہت کم ہوگا۔ حضرت والا نہ صرف اپنے اہل سلسلہ کو بلکہ دیگر لوگوں کو بھی نظام اوقات مرتبہ کرنے کی تلقین فرمایا کرتے تھے نظام الاوقات تعین کرنے سے سب کام آسانی کے ساتھ اپنے وقت پر ہو جاتے ہیں۔

ایک روز ایک مجلس خاص میں فرمایا کہ ۱۹۲۷ء میں حضرت حکیم الامتؒ سے بیعت ہوا تھا الحمد للہ جو معمولات اس وقت مقرر کئے تھے اب تک برابر جاری ہیں ایک دن بھی ناغہ نہیں ہوا۔ معمولات میں غیر حاضری اچھی چیز نہیں، فرماتے تھے کہ اگر وقت کی کمی یا ضروری مصروفیت کی وجہ سے معمول کے مطابق پوری نیکیاں پڑھنے کا وقت نہیں ہے تو کم کر کے ۲۲ مرتبہ پڑھ لیا کرو۔ اگر اتنا وقت بھی نہیں ہے تو ۱۱ مرتبہ پڑھو اور اگر اتنا بھی نہ ہو سکے تو ۷ مرتبہ یا ۵ مرتبہ حتیٰ کہ ۴ مرتبہ پڑھ کر ہی معمول پورا کر لیا کرو ناغہ نہیں ہونا چاہیے حضرت والا کا ہر عمل سنت کے مطابق ہوتا تھا اور سنت پر عمل کرنا حضرت کی عادت تانیہ بن چکی تھی۔ ایک دن فرمایا کہ کل مسجد سے نکلنے وقت بایاں پیر باہر نکالنے کے بجائے سہواً داہنہ پیر باہر نکل گیا فوراً مسجد میں دوبارہ داخل ہوا معمول اور سنت کے مطابق بایاں پیر باہر نکالا۔ نوافل اور مستحبات کی ادائیگی کے سلسلے میں حضرت والا کا عجیب ذوق تھا اور اپنے متولین کو یہی ذوق پیدا کرنے کی تلقین فرمایا کرتے تھے حضرت کا فرمانا تھا کہ اگر کسی دن اشراق اور چاشت کے نفل چھوٹ جائیں تو انکو ظہر کی نماز کے ساتھ یا جب بھی موقع ملے پڑھ لینا چاہیے حضرت والا نے یہ استنباط کھانے کی اس سنت سے کیا تھا کہ کھانا شروع کرنے سے قبل بسم اللہ پڑھنی چاہیے لیکن اگر شروع میں بھول جائیں تو درمیان میں جب بھی یاد آجائے بسم اللہ اولہ و بسم اللہ آخرہ پڑھ لینا چاہیے آپ نے فرمایا جب بھول جانے پر درمیان میں بسم اللہ پڑھی جاسکتی ہے تو اشراق اور چاشت کے نفل بھی وقت گزرنے کے بعد پڑھ لیا کریں۔

حضرت والا کے مزاج میں انتہائی سادگی اور تواضع تھی ہر ایک کے ساتھ انتہا درجہ کی محبت اور شفقت کا بڑا ذوق فرماتے تھے اور ہر ایک پر یہ خیال کرتا تھا کہ حضرت اس کو سب سے زیادہ چاہتے ہیں حضرت پر شفقت علی الامت کا غلبہ تھا ہر کس و نا کس کی غمخواری فرماتے تھے اور ہر ایک کے لئے دعا فرماتے تھے۔ جمہور اور پیر کو حضرت والا کے یہاں مجالس ہوتی تھیں جمعہ کے دن کا موضوع اصلاح معاشرہ ہوتا

تھا اور حقوق العباد کی ادائیگی پر انتہائی زور دیتے تھے معاملات کی صفائی کی تلقین فرماتے تھے فرمایا کرتے تھے کہ اسلام کے پانچ اجزاء ہیں عقائد، عبادات، معاملات، معاشرت اور اخلاقیات، فرماتے تھے کہ چار شعبوں کی تکمیل تو کتابوں سے ہو جاتی ہے جبکہ پانچواں شعبہ عمل تربیت کا طالب ہے اس کے لئے کسی اللہ والے کی صحبت اختیار کرنی ضروری ہے پیر کی مجلس ابتداء میں خواص کے لئے مخصوص تھی جس میں علماء حضرات کافی ہوتے تھے مگر بعد میں دیگر لوگوں کی درخواست پر حاضری کی اجازت دے دی تھی اور کوئی پابندی نہ تھی پیر کی مجلس میں مسائل تصوف بیان فرماتے تھے اور عجیب و غریب انداز سے انکی تشریح فرمایا کرتے تھے ایک دن فرمایا کہ ہمارے حضرت مولانا تھانوی رحمۃ اللہ فرماتے تھے کہ ہمارے یہاں اول فنا اور آخر فنا ہے فنایت کی تشریح فرماتے ہوئے ارشاد فرمایا کہ فنایت کا مطلب ہے ترک اعتراض یعنی کسی پر اعتراض مت کرو ناگوار امر پر صبر کرو اور ضبط سے کام لو اس ترک اعتراض کا آخر مقام یہ ہوگا کہ ہر ناگوار امر کو مشیت ایزدی پر محمول کرتے ہوئے ناگواری نہیں ہوگی جو کام بھی ہوگا اور جس طرح بھی ہوگا اسکو منجانب تصوف کرتے ہوئے خوش طبعی کے ساتھ قبول کر لو گے۔ اور یہی مقام فنایت ہے حقیقت یہ ہے کہ حضرت والا کے ملفوظات اتنے عارفانہ اور حکیمانہ رنگ لئے ہوئے ہوتے تھے کہ یہ علم کتابوں سے حاصل نہیں ہو سکتا۔

۲۲ مارچ ۱۹۸۶ء کو حضرت والا دارالعلوم بخاری شریف کے ختم میں بلوجود ضعف اور درد شکم تشریف لے گئے وہاں تکلیف اتنی بڑھی کہ ختم میں شرکت کے بغیر دارالعلوم سے مکان پر تشریف لے گئے۔ احقر بھی اس وقت دارالعلوم میں موجود تھا۔ مرض نے شدت اختیار کر لی اور بدھ کے دن صبح دس بجے حضرت والا کو الم رضیٰ بپتال ناظم آباد میں داخل کر دیا گیا شام تک طبیعت کافی سنبھل گئی باوجود پابندی کے احقر مغرب کی نماز سے قبل حضرت والا کی خدمت میں حاضر ہوا حضرت نے اسکی کھلیں کھولیں بہت آہستہ سے سلام کا جواب دیا احقر نے حضرت کے دست مبارک کو بوسہ دیا نصف شب کے بعد حضرت کی طبیعت زیادہ خراب ہو گئی اور تنفس کی تکلیف شروع ہو گئی قریبی مسجد سے اذان فجر شروع ہوئی جواب دینے کے لئے حضرت کے لب مبارک بچے اور اذان کے ساتھ ہی حضرت نے داعی اجل کو لبیک کہا و احسرتا! رشد و ہدایت کی پر شمع ۲۴ مارچ ۱۹۸۶ء مطابق ۱۵ رجب المرجب ۱۴۰۶ھ

یوم پنجشنبہ اذان فجر کے وقت گُل ہو گئی :

بقول حضرت حکیم محمد ابراہیم صاحب رزی ۵

ساقی نہیں تو درہم و برہم ہے مے کدہ

کوئی بھی بارہ خواروں کا پر ساں نہیں رہا

انکے قدم کے ساتھ گیا کیفِ زندگی

بے کیفِ زندگی کا بھی ساماں نہیں رہا

جس مے کدے میں چتا تھا دھڑلے شربِ عشق

اس مے کدے کا ساقی دوراں نہیں رہا

بارگاہِ ایزدی میں دستِ بدعا ہوں کہ اللہ تعالیٰ ہمارے حضرت والا کو اپنے قرب کا اعلیٰ

ترین مقام عطا فرمائیں اور ہم سب کو ان کی تعلیمات پر عمل کرنے کی توفیق عطا فرمائیں :

آمین ثم آمین



دینی معلومات کا حامل کرنا بھی نہایت اشد ضروری نہ کیونکہ بغیر اس مے کدے کی زندگی کا مقصد  
متعین نہیں ہوتا۔ چند کتابوں کا مطالعہ بہت اہم اور ضروری ہے مثلاً سیرت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم  
حالات صحابہ کرام رحمہ اللہ و حالات بزرگانِ دین، تاریخ اسلام، حضرت حکیم الامت شاہ محمد اشرف علی صاحب  
تھانوی قدس سرہ العزیز کی تصانیف خصوصاً موافق و مطہرات، ہفتی زیور وغیرہ ان کے مطالعہ  
سے دین و دنیا کی بہت کراۓ قدر کافی و شافی معلومات حاصل ہوتی ہیں بغیر ان کے بے مصرف کتابیں  
مثلاً اخبار، ناول، رسالے وغیرہ پڑھنے میں وقت ضائع نہ کرنا چاہیے ان سے قلب میں ظلمت  
اور عقل و فہم میں پستی پیدا ہوتی ہے۔ اور دوسرے مذاہب کی کتابیں تو ہرگز نہ پڑھنا چاہئیں کیونکہ بغیر  
اپنے مذہب کے علم کے راسخ ہونے کے دوسرے مذاہب کے عقائد اور تصوف سے فہم و فہمیت  
ہوتا ہے اور گمراہی کا اندیشہ ہے۔ اپنے مذہب میں اگر کوئی شک و شبہ پیدا ہو تو نہ ور کسی اہل علم  
سے حل کر لینا چاہیے۔

(از: افادست عارفیہ)



• جناب مظفر احمد اشرف صاحب

حضرت والا

حضرت سیدی دندی ڈاکٹر محمد عبدالحی عارفی قدس اللہ سرہ کے ملفوظات بجز اللہ مختلف ذرائع سے شائع ہوتے رہے ہیں اور انشاء اللہ تعالیٰ مدت مدید تک شائع ہوتے رہیں گے۔ بہت سے ملفوظات بذریعہ ٹریپ محفوظ کر لئے گئے ہیں لہذا مندرجہ ذیل سطور میں جو باتیں کہی جا رہی ہیں وہ غالباً کسی نہ کسی عنوان سے شائع بھی ہو چکی ہوں گی پھر بھی چونکہ حضرت والا قدس سرہ کے سوانح اور ارشادات پر "البلاغ" ایک خصوصی شمارہ شائع کر رہا ہے اور غالب ناظم صاحب نے اس ناچیز سے بھی ایک مضمون لکھنے کی فرمائش کی ہے لہذا میں بھی چند سطور حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ سے متعلق لکھ رہا ہوں۔

یوں تو حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی شان تربیت کے بے شمار پہلو ایسے ہیں جو اپنی اپنی جگہ پر نہایت ہی اعلیٰ اور نادر الوجود ہیں۔ لیکن اس وقت میں حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی شان تربیت کے دو پہلوؤں کا ذکر کرنا چاہتا ہوں جن میں حضرت والا منفرد نظر آتے ہیں۔ ایک تو حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی سادگی اور بے تکلفی دوسرے حضرت والا کی بے انتہا شفقت اپنے متنبین پر بلکہ تمام مسلمانوں پر۔ سادگی اور بے تکلفی میں حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ اپنے شیخ حضرت مولانا اشرف علی تھانوی رحمۃ اللہ علیہ کے نقش قدم پر چلتے ہوئے رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے اس اسوہ پر عمل پیرا تھے جس کا ذکر قرآن شریف میں "وما افان من متکلفین" کے الفاظ سے کیا گیا ہے اور

شفقت و رافت میں سید الکونین حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی اس سنت کی پیروی کی روشن مثال تھے جسے قرآن شریف میں ”عَرِضٌ عَلَيْكُمْ“ کے الفاظ سے بیان فرمایا گیا ہے۔ مندرجہ ذیل سطوحان ہی دو خصوصیتوں کو واضح کرنے کے لئے لکھے جا رہے ہیں۔

حضرت والارحمۃ اللہ علیہ ہر معاملے میں سلوک پسند تھے۔ لباس کے معاملے میں ہمیشہ خود بھی سادگی پسند رہے اور اپنے متبعین سے بھی یہی چاہتے تھے کہ لباس میں سلوک اختیار کریں، عبا، چغہ، یا ایسا لباس جس کے پہننے میں تکلیف ہو نہ خود کبھی پہنا نہ اپنے متبعین کے لئے پسند فرمایا۔ نشست و برخاست میں بھی بے تکلفی تھے۔ اپنے قریب بیٹھنے والے خدام کا باادب ہو کر مثلاً دو زانو ہو کر بیٹھنا پسند فرماتے اور فرماتے ”آرام سے بیٹھو“ گفتگو میں بھی بے انتہا سادگی اور بے تکلفی تھی۔ نہ ایسا معلوم ہوتا تھا کہ کوئی بہت بڑے عالم یا بہت بڑے صوفی بول رہے ہیں نہ ہی بہت متواضعانہ گفتگو فرماتے۔ بلکہ اگر کوئی تواضعاً کہتا کہ ہم تو بہت گنہگار ہیں تو اس کو نا پسند فرماتے تھے۔ فرمایا کرتے تھے کہ یہ کہنا کہ ہم گنہگار ہیں بہت بری بات ہے۔ کیوں ہو گنہگار؟ گنہگار ہونا کوئی اچھی بات ہے؟ تو ہر کوئی پاک صاف ہو جاؤ گے۔ حضرت والا کی اس سادگی کی وجہ سے کئی نوجوانوں کو دھوکہ ہو جاتا تھا کیونکہ عام طور سے جن چیزوں کو بزرگی کی شان سمجھا جاتا ہے وہ حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کے ہاں نہیں تھیں۔ اسی طرح کے ایک صاحب جو عالم بھی ہیں اور کسی بزرگ کے سلسلے میں مجاز بھی ہیں جب حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت میں پہلی دفعہ حاضر ہوئے تو بہت متاثر نہیں تھے لیکن کئی سال بعد حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کے وصال کے بعد جب میری ان سے ملاقات ہوئی تو کہنے لگے کہ حضرت والا ولادت محمدی پر فائز تھے اور بہت دیر تک حضرت والا کی مدح سرائی کرتے رہے۔

حضرت والا کا معمول تھا کہ عصر کی نماز کے بعد کچھ دیر توقف فرمانے کے بعد تقریر فرماتے تاکہ لوگ جمع ہو جائیں۔ کبھی کبھی ہم خدام بھی عرض کرتے کہ کچھ تاخیر سے گفتگو شروع فرمائیں تاکہ زیادہ دیر تک بولنے کی وجہ سے تعب نہ ہو۔ اس مشورے کو قبول فرما کر حضرت والا خود ہی فرماتے تھے کہ شروع کرنا تو اپنے اختیار میں ہوتا ہے ختم کرنا اپنے اختیار میں نہیں ہوتا۔ نماز اور تقریر شروع کرنے کے درمیان جتنا وقفہ ہوتا اتنی دیر حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ اپنے قریب بیٹھے ہوئے خدام سے ہلکی ہلکی باتیں کرتے رہتے۔ کبھی کسی کی خیریت دریافت فرماتے کبھی کسی کے استفسار پر اپنی خیریت بتاتے۔ آخری زمانے میں جب حضرت والا کو اکثر بھوک نہیں لگنے کی اور کمزوری اور حرارت کی شکایت رہتی تھی ایک دن اس احقر نے مزاج پررسی کی۔

جواب میں حضرت والا نے ایک ایسا شعر پڑھا جس کا اثر حضرت والا کے خدام پر کیا پڑا ہوگا یہ بتانے سے تعلق نہیں رکھتا۔ جس نے بھی سنا اس پر رقت طاری ہو گئی۔ حضرت والا نے فرمایا :-

حال میرا نہ پوچھئے زندہ ہوں اور کیا ہوں

نیند سی آرہی ہے کچھ آنکھ ابھی لگی نہیں

یہ واقعہ تو یوں ہی یاد آگیا اس لئے لکھ دیا۔ مذکورہ حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی سادگی اور بے تکلفی تھا۔ نماز عصر اور تقریر کے درمیان کا یہ مختصر وقفہ ایسا ہوتا تھا جس میں حضرت والا عام روزمرہ زندگی کی باتیں فرماتے تھے۔ کبھی اپنی تالیف کے بارے میں کبھی کسی تازہ موضوع گفتگو پر۔ اس گفتگو میں حضرت والا کے بہت زیادہ رعب کے باوجود حضرت والا کے خدام بھی حستہ لیتے تھے۔ ایک مرتبہ اسی وقفہ میں حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ نے بہت سے اشعار معرفت کے سنائے۔ بہت سے اشعار سننے کے بعد حضرت والا نے ایک عالم دین کو جو حضرت والا کے پاس بیٹھے ہوئے تھے مخاطب کر کے فرمایا "یہ کیا ہو رہا ہے مولوی صاحب ؟ مشاعرہ ہو رہا ہے ؟" یہ سادگی اور بے تکلفی ہر جگہ نمایاں تھی۔ ایک بار احقر نے اپنے کسی عزیز میں کوئی بات پوچھی جس کا تعلق کسی فقہی مسئلے سے بھی تھا۔ حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ نے اس کا شافی جواب دیتے ہوئے ارقام فرمایا کہ یہ بات میں حضرت مفتی صاحب (یعنی حضرت مفتی محمد شفیع قدس سرہ) سے پوچھ کر لکھ رہا ہوں۔ اس طرح حضرت قدس سرہ اپنی تصانیف کو شائع ہونے سے پہلے کئی علماء کو (جو حضرت والا ہی کے خدام میں سے ہیں) دکھلا دیتے تھے اور اگر کسی کی تصحیح رائے ہوتی تھی تو قبول فرما لیتے تھے۔

حضرت والا اکثر فرمایا کرتے تھے کہ متقی مت جو جب کا مطلب یہ تھا کہ اپنے تقویٰ کا اظہار مت کرو۔ ایک بار اسی سلسلے میں فرمایا کہ عذر تو کر سکتے ہو کہ میرے پیر میں دروہے ..... یہ تو کہہ سکتے ہو کہ مجھے عذر ہے ڈاکٹر نے بتایا ہے کہ فلاں چیز کے شوربے کے کچھ نہیں کھا سکتے ہو (لیکن یہ نہیں کہو کہ ایسا کھانا تقویٰ کے خلاف ہے اس لئے میں نہیں کھا سکتا) فرمایا "میرے ایک دوست ڈاکٹر صاحب نے مجھے میلاد کے لئے بلایا۔ وقت نوبت کا تھا۔ میں آٹھ بجے پہنچ گیا۔ وہاں لوگ انتظامات میں لگے ہوئے تھے۔ ڈاکٹر صاحب نے پوچھا کہ وقت نوبت کا تھا تم آٹھ بجے کیسے آ گئے۔ میں نے کہا کہ مجھے کچھ کام تھا۔ تو سوچا پہلے ہی ہواؤں۔ محل میلاد کی برکت میں تو شریک ہو ہی گیا۔ کہنے لگے تم بہت فی مین آدمی ہو۔

نہیں شریک ہونے کا بہانہ بنا لیا ہے۔ میں نے کہا بہانہ ہی سمجھ لو۔ بہر حال میں شریک ہونے کے قابل نہیں ہوں۔“ اسی مجلس میں اپنے شیخ رحمۃ اللہ علیہ کے ایک واقعہ کا بھی ذکر کرتے ہوئے فرمایا ”ہمارے حضرت والا ایک دعوت میں گئے۔ وہاں ہماری طرف کے دیہاتوں میں ہوتا تھا کہ لوگ ملاؤ نکالنے کے لئے نئی چادریں دھو کر دیتے تھے اور لوگ اس سے کرائے پر وہ لے لیتے تھے اور بطور دسترخوان کے استعمال کرتے تھے۔ حضرت کے ساتھ ایک صاحب بھی تھے وہ کہنے لگے کہ اس پر تو کھانا ناجائز ہے۔ حضرت نے فرمایا کہ چپ چاپ سے کھاؤ۔ یہ تبلیغ کا موقع نہیں ہے۔ حضرت نے اس چادر پر اپنا رومال بچھا دیا اور کہا کہ اس کچم کھا لیتے ہیں۔ بعد میں تقریر میں خوب کھول کر بیان کیا کہ یہ ناجائز ہے۔ اس میں یہ خرابی ہے۔ یہ خرابی ہے۔“

اپنے متبعین پر حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی شفقت یوں تو بہت بات میں ظاہر ہوتی رہتی کہ کتنی دلسوزی سے نصیحت فرما رہے ہیں اور کام کی بات کو بار بار مختلف پیرایوں سے دہرا دہرا کر کہہ رہے ہیں۔ لیکن میں یہاں حضرت کی شفقت خاصہ کے دو پہلوؤں کا ذکر کر دوں گا۔ ایک تو یہ کہ حضرت والا اپنے متبعین کے لئے ہر معاملے میں آسانی چاہتے تھے اور نفس کو مزہ اور مزین کرنے کے آسان سے آسان نسخے بتاتے رہتے تھے جسکے جو مناسب حال ہوتا تھا۔ دوسرے حضرت والا کی شدید خواہش رہتی تھی کہ اپنے زیر تربیت لوگوں کو بلکہ جو بھی مسلمان حضرت والا سے ملنے آئے اسکو کچھ نہ کچھ فائدہ پہنچاتے رہیں۔ دو منٹ کے لئے بھی حضرت والا کی خدمت میں حاضری ہوتی تھی تب بھی حضرت والا کوئی نہ کوئی ایسی بات فرما دیتے تھے جو سننے والوں کے لئے مفید ہوتی تھی۔

حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ نے پوری طریقت کا خلاصہ بار بار مختلف طریقوں سے بھی بتلایا کہ اللہ تعالیٰ سے صحیح اور قوی تعلق پیدا کرو۔ اس کے لئے قوی مجاہدوں کے بجائے آسان طریقے بتلاتے رہتے تھے۔ مثلاً ایک مرتبہ جب حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کے پاس صرف تھوڑے سے لوگ بیٹھے تھے حضرت والا نے فرمایا: جائزہ لے لیجئے اپنے تمام کاموں کا۔ کاغذ پر لکھ لیجئے۔ عبادات سے متعلق ہوں۔ گھر والوں سے متعلق ہوں۔ دفتر سے متعلق ہوں۔ پھر دیکھئے کہ کیا کیا امور اختیاری ہیں اور کیا کیا غیر اختیاری ہیں۔ پھر جو اختیاری ہوں ان میں نرمی کے ساتھ تدبیر کیجئے اور دعاء۔ اور جو غیر اختیاری ہوں ان میں دعاء..... پیش کر دیجئے اللہ میاں کے سامنے۔ جن چیزوں پر ہمارا زور نہیں ہے اور اپنے سامنے دیکھ رہے ہیں فواہشات





جانا ہو۔ کیونکہ حضرت والا بار بار اس کی تاکید فرماتے تھے کہ معمولات کو ناغہ نہ کیا جائے۔ اکثر فرماتے تھے: ”وقت پر کام کرنے کی عادت ڈال لو۔ پھر وقت خود کام کر لیتا ہے۔“

ایک بار حضرت والا نے فرمایا کہ پہلے زمانے میں شب بیداری ہوا کرتی تھی۔ آج کل کے زمانے میں سونا عبادت ہے۔ چونکہ یہ گفتگو چند احباب کے سامنے ہو رہی تھی اور اس ناچیز کو حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی بے انتہا شفقتوں نے بے تکلف بنا دیا تھا اس لئے احقر نے عرض کیا کہ سونا ویسے بھی مہنگا ہو گیا ہے۔ حضرت والا نے فرمایا کہ جی ہاں سونا بہت مہنگا ہو گیا ہے۔ ہمارے زمانے میں، اگر روپے تولہ ہوتا تھا۔ اسی مجلس میں جو غالباً رمضان شریف کا مہینہ تھا ایک ایسا نسخہ بتایا اللہ تعالیٰ کی رحمتوں کو متوجہ کرنا جو شب بیداری کی کمی کو پورا کر دینے کے لئے کافی ہے۔ فرمایا کہ صاحب ایمان کا ایک ایک لمحہ عبادت ہے اگر وہ اپنے کو مباحی سے، گناہ سے بچائے۔..... بیٹھ جاؤ مسجد میں عصر سے مغرب تک اور سوچ غروب ہونے سے ۱۵ منٹ پہلے یا کم از کم دس منٹ پہلے اللہ تعالیٰ کے سامنے پیش کردہ ایک ایک چیرا پی۔ ایک ایک معاملہ پیش کر دو۔.....

حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ نے تعلق مع اللہ پیدا کرنے کے لئے اور اس کو قوی کرنے کے لئے اسی طرح کا ایک اور نسخہ کئی بار اپنی مجلسوں میں بتلایا کہ رات کو سونے سے پہلے اپنے آپ کو تمام کاموں سے فارغ کرنے کے بعد لیٹ جاؤ اور سوچو کہ اللہ تعالیٰ کے کتنے انعامات رہے تم پر ایمان عطا فرمایا، عافیت عطا فرمائی، اسی طرح یاد کرتے رہو اور پھر سوچو کہ تم سے کیا کیا گناہ سرزد ہوئے، آنکھوں کے، زبان کے، جو نعمت یاد آئے اس پر شکر ادا کر دو اور جو گناہ تم سے سرزد ہوئے ہوں ان سے توبہ کر دو۔ صرف دس منٹ۔ روز کر دینے کا کام اور پھر صبح کو تھوڑی دیر کے لئے اسی طرح اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کو یاد کر لو سرسری طور پر۔

ایک بار حضرت والا نے ایک اور نسخہ جو صرف ایک منٹ کا ہے عطا فرمایا۔ اس سے زیادہ آسانی اور کیا ہوگی کہ روزانہ صرف ایک منٹ کا مجاہدہ ہے۔ فرمایا کہ بیٹھ جاؤ تنہا میں۔ اللہ میاں کے سامنے اور ایک منٹ تک یا زیادہ سے زیادہ دو (یا تین) منٹ تک کہتے رہو کہ ”یا اللہ آپ ہیں اور میں ہوں، آپ ہیں اور میں ہوں۔ میں ہوں اور آپ ہیں۔“

حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی شفقت کا ایک مظہر یہ بھی تھا کہ اگر دو منٹ کے لئے بھی کوئی حضرت کی خدمت میں حاضر ہوتا تھا تو اس سے کوئی نہ کوئی ایسی بات فرمادیتے تھے جو اس کی دنیا اور

آہستہ کی فلاح کا باعث ہوتی تھی۔ کوئی شخص سفر پر جا رہا ہو اور محنت ہونے والا حضرت کی خدمت میں پہنچا ہو کسی شخص نے حضرت والا کے کسی جاننے والے کا خط لاکر دیا۔ یا کوئی شخص کسی خوشی میں حضرت والا کے پاس مٹھائی کا ڈبہ لے کر آیا۔ ان سب موقعوں پر ملاقات تو صرف چند منٹ کی ہوتی تھی مگر حضرت والا نصیحت کے چند کلمات ضرور فرمادیتے۔ اکثر اپنے شیخ کا یہ قول نقل فرماتے تھے کہ وہ لمحات زندگی کس کام کے جو کسی کی خدمت میں صرف نہ ہوں۔ ایک بار حضرت والا مجلس صیانت المسالین کے جلسے میں شرکت کیلئے لاہور تشریف لے گئے۔ یہ ۵ جولائی ۱۹۷۹ء کی بات ہے۔ حضرت والا نے جامعہ اشرفیہ میں قیام فرمایا۔ یہ ناچیز بھی اسلام آباد سے لاہور پہنچ گیا۔ حضرت کی خدمت میں مزاج پرسی کے لئے مختصر سی حاضری ہوئی۔ فرمایا جب دو چیزوں میں سے کسی ایک چیز کا فوت ہونا لازمی ہو تو جس بات کا تلافی ممکن نہ ہو اس کو اختیار کر لیا جائے۔ جیسے میں کراچی سے لاہور آ رہا تھا۔ لیکن خیال تھا کہ بہت دور جانا ہے۔ گری کا زما نہ ہے۔ بڑی تکلیف ہوگی لیکن دوسری طرف یہاں کے دوستوں کا بھی اصرار تھا مجلس میں بھی شریک ہونا ضروری تھا تو اب میں نے دیکھا کہ عافیت کا کیا ہے بعد میں آرام کر لیں گے اور مجلس اگر فوت ہوتی ہے تو یہ پھر ہاتھ نہیں آئے گی۔ اس لئے میں چلا آیا۔

اسی روز جب حضرت والا کہیں جانے کے لئے مدرسے سے باہر نکل رہے تھے اور یہ خادم اور دو تین اور خدام ساتھ تھے تو باہر نکلتے وقت حضرت والا نے فرمایا کہ الحمد للہ موسم بہت اچھا ہے با دل آئے ہوئے ہیں۔ بارش بھی نہیں ہوئی ہے تو اللہ میاں نے سب کچھ ہمارے ہی لئے کیا ہے۔ پھر تھوڑے وقفے کے بعد فرمایا کہ کیا ہوگا اور دنیا کے لئے بھی لیکن ہمیں اس سے کیا۔ ہم تو سمجھتے ہیں کہ یہ سب انتظام اللہ میاں نے ہمارے ہی لئے کیا ہے جب تک یہ احساس نہیں ہوگا شکر کیسے ادا ہوگا۔

اس طرح کے بے شمار واقعات ہیں جن سے حضرت والا کی شفقت کا پتہ چلتا ہے۔ لیکن مناسب معلوم ہوتا ہے کہ اب اس مضمون کو ختم کیا جائے اور اختتام سے پہلے حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کی خدمت میں جو اس ناچیز کی آخری حاضری ہوئی ہے، اس کا ذکر کر دوں۔ حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ اتوار ۲۳ مارچ ۱۹۸۶ء کا صبح سے علیل ہوئے جبکی اطلاع اس ناچیز کو تیسرے دن صبح کو ملی۔ اسی دن شام کو حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کے دولت کدہ پر حاضر ہوا۔ حضرت رحمۃ اللہ علیہ کی طبیعت چونکہ زیادہ خراب تھی اس لئے خدام باہر کے کمرے میں جمع تھے۔ ایک دو خاص حضرات کو اندر بار بار بھیجی گئیں۔

نے اس خیال سے کہ نہرت کو تکلیف نہ دی جائے کسی سے اندھ جانے کی درخواست نہیں کی۔ کچھ دیر کے بعد معلوم ہوا کہ حضرت رحمۃ اللہ علیہ کو اب کچھ افاقہ ہے۔ برادرِ مستحسن صاحب سلمۃ اللہ عزز نے فرمایا کہ جی چاہے تو آپ بھی اندر چلے آئیں۔ چنانچہ میں انکے ساتھ اندر چلا گیا۔ حضرت دار پناہ کے میں چار پائی پر جس پر سفید بستری بچھا ہوا تھا بیٹھے ہوئے تھے۔ دو تین خدام پائنتی میں چوں پر بیٹھے ہوئے تھے۔ حضرت والا کا سر غالباً دو تکیوں پر تھا یعنی کچھ اٹھا ہوا تھا۔ میں نے کر دھ میں پہنچ کر سلام عرض کیا۔ حضرت دار رحمۃ اللہ علیہ نے سلام کا جواب دیا اور مصافحہ کیا۔ مجھے دیکھتے ہی ارشاد فرمایا "ما شاء اللہ آپ بھی آگئے" میں نے عرض کیا کہ مجھے آج ہی کسی سے حضرت کی عدالت کی اطلاع ملی۔ حضرت والا نے فرمایا "اسی صفت یہ ہے دوسرے کو اطلاع ہو جاتی ہے" حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ نے میرا ہاتھ پکڑے ہوئے فرمایا "تین دن بیعت بہت خراب رہی۔ بہت تکلیف میں رہا۔ اب تو بیعت ما شاء اللہ ٹھیک ہے..... وقت تو گزر رہا ہے۔ اللہ تعالیٰ سے پناہ مانگتے رہنا چاہیئے..... ذرا سی دیر میں آدمی کی حالت بد ہو جاتی ہے۔ کیا ہے؟" ہو جاتی ہے

جو وقت بھی سکون سے گزرے نہ ہے نصیب

کیا اعتبار گردشیں ہیں ونب کا



اپنے گھر کے ماحول کو ماحولِ اسلامی بنانا چاہیئے اور غمخوار نہیں اس سے عقل بیکار ہو جائیں گی اور اس سے دین و دنیا کے بے شمار مفاسد پیدا ہوں گے۔ اپنا رہنا، سنا، لباس پہنا کر، کھانا پینا سب ترعت و سنت کے مطابق ہونا چاہیئے، کلمہ کے استعمال کا سامان بھی سادہ اور پاب و حاف ہونا چاہیئے۔ حیثیت سے زیادہ قیمتی سامان پر محض فحاشی کے لئے ہر اس کا متیار کرنا اسلافِ نبی ہے اور پریشانی کا باعث ہو رہا ہے۔ کیوں؟ میت اس کی حفاظت کا خیال رکھنا پڑتا ہے کبھی ان میں اضافے کی ہول اور کبھی ان سے قرب ہو جانے کا خدشہ قلب کو مشترک رکھتا ہے۔ قناعت کو ضروری سامان ہی میں نصیب رہی ہے بھڑکی تہذیب کی لعنت ہمارے معاشرے کو اس قدر مسموم کرتی جا رہی ہے کہ ہم غیر شعور کی طور پر اس میں مبتلا ہو کر اپنے شمار اور شعورِ اسلامی سے محروم ہوتے جا رہے ہیں۔ دیندار اسلامی و راہبیت غامضانی اور لوازمات شرافت کو ضرور برقرار رکھنا چاہیئے۔ وہ دنیا میں بھی خورس ہے اور آخرت میں بھی خورس ہے اگر انہی کا پر غور کیا جائے تو یہ بات خود عقل تسلیم کرے گی۔ ارفاق ذات عاجلہ



# آشوات بر حیا فدی و طاب الاشکال

خانوادہ اعدایہ اشرقیہ تھانوی سلسلۃ الذہب کا ایک اور درخشندہ ستارہ غروب ہو گیا۔  
عارف باللہ ڈاکٹر مدد علی صاحب عارف رحمۃ اللہ علیہ ۱۵ ربیع الثانی بوقت فجر مؤذن کی اذان کا  
بواب دیتے ہوئے سوئے آخرت رحلت فرما گئے۔ انا للہ وانا الیہ راجعون۔

حضرت ڈاکٹر صاحب کے ایک خادم خاص جو آخری وقت انکی بالیں پہ کھڑے تھے انکا بیان  
ہے کہ جیسے ہی مؤذن نے اذان ختم کی حضرت کی زبان کی حرکت ہی بند ہو گئی اور اسی دم روح جسے عنصری  
سے پرداز کر گئی۔ سبحان اللہ حسن خاتمہ کا یہ ایمان افروز منظر کہ جب دم نکلا تو زبان پر اس کا نام  
تھا۔ اللہ تعالیٰ اپنے محبوبین اور مقبولین بندوں کے حسن خاتمہ کا عینی مشاہدہ اس طرح کرا دیتے ہیں۔ نماز  
جنازہ اور تدفین کا منظر بھی عجیب تھا کہ خلق خدا پر دانہ دار کندھا رنے اور مٹی دینے کے لئے ٹوٹی پڑی  
تھی، بقول حضرت مولانا مشرف علی صاحب تھانوی رحمۃ اللہ علیہ  
یہ رحلت ہے جہاں سے آج کس محبوب عالم کی

گری جاتی ہے خلقت ضمع پر ہم مثل پروانہ  
فجواک اذان کے دات حضرت دنیلے رحمت ہوئے اور جیسے ہی تدفین تکمیل کو پہنچی تو دالہ العلوم

کی مسجد سے عصر کی اذان فضا میں گونج رہی تھی گویا کہ فجر سے عصر تک مسکے وقفہ میں ”احکام میت“ کے مؤلف نے اس دار فانی کے سب مراحل سفر طے کر لئے تھے۔ کل من علیہا فان و یبقی وجہہ و قلبہ  
ذوالجلال والا کوام۔

خانقاہ تھانہ بمون کہتے یا بجنوان دیگر ”دکان معرفت“ جہاں ایک بورینشین نے اپنی چھوٹی سی سہ دری میں مسندِ رشد و ہدایت پر بیٹھ کر علوم و معارف اور حقائق و حکیم کے وہ عظیم الشان کارنامے انجام دیئے کہ عقل حیران ہے۔ ایک قلیل وقت میں اس قدر کثیر و مجہ گہر دینی خدمت انجام دی جو ایک عام بشری قوت سے باہر ہے تا وقتیکہ تا یغیبی نہ ہو: ذلک فضل اللہ یؤتیه من یشاء:  
یہ بعض اللہ کا فضل ہے اور اس مجددِ وقت، حکیم الامت، مئی اسٹہ حضرت مولانا شاہ محمد اشرف علی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی ایک کرامت ہے کہ تجدیدِ دین، احیاء السنۃ، اصلاحِ باطن، تبلیغ و دعوت، نشر و اشاعت، درس و تدریس، افتاء و مواظبہ و محفوظات، ازالہ شکوک و اہلِ اہل، تخریبِ رسوم و شرک و بدعات، غرضیکہ شریعت و طریقت کا کوئی گوشہ ایسا نہ تھا کہ جس کو حضرت تھانویؒ نے مجاہد و مصطفیٰ نہ کر دیا ہو۔

نئے فننے اٹھے اور اُٹھ کے تفسیریں بدل ڈالیں

مگر تو نے مسدودوں کی تقدیریں بدل ڈالیں

ایک ہزار سے زیادہ تصانیف و تالیفات کا ایسا بیش بہا گنجینہ گراں قدر از قبیلِ باقیاتِ الصالحات ترکہ میں چھوڑا کہ طالبینِ حق تا قیامت اس سے فیض یاب ہوتے رہیں گے۔ انشاء اللہ تعالیٰ۔  
اسی ختمِ خانہ اشرفی سے عارفین و کاملین و تواہب کی ایک نابغہ روزگار جماعت سیراب ہو کر مشرق و مغرب اور عرب و عجم میں پھیل گئی کہ جس نے حضرت حکیم الامت کے طریق اور مسلک کو عام کیا۔ علاوہ مریدین و متبیین کی کثیر تعداد کے تقریباً ایک سو تین ”مجازین“ نے اپنے شیخِ کان کے ذوق و طریق کی ترویج و اشاعت کی۔ ان ہی میں سے ایک مایہ ناز ہستی حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کی ذات تھی۔ اس نااہل اور ناکارہ کا تعلق حضرت سے کم و بیش تینس پینتیس سال رہا لیکن افسوس کہ وہی کہنا پڑتا ہے جو آج ان کے ہر خادم کی زبان پر ہے کہ نہ انکو پہچانا نہ انکی قدر کی۔ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کا ایک شعر بالکل اپنے حسبِ حال ہے۔

ایک بھی تو نہ ہوا حق محبت پورا

ہم سمجھتے تھے نہ ہم بھی ہیں وفاداروں میں

لیکن قدر گوہر شاہ بداند یا بداند جوہری۔ حضرت ڈاکٹر صاحب کے قدر دانوں میں انکے ایک پیر بھائی اور اپنے وقت کے مفتی اعظم حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب صمیم فرما گئے ہیں کہ ”حق تعالیٰ نے حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے فیوض و برکات کو مسلمانوں میں عام کرنے کے لئے ہمارے محترم ڈاکٹر صاحب کو جن یا جے“ (ما نغذاز تقریظ اثر حکیم الامت)

یہ وصف اجتنابیت من جانب اللہ، حضرت ڈاکٹر صاحب کی اپنے معاصرین میں ایک امتیاز اور موہوبہ نعمت ہے۔ وہ خود بھی بارہا اپنی مجالس میں فرمایا کرتے تھے کہ ”اس میں کوئی فخر و مباہات کی بات نہیں ہے بلکہ تحدتِ نعمت کے طور پر عرض کر رہا ہوں کہ اللہ تعالیٰ نے مجھ ناکارہ سے حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ کے ذوق کو عام کرنے میں جو کام لیا ہے وہ آئندہ شاید کوئی نہ کر سکے گا“ یہ بھی فرمایا کرتے تھے کہ ”میرے یہ باتیں سن لو پھر کوئی سنانے والا بھی نہ ملے گا۔ حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ نے اپنے شیخ و مرشد کے ذوق کو صمیم اور اصلی رنگ میں دکھایا اس کام کے لئے وہ منہاج اللہ مامور تھے۔ چنانچہ الحمد للہ انہوں نے بذریعہ اپنی تحریر و تقریر و مجالس یہ حق بحسن و خوبی ادا کر دیا۔ ”ماثر حکیم الامت“ ”بصار حکیم الامت“ ”عارف حکیم الامت“ ”اصلاح المسلمین“ ”معمولاتِ یومیہ“ اور ”افادات عارن“ اس دعویٰ پر شاہد ہیں چنانچہ خود ہی فرماتے ہیں:

میں نے ساری عمر کی ہے خدمت پر مغاس

مجھ سے پوچھو میکہ کی زندگی ہوتی ہے کیا

”ماثر حکیم الامت“ کی تصنیف پر نکالنا زحق بجانب تھا کیونکہ جس شان و نوعیت کی یہ سوانح حیات ہے اس میں وہ منفرد ہے۔ فرماتے تھے کہ خاتماۃ نساء ہوں میں حضرت والا کی مجلس میں بیٹھنا نوٹ لگتا رہتا تھا۔ تن سے شام تک کے تمام معمولات اور حضرت حکیم الامت کے قواعد و ضوابط نوٹ کر لیتا تھا۔ جب ہندوستان سے ہجرت کر کے حضرت ڈاکٹر صاحب پاکستان تشریف لائے تو یہ تحریریں یادداشتیں بھی ساتھ آئیں لہذا اس زمانہ کی تحریر کردہ یادداشتوں پر ”ماثر حکیم الامت“ کو مرتب کیا ہے۔ فرمایا کہ ”ماثر حکیم الامت“ کے مطالعہ سے آئندہ آنے والی نسلوں کو اس بند العصر کی جائے قیام اور نشست و برخاست کا نقشہ و

خاکہ انشاء اللہ بہت سبق آموز ہوگا۔ خانقاہ کا محل لکھتے وقت معمولی معمولی جزئیات پر حضرت کی نظر پڑی ہے مثلاً ایک جگہ تحریر فرماتے ہیں کہ خانقاہ کے دروازہ میں جب داخل ہوئے تھے تو اندر داخل ہونے پر ایک گلیارہ کے آخری سب سے پہلے بائیں ہاتھ کی طرف ایک درجہ میں استنجے کے لئے مٹی کے ڈھیلے بھرے رہتے تھے اور شراعت کے بعد ڈھیلے دیں ایک کونڈے میں ڈال دینے جاتے تھے۔ بادی النظر یہ شاید کوئی اعتراض کرے کہ ایک مجددی سوانح میں استنجے کے ڈھیلوں کے ذکر کا کیا موقع؟ لیکن حقیقتاً یہ عبارت کا پہلا باب ہے۔ اس کے برعکس جب تصویر کا دوسرا گوشہ ”مقام مسند“ کے عنوان سے پیش کرتے ہیں حضرت حکیم الامتؒ کی مجلس کا وہ نقشہ سامنے آجاتا ہے، مآثر کا معائنہ کرنے والا یہ کتبہ ”کاش“ ہم نے بھی نہیں دیکھا ہوتا۔ غرضیکہ اپنے شیخ کی مجلس و مسند و معمولات، اور نظم و ضبط کا ایسا فوٹو صفحہ قرطاس پر آتا رہا ہے کہ قاری یہ محسوس کرتا ہے گویا کہ وہ خود خانقاہ میں موجود ہے۔

اسوہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی مقبولیت انھیں من الشمس ہے ایشین پر ایشین طبع ہوتے ہیں اور ختم ہو جاتے ہیں مختلف زبانوں میں ترجمے ہو گئے ہیں عاتقہ امسلمین کو دنیا نفع اس کتاب سے جیسے پہنچ رہا ہے اسی طرح ناشرین کو بھی مال منفعت حاصل ہو رہا ہے۔ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے بھی حضرت حکیم الامتؒ کی تعظیم میں کوئی حقوق اپنی تعصبات یا اپنے لئے یا اپنے دربار کے لئے محفوظ نہیں کئے ہیں۔ ہر شخص کو طبع کرانے کی اجازت ہے۔ فرمایا کرتے تھے کہ ”اسوہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم خزانہ ہے اور معمولات و یومیۃ اسکی کنجی ہے۔ دونوں کتابوں کے لئے بار بار فرمایا کہ یہ بارگاہ نبوی میں مقبول ہو چکی ہیں۔ بعض ثقہ حضرات کے مبشرات منامیہ اور مکاشفات بھی اس بات پر شاہد ہیں۔

حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کی تصانیف اور تالیفات پر سیر حاصل تبصرہ کرنے کی استعداد اراقم الخروف میں نہیں ہے یہ کام متبحر علماء و فضلاء زیادہ احسن طور پر انجام دے سکتے ہیں۔ خوش قسمتی سے حضرت کے ملفوظات و ارشادات کافی تعداد میں کیٹوں میں ٹیپ کر لئے گئے ہیں اگر نکلوانا چوں کی صورت میں شائع کر دیئے جائیں تو زیادہ نفع ہوگا۔

مولانا محمد قاسم صاحب مرحوم جو حضرت سے بیعت تھے اور کوٹ جانی ضلع ڈیرہ اسماعیل خاں میں ایک مدرسہ چلاتے تھے وہ اپنے بعض خواب جس میں نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی انکو زیارت ہوتی تھی اور جن کا تعلق حضرت ڈاکٹر صاحبؒ سے ہوتا تھا مجھے ارسال کرتے تھے میں حضرت کی خدمت میں پیش



کر دیا تھا انکو پھر حضرت فرماتے تھے کہ مولوی قاسم صاحب کے خواب رویہ صادقہ میں اور بڑی بشارتیں ہیں۔

چند واقعات جو حضرت سے متعلق ہنوز احقر کے حافظہ میں محفوظ ہیں سپرد قلم کئے جاتے ہیں۔ تقریباً ۱۵ سال کا عرصہ گزرا کہ دارالعلوم کراچی میں ختم بخاری شریف کی تقریب منعقد تھی۔ حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحبؒ حیات تھے خوش قسمتی سے اُس سال حضرت حکیم الامت کے چند اہل خلفاء بھی موجود تھے مثلاً حضرت ڈاکٹر صاحبؒ، حضرت بابا نجم الحسن صاحبؒ، حضرت ظفر احمد صاحبؒ تھانوی (انجینئر) حضرت حافظ عبدالولی صاحبؒ وغیرہ وغیرہ۔ مفتی صاحبؒ نے بخاری شریف کی آخری حدیث شریف پڑھانے سے قبل اپنے بیان میں فرمایا کہ علماء کا منصب ہی درس و تدریس ہے اور انکا مشغلہ صبح سے شام تک قال اللہ و قال الرسول ہے لہذا ہمارا اپنے شیخ و مرشد کے فیض سے پوری طرح بہرہ ور ہونا کوئی کمال نہیں ہے کمال تو یہ ہے کہ اس پیر کامل کے فیض سے ایک ڈاکٹر، ایک وکیل، ایک انجینئر، اسکول ماسٹر، پٹواری اور ڈپٹی کلکٹر کہاں سے کہاں پہنچ گئے۔ حضرت عارف باللہ ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی تکمیل مشیخت کا سارٹیفکیٹ تو انکے مرشد کامل خود دے گئے ہیں لہذا اب مزید کسی توصیف و تصدیق کی چٹاں ضرورت نہیں ہے۔ حضرت حکیم الامت قدس اللہ سرہ کے مرض الموت کے آخری ایام میں ڈاکٹر صاحب نے تین روز ہو میو پیٹیک کا علاج کیا تھا پیر و مرشد کا مکالمہ بحوالہ ”بزم اشرف کے چراغ“ (مرتبہ پروفیسر سعید احمد صاحب) ملاحظہ ہو دوران علاج ایک دن تنہائی میں مجھ کو بلا کر فرمایا ”بھائی مجھ سے پرہیزی غذائیں نہیں کھائے بنتیں، میں نے عرض کیا ”حضرت چونکہ اسہال کبیدی ہے اس لئے حضرت کے ضعف اور مرض کے لحاظ سے ہلکی اور زود ہضم غذائیں ہی تجویز کی جاسکتی ہیں۔“

فرمایا: ”جی ہاں! یہ ساری شق اور احتیاط د پرہیزی ہمارے ہی لئے ہے۔ ہم نے تو تم سے کوئی پرہیزی نہیں کرایا۔ صرف معمول نوک و پلک درست کر کے جانے کہاں سے کہاں پہنچا دیا! ذرا غور فرمائیے کہ ایک شیخ کامل اور مصلح اپنے آخری وقت میں اپنے ایک خلیفہ ارشد سے فرما رہا ہے کہ ہم نے تم سے نہ مجاہدہ کرایا اور نہ زیادہ محنت و مشقت لی صرف معمول تعلیم و تربیت اور اصلاح سے ما شاء اللہ بالکل بن گئے کیونکہ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے ساتھ تو یہ معاملہ تھا کہ ع

ذرا غم ہو تو یہ مٹی بہت زرخیز ہے ساقی  
در حقیقت ایک پیر کامل کی نظر کیسا گر سب کام کر گئی جیسا کہ وہ خود بھی کہہ گئے ہیں ۵  
عارفی پیر مغاں نے ایسی کچھ ڈالی نظر

میری ہستی منظرِ اعجاز ہو کر رہ گئی

مندرجہ بالا واقعہ سے یہی نتیجہ اخذ کیا جاسکتا ہے کہ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کی فطرت ہی میں اللہ تعالیٰ نے ایسا جوہر استعداد و دہیت فرمایا کہ جسکی وجہ سے انکو منازل سلوک طے کرنا اور مقامات رفیعہ کا حصول سہل ہو گیا نہ زیادہ اذکار و اشغال کرنے پڑے اور نہ تکثیرِ مجاہدات و ریاضات کی شاید نوبت آئی بلکہ حبِ رسول صلی اللہ علیہ وسلم جو انکی گھٹی میں پڑا تھا اور اتباعِ سنت کی برکت سے وہ رشد و ہدایت اور اصلاحِ نفس کے تمام مراحل سے باسانی گزر گئے۔ ذلک فضل اللہ یؤتیه من یشاء :

انکے حق میں حضرت حکیم الامتؒ کا یہ مختصر سہ حرفی فقرہ کہ ”کہاں سے کہاں پہنچا دیا“ غالباً اسی مقام کی نشاندہی کرتا ہے کہ جن ظاہری اور باطنی کمالات کا ذکر حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے اپنے وصایا میں کیا ہے جو انکے انتقال کے بعد نظر سے گزرے ورنہ حضرتؒ نے تو تمام عمر اس راز کو چھپایا اور ظاہر نہ ہونے دیا کیونکہ ۵

عشق کے راز کا افشا مجھے منظور نہیں

ورنہ حاصل مجھے کیا درجہ منہوں نہیں

غالباً اسی خیال کی ترجمانی حضرت خواجہ عزیز الحسن صاحب مجذوبؒ نے اس طرح کی ہے  
کہاں سے مجھ کو پہنچا یا کہاں پیر مغاں تو نے ۵

میرا میخانہ اب لاہوت ہے، روح الامیں ساقی

حضرت حکیم الامتؒ کی صحبت و بابرکت اور نظرِ کیمیا اثر نے ایک ڈاکٹر اور وکیل و انجینئر اور ڈپٹی کلکٹر وغیرہ پر علم و عرفان اور حکمت و حقائق کے ایسے رموز و اسرار آشکار کر دیئے کہ وہ قطب الارشاد اور عارف باللہ تھے حالانکہ کسی دارالعلوم کے فارغ التحصیل نہ تھے۔ خواجہ صاحبؒ نے اپنے شیخ کی اس صفت کا اظہار بار بار کیا ہے یک جگہ فرماتے ہیں ۵

تیرے زندوں پہ سارے کھل گئے اسرار دیں ساقی

ہو علم یقین عین یقین حق یقین ساقی

حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے جب وکالت کا پیشہ ترک کیا تو اسکی اطلاع اپنے شیخ و مربی کو کر دی وہ ان سے جواب میں خلعت خلافت سے سرفراز کیا گیا اور لکھا کہ بس اسی کا انتظار تھا۔ یہ واقعہ حضرتؒ سے کئی دفعہ سنا کہ جب جنپور میں ہو میو پیٹھک ڈاکٹری شروع کی تو حضرت حکیم الامتؒ کو خط لکھا کہ میرے قلب پر ایک خطرہ گذرا ہے۔ غیر محرم بے پردہ مریض عورتوں کا علاج کرنے میں غصہ بصر کے قرآنی حکیم پر کیسے عمل کروں؟ جواب آیا کہ میں دعا کرتا ہوں اور توجہ بھی۔ تم فکر نہ کرو بس اللہ کا نام لے کر کام شروع کر دو۔ یہ واقعہ بیان کر کے حضرتؒ فرمایا کرتے تھے کہ وہ دن ہے اور آج کا دن کہ حضرت والا کی برکت و توجہ سے ”میری آنکھ پتھری کی آنکھ ہو گئی“ فاعتبروا یا اولی الابصار! بزرگاہی کا رذیلہ ایک عام مرض ہے۔ تربیت السالک میں مریدین، سالکین اور مجازین کے احوال کثرت سے نقل کئے گئے ہیں جسکے مختلف معالجے حضرت حکیم الامتؒ نے تجویز فرمائے ہیں۔ لیکن حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کی پاک طینت ہستی کے قلب پر ایک خطرہ گذرا تھا کہ مُرشد علیہ الرحمۃ کی ایک نظر سے بالکل فنا ہو گیا۔ ذرا غور فرمائیے کہ ۱۹۳۷ء لغایہ ۱۹۵۶ء تقریباً پچاس سال حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے مطب کیا ایک دن یا دو دن کی بات نہیں ہے اور تمام عرصہ میں ان کی آنکھ ایک غیر محرم کے لیے ہمیشہ پتھری کی آنکھ بنی رہی سبحان اللہ

کیا فیض تھا کہ پڑ گئی جس پر بھی ایک نظر

رُشکِ جنید و شبلی و منصور ہو گیا

ایک اور واقعہ یاد آیا۔ چند سال قبل کی بات ہے کہ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے گھر پر شب کی دعوت طعام تھی مہج سے والپسی پر حضرت مولانا ابراہیم صاحب مدظلہ (خلیفہ حضرت حکیم الامتؒ) ہندوستان جلتے ہوئے کراچی تشریف لائے تھے، دعوت کے مہمان خصوصی وہی تھے دیگر اکابر بھی مدعو تھے۔ بعد طعام حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے ارشاد فرمایا کہ ایک صاحب نے خط لکھا ہے (ان کا نام نہیں بتایا) وہ لکھتے ہیں کہ آپ کے مطب میں بعض عورتیں کثرت سے آتی ہیں جن میں سے زیادہ تر بے پردہ ہوتی ہیں، عریاں لباس زیب تن ہوتا ہے۔ لہذا آپ کے منصب مُرشد و ہدایت کے شایان

شاں نہیں ہے کہ آپ ان بے پردہ بے حیا عورتوں کا علاقہ معالجہ کریں۔ آپ مطب ترک کر دیں اور گھر پر ہی تبلیغ و تلقین کا سلسلہ جاری رکھیں وغیرہ وغیرہ۔ اس وقت خط کاغذ بھی شاید حضرت تاج کے ہاتھ میں تھا۔ بہانوں کو مخاطب کرتے ہوئے استفسار فرمایا کہ آپ بتائیں کیا جواب دوں؟ کیا اپنے مطب جانا چھوڑ دوں۔ حاضرین خاموش رہے تھوڑی دیر بعد خود ہی ارشاد فرمایا ”بھائی ہماری خانقاہ تو ہمارا مطب ہے۔“ بہر حال اللہ کے اس برگزیدہ فرشتہ صاف مقبول بندہ نے بظاہر تو ڈاکٹری کی لیکن درحقیقت اپنے مطب میں بیٹھ کر اصلاحِ معاشرہ، اصلاحِ نفس اور روح کی بیماریوں کا وہ معرکہ آرا علاج کر گئے جو عصر حاضر کی بڑی بڑی خانقاہیں انجام نہ دے سکیں۔ ہومیو پیتھک دکان کیا تھیں؟ وہاں تو دوائے دردِ دل بکتی تھیں۔ حضرت سر جھکانے بیٹھے ہیں بچی نگاہ کئے سنسنے کمرہ ہے یہاں اور دل ہی دل میں چپکے چپکے ہر مریض کو دعائیں بھی دے رہے ہیں سہ

اب ظاہر ہے کچھ نہیں ہے سلاہ جمال

کوئی اس حسن کو پوچھے ہم ادا دانوں سے

فرمایا کرتے تھے کہ نسنو مکھن سے قبل اول اللہ سے رجوع کرتا ہوں اور دعا کرتا ہوں کہ باری تعالیٰ اس دوا کو حکمِ تاثیر و شفا عطا فرما۔ غرضیکہ ہر مریض کو شفا اور ہدایت دونوں کی دعا ملتی تھی۔ حضرت کے نسخوں سے بدن کا دکھ درد اور دل کا روگ دونوں بفضلہ تعالیٰ دور ہو جاتے تھے۔ بہت سی بے پردہ نیش اہلِ خواتین نے برقعے اور چادریں پہننا شروع کر دیں جو بے حیا تھیں وہ با حیا بن گئیں۔ صوم و صلوة کی پابند ہو گئیں۔ کلبوں اور ہوٹلوں کے غلوٹ جمع میں شریک ہونے والی خواتین پر دانش بن گئیں۔ حضرت کی ہفتہ وار مجلس میں اندرونِ خانہ مستورات کا مجمع اس قدر بڑھنے لگا کہ گھر کی مکانات کافی ہو گئی تھیں۔ شاید ہی کوئی ہفتہ وار مجلس خالی جاتی ہوگی کہ عورتوں کی بے پردگی بے حیاں و بے طہارتی کے خلاف حضرت صاف صاف نہ کہتے ہوں۔ وجہ کے دن کا کوئی کیسٹ سن کر دیکھ لیجئے یہی درد بھری صدا آئے گی۔ بھائی ایک مختصر سی بات کہہ رہا ہوں۔ خدا کے لئے رنجِ الوقت چیزوں سے پرہیز کرو۔ اپنی آنکھوں کو بچاؤ۔ اپنی حیا کو قائم کرو۔ اپنی شرم و غیرت کو قائم کرو۔ بے فیرتی اور عریانی ایسی و شیطانی دلی بات ہے۔ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ جس کی آنکھ میں حیا نہیں اس کے پاس ایمان نہیں۔ حیا اور ایمان دونوں ایک چیز ہیں۔ حیا دھلی تو ایمان گیا وہ عورت صحیح معنی میں عورت نہیں جس کی آنکھوں میں حیا نہیں ہے وہ جانور



اصلاح معاشرہ، معنائی معاملات، اہمیتِ وقت پر خاص طور سے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ زور دیتے تھے۔ اپنی کتاب "معمولاتِ یومیہ" میں سرفہرست اقل نمبر پر نظامِ الاوقات کو جگہ دی ہے کہتے ہیں کہ "سب سے پہلے میری گزارش یہ ہے کہ آپ اپنے شب و روز کی ضروری معروضیات کے پیش نظر ایک مستحکم نظامِ الاوقات بنائیے" بارہا حضرت کی زبان مبارک سے یہ سننا کہ عمر بھر کے تجربہ کی ایک بات بتاتا ہوں کہ اپنے نظمِ الاوقات کی پابندی کرو وقت بڑا اگر انقدر سرمایہٴ زندگی ہے۔ اگر وقت پر کام کرنے کی عادت پڑ گئی اور اس پر مداوت حاصل کر لی تو پھر وقت تمہارا خادم بن جائے گا۔ حضرت اپنے معمولاتِ وقت پر ادا کرنے کی ایک ایسی مثال تھے کہ شاذ و نادر ہی کوئی معمول چھوٹا ہو فرمایا کہ طالبِ علمی کے زمانہ سے جو معمول شروع کئے وہ الحمد للہ آخرِ زندگی تک ہوتے رہے۔ صبح کو تلاوتِ قرآنِ پاک کا جو وقت مقرر تھا بلا ناغہ اُسی وقت وہ شروع ہوتا تھا۔ فرمایا ایک مرتبہ کالج کے ہوسٹل میں حسبِ معمول صبح کو تلاوت کر رہا تھا کہ ایک ہم جماعت شخص میرے کمرے کے سامنے کھڑے ہو کر اپنے گھر کی درست کرنے لگے۔ میں نے دریافت کیا کہ آپ یہ کیا کر رہے ہیں انہوں نے جواب دیا کہ گھر کی بند ہو گئی تھی وقت ملارہا ہوں۔ کیونکہ آپ روزانہ ٹھیک اسی وقت تلاوت کرتے ہیں۔ فرمایا کہ عمر بھر میں نے وقت پر کام کیا ہے۔ چنانچہ اس پیرائہ سال، ضعیفی اور بیماری کے باوجود جب رات کے ۲ بجتے ہیں تو وقت خود مجھے کھڑا کر دیتا ہے۔ حالانکہ نہ جسم میں طاقت ہے اور نہ ہمت ہے۔ ایک دفعہ حضرت کو بخار تھا، بے حد نفاہت تھی جب وقتِ شب خیزی آیا تو اپنے بستر سے اٹھنے لگے حضرت کے گھر میں سے فرمانے لگیں کہ آج آپ کی طبیعت خراب ہے نہ اٹھو۔ لیکن حضرت سے نہ رہا گیا، پنگ سے اٹھ کر دیوار کے سہارے سہارے غسل خانہ گئے، وضو کیا پھر نماز کی چوکی پر کھڑے ہو کر نفیس ادا کیں، حضرت عارفِ کامل تھے وہ زحمت و عزیمت سب کچھ جانتے تھے لیکن چونکہ وہ "بالوقت" تھے اس لئے انہوں نے وقت کو کنٹرول کر لیا تھا مداومتِ معمولات حضرت کی عادتِ ثانیہ بن گئی انکی یہ استقامت فوق الکرامت ہے۔ معمولات کا ناغہ ہونا انکی سرشت ہی میں نہ تھا۔ تہجد کے بارے میں اپنے خدام کو نصیحت فرماتے تھے کہ اگر بے حد کسل ہے اور بستر سے اٹھا نہیں جا رہا ہے تو پنگ کی پٹی پر ہی بیٹھ کر کم از کم تین بار اللھم اغفر لی، اللھم اغفر لی کہہ لو تاکہ کم از کم آخرِ شب کے مستغفرین کے رجسٹر میں تو تمہاری حاضری درج ہو جائے اور تم "وبالاسرار تمہیں مستغفرون" کے مورد بن جاؤ۔

حضرت چونکہ خود سرتاپا محبت کے پتلے تھے، اس لئے عقیدت کے مقابلہ میں محبت کو ترجیح دیا کرتے تھے فرماتے تھے کہ عقیدت کرنے والے تو بہت ہیں لیکن محبت والے کم ہیں۔ چنانچہ انکی نظر محبت اپنے تمام متعلقین و متنبین پر ایسی پڑی کہ آج انکی محفل کا ہر حاضر باش یہی سمجھتا ہے کہ سب سے زیادہ وہ اُسی سے محبت کرتے تھے۔ وقت بے وقت جب بھی کوئی ملاقاتی آتا حضرت باوجود ضعیف و نقاہت اور تعب کے اس سے ملاقات کرنے باہر تشریف لاتے، مغرب کی نماز سے قبل مجلس ختم ہو جاتی تھی لیکن حضرت بعد مغرب بھی طالبین کی خاطر انکو اپنے ملفوظات سے مستفید کرتے تھے۔ فرماتے تھے کہ وہ آدمی کس کام کا جو کسی کے کام نہ آئے۔ بعد عشاء اصلاحی خطوط کا جواب مرحمت فرماتے تھے، اس وقت میں رات کے بارہ بج جاتے۔ سونے سے قبل جس طرح اپنے گھر کا حصار کرتے اسی طرح اپنے مخصوص احباب کے گھر دن کا حصار کرتے تھے اور انکو فردا فردا دعائیں دے کر سوتے تھے۔ اب کہاں ملیں گے ایسے محبت کرنے والے اہل دل۔

اب انہیں ڈھونڈھ چراغِ رُخ زیالے کر  
حضرت کی رحلتِ اُمتِ مسلمہ کے لئے ایک عظیم سانحہ ہے ایک مستحب الدعواب بزرگ کی دعاؤں سے ہم محروم ہو گئے۔

اُٹھ گیا ناوک نلگن مارے گا دل پہ تیر کون

احقر کے والدین اور دو چچاؤں کا انتقال کراچی میں ہوا انکی نماز جنازہ حضرت ڈاکٹر صاحب نے پڑھائی تھی۔ حضرت کو ہمارے خاندان کے اکابر سے بڑا تعلق تھا، تقریباً بیس سال قبل کی بات ہے کہ میرے ایک چچا نیسر کے مرض میں مبتلا تھے حضرت ڈاکٹر صاحب سے بیعت تھی انکی زندگی کے آخری ایام بھی احقر کے گھر پر گزرے جب انکا نزع کا وقت آیا تو حضرت کو اطلاع کی گئی عاراً کہ مطب کا وقت تھا لیکن حضرت ڈاکٹر صاحب فوراً تشریف لائے، حضرت بابا نجم صاحب بھی ساتھ تھے۔ دونوں حضرات چچا صاحب مرحوم کی داہنی طرف بیٹھ گئے اور کچھ پڑھنے لگے میں سر ہانے کھڑا تھا تھوڑی دیر بعد چچا صاحب مرحوم نے حضرت ڈاکٹر صاحب کو مخاطب کر کے کہا کہ مجھے اپنے گناہ یاد آ رہے ہیں۔ انکی زبان سے یہ فقرہ سُن کر حضرت ڈاکٹر صاحب نے فوراً اپنا دستِ مبارک انکے قلب پر رکھا اور نہایت تکملاً انداز سے ارشاد فرمایا ”خبردار گناہوں کو بالکل یاد نہ کرو۔ اللہ تعالیٰ نے آپ کے سب گناہ معاف کر دیئے“ کئی

بار یہ بھگت دُھرائے۔ یہ سُنتے ہی چچا صاحب مرحوم کی آنکھوں میں ایک خاص مسرت و اطمینان کی لہر دوڑ گئی، چند لمحے بعد ایک ہلکی آٹی اور ختم ہو گئے، شاید اسی اُس وقت اللہ کی رحمت سے مایوس کرنے آیا ہو گا کہ بچے گناہوں کو یاد دلارہا تھا لیکن حضرتؒ نے بے حد وثوق سے فرمایا کہ آپ کے سب گناہ بخش دیئے گئے آج تک حضرتؒ کی آواز کانوں میں گونجتی ہے۔ آخر وقت میں کیسی تسلی دی تاکہ دنیا سے جالے والا اللہ کی رحمت سے مایوس نہ ہو۔

حال کا واقعہ ہے کہ حضرتؒ کے وصال سے تقریباً چھ ماہ قبل میری والدہ مرحومہ کا انتقال ہوا وہ جمعہ کا دن تھا۔ حضرت کا معمول تھا کہ بارہ بجے مسجد تشریف لے جاتے تھے چنانچہ نماز سے فارغ ہو کر جب گھر تشریف لائے تو انتقال کی خبر ملی اس زمانہ میں حضرت کی علالت کا بھی سلسلہ چل رہا تھا بایں ہمہ مسجد سے واپسی پر گھر میں آرام نہیں کیا بلکہ غسل میت سے قبل احقر کے مکان پر پہنچ گئے اتفاق سے اسی روز حضرت کے ایک پوتے بھی امریکہ سے آرہے تھے جو وقت جہاز کی آمد کا تھا وہی وقت والدہ مرحومہ کی جنازہ جنازہ اور تدفین کا تھا، حضرتؒ نے اپنے صاحبزادگان سے تاکید کی کہ نماز جنازہ اور دفن میں شرکت کریں اس سلسلہ میں حضرت کا ایک مقولہ یاد آیا فرمایا کرتے تھے کہ اگر ایک ہی وقت میں دو معاملے درپیش ہوں اور اپنی گنجائش نہ ہو کہ دونوں کو یک وقت انجام دے سکوں تو ان میں سے جس عمل کی بعد میں تلافی نہ ہو سکے اسکو ترجیح دو یہ ایسا عارفانہ نکتہ ہے کہ عالم تعلقات میں جب بھی کشمکش ہوتی ہے تو ان افادات کی روشنی میں بڑے بڑے عقدے حل ہو جاتے ہیں۔ سچ کہا ہے۔

عاشق میرا ہی دل ہے محرم راز و نیاز

بعد میرے راز حسن و عشق سمجھائے گا کون

انگریزی دان طبقہ کے لئے عمل اور رد عمل (ACTION AND REACTION) کی تصوری از کتاب معصیت کے مضمرات سمجھنے میں بڑی مفید ثابت ہوتی تھی فرماتے تھے کہ "یہ انتہائی غفلت ہے کہ گناہوں کو نہیں چھوڑتے ہیں۔ گناہ بھانا، ریڈیو، ٹیلیوژن، وی سی آر، راگ، راکنی، تصاویر بے حجابی، بے غیرتی رائج الوقت ہو گئی ہے انکا دباں تو ہم پر ضرور ہونا ہے۔ یقیناً ہو گا اور ہمیشہ ہو گا۔ یہ خدا کا قانون ہے اسکو کوئی نہیں بدل سکتا خوب سمجھ لیجئے جب تک نافرمانی کرتے رہو گے اور توبہ استغفار نہ کرو گے اسس کا رد عمل ضرور ہو گا جس کو بھگتنا پڑے گا" "گھر گھر پریشانی ہے، بد مزگی ہے، رشتے نہیں آتے، زن و شوہر

میں نہیں بنتی۔ لڑکے ناف زمان ہو رہے ہیں۔ تجارتوں میں گھٹے ہو رہے ہیں۔ فلاں نقصان ہو گیا۔ فلاں جگہ آگ لگ گئی، فلاں جگہ یہ حادثہ یہ سانحہ ہو گیا یہ سب واقعات ہو رہے ہیں۔ مڈرینٹے ہیں روز دیکھتے ہیں۔ یہ سب کیا ہو رہا ہے وہی عمل اور رد عمل کے قانون اپنے کا مظاہرہ ہے۔ جیسا کہ ہو رہا ہے ویسا ہی اس کا رد عمل ہو رہا ہے۔ (ماخوذ از افادات علامہ)

کم و بیش یہی مضمون ہر جمعہ کی مجلس میں بیان ہوتا تھا الفاظ بھی وہی ہوتے تھے لیکن نہ معلوم حضرت کی زبان میں اللہ نے کیا تاثیر رکھ دی تھی کہ اس کثرت تکرار کے باوجود ہر دفعہ سامعین پر ایک نیا اثر ہوتا تھا گویا کہ پہلی دفعہ سن رہے ہیں۔ آغاز مجلس میں کبھی کبھی یہ بھی فرمایا کرتے تھے کہ میں داغ نہیں مقرر نہیں جو باتیں اپنے بزرگوں سے سنی ہیں وہی آپ لوگوں کو سناتا ہوں۔ ان سیدھی سچی باتوں میں خدا معلوم کیا جادو تھا کہ دور دورے لوگ جوق و جوق سننے آتے تھے اور مجمع بڑھتا جاتا تھا۔

فرمایا کہ صبح دشام کی تہنیت میں (Enema) ازجی ہے قوت ہے یہ مثال دیا کرتے تھے کہ جس طرح صبح کے ناشتے کے بعد جسم میں طاقت و توانائی آجاتی ہے کیونکہ اعضاء ریشہ کو غذا پہنچ گئی چنانچہ دن بھر کے جسمانی مشاغل انجام دینے میں وہ توانائی جو ممد و معاون ہوتی ہے اسی طرح تبلیغ و تبلیہ اور درود و استغفار سے روح کو غذایا میسر ہوتی ہے اور اس طرح روحانی قوت سے روزانہ کے معمولات بحسن و خوبی ادا ہو جاتے ہیں اور اجتناب معاصی میں مقاومت نفس پل ہو جاتی ہے۔

حضرت ڈاکٹر صاحب سے اپنی پہلی اور آخری ملاقاتیں تصور میں آگئیں، پہلی ملاقات آج سے تقریباً ۳۵ سال قبل بنس روڈ کے مطب میں ہوئی۔ میرے ایک چچا مرحوم نے اس طرح مجھ سے حضرت کا تعارف کرایا تھا کہ ہندوستان سے ایک بزرگ آئے ہیں جنکی زبان میں تاثیر ہے اور جنکے پاس بیٹھ کر دل کو سکون حاصل ہوتا ہے دنیا سے نفرت ہو جاتی اور فکر آخرت پیدا ہوتی ہے اسکے بعد چچا مرحوم ہی مجھ کو حضرت کے پاس لے گئے تھے حضرت نے دعا دی کہ جوان صاحب بنائے پھر قصہ البعل کا لکر مجھے دی اس میں ایک باب اس بارہ میں ہے کہ کیا کرنا ہوگا؟ اور کیا چھوڑنا ہوگا؟ فرمایا کہ اس پر سرخ بنس سے نشان لگا کر بتانا۔ ایک دفعہ میں حضرت کے مطب میں بیٹھا تھا، اس زمانہ میں حضرت مفتی محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ مسجد باب الاسلام کے رہتے تھے، تھوڑی دیر بعد حضرت مفتی صاحب نور اللہ مرقدہ مطب کے سامنے بازار میں سے جاتے ہوئے نظر آئے۔ حضرت ڈاکٹر صاحب فرمانے لگے کہ دیکھو پاکستان کے مفتی اعظم جارہے ہیں لیکن کیا سادگی اور عجز و انکساری ہے کہ



وضع قطع لباس پوشاک سے کوئی نہ پہچانے گا کہ یہ ایک متبحر عالم مفتی و محدث و مفسر ہے جو اس شان سے بازار میں جا رہے ہیں فرمایا کہ مفتی اور مبتدی کے ظاہر میں فرق نہیں ہوتا۔

آخری ملاقات حضرت کے وصال سے تین ہفتے قبل انکے گھر پر بعد عصر ڈیڑھ گھرہ میں اُسی جگہ ہوئی۔ جہاں حضرت بوقت مجلس تشریف رکھا کرتے تھے۔ حاجی سید اختر صاحب زید مجدد وہاں پہلے سے بیٹھے تھے۔ اُسوہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا عربی ترجمہ سید صاحب کی وساطت سے مکمل ہو گیا تھا اسکے طبع کرنے کے سلسلہ میں حضرت ہدایات دے رہے تھے۔ طباعت وغیرہ کے اخراجات کا ذکر دوران گفتگو آیا فرمایا کہ اگر ایک لاکھ روپیہ بھی خرچ ہو تو کوئی پروا نہیں مجھ سے لے لینا۔ پھر فرمایا کہ اس پر تقریباً کسی عربی عالم سے لکھوانی چاہیے۔ احقر جب حضرت سے رخصت ہونے لگا تو عرض کیا کہ پشاور جا رہا ہوں۔ فرمایا کہ مولانا فقیر محمد صاحب سے میرے لئے دعا کرنا۔ میں پشاور ہی میں تھا کہ حضرت کے ہسپتال میں داخلہ کی اطلاع ملی۔ حضرت مولانا نے دعا کی۔ دوسرے صبح بذریعہ ٹیلیفون انتقال کی خبر پہنچی شکر ہے کہ پٹنہ سے صبح کے پہلے جہاز سے سیٹ مل گئی، مجھے نمازِ جنازہ میں شرکت اور میت کا کندھا دینے کی سعادت نصیب ہو گئی ورنہ تمام عمر حسرت رہ جاتی۔

حضرت حکیم الامت کی تعلیم میں فنائیت روح رواں ہے۔ ایک ملفوظ ہے، فرمایا کہ ہم نے حضرت حاجی صاحب سے ایک ہی سبق پڑھا ہے کہ اپنے کو شادو۔ چنانچہ اس سلسلہ کے تمام اکابر پر فنائیت کا غلبہ رہا ہے۔ ان حضرات نے خود کو ایسا شایا کہ ایک ظاہر بن نظر نہ پہچان سکی۔ جو سبق حضرت حکیم الامت نے اپنے مُرشد شیخ العربیہ و الحجاز حضرت حاجی امجد اللہ مہاجر مکی سے پڑھا تھا وہی انہوں نے اپنے خلیفہ ارشد حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ کو پڑھایا۔ انتقال کے بعد حضرت کے وصایا میں مندرجہ ذیل عبارت نظر سے گزری۔ لکھتے ہیں کہ ”سب سے بڑا حق میرا جو میری اولاد پر ہے وہ یہ ہے کہ میری نصیحت و وصیت کو دل سے مانیں اور اس پر عمل کریں۔ مجھ کو اللہ تعالیٰ نے ظاہر و باطن کی بہت سی نعمتیں عطا فرمائی ہیں۔“ اللہ تعالیٰ نے حضرت ڈاکٹر صاحب کو ظاہر و باطن کی کیا کیا نعمتیں عطا فرمائیں اس کا علم تو صرف اللہ ہی کو ہے اور اللہ سے دعا بھی ہے کہ وہ اپنی شان کے مطابق حضرت کو کو نعمتِ جنت اور درجاتِ رافعہ سے نوازے۔ انکی ایک پسندیدہ دعا جو وہ اکثر اپنی مجلس کے اختتام پر



حاجی محمد فلاح صاحب  
سکس



## ”خاموش ہو گیا ہے چین بولنا ہوا،“ حضرت عارفی نور اللہ مرقدہ سے پچیس سالہ تعلق

عارف باللہ حضرت اقدس ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارفی کا پہلی مرتبہ شرف نیاز اُس وقت حاصل ہوا جب حضرت والا مع احباب خاص یعنی بابا نجم احسن صاحب پرناب گدھی حضرت مولوی عبد الوحید خاں صاحب مولانا لطافت علی صاحب ہمایہ وغیرہ حضرت حکیم سید محمد ابراہیم صاحب رزمی کی دعوت پر ۱۹۷۷ء میں سکھر تشریف لائے۔

حضرت والا کی مجالس رشد و ہدایت سے احقر بہت متاثر ہوا ارشادات سے بہت نفع ہوا اس کے بعد بھی دوبار سکھر تشریف لانا ہوا آخری مرتبہ ۱۹۷۳ء میں حضرت ڈاکٹر ابراہیم محمد پیٹل صاحب کی عیادت کے لئے تشریف لائے اس مرتبہ حضرت والا کے ہمراہ حضرت ظفر احمد صاحب تھانوی انجینئر بھی تھے حضرت ڈاکٹر حفیظ اللہ صاحب مدظلہ کے مطب کی بالائی منزل پر قیام فرمایا ہماری خوش قسمتی تھی کہ کئی یوم قیام فرمایا بتوفیقہ تعالیٰ احقر کو شب و روز حضرت والا کے مبارک قدموں میں رہنے کا شرف حاصل ہوا۔ نماز تہجد کے بعد حضرت والا کا معمول پاء نوشی کا تھا ایک روز چاء نوشی کے وقت جبکہ چاروں طرف سے فجر کی اذانوں کی آوازیں آنا شروع ہوئیں تو عجیب انداز میں وجد آفریں اور بیت افرود

کلمات فرمائے۔

”فرمایا فسق و فجور مٹ گیا نافرمان بندے انکی نافرمانیوں سے باز آگئے ساری کائنات میں وحدانیت کا ڈنکا پٹ رہا ہے ارے لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ۔  
نبی الرحمة صلی اللہ علیہ وسلم کی رسالت کا اعلان ہو رہا ہے۔  
حَتَّى عَلَى الصَّلَاةِ، مسلمانوں کو نماز کی طرف بلایا جا رہا ہے۔  
حَتَّى عَلَى الْفَرَاحِ، صلاح کی دعوت دی جا رہی ہے۔  
ہر سمت انوار و تجلیات کا نزول ہو رہا ہے ارے عجیب وقت ہے اللہ کی طرف رجوع ہونے کا“

حضرت والا محمد سے بہت خوش تھے بہت محبت فرماتے تھے بوقت روانگی فرمانے لگے تم نے ہماری بہت خدمت کی ہے ہماری دُعا ہے اللہ تعالیٰ تم کو محظوم بنادیں۔  
ایک بار اہقر نے روٹری اسٹیشن پر عرض کیا کہ حضرت میری اصلاح کے واسطے دُعا فرمادیں دُعا فرمانے کے بعد فرمایا ارے اس بات کو یاد رکھو فری دُعا سے کسی کی اصلاح نہیں ہوتی خود بھی کچھ کرنا پڑتا ہے۔

کامیابی تو کام سے ہوگی۔ ذکرِ حُسنِ کلام سے ہوگی  
ذکر کے اہتمام سے ہوگی۔ فکر کے التزام سے ہوگی

اس کے بعد پیہم حضرت والا کی خدمت میں اہقر کراچی حاضر ہوتا رہا۔ بہت ہی شفیق تھے غایتِ کرم و کمالِ شفقت سے پیش آتے تھے بغضِ تعالیٰ ہمیشہ حضرت والا کے ارشادِ عالی سے نفع ہوا عقدہ کشائی ہوئی غم و ہمت میں اضافہ ہوا دین بہت آسان معلوم ہوا۔  
جب حضرت والا کو یہ معلوم ہوا کہ اہقر مسیح الا امت حضرت مولانا شاہ محمد مسیح اللہ صاحب مدظلہم سے بیعت ہے تو بہت عجیب الفاظ میں خوشی کا اظہار فرمایا کہ مولوی مسیح اللہ صاحب سے بیعت ہو ہم ہی سے بیعت ہو ایک ہی بات ہے۔ ایک مرتبہ بہت ہی خصوصیت سے فرمایا کہ کراچی کے قیام میں کوئی تکلیف ہو تو تم بے تکلف ہمارے پاس ٹھہر جایا کرو اس زمانہ میں حضرت والا کا قیام پاپوش نگر میں مطلب کے اوپر تھا ایک مرتبہ فرمایا تم بہت کام کے آدمی ہو۔



۱۹۶۵ء میں جنگ کے بعد حضرت مرشدی مسیح الاقمت دامت و برکاتہم سے مکاتیب کا سلسلہ دو سال کے لئے بند ہو گیا تو حضرت والا نے بغایت شفقت فرمایا ہمیں خیریت کا خط لکھتے رہا کرو اس دو سال کے عرصہ میں حضرت والا نے بہت ہی رہنمائی فرمائی دل سے دعائیں نکلتی ہیں ۱۹۶۹ء میں دوراتیوبی میں حج پر سخت پابندیاں عائد تھیں احقر قریضہ حج کے لئے بیتاب تھا حضرت والا نے بہت دعائیں فرمائیں حضرت والا کی دعا سے حاضری کی صورت پیدا ہو گئی فالحمد للہ علی ذالک۔

ایک روز مطلب میں فخرمایا اللہ تعالیٰ نے تم کو ایک طویل و نیراعطا فرمادیا ہے۔ انشاء اللہ تعالیٰ حرمین شریفین جاتے رہو گے۔

دیکھو جب مواجہ شریفہ میں حاضر ہو تو یوں عرض کرنا۔

یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

۵ غم بے مائیگی شرم گناہ میتابی ہجراں

یہ سارا قافلہ منزل بمنزل لے کے آیا ہوں

فرمایا یہ میرا شعر نہیں ہے تسکین میری تھی کا ہے یہ بھی فخرمایا کہ میرا سلام عرض کر دینا آداب والقباب کے بغیر میرا نام لینا کہنا عبدالحی سلام عرض کرتا ہے فرمایا عالم امکان میں اتنا بڑا شرف نہیں کہ ایک بندہ گنہگار بارگاہِ عزت و جلال اور بارگاہِ سرور کو نبین صلی اللہ علیہ وسلم میں حاضر ہو جائے۔

حضرت والا کی فرمودہ مذکورہ ہدایات کے مطابق جب حاضری کی سعادت نصیب ہوئی احقر کی عجیب کیفیت تھی جسکو الفاظ کے جامہ میں پیش نہیں کر سکتا حضرت والا کی دعاؤں سے احقر بہت متاثر ہوا بالخصوص بار بار اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ۔ فرمانے سے۔ لاہور میں کئی سال تک مجلس صیانتہ المسلمین کے سالانہ اجتماع میں حضرت والا تشریف لے جاتے رہے عجیب و غریب مجالس ہوئیں۔ ہزاروں مُردہ و شہ قلوب حضرت والا کے نصائح سے صحتیاب و سیراب ہوئے احقر ان مجالس میں حاضر رہا متعدد بار حضرت والا کی معیت میں حضرت چھوٹی پیرانی صاحبہ اہلیہ مجددہ تھانوی کے دولت خانہ پر حاضری نصیب

ہوئی ایک مرتبہ فرمایا اگر کسی کے پاس مطالعہ کے لئے زیادہ وقت نہ ہو تو کم از کم ہمارے حضرت کے چالیس دُعَا دیکھ لے انشاء اللہ تعالیٰ باطن میں انقلاب آجائے گا۔

ایک مرتبہ حاضر ہوا تو بہت ہی محبت سے پیش آئے فرمانے لگے ما شاء اللہ تم بہت کام کر رہے ہو ہمارے حضرت کی تعلیمات کی اشاعت کر رہے ہو ہمارا تم سے بہت دل خوش ہے اور دُعَا سے نوازا۔

ایک مرتبہ فرمایا کہ ڈاکٹر صاحب اور حکیم صاحب اور تم ہماری کیسٹیں سنا کر و انشاء اللہ تعالیٰ بہت نفع ہوگا باتیں تو وہی ہیں جنکو سب جانتے ہیں مگر لب و لہجہ کا بڑا اثر ہوتا ہے ایک ملاقات میں معارفِ حکیم الامت کے مسودہ کی فائل دیکھنے کے لئے عنایت فرمائی بڑی دیر تک والہانہ انداز میں اپنے شیخِ مجدد دتھا نوی کے علوم کو بیان فرماتے رہے۔

## آخری ملاقات

یہ ناکارہ حضرت والا کی زیارت کے لئے ۱۶ مارچ ۱۹۸۶ء بروز اتوار گی رہے بجے دن مطلب میں حاضر ہوا مریضوں کے ہجوم کے باوجود مصافحہ اور معانقہ فرمایا خاص وقت بنظرِ کرم عنایت فرمایا اپنے قریب بٹھلایا حضرت ڈاکٹر حفیظ اللہ صاحب اور حضرت حکیم سید محمد ابراہیم صاحب ان دنوں بیمار تھے حضرت والا نے خاص طور پر دونوں حضرات کی خیریت مزاج معلوم فرمائی فرمایا ہمارا دل ڈاکٹر صاحب اور حکیم صاحب کی طرف لگا ہوا ہے ہم برابر دونوں کی صحت کے لئے دُعا کر رہے ہیں۔

حق نے عرض کیا کئی روز ہو گئے پاسپورٹ عمرہ کے ویزا کے لئے سعودی سفارتخانہ میں جمع ہے ابھی تک ویزا نہیں ملا حضرت والا دُعا فرمادیں۔

فرمایا پہلے بھی آپ کو ویزا ملتا رہا ہے انشاء اللہ تعالیٰ اب بھی مل جائیگا ارے بھئی یہاں بھی تم ہلکویا درکھتے ہو وہاں بھی یاد رکھنا۔

آگاہ یہ کیا معلوم تھا کہ آفتابِ زمانہ امامِ اہلِ لیکن آیتِ اشرف شیخ المشائخ حضرت والا سے یہ آخری ملاقات ہے۔

اسی روز بعد مغرب، سفارت خانہ سے ایک دوست نے پاسپورٹ لا کر دیا ویزا دیکھتے ہی حضرت والا کی دعاؤں کی مقبولیت نظروں کے سامنے آگئی کہ ویزا میں تاریخ اجراء ۱۶ مارچ ۱۹۸۶ء ہی درج تھی۔

بتوفیقہ تعالیٰ احقر ۲۰ مارچ کو جدہ کے لئے روانہ ہوا مکہ مکرمہ میں ۲۸ مارچ کو نماز جمعہ کے لئے مسجد الحرام حضرت ڈاکٹر عبدالواحد صاحب دامت برکاتہم کے ساتھ جا رہا تھا کہ راستہ میں حضرت ڈاکٹر صاحب نے محترم حسن امام صاحب منظرہ کے والد سے یہ خبر سنائی کہ حضرت والا رحلت فرما گئے۔ اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ۔

بیمہ صدمہ ہوا دعائے مغفرت اور ایصالِ ثواب کی توفیق ملی بتوفیقہ تعالیٰ حضرت والا کی طرف سے عمرہ بھی کیا اب روزانہ سورہ اخلاص بار بار دفعہ پڑھ کر بخشے کا معمول ہے انشاء اللہ انیٰ اعترف جب تک زندہ ہے حضرت والا کے لئے دعائے مغفرت اور ایصالِ ثواب کرتا رہے گا حضرت والا کے ساتھ خاص تعلق پر بار بار شکر کی توفیق مل رہی ہے اَللّٰھُمَّ ذَلِكُ الْعَمَلُ ذَلِكُ الشُّکْرُ۔

ایں سعادت بزورِ بازو نیست

تانا بخشد خدائے بخشنہ

## ”مدینہ طیبہ میں حضرت عارفی کی زیارت منامی“

احقر ۲۹ مارچ ۱۹۸۶ء کو مدینہ طیبہ حاضر ہوا حضرت والا کے وصال کی خبر وہاں بھی پہنچ چکی تھی ہر شخص رنجیدہ تھا انفرادی طور پر احباب ایصالِ ثواب اور دعائے مغفرت کر رہے تھے۔

شیخ اقرہ حضرت قاری فتح محسنہ صاحب پانی پتی ثم المدنی پر عجیب رنج کا عالم تھا بہت غمزدہ تھے بار بار فرماتے تھے رنج رنج (حضرت قاری صاحب معذور و مفلوج ہیں اس لئے صاف بول نہیں سکتے لہذا اپنے رنج کا اظہار اس طرح فرما رہے تھے) ۱۴ اپریل بروز جمعۃ المبارک فجر کے بعد ناشتہ سے فارغ ہو کر اصطفاہ منزل میں

قیام تھا احقر اپنے کمرہ میں سو گیا ایک عجیب و غریب خواب دیکھا کہ ایک عمارت بہت بلند و بالا ہے چھت مثل چوترہ کے ہے چاروں طرف دہلی کی جامع مسجد کی سی سیڑھیاں ہیں پوری عمارت مع سیڑھیوں کے سنگ مرمر کی ہے احقر اوپر کھڑا ہے اچانک کیا دیکھتا ہے کہ حضرت عارفی نور اللہ مرقدہ اور ان کے پیچھے حضرت حکیم سید محمد ابراہیم صاحب رزمی بھی تشریف لائے ہیں۔ حضرت والا کے دائیں دست مبارک میں کتابیں تھیں اور بائیں ہاتھ میں کچی گوشت تھا چوترہ پر پہنچ کر حضرت والا نے فرمایا فاروق کتابیں تم لے لو بڑی خوشی سے احقر کو کتابیں عنایت فرمائیں اور کچی گوشت اپنے ہی پاس رکھا حضرت والا خوش و خرم تھے فوراً احقر بیدار ہو گیا بیدار ہونے کے بعد معاً قلب میں آیا کہ یہ حضرات جنتہ البقیع منتقل کر دیئے گئے ہیں وہ اذالہ علی اللہ بعزیز۔ اس خواب کے بعد اپنے باطن میں عجیب تغیر محسوس کر رہا ہے۔ واپسی پر کراچی پہنچ کر بہت غلام محسوس ہوا حضرت والا کی بہت یاد آئی زمانہ قحط الرجال ہے اب تو جو نفوس قدسیہ فی زمانہ موجود ہیں ان سے پورا پورا استفادہ کرنا چاہیئے اور انکی قدر کرنی چاہیئے۔

کیسی کیسی صورتیں آنکھوں سے پنہاں ہو گئیں  
کیسی کیسی صحبتیں خواب پریشاں ہو گئیں

جو تھے نوری وہ گئے افلاک پر  
مثل تلچھٹ رہ گیا میں خاک پر  
بلبلوں نے گھر کیا گلشن میں جا  
بوم ویرانے میں ٹکراتا رہا

بس اللہ تعالیٰ صبح تواضع اور اخلاص و تقویٰ عطا فرما دیں راضی ہو جاویں اپنا بنالیں آمین  
یہ رتبہ بلند ملا جسکو مل گیا  
وَذَالِكَ فَسَلُ اللّٰهُ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ

اللّٰهُمَّ وَفَضِّلْنَا مَا نَحِبُّ وَتَرْضَى  
احقر محقق فاروق مرقع  
۱۱ رمضان المبارک ۱۴۲۸ھ  
بوقت چاشت





## حضرت عتیق الرحمن رحمہ اللہ

مولانا مفتی محمد شفیع اور مولانا محمد یوسف بنوری رحمہما اللہ تعالیٰ کے وصال کے بعد برادر عزیز حافظ عتیق الرحمن سلمہ اللہ تعالیٰ (جنہیں حضرت نے اپنی حیات ہی میں غلات عطا فرمائی) کے ہمراہ عارف باللہ حضرت ڈاکٹر محمد عبدالحی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے دولکھ پر جمعہ کے دن حاضری ہونے لگی۔ یہ مجلس عام ہوا کرتی تھی۔ یہ بات ۱۹۷۸ء کی ہے۔ پھر جب حضرت نے بعض مریدین و متوسلین کی خواہش پر پیر (دوشنبہ) کے دن خاص مجلس شروع کی تو اس خاص مجلس میں شرکت کا معمول رہا جو تقریباً ایک سال جاری رہا۔ اور اسلام آباد نقل مکانی کے بعد ۸۴ - ۱۹۸۰ء کے دوران جب کبھی اسلام آباد سے کراچی آنے کا موقع ملتا تو حضرت کی خدمت میں حاضری معمول کا حصہ تھی۔ اس دوران حضرت سے بیعت کا شرف بھی حاصل ہوا اور اب بذریعہ خط و کتابت باقاعدہ تربیت شروع ہو گئی۔ جون ۱۹۸۴ء میں اسلام آباد سے کراچی واپسی کے بعد حضرت نے میری درخواست پر پہلے جمعرات اور پھر ہفتہ کے دن عصر اور مغرب کے درمیان کا وقت مخصوص فرمادیا جس میں میں اور حافظ عتیق الرحمن سلمہ موجود ہوتے اور قریباً ایک گھنٹہ حضرت کے ساتھ صحبت رہتی اور حضرت علم و معرفت کے خزانے لٹاتے۔ اور الحمد للہ یہ سلسلہ حضرت کی زندگی کے آخری ہفتہ تک جاری رہا۔ اس آخری ہفتہ کا واقعہ ہے کہ میں اس روز (۲۳ مارچ) عام تعطیل کے سبب

اہل خاندان کے ساتھ کراچی سے تقریباً سو سو کلومیٹر دور، کھری جمیل سیر کی غرض سے گیا ہوا تھا۔ پہلے سے حضرت کو عدم حاضری کی اطلاع کرادی تھی لیکن دل کا تقاضہ ہوا کہ کسی طرح حاضری ہو ہی جائے۔ چنانچہ وقتِ مقدر سے قبل تقریباً چار بجے مسہر کھری سے روانگی ہوئی۔ راستہ میں ڈرائیور کو (جو نہایت احتیاط سے گاڑی چلاتا ہے) رفتار تیز کرنے کی بار بار ہدایت کی تاکہ حضرت کی خدمت میں حاضری کا موقع مل جائے۔ ڈرگ روڈ پہنچ کر وقت دیکھا تو اندازہ لگایا کہ مغرب کی اذان سے بیس پچیس منٹ قبل حضرت کی خدمت میں پہنچنا جاسکتا ہے۔ چنانچہ اہل خاندان کو دوسری گاڑی میں بٹھایا، وہ سیدھے گھر روانہ ہو گئے اور میں حضرت کے دولت خانہ جا پہنچا۔ اطلاع کرائی۔ اس دوران لان میں چار رکعت نماز عصر پڑھی، جب کمرہ میں داخل ہوا تو حضرت زمان خانہ سے تشریف لاپکے تھے۔ بہ کمال مبسم مصافحہ کیا اور فرمایا کہ آپ کی طرف سے تو آج نہ آنے کی اطلاع آگئی تھی۔ میں نے عرض کیا کہ اطلاع تو کرادی تھی مگر دل کا تقاضہ ہوا اور کوشش یہی رہی کہ ناغہ نہ ہو۔ حضرت بہت خوش ہوئے اور فرمایا کہ اس سے محبت اور اخلاص کا اندازہ ہوتا ہے۔ کیا خبر تھی کہ یہ ملاقات آخری ہوگی۔ کیونکہ اسی شب حضرت کی طبیعت خراب ہوئی اور چند روز بعد (۲۷ مارچ ۱۹۸۶) نماز فجر کے وقت انتقال ہو گیا۔

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

وصال کے بعد حضرت کے صاحبزادے عزیزم احسن عباس سلمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ ”حضرت کو ہفتہ کے دن آپ کا انتظار رہتا، پہلے سے ڈرائنگ روم کھلوادیا کرتے اور ملازم کو کہہ دیا کرتے کہ تنزیل الرحمن صاحب آئیں گے انھیں ڈرائنگ روم میں بٹھانا اور مجھے فوراً مطلع کرنا“ اور یہ تو اکثر ہوتا کہ حضرت ہفتہ کے دن چاء باہر منگواتے اور ساتھ ہی نوش فرماتے۔ اور اگر کبھی مجھے دیر ہو جاتی تو چاء اندر مکان میں نوش فرماتے، حضرت کا معمول تھا کہ عصر کے بعد چاء نوش فرماتے تھے۔

اکثر فرمایا کرتے کہ زندگی میں تنظیم اوقات بڑی چیز ہے۔ دنیا میں جتنے بھی بڑے لوگ گذرے ہیں ان کی زندگی کے حالات کو اٹھا کر دیکھو تو یہی پتہ چلتا ہے کہ ان کی زندگی میں نظام الاوقات کی بڑی اہمیت رہی۔

حضرتؑ کی جس چیز نے مجھے بے حد متاثر کیا وہ حضرتؑ کی سادگی تھی۔ اس زمانہ کے عام پیروں اور موصیوں کی ایک بات بھی تو ان میں نہ تھی۔ کوئی ظاہری علامت (زمانہء حال کے اعتبار سے) حضرتؑ میں ایسی نہ تھی کہ کئی دیکھے اور کہہ اُٹھے کہ بہت بڑے بزرگ ہیں، نہ وضع قطع، نہ لباس بس ایک عام مشرّع متبع سنت مسلمان کی صورت۔۔۔ لیکن ذرا دیر بیٹھو اور حضرتؑ توجہ فرمائیں تو دل پر جو کیفیت گذرتی، خدا کی قسم، لفظوں میں بیان نہیں ہو سکتی۔

کرشمہ دامن دل میکشد کہ جا اینجاست

حضرتؑ کی مجلس سے اُٹھنے کو جی نہ چاہتا۔ بس "بیٹھے رہیں تصور جاناں کئے ہوئے" حضرتؑ کی کونسی بات ہے جو قابل ذکر نہیں، لیکن جو بات میرے نزدیک انتہائی قابل ذکر ہے وہ حضرتؑ کا خلق خدا سے اخلاص تھا۔ لوگوں کی اصلاح ظاہری و باطنی کا جذبہ۔ مگر طریقہ ایسا دلآویز کہ کسی کو خبر بھی نہ ہو کہ سننے والا خود ہی مخاطب ہے۔

انیس ٹھیس نہ لگ جائے آگینوں کو

اکثر تلقین فرمایا کرتے!

با خلق کرم کن کہ خدا با تو کرم کرد

واقعہ یہ ہے کہ ہم نے لوگوں کے ساتھ کرم کا برتاؤ کرنا چھوڑ دیا ہے۔ حالانکہ ہم جس نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے اُمتی اور نام لیوا ہیں وہ تو رحمتہ للعالمین تھے۔ سراپا عفو و کرم تھے۔ اور یہ اللہ دے اپنے اخلاق و آداب میں اُس نبیؐ ہی کا تو پُر تو ہیں۔ خدا سے تو ہم یہ توقع رکھتے ہیں کہ

تو کہ باد شمتان نظرداری

دوستاں را کجی کنی محروم

لیکن خود ہم خلق خدا کے ساتھ کیسا سلوک کرتے ہیں؟ اے کاش یہی بات سمجھ لیں تو ہماری انفسِ رادی اور اجتماعی زندگی میں کتنا بڑا انقلاب آجائے۔ اور یہ دنیا جو آج فتنہ و فساد اور جنگ و جدل کی آماجگاہ بنی ہوئی ہے اتحاد و اتفاق اور امن و سلامتی کا گہوارہ بن جائے۔

حضرتؑ کے اس دنیا سے رخصت ہو جانے کے بعد، بیان نہیں ہو سکتا کہ کس عظیم نعمت سے محروم ہو گئے۔ کبھی کبھی فریاد کرتے تھے کہ میری باتیں سن لو، میرے بعد کہیں بھی سننے کو نہ ملیں گی۔ واقعی بات سچ تھی۔

اب انہیں ڈھونڈ چراغِ رخِ زیبائے کر  
حضرتؑ کی محبت ایک ٹھنڈک تھی روحانی ٹھنڈک، ماں کی گود، باپ کا سایہ۔  
ماں کی گود اور باپ کا سایہ اٹھ جائے تو کیا کہیں ملتا ہے؟

تنزیل الرحمن

# پاک شامین

## کنڈیز سروس لمیٹڈ

پلاٹ نمبر ۱۱، ٹریلوڈ، یکمڈی، کراچی

### الْحَمْدُ لِلَّهِ

پاکستان میں - میٹا ٹریسٹل ٹیلی کومنیکیٹونز میں قائم ہوا ہے  
ملکی درآمدات کی حمایت عمدہ کارکردگی کے ساتھ باہر کی کمپنیز  
نقل ہوتے ہیں، جہازیں، کپیاں اور سروسز خدمات حاصل کریں،  
کسٹم اور لاجسٹکس پورٹ ٹرسٹ کی تمام سہولتیں مل رہی ہیں

فون  
۲۶۱۹۵۳ - ۲۶۱۹۳۰  
۲۶۱۸۴۲ - ۲۶۱۸۵۳

ایڈریس: شامین کراچی  
ٹیلی فون ۲۶۱۹



۴۰۰ • حضرت مولانا محمد عاشق الہی صاحب  
از مدینہ منورہ

## مشاورت

احقر مکہ معظمہ عمرہ کے لئے گیا ہوا تھا ایک صاحب نے مدینہ منورہ سے ٹیلیفون پر اطلاع دی کہ حضرت عارف باللہ ڈاکٹر عبدالحی صاحب فانی دنیا کو چھوڑ کر اپنے رب سے جا ملے۔ اللہ جل شانہ ان کے درجات بلند فرمائے اور متعلقین اور متوسلین کو صبر جمیل عطا فرمائے۔ جانے والے کے لئے جانا مبارک ہی ہونا ہے حدیث شریف میں فرمایا ہے یستریح من نصب الدنیا وأذاها الخ رحمة اللہ! البتہ پسماندگان کو جذباتی کارنج ہوتا ہے اور مستفیدین کو محرومی ہو جاتی ہے۔ سب جانتے ہیں کہ اس دنیا میں جو بھی آیا ہے اس کو جانا ضروری ہے موت و حیات دونوں ساتھ ساتھ ہیں۔ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لَا يَبْلُوكُكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا، جو ارشاد فرمایا ہے اس سے صاف ظاہر ہے کہ دونوں چیزیں ساتھ ساتھ ہیں۔ جذباتی کارنج و غم امر طبعی ہے اور صبر امر شرعی ہے۔

آج کل صحافی لوگوں کا یہ طریقہ ہو گیا ہے کہ جب کسی معسوف آدمی کی موت پر ادارہ لکھتے ہیں تو یوں کہتے ہیں کہ موت نے ہم سے ایک ایسی شخصیت کو جدا کر دیا جسکی اس وقت ہمیں زیادہ ضرورت تھی اس طرح کے الفاظ لکھنا شرعاً صحیح نہیں۔ بہت سے آزاد قلم نویس ہاں تک لکھ جاتے ہیں کہ

فدرت کے سفاک ہاتھ نے ہم سے فلاں شخص کو چھین لیا۔ یہ تو کلمۂ کفر ہے مومن کا کام یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی قضاء و قدر پر راضی رہے اور تعلیمات اسلامیہ کی تدوین سے باہر نہ نکلے۔ فرحت و مسرت رنج و الم ہر حالت میں بندہ احکام خداوندی کا پابند ہے حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم کے صاحبزادہ حضرت ابراہیم رضی اللہ عنہ کی وفات ہو گئی تو آپ نے فرمایا اِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ وَلَا نَقُولُ اِلَّا مَا بِهِ رِضًا وَ اَنَا بِفِرَاقِكَ يَا اِبْرَاهِيْمَ لَمَحْزُونُونَ (بیشک آنکھ شکر ہے اور دل رنجیدہ ہے اور ہم بس وہ ہی بات کہتے ہیں جس سے ہمارا رب راضی ہو اور ابراہیم بلاشبہ ہم تمہاری جدائی سے غمگین ہیں) معلوم ہوا کہ طبعی رنج ہونے پر بھی اللہ تعالیٰ کی قضاء و قدر پر دس سے راضی رہے کوئی کلمہ ایسا نہ کہے جو خداوند قدوس کی ناراضگی کا سبب بنے۔

حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ حضرت اقدس حکیم الامت قدس سرہ کی یادگار تھے کہنے کو تو ڈاکٹر تھے اور کسی مدرسہ کے فارغ التحصیل بھی نہ تھے لیکن عمر کے آخری پندرہ بیس سال ایسے گزرے، عوام و خواص کا جو آپ کی طرف بہت زیادہ رہا خصوصاً مفتی اعظم حضرت مولانا محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی وفات کے بعد تو کراچی میں آپ کی شخصیت مرکز القاصحین بن گئی تھی۔ سفری دستل ساں میں متعدد علماء آپ کی طرف رجوع ہوئے جن میں بعض بڑے درجہ کے محدث بھی ہیں نیز بعض مشہور مصنفین نے بھی آپ کی طرف رجوع کیا۔ متعدد علماء کو آپ نے خلافت و اجازت سے بھی نوازا۔

جو لوگ تہذیب و سلوک سے راضی نہیں وہ کسی صاحب نسبت سے قریب ہی نہیں ہوتے تاکہ اس لائن کے فیوض و برکات سے بہرہ ور ہوں۔ اَللّٰہُ سَ اَعْدَاءُ لِمَا جِہْلُوا تہذیب و سلوک کے فوائد سے بے خبر ہیں اس لئے اس کی مخالفت کرتے ہیں۔ علامہ سید سلیمان ندوی رحمۃ اللہ مشہور مصنف تھے شہرت میں حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے لگ بھگ مقام رکھتے تھے انہوں نے محسوس کیا کہ مجھے کسی مصلح کی ضرورت ہے۔ حضرت حکیم الامت تھوڑی قدس سرہ سے اصلاحی تعلق قائم کیا تو ان کے متعلقین میں سے ایک بڑا علقہ معترض ہوا بعض نے تو یہ بات تک کہہ دیا کہ اتنے بڑے علامہ نے ایک مُلا کے سامنے گھٹنے ٹیک دیے حضرت علامہ نے جواب دیا کہ علم محض سے کام نہیں چلتا علم کے ساتھ قلبِ مُنیب کی بھی ضرورت ہے اور ساتھ ہی یہ بھی فرمایا کہ یہ لوگ ایک

طرف تو علامہ کہتے ہیں اور دوسری طرف معترض ہو رہے ہیں، اس سے تو اور عبرت لینی چاہئے کہ جب اتنے بڑے عظیم کو اصداحِ نفس کے لئے کسی مرشد و مصلح کی طرف رجوع کرنے کی ضرورت ہے تو کم علم کو کیونکر اسکی ضرورت نہوگی حضرت حجتہ الاسلام مولانا محمد قاسم صاحب نانوتوی اور حضرت فقیہ الامت مولانا رشید احمد صاحب گنگوہی رحمۃ اللہ علیہما دہلی میں استاد کی خدمت میں سبق پڑھنے کے لئے حاضر تھے حضرت حاجی امجد اللہ صاحب رحمۃ اللہ علیہ پہنچ گئے تو حضرت شاہ صاحب نے فرمایا کہ اب سبق کل کو ہو گا کیونکہ حاجی صاحب آگئے مولانا گنگوہی کی زبان سے نکل گیا کہ اچھے حاجی صاحب آئے ہمارا سبق بھی گیا، اس پر حضرت نانوتوی رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا ہاں ایسا مت کہو! یہ بزرگ ہیں بعد میں دونوں حضرات حضرت حاجی صاحب رحمۃ اللہ علیہ سے بیعت ہوئے اور خلافت سے سرفراز ہوئے۔ بیعت ہونے کے بعد مولانا گنگوہی رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا کہ پھر تو میں مر رہا اور یہ بھی فرمایا کہ ہمیں کیا معلوم تھا کہ یہ ہی حاجی صاحب ہمیں مونڈیں گے حضرت حاجی صاحب فارغ التحصیل عالم نہیں تھے لیکن ایسے ایسے اکابر ان سے بیعت ہوئے جو علم کے پہاڑ تھے پھر حاجی صاحب ہی کے ہو رہے اور اسی کو مونڈنے سے تعبیر فرمایا، حضرت نانوتوی رحمۃ اللہ علیہ سے کسی نے دریافت کیا کہ کیا حضرت حاجی صاحب مولوی نہ تھے؟ فرمایا مولوی کرتے! اور یہ بھی ارشاد فرمایا کہ میں علوم ہی کی وجہ سے حضرت حاجی صاحب کا معتقد ہوا ہوں، آخر کوئی توجہ تھی کہ ان حضرات نے حضرت حاجی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے ہاتھ میں ہاتھ دیا اور مرید ہونے کی ضرورت محسوس کی، بات وہ ہی ہے کہ علم کے ساتھ قلبِ مُنیب بھی ہونا چاہیئے جو لوگ اس ضرورت کو محسوس نہیں کرتے وہ علم کے غرور میں صاحبِ نسبت حضرات سے دور بھاگتے ہیں اور محروم رہتے ہیں یہ تو ماضی قریب کی باتیں ہیں ماضی بعید میں حضرت مولانا جلال الدین رومی رحمۃ اللہ علیہ حضرت شمس تبریز کے مرید ہوئے اور پھر ان ہی کے ہو رہے حضرت امام غزالی رحمۃ اللہ علیہ کے ساتھ بھی یہ ہی واقعہ پیش آیا بہت بڑے عالم تھے صاحبِ جاہ تھے بڑا متبعِ حق ہیں انہوں نے ضرورت محسوس کی اور اپنے باطن کو اتنا بت الٰہی اللہ سے خالی پیا نفس کا مراقبہ دمی سبکیا اپنے مرشد کی طرف رجوع ہوئے اور اصلاحِ باطن کی طرف ایسے متوجہ ہوئے کہ نہ صرف اپنا بھلا کیا بلکہ قیامت تک کے لئے علماء کو بیدار کر دیا منجیات و مہلکات سے

آگاہ کیا اور ریتی دنیا تک کے لئے احیاء معلوم دنیا میں چھوڑ گئے۔

حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی شخصیت بھی انہی نفوسِ قدسیہ میں سے تھی جو اصطلاحی عالم نہ تھے لیکن معارف کے اعتبار سے سینہ معمور تھا حضراتِ علماء کرام اور محدثینِ عظام انکی خدمت میں حاضر ہو کر غذا و روح پاتے تھے ان کی خدمت میں تربیتِ نفس اور اصلاحِ باطن کے لئے حاضر ہوتے تھے اور فیض پاتے تھے۔ مجلس کے ختم پر جو دعا ہوتی تھی اُسکے انداز اور الفاظ سے محسوس ہوتا تھا کہ یہ کلمات صرف زبان ہی سے نہیں بلکہ دل سے نکل رہے ہیں دعاء تو سب ہی کرتے ہیں مگر عموماً غفلت کے ساتھ ہوتی ہے جو لوگ صاحبِ نسبت ہوتے ہیں انکی دعاء سننے سے ایک خاص تاثر پیدا ہوتا ہے جو غفلتوں کی دعاء سے نہیں ہوتا۔ جو حضرات صاحبِ نسبت ہیں جن کو تعلق مع اللہ کی دولت حاصل ہے وہ کچھ نصیحت کرتے ہیں تو دل میں اُترتی چلی جاتی ہے اور جن کو یہ دولت نصیب نہیں ان کے پاس صرف علم ہی علم ہے وہ بڑی بڑی تقریریں کرتے ہیں لوگ ان کی تقریریں کانوں کی عیاشی کے لئے سُن بیٹے ہیں دل پر کسی کے کچھ بھی اثر نہیں ہوتا یہ تجرباتی باتیں ہیں تجربہ بڑی دلیل ہے اور ثبوتِ ہدایت ہے۔

مدارس میں اسکی بہت زیادہ ضرورت ہے کہ اساتذہ و تلامذہ میں ذکر و فکر کی شان پیدا ہو لڑکیہ باطن، تربیتِ نفس، کثرتِ ذکر، مراقبہ و محاسبہ ہر فرد کے اندر ہونا چاہیے ان کاموں کے لئے مرشد و مُرشد کی ضرورت ہوتی ہے۔ حضرت ڈاکٹر صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے متعدد خلفاء چھوٹے ہیں جن میں علماء کرام بھی ہیں اور حضرت تقی نووی رحمۃ اللہ کے متبعین میں بہت سے حضراتِ پاکستان میں موجود ہیں اور حضرت شیخ الحدیث صاحبِ قدس سرہ کے خلفاء بھی ہیں طلبہ کرام ان سے رجوع فرمائیں علم بھی حاصل کریں اور عملی زندگی بھی سیکھیں ظاہر و باطن دونوں آراستہ ہوں۔ قرآن و حدیث کا علم تو آج کل مستشرقین کے پاس بھی ہے اسلامیات پر کتا ہیں بھی لکھتے ہیں سب کچھ پڑھتے ہیں لیکن گمراہ ہیں ایمان و یقین، علم و عمل ظاہر و باطن کی اصلاح، خدمتِ دین، فکرِ آخرت سبھی چیزوں کی ضرورت ہے۔ وَاللّٰهُ التَّوْفِیْقُ

محمد عاشقِ الہی بلند شہری

عفا اللہ عنہ و عافاہ

المدينة المنورة ۲۸ رجب ۱۴۰۶ھ



• مولانا راحت علی ہاشمی صاحب

## مستطاب افروشاں

بظاہر یہ بات بڑی عجیب سی معلوم ہوتی ہے کہ ایک اصلاح حال طالب، اپنے شیخ طریقت کی خدمت میں، اپنے پیشہ و کالت ترک کر دینے کی اطلاع دے اور جواباً اسے اپنے شیخ کی طرف سے انسانوں کی اصلاح اخلاق اور انکی رہبری و رہنمائی کا ”منصب“ تفویض ہو جائے۔

لیکن ہمارے حضرت ڈاکٹر صاحب کے ساتھ یہی معاملہ پیش آیا۔ انکا اصلاحی تعلق حضرت حکیم الامت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی سے تھا، اور اس تعلق کے نتیجے میں وہ اثرات اور کمالات رونما ہونے لگے تھے جو ایک صالح و مصلح شخصیت کا خاصہ ہوا کرتے ہیں۔ چنانچہ یہ تعلق ابھی تقریباً دس سال کی مدت ہی طے کر پایا تھا کہ شیخ کی طرف سے آپ کو مجازِ صحبت کا لقب مرحمت ہوا۔

عام طور پر لوگوں میں تصوف کے متعلق عجیب و غریب تصورات رائج ہو چکے تھے اور بعض غیر ضروری چیزوں کو تصوف کا جزو لاینفک سمجھا جانے لگا تھا۔ اسی میں سے ایک خیال یہ تھا کہ سلوک و تصوف میں قدم رکھنے کے لئے بیعت کے مرتبہ صورت اختیار کرنا یعنی باتا عہدہ ہاتھ میں ہاتھ دیکر بیعت ہونا لازمی ہے۔ اس کے بغیر نہ تو تصوف کی راہ میں کوئی چل سکتا ہے نہ اس خاص صورت کے عمل میں لائے بغیر اعمال و اخلاق میں درستگی ہونا ممکن ہے۔

حضرت تھانوی قدس سرہ کی ذات سے اللہ جل شانہ نے بالخصوص تصوف و سلوک کی حقیقت نکھارنے کا جو کام لیا وہ اپنی مثال آپ ہے، تصوف میں مقصود کو غیر مقصود سے ممتاز کر دینے کے لئے آپ نے اس راستہ پر چلنے والوں کے واسطے بہت سے اصلاحی اقدامات کئے۔ چنانچہ ان میں سے ایک یہ تھا کہ، جو بھی طالب اصلاح، آپ سے تعلق قائم کرنا چاہتا، آپ سب سے پہلے اس کو اس اصلاحی تعلق کے مقصد پر لاتے اور اس کے ذہن میں اس تعلق اصلاح کا صحیح مفہوم اور صحیح طریقہ آمار دیتے۔

چنانچہ سب سے پہلے طالبین کو آپ ان کے اصل کام میں لگا دیتے اور ”صورت بیعت“ کو کچھ دیر کے لئے مؤخر فرما دیتے۔ تاکہ طالب اصلاح اس صورت کی حیثیت بھی سمجھ لے اور صورت بیعت کی جو ”حقیقت“ ہے یعنی ”اپنے اخلاق و اعمال کی اصلاح کی فکر“ اس میں مصروف بھی ہو جائے۔

اس طریقہ کار میں کبھی ایسی نوبت بھی آگئی کہ طالب اصلاح، مکمل طور پر تربیت پا گیا اور اب دوسروں کی اصلاح کر دینے کے قابل ہو گیا۔ تو آپ نے اسے ”اجازت بیعت“ سے نوازا دیا اور پھر اس کی درخواست پر معلوم ہوا کہ ابھی تو وہ خود بھی مروجہ طریقہ پر ”بیعت“ نہیں ہوا۔

چونکہ عوامی طبقوں میں بزرگوں سے تعلق اور بیعت کا تصور ہی رہ گیا تھا کہ ”ہاتھ میں ہاتھ دیدیا“ اور پھر جھٹلی، نہ اچھے اعمال میں سنت کے اتباع کی کوئی فکر نہ اپنے اخلاق کو درست کرنے کا کوئی اہتمام، حضرت تھانوی نے، اس فاسد رجحان کے ازالہ کے لئے ایک تدبیر تو یہ فرمائی کہ ”صورت بیعت“ میں جلدی نہ فرماتے، اور دوسری تدبیر یہ فرمائی کہ اپنے متعلقین میں سے ایسے حضرات کو، جن کی صحبت میں بیٹھنے اُٹھنے سے کسی شخص کو دین کا اہتمام پیدا ہونے لگے اور ان کی ذات سے دوسروں میں اصلاح کا ذوق و شوق پیدا ہو سکتا ہو، اپنی طرف سے ”اجازت“ عطا فرمادی کہ یہ حضرات بیعت لئے بغیر لوگوں کو تلقین کیا کریں۔ اور ان کا لقب ”مجاز صحبت“ تجویز فرمایا جس میں ایک طرف تو اس کی احتیاط فرمائی کہ جن حضرات میں ابھی وہ خاص حالت ظاہر نہیں ہوئی جس کو وہ اپنی نظر میں معیار سمجھتے ہوں، تو انہیں بیعت کی اجازت نہیں دی۔ دوسری طرف ان میں جتنی کچھ صلاحیت ”افادہ عوام“ کی پیدا ہو چکی تھی اس کو کام میں لانے کا بھی اہتمام فرمایا کہ انہیں

بیعت لئے بغیر ہوئے لوگوں کی اصلاح کرنے پر مامور فرمادیا اور اس طریقہ کار سے اس غلط تصور کی نیند  
کنی بھی فرمائی کہ سلوک و تصوف میں قدم رکھنے کے لئے "بیعت" ہونا شرط ہے۔ اور پھر  
اللہ تعالیٰ نے ان "مجازینِ صحبت" حضرات سے بھی لوگوں کی اصلاح و درستگی اور دینی ترقیات  
کا وہ کام لیا جو کسی طرح بھی معروف مشائخ کے طریقوں سے کم نہیں تھا بلکہ خاص اس غلط تصور کی  
اصلاح کا سبب ہونے کی وجہ سے اس سے کسی درجہ میں فائق تھا۔ اس لئے کہ شریعی امور میں  
ہر چیز کو اپنے درجہ پر رکھنا ضروری ہے اور اس میں افراط و تفریط مضر ہے۔ اور پھر کسی بھی شریعی  
کام کو اس کی حیثیت سے زائد حیثیت میں سمجھنا "بدعت" کی حدود سے ملاوٹ ہے۔ اس لئے  
یہ طریقہ کار اس بدعتِ فکری کو مٹانے کا بھی ذریعہ بنا جو "بیعت" کے سلسلہ میں پیدا ہو چکی تھی۔  
تو اس لحاظ سے یہ زیادہ نافع بنا۔ البتہ بعض دوسری وجوہات سے مجازینِ بیعت کا منصب فائق تھا۔  
بہر کیف! ہمارے حضرت والا بھی انہی حضرات میں سے تھے جنہیں مجازِ صحبت بنایا گیا۔ پھر  
جب کچھ عرصہ بعد حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے شیخ کی خدمت میں عرض حال کیا کہ:

"میں نے وکالت کا پیشہ ترک کر کے اب "ہومیوپیتھک طریقہ علاج سے لوگوں  
کی خدمت کا عزم کیا ہے"

تو جواب میں شیخ کی طرف سے یہ نوید ملتی ہے کہ:

تمہ نے لوگوں کی جسمانی صحت اور ظاہری بیماریوں سے انکی حفاظت کی خدمت شروع کر دی ہے،  
ہم تمہیں انکی باطنی درستگی، روحانی اصلاح اور تربیت، اخلاق جیسے عظیم کام کرتے رہنے کے لئے اجازت  
دیتے ہیں کہ اب انہیں باقاعدہ بیعت کر کے تلقین کیا کرو۔  
اس سلسلے میں حضرت تھانویؒ کے الفاظ یہ تھے:

"میں نے "سابعۃ التابۃ" میں مجازینِ صحبت کے ذکر کے ساتھ یہ بھی لکھا ہے کہ  
مجھے ان صاحبوں کے متعلق بعض حالات کا انتظار ہے اگر وہ حالات رونما ہو گئے تو  
انکو مجازینِ بیعت میں داخل کر دوں گا، اور یہ حالات ہر ایک میں جدا جدا ہیں۔  
آپ کے لئے ترک وکالت کا انتظار تھا، جو بحمد اللہ، واقع ہو گیا اس لئے آپ کو مجازینِ  
بیعت میں داخل کر کے توکل علی اللہ۔ اجازت دیتا ہوں کہ آپ بیعتِ طالبین کو،

کیا کریں؟

اس تحریر سے اس شبہ کا بھی ازالہ ہو جاتا ہے کہ ”جو حضرات ابھی خود شیخؒ ہی کی نظر میں بیعت لینے کی قابلیت تک نہ پہنچے ہوں انکو ”افادۂ خلق“ کی خدمت سپرد کر دینا کس حد تک مناسب ہے؟

اس لئے کہ شیخؒ کی باریک بین نگاہ میں، بعض باتیں احتیاط کا تقاضا کرتی تھیں جس کی وجہ سے فرق رکھا گیا تھا، چنانچہ ہمارے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے واقعہ سے اسکا اندازہ ہوتا ہے کہ وہ کیا چیزیں ہو سکتی تھیں جن کی بنا پر فرق رکھا گیا کہ صرف دکالت جو کہ بالکل نا جائز کام نہیں تھا، لیکن جس شخص کو مسند طریقت پر جلوہ افروز ہونا ہو اسکی شخصیت کے شایانِ شان نہیں سمجھا جا رہا تھا، ترک کر دینے پر مجاز صحبت سے مجاز بیعت بنا دیا گیا۔

معلوم ہوتا ہے کہ ان مجازین صحبت حضرات میں اسی قسم کی کچھ باتیں حضرت والک احتیاط پسندی کی وجہ سے انتہا رکابا عث تھیں۔ گو یہ بات بہر شخص کی نسبت سے الگ الگ شکل کی ہوتا ہم نوعیت ایک ہی طرح کی ہوگی۔

بہر کیف! حضرت حکیم الامتؒ کی طرف سے ملنے والی یہ بشارت، حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے لئے سند تھی اس بات کی کہ آپ ظاہر و باطن دونوں کی مسحائ کریں گے جسمانی علاج کے ساتھ روحانی علاج بھی آپ کے مطلب سے ہوگا۔

چنانچہ دنیائے دیکھا کہ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کا مطلب، علاج جسمانی اور تربیت روحانی کا مرکز تھا۔ ایسے لوگ بھی وہاں آتے تھے جو عرصہ سے مختلف بیماریوں کا شکار ہوں اور حضرت والا کی تجویز کردہ دوا سے صحت یاب ہوتے۔

اللہ تعالیٰ نے حسن نیت کی برکت سے ہاتھ میں شفا بھی رکھی تھی، مریضوں کا اتنا بندھا رہتا تھا۔ اور حضرت والاؒ اپنے مقررہ وقت میں پورے انہماک کے ساتھ ہر مریض کا حال سنا کر اس کے مناسب دوا تجویز فرماتے رہتے تھے۔

حضرت حکیم الامتؒ کی تعلیمات کا اثر بھی ہوتا تھا کہ اپنے فرائض منصبی سے بھرپور تعلق اور اس کا حق ادا کرنے کی فکر پیدا ہو جاتی تھی حضرت تھانویؒ اسکی تاکید فرمایا کرتے تھے۔



جو بھی کام تمہارے سپرد ہے اس کا حق ادا کرو۔

عام طور پر یہ دیکھنے میں آتا ہے کہ تصوف و سلوک میں قدم رکھنے والے، یا عام دین داری اختیار کرنے والے، کچھ نماز روزے اور نفلی عبادتوں کی طرف تو بہت توجہ دینے لگتے ہیں جو اپنی جگہ تو بہت خوب ہے لیکن باہمی معاملات میں، جو فرائض اور ذمہ داریاں عائد ہوتی ہیں ان سے لاپرواہی برتتے ہیں۔

جس کا نتیجہ بعض اوقات یہ بھی ہوتا ہے کہ اپنی ملازمت، تجارت یا کچھ بھی ذریعہ معاش، اختیار کر رکھا ہو، اسکے حقوق کی طرف سے غافل ہو جاتے ہیں۔ اور طرفہ تماشہ یہ کہ اپنی اس غفلت و سستی کو کچھ معیوب بھی نہیں سمجھتے نہ اسے خلاف شرع سمجھتے ہیں بلکہ بعض آدمی تو اسے "شان زہد" سے تعبیر کر لیتے ہیں۔ حالانکہ زہد دنیا سے دل نہ لگانے کا نام ہے دنیاوی ذمہ داریوں سے منہ چھپانے کا نام نہیں۔ ۵

چیت دنیا بہ از خدا غافل بدن

نے قماش و نقرہ و فرزند و — زن

یہی وجہ ہے کہ حضرت حکیم الامتؒ کے متوسلین میں اس کا خاص اہتمام رہتا تھا کہ اپنے فرائض منصبی سے بے توجہی جیسے جرم سے بچا جائے اور تا بمقدور کسی قسم کی کوتاہی اس میں نہ ہو۔

ان تعلیمات ہی کی برکت تھی کہ حضرت سے تعلق رکھنے والا ہر شخص ان دنیاوی ذمہ داریوں کو حقوق العباد کی اہم کڑی اور اسکی تکمیل کو فرض و عبادت سمجھ کر انجام دیتا تھا کہ ۶

چو دل با خدا یست خلوت نشینی

اس طریقہ تربیت سے بھی حضرت تھانویؒ کا مقصد اس غلط فہمی کو زائل کرنا تھا جو عام طور پر پھیل گئی تھی کہ تصوف میں قدم رکھنے کے بعد دنیاوی معاملات سے "بے خبری" لازمہ سلوک ہے۔

ادرجن قدری صفات کا حضرت حکیم الامتؒ سے خصوصیت کا تعلق تھا، ان میں تو یہ اہتمام اور بھی زیادہ نمایاں محسوس ہوتا ہے یہی وجہ ہے کہ جب ہمارے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے وکالت

کو خیر یاد کہہ کر ”ہومیوپیتھک“ کا مشغلہ اختیار کیا تو اس میں اس قدر توجہ اور کامل اہتمام رہا کہ ایک ماہر فن اور حاذق طبیب کی حیثیت سے منے گئے۔

اس مشغلہ کا آغاز جن حالات میں ہوا وہ حضرت ہی کی ایک تحریر میں دیکھئے:

”چونکہ میرے خاندان کے اکثر افراد کو ”ہومیوپیتھک“ سے دل چسپی تھی اور شغل بھی یہی تھا اس لئے مجھے بھی اس طریقہ علاج کی طرف کچھ نہ کچھ توجہ ضرور ہی اور حصول فن کے لئے کچھ مناسبت بھی رہی، اور کچھ مواقع بھی ملتے رہے اس کے متعلق میں نے حضرت والارحمتہ اللہ علیہ کو مطلع بھی کر دیا تھا، خدا داد بات یہ ہے کہ ۱۹۲۵ء کے آخر میں کچھ ایسے اتفاقات اور حالات رونما ہوئے کہ مجھ کو سلسلہ وکالت کے قائم رکھنے میں شدید تردد پیدا ہو گیا۔ بالآخر، حضرت والارحمتہ اللہ علیہ کا کچھ صریح ایماں پا کر اور اپنے ایک عزیز ہومیوپیتھک ڈاکٹر کی ترغیب اور تحریک اور معاونت حاصل ہونے پر، میں نے ستمبر ۱۹۲۵ء میں قطعی فیصلے کے ساتھ وکالت کو ختم کر دیا اور جنوری ۱۹۳۱ء سے تو کلا علی اللہ یعنی باضابطہ اور مستقلاً ہومیوپیتھک پریکٹس شروع کر دی۔“

ان حالات میں اگر کوئی شخص محض ضابطے کی حد تک کامیاب معالج ثابت ہو جائے تو وہ بھی کچھ کم بات نہیں، لیکن ہمارے حضرت ڈاکٹر صاحب نے جب باضابطہ طور پر اس مشغلہ کو اپنا فریضہ منصبی تجویز کر لیا تو پھر پوری دیانت اور امانت سے اس کا حق ادا کرنا شروع فرمایا۔ جس کا ایک نتیجہ تو یہ نکلا کہ آپ کی خداقت اور مہارت فن سے ہزاروں انسانوں نے صحت جسمانی جیسی نعمت پائی اور اپنی تکالیف و درد و الم سے نجات حاصل کی۔

دوسری طرف اس ذوق فرض شناسی نے ایک ایسا علمی کام کر دیا جو آئندہ کے لئے بھی ایک زندہ جاوید یادگار ہے۔

یعنی اس فن پر حضرت والا نے اپنے تجربات، اور مستقل و مسلسل مطالعہ جاست کی روشنی میں چند مفصل و مستند کتابیں تصنیف فرمادی، جس کی قدر و قیمت کا اندازہ اس فن کے شناسا اور اس شغل سے وابستہ حضرات بخوبی لگا سکیں گے چنانچہ ان کتب کی اشاعت کا بیڑا

بھی اس فن کے ماہر اور طریقہ علاج کے تعارف و اشاعت میں سرگرم بابائے ہومیوپیتھک جناب ڈاکٹر عبد الحمید صاحب کے قائم کردہ ایک ادارے .... نے اٹھایا۔ خدا کرے کہ یہ ذخیرہ جلد از جلد قابل انتفاع صورت میں منصہ شہود پر جلوہ گر ہو جائے۔

اس جسمانی مسحائ کے ذیل میں دو واقعات ذکر کر دینا بے جا نہ ہوگا، جن کا تعلق حضرت ڈاکٹر صاحب کے شیخ سے اور شیخ کی تربیت سے ہے۔

پہلا واقعہ خود حضرت ڈاکٹر صاحب ہی کی زبانی سنئے:

”میری قسمت کی یہ بھی معراج سعادت ہے کہ مرض الموت کے آخری ایام میں حضرت والا قدس سرہ العزیز نے، از خود مجھ سے ہومیوپیتھک علاج کی خواہش ظاہر فرمائی، اور تین دن ہومیوپیتھک علاج جاری رہا۔ حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ نے علاج شروع ہونے پر پہلے ہی مجھ سے یہ فرمایا کہ تم اطمینان سے علاج کرو، انجام مجھے معلوم ہے۔ تین دن کے بعد، حضرت کے ایک سابق مزاج داں طبیب تشریف لے آئے اور حضرت کے ایما سے، انہوں نے علاج اپنے ہاتھ میں لے لیا، لیکن حضرت کا کمال اور دل نوازی دیکھنے کہ ایک پرچہ تحریر فرما کر مجھے دیا، جس میں لکھا تھا کہ: چونکہ حکیم صاحب، میرے پرانے طبیب ہیں اور دوا پر مینر کا صحیح اندازہ رکھتے ہیں۔ اس لئے میں نے ان کے اصرار پر ان کا علاج شروع کر دیا ہے۔ آپ اپنے طور پر کچھ اور خیال نہ فرمادیں۔ فقط“

دوسرا واقعہ اسی سلسلہ میں یہ ہے کہ ڈاکٹری کی پریکٹس شروع کرنے کے بعد ایک بار حضرت ڈاکٹر صاحب نے حضرت تھانویؒ کی خدمت میں تحریر کیا کہ:

”مطب میں دوا علاج کی غرض سے یہاں کی کچھ عودیں بھی آجاتی ہیں۔ میں ڈرتا ہوں کہ یہ چیزیں میرے لئے فتنہ اور وبال نہ بن جائیں۔“

حضرت والا نے تحریر فرمایا کہ:

”دل اور نگاہ کی حفاظت کیجئے میں بھی دعا کرتا ہوں انشاء اللہ کچھ ضرر نہ ہوگا۔“

ان دو واقعات سے بہت سے درس عبرت ملتے ہیں جن کی تفصیل، طوالت کے خوف سے ترک کر دینا مناسب معلوم ہوتا ہے۔

بہر کیف! حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کو اپنے اس ذریعہ معاش سے خدمتِ شیخ کی سعادت بھی ملی اور اس فریضہ منصبی کی ادائیگی کے لئے ایک بیش بہا ہدایت بھی۔  
حضرت ڈاکٹر صاحبؒ فرمایا کرتے تھے کہ ”میں نے ایک عرصہ دراز تک اپنی نگاہوں کی اتنی حفاظت کی، کہ مرد و عورت میرے لئے یکساں ہو گئے۔ اور حضرت والا کا فیضانِ دعا کہ میرا دل اس معاملہ میں بالکل پتھر ہو گیا۔“

۵ محبت نے کچھ ایسا کیف ”جذباتِ نہاں“، بدلا

مذاقِ زندگی بدلا، مزاجِ جسم و جہاں بدلا  
یہ دل تو اب کسی اور طرف جا اٹکا تھا۔

۵ ہے میرے لئے کیفِ دل و ذوقِ نظر، اور

میرے دل و جہاں میں ہے محبت کا اثر، اور

غرضیکہ سیاحتی کا سلسلہ، اسی انہماک، توجہ اور کمال احتیاط و تقویٰ کے ساتھ جاری و ساری تھا اور خدا تعالیٰ کی مخلوق فیضیاب ہو رہی تھی۔

خدمتِ خلق کو نقلِ عبادتوں میں سب سے اہم عبادت سمجھا گیا ہے۔ اور دکھی انسانیت کو سکھ پہنچانا خدمتِ خلق کا بھی نہایت ضروری اور مفید شعبہ ہے جس میں ہمارے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ مصروف تھے۔

ایک خدمت تو یہ ظاہری اور جسمانی معالجہ کی ہو رہی تھی۔ اور دوسری خدمت بھی علاج ہی کی شکل میں تھی لیکن وہ علاج جسم کا نہیں بلکہ روح کا، باطن کی اصلاح و تزکیہ کا تھا۔ روحانی معالجہ، اور تزکیہ نفس کی جو خدمت کرتا ہے دراصل وہ بھی انسانیت کی ایک اہم ضرورت پوری کرتا ہے۔

ہمارے زمانہ میں بعض لوگ بناوٹی اور بدنام کنندہ قسم کے چند اشخاص کو دیکھ کر محققین صوفیائے کرام سے بھی بدگمان ہو جاتے ہیں اور انکی خدمات سے بھی انکار کر بیٹھتے ہیں حالانکہ اگر



ٹھنڈے دل سے سوچا جائے تو ان پاکیزہ طبیعت انسانوں نے، معاشرہ کی بہت سی ضروریات کی کفالت یہ اذ حیثیت مجموعی معاشرہ میں ایک انقلاب برپا کرنے کا کام کرتے رہے ہیں۔ آج کے دور میں جبکہ میڈیکل سائنس عروج پر ہے۔ ”نفسیاتی کلینک“ کے نام سے، بعض حضرات، ایسے لوگوں کی علاج گاہ قائم کر رہے ہیں جو طبی طور پر لا علاج، یا طویل عرصہ سے علاج کرنے کے باوجود صحت سے محروم ہیں۔ یا انکی دماغی صحت مخدوش و فکر انگیز ہے۔ ان ”نفسیاتی کلینک“ کے طریقہ علاج، اور اس سے حاصل ہونے والے فوائد کو اگر ہم دیکھیں تو وہ کچھ اسی قسم کے نظر آئیں گے، جیسے ان تباہ حال، آشفۃ سر اور پرانہ طبیعت لوگوں کو، اللہ والوں، اور صوفیائے کرام کی خدمت میں حاضری دینے سے حاصل ہوتے رہے ہیں۔

مثلاً ایک مریض اس قسم کا ہے کہ وہ ہر وقت کسی نہ کسی الجھن میں گرفتار ہے اور مختلف پریشانیوں میں مبتلا ہو کر ذہنی طور سے بالکل اتر ہو چکا ہے۔ اب اگر خوش قسمتی سے اسے کسی اللہ والے کی خدمت میں حاضری کا موقع مل جائے، وہ انکی تسلی بخش باتیں سنتا ہے۔ ان کی نصیحتوں پر کان دھرتا ہے، صبر و ضبط کا سبق لیتا ہے۔ انکی بابرکت مجلس سے سکون و طمانیت کا بیش بہا خزانہ لے کر اٹھتا ہے تو یقیناً یہ اس ذہنی خلفشار سے نکل جائے گا، اور اس کو اپنے معائب اور پریشانیوں میں، حواس باختہ اور افسانہ خیزاں ہونے کی ضرورت نہیں رہے گی۔ یہ سکون و اطمینان جو اسے مفت میں حاصل ہو گیا۔ کیا یہ خدمت انسانی میں شامل نہیں ہے؟ اس قسم کے مریضوں کی آمدورفت، ان صوفیاء کرام کے پاس آج سے نہیں ہمیشہ سے رہی ہے۔

لوگ انکی خدمت میں پہنچ کر، تھوڑی دیر کے لئے ہر غم و فکر سے نجات حاصل کر لیتے ہیں، پھرے ہوئے جذبات اور تلام زرد خیالات کو، ذرا دیر کے لئے سکون میسر آ جاتا ہے۔ پریشانی مصیبتوں اور ذہنی و دماغی الجھنوں کا مداوا ہوتا ہے۔ پھر لطف یہ کہ اس مداوا میں نہ کچھ اخراجات کا بوجھ پڑا، نہ اسکو کسی ہریے سکھ اور نشہ آور چیز کا سہارا لینا پڑا۔ اور سچ پوچھئے تو اگر یہ آئے والا اس دربار گہر بار سے کچھ وقت وابستہ رہ گیا تو آخرت کی نعمتوں سے بہرہ یاب ہونے کی اُمید بھی بخت ہو گئی، اگر ان صوفیائے کرام اور اصلاح و تربیت کرنے والے افراد کا وجود نہ ہوتا تو ایک طرف معاشرہ،

اپنی ان مذکورہ حالتوں میں چہیں دسکون کا وہ گوہر نایاب نہ حاصل کر سکتا دوسری طرف، خدا تعالیٰ کی نافرمانی اور اسکی حکم عدولی کا جو سیلاب ہے، اس میں کبھی کوئی بند باندھنے والا نہ ملتا۔ یہ اہل اللہ اور اہل تزکیہ ہی کی جماعت ہے جس نے کفر و شرک کے اندھیروں میں اللہ کے نام کی صدائیں بلند کیں اور بلا خوف و خطر اپنے مولیٰ کی بندگی اور اسکی اطاعت کی طرف دعوت دی۔

ان وفا شعار، ایثار پیشہ قدسی صفات کی خدمات ہرگز ایسی نہ تھیں کہ انکو نظر انداز کر کے اس جماعت کو نشانہ تنقید بنایا جاتا۔ ان حضرات نے انسانیت کو اپنے مالک کے ساتھ جوڑنے میں، اور باہمی طور پر ایک دوسرے کے ساتھ شرافت و محبت کا پرتاؤ کرانے میں، جو کردار ادا کیلئے وہ اپنی مثال آپ ہے، چند جاہل و نادان افراد کے بہرہ وپ بھر لینے کی وجہ سے اس پوری کی پوری جماعت اور ان کے صحیح جانشینوں کی حیثیت اور شخصیت کو مجروح کرنا ہرگز درست نہیں۔

ہمارے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے بھی خدمتِ خلق کا دوسرا ذریعہ، اصلاحِ باطنی اور علاجِ روحانی کو بنایا اور اسکے ذریعہ آپ نے ہزاروں افراد کی دل جوئی اور ہمت افزائی فرمائی۔ آشفتمند خیال اور پریشان حال لوگ حضرتؒ کے پاس آتے، کچھ دیر بیٹھتے اپنی دل کی بھڑاس نکالتے، بے جھجک ہو کر اپنا کچا چٹھا سناتے، اور پھر ان سب کمزوریوں، ان سب کوتاہیوں پر، ”موہم عاقلی“ رکھ دیا جاتا۔

خدا تعالیٰ سے تعلق استوار کرنے کا نسخہ تجویز کر دیا، فوری طور تسلی و تشفی کے انجکشن دیئے جاتے، روتے ہوئے آنے والے، ہنستے، مسکراتے اُٹھ کر جاتے۔  
کیسا ہی خرابی خواستہ ہو کیسا ہی شکستہ خاطر ہو  
میخانے میں داخل ہوتے ہی تسکین دلائی جاتی ہے

اس معالجہ روحانی میں جو خصوصی مقام، ہمارے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کو اللہ تعالیٰ نے عطا فرمایا اس کی اصل وجہ تو خدا تعالیٰ کا فضل و کرم اور اجتبارِ خاص ہے۔ وہ جس سے جو کام لینا پسند فرماتے ہیں اس سے لے لیتے ہیں۔

البتہ ظاہری اسباب میں اس معالجہ روحانی میں آسان اور تیر بہدف تدبیروں کی وجہ،  
درجہ زیر محسوس ہوتی ہیں۔

پہلی چیز تو یہی ہے کہ حضرت والاکل تربیت ہی اس انداز سے کی گئی کہ معمولی معمولی طریقوں  
سے بڑے عظیم الشان کام انجام پاتے رہیں۔ اور غیر محسوس طریقے پر روحانیت کے مراحل طے  
ہوتے رہیں۔ چنانچہ اس سلسلہ میں حضرت ڈاکٹر صاحبؒ ہی کی زبانی یہ بیان سنئے! ادھر پھر اندازہ  
فرمائیے کہ واقعہ آپ کے شیخؒ نے جو اپنے وقت کے مانے ہوئے معالجہ روحانی تھے، آپ کی طبیعت  
اور آپ کے فطری جوہر کو محسوس کرتے ہوئے ایسے نسخے استعمال کرا دیئے جو نہ زیادہ شاق تھے نہ  
ہی اس میں کوئی زیادہ وقت صرف ہوتا تھا۔

حضرت ڈاکٹر صاحبؒ اپنے شیخ حضرت حکیم الامت مولانا اشرف علی صاحب تھانویؒ  
کے بارے میں تحریر فرماتے ہیں:-

”دورانِ علاج، ایک دن تنہائی میں، مجھ کو بلا کر فرمایا کہ بھائی، مجھ سے  
پرہیزی غذائیں نہیں کھاتے بنتیں۔

میں نے عرض کیا کہ حضرت! چونکہ اسہال کبدی میں، حضرت کے ضعف  
اور مرض کے لحاظ سے، ہلکی اور ذود ہضم غذائیں ہی تجویز کی جاسکتی ہیں.....  
فرمایا جی ہاں! ساری مشق اور احتیاط پرہیز ہمارے ہی لئے ہے، ہم نے تو تم  
سے کوئی پرہیز کرایا نہیں، صرف معمولی نوک پلک درست کر کے، کہاں سے  
کہاں پہنچا دیا!

غور فرمائیے، شیخ تھانویؒ کے آخری دو فقرے بہت بلیغ اور بڑے معنی خیز ہیں اور  
حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کی اس حیاتِ ناسوتی کا آغاز و انجام گرفت میں لے کر کہا جاسکتا ہے کہ  
حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کی پوری عرفانی زندگی، ان دو فقروں کا مصداق، اور اسی کی دل پسند تعبیر  
ہے۔

حضرت حکیم الامتؒ کے اس انداز گفتگو سے، انکی اس شفقت و محبت کا بھی اندازہ لگایا جاسکتا  
ہے جو انہیں اپنے مرید یا اختصاص یعنی حضرت ڈاکٹر صاحبؒ سے رہی۔

اور یہی جملے آپ کی اس عرفانی کیفیت اور روحانی علاج کی سند بھی پیش کر رہے ہیں جس کا مشاہدہ بعد میں اہل قلب و نظر نے بھی کیا۔

اور انہی دو جملوں کی بلاغت، ان تمام تر اصلاحی طریقوں کو، اپنے اندر سمیٹے ہوئے ہے جو حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے سلسلہ میں ان کے مربی نے، اپنی خدا داد بصیرت و کامل حذاقت سے تجویز کئے، اور جنکی بدولت وہ باسانی سلوک و تصوف کے مراحل طے کرتے چلے گئے، اور کہیں سے کہیں پہنچ گئے۔

کیسی دلچسپ حقیقت ہے کہ ایک، علی گڑھ کالج کا گریجویٹ، جس کی دینداری کے بارے میں عام طور پر اتنا ہی تصور کیا جاسکتا تھا کہ وہ نماز روزہ کا پابند ہو جائے گا، اور دینی کاموں میں کچھ نہ کچھ حصہ لے گا۔ اور عام زندگی اس کی، اسی طرز فکر اور طور طریقوں میں ڈھلی ہوئی ہوگی، جو ایک "علیگ" کا امتیازی وصف ہوتا ہے۔ ایسا شخص کبھی "علما" کی تربیت کا کام بھی کرے گا اور ایک وقت ایسا آئے گا کہ ایک بڑی اسلامی سلطنت کے مشہور و معروف دینی ادارے کی صدارت کا فریضہ انجام دے گا۔ اس کا تو کبھی واسمہ بھی نہ ہوا ہوگا۔ لیکن ع۔ قلندر ہرچہ گوید، ویدہ گوید،

مجدد ملت حضرت تھانوی کا یہ ارشاد "کہاں سے کہاں" اپنی پوری آب و تاب کے ساتھ، صادق آیا اور حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے مقام روحانی کے سامنے، بڑے بڑے مشائخ و طریقت نے سر نیاز خم کئے اور بہت سے علما دین نے اپنی روحانی تربیت کے لئے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کا دامن فیض تقاضا، اور الحمد للہ وہ اس بادۂ عرفان سے سرشار ہوئے جس کی سبیل حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کے ہاں لگی ہوئی تھی۔ غرض کہ یہ فیضان عام اور دیادی و دینی مقام، اسی ایک جملہ "کہاں سے کہاں" ہی کی تعبیر ہے۔

پھر لطف یہ کہ اس بلند درجے مراتب اور شریعت و طریقت کی جامعیت، قلب و روح کی جولائی تک رسائی کچھ بہت شدید مشقتوں اور طویل عرفی مجاہدوں سے نہیں بلکہ بقول شیخ "میرزا نوک پلک سنوارنے" سے حاصل ہو گئی تھی۔

اسی کا نتیجہ تھا کہ خود ان کا انداز تربیت، و طریقہ اصلاح، اپنے متوسلین کے لئے یہی رہا۔



اور وہ انہیں بھی معمولی نوک پلک درست کر کے ”کہیں سے کہیں“ پہنچاتے رہے۔

حضرت ڈاکٹر صاحب کے اصلاح و تربیت کے طریقوں میں، سہولت و اختصار کی روشنی و جہر یہ تھی کہ آپ نے علان جسمانی کا مشغلہ اپنایا تھا، اور وہ بھی ”ہومیوپیتھک“ کا، جس کے نتیجے میں دو باتیں پیدا ہو گئی تھیں۔

ایک تو یہ کہ روحانی اصلاح و تربیت بھی حقیقت ایک طرح کا علاج معالجہ ہی ہے، اور اس میں مہارت و بصیرت پیدا ہونے کا ایک سبب، ان وجوہات و علامات کا پہنچانا ہے جنکی بدولت امراض پیدا ہوتے ہیں۔ اور پھر، ہر مریض کے حسب حال، مناسب دوا اور متوازن غذا تجویز کرنا۔

مگر چونکہ یہ معاملہ ”روح“ کا ہوتا ہے جو جسمانیت کے تقاضوں سے، الگ اپنے کچھ تقاضے رکھتی ہے۔ اور اس کی تقویت و اصلاح کے لئے عالم قدس، کا رابطہ ناگزیر ہے۔ اس لئے علاج معالجے کی باریکیوں کے علاوہ اس میں، معالج کی اپنی قوت روحانیہ اور اپنی قوت عملیہ کا بھی بڑا دخل ہوتا ہے۔ جب کہ عام جسمانی معالجے میں، معالج کی ذاتی صحت و قوت کا علاج سے کوئی تعلق نہیں ہوتا، تاہم اتنی بات ضرور ہے کہ جسمانی بیماریوں اور روحانی بیماریوں میں ”بیماری“ اور مرض ہونا قدر مشترک ہے۔ اسی طرح انکے ازالہ کے لئے خواہ تدابیر علیحدہ نوعیت کی ہوں مگر تشخیص مرض اور تجویز دوا، ان دونوں میں قدر مشترک ہے۔

روحانی اصلاح بھی، جسمانی اصلاح ہی کی طرح ضروری ہے، اور اس میں بھی ان کیفیات و حالات کا سامنا ہوتا ہے جو جسمانی بیماریوں میں پیش آسکتی ہیں۔ اس لئے معالج جسمانی کو اپنے تجربات سے، نفس کی اصلاح کرنے میں جو تعاون میسر آتا ہے وہ کسی دوسرے شخص کو اتنی آسانی سے حاصل نہیں ہوتا۔

اس کا مطلب یہ ہرگز نہیں کہ جو شیخ و مربی، ڈاکٹر یا حکیم نہ ہو، وہ شیخ و پیر بنانے کے قابل نہیں، نہیں ہرگز نہیں۔ بلکہ کہنا صرف یہ ہے کہ جسمانی علاج معالجے کی مشق، معالجہ روحانی کے لئے بھی مفید ثابت ہوتی ہے، اور صاحب دل، شیخ اس چیز کو، انسانوں کے مزاج و حالات کے سمجھنے میں، بطور ذریعہ استعمال کر سکتا ہے، انکے ذہنی آمار چڑھاؤ، اور دلی حالات کو جانچنے

کے لئے ان کے روحانی امراض کی تشخیص کے لئے اپنے فن کو بروئے کار لاسکتا ہے۔

یہی وجہ ہے کہ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ میں بھی ”تشخیص مرض“ کی بے پناہ صلاحیت تھی اور وہ اپنے فن کو دونوں قسم کے امراض کی تعیین کرنے میں بروئے کار لاتے تھے۔

تشخیص امراض کے بعد، دوسری چیز ”تجویز دوا“ ہے اس میں بھی کمال مہارت یہ ہے کہ مختصر مؤثر دوا، تجویز کی جائے۔ ایسی دوا جس کو مرض بخوشی استعمال کر سکے اور اس کا اثر کھلی آنکھوں نظر آجاتا ہو، معالج کے فن تجویز میں مہارت کی سند ہوا کرتا ہے۔

فن طب کے والہ سنگان اوداب عام آدمی بھی، اس بات کا اعتراف کرتے ہیں کہ ہومیو پیتھک دوا، استعمال میں آسان، اور اثر میں کمال ہوا کرتی ہے، اگر ٹھیک ٹھیک تشخیص کے بعد، ان ہی حالات کے لئے متعین کردہ دوا، معالج تجویز کرے تو وہ تیر بہدف ثابت ہوتی ہیں۔ اسی طریقہ علاج کو اپنانے سے دوسرا اثر حضرت ڈاکٹر صاحبؒ میں یہ بھی تھا کہ آپ معالجہ روحانی میں بھی، بڑی مختصر مختصر دوائیں تجویز کر دیتے تھے، جو درحقیقت شریعت و طہارت کا عطر اور ”روح“ ہوا کرتی تھیں۔ جو آپ کی صحیح تشخیص کی بدولت، ایسی نشانے پر بیٹھتی تھیں کہ خود مریض بھی دنگ رہ جائے۔

بہر حال، خود اپنی اصلاح میں ”معمول نوک پلک کی درستگی“ کا فرما ہوا، اور معالجہ جسمانی کا شغل اختیار کرنا، یہ دو چیزیں ایسی تھیں جنہوں نے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ میں تربیت کر دینے کی وہ خاص شان پیدا کر دی تھی، جو اپنے خاندان کے افراد پر رکھتی تھی اور جو اس زمانہ کے حال کے لئے نہایت موزوں اور موجودہ دور کی خواہش باختمہ طبیعتوں کے عین موافق تھی۔

جس طرح ہومیو پیتھک دوائیں، دیکھنے میں بے رنگ، مقدار میں قلیل اور ذائقے میں شیریں ہوتی ہیں۔ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے، روحانی امراض میں بھی اسی طرح کی دوائیں تجویز فرمائی تھیں، جو بظاہر ہلکی پھلکی اور مجاہدات کے عام تخیل کے مقابلے میں کم اور استعمال کرنے میں دل خوش کن، اور پرتا شیر تھیں۔

اس بات کی تائید کے لئے حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کا ”طریقہ اصلاح“ پیش کیا جاسکتا ہے جو انکی مختلف تحریریں اور متفرق ارشادات سے بھی معلوم ہو جاتا ہے اور ذیل کے چند واقعات سے

بھی اس کا کچھ اندازہ ہو سکتا ہے۔

یہاں پہلے اس بات کو تازہ کر لیجئے کہ، تصوف و سلوک، اصطلاح و تربیت یا اس کے لئے بیعت ہونا اور کسی ایک اللہ والے سے اپنے حالات بتا کر، اپنی عملی کیفیت اور حالت کو بہتری کی طرف بدلنا، اور اپنے کاموں کو شریعت کے مطابق بنالینا، ان سب باتوں کا حاصل کیا ہے؟ ان امور کی انجام دہی کا مقصد کیا ہے؟

ظاہر ہے کہ اس کا جواب بھی دیا جائے گا کہ، اپنے ظاہری اعمال کو شریعت کے مطابق بنانا اور اپنے دل کی حالت کو، اخلاص و محبت سے آراستہ کرنا، خدا تعالیٰ کی مخلوق کے تمام حقوق بجالانا، اور ظاہر و باطن کی اس تعمیر کا اصل مقصد صرف یہ ہے کہ انسان کو اپنے مالک حقیقی سے، اطاعت کا تعلق ہو جائے اور مالک حقیقی، اس بندہ کی سعی کو مشکور فرما کر اس بندے سے خوش ہو جائے اور اس کو اس بندہ سے رضا مندی کا تعلق ہو جائے۔

گویا خدا تعالیٰ کی "یاد" دل میں بس جانا، اور اسی کی "اطاعت" میں منہمک رہنا یہی مقصد ہے ان تمام ظاہری و باطنی فرائض و واجبات کا۔

اور اسی مقصد تک پہنچنے کے لئے، نفس کو اطاعت کا عادی بنانے کے لئے، بطور مشق کچھ مجاہدات، اور ترک لذات بھی کرایا جاتا ہے، اور اسی "یاد" کے دل میں بسانے کے لئے اس کے نام کی رٹ لگوائی جاتی ہے۔

اور خدا تعالیٰ ہی کی محبوبیت پانے کے لئے، اس کے محبوب نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی اتباع اور اور انکی مشابہت پیدا کرنے کی فکر رہتی ہے۔

اور پھر یاد محبوب بھی اس کی محبت و عظمت کے گن گانے کے لئے، اور اپنی پستی و عاجزی کا اعتراف کرتے رہنے کے لئے ہے۔

علماء محققین اور صوفیاء و صالحین بھی اس بات پر متفق ہیں کہ انسانی کمالات میں سب سے بڑا درجہ کمال "عبدیت" ہے۔

اپنی حقیقت اپنی نگاہوں میں مستحضر ہو جائے اور اپنے مالک کی عظمت، دل میں پختہ ہو جائے، یہی مقام، مقصود ہے۔ اور یہی انسانیت کی معراج ہے۔

اندازہ کیجئے کہ خدا تعالیٰ سے تعلق محبت، اور اپنی عبدیت پیش نظر رہنے کا مقام، جو کہ سب سے اونچا مقام ہے، کس قدر کاوش سے اور کس قدر فنائیت حاصل ہوتا ہوگا اور اس کے حصول کے لئے کیا کچھ نہ کیا جاتا ہوگا۔

اوسچی بات یہی ہے کہ اسی تمام فنائیت تک پہنچنے کے لئے، اور عبدیت کو حاصل کرنے کے لئے گزشتہ دور کے سالکین نے بڑے پا پڑیلے ہیں، بڑی محنتیں کی ہیں، بڑے مجاہدات کئے ہیں کسانکا تصور بھی ہمارے دور کے انسان کے لئے بارگراں ہے۔

لیکن ہمارے حضرت ڈاکٹر صاحب نے اسی تمام تک پہنچنے کے لئے، اس دور کے ضعیف اور کمزور طبیعتوں کے مالک، لوگوں کے لئے، شریعت و سنت کی تعلیمات سے ایک عطر اور ”روح“ کشید کر کے، ملائے علام دیدی اور یہ عطر عبادت، دعا ہے جس کو حدیث شریف میں بھی عبادت کا مخز اور جوہر بتایا گیا ہے۔

حضرت ڈاکٹر صاحب سالکین اور عام مسلمین کے لئے ”دعا“ کرنے کو بہترین نسخہ قرار دیتے تھے، اور اس نسخہ کو ہمہ وقت استعمال کرتے رہنے کی تلقین و تاکید فرماتے تھے، حضرت ڈاکٹر صاحب نے اصلاح و تربیت کے لئے ”دعا“ کو خاص اہمیت دی تھی اور متوسلین کے سامنے اسکی اہمیت بار بار جتاتے تھے۔

اور پھر دعا کرنے میں جن کیفیات کا لحاظ ضروری ہے، اسکی وضاحت کرتے تھے۔  
فرمایا کرتے تھے کہ اپنی ہر ضرورت میں، اللہ تعالیٰ سے رجوع کرو، ان سے مانگو اور دل کھول کر ان سے عرض معروض کرو، لگ لپٹ کر مانگو۔ بالکل اس طرح خدا کرو، جیسے ایک معصوم بچہ، اپنی ماں سے، لجاجت، خوشامد اور عاجزی کے ساتھ خدا کیا کرتا ہے۔

اگر تم گناہوں پر شرمندہ ہو اور انہیں چھوڑ دینا چاہتے ہو، مگر تم سے چھوٹے نہیں تو یہ بات بھی اللہ میاں سے کہو:

کسی وقت تنہائی میں بیٹھ کر خدا سے کہئے:

”یا اللہ! میں حقیقہً اس سے بچنا چاہتا ہوں، مگر یہ معاشرہ مجھ کو مجبور کر دیتا ہے، یا اللہ!

آپ میری مدد فرمائیے۔“ ایتاک نعبد، و ایتاک نستعین



کبھی رور و کرند کے سامنے اپنی عاجزی نہ کر دو، یقیناً راہ ملے گی، مگر طلب صادق پیدا کرو۔

”ایک اور کام کی بات ہے۔“

اوراد و وظائف جو آپ کرتے ہیں وہ بے وزن ہیں۔ آپ کا دل صاف نہیں، اللہ اور رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت نہیں، یہ وظائف، ضابطہ کے طور پر آپ کر رہے ہیں، یوں خدا اپنی رحمت سے قبول فرمائے، لیکن یہ بے روح ہیں۔

اب اس میں جان کہاں سے آئے، یہ بھی اللہ میاں ہی سے کہو، یا اللہ! ہماری عبادات بے روح ہیں، اور ہم اس میں روح بھی پیدا نہیں کر سکتے لیکن آپ ہر چیز پر قادر ہیں، اسی روح پیدا فرمادیجئے۔  
اللہ پاک اگر مواخذہ کریں، کہ یہ سود اور رشوت، کیوں نہیں چھوڑتی، اور آپ جواب دیں کہ، یا اللہ! ہم اکیلے کیا کریں۔ سارا معاشرہ گندہ ہو گیا اسیں کہاں سے حلال و طیب چیزیں مل سکتی ہیں۔

اللہ پاک اس پر یہ فرمائیں کہ تم نے یہ بات کبھی ہم سے کہی تھی، اور ہم سے مدد مانگی تھی؟ تو کیا جواب دو گئے،؟  
اس لئے جو بات میں عرض کر رہا ہوں عمل میں لانے کے لئے، اس پر توجہ کیجئے  
بڑے کام کی بات ہے مجرب ہے اور نہایت سہل بھی۔  
اللہ پاک سے کہو،

یا اللہ! آپ نے ہی فرمایا تھا کہ مصیبت میں ہم سے مدد مانگو۔

یا اللہ! ہم میں ایمان کی قوت نہیں، مدافعت کی قوت نہیں، استقلال اور ہمت نہیں ہم سے یہ سب جو تقاضائے ایمانی ہے، ہو بھی نہیں سکتا،

آپ ہر چیز پر قادر ہیں، یا اللہ! ہم آپ ہی سے مانگ رہے ہیں ہم مغلوب ہو کر رہ گئے ہیں، ہر جگہ مجبور ہیں فسق و فجور ہم پر عائد کر دیا گیا ہے، دفنوں میں، اگر رشوت نہ لیں، تو ہماری نوکری برقرار نہیں رہتی دفنوں میں اگر رشوت نہ دیں تو ہمارا کام کسی طرح

ہوتا ہی نہیں، اور یہ سب آپ خود بھی جانتے ہیں اور اب رہنا بھی ہمیں اسی ماحول میں ہے اور آپ ہی اس کا سوال ہم سے حشر میں کریں گے۔ اور اس کی سزا بھی ہم کو ملے گی اور وہ سزا ہم برداشت نہیں کر سکتے۔

آخرت تو کیا، دنیا میں بھی اس بد عملی کا جو عذاب آئیگا وہ بھی ہم سے برداشت نہ ہو سکے گا، اور پھر موت کے وقت کی سختی اور عذاب قبر، عذاب برزخ، ہم کبھی اس کے متحمل نہ ہو سکیں گے۔

اور ہم اپنی اس حالت کے بدلنے پر بھی قادر نہیں بلکہ کل پھر اسی حالت میں چلنا پڑے گا، اب ہمارے اختیار سے باہر ہے۔ یا اللہ! ہم سے کچھ نہیں بنتا، ہم آپ سے فریاد لے کر آتے ہیں۔ ہماری مدد کیجئے۔

یا اللہ! نفس ان تمام لذات کا طالب ہے جو حرام ہیں، اور ناجائز ہیں اور شیطان ان کی تدبیریں بتلاتا ہے اور میں ان دونوں کی کوشش اور جاذبیت سے مغلوب ہو جاتا ہوں۔

نفس مجھے لذت کیلئے ابھارتا ہے اور شیطان تدبیریں بتلا کر مجھے گمراہ کر دیتا ہے، اور میں نہ دنیا کی تباہی چاہتا ہوں نہ آخرت کا نقصان۔

اور میرا کوئی ٹھکانا بھی نہیں سوائے تیرے، میں تو عاجز ہو گیا ہوں، انجام سے ڈرتا ہوں، اس لئے اپنے کام تیرے سپرد کرتا ہوں اور تجھے کارساز سمجھتا ہوں۔ اور اس پر بھی مجھے یقین ہے کہ تیری مدد کے بغیر کچھ نہ ہوگا

اور میں کچھ کر بھی نہیں سکتا، اور کسی ایک جگہ نہیں ہر جگہ مجھے ہی مرحلہ درپیش ہے، اور یہ کھلی نافرمانیاں ہیں جو جہنم میں لی بی نیوالی ہیں، مگر میں جہنم میں جانے کے لئے بھی تیار نہیں، اس لئے اپنے آپ کو تیرے سپرد کرتا ہوں۔ اور یا اللہ! نیزا وعدہ ہے کہ جو تجھ پر بھروسہ کرے تو اس کی غیب سے مدد کرتا ہے تو یا اللہ! میری بھی مدد فرمائیے۔  
”ایاک نعبد و ایاک نستعین“ میں تو تیری ہی بندگی کرتا ہوں اور تجھی سے مدد کا طلبگار ہوں۔

یہ ہے اللہ کے دربار میں اپنی عاجزی، اور اللہ سے مدد کی درخواست اور مراقبہ اپنے اعمال کا،

اپنی خامیاں، ماحول کی خرابیاں، بے جان عبادتیں، یہ ساری چیزیں اتنا درمطلق کے سامنے پیش کر دو۔

اور ندامت و عاجزی سے کہو:

یا اللہ! یہ لعنت زدہ معاشرہ، جس میں، میں اور میرے اہل و عیال اور دیگر متعلقین، بلکہ عالم میں جہاں جہاں بھی مسلمان ہیں، سب اس میں ملوث ہو گئے ہیں اور اسی بناء پر مسلمان دنیا میں خوار و رسوا ہو رہے ہیں۔

یا اللہ! ہم کو اس سے نجات دلوائے، اُمت محمدیہ پر رحم فرمائے، دشمنانِ دین کو مغلوب کیجئے اور ہماری توبہ و استغفار قبول کیجئے۔

یا اللہ! یہ غفلت زدہ قوم آپ سے رجوع بھی نہ کر سکے تو آپ کے چند مخلص بندے تمام اُمت کے لئے دعائیں کر رہے ہیں، آپ ان کی دعائیں قبول فرمائیے ہم نادانوں پر رحم فرمائیے، ہماری بد اعمالیوں پر نہ دنیا میں سزا دیجئے اور نہ آخرت میں۔

ہمارے اخلاق، ہمارے معاملات، شریعت کے مطابق کر دیجئے، ہم کو فہم دین عطا فرمائیے دنیا میں حیاتِ طیبہ عطا کیجئے۔

یا اللہ! ایمان کامل کے ساتھ ہم سب کی عاقبت بخیر فرمائیے۔

یا اللہ! ہم تمام عذابوں سے پناہ مانگتے ہیں۔ دنیا و آخرت کی ہر مصیبت سے ہولِ محشر سے اور ہر مَوَاخِذ سے ہم کو بچا لیجئے۔ یا اللہ! اپنے نیک بندوں کی نسبت سے، جن سے آپ نے ہمارا تعلق قائم فرمایا ہے ہماری دعائیں قبول فرمائیے اپنے محبوب نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی شفاعت نصیب فرمائیے۔

اسی دعا ہی کے سلسلہ میں یہ اقتباس بھی دیکھئے:

میں نے عرض کیا، روزانہ صبح کے بعد بیٹھ جاؤ اور اس طرح کی دُعا مانگو۔  
اپنے گناہوں، صغائر سے، کبائر سے، بدحواسیوں، دشواریوں، بیماریوں، بوندات اور الجھن سے وہ

سب پیش کو اللہ میاں کے سامنے، دیکھو! چند دنوں میں انشاء اللہ کایا پلٹ جائیگی۔  
میں آپ کو بشارت دیتا ہوں اور یقین کے ساتھ، قوت ایمانیہ کے ساتھ کہتا ہوں  
کہ اگر بارگاہ الہی میں عجز دنیا کے ساتھ اقرار جرم کیا اور اپنے گناہوں کو ترک کرنے کا  
ارادہ کیا تو انشاء اللہ، اس کی مدد ہوگی، ضرور ہوگی۔

”آنکھ بند ہونے ہی انشاء اللہ سیدھے جنت میں جاؤ گے“ یہ میں اپنی طرف سے  
نہیں کہہ رہا، اپنی طرف سے کیا کہتا، یہ اللہ تعالیٰ کا وعدہ ہے۔ اللہ تعالیٰ نے ایسا وعدہ کیا ہے۔  
حضرت ڈاکٹر صاحب کی مجالس میں اکثر اوقات دعا ایسی تفصیل کے ساتھ اور اس  
کیفیت ساتھ ہوتی تھی کہ اللہ تعالیٰ سے ایک عجیب تعلق پیدا ہوتا ہوا محسوس ہوتا تھا۔ وہ  
مجالس اکثر شائع ہو گئی ہیں۔ اُن کے مطالعے سے بخوبی وہ طریقہ کار اور وہ الفاظ اور ہمارے  
اوپر پیش آنیوالے حالات کی ترجمانی، سامنے آئیگی جو ہم کو اللہ تعالیٰ کے ساتھ عرض معروض  
کرنیکا سلیقہ سکھادے۔

حضرت ڈاکٹر صاحب نے اس ”مغز عبادت“، کایف اور اس کا حقیقی رنگ اپنے  
حنی طبین کے سامنے کر دیا تھا۔

جس کا نتیجہ یہ نکلتا تھا کہ دعا مانگنے والا، حق تعالیٰ سے سرگوشیوں میں باتیں کرینکا  
عادی ہو جاتا تھا، ہر وقت دل ہی دل میں، عرض معروض جاری ہو جاتی تھی۔ اور رفتہ  
رفتہ وہ آدمی ”ایاک نعبد و ایاک نستعین“ کی تعبیر و تفسیر بن جاتا تھا، اپنی عیب  
اور خدا تعالیٰ سے ہر معاملہ میں استعانت کا تصور اس کی رگ رگ میں سما جاتا تھا۔ اور  
پھر اسی ایک عمل سے وہ، غفلت سے ہوش کی طرف، معصیت سے، طاعت کی طرف،  
بیگانگی سے محبت کی طرف کھینی چلا آتا تھا۔

یہ ”دعا“ تو گویا ایک درجہ میں دو اکٹھی، اس کے ساتھ ہی اس نسخہ و کیمیاء میں  
چند پرہیز بھی کرائے جاتے تھے، وہ بھی بعض ایسی ہی باتیں تھیں جنکا چھوڑ دینا کچھ زیادہ  
مشکل نہ تھا، لیکن ان کی حیثیت بڑی خطرناک تھی۔ اور ان کی موجودگی میں بڑی سے بڑی  
دوا بھی کارگر ہوتی نظر نہ آتی تھی۔



ہمارے موجودہ حالات میں یہ چیز کثرت سے پیدا ہوئی ہے کہ ایک طرف تو ہمارے سامنے معاشرتی زندگی میں، مختلف قسم کی لطف انگیز چیزیں ہیں، اور نفس کی مرغوب اشیاء ہیں، نت نئے فیشن ہیں۔ بے پردگی اور بے حیائی کے مناظر ہیں، راگ رنگ کی محفلیں اور بے تکلف، بے محابا مرد و زن کا میل جول ہے، ہر ہر چیز میں اسلامی وضع اور دینی احکام کو چھوڑ کر مغربی تہذیب کے تقاضے پورے کر نیکی فکر دامنگیر رہتی ہے۔

۵۔ ہم مشرق کے مسکینوں کا دل مغرب میں جاٹکا ہے  
پھر کچھ لوگ تو اس نقالی کے شوقین ہیں اور کچھ دوسروں کی دیکھا دیکھی یا ان کا ساتھ دینے کے لئے ان تمام غیر شرعی، غیر شریفانہ طریقوں کو اپناٹے ہوئے ہیں اور دوسری طرف شریعت کے، ایمان کے تقاضے ہیں۔

بہر حال یہ ناگفتنی حالت تو ہے ہی لیکن اس بد عملی کے رد عمل میں جو نحوست ہم پر طاری ہوئی وہ بڑی خطرناک ہے۔

کہ اب ہم اپنی حالت کو ناقابل تبدیل سمجھ کر، یا موجودہ طریقوں کی دل فریبوں سے دھوکہ کھا کر، اسلامی احکام کا مذاق اڑانے لگے۔ یا انکار انکار کرنے پر اتر آئے۔ بجائے اپنی غلطیوں کا اعتراف کرنے کے۔ ان احکام ہی کو غلط کہنے لگے۔

یہ بات بہت نقصان دہ تھی۔ اس سے ہم گنہ گاروں کی فہرست سے نکل کر باغیوں اور انکار کر دینے والوں کی فہرست میں آتے جا رہے تھے۔

بلاشبہ یہ انکار و بغاوت، جسکو "ذہنی ارتداد" سے تعبیر کر دینا بے جا نہ ہوگا۔ اس دور کا عظیم اور ہلک ترین فتنہ ہے۔

اور ستم بالائے ستم یہ کہ اس چیز کو کبھی ہم نے محسوس بھی نہ کیا تھا کہ اپنے بڑے عمل کی یہ تاویل سازی، یا دینی وضع قطع کا مذاق، ارتداد اور بغاوت کی علامت ہے۔

لیکن حضرت ڈاکٹر صاحب نے اس کا بخوبی ادراک کیا کہ یہ چیز مسلمانوں کے لئے سیم قاتل ہے اور وہ اس کو معمولی سمجھ رہے ہیں مگر درحقیقت یہ معمولی بات نہیں ہے اس کے اثرات بہت غلط ہوں گے اور یہ انداز فکر ہمارے تمام اچھے اعمال کو بھی غارت

کردے گا۔ اس انداز فکر کی ہولناکی اور اسکی سمیٹ کا اندازہ کرنے کے ساتھ ساتھ انہوں نے یہ بھی بھانپ لیا کہ اس انداز فکر کا محرک کیا ہے ؟ وہ محرک دو چیزیں ہیں۔

① ایک تو یہ کہ ہم اس بد عملی اور تہذیبی انقلاب کے عادی ہو گئے ہیں۔ اور اس میں ایک طرح کا لطف آنے لگا ہے اب نفس اس لطف اور مزے کو چھوڑ دینے کے لئے تیار نہیں۔

ادھر جب ہمارے سامنے تقاضائے ایمانی آتے ہیں تو، ہمیں اپنا مزہ کرکرا ہوتا نظر آتا ہے، جسکے رد عمل میں، ہم شریعت کے ساتھ استہزاء کرتے اور اس کے واجبات و فرائض کا اس دور میں ناممکن ہونا ثابت کرتے ہیں۔

② دوسری بات یہ ہے کہ ہم اپنی سیاسی اور اقتصادی بد حالی کی بدولت دنیاوی ترقی یافتہ قوموں سے ایسے مرعوب ہو چکے ہیں کہ ہر بات میں ان کی نقل اپنے لئے سرمایہ افتخار سمجھتے ہیں گویا ہمارے دل انکی عظمت سے سیریز ہو رہے ہیں اور خدا تعالیٰ کی عظمت، اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی عظمت سے ہمارے دل خالی ہو چکے ہیں۔

جس کا نتیجہ یہ ہے کہ ہم خدا تعالیٰ کی نافرمانی کو زیادہ اہمیت نہیں دیتے اور شعائر اسلامی کو ترک کر دینے میں کوئی قباحت نہیں محسوس کرتے اور برملا کہہ اٹھتے ہیں کہ اب اسکی ضرورت نہیں ہے کہ ہم دائھی رکھیں، ہماری عورتیں پردہ کریں۔ اور حیا و غیرت کے فرمودہ تقاضوں کو نبھائیں۔ وغیرہ وغیرہ۔

حضرت ڈاکٹر صاحبؒ انہی محرکات پر نظر فرما کر ارشاد فرماتے تھے کہ اگر تم سے گناہ نہیں چھوڑے جاتے اپنی تہذیب و تمدن کا موجودہ انقلاب نہیں روکا جاتا تو خدا کیلئے اپنی غلطی کا اقرار تو کرتے رہو، کئے جاؤ یہی جو تم کر رہے ہو۔ مگر اس کو بُرا تو سمجھتے رہو

اور جنگی عظمت کا دم بھرتے ہو، جنگی نقالی کے لئے مرے جاتے ہو، ذرا انہیں بھی دیکھو کہ وہ خود اپنی گندی اور انسانیت سوز طرزِ معاشرت سے اکتا چکے ہیں اور اب اسلام ہی کی طرف آرہے ہیں۔ خدا را ہوش سے کام لو، کہیں ایسا نہ ہو وہ تمہاری جگہ لے لیں اور معاذ اللہ تم انکی جگہ ہو جاؤ۔ اسی سلسلہ میں حضرت ڈاکٹر صاحب نے یہ واقعہ بیان فرمایا:

ایک دفعہ ہمارے حضرت علیہ الرحمہ نے وعظ میں فرمایا کہ:

صاحبو! میرے سامنے ایک بڑا خطرناک منظر ہے۔ جس کے تصور سے دل لرزتا ہے وہ منظر یہ ہے کہ دوسری قومیں اور دوسرے مذاہب کے لوگ اپنے معاشرے، بد اخلاقی، اور ناپاک زندگی سے عاجز آگئے ہیں وہ جب سکون قلب اور پاکیزہ زندگی کی تلاش کرتے ہیں تو ان کو صرف اسلام ہی میں مقصوریات نظر آتا ہے اس لئے اسلام کی تعلیمات اور اسلام کے ضابطوں کی طرف متوجہ ہو رہے ہیں اور ان کی قدر کر رہے ہیں، ان کے اندر تلاشِ حق، تلاشِ عافیت اور پاکیزگی، معاشرہ کی درستگی کی طلب پیدا ہوئی ہے اور ان کو اپنے مقاصد کے حصول کے لئے اسلام ہی سب سے زیادہ صحیح نظر آتا ہے۔

تو دوسری قومیں، جو رندیت ہیں، ملحد ہیں، کافر ہیں، مشرک ہیں وہ اسلام کی قدر کرتے جا رہے ہیں اور اسلام کی طرف مائل ہوتے جاتے ہیں۔ اگر وہ لوگ اس طرح آگے بڑھتے رہے اسلام کی قدر کرتے رہے تو دین اسلام کے قریب ہو جائیں گے۔

اور برعکس اسکی مسلمانوں کو میں دیکھتا ہوں کہ وہ ایمان و اسلام کی ناقدری کر رہے ہیں، شعاثر اسلام کو ترک کرتے جا رہے ہیں اور یہود و نصاریٰ کی تہذیب و تمدن اور طرزِ معاشرت کو اختیار کرتے جا رہے ہیں، جس پر اللہ کی پشکار دنیا میں بھی ہے اور آخرت میں بھی۔

حضرت والا فرماتے ہیں کہ:

مستقبل کا بڑا خطرناک اور عبرتناک منظر میرے سامنے یہ ہے کہ خدا نخواستہ، کہیں

ایسا نہ ہو اور کہیں ایسا وقت نہ آجائے کہ وہ کفار تو اُدھر بڑھتے جائیں اور تم اُدھر گھٹتے جاؤ پھر سرحد پر پہنچ کر وہ اُدھر (اسلام) میں داخل ہو جائیں اور تم اُدھر (کفر) میں داخل ہو جاؤ، العیاذ باللہ! حق تعالیٰ محفوظ رکھیں۔

اور فرمایا: میں اسی لئے ان واقعات سے متاثر ہو کر بار بار دہرات ہوں کہ خدا کیسے اپنے ایمان کی قدر کرو۔ اپنے اسلام کی قدر کرو اور اسی کے ضابطے اور حدود میں رہ کر عافیت حاصل کرو، اسی میں دنیا اور آخرت کی فلاح ہے۔

بھئی! اللہ سے پناہ مانگا کرو کہ ایسا وقت ہمارے آپ کے سامنے نہ آئے اور ایسی بات نہ ہو کہ ہمارا انجام عبرت ناک ہو اور دوسری قومیں ہم پر ہنسیں۔ ایک اور موقع پر غیرت دلاتے ہوئے ارشاد فرماتے ہیں۔

”کسی قدر عبرتناک واقعہ ہے کہ ایسے نا عاقبت اندیش اور نام نہاد مسلمان اپنے دین کی خوبیوں اور صلاح و فلاح کی ناقدری کرتے ہوئے کفار و مشرکین کی ظہری عیش و عشرت کے ساز و سامان کی طرف مائل ہوتے ہیں۔

یکن ذرا ان کی اندرونی زندگی کا بھی تو جائزہ لیجئے کہ امریکہ اور انگلینڈ والوں کی، زندگی کیسی ہے؟

جوان کے اندرونی حالات سے واقف ہیں اور ان کے تہذیب و تمدن کو دیکھ رہے ہیں ان کا کہنا ہے کہ:-

ان کی زندگی میں نہ حیا ہے نہ غیرت، نہ شرافت ہے نہ انسانیت، ناپاک بانوؤں سے بدتر، قابل نفرت زندگی ہے۔ یہ ساری قوم علانیہ شراب خوری، زنا کاری، بدمعاشی، بے حیائی اور مدہوشی میں مبتلا ہے، جسکی انجام کار کے لحاظ سے، بربادی، اور تباہی کے سوا دوسری صورت نہیں۔ عبرت کی نظر سے دیکھئے! یہی قومیں، دنیا میں امن و امان کی دشمن بنی ہوئی ہیں، ان کے تمام ذرائع، وسائل، قوتیں اور ایجادات بنی نوع انسان کے لئے ہر جگہ ہلک ثابت ہو رہی ہے۔

کیا ہم ایسوں کی تقلید کیجیے پڑے ہوئے ہیں؟ ان کی اس ناپاک زندگی سے



عبرت حاصل کرنی چاہیے اور شکر ادا کرنا چاہیے کہ اللہ تعالیٰ نے ہم کو ایمان عطا فرما کر شرف انسانیت پر قائم رہنے کیلئے چُن لیا۔۔۔۔۔

اسی طرح اس انکار و بغاوت کے دوسرے محرک علاج فرماتے ہوئے تلقین کرتے کہ: تم سے رائج الوقت گناہ نہیں چھوڑے جاتے، ایک دم سے نہ چھوڑ سکو نہ چھوڑ ولیکن کسی ایک وقت تنہائی میں اللہ میاں کے سامنے بیٹھ جاؤ اور کہو!

یا اللہ میں ان برائیوں میں مبتلا ہوں، چھوڑنا چاہتا ہوں مگر عادت سے مجبور ہو کر، یا معاشرہ سے مغلوب ہو کر چھوڑ نہیں پا رہا۔

یا اللہ میں جانتا ہوں کہ یہ عمل خراب ہے، آپ کی ناراضی اور میری بربادی کا سبب ہے۔ لیکن یا اللہ! میں آپ سے ہی درخواست کرتا ہوں کہ مجھے میرے اس عمل کی جزائے بد سے بچا لیجئے۔ میں نہ اسکی سزا کا متحمل ہوں نہ اسکی دنیاوی نخواست کا۔

یا اللہ مجھے ہمت دیدیجئے تاکہ میں یہ گناہ چھوڑ سکوں۔ میرا ایمان قوی اور مضبوط فرما دیجئے۔ اور مجھے دنیا و آخرت کی تباہیوں اور رسوائیوں سے بچا لیجئے۔۔۔۔۔ فرماتے کہ!

اس طرح عرض معروض کر لو، خود کو باغی نہ کہلو، مجرم رہو مگر اقرار ہی مجرم رہو، اور اپنا معاملہ ہر روز خود ہی پیش کرتے رہو، انشاء اللہ کچھ ہی عرصہ میں قوتِ ایمانیہ عود کر آئے گی اور خود بخود وہ باتیں چھوٹی چلی جائیں گی جنکا چھوڑنا تمہیں ابھی دشوار معلوم ہو رہا ہے۔

بہر کیف، حضرت ڈاکٹر صاحبؒ، لوگوں کو انکار و بغاوت سے باز رہنے کی تاکید فرماتے۔

دوسرا پرہیز، یہ کرنا ہے کہ دیکھو خبردار، اللہ تعالیٰ کے علاوہ کسی کو مؤثر حقیقی نہ سمجھو، اپنے ایمان کو درست رکھو، عقیدہ توحید میں گڑبڑ مت کرو، چنانچہ ارشاد فرماتے ہیں کہ:

ہمارا کونسا کام ایسا ہے جو شریعت و سنت کے مطابق ہو، شادی بیاہ،

خرید و فروخت، رہن سہن، لباس پوشاک غرضیکہ ہر چیز میں ہمارا طرزِ عمل خدا تعالیٰ کے نامفومانوں جیسا ہے۔

”ذرا آج کل کی نکاح و شادی کی تقریبات پر نظر کریجئے، کیا ہو رہا ہے؟ بڑے بڑے قیمتی اور خوشنما رنگ رنگ، دعوت نامے چھپ رہے ہیں، اسکے آخر میں دیکھئے کون مدعو کر رہا ہے؟ بیگم و فلاں صاحب، بیگم صاحب کا نام پہلے آتا ہے اور شوہر صاحب کا نام بعد میں آتا ہے وہی فرنگی تہذیب والی ذہنیت یہ کورانہ تقلیدِ اسلامی نقطہ نظر سے بڑی بے غیرتی کی بات ہے۔

پھر کارڈ میں لکھتے ہیں ”نکاحِ مسنونہ“، ”ولیمہ مسنونہ“، ماشاء اللہ، کیا خوب نکاح مسنونہ، اور ولیمہ مسنونہ ہے۔ ذرا شادی ہال میں جا کر دیکھو کیا ہو رہا ہے۔ دلہن، دلہا کے فوٹو لٹے جا رہے ہیں، عورتوں، مردوں کا اختلاط، بلا تکلف و ڈیول جا رہا ہے۔ طرح طرح کے گناہ کبیرہ، اسراف، جو آجکل شادی ہالوں میں ہو رہے ہیں ان کی زندگی میں بار بار یاد تازہ کریں گے، کھڑے ہو کر کھانا کھایا جا رہا ہے۔

قاضی صاحب، خطبہ پڑھ رہے ہیں سامنے فوٹو لٹے جا رہے ہیں وڈیو بن رہا ہے گانے بجانے کی آوازیں بھی آرہی ہیں، دلہا صاحب ہیں کہ سہرے میں ڈھکے ہوئے ہیں جو خالص مشرکانہ، ہندوؤں کی رسم ہے جو تہہ بہ تہہ بالکفار کا شاہیہ لٹے ہوئے ہے، دلہا صاحب کو تحفہ میں سونے کی انگوٹھی دی جاتی ہے جس کو مرد کے لئے پہننا حرام ہے۔

دلہن صاحب کے میک اپ میں ”نیل پاش“ کا استعمال لازمی ہے جس کے لگانے کے بعد نہ وضوء ہوتا ہے نہ غسل، شادی ہال کو ہر طرح کی روشنیوں سے سجایا جاتا ہے جو شرعی اعتبار سے اسراف و تبذیر ہو نیکی وجہ سے شیطان لعین کی برادری میں داخل کر دینے کا ذریعہ بن رہا ہے۔

مشرکاء تقریب کو نہ نماز کا خیال ہے نہ جماعت کی فکر، یہ ہے اس ولیمہ مسنونہ یا عقدِ مسنونہ کی ہیئتِ کدائی، جو نہ معلوم کتنے گناہ کبیرہ، اسراف، حرام و ناجائز امور کا مجموعہ ہے۔ استعزازیہ۔ لاجول ولا قوۃ الا باللہ۔

اب اس کے خمیازہ پر نظر کیجئے۔ شادی ختم ہوگئی، اندازہ سے زیادہ خرچ ہو گیا، قرض کا بوجھ الگ رہا اور ابھی مہینہ بھر بھی نہیں گذرا کہ شوہر اور بیوی میں مزاحی اختلاف شروع ہو گیا، زندگی میں تلخی پیدا ہونے لگی دونوں فریق کالج کی آزادانہ فضاؤں کے تعلیم یافتہ، تربیت یافتہ ہر ایک کو اپنی فوقیت کا احساس، آپس میں نہ باہمی اعانت کا احساس نہ محبت نہ رواداری، اگر دین سے بیگانگی ہوئی تو نہ طہارت نہ عبادت، ایسا اختلاف بڑھتے بڑھتے شدت اختیار کریتا ہے اور طلاق و خلع کی نوبت آ جاتی ہے۔۔۔۔۔

ماں باپ کو اگر انکی پریشانی کا احساس ہوا تو اس کے تدارک کے لئے عملیات اور تعویذ، گنڈوں کے پھیر میں پڑ جاتے ہیں۔

کہتے ہیں، کسی کے حسد کا نتیجہ ہے، کسی نے جادو کر دیا ہے، کسی نے سفلی عمل کر دیا ہے، مگر اس کا احساس نہیں کہ خود کتنے گناہوں اور خلاف شرع باتوں کا ارتکاب کر چکے ہیں، جس کا یہ وبال ہے۔

یہ ایسا وبال ہے جو گھر گھر رائج ہو رہا ہے۔ اب تم نے جب اپنے لئے ناجائز کو جائز، حرام کو حلال کر لیا، تو اس کا وبال ضرور بھگتو گے۔

”کہتے پھر د، سفلی عمل ہے، فلاں نے یہ کر دیا، فلاں نے وہ کر دیا“

حضرت ڈاکٹر صاحبؒ اس بات پر تنبیہ فرماتے تھے کہ اپنے اعمال کے نتیجہ میں جب کوئی پریشانی اور ناگواری پیش آتی ہے تو بجائے اس کے کہ اپنے گناہوں پر نادام ہوں، معافی کے خواستگار ہوں۔ اپنی حرکتوں نالائقیوں پر نظر کریں، اس تمام تر ناگواری کو کسی اور انسان کے سر ڈال کر اپنے حال کو بدلنے اور ان گناہوں کو ترک کر دینے کے قریب بھی نہیں پھٹکتے۔

چنانچہ ایک موقع پر ارث د فرماتے ہیں:

”ذرا اپنے گرد و پیش کے ماحول میں اپنے ایمان کا جائزہ لیجئے۔ جو بے دینی کی باتیں

معاشرہ کے اندر دین کے پیرایہ میں پیدا ہو رہی ہیں۔

مثلاً جہاں کوئی دشواری اور پریشانی روزگار میں یا کسی دوسرے معاملہ میں پیش

آئی۔ تو تعویذ گنڈے، عملیات یا وظیفہ کی طرف دوڑ ہوتی ہے۔

کہ یہ پریشانی تو سفلی عمل کی وجہ سے ہے، یہ سحر معلوم ہوتا ہے، کسی نے جادو کر دیا ہے جو روزگار گرتا جا رہا ہے، نقصان ہوتا جا رہا ہے، کوئی کہتا ہے کہ لڑکیاں بیٹھی ہوئی ہیں رشتے نہیں آتے، جو رشتہ آتا ہے چھوٹ جاتا ہے، کسی نے دشمنی میں کچھ کر دیا ہے۔  
”حالانکہ اپنے اعمال کا یہ حال ہے کہ مرد ہوں یا عورتیں، طرح طرح کے گناہ کبیرہ میں مبتلا ہیں، ٹیلی ویژن بھی چل رہا ہے، گانے بجانے کی ریڈیو پر تفریحات بھی ہو رہی ہیں۔

محرم و نامحرم کا کوئی سوال ہی نہیں، شرعی پردہ اور غیرت وحیاء چھوڑ رکھی ہے، دنیا بھر کی بدتمیزیاں، دنیا بھر کی بے ایمانیاں اور خلاف شرع باتیں اختیار کر رکھی ہیں۔ مکان تصویروں سے سجے ہوئے ہیں، کھانے پینے، رہنے سہنے، وضع قطع، لباس اور پوشاک شکل و صورت سب غیر شرعی، جو دیکھنے میں تو بہت دلکش و دلغریب اور لذیذ، مگر حقیقت میں سب گندے، سب ناپاک، اسلام کے خلاف اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے حکم کے خلاف۔

اور اس پر سہارا ڈھونڈتے ہیں تعویذ گنڈوں کا، عملیات کا، وظیفوں کا، ننگ ہوں کے چھوڑنے کا خیال نہ تو بہ اور استغفار کی فکر، نہ رجوع الی اللہ نہ اپنے اعمال پر مذمت و شرمندگی، نہ اللہ تعالیٰ کو راضی کرنے کا خیال۔

یہ سب عقیدے کی خرابی ہے، ایمان کی کمزوری ہے، تعویذ گنڈوں اور وظیفوں کو موثر سمجھ لیا گیا ہے، گویا اللہ تعالیٰ سے تو کچھ مطلب نہیں، تعویذ گنڈے سب کام بنادیں گے۔“

تعویذ گنڈوں کے سلسلہ میں ہمارے یہ تاثر و تصور درحقیقت عقیدہ توحید کے منافی ہے۔ اور اللہ تعالیٰ محفوظ رکھے یہ شرک و کفر کے دائرہ میں لیجئے اس کا سبب بن سکتا ہے دیکھنے میں یہ کتنی عام اور معمولی سی بات لگتی ہے، مگر امت کے اس حکیم و نبض شناس قوم نے اس دکھتی رگ پر ہاتھ رکھا اور مرض کی ہولناکی اور ہلاکت خیزی کی خبر دی۔



یہاں تک تعویذات کا تعلق ہے شریعت میں اسکی اجازت بطور ایک تدبیر کے دی گئی ہے جیسے بیماری کی حالت میں دوا، کھانسی کی اجازت بلکہ حکم دیا گیا ہے اسی طرح ایک نافع تدبیر خیال کرتے ہوئے اس کی بھی اجازت دیدی گئی، اور اسی لئے اہل حق علماء و صوفیاء، قرآن و حدیث کی آیات اور دعائیں بطور تعویذ کے لکھ کر دیتے رہے ہیں۔ لیکن موجودہ حالات میں، اپنی حالت سے ہینگری اور تعویذات پر مکمل بھروسہ کر لینے کی جو فضاء پیدا ہو چلی ہے اس کے لئے ضرورت تھی کہ اصل حقیقت کو کھولا جائے اور اس طرزِ عمل کے منفی اثرات کی روک تھام کی جائے کیونکہ تعویذ کو اپنی ذاتی حیثیت سے فائدہ پہنچا نیوالا یا کسی غلط تعویذ کو، بذاتِ خود نقصان پہنچا نیوالا سمجھ لینا بالکل غلط ہے۔

دنیا میں رہتے بستے انسانوں میں نفع و نقصان ایک دوسرے کے سبب سے پہنچتا رہتا ہے لیکن اصل نافع و ضار خود ذاتِ اقدس ہے، جہاں نفع اس نے کسی کو ذریعہ بنا کر پہنچایا وہیں نقصان کا بھی کوئی سبب بن گیا۔ اب نقصان و ناگواری پیش آجانے کی صورت میں ہم اپنے مالک حقیقی کی طرف رجوع کرنے کے بجائے کسی انسان کے بارے میں یہ رائے قائم کریں کہ چونکہ اس شخص سفلی عمل کر دیا ہے اس لئے نقصان مقدر بن چکا ہے یہ ایسا احمقانہ خیال ہے جو ایک بے عقل جانور بھی نہیں کرتا۔

کسی جانور کو آپ پتھر مار دیں تو وہ بھی اتنی تمیز رکھتا ہے کہ بجائے پتھر سے لڑنے کے پتھر پھینکنے والے کی طرف رخ کرتا ہے لیکن ہم اپنے ایمانی ضعف کی وجہ سے اس حالت کو پہنچ گئے ہیں کہ ایک جانور سے بھی گئے گزسے ہوتے جا رہے ہیں۔

حضرت ڈاکٹر صاحب اس خطرناک تصور اور اس زہریلے خیال سے پرہیز کرتے تھے گویا مسلمانوں کو عقیدہ توحید میں پختگی اور رسوخ کی تعلیم دیتے تھے۔

دیکھتے یہ پرہیز کس قدر ضروری تھا اور اس کے نتائج کس قدر دور رس ہیں۔ عقیدہ توحید تو مسلمان کی پہچان، اور اس کی عملی زندگی کی جان ہے اس میں کمی و نقصان کی صورت میں اس کا سارا ڈھانچہ ہی بے رنگ ہو جاتا ہے۔ حضرت ڈاکٹر صاحب کی بعض شناسی کی ایک مثال اور یہ ہے۔ ایک اور خطرناک مرض کی نشاندہی فرماتے ہوئے ارشاد ہوتا ہے:-

آج کل نفسانی شعبہ بازیوں کا بازار بہت گرم ہے، جس میں زیادہ تر شیطانی

تصرفات شامل ہیں، نظر بندی، قوت متحیدہ کی اثر اندازی، عملیات، مسمیریزم، یا غیبی آوازوں کا سنائی دے جانا، غیبی صورتوں کا متشکل ہونا، روشنی اور رنگ نظر آنا، یا ماضی کے واقعات کا بیان کرنا، یا مستقبل کے لئے پیشین گوئیاں کرنا۔ یہ سب مختلف قسم کی مشقوں اور ذہانت و قیاسات کا کرشمہ ہے۔“

”اس زمانہ میں اکثر نادان، کیفیت نفسانیہ کو کیفیات روحانی سے تعبیر کرتے ہیں، ان کو نہ روح کی حقیقت معلوم نہ نفس کی، بس کسی قوت باطنی کا ظہور ہوا اسے روحانی کہہ دیا۔“ آج کل مغربی ممالک میں یہ وبا عام طور پر پھیلی ہوئی ہے وہ لوگ اپنی مادہ پرستی سے بیزار ہو رہے ہیں، اور اپنی عقل و فہم سے، نفسانیت اور مادیت کے بُرے اثرات نجات پانے کے لئے ترک لذاتِ نفسانی و شہوانی کو سکونِ قلب اور حصولِ مقاصدِ زندگی کیلئے ضروری سمجھا اس لئے انہوں نے نفس کشی کے سلسلہ میں ہندو جوگیوں اور نیاسیوں کے طریقے اختیار کرنا شروع کر دیئے۔“

اسی نفس کشی کے مجاہدوں اور قوتِ متحیدہ کی مشقوں میں، جو باطنی ترقی کے نام سے امریکہ اور دوسرے مغربی ممالک میں رواج پذیر ہو رہی ہے، شیطان اپنی پوری قوت کے ساتھ، نفسِ انسانی پر متصرف ہوتا ہے اور طرح طرح کے شعبوں میں مبتلا کر دیتا ہے یہ نادان انسان یہ سمجھنے لگتا ہے کہ اس کو مقصود حاصل ہے۔

حالانکہ بات صرف اتنی ہے کہ جب کوئی شخص (خواہ مومن ہو یا غیر مومن) نفس کی قوتوں اور صلاحیتوں کو، مخصوص مجاہدوں اور مشقوں سے رو بکار لاتا ہے تو اس سے بھی حیرت انگیز مشاہدات رونما ہوتے ہیں اور دیکھنے میں وہ کرامتیں، تصرفات اور کشفیات معلوم ہوتی ہیں مگر یہ سب باتیں نفسانی اور ظلمانی ہوتی ہیں کیونکہ جو کچھ اس کے توہمات میں اس کو حاصل ہے وہ اس کی زندگی میں کسی کام کا نہیں نہ تہذیب و تمدن میں، نہ معاشرت و معیشت میں، نہ سیاست و عدالت میں۔

چونکہ مسلمانوں کے یہاں بھی صوفیاء کرام تربیت و اصلاح کے لئے کچھ ریاضتیں کراہا کرتے تھے اس سے یہ شبہہ پیش آسکتا تھا کہ موجودہ دور کی یہ روحانی مشقیں اور صوفیوں

کی ریاضتیں ایک ہی چیز ہیں۔ اس لئے اس شبہ کا بھی ازالہ ضروری تھا  
چنانچہ ارشاد فرماتے ہیں کہ :

اسلامی نظریات اس نفس کشی کے بارے میں بالکل مختلف ہیں، مسلمان صوفیاء کرام جو نفس کو قابو میں لانے کے لئے ریاضتیں اور مجاہدے کراتے رہتے ہیں ان کی غایت و مقصد کچھ اور ہی ہوتا ہے، ان کا مقصد جذبات انسانی کو فنا کرنا نہیں ہوتا بلکہ ان جذبات کو دائرہ شریعت میں پابند کرنا ہوتا ہے اس مجاہدہ کا حاصل یہ نکلتا ہے کہ ایک مومن اپنے نفس کے شریف جذبات کو، عالم تعلقات میں اس طرح استعمال کرنے لگتا ہے جس کے نتیجہ میں خوشگواہی و ہمہ رسی اور محبت و عافیت حاصل ہوتی ہے، اور وہ نفس کو ان ناپاک جذبات کے پورا کرنے سے روکتا ہے جو باہمی تعلقات میں ذلت و بے حیائی اور پراگندگی کا سبب ہوتے ہیں۔

اسی لئے محققین صوفیاء کرام نے مجاہدات کو بھی مقصود نہیں بنایا۔ اس لئے محض مجاہدہ اور مشق کو روحانی ترقی سمجھ لینا غامض خیالی ہے۔

”خوب سمجھ لیجئے، روحانی کیفیات کا تعلق مطلقاً قوت ایمانیہ سے ہے جہاں ایمان نہیں وہاں روحانیت نہیں“ روحانیت حاصل ہوتی ہے احکام الہی یعنی شریعت کے مطابق اعمال صالحہ کرنے سے،

چنانچہ ایمان لائے بغیر کسی قسم کی مشق سے اگر کچھ کیفیات پیدا ہو جائیں تو وہ ہرگز روحانی و ایمانی کمال نہیں کہلایا جاسکتا۔ چونکہ کمال تو یہ ان کیلئے بھی نہیں سمجھا جاتا جو مسلمان ہوں۔ عابد و زاہد ہوں۔ اگرچہ عرف عام میں لوگ ایسی خرق عادت باتوں پر متعقد جلدی ہو جاتے ہیں مگر یہ وہی لوگ ہوتے ہیں جو شریعت و طریقت کے مقاصد سے ناواقف ہوں اور حقیقت سے بے خبر ہوں۔

چنانچہ اہل ایمان کو اسی قسم کے حالات پیش آجانے پر غلط فہمی سے بچانے کے لئے ارشاد فرماتے ہیں :

”اسی طرح بعض لوگوں کو اچھے اچھے خواب نظر آتے ہیں، بڑی بڑی بشارتیں ہوتی

ہیں، خانہ کعبہ اور روضہ نبوی (علی صاحبہ الصلوٰۃ والسلام) اور اللہ تعالیٰ کی تجلیات نظر آتی ہیں، یہ سب قوت متحیدہ کے تفرق کا کرشمہ ہوتا ہے۔

یہ بات اتفاقاً انہی لوگوں کو پیش آتی ہے جن کے دل و دماغ ہر قسم کے افکار و مشاغل سے فارغ ہوں اور کسی قسم کی دنیاوی دل چسپیوں میں، یا افکار و پریشانیوں میں انہماک نہ ہو۔ بہر کیف ان کی حقیقت صرف یہ ہے کہ ذوق و شوق اور یکسوئی اور ارتکاز خیال کے ثمرات ہیں جو خود بخود عارضی طور پر مشاہدہ میں آجاتے ہیں۔ شریعت و طریقت میں ان کی کوئی اہمیت نہیں۔ نہ یہ دلیل مقبولیت ہیں۔

صرف مامور بہ اعمال ہی اللہ تعالیٰ کے قرب کا سبب ہوتے ہیں خواہ ان کی بی آوری میں ایسی تجلیات نظر آئیں یا نہ آئیں۔

آپ حضرات اس بات کو خوب سمجھ لیں، کہ ہزار کیفیات طاری ہوں، ہزار انوار نظر آئیں ہزار انکشافات ہوں، یہ سب ثمراتِ عمل ہیں اور عارضی و نفسانی کیفیات ہیں چونکہ نیک اعمال کے ثمرات ہیں اس لئے محمود ہیں۔ مگر یہ بھی سمجھ لینا چاہیے کہ بعض اوقات یہ سب شیطانی تصرف سے بھی ہوتا ہے، شیطان بھی اس میں دھوکہ دیتا ہے۔ ان تجلیات، کیفیات اور مکاشفات کو مکمل طور پر معتبر نہ سمجھنا چاہیے، قابلِ اعتبار تو آپ کے قدم ہیں اگر وہ صراطِ مستقیم پر ہیں اور حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے نقش قدم کے مطابق ہیں تو شیطان کا اس میں کوئی دخل نہیں۔

خلاصہ یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کا قرب حاصل کرنے کا معتبر ذریعہ اعمالِ شریعت اور اتباعِ سنت کی پابندی ہے اور ان کی توفیق علامتِ تقرب ہے اور ان پر مداومت کا حاصل ہونا دلیل مقبولیت ہے۔

اس مسیحیائے ظاہر و باطن کی نبض شناسی نے اور جن چیزوں کا پرہیز ہمارے لئے ضروری قرار دیا اسکی مزید تفصیل ان مواعظ و مجالس میں دیکھی جاسکتی ہے جو آج بھی، ہزاروں کی تعداد میں شائع ہو کر افادہٴ خلق کا سبب بن رہی ہیں۔ البتہ، دوا اور پرہیز کے بعد مناسب معلوم ہوتا ہے کہ مریضِ روحانی کے لئے اس مشفق مسیحیائے باطن کی طرف سے



جو غذا تجویز کی جاتی تھی اس کی بھی مختصر نشان دہی کی جائے۔

اس لئے کہ بیمار کو جہاں دوا کی ضرورت ہے وہیں کچھ غذا کی بھی حاجت ہے۔ طبیب کی حذاقت و بہارت کا ثبوت اس سے بھی ملتا ہے کہ وہ دورانِ مرض دوا اور غذا میں کیا توازن قائم کرتا ہے۔

اگر وہ ایسی غذا میں تجویز کر دے جو ایک درجہ میں خود دوا ہوں تو یقیناً اس تدبیر سے اصل دوا کی تاثیر بھی زائل ہو جاتی ہے اور مرض کا مستقل ازالہ ہو کر آئندہ کیلئے بھی اس سے مدافعت کی صلاحیت پیدا ہو جاتی ہے۔

حضرت ڈاکٹر صاحبؒ نے جو غذاؤں و حانی کا چارٹ ترتیب دیا تھا وہ کچھ یوں تھا کہ چند اعمال تو ظاہری کیئے جائیں جو قوتِ بدن میں معین ہوں اور چند اعمال قلبی ہوں کہ جنکے ادا کرنے میں کچھ بھی مشقت اور بوجھ نہ ہو چنانچہ، وہ متعلقین کو تاکید فرماتے ہیں :

میں آپ کو اس حقیقت کی طرف متوجہ کرنا چاہتا ہوں کہ اگر ہم اپنے ایمان اور اسلام کو محفوظ رکھنا چاہتے ہیں اور دنیا و آخرت کے خسران سے بچنا چاہتے ہیں تو جو طریقہ، اللہ تعالیٰ نے اپنی رحمت کاملہ سے ہمارے دین کی حفاظت کے لئے بتایا ہے اور اسے ہمارے لئے ایک قوی و مستحکم قلعہ بنایا ہے اسکو عمل میں لاؤ، اور وہ ہے نماز،

الصَّلَاةُ عِمَادُ الدِّينِ، نماز دین کا ستون ہے، نماز ہی ایسی چیز ہے جس میں اللہ تعالیٰ نے ایسی قوت رکھی ہے جس سے تقاضائے ایمانی پیدا ہوتے ہیں اور شرفِ انسانیت کا شعور پیدا ہوتا ہے، مگر ہم لوگوں نے اسے روزمرہ کا ایک معمولی عمل سمجھ لیا ہے اور اسکی کوئی قدر اور اہمیت ہماری نظر میں نہیں ہے اور یہ ہماری بڑی محرومی ہے۔

حدیث شریف میں ہے کہ وصال کی وقت آخری وصیت جو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے امت کے لئے فرمائی وہ یہ تھی،

”الصَّلَاةُ الصَّلَاةُ وَمَا مَلَكَتْ اِيْمَانُكُمْ“

یعنی نماز کی پابندی کرو اور اپنے ماتحتوں کا خیال رکھو، یہ بات دو مرتبہ ارشاد فرمائی اس سے نماز کی اہمیت کا اندازہ لگائیے کہ حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم آخری وقت

میں نماز ہی کی تاکید فرما رہے ہیں، معلوم ہوا کہ ہمارا ایمان "صلوٰۃ" ہی کی پابندی سے محفوظ ہے، اسکی بڑی قدر کرو۔

اکثر لوگ یہ بھی کہتے ہیں کہ صبح کی نماز نہیں پڑھتی، تو بھائی! اسمیں قصور کس کا ہے۔ جب تم رات کے بارہ بجے تک اپنی تفریحات و لغویات میں مشغول رہو گے تو پھر صبح کیسے آنکھ کھلے گی، یہ سب نفس کی شرارت ہے کیونکہ تمہارے دل میں نماز کی کوئی اہمیت نہیں ہے اسلئے نفس ترک نماز کے لئے نامعقول عذر اور بہانے کرتا رہتا ہے۔

یاد رکھو! نماز ترک کرنا کوئی معمولی بات نہیں ہے، یہ اللہ جل شانہ کی حکم عدولی ہے دنیا میں بھی اس کا وبال بھگت پڑتا ہے اور آخرت میں بھی اسکی بڑی سنگین سزا ہے اپنے وقت کا انضباط کر لو، انشاء اللہ، اس سے بڑی برکت ہوتی ہے اور سب ضروری کام آسانی سے ہو جاتے ہیں اور نمازیں وقت کی پابندی کے ساتھ ادا ہوتی رہتی ہیں اور دل میں سکون رہتا ہے۔

ہمارے حضرت والا فرماتے ہیں کہ جو لوگ صبح کی نماز کے لئے نہیں اٹھتے بڑے ناقدر دان ہیں، یہ وقت ہوتا ہے اللہ تعالیٰ کی رحمتوں کے نزول کا، اس وقت اللہ تعالیٰ عالم کائنات میں ایک نئے روح پیدا فرماتے ہیں ایک نئی تازگی آتی ہے، .... اس وقت تم غافل پڑے سو رہے ہو تمہارے دل و دماغ سب بے حس ہیں یہ بڑی ناقدری کی بات ہے، پھر کہتے ہیں کہ صحت خراب ہے، یہ بیماری ہے وہ بیماری ہے۔

بہر کیف میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ نماز کی پابندی کرو، نماز بڑی عبادت اور بڑی نعمت ہے، یہ ہماری ظہری و باطنی صحت کا راز ہے، خواہ تمہاری سمجھ میں آئے یا نہ آئے نماز پڑھنے کی عادت ڈالو۔

اسی طرح رمضان المبارک کی نیاری میں اور اس کے استقبال میں بہت احتیاط و اہتمام کی ترغیب دیتے تھے، اس سلسلہ میں بھی ایک اقتباس ملاحظہ ہو۔

میری ان تمام گذارشات کا مقصد سمجھ لیجئے، اب خدا کے لئے پاک صاف ہو جائیے تہیہ کر لو کہ تیس دن تک گناہ نہ کریں گے نہ آنکھوں سے نہ کانوں سے نہ زبان سے، غوزنیں



محض اپنے خالق کے ساتھ ہے، اور یہ انسانی نظرت اور سلیم طبیعت کا لازمہ ہے اور اللہ تعالیٰ کی طرف سے انکی بجا آوری کا مطالبہ بھی ہے، یہ چار بے حد قیمتی باتیں، چار بیش بہا عطا حسن ہیں۔  
۱۔ ادائے شکر۔ ۲۔ صبر۔ ۳۔ توبہ و استغفار۔ ۴۔ استعاذہ، یعنی پناہ

مانگنا۔ یہی چار چیزیں ہیں جن کے متعلق بزرگانِ دین نے فرمایا ہے کہ یہ "عبدیت" کے مرتبے ہیں، بندگی کے زینے ہیں، جس کسی کو کوئی درجہ و مقام ملا ہے وہ انہی کے وسیلہ سے ملا ہے، تمام عارفین و کاملین انہی چار باتوں پر عمل کر کے مدارجِ عالیہ اور مقاماتِ رفیعہ پر پہنچے ہیں۔ ہماری آپ کی نظریں محدود ہیں انعاماتِ الہیہ تک نہیں پہنچتی، مگر ان عارفین کی نظر تو وسیع ہوتی ہے۔ یہی حالات و واقعاتِ زندگی جن سے ہم اور آپ گزرتے ہیں ان کے ساتھ بھی ہیں، انہی حوادث سے وہ بھی گزرتے ہیں لیکن وہ اپنی قوتِ ایمانی کی وجہ سے اپنے اپنے موقع پر، توبہ استغفار، صبر و شکر کر لیتے ہیں، پناہ مانگ لیتے ہیں۔ اور اس کے صلہ میں ایسی بے پایاں نعمت، اتنی بے بہا دولت، عبدیت و بندگی کا ایک اعلیٰ مقام عطا ہوتا ہے جو فرشتوں کو بھی میسر نہیں۔

چنانچہ ہر اس نعمت پر جو آپ سے، ہم سے وابستہ ہے، ادائے شکر کی عادت ڈالیے اور اس کا التزام کیجئے کہ صبح جاگنے پر، اور رات میں سونے سے قبل اپنی ذات و ماحول پر سرسری نظر ڈال کر، اللہ تعالیٰ کی عطا کردہ دین و دنیا کی نعمتوں کا استحضار کر کے احمالی شکر ادا کیا کریں۔ خصوصاً ایمانِ حاصل اور عافیتِ حاصل پر دل سے شکر ادا کریں، اس کے علاوہ جس نعمت کا بھی استحضار ہو جائے، اس پر دل ہی دل میں چپکے سے شکر ادا کر لیجئے۔

اس طرح مشق کرنے سے انسان "شکر" کا ایسا عادی ہو جاتا ہے کہ ہر اچھی چیز پر دل ہی دل میں شکر ادا کرتا رہتا ہے کسی دوسرے کو پہنچ بھی نہیں چلتا اور ایک عظیم الشان عبادت انجام پاتی رہتی ہے۔ اس سے درجات میں جو ترقی ہوتی ہے اس کا آپ اندازہ بھی نہیں کر سکتے۔

دوسری بات ہے صبر، یہ عمل باطنی بہت اہم اور اشد ہے اور عالمِ تعلقات میں بہت مجاہدہ طلب ہے، زندگی میں روزانہ، دن رات سب نے کتنی باتیں ایسی ہوتی رہتی ہیں جو ہمیں ناگوار اور نفس پریشاں ہوتی ہیں، ایسے موقع پر کثرت سے اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُونَ



پڑھا جائے۔ اس سے عقل سکون، اور طبعاً برداشت کی قوت پیدا ہوتی ہے۔

یہ وہ عمل ہے جس پر اللہ تعالیٰ نے خود اپنی معیت کا وعدہ فرمایا ہے، اس عمل سے زندگی میں استقامت و ضبط و تحمل کا درقار پیدا ہوتا ہے۔ صبر کر نیوالے میں کبھی کسی سے اپنے نفس کے لئے غصہ اور انتقام کے جذبات پیدا نہیں ہوتے۔

تیسری چیز ”توبہ“ ہے۔ یہ بھی فطرتِ سلیمہ کا ایک تقاضا ہے کہ جب ہم سے کوئی خطا و لغزش یا گناہ کا صدر ہوتا ہے تو دل میں ایک خلش، ندامت سی ضرور پیدا ہوتی ہے اور اس کے ساتھ ساتھ، عذر خواہی اور تدارک کا جذبہ بھی عود کرتا ہے۔ چنانچہ جس وقت بھی تنہا ہو جائے فوراً دل ہی دل میں نہایت ندامت اور شرِ مندی کے ساتھ اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع ہو جائے اور کہے ”استغفر اللہ“ یا اللہ میں بہت نادم ہوں مجھے معاف فرما دیجئے اور آئندہ اس غلطی سے محفوظ رکھیے۔

یہ وہ عمل ہے کہ بندہ موردِ مبتلا ہے اللہ تعالیٰ کی مغفرتِ کاملہ اور رحمتِ واسعہ کا، اس توبہ سے ندامتِ قلبی کے ساتھ احساسِ عبادیت پیدا ہوتا ہے ایمان کی حفاظت ہوتی ہے اور دولتِ تقویٰ نصیب ہوتی ہے۔ ایسے شخص سے جو استغفار کا عادی ہو عدا گناہ سرزد نہیں ہوتے اور مخلوق خدا کو اذیت نہیں پہنچتی۔

چوتھا عمل استعاذہ یعنی پناہ طلبی ہے۔ یہ زندگی حادثاتِ ساخت کی زندگی ہے اور اس میں ہر وقت، نفس و شیطان سے سابقہ ہے۔ اس لئے ہمیشہ ان سب سے پناہ مانگتے رہنا چاہیے۔

معاملات اور تعلقاتِ زندگی میں اکثر و بیشتر ایسے حالات بھی ہوتے ہیں جن کے متعلق مستقبل میں کچھ خدشات ہوں اور ان کے تدارک کے لئے کوئی تدبیر نہ سمجھ میں آئے اور نہ اپنے اختیار میں ہو تو ایسے وقت میں فطرۃً اپنے پروردگار سے پناہ مانگنے میں دل کو بڑی تقویت ہوتی ہے اس کے لئے یہ الفاظ بھی کہے جاسکتے ہیں لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ لَا مَلْجَأَ وَلَا مُنْجَاءَ مِنَ اللّٰهِ إِلَّا إِلَيْهِ ۝

یہ پناہ طلبی وہ عمل ہے جس سے بندہ، اللہ تعالیٰ کی عظمت اور شانِ ربوبیت و رحمانیت

کامٹ ہدہ کرتا ہے اور اس کے دل میں اللہ تعالیٰ کی طرف سے طمانیت عطا ہوتی ہے، اور توکل و تفویض کی دولت نصیب ہوتی ہے۔

حقیقت یہ ہے کہ یہ چار ایسے اعمال جلیلہ ہیں کہ جب ان میں سے کسی کا بھی، کسی وقت بھی، کوئی محرک پیدا ہوتا ہے، ان واحد میں رجوع الی اللہ کی توفیق ہو جاتی ہے، جو ایک بلا زوال نعمتِ الہیہ ہے۔

ایک اور خوبی انہیں یہ ہے کہ اور اعمال میں، وقت و مقام کی قید بھی ہوا کرتی ہے، انہیں کسی وقت مستوی بھی کیا جاسکتا ہے، یا ان کی ادائیگی میں کوتاہی، بے پرواہی اور سستی ہو جانا بھی ممکن ہے اور یہ بھی ممکن ہے کہ ان میں خلوص نہ ہو، عجب و ریاء کی شمولیت ہو جائے لیکن ان مذکورہ چار اعمال باطنی میں ایسی کوئی بات نہیں۔

پھر دوسرے اعمال تو لوگوں کی نظر میں بھی آجایا کرتے ہیں مگر یہ اعمال ایسے ہیں کہ جنکی کسی دوسرے کو خبر نہیں ہوتی۔

اے خیال دوست اے بیگانہ ساز ماسوا

اس بھری دنیا میں مجھ کو تو نے تنہا کر دیا

ان جذبات کا تعلق تو براہِ راست اس ذاتِ گرامی سے ہے جو عظیم بذاتِ الصدور اور لطیف و خبیر ہے، ہم ہیں اور ہمارے اللہ میاں ہیں درمیان میں کوئی واسطہ نہیں، لا الہ الا اللہ! تعلق مع اللہ کا یہ کتنا بڑا مقام ہے :-

اس مختصر جائزے سے اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ حضرت ڈاکٹر صاحبؒ کا طریقہ علاج روحانی، کس قدر موثر اور سہل تھا، اور وہ اپنے متعلقین اور عام مسلمانوں کے لئے کس دل سوزی اور خیر خواہی سے تشخیصِ امراض اور تجویزِ ادویہ کرتے تھے۔

لیکن اس بات کو بھی حضرت ڈاکٹر صاحبؒ بارہا بیان فرمایا کرتے تھے کہ روحانی امراض کا ازالہ ضروری ہے اور تعلق مع اللہ اور رجوع الی اللہ بہت ضروری باتیں ہیں، بغیر اس کے مسلمان کامل مسلمان نہیں، مگر اس تعلق کے بعد، روحانی قوتوں کے حاصل ہو جانے کے بعد اصل کام شروع ہوتا ہے کہ اب اللہ تعالیٰ کی مخلوق کے حقوق بھی ادا کئے جائیں

اور عبادات کے شعبہ میں جو احکام فرض کئے گئے تھے ان کی بجا آوری سے جو طاقت روحانی  
میسر آئی ہے اسکی مدد سے اب بقیہ دینی شعبوں کے احکام ادا کرنے کی فکر کرنی چاہیے۔  
یہ نہ ہو کہ چند اعمال ظاہرہ و باطنہ کے کر لینے کے بعد اپنے آپ کو فارغ سمجھ لیا اور  
جیسے چاہا لوگوں سے برتاؤ شروع کر دیا، بلکہ ہر معاملہ میں، خواہ اس کا تعلق لین دین، خرید  
و فروخت سے ہو، یا عام اخلاقی قدروں سے، یا باہمی تعلقات سے، یا ظاہری صورت  
و شکل سے، ہر چیز میں اس حاصل شدہ روحانی توانائی کی بنیاد پر نفس و شیطان کے وساوس  
سے ٹکریکر، ادائے حکم الہی کو لازمی سمجھا جائے ورنہ یہ ساری روحانی طاقت بے فائدہ  
رہیگی۔ اور ان تمام حقوق کی ادائیگی میں سہولت کے لئے مناسب یہ ہے کہ سب سے پہلے اپنا ایک  
مستحکم نظام الاوقات بنالیا جائے اسکی مدد سے اللہ تعالیٰ حقوق اللہ حقوق النفس اور  
حقوق العباد سب سہولت ادا ہوتے رہیں گے۔

مذکورہ بالا مضمون کو بھی حضرت ڈاکٹر صاحب نے جابجا اپنی مجالس میں بیان فرماتے  
رہا کرتے تھے، جو مطبوعہ مواعظ و مجالس میں موجود ہے جس کا مطالعہ مزید وضاحت کا ذریعہ ہوگا۔  
اللہ تعالیٰ حضرت ڈاکٹر صاحب کے درجات قرب و رضا میں ہمہ ترقیات عطا فرماوے  
اور سب مسلمانوں کو ان باتوں سے بھرپور استفادے کی توفیق بخشیں جو انہوں نے حضرت ڈاکٹر  
صاحب کی زبان سے کہلوائیں اور ہم سب کو اتباع سنت کی کامل توفیق مرحمت فرمائیں، جیسے  
یہ حضرات اپنی پوری زندگی اتباع سنت میں ڈھالے ہوئے تھے، اور اسکی دعوت و ترغیب  
دیا کرتے تھے، یہی حال اللہ تعالیٰ ہم سب مسلمانوں کا بنادیں۔ اور سب کا خاتمہ بالآخر فرما کر  
اپنے پیارے بندوں کے ساتھ عیش و عشرت فرمائیں۔ آمین ثم آمین۔  
و آخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین۔

وقت - زندگی کا بڑا قیمتی سرمایہ ہے اس لئے اس کی بڑی قدر کرنا چاہیئے اس کے لئے  
مزدوری ہے کہ صبح و شام تک کی زندگی میں جس قدر مشاغل ہیں ان کے لئے نظام الاوقات  
مترتب کیا جائے تاکہ ہر کام مناسب وقت پر آسانی سے ہو جائے۔ (از افادات عارفیہ)

• جناب بھائی زبیب صاحب  
کیا سالہ • ایڈٹ آباد

## پچند ریاضی پست

۱۳ جولائی ۱۹۸۲ء

نماز جمعہ کے بعد حضرت عارف باللہ ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب کی پاکیزہ مجلس میں بیٹھنے کا شرف ملا۔  
بزرگ ہر جمعہ کے دن نماز عصر کے بعد اپنی رہائش گاہ رہنما مقام نارتھ ناظم آباد پر سائیکل سے خطاب کرتے ہیں۔ آج کی مجلس میں آپ نے موجودہ ماحول کی ابتری کی وضاحت کی۔ اور اس سے بچنے کی تدبیر بتائی۔  
آپ نے اس امر پر زور دیا کہ سائیکل بلکہ تمام سائیکل کو چاہیے کہ وہ اتباع سنت کو اپنا شعار بنائیں۔  
اور اپنے ظاہر اور باطن دونوں کو اسلام کے تقاضوں میں ڈالیں۔ انہوں نے دونوں ادا کی تشریح کرتے ہوئے بتایا کہ ظاہری احکام جن کو عرفاً شریعت کہا جاتا ہے مثلاً نماز، روزے، حج و زکوٰۃ کا فرض ہونا اور شراب، سود اور بدکاری وغیرہ کا حرام ہونا۔ اور باطنی احکام جن کو تصوف کا نام دیا گیا ہے مثلاً صبر، شکر، توکل، اخلاص کا فرض ہونا اور حسد، بغل، ریا، تکبر وغیرہ کا حرام ہونا۔ دراصل ایک دوسرے کے لئے لازم اور موزوم ہیں۔ تصوف کے بغیر شریعت کی عمارت ٹکستے ہے اور بغیر شریعت کے تصوف تصوف ہی نہیں، بلکہ محض ثمرات اور فتنہ گری ہے۔

حضرت نے انتہائی شیریں کلامی کا مظاہرہ کرتے ہوئے، مخرب تک بزم سائیکل میں بڑے قیمتی



الفاظ کے موتی تقسیم کئے۔ جنکو احاطہ تحریر میں لانا مجھ جیسے نااہل کے بس کی بات نہیں۔ بہر حال ان کی تقریر کا خلاصہ یہ ہے کہ ہم خلوص کے ساتھ سنت نبویؐ پر کاربند ہونے میں سو فیصد کامیابی کا یقین رکھیں اور سنت اقدس سے سوترا بھر ہٹ کر چلنے میں بھی ناکامیوں کو اپنا مقدر جانیں۔ حضرت نے اپنے مُرشد حضرت تھانویؒ کی کتاب ”تربیت السالک“ کو زیر مطالعہ رکھنے پر زور دیا۔ اور فرمایا کہ میں نے اس کتاب سے بڑا فائدہ حاصل کیا ہے۔ انہوں نے یہ بھی بتایا کہ زندگی بہت مختصر ہے، مگر بے بڑی قیمتی، لہذا اس سے کچھ حاصل کرو، اس سے فائدہ اٹھاؤ۔

واپس آتے ہوئے میں نے حضرت کے ذاتی کتب خانہ سے تین کتابیں میں، جن کے نام احکام میت، معمولات یومیہ اور A WARNING TO THE MUSLIMS ہیں۔ اللہ تعالیٰ سے دُعا ہے کہ وہ مجھے اور میرے متعلقین کو ان کتابوں سے مستفیض کرے، آمین، یہ تینوں کتابیں حضرتؒ کی اپنی لکھیں ہوئی ہیں۔ انکے علاوہ بھی آپ نے بہت سی قابل قدر تصانیف کا خزانہ چھوڑ رکھا ہے۔ ایک مسلمان ان کتابوں کو زیر مطالعہ رکھ کر باہم معرفت کو چھو سکتا ہے۔

حضرتؒ کی محفل میں آنے سے پہلے حضرت مولانا محمد تقی عثمانی صاحب کے زیرِ امامت نمازِ جمعہ ادا کرنے کا شرف حاصل کیا۔ آج انکے خطاب کا موضوع قرآن کریم کی وحایتِ مبارکہ تھی جس کا مطلب ہے ”اے ایمان والو! اپنے آپ کو اور اپنے گھر والوں کو دوزخ کی آگ سے بچاؤ، جس کا ایندھن انسان اور پتھر ہونگے“

اس آیتِ مبارکہ کی تشریح میں مولانا نے بڑے پائے انداز میں تبلیغِ دین کے مقاصد اور اسمیتِ کدھامت کی۔ انہوں نے بتایا کہ دین اسلام ہمارے پاس ایک مقدس امانت ہے جس کو تمام روئے زمین پر مقیم لوگوں تک پہنچانا ہمارا کام ہے اور اس کام کی ابتداء ہم نے اپنے گھر سے کرنی ہے۔

۲ جولائی ۱۹۸۳ء

جمعہ مبارک گزرا ہے معمول کے مطابق نمازِ جمعہ جامع مسجد نعمان میں ادا کی۔ حضرت جسٹس محمد تقی عثمانی صاحب نے پچھلے جمعہ کو جس آیت کی تفسیر بیان کی تھی۔ اس کا حوالہ دیتے ہوئے اپنے بیان کا اگلہ حصہ مکمل کیا۔ آیت مذکورہ کا ترجمہ ہے: ”اے ایمان والو! اپنے آپ کو اور اپنے گھر والوں کو دوزخ کی آگ

سے بچاؤ، جس کا ایندھن انسان اور پتھر ہوں گے۔“ تو اسی آیت کے جواب میں کچھ لوگ یہ کہتے ہیں :  
 ”کہ ہم اپنے آپ کو تو حتی الامکان بچانے کی کوشش کرتے ہیں، اولاد کو بھی سمجھاتے ہیں، مگر وہ  
 مانتے نہیں ان پر سہارا بس نہیں چلتا، انہیں سوسائٹی نے خراب کر دیا ہے۔ بے لگام ہو چکے ہیں، انہیں  
 دین و مذہب سے کوئی رغبت نہیں۔“

اولاد کی اس بے راہ روی اور والدین کی مذکورہ بالا پریشانیوں کے پیش نظر مولانا نے فرمایا کہ  
 اپنے آپ کو ٹھیک کر، اولاد خود بخود ٹھیک ہو جائے گی۔ اگر آپ کے اقوال و افعال میں پاکیزگی  
 قوت، ایمانی اور اخلاص ہے تو کوئی وجہ نہیں کہ اسکا اثر آپ کی اولاد گھردلوں پر نہ پڑے۔ دراصل  
 سوسائٹی کسی بیرونی طاقت کا نام نہیں بلکہ ہم خود سوسائٹی ہیں۔ پس اگر ہم ٹھیک ہوں گے تو سوسائٹی ٹھیک  
 ہوگی۔ جبکہ ہماری بدکاریاں بُری سوسائٹی کو جنم دیں گی۔ اور ہمارے بچے ہماری ہی فطرت پر مردہ سوسائٹی سے  
 اٹھیں گے۔ یہاں پر مولانا نے اس حدیث شریف کا حوالہ دیا جس کا مطلب ہے : ”ہر بچہ اپنی فطرت پر پیدا  
 ہوتا ہے۔ پھر اسکے والدین اُسے اپنی راہ پر لگا دیتے ہیں۔“ اس سے ثابت ہوا کہ ہر بچے کے عقائد اور کردار پر  
 والدین کا اثر براہ راست پڑتا ہے۔ آپ نے اپنے کردار کی مہر لگا کر، اپنے اعمال کی چھاپ لگا کر بچے کو اچھا یا  
 برا بنایا ہے اور اب جگہ کس بات پر کر رہے ہو۔ بچہ تو فطرت پر پیدا ہوتا ہے اور فطرت دین اسلام ہے۔ مثال  
 کے طور پر اسلام کے احکام میں ایک حکم یہ بھی ہے کہ صبح صادق کے وقت (نماز فجر کے لیے) اٹھو۔ ایسے وقت  
 میں جب مسلمانوں کو اٹھنے کا حکم ہے۔ آپ چھوٹے چھوٹے بچوں کو دیکھیں وہ جاگے ہوئے ہوں گے۔ ایسا  
 کیوں ہے؟ اسکی فطرت نے اسے فطری وقت پر جگا دیا۔ ”یہی انسان کی فطرت ہے اور یہی دین اسلام ہے۔“  
 یہاں مولانا نے چند اور مثالیں دیتے ہوئے فرمایا : ”کیا وجہ ہے جو بچہ بچپن میں بغیر جگنے ٹھیک  
 وقت پر جاگ جاتا ہے وہی بڑا ہو کر بھنچوڑنے سے نہیں جاگتا؟ دراصل یہ بچہ ایک سفید تختہ تھی، آج اس پر  
 جو تحریر نظر آتی ہے وہ آپ کے اپنے ہاتھ لکھا ہے۔ خواہ آپ نے اس تختہ کو بے ہوشی کے عالم میں لکھا یا ہوش و  
 حواس کو قائم رکھتے ہوئے۔ لیکن یہ تحریر آپ ہی کی ہے۔ آپ نے جس رنگ میں بچہ کو رنگا ہے وہی رنگ آپ  
 کو دکھائی دے گا۔ بچہ جو کچھ لیتا ہے گھر کے ماحول سے لیتا ہے، والدین کے کردار سے لیتا ہے، لہذا گھر کے  
 سربراہ ہونے کی حیثیت سے، والدین ہونے کی حیثیت سے یا معاشرے کے باخ کردار ہونے کی حیثیت سے  
 آپ اپنا جائزہ دیتے رہیں۔ کہیں ایسا تو نہیں کہ آپ اپنے برے کردار سے معاشرے میں برائی پھیلانے کے

مذہب ہو رہے ہو۔ کہیں ایسا تو نہیں کہ والدین ہو کر بچوں کی صحیح تربیت نہ کر کے اپنے گھر کو جہنم بنانے میں لگے ہو۔ اگر آپ گھر، خاندان، محلت، شہر، ملک یا معاشرے کے اہم رکن ہیں تو آپ کو اور بھی محتاط ہونا پڑے گا۔ کیونکہ ایسے حالات میں آپ کا ہر عمل غیر محسوس طور پر دوسروں میں راسخ ہوتا چلا جائے گا۔

## صحبت شیخ :

اللہ کریم کالہ لاکھ لاکھ شکر ہے کہ اس نے پچھلے جمعہ کی طرح آج بھی حضرت شیخ عارف باللہ ڈاکٹر محمد عبدالحی مدظلہ صاحب کی بزم ایمان میں بیٹھنے کا شرف عطا کیا۔ آج کس دور میں ادیب اللہ اور ان کی پاکیزہ مجالس منعقا ہو چکی ہیں۔ جو لوگ باقی ہیں آٹے میں نمک برابر بھی نہیں مگر ہیں اتنے قیمتی کہ اس دورِ مہین میں اللہ کی رحمتوں کا برابر نزول انہیں چند ایک ہفتیوں کی وجہ سے ہے، جنہوں نے اپنے آپ کو مع اپنی تمام صلاحیتوں اور کادشوں کے خدا کے سپرد کر دیا ہے۔

ویسے تو بہت سے لوگ پیر اور گدی نشین بن کر ہوں گا کہ شہیدوں میں شامل ہونے کی رسم ادا کر رہے ہیں۔ غرض مٹاتے ہیں، میلے ٹھیلے منعقد کرتے ہیں، تہڑے مارتے ہیں اور شیرینی شکرانے جمع کرتے ہیں۔ لیکن ان کی زندگی اور بہرہ پر کا مقصد "بابر بعیش کوں کہ عالم دوبارہ نیست" کے سوا کچھ نہیں ہوتا۔ اللہ تعالیٰ ایسوں کے فتنے سے محفوظ رکھے۔ آمین۔

حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی مدظلہ حضرت تھانویؒ کے خلیفہ ہیں۔ اس جہان ہستی کے خلیفہ ہیں۔ جو بڑی دور سے اہل اللہ کی خوشبو سونگھ لیا کرتے تھے، اور جو حضرت امداد اللہ مہاجر مکیؒ کے تربیت یافتہ تھے۔ انہوں نے عارفی مدظلہ کے اندر کچھ دیکھ کر ہی خرقہ خلافت عنایت کیا ہو گا۔ حضرت عارف باللہ ظاہری طور پر روایتی پیروں جیسے نہیں ہیں۔ مہاجر مکیؒ کی چھان ہے اور سنگے کی مالا، اور نہ ہی روایتی کلاہ اور سرخ رومال ان کا نشان ہے۔ غرض کہ حضرت ایچ ڈی اللہ نہیں بلکہ حقیقی ولی ہیں۔ حقیقی ولی اللہ جو عوام کے سمندر میں عام ہی دکھائی دیتا ہے۔ اسکی پہچان کرنا ہر ایک تقویٰ کی جان کا روگ نہیں، اسے تو صرف وہ خود دیکھ سکتا ہے جس نے دیدہ دل واکر رکھی ہو، اور جس کے پاس یہ آئینہ ہو: "تَوَاهُجُ دُكَا سَحْبًا اَيْبَتَقُونَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرَضَوْنَا بِمَا هُمْ فِيْ وَجْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ الشُّجُوْدِ" یعنی "اے مخالف! تو انکو دیکھے گا کہ کبھی رکوع کر رہے ہیں، کبھی سجدہ کر رہے ہیں اللہ تعالیٰ کی رضامندی

اور اسکے فضل کی جستجو میں گئے۔ اُن کے آثار بوجہ تاثیرِ سجدہ انکے چہروں پر نمایاں ہیں۔  
 کتنے دکش انداز میں قرآن کریم نے ان لوگوں کی تصویر کھینچی ہے جو سن نبویؐ اور شہلِ صحابہؓ  
 کی سچی تصویر بنے ہوئے ہیں۔ میں مبالغہ آرائی سے کام نہیں لے رہا ہوں جس کی مرضی ہے حضرت کے گھر  
 میں جا کر دیکھ لے۔ آپ کے خادموں پر نظر پڑتے ہی اصحابِ صفہؓ کا خیال آئے گا۔ وہی نقشہ ہوگا جو  
 اوپر کی آیت میں قرآن کریم نے دکھایا ہے۔ میرے خیال میں حضرت کی سب سے بڑی کرامت تعمیرِ سیرت  
 تقی عثمانی ہے۔

### ۲۳ جولائی ۱۹۸۳ء "دیکھا اک خواب تو یہ سلسلے ہوئے" (انوکھا تعارف)

دارالعلوم کراچی کے شب و روز کی رونق دیکھنا تو درکہ بات ہے گزشتہ ۲۳ دن سے کراچی  
 میں رہ کر اس عظیم جامعۃ العلوم کی ایک جھلک دیکھنا بھی نصیب نہ ہوئی۔ حالانکہ ایک بار (اس عرصے میں)  
 قریب سے گزر کر کوننگی کریک بھی گیا ہوں۔ خیر ایسا بھی ہوتا ہے کبھی کبھی قریب تر رہ کر بھی مجبوریاں  
 چاہتوں کی منزل پر قدم نہیں رکھنے دیتیں۔ بہر حال مجھے اس مجبوری پر دکھ اس لئے نہیں کہ دارالعلوم  
 خود چل کر میرے پاس آجاتا تھا۔ یعنی ہر جمعۃ المبارک کو حضرت مولانا محمد تقی عثمانی اور حضرت ڈاکٹر  
 صاحب کے درشن مل جاتے تھے۔ جو اس عظیم درسگاہ کے دل و جان ہیں۔

چار پانچ برس پہلے جب میں پہلی بار کراچی آیا تھا تو بالکل اجڑا اور دیہاتی تھا۔ لیکن تلاشِ حق  
 کا جذبہ میرے من میں موجود تھا۔ مجھے پہلی بار مولانا محمد شفیع صاحب (خطیب جامع مسجد پی۔ اے۔ ایف  
 کوننگی کریک) نے دارالعلوم اور اہمیان دارالعلوم سے متعارف کرایا تھا۔ بلکہ کہنا تو یوں چاہیے کہ انہوں  
 نے صرف "عارف القرآن" سے متعارف کیا تھا۔ باقی سلسلے خود "عارف القرآن" نے جوڑے۔  
 وہ اس طرح کہ:-

ایک دن محمد شفیع صاحبؒ نے مجھے حضرت مولانا مفتی محمد شفیعؒ کی تفسیرِ عارف القرآن پڑھنے  
 کے لئے دی۔ میں نے اس کا مطالعہ شروع کیا۔ پہلی جلد تھی اس کے ساتھ دیا چھ بھی لکھا ہوا تھا میں نے  
 دیا چھ ہی سے بسم اللہ کی۔ دیا چھ کا انداز تحریر کچھ ایسا تھا کہ میں انگشت بندناں ہوئے بنا نہ رہ  
 سکا۔ کیونکہ میرے حواس حیرت انگیز طور پر اس طرزِ تخلص سے آشنا تھے۔ بوجہ تجسس میں نے



ورق اٹٹے اور آخر میں دیباچے کے مصنف کا نام پڑھا محمد تقی عثمانی، لکھا ہوا تھا۔ میں نے یہ نام کبھی نہیں سنا تھا اور نہ ہی اس سے پہلے کوئی دینی کتاب پڑھی تھی کہ گمان کرتا کہ شاید پہلے انکی تصانیف تھروں سے گزری ہوں۔ پھر یہ کیا طرہ تھا؟ میں نے اس رنگ کی تحریر کہاں پڑھی تھی؟ یہ طرزِ خطاب کہاں سنا تھا؟ میری سمجھ میں کچھ نہ آیا تو میں نے نگاہ تجسس سے دیباچے کی اگلی سطور کو پڑھنا شروع کیا۔ جوں جوں میں پڑھتا جاتا تھا۔ من میں کچھ دیباچے سے روشن ہوتے جلتے تھے۔ جو مجھے انسانی منزلوں کی طرف رستے سلجھاتے تھے۔ حتیٰ کہ (محسوسات کے عالم میں) آہستہ آہستہ اس خاموش تحریر کا صوت پیکر جانے لگا۔ پہلے یہ آواز بہت دھیمی تھی جسے میرے دل کے گوشِ نہاں ہی سُن رہے تھے۔ مگر تھوڑی ہی دیر بعد ان (بولتے حروف) کی آواز بلند ہوتے ہوئے دیواروں سے ٹکرانے لگی۔ میری حیرت میں مزید اضافہ ہو گیا۔ میں نے آنکھیں بند کر لیں اور پڑھے ہوئے کچھ جملوں کے مخصوص اندازِ خطاب پر غور کرنے لگا۔ اچانک میرے سینے میں ایک چراغ سا روشن ہو گیا، اور میں اپنے آپ کو جامع مسجد نعمان (سبیلہ چوک) کی پر نور صفوں میں بیٹھا ہوا محسوس کرنے لگا، اور وہ آواز (یعنی دیباچے کا طرزِ خطاب) مجھے اسی مسجد کے لاؤڈ سپیکرز سے نکلی ہوئی محسوس ہونے لگی۔ اور ساتھ ہی ساتھ خطیب صاحب کا جاذبِ نظر چہرہ بھی میری آنکھوں میں پھرنے لگا۔ جن کی اقتدا میں اکثر میں نمازِ جمعہ ادا کیا کرتا تھا۔ جب ان خاموش دھندلے پیکروں سے آواز کے حین پکیر بن گئے اور سارا منظر قلب و ذہن پر چھا گیا تو میں نے سوچا، ہونہ ہو وہی جاذبِ نظر شخصیت، وہی مجذوب صورت انسان محمد تقی عثمانی ہے..... جب میں اپنے گمان کو یقین میں تبدیل کرنے کے لئے دوبارہ محمد شفیع ہزاروی صاحب (جامع مسجد کورنگی کریم) کے پاس گیا تو میری خوشی کی انتہا نہ رہی کیونکہ انہوں نے تصدیق کر دیا تھا کہ ہاں جامع مسجد نعمان میں جمعہ پڑھانے والے شخص ہی محمد تقی عثمانی ہیں۔

محمد تقی صاحب نے معارف القرآن کا تعارف دیباچے کی صورت میں کرنا چاہا تو خود قرآن نے انکا تعارف کرادیا۔ وہی شخص محمد تقی عثمانی نکلا جس کو میں نے متعدد بار دیکھا تھا لیکن یہ جانے بنا کہ کون ہے؟ ہاں آنا ضرور تھا کہ جامع مسجد نعمان میں جمعہ پڑھانے والے انجانے شخص کو میل دل کوئی عام شخص نہیں مانتا تھا۔ میرے قلب و نظر اسے کوئی ایسی ہی شخصیت تصور کرتے تھے، جیسی وہ نکلی۔ یہی وجہ تھی کہ اُن دنوں میں کورنگی کریم سے اتنی دور (سبیلہ ہاؤس) جا کر نمازِ جمعہ ادا کیا کرتا تھا۔ بعد میں تو رہائش

بھی کھلی۔

محمد تقی صاحب کی پہچان نے میرے دل میں دارالعلوم کی محبت کو دوبارہ کر دیا مجھے ڈوب جانے کے معنی آ گئے، میرے قلب پر جاذب، جذب اور مجذوب کے اسرار کھلے۔ عارف باللہ حضرت ڈاکٹر عبدالحی مدظلہ صاحب سے کڑی مل گئی، میں سلوک سے متشناس تھا، میں نے ”زخمہ بر بارِ رگِ جان“ کی کیفیات کو محسوس کیا۔ اللہ ہوا اور دل کی دھڑکنوں میں رشتہ پایا۔

محمد تقی عثمانی ہی کی پہچان نے مجھے ”البلاغ“ جیسا مجتہد عنایت کیا، جس میں بلند پایہ صحافت ہے اور جو علوم اسلامیہ کے بوقلموں گلدستوں کا امین ہے۔ محمد تقی عثمانی کی خطابت نے میرے دل کے اس ارمان کو پورا کر دیا جو سید عطاء اللہ شاہ بخاری کو سننے کے لئے تھا۔

مگر کاش کہ میں گھریلو مجبوریوں کی بنا پر زیادہ عرصہ انکی محفلِ خواباں میں نہیں ٹھہر سکتا۔ پرسوں ۲۵ جولائی کو یہاں سے رخصت ہو جاؤں گا۔ گاڑی کینٹ اسٹیشن کو چھوڑ کر آگے بڑھے گی۔ کے ایریا کو رنگی پر دھوئیں کے بادل چھائے ہوں گے۔ دارالعلوم کراچی اسی دھوئیں میں چپ کر آہستہ آہستہ مجھ سے دور ہوتا جائے گا۔

۱۵ فروری ۱۹۸۵ء

آج جمعہ گزرا ہے میں نار تھناطم آباد میں رہائش پذیر ہوں۔ میرے مرشد حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب بھی اسی علاقے میں رہائش پذیر ہیں۔ یعنی چند قدموں کے فاصلوں پر موجود ہیں۔ مگر میں اتنا بد نصیب ہوں کہ آج تقریباً فارغ ہونے کے باوجود انکے دیدار سے محروم رہا ہوں کچھلے جمعہ کو حضرت کے ہاں گیا تھا۔ کتنا سکون ملا تھا انکو دیکھ کر میری تھکی ماندی آتما کو کس قدر قرار آ گیا تھا۔ سارے غم بھول گئے تھے۔ لیکن حضرت کا گرتا ہوئی صحت لاغر پن اور بیماری نے میرے دل کو ایک دم چمکا سا دیا۔ یوں لگتا ہے جیسے یہ آفتابِ عنقریب ہمیں لا محدود اندھیروں میں چھوڑ کر پشتِ کوہ میں ڈھوب جلے گا۔

اور پھر اسکے بعد واقعی کبھی ملاقات نہ ہو سکی۔ صرف چند یادیں اور  
چند آنسو ہی رہ گئے۔ والسلام:

۱۸ مئی ۱۹۸۶ء

• جناب نجم الثاقب صاحب

## ہمارے حضرت والا

اے عارفی آخر یہ ہوا کیا ہے دل کو  
سوئی سی نظر آتی ہے دنیا کئی دن سے

میں نہ تو حضرت عارف باللہ ڈاکٹر عبدالحی صاحب کے احباب خاص میں سے ہوں اور نہ  
ہی اہل قلم سے مگر حضرت والا سے تقریباً ۱۵ سال سے اصلاح و تربیت کا تعلق ضرور تھا۔  
شاید یہی تعلق سبب ہے اس کا کہ کچھ لکھنے کو جی چاہ رہا ہے۔

بچپن سے مجھے یاد ہے کہ ہمارے گھر کا ایک لازمی جز بہشتی زیور رہی ہے۔ بفضلہ تعالیٰ ہمارا  
گھر نادین دار تھا۔ ہمارے نانا مرحوم بھی بہشتی زیور کو مطالعہ میں رکھتے تھے اور اکثر دارالعلوم کراچی سے  
فتاویٰ کے لئے رجوع کرتے تھے۔ لازمی نتیجہ تھا کہ میں حضرت حکیم الامتؒ اور حضرت مفتی محمد شفیع صاحبؒ  
سے نہ صرف مانوس تھا بلکہ ان حضرات سے ایک تعلق سا تھا۔ ہمارے گھر نے بالخصوص نانا مرحوم کی  
دینداری نے مجھے دینی مطالعہ کی طرف مائل کر دیا تھا۔ چنانچہ نوجوانی ہی میں بہشتی زیور کا مطالعہ کیا....  
بہشتی زیور نے ایک غیر محسوس سا تعلق حضرت حکیم الامتؒ سے جوڑ دیا تھا۔ امریکہ سے تعلیم سے فارغ  
ہو کر جب میں پاکستان واپس آیا تو بفضلہ تعالیٰ کچھ ہی عرصہ بعد دینی مطالعہ کا سلسلہ پھر شروع ہو گیا۔ محترم

مفتی صاحبؒ کی کئی کتب مطالعہ میں آئیں۔ جیسے جیسے دینی مزاج عموماً کرنا یا ملائکہ کا شوق پڑھتا گیا۔ شروع میں فقہ سے متعلق کتب کی طرف طبیعت مائل تھی لیکن آہستہ آہستہ تصوف کی طرف بھی میلان ہونے لگا۔ ایک دن السبلاخ کے ایک شمارے میں حضرت اخلاق احمد عثمانی صاحب خلیفہ مجاز حضرت قاری محمد طیب صاحب کی کتاب شمع باطن کے بارے میں آیا کہ فلاں پتہ سے مفت دستیاب ہے۔ میں نے بھی لکھ دیا۔ حضرت نے کتاب کے ساتھ ایک خط بھی لکھا جس میں کسی شیخ کامل سے تعلق پیدا کرنے کا ترغیب کی۔ اس اثناء میں مجھے معلوم ہو چکا تھا کہ حضرت حکیم الامتؒ کے ایک بزرگ خلیفہ حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحبؒ کراچی میں ہیں۔ میں نے حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحبؒ کو ایک خط لکھا جس کے جواب میں حضرت والاؒ نے مجلس میں آنے کی ہدایت کی۔ پھر چند ہی ماہ بعد خط لکھنے کی اجازت مرحمت فرمائی۔

پچھلے ۵۰ سال میں مجلس میں شرکت بہت متاثر ثابت ہوئی۔ حضرت نے نہ کبھی کوئی خاص مجاہدہ کرایا نہ ریاضت۔ حضرت کے یہاں تو رحمت الہی کے عنوانات تھے گو غلاب الہی کی طرف بھی گاہے گاہے توجہ دلاتے رہتے تھے۔ وہاں توبہ، استغفار، استعاذہ، صبر و شکر کی طرف توجہ دلاتی جاتی تھی۔ اہلیہ کے مندرجہ ذیل خطوط اس پر دال ہیں۔

حال : اپنے اعمال پر نظر کرتی ہوں تو کوئی عمل بھی اس لائق نظر نہیں آتا کہ رحمت جی کے نازل ہونے کا سبب بنے۔

جواب : کیا بے سبب اللہ تعالیٰ اپنے بندے پر رحم نہیں فرماتے۔

حال : اپنی بد حالی، بے عملی، گناہوں کا احساس رہتا ہے۔ حضرت سے تعلق کی برکت سے دینی حالت میں تغیر محسوس کرتی ہوں۔

جواب : زیادہ گناہ گاری کا خیال نہ کرنا چاہیئے۔ توبہ سے سب گناہ معاف ہوتے ہیں۔

حال : جب ارتکاب گناہ کے بعد استغفار کرتی ہوں تو لگتا ہے کہ یہ وہ استغفار نہیں جس پر گناہ کی معافی کا وعدہ ہے۔

جواب : اس کا کیا ثبوت ؟ پھر کیا استغفار ہوتا ہے ؟ وہم نہ کرو یہی استغفار کافی ہے۔

حال : ارتکاب گناہ کے وقت ہی گناہ کا احساس ہوتا ہے اور پھر بھی ارتکاب ہو جاتا ہے۔ اس لئے بعد میں استغفار پڑھنے میں رکاوٹ و جھجک محسوس ہوتی ہے۔ ایسا لگتا ہے کہ یہ جھوٹی توبہ ہے۔



جواب: اس کا خیال نہ کرو۔ ندامت کے ساتھ توبہ کرنا صحیح توبہ ہے۔

تسبیحات کے معاملے میں بھی حضرت کا ارشاد قابلِ توجہ ہے۔ فرماتے تھے تسبیحات حصولِ مقصود کے لئے محض معین و معاون ہیں، اصل مقصد رضائے الہی ہے۔ اصل توا و امر و نواہی ہیں۔ اطاعت کرو اور محبت سے بچو۔ حقوق العباد پر بہت زور دیتے تھے۔ ایک دن میں نے عرض کیا کہ حضرت صبح سے شام دفتر ہوتا ہے پھر اگر نمازوں کے بعد تسبیحات میں مشغول ہو جاتوں تو بیوی کو شکایت ہوتی ہے کہ سارا دن دفتر کی نذر ہو جاتا ہے اور باقی وقت تسبیحات میں چلا جاتا ہے۔ حضرت نے یہ سن کر تقریباً ۱۱ منٹ اس پر گفتگو کی۔ فرمایا (جس کا مفہوم ہے) کہ بیوی بچوں کے حقوق واجب ہیں اور تسبیحات نفل۔ اصل تو حقوق کی ادائیگی ہے تسبیحات چلتے پھرتے پڑھ لیا کرو۔ بیوی بچوں کے حقوق کی ادائیگی ضروری ہے۔

حضرت والانسنت کا محبتہ تھے۔ میں نے حضرت کو بار بار ہنستے دیکھا ہے۔ دانت بھی شاید ہی کبھی نظر آئے ہوں۔ ایک دن حضرت مجلس سے قبل ڈرائنگ روم میں صوفے پر تشریف فرما تھے اور باقی حضرات فرش پر بیٹھے تھے۔ حضرت باتیں کر رہے تھے کہ اتنے میں ایک صاحب جو بظاہر حضرت کے دوستوں میں سے تھے داخل ہوئے۔ یہ صاحب حج کر کے آئے تھے اور واپسی کے بعد غالباً پہلی ملاقات تھی۔ حضرت والا انہیں دیکھتے ہی کھڑے ہو گئے اور بڑی محبت سے گلے لگایا۔ یہ صاحب فرش پر دوسرے لوگوں کے ساتھ بیٹھنے لگے تو حضرت نے فرمایا نہیں آپ اوپر صوفے پر بیٹھیں۔ انہوں نے معذرت کی تو حضرت نے اصرار کیا مگر انہوں نے دوبارہ معذرت کی۔ اس پر حضرت والا یہ کہتے ہوئے صوفے سے اٹھنے لگے کہ ”پھر میں بھی فرش پر ہی بیٹھوں گا“ اس پر لوگوں نے ان صاحب سے کہا کہ اوپر بیٹھیں۔ جب یہ صاحب فرش سے اٹھ کر صوفے پر بیٹھے تب حضرت بھی صوفے پر تشریف فرما ہوئے۔ ایک حاجی کا کتنا اکرام کیا۔ یہ حضرت ہی کا خاصہ تھا۔

حضرت خطوط کے جواب کا بہت اہتمام فرماتے تھے۔ رذرانہ کئی خطوط آتے تھے۔ اس کے باوجود جمعہ کو دیئے ہوئے خط کا جواب اتوار کو پہنچ جاتا تھا۔ اس صنف و بیماری کے عام میں بھی جو کہ آخری زمانہ میں ہو گیا تھا خطوط کے جواب اسی مستعدی سے دیتے رہے۔ یہاں تک کہ میں نے ایک بار خط لکھا۔ حضرت کو لاہور جانا تھا۔ خط ساتھ لے گئے اور لاہور ہی سے جواب ارسال فرمایا۔ ایک بار میں لغافہ میں

خط رکھنا بھول گیا۔ پھر بھی حضرتؑ نے جواب دیا اور لکھا کہ ”لغافہ میں خط نہیں تھا بہر حال تمہارے جملہ مقاصد کے لئے دعا کرتا ہوں اللہ تعالیٰ عافیت و صحت سے رکھے“ اس سے حضرتؑ کی شفقت کا اندازہ کیجئے۔ ایک بار میری اہلیہ نے پریشان کن حالات حضرتؑ کو لکھے۔ حضرتؑ نے مندرجات کا جواب دینے کے بعد لکھا ”جب کوئی پریشانی ہو بس مجھے لکھ دیا کرو“ کس قدر شفقت بھکتی ہے اس جواب میں۔ حضرتؑ والانے ایک خط میں فرمایا ”بہتر ہے کہ بچوں کو شرمش میں بغدادی قاعدہ پڑھاؤ پھر قرآن شریف پڑھاؤ۔ اس کے بعد حسب ضرورت عربی یا اسکول کی تعلیم میں لگاؤ“ کاش کہ ہم جناب والا رحمۃ اللہ علیہ کی اس وصیت پر عمل کرنے والے ہو جائیں تو اولاد کی تربیت پر کیا عمدہ اثر پڑے گا۔ خاص طور پر اس زمانے میں جب کہ دین عام ہے یہ وصیت نہایت اہمیت کی مالک ہے۔

جب بھی کوئی محفل ہوتا ہے، دو آدمی جمع ہو جاتے ہیں جی چاہتا ہے کوئی حضرتؑ کا ذکر نکال دے۔ حضرتؑ ہی کی باتیں ہوں۔ حضرتؑ والا اکثر فرمایا کرتے تھے ”مجھ سے سنو پھر سنانے والا نہ ملے گا“ اس وقت یہ باتیں سمجھ میں نہیں آتی تھی۔ مگر اب جبکہ حضرتؑ والا ہمارے درمیان میں نہیں ہیں اسکی قدر معلوم ہوتی ہے۔ نظر دوڑاتا ہوں تو غلار ہی خدا نظر آتا ہے۔ کان حضرتؑ کی باتوں کو اور آنکھیں حضرتؑ کے دیدار کو ترس گئی ہیں۔ حضرتؑ ہی کا شعر ہے

بے محابا جب تصور میں کوئی آجائے ہے :- پھر نہ ترپا جائے ہے دل سے نہ سنبھلا جائے  
حضرتؑ والا کے اشعار پر ختم کرتا ہوں :-

مخل سوز و گداز غم کو گر مانے گا کون  
اہل دل کو اپنے دردِ دل سے تھپانے گا کون  
موجن ہے کس کے دل میں آتشِ سیالِ غم  
مستیِ خونِ جگر آنکھوں سے برسنے گا کون  
کس پہ طاری ہے خونِ شوق کی وارنگی  
ہوں زبان پر والہانہ رازِ دل لائے گا کون  
عارفِ میرا ہی دل ہے محرمِ ناز و نیاز  
بعد میرے رازِ حسن و عشقِ سمجھائے گا کون

محمد زبیر اشرف عثمانی

درجہ تخصص دارالعلوم کوہاچی

# بِأَنْبَاءِ نَبِيِّكَ يَا مُحَمَّدٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
بِحَقِّهِ وَتَقْوَىٰ عِلْمِهِ وَتَقْوَىٰ عِلْمِهِ

عارف باللہ حضرت ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارفی رحمۃ اللہ علیہ کی ذات گرامی  
علم و عمل کا مہر عالم تاب اور بلا امتیاز عوام و خواص کا مرجع و ماب تھی۔  
آپ ایثار و قربانی کے پیکر اور اخلاقِ عظیم کے مظہر تھے، جامعیت زہد و تقویٰ آپ  
کی زندگی کا طرۂ امتیاز تھا، حضرت ہر ایک کے ساتھ بے پناہ شفقت فرماتے تھے یوں تو حضرت  
کی ذات گرامی کے بارے میں لکھنا بڑے بڑے علماء و صلحاء اور اہل قلم حضرات ہی کا کام ہے  
مجھ جیسا ناکارہ اس قابل کہاں کہ حضرت کی شخصیت کے بارے میں کچھ لکھے، لیکن حضرت کا  
تعلق جو بچوں سے ہوتا تھا اور جو مجھ سے رہا اس کو سپرد قلم کرتا ہوں۔

یہ آج سے چودہ برس قبل کی بات ہے جب حضرت کی مجلس جمعرات کے دن شام کو  
نارتھ ناظم آباد میں حضرت کے مکان پر ہوا کرتی تھی اس وقت میری عمر پانچ چھ برس کے  
لگ بھگ ہوگی، میرے والد ماجد حضرت مولانا مفتی محمد رفیع عثمانی مدظلہ اور میرے  
چچا حضرت مولانا مفتی محمد تقی عثمانی مدظلہ ہر جمعرات کو حضرت کی مجلس میں تشریف  
لیجاتے اور والد صاحب مجھے بھی اپنے ساتھ حضرت کے یہاں لیجاتے۔

میں چونکہ بچپن کے ابتدائی دور سے گزر رہا تھا اس عمر میں ہر جگہ گھومنے کا شوق تو ہوتا ہی ہے اس لئے اس خیال سے کہ گھومنے پھرنے کا ایک موقع ہاتھ آیا خوشی میں مجلس میں چلا جاتا وہاں جا کر بھی مختلف چیزوں کو چھیر دیتے رہنا اور آخر میں تھک پار کر وہیں قریب میں بیٹھ جانا معمول تھا حضرت میرا سراپا ٹانگ پر رکھ کر مجھے لٹا لیتے اور کبھی اسی حالت میں نیند کی آغوش میں جا پہنچتا۔

جمعرات کو یہ خصوصی مجلس ہوتی تھی اسوقت اس میں حاضرین دو چار حضرات ہی ہوتے تھے یہی خصوصی مجلس بعد میں پیر کو ہونے لگی، غرض اس طرح ہر جمعرات کو حاضری رہتی، کچھ عمر میں میں اضافہ ہوا لیکن باتیں اب بھی سمجھ سے ماوراء تھیں مگر مجلس میں حاضری بھی برابر جاری رہی نہ معلوم حضرت کی شخصیت میں کسی جاذبیت اور کشش تھی کہ از خود مجلس میں آنے کو دل چاہنے لگتا، اس کے بعد احقر پرائمری اسکول سے فارغ ہوا اور درسِ نظامی کی تعلیم حاصل کرنا شروع کر دی، جب بھی حضرت کی مجلس میں حاضری ہوتی تو والد صاحب سے تعلیم کے بارے میں دریافت فرماتے۔

پھر جب ہم سنِ شعور کو پہنچے اور درسِ نظامی کی تعلیم کو بھی ایک دو سال ہو گئے تو اب باتیں بھی اچھی طرح سمجھ میں آنے لگیں، حضرت کی شخصیت میں جاذبیت اور کشش ہی تھی جو مجھے کھینچ لاتی، اب شخصیت میں کشش کے ساتھ باتوں میں بھی کشش محسوس ہونے لگی، تو اب بات ہی کچھ اور ہو گئی تھی، پہلے گھومنے کے شوق میں آتے تھے اور حضرت بہت زیادہ محبت اور شفقت فرماتے تھے صرف اس لئے ہی آنا ہوتا تھا، لیکن اب حضرت کی زیارت کے شوق کے ساتھ ساتھ مجلس میں باتیں سننے کا بھی شوق ہو گیا تھا تو اب اور زیادہ پابندی کیساتھ حاضری شروع ہو گئی اگر کبھی ایک دو مجلس میں حاضری نہ ہوتی تو حضرت والد صاحب مدظلہ سے فرماتے کہ ”بھئی تم زبیر کو ضرور لایا کرو“

ایک مرتبہ مجلس کے بعد نماز مغرب پڑھ کر سب ان کے ارد گرد بیٹھے ہوئے تھے اور حضرت ارشادات فرما رہے تھے اصل مجلس عصر سے مغرب تک جاری رہتی مگر مغرب کے بعد بھی لوگ حضرت کے ارد گرد بیٹھ جاتے اور حضرت ارشادات فرماتے بعض اوقات مشروطاً



امور میں کسی سے مشورہ ہوتا غرض ایک طرح کی نجی مجلس ہوتی جس میں حضرت کے خاص مریدین شرکت کرتے اسی طرح کی ایک مجلس بعد مغرب جاری تھی ہم بھی حضرت کے قریب جا کر بیٹھ گئے کچھ دیر کے بعد حضرت نے میری طرف دیکھا اور فرمایا۔

”کہ بھئی تم تو بور ہوتے ہوئے یہ کہہ کر حضرت نے اپنا ہاتھ میرے سینہ پر رکھا اور فرمایا کہ بھئی تم ضرور آیا کرو یہ سب باتیں یہاں ٹیپ ہو رہی ہیں اور پھر میرا سینہ تھپتھپایا اور فرمایا کہ انشاء اللہ ایک دن یہ ٹیپ ضرور چلے گا یہ سینہ ٹیپ ریکارڈ ہے“

اور جو بھی بچہ حضرت کی خدمت میں حاضر ہوتا اس سے بھی اتنی ہی شفقت فرماتے اس کو دعائیں دیتے اور ان کے سر پرست سے فرمانے کہ ”بھئی ان بچوں کو ابھی سے لایا کرو اس وقت اگرچہ یہ باتیں نہیں سمجھ رہے ہیں لیکن یہ باتیں بچوں کے سینہ میں ٹیپ ہو رہی ہیں اور انشاء اللہ ان بچوں کا ٹیپ بھی ضرور چلے گا۔“

غرض اس طرح کی اور بہت سی شفقتیں فرماتے رہتے جس میں ہمت افزائی دلجوئی وغیرہ بھی ہوتیں ما اور جب مجلس سے جلتے تو بچوں کے سروں پر ہاتھ پھیرتے اور دعائیں فرماتے۔

ایک مرتبہ میں حضرت کی مجلس میں حاضر نہ ہو سکا اگلی مجلس میں جب حاضر ہوا تو والد صاحب سے فرمانے لگے ”بھئی ہمارا پوتا بھی آیا؟“ والد صاحب نے عرض کیا کہ آیا ہے پیچھے بیٹھ گیا آپ نے فرمایا،

”کہ بھئی ہماری مجلس کا کوٹہ اس وقت تک پورا نہیں ہوتا جب تک ہمارا پوتا نہیں آتا،“ حضرت رحمۃ اللہ علیہ کا یہ انداز شفقت ہر کسی کے ساتھ ہی ہوتا، جس بچہ سے بھی پوچھا جائے جو کہ حضرت کی خدمت میں حاضر ہونے وہ یہی کہتا کہ حضرت کو مجھ سے سب سے زیادہ محبت تھی، میرے بارے میں فلاں فلاں بات کہی اور اسی تصور سے خوش ہوتا رہتا دراصل حضرت کا انداز ہی کچھ اتنا مشفقانہ ہوتا کہ ایک مرتبہ حاضری کے بعد خود آپ کی خدمت میں حاضر ہونے کو دل چاہنے لگا اور ہر بچہ کے ساتھ اسی کے مطلب کی باتیں کرتے۔

## ”کھیل“

ایک دفعہ حضرتؑ کی خدمت میں ایک بچہ آیا ان کے بڑے بھائی نے کہا کہ حضرت یہ بچہ کھیل کا بہت شوقین ہے اور ہر طرح کے کھیل کود میں ماہر ہے حضرتؑ اس بچہ کے ساتھ کھیل کی باتیں کرتے رہے اور اس بچہ کو اپنے کھیل کے واقعات خوب سُنائے اور کئی کھیلوں کے متعلق بتایا کہ میں بھی یہ کھیل کھیلتا رہا یہ کھیل اس طرح کھیلا جاتا ہے اور فلاں کھیل اس طرح ہوتا ہے، پھر اسی بچہ سے پوچھنے لگے ”بھئی جس کھیل کا تمہیں شوق ہے ہمیں بھی بتاؤ کہ کس طرح کھیلا جاتا ہے وہ بچہ کھیل کی تفصیلات اس قدر خوش ہو کر بتا رہا تھا کہ اس کے چہرے سے خوشی پھوٹی پڑ رہی تھی اور حضرتؑ ہمہ تن گوش ہو کر سُنتے رہے، اس طرح کے اور بہت سے واقعات ہوتے رہتے جس سے حضرتؑ کا بچوں سے بے پناہ پیار اور محبت کا اندازہ ہوتا رہتا

## ”امتحان مسین کامیابی کا وظیفہ“

ایک مرتبہ امتحانات ہوئی اور اُسے تھے احقر نے عرض کیا کہ حضرت امتحان قریب ہیں دُعا کی درخواست ہے حضرتؑ نے فرمایا کہ ”دُعا میں کرتا ہوں و وار تم کرو“ اور فرمایا، ایک وظیفہ بتاتا ہوں جو مجرب ہے اس پر عمل کرو گے تو انشاء اللہ کامیابی ہوگی اور پھر حضرتؑ نے امتحان کے ایام میں پڑھنے کے لئے ایک وظیفہ بتایا جس کا بہت فائدہ ہوا۔ اس وظیفہ کو امتحان سے چند دن قبل شروع کیا جائے وہ وظیفہ یہ ہے ”بعد نماز عشاء گیارہ مرتبہ درود شریف پڑھیں اور اس کے بعد دو سو مرتبہ ”یا عَلِیُّمُ“ پڑھیں پھر گیارہ مرتبہ درود شریف آخر میں پڑھ لیں اور دُعا مانگ لیں“ اللہ اکبر:- کیسی رعایتیں تھیں ہر شخص خواہ وہ بڑا ہو یا چھوٹا اس کے غم و خوشی میں اس طرح شریک ہوتے، جیسے اُن کا اپنا غم و خوشی ہو اپنی بات عرض کر کے اور حضرتؑ کا جواب سُن کر ایسا سکون ملتا تھا کہ دل میں ٹھنڈک پڑ جاتی تھی، خواہ وہ بچہ کی بچکانہ بات ہو یا کسی بڑے شخص کی کوئی الجھن ہر شخص پر سکون ہو جاتا۔

جس دن دارالعلوم کراچی میں ختم بخاری شریف تھا حضرت باوجود بیماری اور ضعف کے دارالعلوم تشریف لائے لیکن دارالعلوم تشریف لاتے ہی تکلیف میں اضافہ ہوا اور حضرت ہمارے مکان میں تشریف لے گئے وہاں جا کر آرام فرماتے رہے لیکن تکلیف کی شدت میں اضافہ ہی ہوتا رہا بالآخر یہ فیصلہ فرمایا کہ حضرت ختم بخاری میں شرکت کے لئے مسجد تشریف نہ بھیجیں گے اور اپنے گھر واپس جانے کا ارادہ کیا۔

احقر بھی اسی سال دارالعلوم سے بفضلہ تعالیٰ فراغت حاصل کر رہا تھا اور دورہ حدیث ہی میں تھا، حضرت نے احقر کو اپنے سامنے ختم بخاری کے لئے دارالعلوم کی جامع مسجد بھیج دیا، جہاں ختم بخاری ہو رہا تھا اور فرمایا کہ میں تکلیف کی بناء پر مسجد میں نہ جاؤں گا یہیں بیٹھے تمام طلباء کے لئے دعاء کرتا ہوں۔

ہمارے چشم تصور میں بھی یہ بات نہ ہوگی کہ حضرت سے یہ ہماری آخری ملاقات ہے اور یہ ملاقات الوداعی ہے، اور اس کے بعد اس عظیم ترین ہستی کی ہم زیارت نہ کر سکیں گے لیکن مشیت ایزدی میں کسے دخل ہے، آج ہمارے درمیان ہمارے حضرت موجود نہیں، سمجھتے بدلا بدلا سا لگتا ہے ایک نہ پڑھو یا اخلاء نظر آتا ہے اب جب بھی خاص طور پر جبکہ مجلس کا دن آتا ہے تو دل و دماغ یادوں کے دریچے میں گم ہو جاتا ہے، وہی شگفتہ چہرہ وہ مکرانے کا انداز، ہر ایک سے اس کے مرتبہ کے لحاظ سے برتاؤ، وہ شفقتیں، اور وہ محبتیں یادوں کے سلسلہ وار ختم نہ ہونی والی کڑی ہے اب صرف حضرت کی یادیں ہیں لیکن ہمارے حضرت موجود نہیں، باتیں ہیں لیکن بتایا نہیں لیکن ان سب چیزوں کے باوجود حضرت کی زندگی ہمارے لئے مشعل راہ ہے حضرت کے ارشادات و افادات کو اگر ہم اپنی زندگی میں عملی جامہ پہنائیں تو زندگیوں میں انقلاب آسکتا ہے۔

سہ آتی رہیگی تیرے انفاس کی خوشبو

گلشن تیری یادوں کا ہکتا ہی رہیگا

اللہ تعالیٰ ہمیں حضرت کے نقش قدم پر چلنے کی توفیق عطا فرمائے اور حضرت کے درجات

میں اضافہ فرمائے آمین۔

محقق ذیل اشرف عثمانی

درجہ تخصص دارالعلوم کراچی ۱۴

## حضرت غازی کے کچھ سبق آموز واقعات

احقر کے دادا محترم مفتی اعظم پاکستان حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے بعد جب حضرت ڈاکٹر عبدالحی صاحب دارالعلوم کراچی کے صدر منتخب ہوئے تو اس وقت احقر کی عمر دس سال کی تھی اور حضرت کی مجلس پیر اور جمعہ کو ہوا کرتی تھی اس میں دارالعلوم سے بھی کچھ حضرات جایا کرتے تھے سی وقت سے دل میں یہ خواہش پیدا ہوئی تھی کہ حضرت کی مجلس میں ہم بھی شریک ہوں لیکن یہ خواہش احقر کے بچنے اور کھیل کود سے مغلوب ہو گئی۔ کچھ ہی عرصہ بعد احقر کا اپنے والد محترم جناب سید فخر نام صدیقی صاحب کے ساتھ حضرت کی مجلس میں جانا ہوا وہاں اللہ تبارک و تعالیٰ نے حضرت کی زیارت اور ملاقات سے نوازا اور حضرت نے احقر کے ساتھ غیر معمولی شفقت فرمائی۔ جب ہی سے احقر کا دل بنانا ب اللہ حضرت کی جانب متوجہ ہو گیا الحمد للہ۔ اور اللہ کا شکر ہے کہ ابے تین سال پہلے سے حضرت کی مجلس دوستی میں اکثر پابندی ہو گئی۔ اور حضرت کی وفات سے ایک سال قبل تو الحمد للہ مکمل پابندی ہوئے تھی۔ اور اللہ جل شانہ کا شکر ہے کہ اپنی کم عمری کے باوجود اس ناچیز نے حضرت سے بہت کچھ استفادہ کیا الحمد للہ۔ لہذا کچھ حضرات کے واقعت جو خود ان سے ملے ہوئے ہیں یا پھر حضرت کی مجلس میں آنے والوں سے ملے ہیں پیش خدمت ہیں اس ناچیز کی دعا ہے کہ اللہ تبارک و تعالیٰ حضرت کی کامل مغفرت فرمائے اور ہم تشنگانِ دین و شریعت کو ان کے نقشبندیہ تم پر چلنے کی توفیق عطا فرمائیں آمین۔ حضراتِ مہربان سے بھی درخواست ہے کہ اللہ تبارک و تعالیٰ اس ناچیز اور جھوٹے اپنی رضامندی عطا فرمائے اور جس دین کا ہم ہر وقت نام لیا ہیں اس کا سچا خادم بنادے آمین۔



**صحبت شیخ کی ایک حکیمانہ مثال** | حضرت ایک مرتبہ اپنے ملنے والوں میں سے کسی کی دوکان پر تشریف لے گئے تھے اور ان صاحب کی عطر کی دوکان تھی تھوڑی دیر حضرت وہاں تشریف فرما رہے پھر ان سے ملاقات سے ذرا غ ہونے کے بعد واپس تشریف لے جا رہے تھے کہ راستہ میں ایک دوسرے صاحب مل گئے انھوں نے حضرت سے عرض کیا کہ حضرت آج آپ نے عطر بہت اچھا لگایا ہے حضرت نے فرمایا کہ بھائی میں نے تو عطر نہیں لگایا ہاں البتہ عطر کی دکان میں تھوڑی دیر بیٹھا ہوں۔ حضرت اکثر یہ واقعہ صحبت شیخ کے فوائد بتاتے ہوئے بطور مثال ذکر کیا کرتے تھے اور فرماتے اپنے شیخ کی صحبت میں بیٹھنا اگرچہ تھوڑی دیر کے لئے ہو اس کے اثرات ضرور پڑتے ہیں جس طرح کہ عطر کی دوکان میں تھوڑی دیر بھی بیٹھنے والے پر عطر کے اثرات پڑتے ہیں۔ اور حضرت یہ واقعہ سناتے ہوئے مذکورہ اشعار بڑے ہی دلہانہ انداز میں پڑھا کرتے تھے۔

|                            |                            |
|----------------------------|----------------------------|
| ر سید از دست محبوبے بدستم  | گلے خوش بوئے در حتما روزے  |
| کہ از بوئے دل آویز توستم   | بدو گفتم کہ مشکى يا عبیری  |
| ولیکن مدتے با گل نشستم     | بگفت من گلے ناچیز بودم     |
| وگرنہ من ہماں خاکم کہ ہستم | جمال ہنشیں در من اثر کرد ، |

حضرت سیدی و مرشدی نے ایک بار مجلس کے دوران فرمایا کہ ایک مرتبہ حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ تشریف لے جا رہے تھے پیچھے پیچھے میں جا رہا تھا حضرت کے قدم جہاں جہاں پڑتے تھے انہی نشانات پر میں بھی قدم رکھتا جاتا تھا اور دل میں یہ دعا کرتا جاتا تھا کہ یا اللہ مجھے حضرت کے نقش قدم پر چلنے کی توفیق عطا فرمائیے۔

### ایک واقعہ طالب علمی کے دور کا

حضرت سیدی و مرشدی و مولائی رحمۃ اللہ علیہ کے زمانہ طالب علمی کا ایک واقعہ خود حضرت سے حضرت ہی کی مجلس میں بار بار سنا کر فرماتے تھے کہ جب میں انگریزی تعلیم حاصل کر رہا تھا تو ایک دفعہ دورانِ درس کالج کے ایک ہندو لیکچرار نے کہا کہ دیکھو مسلمان کہتے ہیں کہ جب ہم اپنے خدا کو پکارتے ہیں تو وہ سنتا ہے بھلا کون سن سکتا ہے کیا کسی نے خدا کی آواز سنی ہے؟ تو اس پر حضرت عارفی سیدی و مرشدی نے ہندو لیکچرار سے فرمایا کہ ہاں جب میں اپنے خدا کو پکارتا ہوں تو وہ مجھے جواب دیتا ہے اور اس کا جواب میں سنتا ہوں آپ بھی مسلمان ہو کر پکاریں تو آپ کو بھی جواب ملے گا۔ اس پر وہ خاموش ہو گئے۔

**مراقبہ بوقت صبح** | حضرت عارفی سیدی و مرشدی رحمۃ اللہ علیہ نے ایک مرتبہ اہل مجلس سے فرمایا کہ جب میں سو کر اٹھتا ہوں تو بدن بہت چور چور ہوتا ہے کیونکہ رات کو سوتے سوتے بارہ ساڑھے بارہ بچ جاتے ہیں۔ مگر الحمد للہ جیسے ہی میری آنکھ کھلی بس فوراً اٹھ کر بیٹھ جاتا ہوں گوشت نہیں ہوتی اور اپنے نفس سے مخاطب ہو کر کہتا ہوں کہ اے نفس! بتاؤ کہ اب تم جہاں ہو جاؤ گے یا بڑھاپا آئے گا۔ مگر کس طرف جا رہی ہے قبر کی طرف یا جہنم کی طرف، دنیا کی لذتیں حاصل کرنا ہے یا آخرت کی طرف جانا ہے، بس یہ مراقبہ کرتے ہی الحمد للہ بہت ہو جاتی ہے، تمام اپنے معمولات اور دن بھر کے تمام کام باسانی پورے ہو جاتے ہیں۔

**مبارک ساعات** | حضرت نے خود فرمایا کہ دورانِ مجلس میں نے حضرت تھانوی رحمۃ اللہ علیہ سے عرض کیا کہ حضرت کی باتیں سننا ہوں اور بہت گوشش کرتا ہوں یاد رکھنے کی مگر باوجود گوشش کے یاد نہیں رہتی سن میں پڑھتا ہوں تو یاد نہیں رہتیں۔ بھول جاتا ہوں، تو حضرت (تھانوی) نے بے ساختہ فرمایا کہ کس فکر میں پڑے ہو؟ خود صاحبِ ملفوظ کیوں نہ ہو؟ میں نے عرض کیا کہ حضرت دل سے دعا فرمادیجئے۔

**حضرت کے گھر میں تقریب ولیمہ** | حضرت عارفی سیدی و مرشدی رحمۃ اللہ علیہ اپنے ہاں آنے والوں میں ہر ایک سے بہت ہی تواضع کا معاملہ فرماتے تھے محبت کا اندازہ تو وہی کر سکتا ہے جن سے محبت کا تحقق ہوتا ہے۔ حضرت کے فرزند کی شادی کے موقع پر دعوت نامہ غریب اور امیر دونوں کو برابر دیا گیا اس میں علما، غیر علماء، عزیز، غیر عزیز سب ہی شامل تھے کھانے کے وقت فرشی دسترخوان بچھا دیا گیا کھانے کے دوران حضرت ہر ایک بہان کے پاس خود ہی تشریف لے جاتے تھے اور فرماتے تھے کہ مجھے آپ کے آنے سے بہت خوشی ہوئی آنے والا بہان کیسا ہی امیر و غریب ہو ہر ایک کی دلجوئی فرماتے تھے اور جب نماز کا وقت ہوا تو فوراً وہیں پر جماعت کے ساتھ نماز ہوئی۔ بعد میں حضرت نے فرمایا کہ یہ جو غریب لوگ آجاتے ہیں ان کو یہ محسوس نہ ہونا چاہئے کہ ہم کو کسی نے پوچھا ہی نہیں۔

غریب پروری اور ان کو ایک جیسا سمجھنا حضرت کی عمومی تعلیم تھی۔ خلاصہ یہ کہ حضرت کی نشر میں کسی کی مالداری اور کسی کی ناداری کی کوئی اہمیت نہیں تھی اور ساتھ ساتھ یہ کہ عام طور پر تقریبات میں نماز باجماعت کا تو کچھ نماز ہی کا خیال نہیں رہتا لیکن حضرت کی تقریبات میں نماز باجماعت کا خیال خاص طور پر ملحوظ رکھا جاتا تھا۔

**حضرت کا ایک واقعہ** | فرمایا کہ تقسیم پاکستان سے پہلے ہندوستان میں ہندو مسلم فساد ہو رہا تھا، ڈاکٹری کی وجہ سے وہاں کے ہندو مجھے بہت مانتے تھے اور کافی قدر کرتے تھے۔ ایک دن میں مطب میں بیٹھا ہوا

تھا اور قریب ہی میرا مکان تھا ایک بندو برہمن جو اکثر مجھ سے علاج کرتا تھا وہ آیا اور کہنے لگا کہ ایک مریض کو دیکھنا ہے آپ میرے ساتھ تشریف لے چلتے ہیں نے کہا کہ نہ سواری ہے اور نہ حالات صحیح ہیں تو میں کیسے جاؤں۔ اس نے کہا کہ ہم سواری کا انتظام کرتے ہیں اور آپ کو واپس بھی پہنچا دیں گے، اس پر میں جانے کیلئے تیار ہو گیا۔ جا کر مریض کو دیکھا اور مریض کے لئے دوا تجویز کر دی انہی کاموں میں رات زیادہ ہو گئی، جبکہ دور تھی اور وہاں تمام ہندوؤں کی آبادی تھی اس ہندو نے کہا کہ اب آپ صبح کو جلیئے گا۔ خیر میں بدرجہ مجبوری اس پر رضی ہو گیا اور اس نے چار پائی بچھا دی اور رات کو سونے کے جملہ انتظام کر دیئے۔ میں چار پائی پر لیٹا ہوا تھا کہ اچانک اس بندو برہمن کو شرارت ہو گئی اس نے کہا کہ ڈاکٹر صاحب آپ کا آج تو جانا مشکل ہے یہ سب لوگ کہتے ہیں کہ موقع اچھا ہے آپ کو ختم کر دیں بس یہ سن کر مجھے ایسا جوش آیا اور میں لیٹے لیٹے اٹھ کر بیٹھ گیا میں نے کہا کہ یہ آپ نے کیا کیا میں بے بس ہوں، کیا میں تنہا ہوں اور میں نے آستین چڑھا کر کہا کہ یاد رکھو کہ میں تنہا نہیں ہوں اور حضرت نے یہ الفاظ دو تین مرتبہ فرمائے اور بڑے جوش میں کہے کہ میں مسلمان ہوں میں جب تک دس بیس کو نہ ماروں اس وقت تک نہ مردوں گا۔ یہ نہ سمجھنا کہ میں تنہا ہوں، میں تنہا نہیں ہوں جب میں نے اس طرح اس سے کہا تو وہ معافی مانگنے لگا۔ اور برہمن نے کہا کہ میں تو آپ سے مذاق کر رہا تھا۔ آپ فکر نہ کریں یہاں آنے والا پہلے ہم کو مارے گا پھر کسی اور کو اور آپ کو تو کوئی آنکھ اٹھا کر بھی نہیں دیکھ سکتا۔

حضرت عارفی کی موجودہ معاشرہ پر ایک نظر | حضرت عارفی رحمۃ اللہ علیہ نے ایک بار مجلس میں فرمایا کہ انڈیا ہندوستان میں یہ طریقہ عام تھا

کہ عورتوں کو اگر کہیں جانا ہوتا تو گھر پر ڈولی منگالی جاتی اور کہہ مار ڈولی دروازہ پر لگا دیتے اور اس پر پردہ ڈالتے اور عورتیں برقع پہن کر اس میں سوار ہو جاتیں اور جس جگہ جانا ہوتا وہاں چلی جاتیں ایک گھر کا مرد بھی ان کے ساتھ ہو جاتا کہہ مار محلہ ہی کے ہوا کرتے تھے ان کی اجرت کم سے کم دو پیسہ زیادہ سے زیادہ دو آنہ ہوا کرتی تھی، اس سے زیادہ نہ ہوتی تھی لیکن جب پاکستان بنا اور لوگ یہاں منتقل ہو گئے تو شرع شرع کراچی میں ہم نے دیکھا کہ مستورات برقع میں منہ ڈھانپ کر اور ساتھ ان کے گھر کا کوئی محرم بھی ہوا کرتا تھا، بازاروں میں آنے لگی ہیں۔ یہ دیکھ کر ہم نے کہا افسوس ہے کہ اب عورتیں بازاروں میں پھرنے لگی ہیں پھر کچھ عرصہ گزرا کہ عورتیں منہ کھول کر برقع میں باہر آنے لگی ہیں اس وقت ہم نے کہا کہ افسوس ہے کہ اب مستورات منہ کھول کر بازاروں میں سودا خریدنے کے لئے آنے لگی ہیں اور یہ بھی کہا کہ اسے بھائی کیوں خدا کے تہ کو دعوت دیتے ہو

پھر کچھ عرصہ گزرا کہ مستورات زیادہ تعداد میں بازاروں میں نظر آنے لگیں تو لوگوں نے افسوس کیا اور کہا کہ بھائی خدا کے تہ کو دعوت نہ دو، گناہ ہے۔ پھر کچھ عرصہ گزرا کہ عورتیں کارخانوں میں مزدوری کے لئے نجانے لگیں۔ یہ دیکھ کر ہم نے کچھ عورتوں سے کہا کہ بھائی خدا کے لئے ایسا نہ کرو اور اللہ تعالیٰ کے عذاب کو دعوت نہ دو، یہ ناجائز ہے، گھر میں بیٹھ کر مزدوری کر لیا کرو۔ پھر عرصہ گزرا کہ بغیر رقبہ کے عورتیں بازار میں آنے لگیں مگر دوپٹہ سر پہننا تھا اور لباس ڈھیلہ ہونا تھا اور چادر اوڑھی ہوتی تھی۔ یہ منظر دیکھ کر ہم کو ناقابلِ برداشت صدمہ پہنچا اور ہم کہنے لگے کہ غصہ ہے اب تو بہت ہی آزادی ہو گئی ہے، اللہ تعالیٰ سے پناہ مانگنی چاہئے۔ پھر عرصہ گزرا کہ دیکھتے ہی دیکھتے کیا کیا ہو گیا۔ اگر معاملہ یہاں تک بھی رہتا تو کچھ ٹھیک تھا کہ پھر بھی خدا کا خوف تو دلوں میں موجود ہے۔ اور یہ اس وقت کی بات ہے جس وقت انگریزی تعلیم نہ ہوتی تھی سیکن غصہ ہے کہ جیسی ہی تعلیم گاہیں کھلیں اور شروع شروع میں جب اسکول کھلے توڑکیں زیادہ اسکولوں میں نہ جاتی تھیں مگر کچھ عرصہ کے بعد رڑکیں اسکول میں کثرت سے تعلیم حاصل کرنے کے لئے جانے لگیں اور مخلوط تعلیم کا آغاز ہوا تو آغاز سے لیکر اب تک کئی اکھڑ مشاہدہ ہو رہا ہے کہ حیا شرم، غیرت، عفت سب ہی خطرہ میں پڑ گئے ہیں اور نہ صرف بدینی پھیل رہی ہے بلکہ العیاذ باللہ دین سے نفرت لوگوں میں پیدا ہونے لگی ہے ہی جس میں حضرت عارفی نے فرمایا کہ ایک بات بہت غور کرنے کے قابل ہے وہ یہ کہ آج سے پچاس سال پہلے جو ہماری نسل پیدا ہوئی تھی اس میں کسی کسی گراں قدر ہستیاں پیدا ہوئی تھیں اور اب ایسی ہستیاں کیوں نہیں پیدا ہو رہی ہیں۔ پچاس سال پہلے کیسے کیسے لوگ اللہ تبارک و تعالیٰ کے پیارے کئے جن کی مثال بھی آج تک نہیں ملتی۔ وہ بڑے قابل لوگ تھے ان میں بڑے بڑے ادیب، شاعر، باعزت باوقار، فقیہ، محدث، صوفیاء اہل دل شامل ہیں۔ فقیہ بھی ایسے کہ آج تک ان کی مثال نہیں ملتی اور عالم باعمل ایسے کہ ان کی کوئی نظیر نہیں ملتی، بزرگ، صوفیاء ایسے کہ آج اگر ہم چراغ لے کر ڈھنڈیس تو ملنا مشکل ہے۔ کیا اپنے کبھی سوچا کہ کیا وجہ ہے جو آج کل ایسے لوگ پیدا نہیں ہو رہے۔ وجہ یہ ہے کہ شروع دور میں عورتیں گھروں میں رہ کر تھیں۔ بے پردہ اور اس طرح بے حیائی سے مٹر گشت نہ کرتی تھیں۔ اس دور میں بوڑھا ہو یا جوان، عورت ہو یا مرد، سب کی طبیعتوں میں سلامتی تھی، ماں باپ کا ادب تھا، اپنے بزرگوں اور اپنے مشائخ کا احترام تھا۔ لیکن افسوس کہ آج کے دور میں اس انگریزی تعلیم نے اس معاشرہ کو تباہ و برباد کر دیا، عورتوں اور مردوں میں محرم اور نا محرم کا امتیاز نہ رہا۔ اب دینداروں کا مذاق اڑایا جاتا ہے، ڈاڑھی والے کو بے وقوف کہا جاتا ہے ان پر آج یہ مسٹر کلاسز طبقہ انگلیاں اٹھا رہا ہے۔ خلاصہ یہ کہ اس دور میں طرح طرح کی بد اعمالیاں



جہنم لے چکی ہیں اور ہم لوگ ہیں کہ اس کا احساس تک ہمیں نہیں ہوتا خدا کے لئے اپنے آپ کو اس تاریک گڑھے سے نکالو اور کچھ آخرت کی بچی تیاری کر دو۔ آنکھ بند ہونے کی دیسہ، جب آنکھ بند ہو جائے گی تو اس وقت معلوم ہو گا یہی لوگ آج ہیں دین سے بدفن ہیں وہاں ان کا حال سڑکوں پر پھرنے والے ننگ دھڑنگ فقیروں سے کہیں زیادہ بدتر ہو گا۔ یا اللہ ہم سب کو اس شرمنگ دور کے بھیا تک اعمال سے بچائیے! آمین

**حضرت عارفی رحمۃ اللہ علیہ کا**  
**حضرت تھانویؒ سے تعلق بیعت**

کامریضہ برہنہٴ ارساں خدمت کیا ہے۔ اس التزام میں الحمد للہ کبھی ناغہ نہیں ہوا۔ اس کے علاوہ الحمد للہ میری بڑی خوش نصیبی اور سعادت کہنے ہے کہ اکثر حضرت والا کی تقریریں اور وعظ بالمشافہ سُننے میں اور مجلس ملفوظات میں بقدر اپنی فرصت اور گنجائش وقت کے اکثر شریک رہا ہوں اور حضرت کے ساتھ مختلف تقریبات میں بھی شرکت کا اتفاق ہوا ہے حضرت کے ساتھ سفر کیا ہے اور حضرت کے دولت کردہ پرہمان خصوصی رہنے کی بھی سعادت نصیب ہوئی ہے اور حضرت کے خان کرم پر تنہا بھی کھانے کی سرفرازی حاصل ہوئی ہے اور دعوتیں بڑی پُرمستیں بھی نصیب ہوئی ہیں اور آخر نے حضرت کی خدمت میں جو بایا پیش کئے ہیں ان کو شرف قبول عطا ہوا ہے اور حضرت والا رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی شفقت بزرگانہ اور محبت مرثیانہ سے اس ذوق ناچیز کو اپنے عطایا تبرکات سے بھی سرفراز فرمایا ہے۔ مجلسوں میں بھی حضرت کی توجہ بہ خصوصی کا اکثر مورد فیض باطنی اور روحانی ہوا ہوں۔

ایں سعادت بزورِ بازو نیست  
 تانہ بخشہ خداے بخشندہ

اس زمانے میں جب کہ دلوں میں غلوں میں نہیں ہے اور سلاطین صفائی نہیں ہے کسی کی مالی امانت رکھنا بھی بعض وقت پریشانی خاطر کا باعث ہو جاتا ہے، اس لئے رسمی تعلق والوں کی امانت کبھی نہ رکھنا چاہیئے اور جو امانت رکھی بھی جیسے تر امانت رکھانے والے کی تحریری یا دواثرات مع تاریخ کے ضرور لے لینا چاہیئے۔ (از افاد است عارفی)

## افادات حضرت مولانا

حضرت والاک کی مجلس میں الحمد للہ، سترہ سال سے زائد ماضی کی سعادت نصیب رہی جس پر اللہ تعالیٰ کا جتنا شکر ادا کیا جائے کم ہے، اس دوران بار بار خیال آیا کہ حضرت کے ارشادات و افادات قلم بند کروں، لیکن مجلس میں کبھی احقر اس پر قادر نہ ہو سکا، حضرت کے سامنے ہوتے ہوئے کا غذا و قلم کی طرف متوجہ رہنا ہمیشہ بار محسوس ہوا، اس لئے قلم بند نہ کر سکا۔ حضرت کے آخری ایام حیات میں خیال آیا کہ حضرت سے سنی ہوئی خاص خاص باتیں اپنی یادداشت سے قلم بند کر لوں، چنانچہ یہ سلسلہ شروع کر دیا، حضرت کو بھی اسکی اطلاع دیدی حضرت نے اس پر مسرت کا اظہار فرمایا، اور دُعائیں بھی دیں اور احقر کی اس درخواست کو بھی قبول فرمایا کہ اس پر نظر ثانی حضرت ہی فرمائیں، لیکن عذر

فصلِ گلِ سیرۂ دیدیم دیہارِ آخر شد

ابھی حضرت کو دکھانے کا موقع نہیں آیا تھا کہ حضرت ہم سے رخصت ہو گئے  
 اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ۔

ان افادات میں مرکزی مفہوم حضرت ہی کا ہے، لیکن احقر نے انہیں اپنی یادداشت سے جمع کیا اور ترتیب دیا ہے، لہذا اگر جمع و ترتیب یا انداز بیان میں

کوئی قصور ہے تو اسکی ذمہ داری احقر پر ہے۔ اور اشاعت کا منشا یہ بھی ہے کہ اہل نظر حضرات اسیں کوئی خامی دیکھیں تو احقر کو متنبہ فرمادیں۔ بہر صورت! یہ باتیں بڑی قیمتی ہیں، جن سے انشاء اللہ دین پر چلنے کی ہمت اور اس کا شوق و جذبہ پیدا ہوگا۔

احقر محمد تقی عثمانی عفی عنہ

بسم اللہ الرحمن الرحیم

## دین پر عمل کرنے کا آسان طریقہ

فرمایا کہ آجکل لوگ بکثرت یہ کہتے ہیں کہ اس دور میں دین پر عمل کرنا بہت مشکل ہو گیا ہے۔ ہم چاروں طرف سے ایسے معاشرے میں گھرے ہوئے ہیں جو شر و فساد سے معمور ہے، جس میں ہر طرف بے دینی، بے حیائی، بے غیرتی پھیلی ہوئی ہے، گھریلو زندگی سے لیکر دفتروں اور بازاروں تک، اور تعلیم گاہوں سے لیکر حکومت کے ایوانوں تک ہر جگہ شر کے محرکات اپنی پوری فتنہ سامانیوں کے ساتھ انسانوں کو گمراہ کرنے میں مشغول ہیں ایسے ہیں اگر کوئی دین کے صحیح رستے پر چلنا بھی چاہے تو قدم قدم پر اس کے لئے مشکلات ہیں لہذا دین پر ٹھیک ٹھیک عمل ہو تو کیسے ہو؟

اس سوال کا نظری جواب تو یہ ہے کہ وہ خالق کائنات جنہوں نے ہمیں اس دین کا پابند بنایا ہے۔ وہی اس تمام معاشرے کے بھی خالق ہیں، وہ خالق خیر بھی ہیں، اور خالق شر بھی، دنیا میں کوئی پتہ ان کے حکم اور مشیت کے بغیر نہیں ہلتا، نہ کوئی ذرہ ان کے حکم اور مشیت کے بغیر حرکت کرتا ہے، تو کیا (معاذ اللہ) انہیں یہ معلوم نہیں تھا کہ ایک زمانہ ایسا بھی آنے والا ہے جب میری ہی مشیت سے معاشرہ اتنا خراب ہو جائیگا؟ یقیناً معلوم تھا، پھر کیا انہوں نے ہمیں اپنے دین کا یہ دیکھے بغیر مکلف بنادیا کہ اس پر عمل کرنے میں میرے بندوں کو کتنی مشکلات ہونگی؟ وہ تو اپنے بندوں پر اتنے مہربان ہیں کہ عالم کائنات میں کوئی بھی انسانوں کے حق

میں اتنا رحیم و کریم نہیں ہو سکتا۔ انہوں نے تو واضح لفظوں میں ارشاد فرما دیا کہ:

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِدَاءً وَنُفْعًا

اللہ تعالیٰ کسی کو اس کی وسعت سے زیادہ مکلف نہیں کرتا

اور فرما دیا ہے کہ:

مَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ

اللہ نے تم پر دین کے معاملے میں کوئی تنگی نہیں رکھی۔

اور فرما دیا ہے کہ:

يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ

اللہ تعالیٰ تمہارے ساتھ آسانی کا معاملہ کرنا چاہتا

ہے، تنگی کا معاملہ نہیں کرنا چاہتا۔

اور اللہ کے آخری رسول صلی اللہ علیہ وسلم نے جن کے بعد کوئی نبی آنے والا نہیں

ہے، واضح لفظوں میں فرما دیا کہ:

إِنَّ الدِّينَ يُسْرٌ

بلاشبہ دین آسان ہے

کلام اللہ اور کلام رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے یہ ارشادات (معاذ اللہ) کیا محض پہلے

کہتے ہیں؟ یقیناً نہیں، یہ اللہ تعالیٰ اور اس کے صادق و مصدوق پیغمبر صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشادات ہیں، زمین و آسمان اپنی جگہ سے ٹل سکتے ہیں، مگر ان ارشادات کی حقانیت میں فرق نہیں آ سکتا۔ ان ارشادات کے باوجود کوئی شخص دین کو ناقابل عمل حد تک مشکل سمجھے تو اللہ بچائے، اُس سے قرآن و سنت کے ان واضح ارشادات کی تکذیب لازم آتی ہے، جو بحد کفر پہنچ سکتی ہے، اللہ تعالیٰ اس سے ہر مسلمان کو محفوظ رکھیں۔ آمین۔

کلام اللہ اور کلام رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے یہ ارشادات تو ہرگز غلط نہیں ہو سکتے

کیونکہ یہ اس ذات کے ارشادات ہیں جس کے علم محیط ہے کائنات کا کوئی ذرہ پوشیدہ نہیں

ہے، قیامت تک پیش آنے والے تمام حالات و واقعات اس کے علم میں ہیں، اور کلام اللہ



اور کلام رسولؐ کسی خاص خطے یا کسی خاص زمانے کیلئے نہیں بلکہ ہر دور اور ہر زمانے کیلئے لئے ہیں، لہذا ان کی رُو سے اگر قرونِ اولیٰ میں دینِ آسان تھا اور اسمیں کوئی تنگی نہیں تھی، تو اس آخری دور میں بھی آسان ہے۔ اور اسمیں بھی تنگی نہیں ہے۔ ہاں اگر ہمیں بظاہر نظر دین کے کسی حکم میں کوئی مشکل نظر آرہی ہے تو یقیناً وہ ہماری نگاہ کا دھوکہ اور فہم کا قصور ہے، ورنہ دین فی نفسہ آسان ہے۔ زیادہ سے زیادہ یہ کہا جاسکتا ہے کہ دین تو اپنی ذات میں پہلے بھی آسان تھا، اور آج بھی آسان ہے کیونکہ وہ دینِ فطرت ہے، اور فطرت کے مطابق عمل کرنے میں انسان کو فی نفسہ دشواری نہیں ہوتی، لیکن نفس، شیطان اور ماحول کے بیرونی اثرات کی بناء پر بعض اوقات یہ فطرت مسخ ہو جاتی ہے یا اسمیں کمزوری آ جاتی ہے، اُس کی بناء پر دینِ فطرت کی طرف لوٹنا مشکل معلوم ہونے لگتا ہے، اس کے معنی یہ نہیں کہ دینِ فطرت مشکل تھا، بلکہ اسکا مطلب یہ ہے کہ ہم نے نفس، شیطان اور ماحول سے متاثر ہو کر اپنی صلاحیتیں خراب کر لی ہیں جس سے ہمیں یہ کام مشکل معلوم ہونے لگا ہے۔

اس کی مثال یوں سمجھئے کہ اگر ایک شخص جبینوں بستر پر پڑا رہے، اور چلنا پھرنا موقوف کر دے تو رفتہ رفتہ اس کے چلنے کی صلاحیت ختم ہو جائیگی۔ اب اگر وہ اٹھ کر چلنے کی کوشش کریگا تو اُسے چلنا بہت مشکل معلوم ہوگا۔ کیا اس کا مطلب یہ ہے کہ چلنا فی نفسہ مشکل تھا؟ ظاہر ہے کہ نہیں، چلنا تو پہلے بھی آسان تھا، اب بھی آسان ہے، لیکن اس شخص نے اپنی صلاحیتیں اس طرح ضائع کر دیں کہ اسے اتنا آسان کام بھی مشکل معلوم ہونے لگا۔

بس اسی طرح دین تو آسان ہی ہے، لیکن نفسانی اور شیطانی اثرات اور ماحول کے آگے سپردِ اُل کر ہم نے اپنی صلاحیتیں ایسی ضائع کر دیں کہ اس دینِ فطرت پر عمل کرنا بھی مشکل معلوم ہونے لگا۔ لہذا دین کے مشکل ہونے کی غلط فہمی تو رفع ہو جانی چاہئے۔

ابتہ پھر سوال ہو سکتا ہے کہ ہم نے اپنی صلاحیتیں خراب کر کے ہی سہی، دین پر عمل کو خود مشکل بنا لیا ہے، تو اب اس مشکل کو آسان کرنے کی کیا تدبیر ہے؟

اُس کا جواب یہ ہے، اور وہی اصل سوال کا عملی جواب بھی ہے، کہ خود اپنی پیدا کردہ اس مشکل کا حل بھی اسی دینِ فطرت میں موجود ہے، اور وہ حل نہایت آسان ہے، اور اس

حل کو تلاش کرنے کے لئے کہیں بہت دور جانے کی ضرورت نہیں، بلکہ اللہ تعالیٰ نے وہ حل اپنے کلام کے بالکل شروع ہی میں بیان فرما دیا ہے، اور وہ حل ہے:

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ  
 اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ  
 ہم آپ ہی کی عبادت کرتے ہیں، اور آپ  
 ہی سے مدد چاہتے ہیں، ہمیں صراطِ مستقیم  
 کی ہدایت فرما دیجئے۔

مطلب یہ ہے کہ اگر اپنی نفسانی خواہشات، شیطانی اثرات اور ماحول کے محرکات سے مغلوب ہو تو اس غلبے سے نجات پانے کے لئے اسی مالکِ بے نیاز سے کیوں رجوع نہیں کرتے جو ان تمام نفسانی خواہشات، تمام شیطانی اثرات اور سارے ماحول کے خالق ہیں جو تمہارے اور تمہاری صلاحیتوں کے بھی خالق ہیں، اور جن کی قدرتِ کاملہ کے آگے ممکن اور ناممکن کے الفاظ بے معنی ہیں۔ اگر آپ کو ماحول سے، معاشرے سے اور خود اپنے نفس سے مغلوب محسوس کرتے ہو تو انہی سے کہو کہ یا اللہ! اے کائناتِ دینِ فطرت ہے، دنیا و آخرت کی تمام تر سعادتیں اسی میں ہیں، لیکن میں اپنی صلاحیتوں کو خود برباد کر چکا ہوں، نفس مجھے اس طرح درغلالتا ہے۔ شیطان اس طرح بہکاتا ہے، ماحول کے اثرات اس طرح مجھ پر مستط ہیں، لیکن آپ ان تمام چیزوں کے خالق ہیں، آپ اپنے فضل و کرم سے اس غلبے کو ختم فرما دیجئے، میرے اندر ان محرکات سے جو مرعوبیت ہے، اس کو دور فرما کہ ہمت اور حوصلہ پیدا فرما دیجئے، مجھ میں صلاحیت نہیں ہے تو صلاحیت کے خالق بھی تو آپ ہیں، صلاحیت عطا فرما دیجئے، ہمت نہیں ہے تو ہمت دینے والے بھی آپ ہیں۔ ہمت عطا فرما دیجئے، آپ کی قدرتِ کاملہ کے آگے یہ سارے شیطانی اثرات ہیج ریج ہیں، مجھ سے ان کے تسلط کو زائل فرما دیجئے، اور اپنے محبوب نبی رحمۃ للعالمین صلی اللہ علیہ وسلم کے احکام، آپ کی تعلیمات اور سنتوں پر عمل کرنے کی توفیق عطا فرما دیجئے۔

اپنا یہ سارا ماجرا دنیا بھر کو سناتے پھرنے کے بجائے انہی کو سننا دجو اس ساری

کائنات کے خالق ہیں، اور جو ایک لمحے میں سب کچھ بدل دینے پر قادر ہیں۔

اگر ایک دم سے دین کے تمام احکام پر عمل کرنے کی ہمت نہیں پاتے تو اپنی اس عاجزی اور درہمزدگی کو انہی کے دربار میں کیوں پیش نہیں کرتے؟ روزانہ تھوڑی دیر یکسو ہو کر بیٹھو، اپنے حالات کا یہ سارا کچی چٹھا اللہ تعالیٰ کو سناؤ، اور دل سے مانگو کہ یا اللہ! ان حالات کو تبدیل کر دیجئے، چالیس دن تک یہ کام کر کے دیکھو، کیا سے کیا ہوتا ہے؟

بتاؤ کہ کیا اس کام میں بھی کوئی دشواری ہے؟ اسمیں بھی کوئی مشکل ہے؟ یہ وہ آسان ترین تدبیر ہے جس سے زیادہ آسان کوئی اور تدبیر نہیں ہو سکتی، اگر اس تدبیر پر بھی کوئی عمل نہ کرے تو پھر اسے دین پر عمل کرنے کی مشکلات کا عذر کرنے کا کیا حق پہنچتا ہے؟

ذرا تصور کرو کہ میدانِ حشر قائم ہے، لوگوں کے اعمال نامے کھلے ہوئے ہیں، جزا و سزا کا مرحلہ درپیش ہے، تم سے سوال ہوتا ہے کہ تم نے دنیا میں فلاں فلاں اوامر و نواہی کے مطابق کیوں عمل نہیں کیا؟ تم جواب دیتے ہو کہ یا اللہ! میں جس زمانے اور جس ماحول میں پیدا ہوا تھا، وہ شر اور فساد سے بھرا ہوا تھا، اسمیں آپکے دین پر چلنے میں قدم قدم پر رکاوٹیں تھیں، گھر کے ایک ایک فرد سے لیکر ملک اور معاشرے تک، سب مجھے بھٹکانے پر لگے ہوئے تھے، شر و فساد کے اتنے سارے محرکات کے مقابلے میں میں تنہا تھا، میرے اندر ان کی مدافعت کی طاقت نہ تھی، اس لئے میں مغلوب ہو گیا۔ تم سمجھتے ہو کہ تمہارا یہ جواب کافی ہو گیا، لیکن کیا اس کے جواب میں یہ سوال نہیں ہو سکتا کہ اگر تم ان سارے محرکات کے آگے مغلوب تھے تو تم نے ہم سے کیوں مدد نہیں مانگی؟ کیا تم یہ سمجھتے تھے کہ تمہاری طرح معاذ اللہ ہماری قدرت کاملہ بھی ان شیطانی طاقتوں کے اثرات کو تم سے ختم نہیں کر سکے گی، ہم نے اپنے محبوب نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے ذریعے تم تک اپنا کلام پہنچایا تھا، یہ کلام جگہ جگہ ان ارشادات سے بھرا ہوا ہے کہ "اِنَّ اللہَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ" (بیشک اللہ ہر چیز پر قادر ہے) "اِنَّ اللہَ بِکُلِّ شَیْءٍ مُحِیْطٌ" (بیشک اللہ ہر چیز کا احاطہ کئے ہوئے ہے)

یہ اعلانات آخر کس لئے تھے؟ اسی لئے تو تھے کہ تم ان کا واسطہ دیکر اپنی مشکلات ہمارے سامنے پیش کرو، ہم نے تو اپنے کلام کے آغاز ہی میں تمہیں یہ گڑبگھ دیا تھا کہ جب کبھی تمہیں مفلو بیت محسوس ہو، جب کبھی اپنے آپ کو بے آسرا پاؤ تو فوراً ہمارے پاس آجاؤ، ہم سے رجوع کرو، ہم نے تو رجوع کرنے کا طریقہ بھی تمہیں بتا دیا تھا، تمہاری اپنی طرف سے الفاظ تک بنا کر تمہیں سکھا دے تھے کہ :

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ  
اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

تم نے اس بے پایاں رحمت کی کیا قدر کی؟ کتنی مرتبہ سچے دل سے ہماری طرف رجوع کیا؟ کب ہم سے کہا کہ تم واقعی نفس و شیطان کے غلبے سے نجات پانا چاہتے ہو؟ اگر نہیں کہا تو بتاؤ تمہارے پاس کیا عذر ہے؟

سوچئے کہ اگر میدانِ حشر میں ہم سے یہ سوال ہو تو اس کا ہمارے پاس کیا جواب ہو سکتا ہے؟ اللہ تعالیٰ کا شکر کرو کہ ابھی سوال و جواب کا یہ مرحلہ پیش نہیں آیا، ابھی مہلت ملی ہوئی ہے، اور ہاتھ پاؤں، آنکھ، کان، ناک، زبان کام کر رہے ہیں لیکن غم  
تم آج ہوا سمجھو، جو روزِ جزا ہوگا

اس وقت کو غنیمت جانو، اور روزِ جزا کے اس سوال کو مستحضر کر کے اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع ہو جاؤ، روزانہ تھوڑا سا وقت، دس منٹ، پندرہ منٹ دوسرے کام دھندوں سے ذہن کو فارغ کر کے بیٹھ جاؤ، اور اس میں اپنی ساری مشکلات اللہ تعالیٰ کے سامنے پیش کرو، دل سے مستحضر کر کے کہو: "یا ارحم الراحمین، یا مالک، یا محمد الدین، ایتاک نعبد و ایتاک نستعین، اهدنا الصراط المستقیم، اور پھر جو کچھ دشواریاں عملی زندگی میں پیش آتی ہیں، وہ سب اللہ تعالیٰ کے حضور بیان کرو، اور انہی کی قدرت کاملہ اور رحمت واسعہ کا واسطہ دے کر دعا مانگو کہ یا اللہ! ان تمام مشکلات کو آسان فرما دیجئے، یہ کام کچھ دن پا بندی سے کرو، پھر دیکھو، کیا مشکل باقی رہتی ہے؟



یہ نسخہ تو بہت ہی آسان ہے۔ لیکن ع  
دشوار تو یہی ہے کہ دشوار بھی نہیں

عام طور سے لوگ اسے آسان سمجھ کر ٹلاتے رہتے ہیں، سوچتے ہیں کہ گر تو بہت اچھا  
معلوم ہو گیا ہے، کل سے اس پر عمل کریں گے، کل کو پھر یہی سوچتے ہیں کہ آئندہ کل سے  
کریں گے، یہاں تک کہ عملاً یہ "کل" کبھی نہیں آتی، لہذا علاج یہ ہے کہ جب یہ گرالف قدر نسخہ پاتھ آگیا  
تو اسے کل تک مت ڈرو، خدا جانے کل تک زندگی ہے کہ نہیں؟ زندگی ہے تو موقع ہے کہ  
نہیں؟ موقع ہے تو وہ جذبہ ہے کہ نہیں؟ جو اس وقت محسوس ہو رہا ہے؟ اس لئے ٹلانے  
کے بجائے آج ہی شروع کر دو، اور پابندی سے شروع کر دو، انشاء اللہ ضرور نفع ہوگا

## دعائے یونس علیہ السلام اور ظلماتِ دہر

فرمایا کہ قرآنِ کریم میں حضرت یونس علیہ السلام کا واقعہ مذکور ہے کہ جب مچھلی انہیں  
نگل گئی تو انہوں نے مچھلی کے پیٹ کی تاریکیوں میں اللہ تعالیٰ کو پکارا،

فَدَعَا فِي الظُّلُمَاتِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ  
سُبْحَانَكَ الْحَمْدُ كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝  
"پس انہوں نے ظلمتوں کے درمیان پکارا کہ آپ کے  
سوا کوئی معبود نہیں، بلاشبہ میں ظلم کرنے والوں میں سے تھا۔"

باری تعالیٰ فرماتے ہیں کہ ان کی اس پکار کا نتیجہ یہ ہوا کہ :

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَخْرَجْنَاهُ مِنْ الْعَمَةِ  
پس ہم نے انکی پکار سنی اور انکو گھسی سے نجات دیدی۔

یہ واقعہ بیان کرنے کے فوراً بعد باری تعالیٰ ارشاد فرماتے ہیں۔

وَكَذَلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِينَ

اور اسی طرح ہم مومنوں کو نجات دیتے ہیں۔

سوال یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے حضرت یونس علیہ السلام کا یہ واقعہ بیان کرتے کرتے یہ کیا

فریاد کیا کہ ہم مومنوں کو اس طرح نجات دیتے ہیں۔ ہاں یہ اس کا مطلب یہ ہے کہ دوسرے مومن بھی پھلی کے پیٹ میں جائیں گے، اور وہیں کی تاریکیوں میں ہمیں پکاریں گے تو ہم انہیں نجات عطا فرمائیں گے، ظاہر بات ہے کہ پھلی کے پیٹ میں چلا جانا تو ایک انفرادی واقعہ تھا جو خرق عادت کے طور پر پیش آیا تھا، تمام مومنوں کے ساتھ تو بعینہ یہی واقعہ پیش نہیں آ سکتا۔

دوسری طرف یہ بھی اپنی جگہ ناقابل انکار حقیقت ہے کہ قرآن کریم قیامت تک انیوالے تمام انسانوں کیلئے ذریعہ ہدایت ہے، اور اس میں جتنے واقعات بیان ہوئے ہیں، وہ محض قصہ گوئی یا تاریخ بتانے کے لئے بیان نہیں ہوئے۔ بلکہ اس لئے بیان ہوئے ہیں کہ قیامت تک ان سے فائدہ اٹھایا جائے، بالخصوص جبکہ قرآن کریم خود واقعہ بیان کرنے کے بعد تمام مومنوں سے یہ فرما رہا ہو کہ ایسا ہی واقعہ تمہارے ساتھ بھی پیش آ سکتا ہے۔

ابا ایسا ہی واقعہ پیش آنے کا مطلب یہ تو ہو نہیں سکتا کہ سب مومنین پھلی کے پیٹ میں جائیں، لہذا مطلب یہ ہے کہ ہر مومن کو اپنی زندگی میں طرت طرح کی ظلمتوں سے واسطہ پیش آ سکتا ہے، نفسانی خواہشات کی ظلمتیں، شیطانی وسوسوں کی ظلمتیں، حالات اور، حول کی ظلمتیں غرض بے شمار قسم کی ظلمتیں ہیں جو مومن کو اپنی زندگی میں پیش آ سکتی ہیں، قرآن کریم کے اس ارشاد کے نتیجہ نکلتا ہے کہ ان بے شمار ظلمتوں میں سے جو ظلمت بھی تمہارے سامنے آئے، تم حضرت یونس علیہ السلام کی سنت پر عمل کر کے ہمیں پکارو، اَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ، اس پکار کے نتیجے میں تمہیں بھی اسی طرح ظلمتوں سے نجات ملیگی جس طرح حضرت یونس علیہ السلام کو ملی تھی۔

اگر ہم اپنے چاروں طرف نظر دوڑائیں تو طرح طرح کی ظلمتوں میں گھرے ہوئے ہیں، فسق و فجور اور بد اعمالیوں کا بازار گرم ہے، اللہ اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم سے اور ان کے احکام و تعلیمات سے غفلت بڑھتی جا رہی ہے، بے حیائی، بے غیرتی اور بد اخلاقی کا سیلاب چڑھا ہوا ہے، پوری ڈھٹائی اور سینہ زوری کے ساتھ گناہوں اور معصیتوں کا ارتکاب ہو رہا ہے، نوپت گناہ اور معصیت سے گزر کر (معاذ اللہ) اتنا دوا لہی داد اور قرآن و سنت کے احکام سے کھلی بغاوت تک پہنچ رہی ہے۔

ان میں سے ہر چیز ایک خوفناک ظلمت ہے، طاغوت کی قوتیں ان ظلمتوں کو ہمارے درمیان فروغ دے رہی ہیں اور انسانوں کو دھکیل دھکیل کر ان ظلمتوں کی طرف لے جا رہی ہیں، جیسا کہ خود قرآن کریم کا ارشاد ہے:-

الَّذِينَ كَفَرُوا أَزْوَاجُهمُ الطَّاغُوتُ  
يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ  
جو لوگ کفر کرتے ہیں، ان کے کسرپرست شیطان ہیں  
جو انہیں روشنی سے ظلمتوں کی طرف بھیجتے ہیں۔

ہم ان نافرمانی ظلمتوں کے درمیان بڑی طرح گھبرے ہوئے ہیں، اور انہی ظلمتوں کا ایک اثر یہ بھی ہے کہ ان کے غیب سے متاثر ہو کر مایوس ہونے لگتے ہیں کہ ان تاریکیوں کا مقابلہ ہمارے بس کی بات نہیں، چنانچہ اس مایوسی کے نتیجے میں ان ظلمتوں سے مانوس ہونے لگتے ہیں، ان کے تاریکی ہونے کا احساس کم ہونے لگتا ہے، لیکن ان حالات میں صحیح راہ عمل خود قرآن کریم نے بتا دی ہے، اور وہ یہ کہ ایسے حالات میں وہی کام کرو جو حضرت یونس علیہ السلام نے کیا تھا وہ مچھلی کے پیٹ کی تاریکیوں میں گھر گئے تھے، وہاں سے انہوں نے اللہ تعالیٰ کو پکارا تھا، تم اس وسیع و عریض دنیا کی لامتناہی تاریکیوں میں گھرے ہوئے ہو، تم بھی ایسے میں اللہ ہی کو پکارو لا اِلهَ اِلاَّ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظَّالِمِیْنَ۔ اللہ تعالیٰ ہی ان تمام ظلمتوں کے خالق ہیں، اور وہی تمہارے پروردگار ہیں، انہی سے کہو کہ یہ ظلمتیں ہم سے برداشت نہیں ہوتیں، ہم ان تاریکیوں سے مغلوب ہوئے جا رہے ہیں، ہمیں اپنی پناہ میں لے کر ان کے شر سے بچا لیجئے، ہم خود اپنی جانوں پر ظلم کر کے ان ظلمتوں میں گرفتار ہوئے ہیں اگر آپ نے ہمیں ان سے نہ نکالا تو ہم نیاہ ہو جائیں گے، آپ اپنی قدرتِ کاملہ اور رحمتِ واسعہ سے کام لے کر ہمیں ان اندھیروں سے نکال لیجئے۔

جب تم حضرت یونس علیہ السلام کی طرح اپنی بیچاریگی، بے وسیلگی، عاجزی، درماندگی اور ندامتِ قلب کے ساتھ اللہ تعالیٰ کو پکارو گے تو یقیناً تمہاری پکار سنی جائیگی، اللہ تعالیٰ تمہیں اپنی نگہبانی میں لے میں گئے، انہوں نے تو خود فرمایا ہے کہ:

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ  
 اللہ نگہبان ہے ان کا جو اس پر ایمان لائے ہیں، وہ ان کو تاریکیوں

سے نور کی طرف نکالتا ہے۔

جب وہ نگہبان بن جائیں گے تو پھر کسی ظلمت ہے اور کسی تاریکی ہے پھر دیکھو کہ زندگی میں  
 کیسا نور ہی نور پیدا ہوتا ہے؟ بس یہ سبق ہے جو اللہ تعالیٰ کے اس ارشاد سے مل رہا ہے کہ

فَأَمْسَجِبْنَاهُ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ

وَكَذَلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِينَ

لہذا زمانہ کتنا خراب ہو جائے، حالات کتنے بگڑ جائیں، تاریکیاں کتنی مسطہ ہو جائیں  
 قرآن کریم کی بنائی ہوئی یہ تدبیر قیامت تک کے لئے ہے، ہر انسان کے لئے ہے، ہر ماحول کے  
 لئے ہے اور اس کے ذریعہ ہم برے سے برے حالات میں تسکین حاصل کر سکتے ہیں، ایک  
 مومن کے لئے تسلی اور تسکین کا اس سے بڑا سامان کیا ہو سکتا ہے کہ باری تعالیٰ خود وعدہ فرمائیں  
 کہ جب اور جس حال میں ہمیں پکارو گے ہم تمہیں ظلمتوں سے نجات بخشیں گے، اور تمہیں نور کی  
 طرف لے جائیں گے۔

## کلمہ طیبہ بداعمالیوں کا سیلاب

فرمایا کہ اردو کے مشہور شاعر مرزا غالب کا ایک شعر ہے

کون ہوتا ہے حریفِ مئے مردافکنِ عشق

ہے مکر لب ساقی پہ صلا میرے بعد

اس شعر کا صحیح مطلب اُس وقت تک سمجھ میں نہیں آ سکتا جب تک اس کا پہلا مصرعہ دو  
 مرتبہ مختلف لہجوں سے نہ پڑھا جائے۔ ساقی کے لبوں پر اس صدا کے مکرر آنے کا مطلب یہ ہے  
 کہ وہ پہلا مصرعہ دو مرتبہ دو مختلف لہجوں سے پڑھتا ہے۔ پہلی مرتبہ یہ مصرعہ ایک سوال ہے، اور  
 دوسری مرتبہ ذرا لہجہ بدل کر پڑھا جائے تو یہی مصرعہ اس سوال کا جواب ہے، پہلی مرتبہ وہ  
 جب یہ کہتا ہے کہ:



کون ہوتا ہے حریف مئے مرد افکنِ عشق ؟

تو یہ ایک سوال اور استفہام ہے، ایک چیلنج ہے، ایک دعوت ہے کہ کوئی ہو تو سامنے آنے لیکن جب اس سوال کے جواب میں کوئی آگے نہیں بڑھتا تو وہ یہی مصرعہ لہجہ بدل کر دہراتا ہے کہ ”کون ہوتا ہے حریف مئے مرد افکنِ عشق !“

اس مرتبہ یہ استفہام انکاری ہے، اور اس کا مقصد سوال کرنا نہیں، بلکہ یہ بتانا ہے کہ اب کوئی شخص ایسا موجود نہیں ہے جو ”حریف مئے مرد افکنِ عشق“ بن سکے۔ یہاں ”کون ہوتا ہے“ اسی معنی میں ہے جس معنی میں ہم اکثر بولتے ہیں کہ ”اپنی جان کون قربان کرتا ہے !“ مطلب یہ کہ کوئی قربان نہیں کرتا۔ غرض یہ کہ پہلی مرتبہ پڑھنے میں یہ مصرع ایک سوال ہے، اور دوسری مرتبہ میں اسی سوال کا جواب بھی ہے۔ اور شاہِ عمر کا کہنا ہے کہ میرے بعد ساقی کے لبوں پر بار بار یہی فقرہ آتا ہے، کبھی سوال کی صورت میں اور کبھی استفہام انکاری اور جواب کی صورت میں۔ میں عرض کرتا ہوں کہ اسی طرح جب دنیا میں پھیلے ہوئے فتنے فساد، بد اعمالیوں، گمراہیوں، بے حیائی، بے شرمی، عریانی، فحاشی اور معاشرتی بگاڑ کا تصور آئے تو کلمہ طیبہ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ بار بار مختلف معنوں کے تصور کے ساتھ پڑھنا چاہئے۔

آپ جب تصور کریں کہ دنیا میں بد اعمالیوں کا سید ب آیا ہوا ہے، معاشرہ خراب ہو چکا ہے، اخلاق و اعمال تباہ ہو رہے ہیں، دشمنوں کی ریشہ دوانیوں سے پورا معاشرہ متاثر اور زوال پذیر ہے، دفتروں میں بدنظمی اور رشوت ستانی کا بازار گرم ہے، بازار دھوکے فریب سے بھرے ہوئے ہیں، گھروں اور خاندانوں میں لڑائیاں ہو رہی ہیں، اولاد ماں باپ سے باغی ہو رہی ہے، غرض چاروں طرف بگاڑ ہی بگاڑ پھیلا ہوا ہے تو دل میں سوال کیجئے کہ یہ سب کچھ کس کی مشیت سے ہو رہا ہے ؟ اب جواباً کہتے کہ:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں

یعنی اس عالم کا کائنات میں اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی متصرف نہیں، یہاں کوئی کام ان کی مشیت کے بغیر نہیں ہوتا، کسی کی مجال نہیں ہے کہ وہ ان کی مشیت کے بغیر کچھ کر سکے، لہذا جو کچھ

ہو رہا ہے انہی کی مشیت سے ہو رہا ہے، اس مرتبہ لا الہ الا اللہ کے ساتھ یہ تصور لیجئے کہ اس بگاڑ کے اسباب اور حکمتیں خواہ کچھ ہوں، لیکن تمام واقعات عالم میں منصرف تہا وہی ہیں ان کے سوا کوئی منصرف نہیں۔

اب دوسرا سوال ذہن میں قائم کیجئے کہ اس بگاڑ کو دور کون کریگا؟ اس کے شر سے ہمیں کون بچائے گا؟ اسکی فتنہ سامانیوں سے ہماری حفاظت کون کرے گا؟ اس سوال کے جواب میں دو بارہ کہئے کہ:

لا الہ الا اللہ

اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں

یعنی اس بگاڑ سے ہمیں بچانے والا بھی سوائے اللہ کے اور کوئی نہیں ہے۔ بچنے کا اگر کوئی راستہ ہے تو وہ بھی انہی کی پناہ میں ہے، لہذا اگر اس فساد کو اجتماعی طور پر دور کرنا چاہتے ہو تو اجتماعی طور پر انہی کی پناہ مانگو، اور اگر اس کے اثرات سے انفرادی طور پر محفوظ رہنا چاہتے ہو تب بھی انہی سے پناہ طلب کرو، انہی کو پکارو کہ یا اللہ! اس شر و فساد کے سیلاب سے مجھے بچا لیجئے، میرے گھر والوں کو بچا لیجئے، میرے عزیز واقارب اور دوستوں کو بچا لیجئے، میرے شہر، میرے ملک، میرے وطن اور تمام مسلمانوں کو بچا لیجئے۔ اس طرح اللہ تعالیٰ سے پناہ مانگو گے تو انشاء اللہ ضرور پناہ ملیگی۔

## آتش نمرود اور گناہوں کی آگ

فرمایا کہ ایک دن میں سوچ رہا تھا کہ دنیا میں جو بڑے اعمالیاں، نافرمانیاں، معصیتیں اور گناہ جیسے ہوتے ہیں، اگر حقیقت میں ننگا ہوں سے دیکھا جائے تو ان میں سے ہر عمل ایک آگ ہے، قرآن و حدیث میں بھی بعض گناہوں کو آگ سے تعبیر کیا گیا ہے۔ مثلاً جو لوگ یتیموں کا مال ناحق کھاتے ہیں، ان کے بارے میں قرآن کریم کا ارشاد ہے کہ وہ آگ کھا رہے ہیں، حدیث میں جھوٹی گواہی پیش کر کے دوسرے کے مال پر قبضہ جانے والے کو وعید سنائی گئی ہے کہ جو مال اس ناپائیدار طریقے سے حاصل کیا گیا ہو وہ آگ کا ایک ٹکڑا ہے، ان ارشادات

کا یہ مطلب تو ہے ہی کہ یہ اعمال آخرت میں آتشِ جہنم کے مستوجب ہونگے۔ لیکن بعض حضرات نے اس کا مطلب یہ بھی بتایا ہے کہ یہ سارے گناہ دنیا میں بھی اپنی صورتِ مثالیہ کے اعتبار سے آگ ہیں۔

یہ تو اللہ تعالیٰ کی رحمت ہے کہ دنیا میں ہمیں یہ آگ محسوس نہیں ہوتی، جب تک آخرت کی منزل نہیں آتی، اللہ تعالیٰ اس دنیا کا کاروبار باقی رکھنا چاہتے ہیں، اس لئے اس آگ کا احساس ہم سے ختم کر دیا گیا ہے، اگر دنیوی زندگی کا سوتلج بند کر دیا جائے تو بد اعمالیوں کی یہ آگ جو دنیا کی رگ و پے میں سرایت کئے ہوئے ہیں، پوری دنیا کو ایک شعلہ بنا کر بھسم کر ڈالے۔ لیکن جب تک کاروبار زندگی چل رہا ہے، یہ آگ محسوس اور مشاہد نہیں ہوتی، مگر معنوی طور پر موجود ہے۔ غرض میں سوچ رہا تھا کہ جب ہم اس آگ سے بچوں بیچ بیٹھے ہیں تو یہ کیسے ممکن ہے کہ اس آگ کے اثرات ہم تک نہ پہنچیں، اور ہم اس کی تپش اور سوزش سے بالکل محفوظ رہیں؟ جواب میں ذہن فوراً حضرت ابراہیم علیہ السلام کے واقعے کی طرف منتقل ہوا کہ اُن کے لئے تو ایک غوس اور مشعلہ دی آگ سگائی گئی تھی، اور انہیں باقاعدہ اسمیں ڈال دیا گیا تھا، لیکن چونکہ اُن کی نوا اللہ تعالیٰ سے لگی ہوئی تھی، وہ اللہ تعالیٰ کی پناہ میں تھے، اس لئے آتشِ نمرود کا دہکتا ہوا الاڈان کا کچھ نہ بگاڑ سکا، آگ کے خالق نے حکم دیدیا کہ:

يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

اے آگ! ٹھنڈی ہو کر ابراہیم کے لئے سلامتی کا سبب بن جا

نتیجہ یہ کہ یہ دہکتا ہوا الاڈان کے لئے ٹھنڈا بن گیا، اور وہ اس آگ کے عین درمیان بھی اس کی تپش سے محفوظ رہے۔

ہم بھی مجدد اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میں داخل ہیں، اور اللہ تعالیٰ نے ہمیں ان کی اقتدا کا حکم دیا ہے، لہذا اگر ہمارے چاروں طرف بد اعمالیوں کی آتشِ نمرود شعلگی ہوئی ہے تو گھبرانے کی کیا بات ہے؟ اس معذی آگ کے خالق بھی وہی ہیں جو آتشِ نمرود کے خالق تھے، ان کی قدرتِ کاملہ میں بھی کوئی فرق نہیں آیا، اپنی طرف رجوع کرنے والے بندوں کے ساتھ اُن کی رحمتِ کاملہ کا معاملہ بھی وہی ہے، پھر ہم اس آگ کے درمیان بیٹھ کر انہی کو پکاریں اور ان کی پناہ طلب

کریں تو یہ معنوی آگ ہمارے لئے بھی بے ضرر بن سکتی ہے۔ اور یہ جو ہمیں حضرت ابراہیم علیہ السلام کے آگ میں ڈالے جانے کا واقعہ اس اہتمام سے سننا یا بار بار ہے، کیا بعید ہے کہ اس کا ایک منشا یہ بھی ہو کہ ہم اپنے ماحول اور اپنے حالات کی آگ میں اس سے ہدایت حاصل کریں۔ اور اللہ تعالیٰ ہی طرف رجوع کریں۔

اس تصور سے محمد اللہ بڑی تسکین اور تسلی ہوئی۔

## اللہ کے دین کیلئے انتخاب

فرمایا کہ قرآن کریم میں باری تعالیٰ کا ارشاد ہے:

اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ

اس آیت کا ترجمہ عام طور سے یہ کیا جاتا ہے کہ:

”اللہ تعالیٰ چن کر اپنی طرف بولیتا ہے جسکو چاہتا ہے اور اپنی طرف ہدایت

بخشتا ہے اس کو جو اسکی طرف رجوع کرتا ہے۔“

اس آیت کا دوسرا حصہ تو بالکل واضح ہے کہ جو شخص اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع کرتا

ہے اور اس سے ہدایت مانگتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس کو ہدایت عطا فرما دیتے ہیں، البتہ

پہلے حصے کے مذکورہ بالا ترجمے کے مطابق آیت کا مطلب یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ از خود جس

کو چاہتے ہیں، اپنے لئے اور اپنے دین کے لئے چن لیتے ہیں۔

لیکن اس پہلے حصے کا ایک ترجمہ یہ بھی ہو سکتا ہے:

”اللہ تعالیٰ چن کر اپنی طرف بولیتا ہے اُس کو جو چاہتا ہے

(کہ اُسے چن لیا جائے)۔“

عربی قواعد کے رُوسے اگر ایشاء کی ضمیر کو اللہ تعالیٰ کی طرف راجع کیا جائے تو

پہلے معنی ہوں گے۔ اور ”مَنْ“ کی طرف راجع کیا جائے تو دوسرے معنی۔

اور دونوں معنی واقعے کے مطابق ہیں۔ بعض اوقات ایسا ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ

از خود اپنے کسی بندے کو اپنے لئے اور اپنے دین کے لئے منتخب فرماتے ہیں، اور اُس سے



اپنے دین کا کام دیتے ہیں۔ اس طرح دین کیلئے منتخب ہو جانا تو غیر اختیاری ہے، اسمیں بندے کے اپنے اختیار کو کوئی دخل نہیں، جیسے انبیاء علیہم السلام کو اسی طرح دین کیلئے چن لیا جاتا ہے اور بعض اوقات ایسا ہوتا ہے کہ بندہ اللہ تعالیٰ سے رجوع کر کے چاہتا ہے کہ اللہ تعالیٰ اُسے اپنے دین کے لئے چن لیں۔ وہ اپنی اس خواہش کا اظہار دُعا کی صورت میں اللہ تعالیٰ سے کرتا ہے، تو اللہ تعالیٰ اسکی دُعا قبول فرماتے ہیں، اور اس کو بھی اپنے دین کے لئے منتخب فرماتے ہیں اور آیت کے دوسرے حصے میں صرف اسی صورت کا بیان ہے کہ جو اللہ تعالیٰ سے رجوع کرتا ہے اُسے ہدایت دی جاتی ہے۔

بہر صورت! اس آیت کریمہ میں یہ وعدہ فرمایا گیا ہے کہ جب تم اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع کرو گے، اور دل سے چاہو گے کہ تمہیں ہدایت ملے، اور اللہ کے دین پر عمل کی توفیق ہو تو اللہ تعالیٰ ضرور ہدایت فرمائیں گے، اللہ تعالیٰ کے اس وعدے میں تخلف ممکن نہیں۔

لہذا اگر دین پر عمل کی توفیق نہیں ہو رہی تو اسکی وجہ صرف یہ ہے کہ تم نے دل سے چاہا ہی نہیں، اور اپنی یہ سچی خواہش سیکر کبھی اللہ تعالیٰ سے رجوع ہی نہیں کیا، جس دن صدق دل سے اس کام کے لئے اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع کر لو گے، ہدایت مل جائیگی۔

واضح رہے کہ محض سرسری طور پر آرزو کے اظہار کا نام خواہش اور چاہنا نہیں، بلکہ "چاہنے" اور "اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع کرنے" کا مطلب یہ ہے کہ اپنے قلب و ذہن کو پوری طرح آمادہ کر کے اللہ تعالیٰ سے اس طرح ہدایت مانگو جس طرح بیماری کی حالت میں صحت مانگتے ہو، مفلس کی حالت میں خوشحالی مانگتے ہو، کہ یہ بات ذہن میں ملے ہوتی ہے کہ ہماری موجودہ حالت بیماری یا مفلس کی حالت ہے، اور اس سے ہم نہ خوش ہیں، نہ مطمئن، دوسری طرف جس صحت یا خوشحالی کی دعا کرتے ہیں، اُسے موجودہ حالت سے اچھا سمجھتے ہیں، اور قلب و ذہن کے پورے اشتیاق کے ساتھ اسکی دعا کرتے ہیں۔

اسی طرح پہلے ذہن میں پہلے یہ بات ملے ہوئی چاہئے کہ ہماری موجودہ حالت دینی اعتبار سے قابل اطمینان نہیں ہے، اور دین پر عمل کرنے والی زندگی کی طرف اشتیاق ہونا چاہئے، اس طرح جب اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع کرو گے، اور اس سے ہدایت اور توفیق

مانگو گئے، اور مانگے رہو گئے، تو ممکن نہیں ہے کہ ہدایت اور توفیق نصیب نہ ہو۔

## آندھیاں اور خاکساری

فرمایا کہ ایک مرتبہ ہندوستان میں اپنے وطن سے کسی کام کے سلسلے میں ایک دیہات میں گیا۔ راستہ کچا تھا، اور وہاں جانے آنے کے لئے تانگے چلا کرتے تھے۔ اپنے کام سے فارغ ہو کر میں تانگے میں واپس آ رہا تھا، راستے میں ایک طویل و عریض صحرا پڑتا تھا، تانگے والے نے چلتے پھرتے اچانک ایک جگہ تانگہ روک دیا، اور ہم سے کہا کہ تانگے سے اتر جائیں، ہم نے وجہ پوچھی تو اس نے بتایا کہ اس علاقے میں بڑی خوفناک آندھی چلا کرتی ہے جس سے بڑی تباہی مچتی ہے بڑی بڑی وزنی چیزوں کو اڑا لی جاتی ہے، اور آثار سے محسوس ہو رہا ہے کہ وہ آندھی آنیوالی ہے۔ آندھی کی ابتدا ہوئی تو ہم نے ایک قریبی درخت کی آڑ میں پناہ لینا چاہی تو تانگے والے نے چیخ کر کہا کہ درخت کی آڑ میں ہرگز نہ رہئے، ہم نے وجہ پوچھی تو اس نے کہا کہ اس آندھی میں بڑے بڑے درخت گر جاتے ہیں، اس لئے ایسے میں درخت کی پناہ لینا بہت خطرناک ہے، ہم نے پوچھا کہ "پھر کیا کرنا چاہیئے؟" تو تانگے والے نے جواب دیا کہ "بس اس آندھی سے بچاؤ کی ایک ہی شکل ہے، اور وہ یہ کہ زمین پر اوندھے ہو کر لیٹ جائیے، ہم نے اس کے کہنے پر عمل کیا اور نیچے لیٹ گئے، آندھی آئی اور بہت زور سے آئی، جھاڑیوں اور ٹیلوں تک کو اڑا لی گئی، لیکن یہ سارا طوفان ہمارے اوپر سے گزر گیا، اور محمد اللہ ہمارا بال بیکا نہیں ہوا، تھوڑی دیر میں آندھی ختم ہو گئی تو دیکھا کہ سطح پر سکون ہی سکون ہے ہم نے زمین سے اٹھ کر اپنی راہ لی۔

یہ واقعہ تو ہونے کو ہو گیا، لیکن ہم نے اس سے بڑا سبق لیا، ہمیں اس واقعے سے سبق یہ ملا کہ وقت کی آندھیوں کا علاج اونچے اونچے سہارے ڈھونڈنے میں نہیں، بلکہ خاکساری اور ہندگی کے خوش پر جبین نیاز ٹیک دینے میں ہے، ہمارے ارد گرد اب بھی نہ جانے کتنی خوفناک آندھیاں چل رہی ہیں، جو ہمارے دین و دانش کی ساری متاع اڑا لی جانی چکی ہیں۔ ان آندھیوں سے بچنے کا ایک ہی راستہ ہے، اور وہ یہ کہ انسان عاجزی، فرد تنی، خاکساری اور بیچاریگی یکر اللہ تعالیٰ کے حضور سر بسجود ہو جائے، انہی سے کہے کہ یا اللہ، میں ان آندھیوں کا مقابلہ نہیں کر سکتا

اپنے فضل و کرم سے آپ ہی مدد فرمائیے۔ اور ان کے شر سے مجھے بچا لیجئے، اگر یہ کر لیا تو انشاء اللہ ساری آندھیاں اوپر ہی اوپر سے گزر جائیں گی، اور تمہارا کچھ بھی نہ بگاڑ سکیں گی تم آندھیوں پر غالب رہو گے، آندھیاں تم پر غالب نہ آسکیں گی۔  
تصور عرش پر ہے، وقف سجدہ ہے جس میں میری  
مرا پھر پوچھنا کیجئے آسمان میرا، زمیں میری

## شیطان اور اس کا تریاق

فرمایا کہ انسان نطاؤں کا پتلا ہے، بشر کی خاصیت یہ ہے کہ اس میں نیکی کے ساتھ ساتھ غلطیوں، خطاؤں اور گناہوں کی صلاحیت بھی ودیعت کی گئی ہے، قرآن کریم کا ارشاد ہے کہ:  
وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۖ قَالَ هَمْمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا  
”قسم ہے نفس کی اور اس کی جس نے اسے قاعدے میں بنایا،  
اور اس کے دل میں گناہ اور تقویٰ دونوں کی باتیں ڈال دیں۔“

اس سے معلوم ہوا کہ بشر کو قاعدے کے مطابق ٹھیک ٹھیک بنانے ہی کا ایک حصہ یہ ہے کہ اس میں گناہ اور تقویٰ دونوں کی صلاحیتیں رکھ دی گئی ہیں، اگر اس میں صرف نیکی کی صلاحیت رکھی جاتی، گناہ کی نہ رکھی جاتی تو وہ بشر نہ ہوتا، فرشتہ بن جاتا۔

دوسری طرف ان دونوں قسم کی صلاحیتوں کے لئے اللہ تعالیٰ نے الگ الگ محرکات بھی پیدا فرمائے، نیکی کے محرکات انسان کو عبادت و طاعت و فرمانبرداری اور خیر کے کاموں پر ابھارتے ہیں، اور بدی کے محرکات بدی اور گناہوں کی طرف مائل کرتے ہیں، اللہ تعالیٰ حکیم مطلق ہیں، اور ان کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں، لہذا جس طرح نیکی کی صلاحیتوں اور ان کے پیدا کرنے میں حکمت ہے، اسی طرح گناہ کی صلاحیتوں اور ان کے محرکات کی تخلیق بھی عین حکمت پر مبنی ہے۔ دونوں میں سے کوئی حکمت خالی نہیں۔

بدی کی صلاحیتوں اور اس کے محرکات کو اس لئے پیدا کیا گیا ہے کہ ان کے بغیر انسان کو، تقویٰ کا مقام بلند حاصل نہیں ہو سکتا۔ جس شخص میں گناہ کی صلاحیت ہی نہ ہو، اگر وہ گناہ نہ کرے تو اس میں اس کا کیا کمال ہے؟ جو شخص بھوک پیاس کی ضروریات سے

مبرا ہو۔ اُس کا روزہ بے معنی ہے، جس شخص میں جنسی خواہش کی صلاحیت ہی نہ ہو، اس کے لئے عفت و عسمت نہ کوئی کمال ہے، نہ وہ اس کے فضائل کا مستحق ہو سکتا ہے۔ بدی کے ان محرکات کا فائدہ یہ ہے کہ جب انسان ہمت سے کام لے کر ان محرکات پر قابو پاتا ہے، اور نیکی کے محرکات کو ان پر غالب کرتا ہے تو اس کی زندگی میں تقویٰ کی شمع روشن ہوتی ہے، اُسے تقویٰ کے فضائل اور اس کے انوار و برکات حاصل ہوتے ہیں، اسی کو مولانا روم رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں

شہوتِ دنیا مثالِ گلخن است

کہ از وحامِ تقویٰ روشن است

پھر بدی کے محرکات کی تخلیق کی حکمت یہیں پر ختم نہیں ہو جاتی بلکہ اس سے بھی آگے انکی ایک اور حکمت ہے جسکی طرف ذہن کم جاتا ہے۔ اور وہ یہ کہ انسان بعض اوقات کوشش کے باوجود بدی اور گناہ کے محرکات کو مغلوب کرنے میں کامیاب نہیں ہوتا، اور اس سے بشری تفاضل کی بنا پر کسی غلطی یا گناہ کا صدور ہو جاتا ہے۔ تو اگر دل میں ایمان ہے، اور گناہ کو گناہ سمجھتا ہے تو اسے ندامتِ قلب، شستگی اور عاجزی کے ساتھ توبہ و استغفار کی توفیق ہوتی ہے، جس کے نتیجے میں اس کے مقامِ عبدیت میں ترقی ہوتی ہے، اور انجام کار وہ بندگی کا ایک اور زینہ چڑھ جاتا ہے، بس شرط یہ ہے کہ گناہ کے ساتھ سرکشی اور سبیز زوری نہ ہو، بلکہ گناہ کے گناہ ہونے کا احساس ہو، اور اس پر ندامت موجود ہو۔

نتیجہ یہ ہے کہ ایسے بندے کو اگر گناہ سے بچنے کی توفیق ہوتی ہے تو اسے تقویٰ کا مقام حاصل ہوتا ہے، اور اسکے درجات بلند ہوتے ہیں، اور اگر بشری تفاضل سے کوئی غلطی سرزد ہو جائے تو چونکہ وہ ندامت کے ساتھ توبہ و استغفار کرتا ہے تو اس کے ذریعے اسکی عبدیت کے مقام میں ترقی ہوتی ہے، لہذا دونوں صورتوں میں اس کا فائدہ ہے، اور گناہوں کی خطا اور ان کے محرکات کی تخلیق اس کے لئے دونوں صورتوں میں بڑی حکمت پر مبنی ہے۔

بہر کیف! اللہ تعالیٰ نے انسان کے اندر "فجور" اور "تقویٰ"، دونوں کی صلاحیتیں

عین حکمت سے پیدا فرمائی ہیں۔ فجور کے محرکات میں سب سے بڑا محرک شیطان ہے، جسکی تخلیق حضرت آدم علیہ السلام سے بھی پہلے ہو گئی تھی، یہ رہا اس لئے پیدا کیا تھا کہ



انسان اس سے بچنے کا اہتمام کر کے تقویٰ کا مقام حاصل کرے، لیکن اللہ تعالیٰ کی رحمت کا ملہ سے یہ بعید تھا کہ وہ زہر پیدا فرمائیں، اور اس کا تریاق نہ بتائیں، اور اس تریاق کا عملی تجربہ نہ کرائیں۔

چنانچہ حضرت آدم علیہ السلام کو دنیا میں بھیج کر انہیں خلافت ارضی کا منصب عطا کرنے سے پہلے جنت ہی میں اس زہر اور اس کے تریاق کا عملی تجربہ بھی کرایا گیا، شیطان نے آپؑ کو بہکایا، اس سے آپؑ نادم اور پریشان ہوئے تو آپؑ کو استغفار کے وہ کلمات سکھائے گئے جو اس زہر کا تریاق تھے۔

قرآن کریم کا ارشاد ہے:-

فَتَلَقَىٰ آدَمَ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ  
 پس آدم علیہ السلام نے اپنے پروردگار سے کچھ  
 کلمات سیکھے، پس اللہ تعالیٰ نے انہیں معاف فرمادیا۔

یہ کلمات کیا تھے؟ قرآن کریم میں دوسری جگہ بتائے گئے ہیں:

قَالَ رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا  
 وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

ان دونوں (آدم و حوا علیہما السلام) نے کہا کہ اے  
 ہمارے پروردگار! ہم نے اپنی جانوں پر ظلم کیا، اور  
 اگر آپؑ نے ہماری مغفرت نہ کی اور ہم پر رحم نہ فرمایا  
 تو ہم خسارہ پانے والوں میں سے ہو جائیں گے۔

یہ تھا اس زہر کا تریاق، اللہ تعالیٰ نے اپنی حکمت بالغہ اور رحمت کاملہ سے حضرت آدم علیہ السلام کو دنیا میں بھیجنے سے پہلے ہی نظری اور عملی دونوں طرح یہ بتا دیا کہ تمہارے ساتھ یہ زہر بھی دنیا میں بھیجا جا رہا ہے، یہ تمہیں قدم قدم پر ڈسنے کی کوشش کریگا۔ اول تو رجوع الی اللہ اور ہماری عطا کی ہوئی ہمت سے اس سے بچنے کی کوشش کرو، لیکن اگر کبھی یہ شیطان تمہیں ڈسنے ہی لے تو فوراً استغفار اور توبہ کا تریاق استعمال کرو، اس سے نہ صرف یہ کہ

لہذا اس کمزور مکر سے ڈرنے اور ٹھہرانے کی ضرورت نہیں، ہاں اس سے بچنے کے لئے صحیح تدبیر کی ضرورت ہے، اور یہ تدبیر بھی ہمیں قرآن و سنت ہی نے بتادی ہے۔

سب سے پہلے تو یہ بات سمجھ لینی چاہئے کہ شیطان کو شیطان بنانے والی چیز اُس کا تکبر، اُس کی رعوت اور اُس کی سرکشی ہے، لہذا اس کا مقابلہ اللہ تعالیٰ کے حضور عاجزی، شکستگی، فروہیگی اور خود سپردگی ہی سے کیا جاسکتا ہے، جس کا دوسرا نام "عبدیت" ہے، اگر کوئی شخص اللہ تعالیٰ کی بندگی اور عبدیت اختیار کرے گا، جس کے معنی یہ ہیں کہ اپنی "انانیت" کو مٹا کر ہمیشہ اپنے آپ کو اللہ کا بندہ سمجھے گا، اور اپنی ہر شکل میں انہی کو پکارے گا، اُس پر شیطان کا کوئی جادو نہیں چل سکتا، خود اللہ تعالیٰ نے شیطان سے فرمادیا تھا کہ:-

اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ

بلاشبہ میرے "بندوں" پر تجھے کوئی اختیار حاصل نہیں۔

لہذا جو شخص واقعی اللہ تعالیٰ کا بندہ بن جائیگا، وہ شیطان کی حدود اختیار سے باہر ہے، شیطان خود بھی اس حقیقت کو جانتا ہے، چنانچہ اپنی بہکانے پھسلانے کی طاقت کے حوالے سے اُس نے بڑی ڈینگیں ماریں، اور کہا کہ میں ان سب کو بہکا کر گمراہ کروں گا، لیکن ساتھ ہی یہ بھی کہہ دیا کہ:-

اِنَّ عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ

مگر ان میں سے جو تیرے خالص کئے ہوئے

بندے ہیں، (انہیں نہ بہکا سکوں گا)

معلوم ہوا کہ شیطان کے شر سے محفوظ رہنے کا آسان طریقہ یہ ہے کہ انسان مقام عبدیت کو اختیار کر لے، اللہ تعالیٰ کے حضور اپنا سر نیاز خم کر کے اُس کے ساتھ عبدیت کے رشتے کو مضبوط بنائے، اسی کی طرف رجوع اور انابت کی عادت ڈالے، تو شیطان اس کا کچھ نہیں بگاڑ سکتا۔

ہمارے حضرت حکیم الامت قدس سرہ نے اس سلسلے میں بڑی لطیف بات ارشاد فرمائی، فرمایا کہ شیطان جب اپنے بہکانے کی طاقت کی بنیاد پر اپنے عزائم کا اظہار

کر رہا تھا کہ :-

لَا تَتَّبِعُهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ  
وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ  
میں ان (ان فوں) کے پاس ان کے سامنے سے آؤنگا،  
ان کے پیچھے سے آؤں گا، ان کے دائیں سے آؤں گا، اور ان  
کے بائیں سے آؤں گا۔

تو اس نے چار سمتیں تو بیان کر دیں، لیکن دو سمتوں کا نام نہیں لیا، یعنی اوپر کی اور  
نیچے کی، معلوم ہوا کہ ان دو سمتوں سے آنے کی اسے قدرت نہیں دی گئی، لہذا اگر کوئی شخص نیچے  
کی سمت یعنی عبدیت اور فنایت کو اختیار کرے، اور اپنا تعلق اوپر کی سمت یعنی اللہ  
تعالیٰ سے جوڑے تو شیطان اس پر کبھی حمد آور نہیں ہو سکتا۔

تصور عرش پر ہے، وقف مسجد ہے جہیں میری  
مرا پھر پوچھنا یا؟ آسمان میرا، زمین میری

خلاصہ یہ کہ شیطان کو غیر محدود اختیارات کا مانک سمجھنا بالکل غلط ہے، وہ توازن  
کا ایک برائے نام ذریعہ ہے، جس پر قابو پانے کا طریقہ بھی ہمیں بتا دیا گیا ہے کہ مقدم عبدیت  
پر آجاء، اور یہ مقدم عبدیت حاصل کرنے کا راستہ یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کے ذکر کی کثرت ہو،  
اپنے ہر معاملے میں اسی سے دعا کرنے کی عادت ڈالی جائے، ہر چھوٹی ٹسے چھوٹی چیز بھی انہی سے  
مانگی جائے، اور جب کبھی شیطانی اثرات کا ذرا بھی احساس ہو تو فوراً اللہ تعالیٰ سے پناہ  
طلب کی جائے، چنانچہ قرآن کریم کا ارشاد ہے :-

وَإِذَا يَنزَغُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ  
فَاُصْبِحْ بِاللَّهِ

پس اگر تمہیں شیطان کی طرف سے کوئی دوسرا  
محسوس ہو تو اللہ کی پناہ طلب کرو۔

جب وہ خود فرما رہے ہیں کہ ہم سے پناہ طلب کرو، تو کیا وہ طلب کرنے والے کو

شیطان کے سامنے بے یار و مددگار چھوڑ دیں گے؟ ناممکن ہے، محالات میں سے ہے کہ پناہ مانگنے والے کو پناہ نہ دی جائے۔ دی جائیگی، اور ضروری جائیگی اس میں تخلف ممکن نہیں۔

لہذا جس شیطان کا حال یہ ہے کہ اسکی ساری طاقت و توانائی، اور اسکی ساری فتنہ فتنہ سازیوں استغاذے کی ایک بھونک سے اڑ جاتی ہیں تو اندازہ کریجئے کہ وہ کس قدر کمزور ہے؟ یہ تو اس کی طاقت اور حدود اختیار کا حال ہوا، دوسری طرف اگر بالفرض وہ کسی کو بہکانے میں کامیاب ہو جائے، تو اس کے پیدا کئے ہوئے اثرات اتنے کمزور ہیں کہ وہ ایک توبہ و استغفار سے اس طرح ختم ہو جاتے ہیں کہ جیسے کبھی تھے ہی نہیں۔

## مرنا اور جینا اللہ کیلئے

فرمایا کہ قرآن کریم کا ارشاد ہے:-

قُلْ اِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ  
وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

آپ کہہ دیجئے کہ میری نماز، میری عبادت، میرا جینا اور میرا مرنا اللہ کیلئے ہے جو پروردگار ہے تمام جہانوں کا۔

اللہ تعالیٰ نے یہ بات کہنے کا حکم نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کو دیا ہے، اور آپ کے واسطے سے تمام مسلمانوں کو۔ ظاہر ہے کہ ان الفاظ کو زبان سے ادا کرنے کا جو حکم دیا ہے وہ فغول اور بے فائدہ نہیں ہو سکتا۔ یقیناً اللہ تعالیٰ کو یہ منظور معلوم ہوتا ہے کہ جو بندہ یہ بات کہے گا، اللہ تعالیٰ کی طرف سے اسکی مدد کی جائیگی۔

لہذا یہ بات سمجھ میں آئی کہ ہر روز صبح کو بیدار ہونے کے بعد انسان سچے دل سے یہ کہے کہ "اِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ" اور دل میں یہ پختہ عزم کرے کہ دن میں جو کوئی کام کروں گا، اللہ کے لئے کروں گا، اور اس کا مقصد اللہ تعالیٰ کے احکام کی تعمیل اور اسکی خوشنودی کا حصول ہوگا، اور یہ عزم کر لینا اس لئے مشکل نہیں کہ اس سے زندگی کے کسی ضروری کام میں رکاوٹ پیدا نہیں



ہوتی۔ جن کاموں کو دنیا کے کام کہا جاتا ہے، مثلاً کھانا پینا، روزی کمانا، بیوی بچوں سے ہنسنا بولنا، رشتہ داروں اور دوستوں سے ملاقات کرنا، یہ سارے کام اللہ کے لئے ہو سکتے ہیں، بس شرط یہ ہے کہ یہ کام غفلت کی حالت میں محض نفسانی خواہش کی تکمیل کے لئے انجام نہ دیئے جائیں، بلکہ انہیں انجام دیتے وقت نیت یہ ہو کہ یہ تمام حقوق ہیں جو اللہ تعالیٰ نے ہی چاہے دئے عائد فرمائے ہیں، اور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے ان پر عمل کر کے دکھایا ہے، لہذا ہم یہ کام اللہ تعالیٰ کے حکم کی تعمیل اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی سنت کی اتباع میں انجام دے رہے ہیں بس یہ نیت کرنی تو یہ سارے کام اللہ کے لئے ہو گئے۔

الحمد للہ، مدت دراز تک میں نے اپنے شیخ کے فیض سے اس بات کی مشق کی ہے کہ ہر کام اطاعت خداوندی اور اتباع سنت کی نیت سے کیا جائے، اور مشق کا طریقہ یہ اختیار کیا کہ اچھا کھانا سامنے آیا، بھوک لگی ہوئی ہے، کھانے کو دل چاہ رہا ہے، لیکن ایک لمحہ کے لئے رُک گیا کیا ہم یہ کھانا محض نفس کی خواہش پوری کرنے کے لئے نہیں کھائیں گے، پھر دوسرے ہی لمحے تصور کیا کہ اللہ تعالیٰ نے نفس کا بھی ہم پر حق رکھا ہے کہ اسکی ضروریات پوری کریں، اور حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی سنت بھی یہ ہے کہ آپ کے سامنے کوئی نعمت آتی تو شکر ادا فرماتے، اور اسکی قدر فرماتے تھے، لہذا اب اطاعت خداوندی اور اتباع سنت کی نیت سے کھائیں گے۔

اسی طرح گھر میں داخل ہوئے، گھر میں بچہ ہنستا ہنستا نظر آیا، اچھا معلوم ہوا، اور بیٹا خستہ دل چاہا کہ کچھ دیر اس کو گود میں لے کر اس سے دل بہلائیں، لیکن ایک لمحہ کے لئے رُک گیا کہ محض نفس کی خواہش کی بناء پر بچے سے نہیں کھیلیں گے، پھر دوسرے ہی لمحے تصور کیا کہ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی سنت یہ تھی کہ آپ بچوں سے پیار فرماتے تھے، انہیں گود میں اٹھایا کرتے تھے، اس تصور کے بعد اس سنت کی اتباع کی نیت سے بچے کو گود میں اٹھائیں گے۔

اسی طرح عزیز رشتہ دار یا دوست احباب سامنے آئے، دل چاہا کہ ان کے ساتھ کچھ وقت خوش طبعی میں گزارا جائے، مگر ایک لمحہ کے لئے رُک گیا کہ یہ کام محض نفسانی

خواہش پوری کرنے کے لئے نہیں کریں گے، پھر وہی تصور کیا کہ سرکارِ دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم عزیزوں رشتہ داروں کے حقوق ادا فرماتے تھے، ان سے بشاشت کے ساتھ ملتے تھے، اس تصور کے بعد اتباعِ سنت کی نیت سے ان سے میں گئے۔

غرض دنیا کا کوئی جائز کام، یہاں تک کہ تفریح اور فروشِ طبعی بھی، ایسا نہیں ہے کہ جس میں اطاعتِ خداوندی اور اتباعِ سنت کی نیت نہ کی جاسکتی ہو، بس یہ نیت کر لی تو وہی کام جو بظاہر دنیوی کام تھا، اللہ کے لئے ہو گیا۔

اور اس نیت کا ایک لازمی اثر اور فائدہ یہ ہو گا کہ انسان جب اس کام کو اتباعِ سنت کی نیت سے انجام دینے کا سچی ارادہ کر لیتا ہے تو یہ نیت اُسے حدود کے باہر جانے سے بچائیگی، اور کسی مرحلے پر وہ حدود سے باہر نکلنے لگے گا تو دل میں یہ خلش پیدا ہوگی کہ میں نے تو یہ کام اللہ کے لئے اور اللہ کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی اتباع کے لئے شروع کیا تھا، لہذا سنت کی حدود سے باہر نہ نکلنا چاہیے۔

جب یہ ثابت ہو گیا کہ انسان اپنی زندگی کا ہر ضروری، بلکہ جائز کام بھی اللہ تعالیٰ کیلئے کر سکتا ہے تو صبح کو کام شروع کرنے سے پہلے یہ نیت اور عزم کر لیجئے کہ میں جو کام کروں گا اللہ کے لئے کروں گا، اس عزم کو بار بار ذہن میں دہرائیجئے، اور پھر دعا کیجئے کہ یا اللہ! میں نے اپنی طرف سے تو یہ عزم کر لیا ہے، لیکن میں کیا؟ اور میرا عزم وارادہ کیا؟ میں انتہائی کمزور ہوں، میرے عظام اور ارادے ضعیف ہیں، میرا ان پر از خود ثابت قدم رہنا میرے بس ہے باہر ہے، آپ اپنے فضل و کرم سے مجھے اس پر ثابت قدم رہنے کی توفیق عطا فرمادیجئے۔ بس یہ عزم اور یہ دعا کر کے اپنے کام میں لگ جائیے، اور ہر کام کے وقت اس پر حنی الوصح عمل کرنے کی کوشش کیجئے۔ جب سارا دن گزرنے کے بعد رات کو سونے کے لئے بستر پر جانے لگیں تو دن بھر کے اعمال کا مختصر جائزہ لیجئے کہ صبح جو عزم کیا تھا، اس پر کس حد تک قائم رہ سکے؟ اگر کہیں غلطی نظر آئے تو اس پر توبہ اور استغفار کیجئے کہ یا اللہ! عزم تو کیا تھا، لیکن میں اپنی کمزوری کی بنا پر فلاں فلاں معاملات میں اس پر ثابت قدم نہ رہ سکا، فلاں غلطی ہو گئی، فلاں قصور یا فلاں گناہ سرزد ہو گیا، یا اللہ! اپنی رحمت سے اسے معاف

فرمایا کہ، میں توبہ واستغفار کرتا ہوں، اللہ تعالیٰ استغفرک واتوب الیک، انشاء اللہ غلطی معاف ہو جائیگی۔ اب ایک نازک اور لطیف بات سنئے، کسی کے دل میں یہ خیال پیدا ہو سکتا ہے کہ میں نے تو اللہ تعالیٰ ہی کے حکم کی تعمیل میں ان صلاحاتی و نسکی و معیای و مماتی الخ کہا تھا اپنی طرف سے عزم بھی کر لیا تھا، اور پھر اللہ تعالیٰ ہی سے مدد بھی مانگ لی تھی کہ یا اللہ! آپ ہی مجھے اس عزم پر ثابت قدم رکھئے۔ اس طرح میں نے اپنا آپ اللہ تعالیٰ کے حوالے کر دیا تھا، پھر مجھ سے یہ غلطیاں کیوں سرزد ہوئیں؟ اللہ تعالیٰ نے مجھے ان سے کیوں نہیں بچا یا؟ یہ بڑا نازک سوال ہے، اور اس کا جواب بھی بڑا نازک ہے، اور وہ یہ کہ جب انسان اپنا معاملہ اللہ تعالیٰ کے حوالے کر دے اور حتی المقدور بہت کو بھی کام میں لاسے، اور بہت کر کے گناہوں سے بچنے کی کوشش بھی کرتا رہے، اس کے باوجود کبھی کوئی غلطی سرزد ہو جائے جس پر ندامت اور توبہ واستغفار کی بھی توفیق ہو جائے تو وہ بھی مشیتِ خداوندی سے ہوئی ہے، اس پر مایوس ہونے کے بجائے یہ سوچنا چاہئے کہ جب میں نے اپنا معاملہ اللہ تعالیٰ کے حوالے کر دیا تھا تو یہ بات ناممکن تھی کہ اللہ تعالیٰ اس کے بعد مجھے بے یار و مددگار چھوڑ دیں، تو جو کچھ ہو گیا، وہ بھی حکمت سے خالی نہیں، غلطی کا صدمہ بھی مشیت ہی سے ہوا، اور جب اس پر استغفار ندامت اور شکستگی کی توفیق ہو گئی تو اس کے معنی یہ ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے تمہیں اس سارے مجموعے کے ذریعہ ندامت، عاجزی، شکستگی، در ماندگی اور عبدیت کی نعمتیں عطا فرمائیں جو انسان کو موردِ ہنات ہی اللہ تعالیٰ کی توابت کا، اس کی غفارت کا، اس کی رحمانیت کا، لہذا اللہ تعالیٰ نے تمہیں تمہارے عزم اور دعا کے بعد بے یار و مددگار نہیں چھوڑا، بلکہ تمہاری مدد فرمائی، اگر مدد نہ ہوتی تو اس ندامت اور توبہ واستغفار کی توفیق نہ ہوتی، جب یہ توفیق عطا فرمادی گئی تو سمجھو کہ "بشہ رب العاطین" تک پہنچنے کے لئے ایک دوسرا راستہ اختیار فرمایا گیا ہے، تمہارے ارادوں کو توڑا گیا ہے تاکہ تمہیں اپنی عاجزی کا احساس ہو، تمہاری حقیقت تم پر واضح کی گئی ہے، تاکہ تمہارے دل میں ندامت، شکستگی اور عبدیت پیدا ہو، اور یہ شکستگی ہی اللہ تعالیٰ کو پسند ہے۔

نہ بچا بچا کے تو رکھ اسے کہ یہ آئندہ ہے وہ آئندہ  
جوشکتہ ہو تو عزیز تر ہے نگاہ آئندہ ساز میں

اس شکستگی کے بعد انسان اپنے مقاماتِ قرب میں اور ترقی کر جاتا ہے، لہذا یہ شکستگی  
بلا وجہ پیدائش کی گئی ہے

یہ کہہ کے کاسہ ساز نے پیالہ پٹک دیا  
اب اور کچھ بنائیں گے اس کو بگاڑ کے

## ”صَادِقِیْن“ کے ساتھی بن جاؤ

فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے :-

يَا بَهَّا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ  
اے ایمان والو! اللہ سے ڈرو، اور صادقین (سچے لوگوں)  
کے ساتھی بن جاؤ۔

اس آیت میں اللہ تعالیٰ نے تقویٰ کا حکم دیا ہے، اور اس کے حاصل کرنے کا آسان  
طریقہ بتایا ہے، اور وہ یہ کہ جو لوگ ”صَادِقِیْن“ ہیں، اور سچ پُنج تقویٰ کا مقام حاصل کر چکے ہیں  
ان کی صحبت اختیار کر لو۔ اس سے اشارہ اس طرف فرما دیا کہ ”تقویٰ“، عِدۃً محض منطری  
طور پر کتا ہیں پڑھنے پڑھانے سے حاصل نہیں ہوتا، بلکہ اس کیلئے ”صادقین“ کی صحبت  
اختیار کرنے کی ضرورت ہے۔

اس کی مثال ایسی ہے جیسے کوئی شخص ”آگ“ کی تعریف اور اس کے بارے میں تمام  
علمی اور تاریخی معلومات مختلف کتابوں سے جمع کر کے اُس پر ایک مقالہ لکھ دے تو اس سے آگ  
کے بارے میں نظری طور پر معلومات تو حاضر ہو جائیں گی، لیکن کیا اس سے آگ کی کوئی پش محسوس  
ہوگی؟ ہرگز نہیں، اگر تپش حاصل کرتی ہے تو اس کا واحد طریقہ یہ ہے کہ آگ کے پاس بیٹھ جاؤ۔  
اسی طرح یہ تقویٰ، کی تپش محض کتا ہیں پڑھ کر حاصل نہیں ہو سکتی، اس کا بھی واحد  
طریقہ یہ ہے کہ کسی متقی کے پاس بیٹھنے لگو، رفتہ رفتہ اس کے دل کا سوز تمہاری طرف منتقل



یہی وجہ ہے کہ تاریخ میں جتنے بزرگانِ دین ہوئے ہیں، انہوں نے ہمیشہ علمِ ظاہر کی تحصیل کے بعد کسی اللہ والے کی صحبت اختیار کر کے اس سے اپنی اصلاح کرائی ہے، بلکہ بارہا ایسا بھی ہوا ہے کہ بڑے بڑے علماء علم و فضل کے اعلیٰ مقام تک پہنچنے کے باوجود ایسے لوگوں کے پاس اپنی اصلاح کے لئے گئے ہیں جو اصطلاحی طور پر باقاعدہ عالم بھی نہیں تھے۔

دارالعلوم دیوبند کے بانی حضرت مولانا محمد قاسم صاحب نانوتوی؟ قطب الارشاد حضرت مولانا رشید احمد صاحب گنگوہیؒ اور حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانویؒ قدس سرہم میں سے ہر ایک اپنی اپنی جگہ علم و فضل کا آفتاب و ماہتاب تھا۔ لیکن علمِ ظاہر کی تحصیل کے بعد ان تینوں نے حضرت حاجی امداد اللہ صاحب مہاجر مئی قدس سرہ کی طرف رجوع کر کے ان سے فیض حاصل کیا۔

کسی شخص نے غالباً حضرت نانوتوی قدس سرہ سے پوچھا تھا کہ حضرت! آپ کو اللہ تعالیٰ نے جو علوم عطا فرمائے ہیں، وہ بڑے رفیع الشان ہیں، پھر آپ کو حضرت حاجی صاحبؒ کے پاس جانے کی کیا ضرورت تھی؟ حضرت نانوتوی قدس سرہ نے جواب دیا کہ ہماری مثال اس شخص کی سی تھی جسے دنیا بھر کی تمام مٹھائیوں کے نام، ان کی تاریخ اور ان کے بنانے کا طریقہ تو معلوم ہو، لیکن اس نے کبھی ان میں سے کوئی مٹھائی کھائی نہ ہو، اور حضرت حاجی صاحبؒ کی مثال اس شخص کی سی ہے، جسے تاریخ وغیرہ تو چاہے معلوم نہ ہو، لیکن اس نے وہ ساری مٹھائیاں خود کھائی ہوں، ہم حضرتؒ کے پاس گئے تو انہوں نے مٹھائیوں کے بارے میں نظری معلومات دینے کے بجائے ایک ایک کر کے ہمارے منہ میں رکھ دیں۔ اور ان کے حقیقی علم یعنی ان کے ذائقے سے ہمیں روشناس کیا۔ اب خود سوچ لیجئے کہ انکی خدمت میں جانا مفید ہوا یا نہیں؟ اور اگر نہ جاتے تو کیا حالت رہتی؟

غرض تجربہ یہی ہے کہ تنہا حروف و نقوش کا کتبہ علمِ ان کی اصلاح کے لئے کافی نہیں ہوتا، جب تک کسی مصلح کے ساتھ رابطہ قائم نہ ہو، اور اس سے ہر معاملے میں رہنمائی حاصل نہ کی جائے۔

علم ظاہر کا حاصل یہ ہے کہ اس سے ذہانت و فطانت معلومات کی وسعت اور استعداد حاصل ہوتی ہے، لیکن علم باطن کا حاصل یہ ہے کہ اس سے اللہ اور اللہ کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت پیدا ہوتی ہے، اور یہی محبت ہے جو دین کے راستے کو آسان بنا کر بے غل و غش قطع کر دیتی ہے۔ ورنہ نرا علم جس کے ساتھ تربیت باطن نہ ہو، بسا اوقات پندار عجب اور تکبر جیسے امراض پیدا کر دیتا ہے جو اور بہت سے ردائل کی بنیاد ہیں اور یہ سب رہزنِ طریق ہیں جو منزل تک پہنچنے میں قدم قدم پر رکاوٹ بنتے ہیں۔

اس کے علاوہ علم ظاہر سے یہ تو معلوم ہو جاتا ہے کہ فلاں کام اچھا ہے اور فلاں کام بُرا، لیکن جب تک وہ علم محبت کے ساتھ مزوج نہ ہو، اچھے کاموں پر عمل کرنے اور بُرے کاموں سے رُکنے کی ہمت پیدا نہیں ہوتی، یہ محبت ہی ہے جو بڑے بڑے پُرمشقت کاموں کو آسان بنا دیتی ہے۔

دیکھئے، جاڑے کی تاریک رات میں لیٹا بستر چھوڑ کر اٹھنا اور ٹھنڈے پانی سے غلاظت کے کپڑے دھونا نفس کو کتنا گراں معلوم ہوتا ہے، لیکن ایک ماں اپنے بچے کی خاطر یہ سارے کام خوش خوشی انجام دے سیتی ہے، اسلئے کہ اس کے دل میں بچے کی محبت پیوست ہے۔

اگر اسکے دل میں محبت نہ ہوتی، صرف اتنا معلوم ہوتا کہ یہ کام قابلِ تعریف ہے، تو وہ اتنی آسانی سے یہ کام انجام نہ دے سکتی۔

معلوم ہوا کہ کسی کام کی ہمت پیدا کرنے کیلئے بہترین راستہ محبت ہے، اسی لئے کہنے والے نے کہا ہے کہ

صنارہ قلندر سزدارِ بمنِ نمائی

کہ دراز و دورِ دیدم رہ و بیمِ پارسائی

اس شعر میں ”رہ قلندر“ سے مراد محبت ہے۔ اور مطلب یہ ہے کہ محبت کے

بغیر پارسائی کا راستہ پُرمشقت اور دور دراز کا راستہ معلوم ہوتا ہے، مجھے ”محبت“ عطا فرما دیجئے، تاکہ اس کے ذریعے یہ راستہ آسان ہو جائے۔

اور یہ محبت تجربہ اہل محبت کی صحبت اور رہنمائی کے بغیر حاصل نہیں ہوتی، جب انسان اپنے آپ کو کسی مصلح کے حوالے کر دیتا ہے، تو وہ رفتہ رفتہ اُس کے دل میں محبت کی آبیاری کر کے اس کے لئے قطع راہ کو اتنا آسان بنا دیتا ہے کہ بس اوقات پتہ پتہ بھی نہیں چلتا کہ وہ کہاں سے کہاں پہنچ گیا؟ اور خطرناک سے خطرناک مراحل نہایت آسانی سے طے ہو جاتے ہیں۔

ایک مرتبہ ہم کچھ رفقاء کے ہمراہ ایک پہاڑی علاقے میں پیدل جا رہے تھے، ایک وقت کار کو رہنا بنایا ہوا تھا، ایک پہاڑ پر چلتے چلتے اچانک ایک ایسی خطرناک جگہ آئی کہ وہاں پہاڑ ختم ہو گیا تھا، اور اسکے کنارے سے نیچے بہت گہری کھائی نظر آرہی تھی، پھر دو قدم کے فاصلے سے پھر پہاڑ شروع ہو گیا تھا، ایسا معلوم ہوتا تھا کہ گویا پہاڑ بیچ میں سے پھٹا ہوا ہے، اور اس شکاف میں نہایت گہری کھائی ہے کہ چلنے والے کو ذرا غفلت ہو تو وہ اس کھائی میں گر پڑے۔ اُس وقت تو ہم اس شکاف کو پھلانگ گئے، لیکن جب واپسی اُسی راستے سے ہونے لگی تو شام کا جھٹکا ہو چکا تھا، اور یہ خطرہ لگا ہوا تھا کہ کہیں اندھیرے میں پاؤں کھائی میں نہ پڑ جائیں ہم نے پہلے سے رفقاء کو ہوشیار کر دیا، اور رہنا بھی کہا کہ اس جگہ سے محتاط ہو کر چلنا چاہئے لیکن رہنا بڑے اطمینان سے ہمیں لیکر چلتا رہا، بالآخر ایک جگہ پہنچ کر ہم نے اس سے پوچھا کہ وہ جگہ کب آئیگی؟ رہنا نے مسکراتے ہوئے جواب دیا کہ وہ جگہ تو گزری بھی گئی — ہم اس رہنا کی جہارت پر بہت متعجب ہوئے کہ اس نے ہمیں اس خطرناک جگہ سے اس طرح گزار دیا کہ پتہ بھی نہیں چل سکا۔

ہم نے اس سے یہ سبق لیا کہ شیخ کامل کی مثال ایسے ہی رہنا کی ہے جو سلوک کی خطرناک گھاٹیوں سے سادک کو اس طرح نکال دیتا ہے کہ اُسے پتہ بھی نہیں چلتا۔

## ہمت کی ضرورت اور اسکے فوائد

فرمایا کہ دین پر عمل کرنے کی کلید "ہمت" ہے، ہمارے حضرت والا حضرت حکیم الامت مولانا تھانوی قدس سرہ فرماتے تھے کہ:۔  
"وہ ذرا سی بات جو حاصل ہے تصوف کا، یہ ہے کہ جب کبھی کسی طاعت کی

ادائیگی میں سُستی ہو تو اس سُستی کا مقابلہ کر کے اس طاعت کو کرے، اور جب کبھی کسی گناہ کا تقاضا ہو، اُس تقاضے کا مقابلہ کر کے اُس سے رُکے۔ اسی سے تعین مع اللہ

پیدا ہوتا ہے، اسی سے محفوظ رہتا ہے، اور اسی سے ترقی کرتا ہے۔

اس سُستی، اور اگن ہوں کے تقاضے کا مقابلہ کرنے کیلئے ہمت کی ضرورت ہوتی ہے اور اللہ تعالیٰ نے انسان کی ہمت میں اتنی طاقت رکھی ہے کہ وہ بڑے سے بڑے مشکل کام کو ہمت کے ذریعے انجام دے لیتا ہے، شروع شروع میں ایک کام انسان کو بہت دشوار، بلکہ بعض اوقات ناممکن معلوم ہوتا ہے، لیکن اگر انسان اپنی ہمت کو کام میں لائے تو وہی کام آسان ہو جاتا ہے۔ ہمت پیدا کرنے کے لئے بزرگوں کی صحبت سے کچھ گُر معلوم ہو جاتے ہیں جو ہمت میں قوت پیدا کرتے ہیں۔

مثلاً رات کو گہری نیند سے بیدار ہونا اور آرام دہ بستر کو خیر باد کہنا نفس کو بہت گراں معلوم ہوتا ہے، جب نیند کا غلبہ ہو، نیند کی لذت سے جسم سرشار ہو، آرام دہ بستر میسر ہو، اُس وقت ایک نفلی عبادت کیلئے اس سارے راحت و آرام کو قربان کرنا بہت شاق نظر آتا ہے لیکن انسان اُس وقت تصور کرے کہ اگر اسی حالت میں میرے پاس یہ پیغام پہنچے کہ سربراہ مملکت، یا میرا کوئی بڑا افسر دروازے پر موجود ہے، اور اُس کا پیغام یہ ہے کہ اگرچہ ہو تو اس وقت ہم سے مل کر ایک خطیر انعام حاصل کر لو۔ — یا میرا کوئی بہت ہی محبوب دوست یا عزیز چاہے اس وقت دروازے پر آکر دستک دینے لگے تو کیا پھر بھی اس کی ملاقات پر نیند کی اس لذت کو ترجیح دوں گا؟

اگر ایک فانی اور بے بس انسان کی ملاقات یا اس سے ایک بے حقیقت انعام ملنے کی توقع پر میں اس نیند کو قربان کر سکتا ہوں تو وہ مالک الملک والاسکوت جس کے قبضہ قدرت میں نفع و ضرر کی ساری گنجیاں ہیں، جب وہ دعوت دے رہے ہیں کہ ”ہے کوئی! مغفرت مانگنے والا جسکی میں مغفرت کروں“؟ ”ہے کوئی! رزق مانگنے والا جسے میں رزق دوں؟“ ”ہے کوئی! مبتلائے مصیبت جسکی مصیبت میں رفع کروں؟“ — کیا یہ مسلسل اور پیہم پکار ایسی نہیں کہے کہ اس پر نیند کی یہ معمولی لذت قربان کر دی جائے؟



یہ تصور کر کے دیکھو کہ اس سے کس طرح ہمت پیدا ہوتی ہے ؟

ہمارے ایک نہایت بے تکلف دوست تھے، وہ ہندوستان کے ایک شہر میں ڈپٹی کمشنر بن گئے۔ کچھ دنوں کے بعد میں اس شہر میں گیا، صبح سویرے اُن کے مکان پر پہنچا، اور اطلاع کرائی، ان سے جو بے تکلفی تھی، اس کے پیش نظر توقع یہ تھی کہ وہ ہمارا نام سُنتے ہی مسرت کے عالم میں فوراً چلے آئیں گے اور بیخۂ آکر پٹ جائیں گے، لیکن خلافِ توقع اطلاع کرانے کے بعد ہم دیر تک انتظار کرتے رہے، اور وہ باہر نہیں آئے۔ تھوڑی دیر کے بعد ہمارے دل میں یہ بدگمانی پیدا ہونے لگی کہ شاید ڈپٹی کمشنر بننے کے بعد ان کے دماغ میں کچھ بڑا اُلگٹی ہے جو اب تک باہر نہیں نکلے۔ اگر واقعی ایسا ہے تو یہ صاحبِ طبعی کے لائق نہیں رہے۔ لیکن ابھی کچھ ہی دیر گزری تھی کہ اچانک وہ ہنستے مسکاتے سامنے سے آئے، اور اسی والہانہ انداز میں ہم سے پٹ گئے ہم نے اتنی دیر ہونے کی بنا پر ان سے کہا کہ اب ہم تم سے نہیں ملیں گے، اتنی دیر کیوں لگائی ؟ انہوں نے ہم سے کہا کہ ذرا سا بیٹھو تو سہی۔ ہم نے کہا "ہم نہیں بیٹھیں گے جب تک تم ہمیں دیر کی وجہ نہ بتاؤ۔"

اس پر انہوں نے کہا کہ جب تمہارے آنے کی اطلاع ملی تو میں اُس وقت قرآنِ کریم کی تلاوت کر رہا تھا، دل نو بیساختہ یہ چاہا کہ فوراً تم سے آکر ملوں لیکن پھر میں نے سوچا کہ سارے دن میں یہ چند لمحات حضوری کے ملتے ہیں، اس وقت اس نعمتِ حضوری کو چھوڑ کر جانا خلافِ ادب بھی ہے، اور دوسرے یہ لمحات نکل گئے تو تو سارے دن کی دوا دوش میں پھر شاید یہ میسر نہ نہ آسکیں، اس لئے میں خواہش کو دبا کر بیٹھا رہا، اور تلاوت پوری کر کے باہر نکل۔

ہمیں ان کی یہ بات بھی پسند آئی، واقعہً جو لمحات رجوع الی اللہ کے نصیب ہو جائیں

بہت بڑی دولت ہیں ۔

بہ صد ہا سال اس نکتہ محقق شد بہ خاقانی  
کہ یکدم با خدا بودن بہ از ملک سلیمانی

اور یہ

اوقات ہماں بود کہ بایا رہ بسر کرد  
باقی ہمدے حاصلی و بے خسروی بود

لہذا ایسے لمحات کے حصول، اور حاصل ہو جائیں تو ان کی قدر دانی کا یہی انداز ہونا چاہیے  
 ان کے مقابلے پر کتنی بڑے سے بڑی دنیاوی نعمت مل جائے، ہمت کر کے ان لمحاتِ حضورِ  
 کو ترجیح دینی چاہئے۔

شروع شروع میں ہمت کا استعمال کر کے نفسانی خواہشات کو کچلنے میں مشقت معلوم  
 ہوتی ہیں، لیکن جب انسان ایک مرتبہ یہ عزم کر لے کہ  
 آرزوئیں خون ہوں، یا حسرتیں برباد ہوں  
 اب تو اس دل کو بنانا ہے ترے قابل مجھے  
 تو اس کے بعد اللہ تعالیٰ کی طرف سے نہ صرف مدد ہوتی ہے، بلکہ آرزوئیں خون کرنے  
 میں ایک عجیب حلاوت محسوس ہونے لگتی ہیں۔

## بزرگوں کی محبت کا فائدہ

فرمایا کہ اللہ والوں کی محبت بھی بڑی نعمت ہے، اسکی قدر کرنی چاہیے، حدیث میں ہے کہ:-

المسرع مع من أحب

انسان اُن لوگوں کے ساتھ ہوگا جن سے وہ محبت کرتا تھا

اللہ والوں سے محبت کے نتیجے میں انشاء اللہ دنیا میں کسی نہ کسی وقت اصلاحِ حال اور آخرت  
 میں نجات کی توقع ہوتی ہے، لہذا جس حال میں بھی ہو، انسان کو چاہیے کہ اللہ والوں سے اپنے  
 آپ کو لگا پٹا رکھے۔

فرمایا کہ میں اسکی مثال یہ دیا کرتا ہوں کہ ایک شاندار ریل گاڑی جس میں کوئی وزیرِ کبیر سفر کر رہا  
 تھا، کراچی سے لاہور جا رہی تھی، وزیر کے سفر کی وجہ اس میں شاندار امیئر کنڈیشنڈ سیلون لگا ہوا  
 تھا۔ نہایت صاف ستھرا، آرام دہ، پُر تکلف، ساتھ ہی اعلیٰ درجے کا باورچی خانہ لگا ہوا  
 جس میں عمدہ کھانے پک رہے تھے، اور اسکی خوشبو اُٹھ رہی تھی، جب گاڑی کی روانگی کا وقت  
 آیا تو اسٹیشن ماسٹر نے ایک پُرانا رنگ آلود بوسیدہ ڈبہ گاڑی کے پیچھے لگا دیا کہ یہ بھی لاہور چلا  
 جائے گا۔ تاکہ وہاں کے ورکشاپ میں اس کی مرمت ہو سکے۔ اب جب گاڑی چلی تو اس پُرانے ڈبے

کی چول چول ہتی ہے، ہمیں سے طرح طرح کی سمع خراشیں آوازیں نکلتی ہیں، اور اس کی خاک دھول اڑتی ہے تو کوئی شخص اسکی ہنسی اڑاتا ہے کہ تو اس بوسیدگی اور کینگی کے ساتھ ان اعلیٰ درجے کی بوگیوں کے ساتھ کہاں لگ گی؟ اس کے جواب میں وہ ڈبہ کہتا ہے کہ خبردار! میری ہنسی مت اڑانا، میں بیشک بوسیدہ، شکستہ، در ماندہ اور زنگ آلود ہوں، لیکن یہ دیکھو کہ میرا رشتہ کن عالیشان بوگیوں کے ساتھ جڑا ہوا ہے، میرا کنڈا اُن کے کنڈے میں پھنس ہوا ہے، جس لائن پر وہ جارہے ہیں اسی لائن پر میں بھی جارہا ہوں، جس وقت وہ لاپتہ پہنچیں گے انشاء اللہ میں اسی وقت میں بھی لاپتہ پہنچوں گا، میں چاہے کسی حال میں ہوں، لڑھکتا کھکتا ہنسی کے ساتھ جاؤں گا، اور ہاں پہنچو انشاء اللہ میری مرمت ہو کر اصلاح بھی ہو جائیگی، بس شرط یہ ہے کہ میرا کنڈا اُن کے کنڈے میں لگا رہے۔

بس یہی حال ہمارا سمجھو، کہ جب تک اللہ والوں کے ساتھ رشتہ قائم ہے اور قدم صراطِ مستقیم کی لائن پر ہیں، انشاء اللہ کسی نہ کسی سورت اپنی بوسیدگی کے باوجود منزل تک پہنچ جائیں گے، بس شرط یہ ہے کہ اپنے کنڈے کو اللہ والوں کے ساتھ وابستہ رکھیں، لہذا اس کنڈے کی حفاظت کی بہت ضرورت ہے۔

## فضائل اعمال کا اہتمام

فرمایا کہ تہران حدیث میں جن مستحب اعمال کی فضیلت وارد ہوئی ہے۔ اُن پر عمل کرنے کا خاص اہتمام کرنا چاہیے، عام طور سے جب ”مستحب“ کی یہ تعریف جب سامنے آتی ہے کہ اس کے کرنے پر ثواب ملتا ہے، اور نہ کرنے سے کوئی گناہ نہیں ہوتا، تو بعض لوگ یہ سوچنے لگتے ہیں کہ جب اُنکے نہ کرنے پر کوئی گناہ نہیں تو انکے زیادہ اہتمام کی ضرورت نہیں۔ خاص طور پر اہل علم بکثرت اس خیال کی بناء پر مستحبات سے محروم رہتے ہیں، حالانکہ مستحبات کی ایسی ناقدری بہت بُری بات ہے۔ حقیقت یہ ہے کہ فرائض و واجبات تو انسان کے ذمے لازم ہیں، انہیں تو ہر حال میں انجام دینا ہی ہے، وہ باری تعالیٰ کی الوہیت کا حق ہیں، لیکن مستحبات باری تعالیٰ کے ساتھ محبت کا حق ہیں۔

جس ذات نے ہمیں پیدا کیا، ہم پر انواع و اقسام کی نعمتوں کی بارکش برسانی، اور ہر آن ہر سانس

ہیں، ان کے ساتھ تعلق محض ضابطے کا نہیں ہونا چاہئے کہ جس جتنے حقوق واجبہ ہیں، انسان انہیں پر اکتفا کرتا ہے، بلکہ رابطے اور محبت کا بھی کچھ تقاضا ہے، اور مستحبات اسی رابطے اور محبت کا تقاضا ہیں۔

دیکھئے! ایک بیٹے کے ذمے اپنے ماں باپ کے کچھ لازمی حقوق ہیں، مثلاً یہ کہ وہ جو حکم دیں، انکی اطاعت کرے، اگر وہ کسب معاش سے عاجز ہیں تو ان کی معاشی ضروریات پوری کرے، لیکن یہ سارے حقوق ضابطے کے حقوق ہیں، اب اگر کوئی بیٹا اپنے والدین کی معاشی ضروریات پوری کر دیتا ہے، اور اگر کبھی وہ کسی کام کو خود کہیں، تو اسے بھی انجام دیتا ہے، لیکن ان ضابطے کے حقوق کے بعد ان سے کوئی سروکار نہیں رکھتا، نہ ان سے بات چیت نہ یادہ کرتا ہے، نہ انہیں دوسری طرح خوش کرنے کی کوشش کرتا ہے تو ایسا بیٹا خواہ قانونی اعتبار سے ماخوذ نہ ہو، لیکن کوئی شخص یہ نہیں کہہ سکتا کہ اُسے اپنے والدین سے محبت یا تعلق ہے۔

محبت اور تعلق کا تقاضا تو یہ تھا کہ ہر وقت انہیں خوش کرنے اور خوش رکھنے کی فکر میں رہا رہے، اور خود سوچ سوچ کر ایسے کام کرے جس سے انہیں راحت پہنچے، اور مسرت حاصل ہو۔

اسی طرح اگر کوئی شخص صرف فرائض و واجبات تو ادا کرے، لیکن مستحبات اور فضائل کی چنداں فکر نہ کرے تو اللہ تعالیٰ کے ساتھ اس کا تعلق محض ضابطے کا تعلق رہتا ہے، محبت اور رابطے کا تقاضا یہ ہے کہ ڈھونڈ ڈھونڈ کر ایسے کام تلاش کرے جس سے اللہ تعالیٰ خوش ہوں، اور یہ کام مستحبات ہی میں ملتے ہیں، یہی وجہ ہے کہ حضرات صحابہ کرامؓ ہر وقت اس فکر میں رہتے تھے کہ کوئی فضیلت والا مستحب عمل معلوم ہو جائے تو اس پر عمل کریں۔ بہت سے علماء و طلبہ بھی اس معاملے میں بڑی بھول میں ہیں، وہ فضائل اعمال کی آیات و احادیث اس سے پڑھتے ہیں کہ انہیں وعظ و تقریر میں لوگوں کے سامنے بیان کر دیں، یا ان پر کوئی مقالہ لکھ دیں، لیکن ان پر خود عمل کر کے انکی فضیلت حاصل کرنے کا شوق اور جذبہ دل میں پیدا نہیں ہوتا۔



ایسے لوگوں سے اگر کہا جائے کہ تحیۃ المسجد پڑھنے کا کیا حکم ہے؟ تو وہ فوراً اس کی فضیلت والی احادیث سنادیں گے، اور اس کے شرعی احکام بیان کر دیں گے، لیکن اگر پوچھو کہ کیا کبھی خود بھی تحیۃ المسجد پڑھی؟ تو جواب نفی میں ہو گا، اور اگر کوئی متوجہ بھی کرے تو یہ کہہ کر فرار ہو جائیں گے کہ یہ عمل تو مستحب ہے، کوئی فرض و واجب نہیں، حالانکہ کسی عمل کے مستحب ہونے کا علم اس عمل کی ترغیب کا سبب ہونا چاہئے، نہ کہ اس سے اعراض اور کن و کشی اختیار کرنا۔

## فضائل اعمال کا نور

فرمایا کہ بر فضیلت والے عمل میں اللہ تعالیٰ کی طرف سے ایک نور ہوتا ہے جو ہمیں نظر نہیں آتا، لیکن اس کے اثرات زندگی پر پڑتے ہیں، اگر انسان کو ان انوار و برکات کا صحیح ادراک ہو جائے تو وہ ان اعمال کو کبھی ترک نہ کرے، اسی سے حدیث میں آتا ہے کہ اگر تمہیں معلوم ہو جائے کہ صوفی اول میں نماز پڑھنے کی کیا فضیلت ہے؟ اور اسکے بعد تمہیں گھٹنوں کے بل چل کر گنجانے پڑے تو تم گھٹنوں کے بل چل کر آؤ۔ اور اگر یہ معلوم ہو جائے کہ اذان دینے کی کیا فضیلت ہے؟ تو اذان دینے والے کے تعین کے لئے قرعہ اندازی کرنی پڑے۔

ہماری نظر چونکہ مادی وسائل و اسباب میں الجھی رہتی ہے، اس لئے ہم ان انوار و برکات کا ادراک نہیں کر پاتے، جن حضرات کو اللہ تعالیٰ نور بصیرت عطا فرماتے ہیں، وہ ان انوار و برکات کا کسی قدر احساس رکھتے ہیں، لیکن دنیا میں مکمل ادراک کسی کو نہیں ہوتا۔ لیکن جب اس مادی دنیا کے جی بات اٹھیں گے، تو ان کا ادراک ہو گا۔

اس پر ایک اشکال ہو سکتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ہمیں ان انوار و برکات کا ادراک کیوں نہ عطا فرمادیا کہ ہم سب ان اعمال کی قدر کرتے؟

اس کا ایک جواب تو خیر یہ ہے کہ یہ دنیا آزمائش کی جگہ ہے، اور اس صورت میں آزمائش کیسے ہوتی؟ لیکن اسکی تجمل ہی نہیں کر سکتے تھے، اس لئے ان کا مکمل ادراک نہ ہونا بھی دنیا کے لحاظ سے رحمت و حکمت پر مبنی ہے۔

ایک دن مسجد حرام میں بیٹھا تھا، کعبۃ اللہ کا دل و ذہن منظر سامنے تھا، میں سوچ رہا تھا کہ

یا اللہ! یہ آپ کا بیتِ حرام ہے، اس پر ہر آن کتنے انوار کی بارش ہوتی ہے، آپ کی کیسی کمی رحمتیں اس پر نازل ہوتی ہیں، لیکن ہمیں وہ انوار و تجلیات نظر نہیں آتے، اگر ان کی کوئی جھلک ہمیں بھی نظر آجائے تو اچھا ہو۔

ابھی میں یہ سوچ ہی رہا تھا کہ فوراً قلب پر یہ آیت قرآنی وارد ہوئی کہ۔  
رَبَّنَا آتِنَا لَنَا نُورًا وَاعْفِرْ لَنَا

اس کا ترجمہ عموماً یوں کیا جاتا ہے کہ اے ہمارے پروردگار! ہمارے لئے ہمارے نور کو مکمل فرما دیجئے، اور ہماری مغفرت فرمائیے۔

لیکن ذہن اس طرف منتقل ہوا کہ "واعفِرْ لَنَا" کے لغوی اعتبار سے یہ معنی بھی ہو سکتے ہیں کہ "ہمارے لئے اسکو چھپا دیجئے"، کیونکہ "عَفَرَ" کے معنی عربی میں چھپانے کے بھی آتے ہیں۔ اس صورت میں آیت کا ترجمہ یہ ہو گا کہ اے ہمارے پروردگار! ہمارے لئے ہمارے نور کو مکمل فرما دیجئے، اور اسکو ہمارے لئے چھپا دیجئے۔

یہ میں آیت کی کوئی تفسیر نہیں کر رہا ہوں، بلکہ ایک ذوقی بات عرض کر رہا ہوں کہ اُس وقت ذہن اسی طرف منتقل ہوا کہ اس آیت کا ایک ذوقی مفہوم یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کے نیک بندے نور کی تکمیل کی دعا تو کرتے ہیں، لیکن چونکہ جانتے ہیں کہ اس دنیا میں اگر نور کی تکمیل کا مثلاً ہمدہ اور ادراک ہو جائے تو ہم اس کا تحمل نہیں کر سکیں گے، اس لئے وہ ساتھ ہی یہ دعا بھی کرتے ہیں کہ اس نور کو ہمارے ہی فائدہ کے لئے ہم سے چھپا بھی دیجئے۔ اس قصور سے بڑی تسکین حاصل ہوئی۔

## اورادو اشغال کی توانائی

فرمایا کہ اورادو اشغال کے معمولات جن کی تسفین مشائخ کی طرف سے کی جاتی ہے، وہ ایک روحانی توانائی حاصل کرنے کا ذریعہ ہیں، کسی شیخ سے بیعت ہونے یا اس سے تربیت حاصل کرنے کا اصل مقصد تو یہ ہے کہ ان کی رہنمائی میں انسان اپنے باطنی امراض کی اصلاح کرے اور اعمال و اخلاق کی درستگی کی فکر کرے، مشائخ اسکو کچھ اورادو اشغال کی تلقین بھی فرماتے ہیں، انکا فائدہ یہ ہے

کہ ان سے ایک روحانی توانائی حاصل ہوتی ہے، اور اس توانائی کے نتیجے میں انسان کے لئے طاعات پر عمل اور معاصی سے اجتناب کی ہمت و قوت پیدا ہوتی ہے۔

ان اواراد و اشغال کے لئے بہتر طریقہ یہ ہے کہ انسان ایک وقت اور جگہ مقرر کر کے روزانہ اسی وقت اور جگہ پر یکسوئی سے ذکر و فکر میں مشغول ہو، اور اس میں بھی صبح کا وقت سب سے بہتر ہے، کیونکہ اسی وقت میں اللہ تعالیٰ نے بالیدگی اور روئیدگی کی خاص تاثیر رکھی ہے، اسی وقت تمام حیوانات بیدار ہوتے ہیں، کھیاں چٹکتی، درختوں کھینے ہیں، اس لئے اس وقت ذکر اللہ میں مصروف ہونے سے قلب و روح کی بالیدگی کی زیادہ امید ہے، چنانچہ اکثر بزرگوں کا معمول یہی رہا ہے کہ صبح کے وقت اپنے اذکار و اواراد کے معمولات میں مشغول ہوتے ہیں۔

لیکن جو لوگ زیادہ مصروفیات میں پھنسے ہوئے ہوں، اگر ان کو اس طرح وقت نکالنا مشکل ہو تو وہ بھی ان اذکار و اواراد سے بالکل محروم نہ رہیں مگر ہر وقت موقع سے یہ معمولات پوسے کریں، تو انہیں چلتے پھرتے ہی پون ان میں سے بعض اذکار و اواراد ایسے ہیں جنہیں پڑھنے کا بزرگوں نے کوئی خاص طریقہ بتایا ہے، مثلاً دوازدہ تسبیح میں ذکر بالجہ اور اَللّٰہُ پر ضرب لگانا۔ یہ طریقہ بزرگوں نے تجربے سے مقرر کیا ہے کہ اس سے فائدہ زیادہ ہوتا ہے، لیکن یہ بات یاد رکھنی چاہئے کہ یہ خاص طریقہ مقصود نہیں، مقصود ذکر ہے، لہذا اگر کوئی شخص اس خاص طریقے پر پڑھنے سے وقت کی کمی کی بنا پر معذور ہو تو وہ اس خیال سے دوازدہ تسبیح کو ترک نہ کرے کہ اس کے مخصوص ایسے طریقے سے پڑھنا اس کے لئے مشکل ہے۔ اس کے بجائے وہ لیجو اور طریقے کی پابندی کے بغیر تسبیح پڑھ لیا کرے، میرا تجربہ ہے کہ اس طرح بیسٹ منٹ میں یہ تسبیحات پوری ہو جاتی ہیں۔

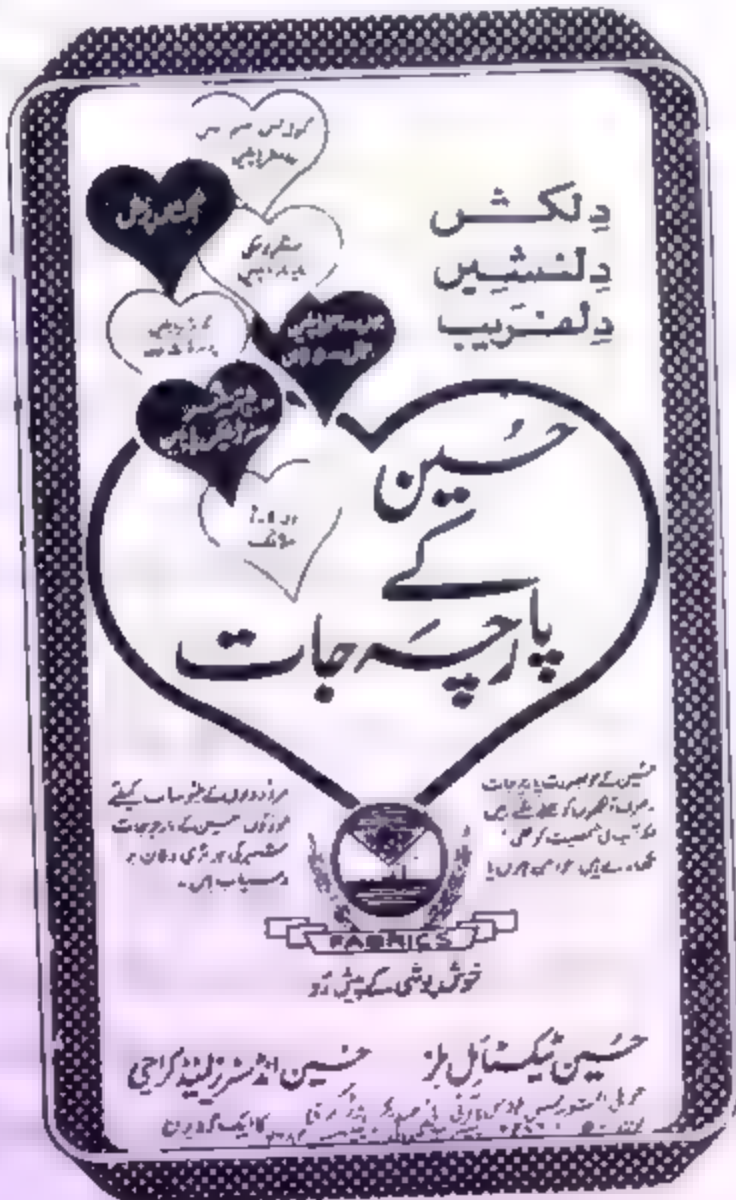
اسی طرح سالک کو چاہئے کہ وہ اپنی وسعت کے مطابق معمولات مقرر کرے، لیکن جو معمول مقرر کرے، اسے ناغہ نہ کرے، اگر مقررہ وقت پر کسی وجہ سے وہ نہیں کر سکا، تو بعد میں جب وقت ملے ادا کر لے، حدیث میں ہے کہ کھانے سے پہلے بشیر پڑھنی چاہئے، لیکن اگر شروع میں کسی وجہ سے نہیں پڑھ سکا تو کھانے کے دوران جب بھی یاد آئے، پڑھ لے اور یہ کہے کہ بسم اللہ اولہ و آخرہ۔

اسی طرح نوافل و اذکار بھی اگر اپنے وقت سے ٹک جائیں تو یہ نہ سمجھے کہ ان کی قضا میں

ہے، لہذا دوسرے وقت پڑھنے کی ضرورت نہیں، بلکہ جب موقع ملے، ان کی تلاقی کر لے۔

بلکہ میں تو یہاں تک کہتا ہوں کہ اگر سارے دن کسی بھی وقت موقع نہیں ملا تو بھی انہیں بالکل ناغہ نہ کرے، بلکہ تعداد کم کر کے جتنا پڑھ سکتا ہو پڑھ لے، اگر سو مرتبہ کا معمول ہے اور موقع نہیں ملا تو ۳۳ مرتبہ پڑھ لے، اسکا بھی موقع نہیں ہیں تو ۱۱ مرتبہ پڑھ لے، اور اس کا بھی موقع نہیں ہے تو ۳ مرتبہ پڑھ لے، مگر بالکل ناغہ نہ کرے۔

پھر اذکار و اوراد کا اصل فائدہ اس وقت ہوتا ہے جب انسان انہیں دھیان اور توجہ کے ساتھ پڑھے، شروع شروع میں دل نہیں لگتا، لیکن مشق کرنے سے رفتہ رفتہ دھیان ہوتے لگتا ہے۔





## افکارِ عاشق

مطاعنا المکرم ڈاکٹر عبدالحی صاحب رحمۃ اللہ علیہ  
کے ملفوظات  
برمکان: ڈاکٹر حفیظ اللہ صاحب مدظلہ اعد ذ  
بتاریخ ۲۰ شوال المکرم ۱۳۸۳ھ

فرمایا کہ میں نے حضرت مولانا حکیم الامت علیہ الرحمۃ کو اپنے قبض اور تشویشات غم پر کس فی  
توان کے جواب میں تحریر فرمایا۔

برصراطِ مستقیم اے دل سے گمراہ نیست

اھدنا الصراطِ المستقیم ایک دُعا ہے اس کے بعد الذین انعمت علیہم فرمایا کہ جو  
لوگ منعم علیہم ہیں ان کی راہ پر چلا لھذا جو ایسا مرشد مل جائے اسی کے پیچھے چل جائے یہی صراطِ  
مستقیم ہے۔

صراطِ مستقیم کی ایک مثال دیا کرتا ہوں کہ ایک جنگل بیابان ہے درندے موذی جانور  
گڈھے غار دار درخت اندھیرا بھی کڑک غرض ایک وحشتناک منظر تصور کر دیکن بجلی کوندنی  
ہے تو ایک سیدھا راستہ نظر آنے لگتا ہے اسپر ہم آئے تو معلوم ہوا کہ ہم سے آگے گئے کوئی  
دوسرا شخص جا رہا ہے اس سے دریافت کیا کہ تم کون ہو اس شخص نے جواب میں کہا کہ

میں اس راہ کو دیکھے ہوئے ہوں اور اکثر آیا جایا کرتا ہوں خوب واقفکار ہوں تو اب اس کے مل جانے کے بعد دل کا کیا حال ہو گا کتنا غنیمت ہو گا اس کا مل جانا پھر وہ شخص کہتا ہے کہ میرے پاس تاریخ اور روشنی بھی ہے ہر چیز کو دیکھ بھال کر کے چلوں گا یہی حال مرشد کا ہے۔

فرمایا۔ محنت۔ تواضع کے ساتھ بے تکلف ہو جانے کا نام ہے۔

فرمایا۔ کہ ایک حالت وہ ہے کہ ہم چاہتے ہیں کہ ایسا ہو یعنی گوارا مسرت والی باتیں اور اور حالات، اور ایک وہ حالت ہے کہ ہم نہیں چاہتے لیکن حق تعالیٰ چاہتے ہیں کہ اس کو اس طرح رکھا جائے۔ گویا ایک حالت کو ہم چاہتے ہیں کہ ہٹ جائے اور حق تعالیٰ چاہتے ہیں کہ وہ حالت رہے جواب تم ہی بتاؤ اچھی حالت کون سی ہوگی جسے ہم چاہیں یا جسے خدا چاہے وہ حالت بہتر ہوگی۔ اسی لئے نفس میں وہ مقامات طے ہو جاتے ہیں کہ بعد میں اور اعمال کرنے سے بھی طے نہیں ہوتے۔

فرمایا۔ حضرت رالاحم الشیخ علیہ وعظمتہ میں کبھی فرماتے کہ یہ بات مجھے اب تک معلوم نہیں تھی ابھی ابھی القار ہوئی ہے پھر فرماتے ہیں یہ تحدث بالنعمة کی وجہ سے کہتا ہوں اس کے بعد وعظمتہ سے ٹھہر کر استغفار فرماتے کہ یہ مقام نازک ہے میں تحدث بالنعمة سمجھ رہا ہوں اور ہو سکتا ہے غیب ہو گیا ہو اپنے نفس کی بہت دیکھ بھال رکھتے تھے۔ کبھی فرماتے یہ سب حاجی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا صدقہ ہے۔

فرمایا۔ کہ حضرت رالاحم الشیخ علیہ خود فرماتے تھے کہ بیان القرآن کی قدر اس کو ہوگدو عربی کی تفسیریں دیکھے اس کے بعد اس کا مطالعہ کسے۔ میں نے بڑے بڑے اختلافی مسائل کو دو لفظ بڑھا کر حل کر دیا ہے۔

فرمایا۔ کہ بوادر النواذریہ حضرت رالاحم الشیخ علیہ کی آخری تصنیف ہے۔ خود حضرت والا نے چیدہ چیدہ مضامین اس میں لکھوائے ہیں۔

فرمایا۔ ایک مرتبہ حضرت منصور علاج کے متعلق کوئی کتاب تحریر فرمائی تھی تو سرورق کوئی شعر لکھنے کے لئے تلاش تھی خدام نے سوچ کر ایک شعر پیش کیا کہ یہ شعر بہت اچھا ہے جس کا پہلا مصرعہ مجھے یاد ہے

ناحق منصور کہ سرِ دار کرتے ہیں

دوسرا مصرعہ کا مطلب یہ تھا کہ اصل ساز تو وہی ہیں، اس شعر کو سن کر حضرت والاؒ نے فرمایا کہ یہ شعر اچھا نہیں ہے۔ غلط شعر ہے۔ سب حیران۔ فرمایا اس میں شریعت کی توہین ہوتی ہے ایک مسئلہ بھی شرع کا ناقح نہیں ہے۔ شریعت کوئی کام ناقح کر نیک حکم نہیں دیتی ہے۔ حضرت والا شریعت کو تصوف پر مقدم فرماتے تھے۔ ایک شخص نے ایک عریفہ لکھا اس میں کچھ اپنے حالات باطنی لکھے اور کچھ مسائل دریافت کئے تو جواب تحریر فرمایا کہ ایک ہی خط میں مسائل شرعیہ اور اصلاح باطنی کی باتیں جمع نہیں کرنی چاہیے۔ یعنی تحریر میں پہلے مسائل شرعیہ لکھا اتنا اہتمام تھا۔

اسی طرح کتابیں رکھنے میں فرق فرماتے تھے پہلے عربی پھر فارسی پھر اردو کی رکھا کرتے تھے۔ اندر جب کسی سے قرآن شریف رکھنے کو فرماتے تو مزدوریہ فرمادیا کرتے کہ دیکھنا وہ کھوٹی پرکڑوں کی گٹھری لٹک رہی ہوگی قرآن شریف کو رکھنے سے پہلے اس کو نیچے اتار کر رکھ دینا۔ پھر تپائی پر قرآن شریف رکھنا۔

حضرت والاؒ اپنے معمولات کے بہت پابند تھے اسی لئے تو دس دس پارے روزانہ پڑھتے تھے اتنا اہتمام تھا کہ ایک مرتبہ حضرت شیخ اہلندؒ تھانہ بھون تشریف لائے تو جس وقت بیان القرآن لکھنے کا معمول متاعرض کیا کہ دس منٹ کی اجازت ہو تو میں چلا جاؤں انہوں نے فرمایا ہاں اگر بیان القرآن کوئی پانچ منٹ لکھ کر پھر چلے گئے۔ ناغہ ہونے میں برکت جاتی رہتی ہے چاہے پانچ ہی منٹ کیا مگر اس کو لکھا ضرور ہے۔

فرمایا۔ کبھی کبھی آپ آنکھ بند کر کے بیٹ جاتے تھے۔ خدام سمجھتے شاید تھک گئے ہیں یا غنودگی ہے لیکن حقیقت میں آپ اس وقت بھی سوچا کرتے تھے۔ جب کوئی بات یاد آئی فوراً فرماتے کہ اس آیت کے متعلق یہ بات ذہن میں آئی ہے وہ لکھ لیں۔

فرمایا۔ مولانا عبد الغنی صاحب پھولپوریؒ بھی اپنے معمولات کے بڑے پابند تھے۔ اگر کسی وجہ سے ناغہ ہو جاتے تو سوتے وقت جب تک ان کو پورا نہ فرمایتے تھے سوتے نہیں تھے۔

فرمایا۔ جب خلوص کیساتھ کوئی بندہ پیدا ہو تو اس کو اول وقت ہی میں پورا کر لینا چاہیئے کیونکہ اللہ تعالیٰ براہ راست وہ جذبہ پیدا فرماتے اور وہی دل میں ڈال دیتے ہیں ایسا ارادہ

دفعۃً وارد ہوتا ہے اگر اسکو نہ کیا تو وہ جاتا رہے گا جذبہ خلوص کی قدر کرنی چاہیئے، وارد کی پہچان یہ ہے کہ وہ مکرر ہوتا ہے بار بار دل نقاضہ کرتا ہے کہ نیک کام میں دیر نہ کرے اور جس کے ساتھ کوئی سلوک کرنا ہو تو اس سے عوض اور بدلے کا بالکل خواہاں نہ ہونے امید رکھے نہ چاہے بلکہ یہ خیال کرے کہ جس نے یہ نقاضائے محبت پیدا کیا ہے عوض اس سے ہی لیں گے دینی محبت کا صلہ یہ ہے ان اجر ہی اللہ علی اللہ۔

فرمایا۔ متقی وہ شخص ہے جو نیکی کر کے اللہ تعالیٰ ہی سے عوض کا طالب ہو مخلوق سے بدلہ طلب نہ کرے نیکی کا تعلق مخلوق سے ہے ہی نہیں اور نہ کوئی مخلوق اس کا عوض دے سکتی ہے مخلوق سے توقع خام توقع ہے تم نے محض اللہ تعالیٰ کی رضا کے لئے کیا ہے اور احسان جتنا نا تو بہت ہی بُری بات ہے جذبہ محبت اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہوتا ہے اس کا شکر کرے اور محنوقات سے اجر کو اٹھا کر رکھ دے۔

خدمت کر کے ان کو خوشی ہوتی ہے عوض چاہنے سے یا ارادہ کرنے سے اسکی مسرت ختم ہو جاتی ہے بزرگوں کی محبت میں ہی خالق و مخلوق کا پردہ اٹھ جاتا ہے اس لئے اس سے محبت کرنے میں مزہ آتا ہے یہ مذاق رکھے ان سلواتی و نسکی و معیای و حمائی اللہ رب العالمین اور مخلوق تو کبھی راضی نہ ہوگی راضی اسی کو کرے جو علیم و خبیر ہے۔

فرمایا۔ دین کے پانچ اجزاء ہیں اعتقادات، عبادات، معاملات، معاشرت اور اخلاق اگر غور سے دیکھ جائے تو اصل میں درجہ ہیں معاملات و معاشرت مخلوق سے معاملہ درست ہونا چاہیئے۔ دیکھئے عقائد کا مصرف بھی مخلوق ہے احسان کا درجہ جیسا عبادت میں ہے اسی طرح معاملات میں معاشرت میں بھی ہے جتنی عقائد کی درستگی ہوگی اتنی ہی عبادات معاملات معاشرت درست ہوں گے اخلاق کا تعلق بھی مخلوق سے ہے اخلاق مخلوق کے ساتھ ہی ظاہر ہوتے ہیں اگر معاملات معاشرت صحیح ہوں تو عقائد و اخلاق سب درست ہو جاتے ہیں اور سب کا خلاصہ یہ ہے کہ اپنے آپ سے کسی کو تکلیف نہ پہنچے حدیث شریف میں ہے المسلم من سلم المسلمون من لسانہ و یدہ (مشکوٰۃ) کامل مسلمان وہ ہے جس کے ہاتھ و زبان سے دوسرے مسلمان کو تکلیف نہ پہنچے۔



فرمایا۔ جنت میں رہنا لامتناہی ہے کیونکہ جنت کے دخول کا سبب ایمان ہے اور صفت ایمان لامتناہی ہے کیونکہ اللہ تعالیٰ کی ذات و صفات بھی لامتناہی ہیں اور لامتناہی صفات پر ایمان لانا بھی لامتناہی ہے اور لامتناہی ایمان تک ایمان رکھنے کا ارادہ ہے اسی سے جنت کا دخول بھی لامتناہی ہوگا باقی اعمال تو فانی ہیں اسی لئے اعمال پر دخول جنت موقوف نہیں ہے ایمان کا تعلق اللہ تعالیٰ کی ذات کے ساتھ ہے اور اعمال کا تعلق ہماری ساتھ ہے باقی رہے معاصی وہ تو ایک ہی استغفار میں ختم ہو جاتے ہیں ایک مرتبہ آرمی تسلی سے بیٹھ جائے اور بالغ ہونے کے بعد سے جو جو گنہ کئے ہیں جو یاد آجائے سب اللہ تعالیٰ کے سامنے پیش کرتا جائے پھر یہ کہے کہ جو مجھ کو یاد ہے اور جو مجھ کو یاد نہیں ہے سب آپ معاف فرما دیجئے اور اتنی مرتبہ استغفار کرے کہ تھک جائے بس یہ یقین کرے کہ اب میں عاجز ہو گیا ہوں رب قدوس گل بخشہ یا ہے اس کے بعد ان معاصی ماضیہ کو کبھی یاد نہ کرے شیطان صفاتِ خداوندی سے ہٹا کر معاصی کے خیال و خیال کی گردان میں لگا دیتا ہے جیسے اس کے کہ اللہ تعالیٰ رزقِ کریم کریم ہونے کی طرف دھیان کرے گنہوں کے خیال میں منہمک کر دیتا ہے دعائیں دھیان اللہ تعالیٰ کی طرف ہونا چاہیے اور ہو جاتا ہے غیر اللہ یعنی معاصی کی طرف۔ صرف اجمالی طور سے استغفار کر کے امید رکھے اور پوری امید رکھے کہ اس نے بخشہ یا ہے اسکی نعمتوں کا شکر کرتا رہے شکرو استغفار دونوں متناہی ہیں اعمال و عبادات کی کوتاہی اور اس کے شکر میں کوتاہی اور پوری ادا نہ کرنے پر استغفار کرتا رہے۔

فرمایا۔ دو چیزیں بڑی ضروری ہیں کثرتِ ذکر و صحبتِ اہل اللہ۔ کو نواع الصدقین جن میں صفتِ صدق پیدا ہو گئی ہے ان کے ساتھ ہو جاؤ صدقِ اخلاص سے اوپر ہے، معصوم ہو اگر خلوص بھی کافی نہیں بلکہ صدق ہی ہونا چاہیے۔ بدعتی مخلص ہوتا ہے مگر اس میں صدق نہیں ہوتا۔ درود شریف کا لحاظ رکھنا بھی صدق ہے حضرت رحمۃ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ میری تعلیم کی تم نے قدر نہ کی حالاں کہ انہوں نے سب کر کے دکھلادیا حضرت کی تربیت و تعلیم الہامی ہے تم اس کو چھوڑ کر کہاں جاتے ہو۔

۸۲ سال تک مسلسل دین کی خدمت کی ہے تعلیم سے فارغ ہونے کے بعد ان کو

کیا معلوم تھا کہ ان کو کتنا کام کرنا ہے ان کی طرح ملفوظات کسی کے لکھے گئے ہیں طبیعت میں اتنی پختگی تھی کہ جو رنگ اول میں تھا وہی اخیر تک رہا۔ حضرت رحمۃ اللہ علیہ کو بہت احساس تھا کہ دین کسی طرح لوگوں کے سینے میں ڈالوں۔ لیکن لوگوں نے ان کی قدر نہ کی۔

حضرت سید سلیمان ندویؒ ایک مرتبہ رات کو اُسے حضرت کو معلوم ہو گیا تو رات ہی کو بلایا اور فرمایا کہ میری تصنیفات میں سے اقتباسات شائع کرنا صبح ملاقات ہوئی تو پھر یہی ارشاد فرمایا اس مذاق کو لوگوں نے سمجھا نہیں حضرت مفتی صاحبؒ نے یہی معمول کر لیا تھا ملفوظات پڑھا کرتے اور سُنا کرتے تھے ایک مرتبہ حضرت مفتی محمد حسن صاحبؒ نے کانپور میں وعظ فرمایا کہ میں تو حضرتؒ کی سنی سنی بات عرض کروں گا۔ علماء کی بد مذاقی دیکھئے کہ حضرتؒ سے تعلق ہوتے ہوئے دوسری دعائیں اور مضامین شائع کر رہے ہیں مگر مفتی صاحبؒ نے اپنا یہی رنگ قائم کیا تھا ان کو مذاقِ تامہ حاصل تھا اصلاح کے آسان نسخے سے شروع کیا لیکن مشاغل کی کثرت کی وجہ سے اس کو پورا نہ کر سکے آپ حضرات اپنی طرف سے کوئی الفاظ نہ بڑھائیں ان ہی کے الفاظ تک محدود رکھیں اپنے ملفوظات و تصنیفات خود حضرتؒ بھی سنتے تھے تربیۃ السالک پڑھا کریں بڑے کام کی کتاب ہے لیکن عوام نہ پڑھیں دعا کریں اللہ تعالیٰ ہم کو بھی توفیق بخشیں۔

فرمایا۔ صاحبِ حال کو جو شیخ جواب دیتا ہے وہ منجانب اللہ ہوتا ہے۔

فرمایا۔ کہ سلسلے کے بزرگوں کے شجرے میں نام لینے اور ان کو ایصالِ ثواب کرنے سے روحانی فیض ہوتا ہے اور یہ بیعت کا سلسلہ بھی دستِ بدست اوپر تک پہنچتا ہے حتیٰ کہ ارشاد نبوی ہے ان الذین یبایعونک انما یبایعون اللہ۔ ید اللہ فوق ایدیہم جو لوگ آپ سے بیعت کرتے ہیں وہ حق تعالیٰ ہی سے بیعت کرتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ کا ہاتھ ان کے ہاتھوں پر ہے۔

بیعت ایک معاہدہ ہوتا ہے کہ میں اس پر قائم رہوں گا اور اس سلسلے کے مسلک پر چلوں گا بیعت کے بعد پھر اسی مسلک پر چلنا چاہیے دوسرے مسلک پر نہ چلنا چاہیے ، اگرچہ سب حق ہیں مگر تم پر چلنے کا وعدہ کیا ہے اس پر بیعت کی ہے اس کو کبھی نہ چھوڑنا ہے

اور حضرت رحمۃ اللہ علیہ کا مسلک تو اتنا مضبوط ہے اور مستند ہے کہ اس کو چھوڑ کر کہاں جائیں اگر کوئی بچائے تو جائے۔ اس خود بینی و خود رانی کا ہم کیا کریں ایک مسلک کو اختیار کر کے اپنی رائے سے چلنا یہ کوئی چیز نہیں بیڈھنگا پن ہے۔ ہمارے حضرت مفتی صاحب فرمایا کرتے "ہمارے حضرت کیا عجیب تھے، اگر اب بھی حضرت کو سمجھنا ہے تو ان کو ان کی تعلیم و تربیت سے انکو سمجھیں جب ان کی تعلیم و تربیت میں یہ کیفیت ہے تو اندازہ کرو کہ انکی مجلس و وعظیں کیا اثر ہوگا۔ ایک شخص نے خط لکھا کہ میں نے آپکی کتابیں پڑھی ہیں مجھ پر بہت اثر ہوا اس لئے میں بیعت ہونا چاہتا ہوں جواب لکھا یہاں سامنے آ جاؤ ہم آپ کو دیکھیں آپ ہم کو دیکھیں منیت کے بعد ہی بیعت ہو سکتی ہے۔

فرمایا۔ اگر سامنے جا کر دیکھو تو بالکل حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی منیت کا نمونہ تھے اور جو کتابوں میں لکھا یا ہے وہ عمل کر کے دکھایا ہے۔

فرمایا۔ ہر دعائیں یہ دعا بھی کرتی چاہیے کہ اللہ تعالیٰ سے استقامت فی الدین و اہتمام دین اور مقبول عمل کی توفیق مل جائے۔

فرمایا۔ ایک شخص نے بیعت کی درخواست کی حضرت نے فرمایا کہ ابھی خط و کتابت کرتے رہو۔ کچھ دن کے بعد ان صاحب کا دیہات میں جانا ہوا تو وہاں سے خط لکھا کہ حضرت یہاں بارغ وہاں اور سرسبز بہت ہے اس پر جواب دیا کہ آپ کو مجھ سے مناسبت نہیں ہے اسلئے بیعت نہیں کروں گا۔

فرمایا۔ شیخ کا مذاق دیر سے معلوم ہوتا ہے۔ اور دیر سے سمجھ میں آتا ہے لیکن شیخ کے رنگ میں رنگ جانا چاہیے۔

فرمایا۔ ہمارے حضرت کا مذاق یہ تھا کہ ہمہ وقت اپنے نفس کا جائزہ اور محاسبہ فرماتے رہتے تھے کبھی عمر بھر اس سے غافل نہیں رہے کہ کہیں میرا کردار میرا گفتار سنت کے رنگ سے جدا تو نہیں ہے۔ تحدث بالنعمت کے طور پر کسی انعام الہی کا ذکر فرما رہے ہیں کہ خدا کا یہ فضل حاصل ہے اور ذرا سی کھٹک ہوتی فوراً استغفار کرتے۔

فرمایا۔ ایک شخص حضرت دار کے وعظ میں شامل ہوا تو وعظ سننے کے بعد فرمایا کہ

ایسا داعظ ہم نے کبھی نہیں دیکھا جس کے ہر ہر لفظ میں اثر ہو۔

ایک مرتبہ حضرت والاؒ نے اثناء وعظ میں فرمایا کہ میرا لہجہ کبھی وعظ میں تیز ہو جاتا ہے سو یہ میری مزاج کی حدت کی وجہ ہے ورنہ میں بقسم کہتا ہوں کہ جو کچھ میں کہتا ہوں وہ سب نفس ہی کو کہتا ہوں، اپنے ہی نفس کو خطاب کرتا ہوں اپنے نفس کا علاج کرتا ہوں لہذا معین بطیب خاطر رہیں میں آپکو مفید طب نہیں کرتا۔ اسی لئے معنی طبین کم یا زیادہ آئیں یا نہ آئیں مجھے اس سے کوئی واسطہ نہیں کہ میں اپنے آپ ہی کو مفید طب بنا کر کہتا ہوں۔

فرمایا۔ تھانہ بھون میں حضرتؒ نے کسی کو دیکھا کہ لوکی پکا کر کھا رہا ہے اس سے پہلے دھیان نہ تھا بس دیکھتے ہی سنت کا خیال آگیا اور ملازم سے کہا کہ آج کے بعد سے جب تک بازار میں لوکی رہے ضرور لے آیا کر دے یہ تھا سنت کا جذبہ۔

ایک مرتبہ عہد کیا کہ میں نفس کا ایک ایک لمحہ کا جائزہ لیا کروں گا کہ کتنی باتیں کب کب کی ہیں اور پھر تین دن اسی میں سگے رہے یہ سب کچھ ہمارے لئے بھی کیا کہ ہم کو ایسا کرنا چاہیے۔ لہذا خوب معلوم کر دو کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کس طرح چلتے تھے بیٹھتے تھے سوتے تھے شمالی ترمذی کا اردو ترجمہ چھپ گیا ہے وہ منگالو اور پڑھو تمام سنتیں معلوم ہوں گی پھر اسی طرح ان پر عمل کرو نشر الطیب میں ایک باب ہے اس کو دیکھو اس میں درود شریف کے صفحے لکھے ہیں وہ بھی پڑھو۔ آخر یہ سب باتیں کب کرو گے۔ یہ تو کرنے ہی کی ہیں تین دن تک خوب مطالعہ کرو پھر اپنا معمول بنا لو۔

پھر تین دن کے بعد حیوۃ المسلمین کی روح نہم پڑھو۔ بلکہ میں تو کہتا ہوں کہ ہر جمعہ کو اس کو ایک مرتبہ پڑھ لیا کرو۔

فرمایا۔ شیخ ایسا ہونا چاہیے جو متبع شریعت و سنت ہو جس کے پاس بیٹھ کر اللہ تعالیٰ کی یاد تازہ ہو دنیا سے نفرت ہو جائے ایسا اگر شیخ مل جائے تو غنیمت جانو اگر ایسا شیخ نہ ملے تو میری تعلیم و تربیت کو غور سے پڑھا کر یہ بھی کافی ہے۔

فرمایا۔ اپنا جائزہ لیتے رہا کرو ہماری عبادت کیسی ہے۔ ہمارا معاملہ کیسا ہے ہمارا اخلاق کیسا ہے۔ فرمایا اخلاق کا جائزہ لینا ہو تو کراچی کی بس میں سوار ہو جاؤ سب معلوم ہو جائیگا۔



فرمایا۔ اپنی تمام زندگی اتباع سنت میں ڈھالو اپنا اخلاق معلوم کرنا ہو تو اپنی بیوی اور پڑوسی سے پوچھو دوست کیا جانے اخلاق کو۔

فرمایا۔ دوسرے سے خدمت لینا حضرت رحمۃ اللہ علیہ کو ناگوار تھا فرمانے کہ میں خادم ہوں مخدوم نہیں ہوں ملازم کو حقیر مت سمجھو وہ تمہارے معاوضے میں کام کرتا ہے تنخواہ دینا تمہارا احسان نہیں ہے۔ وہ اپنے کام کے پیسے لیتا ہے۔

فرمایا۔ چند باتیں تصوف کی مل گئیں ہیں اور درویش بن گئے اس طرح درویش نہیں بنتے۔ اگر ہلدی کی گانٹھ ملگئی تو بننے ہی بن بیٹھے۔

### فراغ دل زمانے

ایک مرتبہ حضرت رحمۃ اللہ علیہ کہیں تشریف لے جا رہے تھے کوئی بات ذہن میں آئی فوراً اس کو نوٹ کر لیا اور فرمایا کہ دل کا بوجھ کاغذ پر ڈال لیا ہے دل کو فارغ رکھنا بھی بڑا ضروری ہے ورنہ اعمال میں یکسوئی نہیں ہوتی تب بھی کام اطمینان سے نہیں ہوتا یہ فراغ قلب ہی کی بات تھی کہ دن بھر پچھتے پھرتے دس بارے روزانہ پڑھ لیا کرتے تھے لہذا ہم میں تواضع و غریب پر درمی حقوق کی ادائیگی اگر یہ نہ کریں گے تو کاہے کی مناسبت ہے، حضرت والا کی تواضع کا یہ حال تھا کہ کوئی بات ہوتی فوراً اپنے شیخ کی طرف منسوب فرما دیتے بات اپنی ہوتی اور منسوب کر دیتے بڑے میاں کی طرف اور حال یہ کہ جس کسی کو جس کام میں لگا دیا وہ اس میں کامیاب ہو گیا۔

حضرت رحمۃ اللہ علیہ ہر طالب کی حیثیت کے مطابق کام لیتے تھے۔

ایک مرتبہ ایک نئے میاں تھے انہوں نے خط لکھا کہ مجھ سے تعلیم و تربیت و معمولات پورے نہیں ہوتے کیا کروں جواب لکھا کہ کسی جگر دے میں پڑے تم کو مجھ سے محبت ہے۔ مجھ کو تم سے محبت ہے یہی کافی ہے شکستگی ہی کافی ہے کہ میں عاجز ہوں کرتا ہوں مگر معمول پورا نہیں ہوتا۔

فرمایا۔ امر بالمعروف کا مطلب یہ ہے کہ خیر خواہی کے ساتھ کسی کو بات کہنا اور نہ

نہایت چڑھی ہو تو کبر ہے اور بعض مرتبہ اللہ اللہ کرنے سے ہو جاتا ہے لہذا ایک شخص کو  
بے دماغی سے یہی لکھا تم اپنے ذکر بند کرو مسجد میں جھاڑو دو۔ صفیں بچھا دو نمازیوں کی  
بیتیں۔ سیدھی کرو۔

فرمایا۔ جتنی عبادات پر نگر کریں گے اتنی ہی غمی پیدا ہوگی۔ معصیت کی تاویل کرنا  
بھی معصیت ہے۔ جس نے اپنے آپ کو لغویت سے بچایا اس نے بڑا کام کیا۔ غفلت صرف  
وہی بری ہے جو معصیت کی محرک ہے اور لغویت اس کام کو کہتے ہیں جس سے نہ دنیا کا نفع ہو  
نہ دین کا نفع ہو۔

فرمایا۔ ہر عمل کی ایک خاصیت ہوتی ہے اور جب وہ خاصیت آدمی میں رونماں ہوتی ہے  
تو عجب و ناز پیدا ہوتا ہے اسلئے اجازت لی جاتی ہے تاکہ ناز نہ ہو کہ یوں سمجھیں کہ فلاں شخص کی  
اجازت سے یہ کام کیا تھا یہ ان کی برکت ہے ان کی دعا کا اثر ہے میں تو ان کا ایک خادم ہوں۔  
فرمایا۔ یاس اور نماز دونوں سبب ہلاکت ہیں ان دونوں سے حفاظت شیخ کا ہونا ہے۔  
خاتمہ باخیر بڑی نعمت ہے اس لئے بھی شیخ کا ہونا بڑا ضرورت کا کام ہے۔ اس لئے کہ  
خاتمہ کے وقت جو وسوسہ شیطان ڈالے گا وہ سب وسوسہ و خطرات کا علاج شیخ سے  
کراچکا ہے اگر ہزار شیطان کہے گا تو خود شیخ کی بات یاد آجائیگی ساری شریعت کا خلاصہ حقوق  
و حدود ہیں آدمی یہ جان لے کہ شرعی حدود اور حقوق کیا کیا ہیں۔

فرمایا۔ ہم لوگ بھی نوافل پرست ہیں نوافل ادا کرنے سے بزرگی ذہن میں بستی ہے  
فرائض میں تقدس کا پتہ بھی نہیں ہوتا۔

فرمایا۔ ایک لمحے کے لئے بھی کسی سے دین کا مخاطب ہو جائے تو غنیمت ہے سارے زمانے  
کے ہم مکلف نہیں کائنات عالم کا کہاں حق ادا ہو سکتا ہے اس کے لئے صرف استغفار ہے  
ہر کوتاہی کا علاج استغفار ہے۔

فرمایا۔ عبدیت کا اظہار شکر نعمت سے ہوتا ہے اور شکر نعمت واجب ہے اور ناگوار  
حالت میں صبر واجب ہے یہ دونوں مقام قرب ہیں۔

مقام کی تعریف فرمائی کسی عمل کی عادت ہو جانے کا نام ہے مثلاً شکر کا اہتمام کیا

کرتے کرتے عادت ہو گئی تو مقامِ شکر حاصل ہو گا۔

فرمایا۔ دعا کرنے کا حکم ہے اس لئے دعا کرتے ہیں آپ نے انجام پر کیوں نگاہ کی تھی کہ آئندہ یہ کام بھی ہو جائے آپ نے تعمیل کر لی دعا مانگی اور اس سے ان کی رضا و بسط ہو گئی اللہ تعالیٰ کا کہن مان لیا وہ راضی ہو گئے پس اب دعا کرنے پر شکر کرو اور اسی تعمیل کر لینے سے وہ راضی ہوتے ہیں دعا کرنے میں خدا کی رضا مل گئی اور کیا چاہتے ہو یہ کیا کم ہے کہ اس کی رضا مل گئی یہی زندگی کا حاصل ہے اور اگر جو دعا کی تھی وہ نہ ملی تو صبر کرو یہ سمجھو کہ وہ نہ دینے پر راضی ہے اگر دینے پر راضی ہوتے دیدیتے وہ نہ دیتے ہیں راضی ہیں تو صبر کرو اس طرح بھی اس کو رضا مل گئی تو صبر و شکر دونوں سے اس کی رضا حاصل ہوتی ہے اور اس سے اللہ تعالیٰ کا قرب نصیب ہوتا ہے تو نہ ملنے پر بھی قرب دیدیتے ہیں تو اگر کوئی ہزار عمدہ چیز مانگی ہو مگر قرب خداوندی سے تو بہتر نہیں ہو سکتی تو انجام کو کیوں دیکھتے ہو قرب مل رہا ہے۔ یہ دونوں طرح حاصل ہو جاتا ہے۔

فرمایا۔ غفلت اس کو کہتے ہیں کہ آدمی اپنے خالق کو بھول جائے اور اپنی ہلاکت کے عمل کرے۔

فرمایا۔ صبر و شکر استغفار سب زیادہ قرب کا ذریعہ ہے۔

فرمایا۔ توبہ و استغفار کر لینے کے بعد کبھی بھی نا امید نہ ہونا ہرگز نہیں جب وہ خود حکم دیدیتے ہیں کہ توبہ کرو استغفار کرو تو ضرور معاف فرمائیں گے۔

فرمایا۔ کہ ایک مرتبہ توبہ استغفار کر لینے کے بعد پھر انہی گناہوں کا استغفار کرنا اور بار بار یاد کرنا خود بینی ہے ایک مرتبہ خوب جی بھر کر توبہ کر لو اتنا کہ اتنا کہ تھیک ہو جاؤ اور یہ کہو کہ اہم تو اب تھک گئے عاجز ہیں بس عاجزی مانگی قوی امید کرو کہ اللہ تعالیٰ نے معاف کر دیا ہے۔ اس کے بعد پھر انہی گناہوں کو یاد کرنا بڑی نا قدری ہے۔ استغفار کرنے کیسے اس نے توفیق دی زبان دی دل میں ڈالا کہلوا یا بھی انہوں نے تو معاف کر دیا کیوں نہ فرما دیں گے پھر یہ سمجھنا کہ معاف نہیں کیا یہ نعمت استغفار کی نا قدری ہے ناشکری ہے آپ نے گویا اس کو غفور الرحیم نہ سمجھا۔

حضرت نجم احسن صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا۔ یہ تو ایسا ہے کہ ہم کسی حاکم کو درخواست دیں اور اس میں یہ لکھیں کہ مجھ کو فلاں ضرورت ہے لیکن آپ سے امید نہیں کہ یہ کام آپ کر بھی دیں گے یا نہ یہ کوئی درخواست ہے اسی طرح یہ بھی ہے کہ امید تو ہے نہیں کہ آپ معاف کر دیں گے لیکن خیر معافی مانگ لیتے ہیں۔ یہ بھی کوئی استغفار ہے اچی یوں سمجھو کہ وہ ضرور معاف کر دیں گے ضرور معاف کر دیں گے اور اگر وہی گناہ معاف نہ کریں گے تو اور کا ہی کو معاف کریں گے آپ ہی بتائیے وہ غفور الرحیم کا ہے کہ میں انہوں نے گناہ کو کسی کیسے تو پیدا کیا ہے وہ ہمارے لئے ہی پیدا کیا ہے لہذا گناہ ہم سے ہو گا گناہ بھی تو اس کی مخلوق ہے وہ بے چارہ کہاں جائے گا اس کا بھی تو وہی خالق ہے لہذا ہم سے گناہ بھی ہو گا اور وہ بخشدیں گے بھی ضرور۔ اچی جب ہمارے ابا نے کبھی نہیں مارا تو وہ کیوں ماریں گے۔

فرمایا۔ گناہ تو محدود ہیں اور رحمت خداوندی غیر محدود ہے تو محدود کا تو اتنا خیال کیا اور لا محدود رحمت پر نظر نہ کی ماحق وسعت کل شئی۔

لہذا ماضی کے گناہوں کو جو لا محالہ محدود ہیں ان کے لئے ایک استغفار کافی ہے مستقبل میں کوئی گناہ نہیں وہاں صرف رحمت خداوندی اس کے احسانات ہی احسانات ہیں ان پر نظر کرو اور مستقبل بھی لا محدود ہے دخول جنت بھی مستقبل میں ہے لہذا! مستقبل کو سوچو اور شکر کرنے رہو جو گناہ صادر ہو جائے استغفار کیا وہ ماضی ہوا ہر وقت گناہ ہو ہر وقت استغفار ہو اور ماضی میں داخل کرے مستقبل میں رحمت خداوندی کے معنی کا استغفار رکھو دل میں اس کے احسانات اور دعا شکر کرتے رہو۔ وصلى الله تعالى على خير خلقه محمد وآله واصحابه وبارك وسلم۔

بغیر شدید ضرورت کے قرض لینا اور خصوصاً جب کہ وقت پر ادائیگی کا کوئی یقینی ذریعہ نہ ہو تو بجائے قرض لینے کے کچھ دنوں تک دکھنت برداشت کر لینا زیادہ بہتر ہے یا مردوتا قرض دینا جبکہ خود اس کی استطاعت نہ ہو اکثر شدید سختی اور دکھنت کا باعث ہوتا ہے اس لئے ضرورت ہی میں کچھ بے مردتی سے کام لیا جائے، اسی میں مصلحت ہے۔ (از افادات عارفیہ)



• حَسْبُكَ اللَّهُ بِخَصَّتْ •

## خَوَاتِمُ الْعُرَفَاءِ عَالِمِی

اللہ تعالیٰ کا احسان ہے کہ اس نے احقر کو عارف باللہ حضرت مولانا ڈاکٹر محمد جبار الحق قدس اللہ سرہ کی مجالس میں شرکت کی توفیق عطا فرمائی، اودان سے فیضیاب ہونے کا موقع عطا فرمایا۔ حضرت والارحمۃ اللہ علیہ سے سنی ہوئی چند باتیں پیش کر رہا ہوں جن پر عمل کرنے سے زندگی بدل سکتی ہے۔ اور دنیا و آخرت کی کامیابی اور کامرانی حاصل ہو سکتی ہے، اس لئے کہ یہ جواہرات حضرت عارفی رحمۃ اللہ علیہ کی زندگی کا پتھر ہے، جو آپ نے اپنے خدام کے سامنے بیان فرمائے، یہ ملفوظات وہ ہیں جو حضرت والارحمۃ اللہ علیہ نے اپنے مطب میں ارشاد فرمائے، اس لئے کہ حضرت والارحمۃ اللہ علیہ کا معمول یہ تھا کہ جب آپ مطب میں تشریف لاتے تو آپ کی خدمت میں روحانی مریض اور جسمانی مریض دونوں حاضر ہوتے، کبھی آپ جسمانی مریضوں کی طرف توجہ فرماتے، اور کبھی روحانی مریضوں کی طرف، اور جو لوگ صرف جسمانی امراض کے لئے حاضر ہوتے، ان کو بھی آپ کچھ روحانی غذا دے دیتے۔ اور انکو خالی نہیں جانے دیتے۔

## ہمت اور وقت کی قدر

ایک سلسلہ گفتگو میں فرمایا کہ: اگر ہمت کا سرمایہ کسی کے پاس موجود ہے، تو اس کا جائز استعمال ہونا چاہیئے۔ ناجائز استعمال نہ ہونا چاہیئے، ہمت اچھی چیز ہے، مگر جب حدود کے اندر ہو ۛ

ہمت مردانِ مد خدا

یہ تو صحیح ہے، مگر جہاں ہمت کا مصرف صحیح ہو، وہاں ہمت کرو، لیکن ہمت کرنے سے اگر اپنے نفس پر ظلم ہو رہا ہو، تو اپنے نفس پر ظلم کر کے ہمت کرنا جائز نہیں۔

## میری کامیابی کا ذریعہ

فرمایا کہ میں اپنی زندگی کا ماحصل یہی سمجھتا ہوں کہ الحمد للہ! میں نے دو چیزوں کی قدر کی ہے۔ گھڑی اور قلم، انہیں دو چیزوں نے مجھے عزت دی ہے، یہی دونوں چیزیں ذریعہ بنی ہیں میری کامیابی کا، جتنا بھی بن پڑا، میں نے ہمت سے کام لیا، ہمت سے میں نے کبھی کوتاہی نہیں کی، اس عمر میں بھی، بخدا کی شدت میں کھڑے ہو کر نماز پڑھتا ہوں لوگوں نے اور ٹاکٹروں نے منع کیا کہ نماز کھڑے ہو کر مت پڑھیں، بیٹھ کر پڑھ لیں، میں نے کہا، جب میں کھڑا ہو سکتا ہوں تو بیٹھ کر کیوں پڑھوں۔  
اپنی ابتدائی عمر کا ایک شعر یاد آیا، بس اللہ تعالیٰ نے یاد دلادیا ۛ

کیا اعتبار ہستی ناپائیدار ہے

دم کا جب اک تارِ نفس پر مدار ہے

آئی، نہ آئی نہ آئی، میں اسی کو غنیمت سمجھتا ہوں کہ جو وقت مل جائے کر لو اس میں جتنا کرنا ہے۔ ۛ

ابھی تو ان کی آہٹ پر میں آنکھیں کھول دیتا ہوں

وہ کیسا وقت ہوگا، جب نہ ہوگا یہ بھی! مکان میں

بھئی! کر لو جو کچھ کرنا ہے۔

## زحمت پر عمل

پھر فرمایا کہ: یہ میری زیادتی تھی، آپ لوگ ایسا کریں۔ زحمت پر عمل کریں، میں اس لئے کر لیتا ہوں کہ معلوم نہیں پھر موقع ملے یا نہ ملے، وضو کرنے میں بیماری کا اندیشہ ہو، تیم کر لو، اور زحمت پر عمل کر لو، سفر میں اور مرض میں اللہ تعالیٰ نے اجازت دی ہے کہ جب تم سفر میں ہو، یا بیمار ہو تو ہمت سے کام نہ لو، بلکہ زحمت پر عمل کرو، اور فرائض ادا کر لو، مستحبات چھوڑ دو، اللہ تعالیٰ تمہارے لئے ٹیسر چاہتے ہیں تو یہ زحمت ہے، اس پر عمل کرو۔

## تعلق مع اللہ کا طریقہ

فرمایا کہ دو چیزیں کرنے سے اللہ تعالیٰ کا تعلق پیدا ہوتا ہے، ایک تو اسکی نعمتوں پر شکر ادا کرنے سے، اور دوسرے استغفار کرنے سے، جیسا کہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے :-  
 سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝ اس لئے یہ دعا پڑھا کرو :-  
 سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ ۝ رات کو سوتے وقت تین چار مرتبہ پڑھ لیا کرو، انشاء اللہ حق ادا ہو جائے گا۔

## عطار الہی غیر فانی ہے

فرمایا کہ ہمارے الفاظ فانی ہیں، لیکن الفاظ کے معانی غیر فانی ہیں، جب ہم نے پڑھا :-  
 سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ تو الفاظ فنا ہو گئے، ختم ہو گئے، لیکن ان الفاظ کی تاثیر جو تھی، وہ غیر فانی ہو گئی، وہ ہمارا سرمایہ ہے آخرت تک، اور جنت تک، کیوں؟ اس لئے کہ تاثیر عطار الہی ہے، اور عطار الہی غیر فانی ہے، ہمارا ہر عمل چاہے نماز ہو، روزہ ہو، حج ہو، سب سورۃ فانی ہیں، مگر انکی حقیقت غیر فانی ہے، کیونکہ وہ عطار الہی ہے۔

بھئی! اچھے عمل کرتے رہو، شکر ادا کرتے رہو، توبہ کرتے رہو، عمر بھر یہی کرتے رہو، ایمان کامل

ہو جائے گا۔

## اپنی صلاحیت کے مطابق کام کرو

فرمایا کہ: ایک چیز میں کہا کرتا ہوں ”صلاحیت“ ہر شخص کی صلاحیت جدا جدا ہے، یہ اللہ تعالیٰ کی وحدانیت ہے کہ انکی ہر مخلوق منفرد ہے۔ یہ میرا انگوٹھا تمام عالم امکان میں منفرد ہے، اس سے ہماری انفرادیت معلوم ہوتی ہے کہ ہم دوسری مخلوق سے منفرد ہیں، تو صلاحیت درست کرنے کا جو ضابطہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک پسندیدہ تھا وہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے واسطے سے ہمارے پاس آیا۔ سب سے پہلے حضرت صدیق اکبر رضی اللہ عنہ نے وہ ضابطہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے پورے کا پورا لے لیا۔ اور وہی ضابطہ ہمارے پاس ہے، لیکن طرف ہر ایک کا الگ الگ ہے۔ انکا ظرف زرین تھا، بلوری اور نورانی تھا، ہمارا ظرف ان صفات سے خالی ہے، لیکن ضابطہ وہی ہے کہ انہوں نے اپنی صلاحیت درست کی، ہم اپنی صلاحیت درست کریں، تو الحمد للہ وہی چیز جو حضرت صدیق اکبر رضی اللہ عنہ کے پاس تھی، وہ ہمارے پاس بھی ہے، ہم اپنی صلاحیتوں کو اسکو مطابق کریں تو عند اللہ مقبول ہو جائیں گے، ہمارے اندر جو صلاحیتیں ہیں، اس میں نقص ہے، مانگو اللہ میاں سے، یا اللہ! ہماری صلاحیتوں کو درست فرمادیکھئے تاکہ ہم بھی آپ کی رحمت اور رضا کے مورد بن جائیں، اور ہماری قابلیتوں کو درست فرمادیکھئے۔ آمین اللہ العالمین، بحق سید المرسلین۔ آمین، بوجہک یا ارحم الراحمین۔



پھلوں سے بنا  
پھولوں میں بسا

نورس قومی مشروب



ضبط و ترتیب :- رشید شرف سیفی

## افتتاح بخاری کے موقع پر

### حضرت عارفی قدس سرہ کا اساتذہ و طلبہ دارالعلوم سے آخری خطاب

۷۸، شوال ۱۴۳۵ھ مطابق ۱۴ جولائی ۱۹۸۵ء بروز بدھ (کو دارالعلوم کراچی کے تیسری سال کے آغاز اور افتتاح بخاری کے موقع پر جامع مسجد دارالعلوم میں حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب طائفی قدس سرہ سابق صدر دارالعلوم کراچی نے طلبہ اساتذہ اور منتظمین سے اہم خطاب فرمایا، جو بیش قیمت نصائح اور ہیڈس کے سب سے بہترین لائحہ عمل پر مشتمل ہے، یہ خطاب ذیل میں پیش خدمت ہے

الحمد لله رب العالمين و الصلوة والسلام على سيد المرسلين و على آله واصحابه اجمعين  
الحمد لله ثم الحمد لله ہمارے زندگی کے لئے آدھی بڑی مبارک ساعت ہے، یہ بڑی عظیم سعادت ہے کہ ہم آج دارالعلوم کراچی میں محسوس بخاری شریف کا آغاز کر رہے ہیں، یا اللہ! دس حدیث کی یہ مبارک ساعت جو آپ نے ہمیں عطا فرمائی جس میں ہم آپ کے نبی رحمت علیہ السلام کی احادیث کا لحد محسوس بخاری شریف کا آغاز کر رہے ہیں جس کو اللہ تعالیٰ نے ایک اعلیٰ مقام عطا فرمایا ہے اور اس کے بڑے فیوض و برکات قیامت تک کے لئے جاری کر دیئے ہیں، یا اللہ! اس کی برکات کا تمام پڑھنے والوں کو اور پڑھنے والوں کو خود بناد دیجئے، یا اللہ! شرح صدر فرماد دیجئے۔ یا اللہ! ایسے علوم عطا فرمائیے جو سب کے لئے باعث برکت و منفعت بھی ہوں اور باعث سعادت و ابراہیم بھی، پھر ان علوم کے مطابق توفیق عمل بھی عطا فرمائیے یا اللہ! ہم دل سے دعا کرتے ہیں، ہماری دعا قبول فرمائیے۔

یا اللہ! آج دارالعلوم کراچی کی تعلیم کا آغاز ہوا ہے، آپ کی ہزاروں برکتوں کے ساتھ، ہزاروں حفاظتوں کے ساتھ، ہزاروں نعمات کے ساتھ آپ ہی اعانت و نصرت فرمائیے، یا اللہ! اہلئے اساتذہ کے ایمان کو بھی اور ہمارے طالب علموں کے ایمان کو بھی زیادہ سے زیادہ اپنے کلام پاک کے اور اپنے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے کلام مبارک کے انوار و تجلیات سے بہرہ ور ہونے کی توفیق کامل عطا فرمائیے، ہر طرح کی خیر و برکت عطا فرمائیے، ہر طرح کے شرف و فتنہ سے محفوظ فرمائیے، یا اللہ! خالفتہ اپنی رضا کیلئے توفیق اعمال فرمائیے، ایسے اعمال کی توفیق دیجئے جو آپ کے پسندیدہ ہوں جو آپ کے نبی رحمت صلی اللہ علیہ وسلم کی سنت کے مطابق ہوں، یا اللہ! اس پر ہر شخص کو عمل کرنے کی توفیق عطا فرمائیے، یا اللہ! اپنی تعلیم کی خیر و برکت ہمیشہ پھیلتی رہے، اس کی تذکیر بھی ہوتی رہے، یا اللہ! یہ سلسلہ ہر طرح کی توفیق کے ساتھ، اعانت کے ساتھ جاری رہے، یا اللہ! اساتذہ کو، طالب علموں کو، منتظمین کو سب کو سعادت عطا فرمائیے، اخلاص نیت عطا فرمائیے، یا اللہ! جذبہ عمل عطا فرمائیے، اپنی رضامندی کی توفیق عطا فرمائیے۔

میرے لئے یہ خوش نصیبی کی بات ہے اور آپ لوگوں کی محبت ہے کہ باوجود ضعف کے آپ لوگوں کے درمیان حاضر ہونے کی توفیق ہوئی اور یہ سعادت حاصل ہوئی، میں آپ لوگوں کے حق میں دعائیں کرتا ہوں اور اپنے حق میں آپ لوگوں کی دعائیں چاہتا ہوں، میرے دل میں اس دارالعلوم کی عظمت بھی بہت زیادہ ہے اور محبت بھی، مجھے آپ لوگوں سے ایک دلی لگاؤ ہے، مجھے بڑی مسرت ہے اور مجھے اس بات سے بڑی تقویت ہے کہ آپ سب حضرات سیرا خیال رکھتے ہیں مجھ سے حسن ظن رکھتے ہیں، اور میں آپ لوگوں کے لئے دعائے خیر کرتا ہوں اور آپ کی محبت کی قدر کرتا ہوں۔

میں آپ سے کیا بات کروں؟ میں صرف چند باتیں دردِ دل کے ساتھ آپ لوگوں کے سامنے پیش کرتا ہوں، پہلے بھی کئی بار عرض کر چکا ہوں، دعائیں کہنے کو اللہ تعالیٰ آج بھی مجھے توفیق دے کہ میں اخلاص نیت کے ساتھ آپ کے سامنے آپ سب کے فائزے کی باتیں عرض کر سکوں، میں بھی دعا کرتا ہوں کہ اللہ تعالیٰ آپ کے قلوب میں قابلیت اور صلاحیت دے، رشد و ہدایت کی باتیں سن کر ان پر عمل کریں۔

دیکھنے میں یہ ایک معمولی بات نظر آتی ہے، اور ایک رسم کی طرح محسوس ہوتی ہے کہ آج دارالعلوم کی تعلیم کا آغاز ہو رہا ہے، تمام خیر و برکات کے ساتھ، تمام نیک توہیات کے ساتھ مگر درحقیقت یہ معمولی چیز نہیں، دینی درس گاہ معمولی چیز نہیں، یہاں اللہ کے کلام اور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی احادیث کی تبلیغ ہوتی ہے اشاعت ہوتی ہے، تعلیم ہوتی ہے، یہ ایک بڑا مرکز ہے، بڑا بنیادی مرکز ہے جس میں اللہ تعالیٰ کی تمام خیر و برکات کا ظہور ہوتا ہے، دین کی بقا اس سے ہے، دین کی حفاظت اس سے ہے، دین کی تبلیغ اس سے ہے، یہ دارالعلوم معمولی چیز نہیں ہے اس کی قدر کر دیے ایمانی اور اسلامی شعائر کا ایسا مرکز ہے کہ جس کی مثال کہیں نہیں، دنیا بھر میں جانے کتنی درس گاہیں ہیں، جانے کتنے فنون ہیں، جانے کتنی رائج الوقت چیزیں ہیں، لیکن یہ دارالعلوم کی قسمت ہے کہ یہاں پر اللہ اور اللہ کے رسول کے دین کی تعلیم دی جاتی ہے، یا اللہ! حضرت امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ کو مقامات رفیعہ عطا فرما، اور جات عالیہ عطا فرما، کہ انہوں نے ہمارے سامنے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی احادیث صحیحہ کا خزانہ جمع کر دیا، یا اللہ! ان کی برکات ایمانی سے ان کے فیض روحانی سے، بڑھانے والوں کو، بڑھانے والوں کو قیامت تک سبھی کو فیضیاب و سیراب فرما۔

یا اللہ! اپنے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے صدقہ جتنی بھی اس کتاب کے اندر برکات ہیں، رحمتیں ہیں، ہمیں سب سے بہرہ ور فرما، طلباء کو بھی اور اساتذہ کو بھی اور تمام حاضرین کو بھی۔

کن بخاری شریف کا افتتاح ہو رہا ہے یہ کتاب بڑی بابرکت کتاب ہے، بڑی خیر و برکت والی کتاب ہے، یہ ایمان و اسلام کی اساس و بنیاد ہے، اس کی ابتدا ایسی حدیث شریف سے فرمائیے جس میں ہے، اور نیت خالص ہمارے تمام عمر کا سرمایہ ہے، نیت خالص ایک یون کے ایمان کا جوہر ہے، یا اللہ! آپ کے جس بابرکت حدیث سے ابتدا کرتے ہیں یا اللہ! اس کی اہمیت سب کو عطا فرمائیے، صلاحیتیں عطا فرمائیے، ہماری نیتوں میں اخلاص عطا فرمائیے، یا اللہ! اس کے اثرات و ثمرات سے محروم نہ فرمائیے۔

دعا کر دو یا اللہ! آج جو کام آپ کے نام سے شروع کیا جا رہا ہے اس کو نیت قبولیت عطا فرمائیے، ہماری صلاحیتیں ہماری استعدادیں سب ناقص ہیں، لیکن ہماری نیت یہ ہے کہ یا اللہ! ہم آپ کے دین کو حاصل کریں گے اور آپ کے دین کی اشاعت کریں گے اور دین کے تقاضوں پر عمل کریں گے، ہم اہتمام سے یہ نیت کرتے ہیں، یا اللہ! اخلاص نیت کے برکات و ثمرات ہمیں عطا فرمائیے تاکہ کچھ بھی ہم اللہ اور اللہ کے رسول کی باتیں نہیں ان پر عمل کریں، جو ضابطہ حیات و محلات ہمارے لئے مقرر کیا گیا ہے اس پر عمل کریں، یا اللہ! اخلاص نیت ہم کو عطا فرمائیے، اس کے ثمرات و برکات، ہمیں مالا مال فرمائیے، یا اللہ! ہماری حفاظت فرمائیے ہماری نیتوں کو درست فرمادیجئے، یا اللہ! جو علم بھی ہم حاصل کریں ہمارا مقصود اصل آپ کی رضا ہو، ہمارا مقصود رحمت آپ کی رضائے کاملہ ہو۔

آپ ہمارے خالق ہیں، رزاق ہیں سب ہی کچھ میں، ہم آپ کے بندے ہیں، آپ کی مخلوق ہیں، ہم کیسے حق ادا کریں؟ کس طرح حق ادا کر سکتے ہیں؟ ہماری کیا مجال؟ یہ آپ کے نبی رحمت صلی اللہ علیہ وسلم کا صدقہ اور طفیل ہے کہ وہ ہم کو بتائے ہیں، انہوں نے اپنی عملی زندگی سے اپنے ارشادات سے ہم پر واضح کر دیا ہے کہ ایک بندہ کا تعلق اللہ تعالیٰ سے کس طرح ہو سکتا ہے؟ اور وہ تعلق کس طرح صحیح ہوگا؟ یہ احادیث نبوی صلی اللہ علیہ وسلم ہیں تعلق مع اللہ پیدا کرنے کیلئے ہیں، اللہ تعالیٰ کی رحمت ان کی غفارت ان کے تمام گناہوں سے ہمارے تعلق جوڑنے اور ان سب سے ہم کو متعارف کرانے کیلئے ہیں، ان کے انوار و تجلیات سے ہمارے قلوب کو معمور کرنے کیلئے ہیں۔

اخلاص نیت کا کیا مطلب ہے؟ اس کا مطلب ہے: "إِنَّا صَلَوْنِي وَتَشِيئِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي" یا اللہ! رحمت الخالقین جو کام ہو اس کی رضا کیلئے ہو، ہمارا ایک ایک لمحہ اتباع نبی صلی اللہ علیہ وسلم میں گزرتا ہے، اللہ تعالیٰ سے صحیح تعلق پیدا کرنے کا، ان کی معبودیت اور رزاقیت کا حق ادا کرنے کا واحد مستند و معتبر طریقہ یہی ہے کہ ہم ان کے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی اتباع کریں۔ آپ کے سامنے احادیث آئیں گی جو ہمارے لئے بڑی سبق آموز ہیں، ہماری زندگی کا سرمایہ ہیں، یہ حدیثیں ہم کو بتائیں گی کہ ہم اللہ تعالیٰ سے کس طرح تعلق پیدا کر سکتے ہیں؟ اس حق عبدیت کس طرح ادا کر سکتے ہیں؟ اس لئے آج بخاری شریف کی پہلی حدیث شریف: "إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ" پڑھتے ہوئے سچے دل سے عہد کر دو کہ ہم یہ درس اس نیت سے شروع کر رہے ہیں کہ جو کچھ ان احادیث میں فرمایا جائیگا اپنی زندگی کو اس میں ڈھال لیں گے، اس کو اپنا حرد و ایمان بنالیں گے اس کو اپنی روحانی ترقی کا ذریعہ بنالیں گے، اس نیت سے پہلی حدیث شریف پڑھو، خالص نیت سطرط ہے۔

جب بڑھنے پڑھانے کے لئے میٹھا کردہ پیلے اشرِ تعالیٰ سے رجوع کرنا کر دے، جیسے آج ابتدا میں ربّ یستر ولا تعسر  
و تمّم بالخیر اور "ربّ اشرح لی صدری ویسر لی امری" واحلل عقدة من لسانی یفقهہوا  
قولی" پڑھ لیا، اسی طرح رجوع ال اللہ کرنا اور یوں کہا کر دے یا اللہ! ہماری صلاحیتوں میں نقائص ہیں، ہماری  
استعداد ناقص ہے، لیکن ہم آپ کا دین حاصل کر رہے ہیں اس لئے ہمارے نقائص دور فرما دیجئے، ہمارے حالات  
درست فرما دیجئے، ہمیں عقل سلیم عطا فرمائیے، یا اللہ! دین کے مقصدیات پر عمل کی توفیق عطا فرمائیے اور نقائص  
عمل بھی پیدا فرمائیے اور ہمارے اعمال کو نفس و شیطان کے دکانوں سے ہمیشہ بچائے رکھئے، ہر روز پہلے یہ دُعا  
اشرِ تعالیٰ کی بارگاہ میں کر لیا کرو۔

تم کلام اللہ کیوں پڑھتے ہو؟ جانتے بھی ہو یہ کیا چیز ہے؟ یا صرف اتنا سمجھنا کافی ہے کہ یہ عربی  
زبان میں ہے، ہم اس کے تراجم پڑھتے ہیں، اس کے مطالب بیان کرتے ہیں، اس کی شان نزول بیان کرتے ہیں  
آداب بیان کرتے ہیں، اس لئے پڑھتے ہیں کہ اس کی تفاسیر بیان کریں، کیا اتنا سمجھنا کافی ہے؟ بلاشبہ یہ  
چیزیں بھی بنیادی ہیں، لیکن صرف اتنا ہی کافی نہیں۔ کلام اللہ تو ایک مکمل ضابطہ حیات و مہمات ہے، دُنیا کیلئے  
بھی آخرت کیلئے بھی، یہ بتلاتا ہے کہ ایک صاحبِ ایمان کو کس طرح زندگی بسر کرنی چاہیئے؟ اس کے اوپر کون کون  
فرائع و وابستہ ہیں؟ اور اس کی کون کون سی در و دریاں ہیں؟ سب کا بیان اس کلام اللہ میں ہے، سب کے پہلے  
عقائد صحیح ہو جانے چاہئیں، جب تک عقائد صحیح نہ ہوں گے تو حیدرِ صحیح نہیں ہوگی، آخرت کا یقین نصیب ہوگا  
پھر نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت ہونی چاہیئے، جب تک آپ سے محبت نہ ہوگی، ایمان فیر معتبر اور بالکل ناقص  
ہوگا، یہ ایمان کی بنیادی چیزیں ہیں یہ چیزیں کیسے معلوم ہوں گی؟ کلام اللہ کے پڑھنے سے، احادیث کے پڑھنے  
سے، یہ آداب، یہ طریقے، یہ علم کلام اللہ اور کلام رسول ہی سے حاصل ہوں گے، غایت حیات ہماری یہی ہے کہ  
کلام اللہ اور کلام رسول کو اپنا ضابطہ حیات و مہمات بنائیں، انسان اشرف المخلوقات ہے اس کو کس طرح زندگی بسر  
کرنی چاہیئے؟ عالم تعلقات میں کس طرح رہنا چاہیئے؟ کیا ضابطہ حیات ہونا چاہیئے جو اس کیلئے دُنیا میں بھی سرمایہ ہو اور  
آخرت میں بھی؟ یہ سب کلام پاک اور احادیث شریفہ ہی سے معلوم ہوگا۔

ایک دُعا ہے، بڑے کام کی "دبنا آتانی الدنیا حسنة" اے اللہ! ہم کو وہ حسنات عطا فرمائیے  
جو آپ کے علم میں ہیں اور وہ ہمارے لئے ضروری ہیں، ہم حسنات کے محتاج ہیں، یہ حسنات ہمیں کہاں سے معلوم ہوں گے؟  
کلام اللہ اور کلام رسول سے! حسنات کا کیا مفہوم ہے؟ وہ تو اللہ تعالیٰ ہی کے علم میں ہے، لیکن اصولی بات یہ ہے کہ ہم  
ایسی زندگی گزاریں کہ اللہ ہم سے راضی ہو جائے، دُنیا میں دُعا کی سوائے بچے، ہمیں اور آخرت میں خدا سے محفوظ رہیں اسی  
لئے استاد ہے "دبنا آتانی الدنیا حسنة وفي الآخرة حسنة دقتا عذاب النار"۔

کلام اللہ اور احادیث نبویہ پڑھنے پڑھانے کی یہی غایت ہے کہ ہم کو ضابطہ حیات معلوم ہو جائے کہ اللہ  
تعالیٰ کہیں، توں سے راضی ہونے میں، اور کہیں! توں سے ناراض؟ اللہ تعالیٰ نے تمام مخلوقات میں ہم پر خصوصی رحم فرما کر ہمیں  
شرفِ سریت سے نوازا، اور اشراف المخلوقات قرار دیکر تبار فرمایا ہے، صرف اسی لئے کہ اللہ تعالیٰ کے مقرر کردہ ضابطہ  
و مہمات کی تفسیر کرتے رہیں اور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی حیاتِ طیبہ کو اپنے لئے عملِ نمونہ قرار دیکر اس کے معانی



عمل کرتے رہیں آپ کی حیثیت یہ اعمال صالحہ میں ہمیں اختیار کرنا چاہیے ارشاد ہے: **وَاَعْمَلُوا الصَّالِحَاتِ** ارشاد ہے: **اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ اُولٰٓئِكَ** اللہ تعالیٰ نے اپنے کلام پاک میں اعمال صالحہ کی ترغیب کس لئے دی ہے؟ ہمارے فائدے کیلئے یا ہماری زندگیاں منوانے کیلئے، اسلئے ہمیں اعمال صالحہ کو اختیار کرنا چاہیے۔ لیکن کس طرح؟ اتباع سنت کے ذریعے!

کلام اللہ اس لئے پڑھایا جاتا ہے تاکہ ہمیں معلوم ہو جسے کہ اللہ تعالیٰ نے ایک بشر کیلئے، اثرات المخلوقات کیلئے ایسا ضابطہ حیات بنایا ہے جو، سیکلئے دنیا میں بھی سراپا ہے اور آخرت میں بھی، پھر سنت نبوی کے ذریعے اس ضابطہ حیات پر عمل کرنے کا طریقہ بتا دیا، اور اس کی حدود بتا دیں۔

احادیث شریفہ کی جو کتابیں آپ پڑھتے ہیں ان کی غایت کیا ہے؟ اللہ تعالیٰ نے جو احکامات ہمیں دیئے ہیں، اور جو ضابطہ حیات ہمارے لئے مقرر کیا ہے، ہم اس کے مطابق اپنی زندگی کو ڈھالیں اور دنیا میں بھی سرخروئی حاصل کریں، اور آخرت میں بھی، اس طرح اللہ تعالیٰ کی رضا کا، اس کی رحمتوں کا مورد بنیں، ارشاد ہے: **وَاَنْتُمْ اَلَا عُلُوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ** اگر تم نے اللہ اور اللہ کے رسول کی اطاعت کی تو تم سرخرو ہو گے سب پر غالب ہو گے۔

کچھ پتہ چلا کہ ہماری تعلیم و تعلم کا مقصد کیا ہے، اصل مقصد ہے، ضابطہ حیات کا معلوم ہونا، وہ کہاں سے معلوم ہوگا؟ کلام پاک سے، کس طرح اس پر عمل کریں؟ یہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی حیات طیبہ اور آپ کی احادیث ہمارے معلوم ہوگا۔ یہی مقاصد ہیں ہماری تعلیم کے، یہی غایت ہے کلام اللہ اور کلام رسول پڑھنے کی!

بہر حال کلام اللہ کی تفاسیر اور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی احادیث کی تعلیم و تربیت کی غایت آپ کے علم میں آگئی یعنی ضابطہ حیات کا معلوم ہونا، اب آپ اپنے اثرات المخلوقات ہونے کا حق بھی ادا کریں، یعنی جو کچھ بھی پڑھیں پڑھائیں اس پر عمل کرتے رہیں، یہ غایت الغایات ہے ہمارے تمام علوم کی، پڑھتے پڑھاتے جاؤ، سمجھتے جاؤ اور عمل کرتے جاؤ، ابھی طالب علمی کے زمانے ہی سے شروع کر دو۔

پہلے اساتذہ ایسے ہی پڑھاتے تھے کہ ایک حدیث شریف پڑھائی، فوراً پوچھتے کہ بتاؤ اس کی غایت کیا ہے؟ اس کا معنی کیا ہے؟ اور پھر اس پر عمل کرنے کا طریقہ بھی بتاتے، اس کی عمل تربیت بھی دیتے، اور اس کی نگرانی بھی کرتے، اس طرح ایک وقت میں اساتذہ طلبہ کو شریعت کے احکام بھی بتاتے تھے اور طریقت کے طریقے بھی سکھاتے تھے کہ یہ جو کچھ تم پڑھ رہے ہو اس کا تمہاری زندگی سے کیا واسطہ ہے؟ کس طرح تم اس کو استعمال کرو گے؟ کس طرح اس کو اپنے اوپر منطبق کرو گے؟ تاکہ تم خبر البشر و اثرات المخلوقات سمجھنے کے بجائے طور پرستی ہو سکو اور **لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ** کا صحیح مصداق بن سکو۔

اعمال صالحہ کیا ہیں؟ کلام الہی کو ضابطہ حیات بنانا اور اس پر عمل کرنا نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی تعلیمات کو دینا نا، یہ میں بار بار اس لئے دہرا رہا ہوں کہ دل نشین ہو جائے کہ تمام تعلیم و تعلم کی غایت الغایات یہ ہے کہ ہم اللہ اور اللہ کے رسول کے کلام کو پڑھیں اور اپنے اوپر منطبق کریں اور اس طرح زندگی بسر کریں کہ ہمیں یہاں بھی اللہ تعالیٰ کی رضا کا کامل نصیب ہو اور آخرت میں بھی، انسان سے نفرتیں اور کوتاہیاں ضرور ہوتی ہیں، نفس و شیطان ضرور راہ میں داخل ہوتے ہیں، لیکن اللہ تعالیٰ سے رجوع کر دو وہ اس تمام خرافات سے نجات عطا فرمادے گا۔

یاد رکھو! جب بھی قرآن و حدیث پڑھئے، چھو۔ یہ دُعا کر کے پڑھا کر دو کہ یا اللہ! یہ آپ کا کلام ہے، آپ کے ہی کا کلام ہے، ہماری استعداد ناقص ہے یا اللہ! اس کلام کی برکت ہے، اس کلام کے انوار و تجلیات سے ہمارے ایمان کو منور فرمائیے، ہمارے اعمال کو منور فرمائیے، اور ہمیں اپنی رخصتے کاملہ کا مورد بنائیے، ہر روز یہ دُعا کر لیا کرو۔  
اس وقت میں نے جو عایت بتائی اس کو اساتذہ اور طلبہ سب پیش نظر رکھیں۔

کلام اللہ اور کلام رسول کوئی معمولی چیز نہیں ہیں، کوئی مخلوق ان کا تحمل نہ کر سکتی تھی۔ اللہ تعالیٰ نے بعض اپنے فضل اور اپنی قدرت سے ہمارے اندر اس کا تحمل پیدا فرمادیا، ورنہ انسان کے بس کی بات نہیں تھی کہ وہ اس کا تحمل کر سکتا۔ یاد رکھو! ہر چیز کے کچھ آداب ہوا کرتے ہیں، مثلاً نیت کی درستگی، ہر عمل صالح کی لازمی شرط ہے، بھاری تشریف کی پہل حدیث میں یہی اشارہ دیا گیا ہے، جب تک تمہاری نیت خالص نہیں ہوگی، تمام اعمال بیکار ہیں، نیت کی درستگی کے ساتھ اگر کوئی عمل صالح کیا تو فردا اس کا فائدہ پہنچے گا۔ نیت کی درستگی کیلئے ضروری ہے کہ جو کچھ لکھنا ہو خالصتہً بت۔ عمل کرنے کیلئے ہو، تمہارے ایمان اور تمہاری روح پر اس تعلیم کا اثر جب ہی ہوگا جب تم یہ نیت کر کے پڑھو گے کہ اس پر عمل کرنا ہے، عمل ہی کیلئے سب کچھ پڑھایا جاتا ہے، ترجمہ کر دینا، تفسیر کر دینا بذاتِ خود مقصود نہیں تفسیر، تشریحات وغیرہ تو ذہن نشین کرانے کیلئے ہیں وہ بھی ضروری ہیں، لیکن مقصود نہیں، غایت الغایات عمل کرنا ہے، جب تک عمل نہیں کرو گے کامیاب نہیں ہو گے۔

اس لئے سب نیت کرو کہ یا اللہ! آج ہم نے ایک مبارک حدیث شریف سے افتتاح کیا ہے، ہماری میتوں میں خلوص عطا فرمائیے، ہمیں تقویت عطا فرمائیے، قابلیت عطا فرمائیے، عمل کی توفیق عطا فرمائیے، دُنیا میں ہم سے راضی رہیے "ربنا آتسنا فی الدنیا حسنة و فی الآخرة حسنة و قنا عذاب النار"۔

اس کائنات میں انسان کیلئے سب سے بڑی دولت ایمان ہے، ایمان کیا کرتا ہے؟ ایمان یہ کرنا ہے کہ نامِ لعن و شیطان کے طریقوں سے محفوظ رکھتا ہے، فواحشات، منکرات، بے حیائی، بے فیرتی، بے شری سب سے محفوظ رکھتا ہے، اللہ اور اللہ کے رسول کا کلام بہت مستحکم ہے، اگر یہ اللہ اور اللہ کے رسول کا کلام آپ کے دلوں میں بیٹھ گیا ہے تو اس کے اندر فواحشات و منکرات کو جگہ نہ دو، خدا کے لئے اپنی زندگی کو فواحشات و منکرات سے بچاؤ، جس طرح بغیر وضو اور بغیر طہارت کے نماز نہیں ہوتی، اسی طرح خوب سمجھ لو کہ جب تک تم گناہوں کو نہیں چھوڑو گے قلب کی صفائی نہیں ہوگی، اور جو حضرات عہدِ حاضر کے موجودہ گندے ماحول میں ڈوب گئے ہیں، ان کی زندگی میں کلام اللہ اور کلام رسول کی برکات مرتب نہیں ہوتیں، سب سے پہلے آپ پر واجب ہے کہ قلب کی طہارت کا اہتمام کریں، جس طرح بغیر طہارت کے نماز نہیں پڑھ سکتے اسی طرح بغیر طہارت کے اللہ اور اللہ کے رسول کے کلام کے انوار و تجلیات ہم پر مرتب نہیں ہو سکتے۔ اس میں شک نہیں کہ نفس و شیطان تو سب کے ساتھ لگے ہوئے ہیں، ہمارا ماحول شیطان ہے، تمام اثرات ہمارے شیطانی ہیں، زمین و آسمان ان اثرات سے بھروسے ہوئے ہیں، لیکن اتنا کر لیا کر دو کہ جب کبھی کلام اللہ اور کلام رسول پڑھنے کا ارادہ ہو تو استغفار کر لیا کرو، اس کی عادت ڈال لو، کہ میں یہ کام آپ کے نام سے شروع کروں ہوں میں اپنے قلب و ذہن کی طہارت کا طلبگار ہوں یا اللہ! آپ میرے ساتھ ہیں، یہ آپ کا کلام ہے، آپ کے رسول کا کلام ہے، اس کے جو انوار ہیں، تجلیات ہیں،

خواص ہیں، میں ان کو کیسے حاصل کر سکوں گا؟ یا اللہ! میں استغفار کرتا ہوں، تو بہ کرتا ہوں، تمام اپنے گناہوں سے توبہ کرتا ہوں، میرے قلب کے اندر دس دس خطرے ہیں، میری آنکھیں ناپاک ہو چکیں، میری زبان ناپاک ہو چکی، میرے قلب کے اندر، میری استعداد میں بھی، میری قابلیت میں بھی، میری صلاحیت میں بھی، میرے ادراکات میں بھی، میرے احساسات میں بھی، ہر چیز میں کثافت ہی کثافت ہے، لیکن میں استغفار کرتا ہوں، اَسْتَغْفِرُ اللہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَاَتُوبُ اِلَیْهِ۔ رَبِّیْ اَعْفِرْ وَاَرْحَمْ وَاَنْتَ خَیْرُ الرَّحِیْمِیْنَ۔ انشاء اللہ سب معاف ہو جائیں گے۔ اور اس استغفار کے بعد جب پاک صاف ہو کر کلام اللہ اور کلام رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف متوجہ ہو گے تو انشاء اللہ ان کے انوار و تجلیات سے سیراب ہو گے، یہ نیکو استغفار کے دریدہ طہارت قلب کی شرط اتم نے پوری کر دی۔

یہ اللہ تعالیٰ کا احسانِ عظیم ہے کہ انہوں نے ہم کو ایمان عطا فرمانے پر کتنا نہیں فرمایا بلکہ اس کی حفاظت کیلئے بھی ایک بہت بڑی دولت اور بہت بڑی نعمت عطا فرمائی ہے، وہ دولت استغفار ہے، اگر استغفار کر دو گے کوئی، یا کسی سے رہے گی مگر صدق دل سے کرو، اس سے کرو کہ آئندہ کیلئے گناہ بالکل چھوڑ دو گے۔

جب بھی کوئی نیک کام کر دے، کوئی عبادت کر دے، احادیث پڑھو تو پہلے اسی طرح قلب کی طہارت حاصل کر لو کہ یا اللہ ہماری اندر جتنی کثافتیں ہیں، ہمارے تمغیل میں، ہمارے تصور میں، ہماری استعداد میں، جتنی بھی کثافتیں ہیں، ہم سب سے صفائی چاہتے ہیں، اَسْتَغْفِرُ اللہَ اَسْتَغْفِرُ اللہَ، اَسْتَغْفِرُ اللہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ، سب اَعْفِرْ وَاَرْحَمْ وَاَنْتَ خَیْرُ الرَّحِیْمِیْنَ، یہ دُعا میں پڑھ لیا کرو، صدق دل سے۔ دُعا میں پڑھ لو، تو تم مؤمن ہو گئے، متقی ہو گئے، اے بسم اللہ کر کے پڑھو، انشاء اللہ اس کے انوار و تجلیات سے نوازے جاؤ گے۔

خلاصہ یہ کہ ہر چیز کے کچھ طریقے ہوتے ہیں، آداب ہوتے ہیں، پہلے ان کو ذہن نشین کر لو، یہ نہیں کہ کتاب اُٹھاؤ اور بسم اللہ کر دی، سب سے پہلے استغفار پڑھو، اس کے بعد بسم اللہ پڑھو، جب ہم کر دو، تو دعا کر لو یا اللہ! یہ انوار و تجلیات کے کلمات جبری زبان پر جاری ہوئے، میری فہم میں آئے، میرے قلب میں آئے، یا اللہ! ان کی حفاظت فرمائیے، اور آئندہ کثافتوں سے اسے محفوظ رکھئے، اس کے انوار و تجلیات سے میری روح کو میرے ایمان کو منور رکھئے، ان علوم کو محفوظ رکھئے اور ان میں برکت عطا فرمائیے۔ پھر شکر ادا کر دو کہ سبق پڑھنے اور حدیث پڑھنے کی توفیق اور سعادت حاصل ہو گئی۔

تعلیم کے بہت سے لوازمات ہیں، آپ کا یہ مدرسہ علوم قرآن کی تعلیم گاہ ہے، اخلاق و آداب کی تربیت گاہ ہے، اور اخلاق و آداب جزو ایمان ہیں، یہ ہمارے ایمان کا پانچواں شعبہ ہیں، تعلیم کا مقصد تہذیب اخلاق ہی سے حاصل ہوتا ہے، یہ نیکو نفس کے اندر بڑی شرارتیں ہیں، بڑی گندھیاں ہیں، بڑے بڑے تقاضے ہیں، جب تم نے استغفار کر لیا تو اس کی برکت سے نفس و شیطان سے انشاء اللہ تعالیٰ چھٹکارا حاصل ہو گیا۔

علم حاصل کرنے کے لئے ادب و احترام بھی نہایت ضروری چیز ہے، جب تک ادب نہ ہو، علم حاصل نہیں ہو گا، ادب یہ ہے کہ علم کے ذرائع کا احترام کیا جائے کہ کس کس چیز کو علم سے نسبت ہے، ہر ایسی چیز کا احترام کرو، عزت کرو جو حصولِ علم کا وسیلہ ہے، اساتذہ کی، کتابوں کی، قلم کی، روشنائی کی، فرض یعنی چیزیں علم کے ساتھ وابستہ ہیں سب کی عزت کرو، سب کا احترام کرو، ہر چیز علم کی تبلیغ کیلئے ہو، علم کی اسافت کیلئے ہو، جب تک اس کا ادب نہ کرو گے اس وقت تک علم کے انوار و تجلیات حاصل نہ

ہوں گے، کلام اللہ کو، کلام رسول کو، فقہ کی کتابوں کو ادب کے ساتھ رکھو، ہنہام کے ساتھ رکھو، عزت کے ساتھ رکھو، جب اس کی عزت کرو گے، ادب کرو گے پھر انشاء اللہ علوم حاصل ہوں گے، علوم لدنیہ حاصل ہوں گے۔

ادب بڑی شے ہے، دل و دماغ کی طہارت کے بعد اور روح و قلب کی طہارت کے بعد دوسرا مطالبہ ہم سے ادب اور احترام کا ہے کہ ان علوم کا ادب و احترام کرو۔ مثلاً ایک شخص کہہ رہا ہے کہ حدیث شریف میں یہ آیا ہے اور حقیقت میں حدیث نہ ہو، فوراً یہ سنت کہو کہ حدیث میں نہیں ہے، بلکہ حکم یہ ہے کہ گردن جھکاؤ، کیونکہ اس نے حدیث کا نام بلبے، اس کے آگے گردن جھکاؤ، پھر کہو کہ بھائی! آئندہ ایسا نہ کہنا، یہ حدیث شریف نہیں ہے، بغیر تحقیق کے ایسی بات مت کہو، لیکن اولاً نام سننے ہی حدیث کا یا قرآن کا ضرور گردن جھکاؤ، کیونکہ اللہ اور اللہ کے کلام کا حوالہ دیا گیا ہے، جھک جاؤ، اپنی علییت کا اظہار نہ کرو کہ فوراً متاظرہ کرنے لگو، حکم یہ ہے کہ قرآن کریم کا نام یا احادیث کا نام سنو تو گردن جھکاؤ، اس کے بعد پھر تردید کرو، یہ ہے ادب۔ جن طالب علموں میں ادب نہیں ہے وہ محروم رہتے ہیں۔

### بے ادب محروم ماند از فضل و سب

جو جس طرح طہارت فروری ہے جیسا کہ میں نے ابھی اس کی اہمیت اور فضیلت بتائی، اسی طرح قلم، دوات، روشنائی کاغذ کے پرزے ان سب کا ادب بھی ضروری ہے، ہمارے حضرت فرماتے تھے کہ اگر کاغذ کا کوئی پرزہ پڑا ہوتا ہے تو اس کو جلدی سے نکالتے ہوں، کہیں اس کے اوپر کسی کے پاؤں نہ پڑ جائیں تو کاغذ کا اس طرح ادب کرو گے تب جا کے تم کو علم حاصل ہوگا، ادب بہت بڑی چیز ہے، علم سے جتنی چیزیں تعلق رکھتی ہیں ان سب کا ادب کرو، جب کاغذ، قلم، روشنائی اور کتاب کا ادب ضروری ہے تو پڑھائے والے کا ادب اس سے بھی زیادہ ضروری ہے۔

اساتذہ کرام کا ادب و احترام بڑا ضروری ہے، جب تک ان کا ادب و احترام نہ کرو گے ان سے محبت نہ کرو گے کچھ حاصل نہ ہوگا، وہ تم کو ایسی چیز عطا فرمائے ہیں جو تمہاری مستطاعت سے باہر تھی، یہ ان کی شفقت اور محبت ہے کہ تمہیں درس سنا رہے ہیں، نہایت ادب کے ساتھ سنو اور ان کا ادب کرو، احترام کرو، ان کی عزت کرو، کیونکہ وہ تم کو بہت بڑی نعمت کا حامل بنائے ہیں، جب تک ان کی عزت نہیں کرو گے احترام نہیں کرو گے اس وقت تک صحیح علم حاصل نہیں ہوتا جو طالب علم اساتذہ کا ادب کر رہے ہیں ہوشیار ہوں گے، وہی صاحبِ عبادت ہوں گے، وہی صاحبِ اقبال ہوں گے۔

دوسری بات اساتذہ سے متعلق ہے، اساتذہ کے پاس اللہ کے اور اس کے رسول کے کلام کی بہت بڑی امانت ہے جو وہ طالب علموں کی طرف منتقل کر رہے ہیں، ان کو بھی اسی طہارت کی ضرورت ہے، اسی نیت اور اخلاص کی ضرورت ہے، اسی ادب کی ضرورت ہے، ان کو اللہ تعالیٰ نے اس مرتبہ پر فائز کیا ہے کہ اخلاص نیت کے ساتھ، جذبہ ایشارہ کے ساتھ، محبت کے ساتھ، شفقت کے ساتھ، پیرانہ محبت کے ساتھ، اللہ اور اللہ کے کلام کو طالب علموں کی طرف منتقل کریں اپنے طالب علموں سے ایسی محبت ہونا چاہئے جیسی اپنی اولاد سے ہوتی ہے، ان کو اولاد سمجھیں اور اولاد جس طرح جہانی تعلق رکھتی ہے، اسی طرح شاگرد کا بھی ایک روحانی تعلق ہے، ایمانی تعلق ہے، اس لئے اساتذہ کو بڑا اہتمام کرنا چاہیے کہ اپنے شاگردوں کے ساتھ شفقت کا، محبت کا، دل سوزی کا، ایشارہ کا معاملہ کریں۔ یہ ان کی ذمہ داری ہے، جب درس دینے کے لئے آئیں تو غلبہ مطالعہ کر کے آئیں، شرح صد کے ساتھ آئیں اس کے بغیر درس کیلئے نہ آئیں۔

ایک واقعہ مٹھنا یاد آگیا کہ حضرت مولانا محمد یعقوب صاحب نانوتوی رحمۃ اللہ علیہ درس دیا کرتے تھے، ایک ان کے



مخبرہ دنیا میں آج درس نہیں دوں گا، کیونکہ میں تیار ہو کے نہیں آیا، اس درس کا میں نے مطالعہ نہیں کیا حالانکہ وہ بہت جلد عالم  
مخبرہ مطالعہ کے بیان کر سکتے تھے، لیکن اس کو انہوں نے خیانت سمجھا کہ مطالعہ کے بغیر سبق پڑھائیں۔

تو بھی جب تک اساتذہ بھی اس قدر احتیاط کریں گے اس میں برکت نہیں ہوگی، برکت اس میں جب ہی ہوگی جبکہ ان کے  
قول میں ان کے ارشادات میں ان کی تشریحات میں اخلاص نیت ہوگا، جذبہ ایثار ہوگا اور اللہ تعالیٰ کی رضا پیش نظر ہوگی۔

اساتذہ کو بھی اپنے طالب علموں کے ساتھ چارہ محبت و شفقت، دلجوئی اور دلسوزی کا معاملہ کرنا چاہیے، اور  
طالب علموں کو بھی اساتذہ کی اپنے پاس سے زیادہ عزت کرنی چاہیے، میں نے بنیاد پر ایک جہانی عظمت ہوتی ہے اور ایک روحانی  
اور ایمانی طلبہ کا اساتذہ کے ساتھ جو رشتہ ہے، یہ روحانی رشتہ ہے، ایمانی رشتہ ہے، اور جسمانی رشتہ سے بڑھ کر ہے، اس سے  
اساتذہ کو اس کے ادب کا طلبہ کو خاص اہتمام کرنا چاہیے، ایسا کریں گے تو انشاء اللہ تعالیٰ ہمیشہ کامیابی ہوگی، ہمیشہ مقصود  
حاصل ہوگا۔ درس گاہ اور تعلیم و تعلم کے جو مقاصد ہیں وہ یہی ہیں کہ فطرت انسانہ انسان کو حاصل ہو جائے اللہ اور اللہ کے  
رسول کے صحیح تعلق ہو جائے، اس کی سیدہ میری ہیں جو ہم نے بتائیں یعنی طہارت و ادب۔

مستظہین سے بھی مجھے کچھ عرض کر لے۔ آپ مستظہین ہیں، اللہ تعالیٰ آپ کو حسن انتظام کی توفیق دے،  
حسن انتظام بہت بڑی چیز ہے، حسن انتظام سے سب کو راحت رہتی ہے، اپنے آپ کو بھی راحت رہتی ہے،  
پوری برادری کو راحت رہتی ہے، ایسے انتظامات ہونے چاہئیں کہ کوئی تکلیف نہ ہو، دوسروں کیلئے کوئی دشواری نہ ہو، یہاں یہ  
سب مہمانانِ رسول ہیں، طالب علم ہیں، مستظہین کو چاہئے کہ ان کی آسائش کا آرام کا خیال رکھیں۔

طالب علموں کیلئے ایک اور اہم نصیحت ہے کہ خستہ دار، جنگ طلب علم ہو دارالعلوم کے احاطہ کے اندر جو  
اپنی دینی علمی کتابوں کے علاوہ غیر چیزیں تھامے سلنے نہ آئیں، اجابات میں، ریڈیو میں، سالے میں، جانے کیا کیا چیزیں ہیں، یہ  
تھامے سلنے نہ آئیں، یہ چیزیں ہرگز تھامے سلنے نہ آئی چاہئیں یہ سب چیزیں مضر ہیں ان سب میں تمیخت ہے، دل و دماغ  
کو خراب کرنے والی، ماؤٹ کرنے والی چیزیں ہیں، بس تدریسی کے ساتھ اللہ اور اللہ کے رسول کے کلام کو پڑھتے رہو، غارِ باجہات  
کی پابندی کرو، ادنیٰ تا ثورہ کا اہتمام کرو، اور خبردار غیر متعلق چیزوں کی طرف توجہ نہ دو بس اپنی طرف توجہ رکھو، آج کل کا ماحول  
اللہ تعالیٰ محفوظ رکھے۔ بڑا شر انگیز ہے۔ میں اساتذہ سے بھی اور طلبہ سے بھی کہتا ہوں کہ اس دارالعلوم کی چار دیواری کے اندر رہتے  
ہوئے ہرگز نظر نہ ڈالنا کہ باہر کیا ہو رہا ہے، کہاں کہاں کون کونسی انجینئرز اور بڑی بڑی جماعتیں قائم ہیں، خبردار ان انجنیئرز اور جماعتوں  
کا تم سے کوئی تعلق نہیں، تم اپنی توجہ اپنی حدود کے اندر رکھو اپنی صلاحیتیں تعلیم و تعلم اور درس و تدریس میں صحیح طور پر صرف کرو۔

خستہ دار! باہر بڑے فتنے ہیں، دین کے فتنے ہیں، جماعتیں اور انجینئرز قائم ہو رہی ہیں، اسلام کے نام پر ایمان کے نام  
پر پارٹیاں بن رہی ہیں، تم کو ہرگز ان کے قریب نہ جانا چاہیے، خبردار ان کی طرف بھی نظر نہ ڈالنا، اساتذہ بھی اپنی اپنی صلاحیتیں  
ان کاموں میں صرف کریں جن کیلئے انہیں مقرر کیا گیا ہے دارالعلوم کی چار دیواری کے اندر ہیں، باہر ہزاروں فتنے ہیں، دین کے نام پر  
فتنے برپا ہو رہے ہیں، ہمیں اپنے کام سے کام رکھنا ہے، ہم کسی پر اعتراض نہیں کرتے، ہم اپنے دارالعلوم کی خیر چاہتے ہیں، ہم  
اپنے مذہب اور دارالعلوم کی چار دیواری سے ہرگز نہیں نکلیں گے جب تک فادح نہ ہوں۔ آپ کیوں ان چیزوں میں حصہ لیں، کیا  
آپ خدائی فوجدار ہیں، آپ کے اوپر وحی آئی ہے کہ دنیا بھر کی اسلامی ذمہ داریاں آپ اٹھانے چھریں، آپ سوچتے ہوں گے کہ  
مستظہین ہونے کے وجہ سے عالم ہونے کے وجہ سے بی تقاضا ہے کہ اہل حق کی نمائندگی کرنی چاہیے، اہل حق کو اگر سونے ہوگا تو باطل

عالم آجائیگا بڑی اونچی سوچ ہے، یعنی تم کون ہوتے ہو باطل کو دیکھنے والے، حق کو غالب کرنے والے؟ کیا تم خدائی فوجدار ہو، تم اپنے مدرسہ کا اور کتابوں کا حق ادا کر دو تمہارا شعبہ ہے اس شعبہ میں کام کرو، یہ کام دوسروں کو کرنے والے شعبہ کو چھوڑ کر دوسرے شعبوں کے کام لینے ذمہ لوگے تو اس شعبہ سے بھی جاؤ گے، خبردار! میری نصیحت ہے کہ آجکل کی سستی کی طرف طلبہ و اساتذہ ہرگز نظر نہ ڈالیں، آجکل کی سستی کا فائدہ بہت بڑا فائدہ ہے۔

عام طور سے کہا جاتا ہے کہ اگر ہم خاکوش رہیں گے تو اہل حق کی نماندگی کون کریگا؟ اہل حق کو حق بھی تو پہچانا چاہیئے، باطل زور کر رہا ہے، اگر ہم بھی خاکوش رہے تو حق پر باطل غالب آجائیگا، کیا آپ خدائی فوجدار ہیں کہ دنیا کا ہر کام آپ کے ذمہ ہے؟ بس جس منصب تک پہنچ گئے ہو اس کا حق ادا کرو، اسلامی سستی کا منصب بھی بہت سے وطنیں و مملکتیں اور معنہ فین و مؤلفین نے اختیار کر رکھا ہے، یہ ان کا مذاق ہے ان ہی کو کرنے دیجئے، آپ اپنے شعبہ کو سنبھالئے، اگر آپ میں قوم و ملت کی خیر خواہی کا بہت ہی زیادہ جذبہ ہے تو دارالعلوم کی چار دیواری سے باہر چلے جائیے اور حقہ لیجئے یہ نہیں ہو سکتا آپ جس کام پر مامور ہیں اس کو بھی کریں اور دوسرے کاموں کو بھی سنبھالیں، ایک صلاحیت سے دو جگہ کام نہیں ہو سکتے، ایک صلاحیت ایک ہی جگہ ہو سکتی ہے، اور اس صلاحیت میں ترقی اور برکت جب ہی ہوگی جب آپ ایک ہی شعبہ میں لگے رہیں، اس لئے میں نصیحت کرتا ہوں آپ لوگوں کے سامنے باہر سے چاہے جتنے مطالبات اسلام اور دین کے نام پر آئیں آپ کو اس سے تعلق نہیں ہونا چاہیئے، آپ اس کے ذمہ دار نہیں کہ اعلائے کلمۃ الحق کیلئے چار دیواری پھاند کر چلے جائیں اور وہاں جا کے حق ادا کریں، بھی سیاست آپ کو کوئی شے نہیں، کوئی مناصبت نہیں، اس لئے اگر آپ میری بات پر عمل نہ کیا تو ہمیشہ دھوکا ہوگا، یہ بالکل غلط خیال ہے کہ بھی ہم خاکوش کیسے رہیں؟ اللہ تعالیٰ نے ہم کو علم دیا ہے اس وقت ضرورت ہے حق کی حمایت کی، یہ محض شیطانی دوسرے ہرگز ہرگز آپ کے مطالبہ ہیں، آپ مطالبہ یہ ہے کہ جو صلاحیت آپ کو دی گئی ہے اس کو صحیح استعمال کریں چار دیواری کے اندر رہ کر آپ جو خدمت کر سکتے ہیں کریں، درسیا یا تخریر یا اچھی طرح ذہن نشین کر لو کہ ہزاروں آپ کو مدعو کرے کہ یہ انجمن ہے، وہ انجمن ہے کسی انجمن میں شریک نہ ہوں ہماری انجمن ہمارے سامنے ہے، ہماری انجمن کوئی معمولی انجمن ہے؟ یہ انجمن اللہ اور اللہ کے رسول (صلی اللہ علیہ وسلم) کے کلام کی بنیاد پر انجمن ہے، اس کی تعلیم کی درس و تدریس کی انجمن ہے، ہم اس کا حق ادا کرتے ہیں، خستہ دار! کبھی سستی کی طرف نظر نہ اٹھانا مٹو کر کھا جاؤ گے۔

میر کی نصیحت یاد رکھنا، اس سلسلہ میں اللہ میاں تم سے مواخذہ نہیں کرے گا، جب انہوں نے تم میں اس کی صلاحیت ہی نہیں رکھی تو مواخذہ بھی نہ ہوگا، اگر ایک شخص آپ کا باورچی ہے تو آپ اس سے یہ مواخذہ نہیں کر سکتے کہ تم نے کچھ صفائی کیوں نہیں کی؟ پکڑے کیوں نہیں دھوئے؟ دارالعلوم کی کوئی بھیجے، جو لوگ مبلغ میں کھانا پکاتے ہیں ان سے یہ مواخذہ نہیں کیا جاسکتا کہ تم نے بس کیوں نہیں پڑھایا؟ میں پھر نصیحت کرتا ہوں کہ چاہے جتنی جماعتیں قائم ہوں تمہیں کسی طرف جانے کی ضرورت نہیں، اس کے علاوہ بہت سی انجمنیں اور جماعتیں صرف یہ چاہتی ہیں کہ کچھ ایسے لوگوں کو بھی ساتھ لے لیں جن سے ان کا دھار بڑھ جائے، کچھ ان کی پشت پناہی ہو جائے، اس لئے وہ چاہتی ہیں کہ فلاں مولوی صاحب کو شامل کریں، فلاں مولوی صاحب کو بھی شامل کریں، وہ جماعتیں یہ سمجھتی ہیں ان سے ہماری جماعت میں تقویت پیدا ہو جائے گی، وہ ہلکے ملے کچھ اخذ نہ کریں گی بلکہ اپنا، خضر و دم پر ڈال دیں گی، میں خیر خواہی سے محبت سے نصیحت کرتا ہوں کہ خبردار سیاست کی طرف نہ جانا، ہماری سستی اس وقت میں ہے، تصنیف و تالیف ہے میں دعوے کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ جو دائرہ آپ کے دل میں پیدا ہو رہا ہے کہ سیاست کے ذریعے خدمت اسلام کی جائے وہ سوائے نفس

کے کچھ نہیں، آپ میں سے جس میں بھی یہ جذبہ پیدا ہو گا وہ بعض فتنائی ہو گا ایمان نہیں، الا ماشاء اللہ۔

ہاں اگر حکومت کسی دینی مسئلے میں مشورہ کیلئے دارالعلوم کے علماء یا کسی اور عالم کو طلب کرے تو حق کی وضاحت کیلئے ضرور جانا چاہئے، اور جا کر شریعت کا حکم واضح کر دینا چاہئے۔ لیکن اگر حکومت کی طرف سے کسی ایسی کیسی کارکن بننے کی دعوت دی جائے جس میں ارکان کی اکثریت غلبہ دین سے غافل اور دین کے مسئلے میں تاویل کو شہی ہو اور وہاں جا کر اس بات کا خطرہ ہو کہ اہل حق کا وقار دینی جرح ہو گا یا خدا کو استہدود و سرحد کی تاویل کو شہی میں ملو کہ حق دار بننا پڑے گا تو ایسی رکنیت کو ہرگز قبول نہ کیا جائے، اور ایسی صورت میں اپنے فرائض منصبی کے متانہل بشیرہ اور ایسے کام کی عدم صلاحیت و نااہلیت کا مذکر کافی ہے۔

البتہ ایک بات آپ کے مقاصد میں داخل ہے، اور وہ یہ کہ آپ اپنے یہاں ایک شعبہ کھول لیں جو درس و تدریس کے علاوہ تبلیغ و اشاعت کا کام کرے، آپ کہتے ہیں کہ کتب و بات پھیلے ہوئے ہیں، اور اسلام کے خلاف سازش ہو رہی ہے آپ کو اللہ تعالیٰ نے علم ہی عطا کیا ہے اور زبان ہی عطا کیا ہے آپ علم و نصیحت کیجئے، قلم کے آپ معائنہ لکھئے، دینی ہمناموں میں اور اخبارات میں شائع کر دیجئے، اس اتنا کال ہے، ہمارے حضرت کا یہ طریقہ، ہاں یہاں کوئی مسئلہ درپیش ہو، مضمون لکھ دئے، رسالہ لکھ دیا اور شائع کرادیا۔

آج سے اساتذہ، طلبہ اور منتظمین سب کے سب یہ عزم کریں کہ اپنے بزرگوں کی روش پر چلتے رہیں گے اور اپنے نصب العین پر اپنی فطری صلاحیتوں کے ساتھ قائم رہیں گے اور دارالعلوم کو ایک معیاری اور مثالی دارالعلوم بنائیں گے۔

انشاء اللہ ثم انشاء اللہ۔

ایک خاص دھم بات اور قابلِ غرض ہے، حضرات منتظمین اور اساتذہ کرام کو خصوصیت کے ساتھ اس طرف متوجہ کرنا چاہتا ہوں کہ اخلاقیات جو دین کا ایک اہم اور بنیادی شعبہ ہے، اس طرف ضرور اپنی خصوصی توجہات مبذول فرمائیں۔ یعنی درسی و تدریسی اخلاق خود بھی ہتھانہ عمل کریں اور طلبہ کو بھی اس کی اہمیت کی تعلیم دیں، اس کا طریقہ یہ ہے کہ اگر دورانہ اس کے لئے وقت نہ ہو تو کم از کم ہفتہ وار مثلاً جمعہ کے دن، یا کسی اور دن، ناظم اعلیٰ جو مناسب سمجھیں منظر کریں کہ کچھ دیر کے لئے عوام وہ ایک گھنٹہ ہی کیوں نہ ہو طلبہ کو جمع کر دیا کریں، اگر اساتذہ بھی اس میں شریک ہوں تو اور بھی، یادہ مناسب ہے، ناظم اعلیٰ خود یا کسی اساتذہ کو اس کام کے لئے مقرر فرمائیں اور اس موقع پر کوئی کتاب جو اخلاقیات پر مشتمل ہو پڑھ کر سنائیں اور اس کی تشریح کر دیا کریں، اس موضوع پر حضرت حکیم الامت رحمۃ اللہ علیہ کی اکثر تعانیف، مواظظ و ملحوظات طبع شدہ موجود ہیں مثلاً تبلیغ دین، حلیۃ المسلمین، جزاء الاعمال، اصلاح المسلمین، اخلاقیات پر مشتمل مواظظ و ملحوظات جو نہایت سبقت آموز اور بصیرت افروز ہیں۔ ان کو سن کر معمولی تشریح کرنا کافی ہے۔ تجربہ شائد ہے کہ بہت ہی نافع اور دائمی عمل ثابت ہوتے ہیں اور درسی تعلیم کی روح رواں ہیں۔

اب میں ایک نہایت اہم اور سنگین ضرورت کی طرف حضرات منتظمین اور اساتذہ کو خصوصیت کے ساتھ متوجہ کرنا چاہتا ہوں وہ ہے آپس میں ہم آہنگی اور خلوص و ایشاد کی قابلِ قدر ضرورت۔ جس پر دارالعلوم کا وقار اور اعتبار منحصر ہے۔

خوب یاد رکھئے اور حریز جان بنائیے کہ آپ کا تعلق اور دارالعلوم سے نسبت آپ کا کوئی نجی اور ذاتی معاملہ نہیں ہے۔ آپ کا تعلق دین کے ایک معظم و مقترم ادارے و درگاہ سے ہے اس لئے اس کا پاس و دب ملحوظ رکھنا آپ کا فرض ہے۔ دیکھئے اگر کسی میں کوئی اختلاف پیدا ہو جائے تو فوراً نیک نیتی کے ساتھ جلد از جلد آپس میں ہلکا کر اس کو رفع کر لیا جائے، خواہ یہ اختلاف اساتذہ کے درمیان ہو یا اساتذہ و منتظمین کے درمیان ہو۔ ایک درس کے ساتھ بدگمانی رکھنا، یا شکوہ و شکایت کا تذکرہ الگ الگ، یا تذکرہ کر لینا، یہ یقیناً خباثت نفس ہے، اور نہایت مذموم ہے۔ اور انجام کے لحاظ سے ترانگیز ہے اور عاقبت سوز ہے، اور عاقبت میں



اندیشہ ہے کہ قابلِ مواخذہ ہے۔ سب سے زیادہ خرابی یہ ہے کہ دارالعلوم کی چار دیواری کے باہر رسوائی اور بدنامی کا باعث ہے اور یہ اساتذہ اور منتظمین کے وقار پر ہیبت بدنامی کا باعث ہے۔

اس لئے میں ہایت دسوی کے ساتھ اور اپنا حق تعلق محبت ادا کرنے کے لئے یہ بات آپ حضرات کے سامنے عرض کر رہا ہوں، امید ہے کہ آپ سب اس کو اپنا شعار زندگی بنائیں گے۔ ممکن ہے کہ پھر کوئی اور آپ کو اس لب و لہجہ سے مخاطب نہ کرے۔

نعیبت گو کشش کن جاناں کہ از جاں دوست تر دارند

جوانان صفا و تمند بہتر پیر دانا را

دعا کریں کہ اللہ تعالیٰ ہم سب کو دولت تقویٰ سے اور صفاتِ قلب سے بہرہ مند و رکھیں اور اپنی یاد اور اپنے ذکر سے ہمیشہ معزز و سرشار رہیں۔ آمین۔

اب دعا کرو کہ اللہ! ہمارے بزرگوں کو درجاتِ رفیعہ عطا فرمائیے۔ یا اللہ! ان کے اخلاصِ نیت کو بار آور فرمائیے۔

ان در سگا ہوں کو ہر طرح کے فتنوں سے محفوظ فرمائیے، یا اللہ! دارالعلوم کی ہر طرح نصرت فرمائیے، ہر طرح اعانت فرمائیے اس کو ہر طرح کی ظاہری و باطنی برکتیں عطا فرمائیے ہر طرح کے ظاہری و باطنی فتنوں سے محفوظ رکھئے، یا اللہ! دارالعلوم کو کسی کا محتاج نہ بنائیے، یا اللہ! دارالعلوم کے اساتذہ، طلبہ، منتظمین، ملازمین اور ان کے متعلقین کو ہر طرح کی عافیت سے نوازئے، یا اللہ! اس کے بانی حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحبِ قدس سرہ کی قبر کو انوار و تجلیات سے بھر دیجئے ان کو مقاماتِ عالیہ رفیعہ عطا فرمائیے، یہ دعائیں آپ کے نبی رحمت صلی اللہ علیہ وسلم کے مستقبل قبول فرمائیے۔

یا اللہ! آپ نے ایمان کی دولت دیکھے، اعمالِ صالحہ کی توفیق بھی دیجئے، ہمیں نفس و شیطان کے مکانہ سے محفوظ رکھئے

رَبَّنَا بھیکے نشوں سے محفوظ رکھئے۔ رَبَّنَا اِنَّا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَّ فِى الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقَدْ خِذْنَا بَيْنَنَا رِبًّا لَا تَوْأَخُذُنَا اِنْ نُسِيتَا اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفُرْنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ۔ یا اللہ! ہمیں عافیتِ کاملہ عطا فرمائیے، یا اللہ! ہمارا مال و مالِ شیطان ہے، ہمارا مال کا فرائز ہے ہماری مدد فرمائیے، ہمیں بڑے مال سے بچائیے۔ رَبَّنَا لَا تُغْنِ قُلُوبُنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً اَنْتَ اَنْتَ الْوَهَّابُ۔ یا اللہ! آپ کے نبی رحمت صلی اللہ علیہ وسلم کی ایک جامع دعا ہے وہ ہم آپ کی بارگاہ میں پیش کرتے ہیں، یا اللہ! اس کو ہمارے حق میں، ہمارے اہل و عیال کے حق میں اور سب کے حق میں قبول فرمائیے۔

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلْتُكَ مِنْهُ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ۔

اَللّٰهُمَّ زِدْنَا وَلَا تَقْصُمْنا وَ اَكْرِمْنا وَلَا تُيْهِمْنا وَ اَعْظِمْنا وَلَا تُغَرِّمْنا وَ اَرْضَنا وَ اَرْضِمْنا۔

اَنْتَ حَسْبِىْ اَنْتَ رَبِّىْ اَنْتَ وَلِىُّ فِى الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ وَ الْخَوَاصِّ اَمْرِىْ اِلٰى اللّٰهِ

اِنَّ اللّٰهَ بِصَلَاتِ الْعِبَادِ۔

یا اللہ! سب کو عافیتِ کاملہ عطا فرمائیے، سب کو تندرستی عطا فرمائیے، ہمارے اہل و عیال کو ہمارے دوست

احباب کو سب کو تندرست رکھئے۔

یہ سب بھی دعا کیجئے کہ اللہ تعالیٰ صحت و تندرستی اور تاملی عطا فرمائے اور عافیتِ کاملہ عطا فرمائے، یا اللہ!

نبی رحمت صلی اللہ علیہ وسلم کے مدد و طفیل ہماری دعائیں قبول کر لیجئے۔ آمین اِلٰہ العالمین آمین بحق سید المرسلین صلی اللہ علیہ وسلم۔



# فہرست مجازین

عَافِ بِاللّٰهِ حَضْرَتُ مَوْلَانَا اَبُو عَبْدِ اللّٰهِ الْحَسَنُ صَانِعُ اِنْفِصَالِ رَحْمَةِ (عَلَيْهِ)

## مجازین بیعت

جن احباب کو اجازت بیعت دی گئی ان کے نام ادبیت درج ذیل ہیں :-

- ۱ — جناب مولوی نذیر احمد صاحب۔ اُستاد حدیث دارالعلوم پبلیز کالونی۔ فیصل آباد۔
- ۲ — جناب مولوی عبد الرزاق ہاشمی صاحب۔ مدرس جامعہ اسلامیہ محمودیہ۔ مانسہرہ (ضلع ہزارہ)
- ۳ — جناب مولوی سبحان محمود صاحب۔ اُستاد حدیث دارالعلوم کورنگی، کراچی۔
- ۴ — جناب مولوی مشرف علی صاحب۔ اُستاد جامعہ اشرفیہ۔ مسلم ٹاؤن۔ فیصلہ روز پورہ ڈو۔ لاہور۔
- ۵ — جناب مولوی محمد رفیع صاحب عثمانی۔ ہستم دارالعلوم کورنگی۔ کراچی۔
- ۶ — جناب مولوی محمد تقی صاحب عثمانی۔ نائب ہستم دارالعلوم کورنگی۔ کراچی۔
- ۷ — جناب حافظ ابراہیم صاحب۔ خطیب و امام جامع مسجد۔ فیڈرل کیمپٹل ایریا۔ کراچی۔
- ۸ — جناب (ڈاکٹر) حافظ محمد ایاس صاحب۔ جنرل منیر ہمدرد خانہ۔ ۶۳۔ بہادر یار جنگ ڈسٹریکٹ ہوسٹل۔ کراچی۔
- ۹ — جناب حافظ عتیق الرحمن صاحب۔ جنرل اکاؤنٹس ہمدرد خانہ۔ بیت تحلیل سی۔ ۱۰ بلاک پیر شمالی ناظم آباد۔ کراچی۔
- ۱۰ — جناب آدم بھائی پشیل صاحب۔ فاطمہ منزل۔ ۷۷/۷۱۔ ناظم آباد۔ کراچی۔
- ۱۱ — جناب محمد کلیم صاحب۔ فردگاہ رضوان چ ایف۔ ناظم آباد۔ کراچی۔
- ۱۲ — جناب فہم احمد خان صاحب۔ ناظم نشر و اشاعت عائشہ بلوانی وقف۔ مکان ۱۲ بلاک پی ای کی ایچ ایس۔ کراچی۔
- ۱۳ — جناب ڈاکٹر نعیم اللہ صاحب۔ امج بازار۔ سکھر۔
- ۱۴ — جناب علی حماد رضا صاحب۔ ۱۰۵ بی بلاک این۔ شمالی ناظم آباد۔ کراچی۔
- ۱۵ — جناب مولوی عبد الرزاق صاحب۔ ظلمہ بالمقابل سلم کرشل بنگ کوہاٹ سٹی۔
- ۱۶ — جناب مولوی عبد الرحمن افغانی صاحب۔ عرشی مسجد۔ سیٹلائٹ ٹاؤن۔ راولپنڈی۔

## مجازینِ صحبت

جن اجاب کو مجاز صحبت بنایا گیا ان کے اسماء اور پتے درج ذیل ہیں :-

- ۱۔ جناب مظفر احمد اشرف صاحب۔ قناس سیکریٹری پاکستان اسٹیل ملز۔ کراچی
- ۲۔ جناب عابد حسین ذبیری صاحب۔ ۴۷۔ ڈی بلاک ایچ۔ شمالی ناظم آباد۔ کراچی
- ۳۔ جناب سید اختر حسن صاحب۔ سیکریٹری وزارت مالیات حکومت آزاد کشمیر۔ مکان نمبر ۳۳ اکول روڈ اسلام آباد
- ۴۔ جناب رحمت علی صاحب۔ ڈپٹی سیکریٹری زمین ڈویژن۔ خیابان قائد اعظم جی پلا ۳۰ جی۔ اسلام آباد
- ۵۔ جناب دبیر علی صاحب۔ کوارٹر ۴۲/۱ اری۔ ۶/۲ جی۔ اسلام آباد

## تجدیدِ اجازت

- ۱۔ جناب حکیم سید محمد ابرہیم صاحب۔ غریب آباد۔ سکھر (مجاز حضرت ماسٹر ثامن علی صاحب)
- ۲۔ جناب ڈاکٹر حفیظ انور صاحب۔ المچ بازار۔ سکھر (مجاز حضرت مولانا مفتی محمد حسن صاحب)
- ۳۔ جناب مولوی محمد اسحاق صاحب یقی سندیلوی۔ مشرف شعبہ تخصص فی ادعوہ دارالاشاد مدرسہ عربیہ اسلامیہ کراچی
- ۴۔ جناب مولوی محمد احمد صاحب۔ ۴۲، پہلے، بلاک ایچ شمالی ناظم آباد (مجاز حضرت مولانا مفتی محمد شفیع صاحب)
- ۵۔ جناب فخر احمد صاحب تھانوی (انجینئر بحری) سی بلاک اے شمالی ناظم آباد۔ کراچی
- ۶۔ جناب مولوی دلایرت حسین صاحب۔ بلاک ۲۲ سب بلاک ای پلاٹ نمبر ۲۲ ناظم آباد کراچی
- ۷۔ جناب مولوی عبد الرزاق صاحب۔ کوہاٹ
- ۸۔ جناب مولانا یوسف لدھیانوی صاحب۔ مدرسہ اسلامیہ علامہ یوسف بنوری





# تقدو تبصرہ

تبصرے کے لئے ہر کتاب کے دو نسخے ارسال فرمائیے

## ماثر حکیم الامت (طبع جدید)

از افادات: عارف باللہ حضرت مولانا ڈاکٹر محمد عبدالحی صاحب عارفی قدس سرہ العزیز  
 ناشر: ادارۃ اسلامیات منار ۱۹ انارکلی - لاہور - ۳۶ X ۲۳ سائز کے ۵۱۲ صفحات  
 سفید کاغذ پر عمدہ کتابت و طباعت خوبصورت ڈائی دار جلد - قیمت - ۵۶ روپے۔  
 حکیم الامت مجدد الملت حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی قدس سرہ العزیز  
 کی سیرت و سوانح آپ کے متعدد عشاق نے تحریر فرمائی ہے، لیکن سیدی و سندھی حضرت  
 ڈاکٹر عبدالحی صاحب قدس سرہ کی یہ تالیف ایک انفرادی رنگ کی حامل ہے۔ یہ عام سوانح  
 کی طرح محض حالات زندگی پر مشتمل سوانح نہیں ہے، بلکہ حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے  
 مزاج و مذاق کی انتہائی دلکش تصویر ہے۔ کتاب کو پڑھنے سے پڑھنے والے کو ایسا محسوس ہوتا  
 ہے جیسے وہ حضرت حکیم الامت قدس سرہ اور آپ کے انداز زندگی کو آنکھوں سے دیکھ رہا ہے۔  
 حضرت عارفی قدس سرہ کے ایک مرحوم عقیدت مند جناب معود الحسن صاحب مرحوم  
 نے حضرت کی زبان مبارک سے حضرت حکیم الامت قدس سرہ کے حالات اور آپ کے  
 انداز زندگی کی تفصیلات سن کر انہیں بڑے دلنشیں انداز میں قلمبند فرمایا۔ حضرت عارفی قدس سرہ  
 نے ان کی تحریر پر نظر ثانی فرما کر اس میں جذباتی حذف و اضافہ فرمایا، یہاں تک کہ یہ کتاب

تیار ہو گئی جس میں مختصر حالات زندگی کے علاوہ حضرت کے مذاق زندگی، آپ کے علمی مقام آپ کے تجدیدی کارناموں اور آپ کے انداز تربیت کو اس حسن و دلکشی کے ساتھ بیان فرمایا گیا ہے کہ اس کا ایک ایک صفحہ انسان کے لئے ایک مستقل درس ہے۔

حدیث ہے کہ ابتر میں خانقاہ تھانہ بھون کی اتنی مفصل قلمی تصویر کھینچی گئی ہے کہ خانقاہ کی چھوٹی سی چھوٹی جزئیات اس میں محفوظ ہیں۔

اس کتاب کے اب تک دسیوں ایڈیشن شائع ہو کر مقبول عام ہو چکے ہیں، لیکن اب ادارہ اسلامیات نے جو نیا ایڈیشن شائع کیا ہے وہ مندرجہ ذیل خصوصیات لحاظ سے ممتاز ہے۔  
 ① حضرت ڈاکٹر صاحب قدس سرہ اپنی تمام تالیفات، بالخصوص "مآثر حکیم الامت" پر نظر ثانی فرماتے رہتے تھے۔ سب سے آخر میں حضرت نے کتاب میں جو ترمیم و اضافہ فرمایا، وہ پہلی بار اس ایڈیشن میں شامل ہوا ہے، چنانچہ اس ایڈیشن میں بہت سی تصحیحات اور بعض مضامین کا اضافہ کیا گیا ہے۔

② حضرت دالانے پہلے ایڈیشنوں میں خانقاہ تھانہ بھون کے متعدد حصوں کی تصویر بھی شامل فرمائی تھیں، لیکن وہ سادہ اور سیاہ تصاویر تھیں، اس مرتبہ ناشرین نے بڑی عرق ریزی سے یہ تصویریں رنگین بنوا کر شائع کی ہیں جو نہایت واضح اور دلکش ہیں۔

③ کتابت و طباعت کا معیار بھی اچھا ہے، خاص طور پر جلد نہایت خوبصورت ہے جو پچھلے تمام ایڈیشنوں سے زیادہ مضبوط بھی ہے اور خوش نما بھی۔

اس لحاظ سے یہ ایڈیشن پچھلے تمام ایڈیشنوں پر سبقت لے گیا ہے۔ اللہ تعالیٰ ناشرین کو اس خدمت پر جزائے خیر عطا فرمائے، اور یہ مسلمانوں کیلئے مفید ثابت ہو۔  
 آمین۔ (م ت ع)